सर कटाते हैं तेरे नाम पे

मर्दाने अरब

हिस्सा अव्वल

लेखक

मुनाज़िरे अहले सुन्नत

अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी

"मस्रूफ़" (बरकाती-नूरी)

मरकज़े एहले सुन्नत बरकाते रज़ा

इमाम अहमदरज़ा रोड, मेमनवाड, पोरबन्दर, गुजरात

A

अल्लाहो रब्बो मुहम्मदिन सल्ला अलैहि व-सल्लमा

नह्नो इबादो मुहम्मदिन सल्ला अलैहि व-सल्लमा

सर कटाते हैं तेरे नाम पे

मर्दाने अरब

(हिस्सा अव्वल)

《 हिन्दी लिपियांतर 》

---: मुसन्निफ :---

अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी ''मस्रूफ''
बरकाती, रज़वी, नूरी, पोरबंदर

मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा
इमाम अह्मद रज़ा रोड, पोरबंदर (गुजरात)

जुम्ला हुकूक ब हक्के नाशिर महफ़ूज

नामे किताब	:	सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अरब (हिस्सा अव्वल)
तस्नीफ	:	अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी बरकाती नूरी
कम्पोज़िंग	:	मोईन एम. लालपुरीया
सने इशाअत	:	बार अव्वल ----- हिजरी 1427 (सन ईस्वी 2006)
ता'दादे इशाअत	:	1000 (एक हज़ार)
कींमत	:	

मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा

इमाम अह्मद रज़ा रोड, पोरबंदर (गुजरात)

----: **मिलने के पते** :----

1. कुतुब खाना अमजदिया, 425, मट्या महल, जामा' मस्जिद देह्ली - 6
2. फारूकिया बुक डिपो, 423, मट्या महल, जामा' मस्जिद देह्ली - 6
3. मर्कज़े अह्ले सुन्नत बरकाते रज़ा, इमाम अहमद रज़ा रोड, पोरबन्दर

وَ الَّذِيْنَ آمَنُوا وَ هَاجَرُوا وَ

جَاهَدُوا فِى سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ الَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّ

نَصَرُوا أُوْلٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا

(सूरतुल अन्फाल, आयत नं. 74)

--: एहदा :--

❀ उन बुज़ुर्गों के नाम ....

❀ जो ईमान लाए

❀ और हिज्रत की

❀ और अल्लाह की राह में जेहाद किये

❀ और जिन्हों ने जगह दी

❀ और मदद की ....

❀ वही सच्चे ईमान वाले हैं

❀ उन के लिये बख़्शिश है और पाकीज़ा रोज़ी

(हमदानी)

फेहरिस्ते मज़ामीन

मर्दाने अरब..... हिस्सा अव्वल

मर्दाने अरब..... हिस्सा अव्वल

हल्ले लुगात

नं.	लफज़्	लफज़् के मा'नी और उसकी तफसील	हवाला
1.	बतरीक	पादरियों का सरदार, आतिश परस्तों का पेश्वा,रूमी फौज का सरदार, जमा' : बतारका, Leader or a Monk of the Nazarles and fire worshippers, A chief of roman army.	फीरोजुल लुगात सफहा : 205 Royal Persian English Dictionary Page-59
2.	राहिब	ईसाई आबिद या ज़ाहिद, तारिकुद्दुनिया Christian Priest	फीरोजुल लुगात सफहा : 702
3.	गबर	आतिश परस्त, आग की पूजा करनेवाला, ज़रथ्रुष्ट का पैरू A fire worshipper, a follwer of Zoroaster, Infidel	फीरोजुल लुगात सफहा : 1080 R.P.E.D. Page-343
4.	कस	ईसाईयों का मेहतर या'नी सरगिरोह, अमीर	फुतूहुश्शाम हाशिया सफहा 43
5.	अहबार	हबर की जमा', यहूदियों के औलमा	फिरोजुल लुगात सफहा : 72
6.	मुसाहिब	हमनशीन, साथी, जलीस, नदीम, हम-सोहबत। Courtier	फिरोजुल लुगात सफहा : 1253

नं.	लफज़्	लफज़् के मा'नी और उसकी तफसील	हवाला
7.	नकीब	लोगों के खानदान और जाती हालात से वाकफियत रखनेवाला	फिरोजुल लुगात सफहा : 1372
8.	कैसर	बादशाहे रूम Title of Roman Emperors	फिरोजुल लुगात सफहा : 968
9.	किसरा	शाहे फारस, नौशेरवाने आदिल, खुस्रो परवेज़् Title of King of Persia	फिरोजुल लुगात सफहा : 1011
10.	दारूल हर्ब	वोह मुल्क जहां गैर मुस्लिमो की हुकूमत हो और मुसलमानों को मज़्हबी फराइज़् अदा करने से रोका जाए	फिरोजुल लुगात सफहा : 607
11.	सोमआ	गिर्जा, ईसाइयों का इबादतखाना Christian Church	फिरोजुल लुगात सफहा : 867
12.	कनीसा	गिर्जा, यहूदियों और ईसाइयों का इबादतखाना, Jewish Synagogue	फिरोजुल लुगात सफहा : 1038
13.	हवारी	हज़्रते ईसा (अलैहिस्सलाम) के शागिर्द, दोस्त, मददगार, वफादारी से काम करने वाला	फिरोजुल लुगात सफहा : 576
14.	गज़्वह	वोह जेहाद जिसमें रसूले मकबूल (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) शरीक हूए, जमा' : गज़्वात	फिरोजुल लुगात सफहा : 913

नं.	लफ्ज़	लफ्ज़ के मा'नी और उसकी तफसील	हवाला
15.	सरया	वोह जेहाद जिसमें रसूले मकबूल शरीक न हुए हों बल्के आपने किसी की सरदारी में लश्कर भेजा हो। इसे बअस भी केहते हैं	
16.	सिपह सालारे आ'ज़म	अमीरे फौज, सालारे लश्कर Commander in Chief	फिरोजुल लुगात सफहा : 1028
17.	जैस	लश्कर, फौज, दल, सिपाह जमा' : जयूश An Army	R.P.E.D. page No. : 124
18.	मुकद्दमतुल जैस	वोह लश्कर जो आगे भेज दिया जाए Advance Army Force	फिरोजुल लुगात सफहा : 1273
19.	तलीआ	वोह लश्कर जो फौज के आगे दुश्मन की नक्लो हरकत का पता लगाने इलावा अज़ीं पानी, उतरने की जगह वगैरा की तलाश में जाता है। Vanguard	फिरोजुल लुगात सफहा : 880
20.	हरावल	वोह थोडी फौज जो लश्कर के आगे आगे चले,लश्कर का पेशखैमा	फिरोजुल लुगात सफहा : 1438
21.	मैमना	दायीं तरफ, दायीं बाजु की फौज Right Flank of an Army	फिरोजुल लुगात सफहा : 1332
22.	मै-सरा	बाईं तरफ, बाईं बाजु की फौज Left Flank of an Army	फिरोजुल लुगात सफहा : 1330
23.	मुकद्दिमा	फौज का वोह हिस्सा जो आगे हो Front Army Force	फिरोजुल लुगात सफहा : 1273

नं.	लफ्ज़	लफ्ज़ के मा'नी और उसकी तफसील	हवाला
24.	कल्ब	फौज का दरम्यानी हिस्साCentral flank of an army	फिरोजुल लुगात सफहा : 960
25.	अ-कब	पीछे, फौज का पिछला हिस्सा Rear flank of an army	फिरोजुल लुगात सफहा : 899
26.	मा'रका	मैदाने जंग, रज़्मगाह, लडाई, Battle Field	फिरोजुल लुगात सफहा : 1263
27.	पडाव	लश्कर या काफले के उतरने की जगह Camp	फिरोजुल लुगात सफहा : 294
28.	केम्प	छावनी, लश्करगाह, फौजी डेरा, खैमा ज़न होना, Camp	फिरोजुल लुगात सफहा : 1074
29.	फिरूदगाह	ठहरने का मकाम, कयामगाह, उतरने की जगह, Halting Place	फिरोजुल लुगात सफहा : 931
30.	कमीनगाह	वोह जगह जहां छुप कर दुश्मन पर हमला करें, Ambuscade	फिरोजुल लुगात सफहा : 1032
31.	यलगार	दुश्मन की फौज पर हमला, हल्ला, धावा Incursion, Expedlion	फिरोजुल लुगात सफहा : 1449
32.	यूरिश	हमला, धावा, चढाई, यलगार Assault	फिरोजुल लुगात सफहा : 1470
33.	शब-खून	रात के वक्त बेखबरी में दुश्मन पर हमला करना, Night Attack	फिरोजुल लुगात सफहा : 836
34.	खन्दक	खाई या गडहा जो शहर या लश्कर के इर्द गिर्द खोदा जाए, Dlch, Fosse, Moat	R.P.E.D. Page -155

नं.	लफ्ज़	लफ्ज़ के मा'नी और उसकी तफसील	हवाला
35.	शहरपनाह	फसील, शहर की चार दीवारी Fortification, Castle	फिरोजुल लुगात सफहा : 851
36.	बुर्ज	गुंबद, गुमट	फिरोजुल लुगात सफहा : 194
37.	रिज्ज़	वोह फख़िया अश्आर जिसमें सिपाही की बहादुरी की ता'रीफ होती है और मैदाने जंगमें सिपाही को जौश दिलाने के लिये पढे जाते हैं	फिरोजुल लुगात सफहा : 705
38.	ख़ौद	लोहे की टोपी जो लडाई में पहनते हैं, Helmet	फिरोजुल लुगात सफहा : 598
39.	ज़िरह	फौलाद का जाली दार कुर्ता जो लडाई में पहनते हैं, Iron Armour	फिरोजुल लुगात सफहा : 854
40.	हर्बा	आलाए जंग, जंगी हथियार, चौबदस्ती Weapon	फिरोजुल लुगात सफहा : 566
41.	उमूद	गुर्ज़, एक हथियार जो उपर से गोल व मोटा और नीचे से पतला होता है, इसको हिन्दी में गदा केहते हैं, Mace	फिरोजुल लुगात सफहा : 1091
42.	सिपर	ढाल, आड, रोक, मुहाफिज़, आडे आने वाला Sheild	फिरोजुल लुगात सफहा : 776
43.	सैफ	तलवार, शम्शीर, तैग Sword	फिरोजुल लुगात सफहा : 828

नं.	लफ्ज़	लफ्ज़ के मा'नी और उसकी तफसील	हवाला
44.	नेज़ा	बर्छी, भाला, बल्लम Spear, Dart, Javelin, Pike	फिरोजुल लुगात सफहा : 1393
45.	ढाटा	कपडे की पट्टी जो मुंह छुपाने या दाढी बिठाने के लिये चेहरे पर बांधी जाए, Viel	फिरोजुल लुगात सफहा : 683
46.	मिन-जनीक	एक आला जिस से बडे बडे पत्थर फेके जाते हैं, संगबारी की कदीम दस्ती मशीन, Sling	फिरोजुल लुगात सफहा : 1291
47.	उर्वात	पत्थर फेंकने का आला जो मिन-जनीक से छोटा होता है	फुतूहुश्शाम सफहा : 304
48.	ढलवानसी	पत्थर मारने का आला, गोपीया, फलाखन, गोफन, वोह रस्सी का फंदा जिसमें पत्थर रखकर फेंकते हैं, Sling	फिरोजुल लुगात सफहा : 685,937
49.	चौब	लक्डी, लाठी Wood, Stick, Stack	R.P.E.D Page-130
50.	कर्तब	कमाल, हुनर, महारत, फने सिपाहगिरीStratagem,Art	फिरोजुल लुगात सफहा : 1002
51.	चकाचाक	तलवार वगैरा के चलने की आवाज़ Clashing of Swords	R.P.E.D. Page - 128
52.	अलम	फौज का निशान, झंडा Ensign, emblem	R.P.E.D.Page-267

नं.	लफ्ज़	लफ्ज़ के मा'नी और उसकी तफसील	हवाला
53.	**तहलील**	''ला इलाहा इल्लल-लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' कहना	फिरोजुल लुगात सफहा : 393
54.	**तकबीर**	''अल्लाहु अकबर'' का नारा लगाना Repeating the creed	फिरोजुल लुगात सफहा : 370
55.	**इस्तिरजाअ**	''इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन'' पढना।	R.P.E.D. Page-19
56.	**तवक्कुफ**	दैर, वक्फा, ढील, Patience, Delay	R.P.E.D Page-107
57.	**लफून-लफून**	रूमी ज़बान का लफ्ज़ है जिसके मा'नी हैं : ''अमान अमान'' Request for mercy	फुतूहुश्शाम हाशिया सफहा : 62
58.	**जिज़्या**	इस्लामी हुकूमत में गैर मुस्लिम पर सालाना मेहसूल, खिराज, टेक्ष। औरतें, बच्चे, बुढें और मज़हबी पेश्वा इससे मुस्तसना थे। Tax	फिरोजुल लुगात सफहा : 458 R.P.E.D. Page-117
59.	**फिद्‌या**	नक्द मुआवज़ा, माल या रूपिया जो अदा करके कैदी रिहा हो। Ransom	फिरोजुल लुगात सफहा : 926
60.	**गनीमत**	मैदाने जंग में दुश्मन के लश्कर से हासिल शुदा मालो अस्बाब, लूट का माल Plunder, Booty	फिरोजुल लुगात सफहा : 918 R.P.E.D. Page-282

नं.	लफ्ज़	लफ्ज़ के मा'नी और उसकी तफसील	हवाला
61.	**यरगमाल**	वोह फर्द या अफराद जो शराइत की पाबंदी की ज़मानत में दुश्मन के हवाले किये जाऐं Hostage	फिरोजुल लुगात सफहा : 1467
62.	**तौरिया**	छुपाना Concealing, Hide	R.P.E.D. Page-106
63.	**सलीब**	ईसाइयों का मुकद्दस मज़हबी निशान। इस ✝ शक्ल का। Cross	फिरोजुल लुगात सफहा : 865
64.	**मलहमा**	वोह किताब जिसमें आइंदा होने वाले फित्नों और लडाइयों का ज़िक्र हो। जमा' : मलाहिम	फुतूहुश्शाम सफहा : 167
65.	**ऊकिया**	चालीस दिरहम का वज़न, अंग्रेज़ी औंस के बराबर Ounce	फिरोजुल लुगात सफहा : 138
66.	**दिरहम/दिरम**	चांदी का सिक्का जो दो आने के बराबर होता है। दो माशा और आधी रत्ती वज़न	फिरोजुल लुगात सफहा : 622
67.	**साअ**	234 तोले का एक वज़न Equivalent to 234, tolas	फिरोजुल लुगात सफहा : 857
68.	**मिस्काल**	साढे चार माशा वज़न का सोने का एक सिक्का जो अरब में राइज है।	फिरोजुल लुगात सफहा : 1023
69.	**कतान**	एक किस्म का बारीक कपडा जिस की निस्बत येह मश्हूर है के चांदनी रात में वोह कपडा टुकडे टुकडे हो गया हो ऐसा महसूस होता है।	फिरोजुल लुगात सफहा : 990

नं.	लफ्ज़	लफ्ज़ के मा'नी और उसकी तफसील	हवाला
70.	वुस्क	एक वज़न 60 साअ का, साअ 234 तोला होता है। ऊंट भर वज़न	R.P.E.D. Page-490
71.	रान्ग	एक नर्म धात, एक किस्म का उमदा सीसा Lead	फिरोजुल लुगात सफहा : 700
72.	महमल	ऊंट का कुजावा, हवदज A camel's saddle	फिरोजुल लुगात सफहा : 1214
73.	कैलूला	दोपहर का खाना खाने के बा'द थोडा आराम करना, Afternoon Nape	फिरोजुल लुगात सफहा : 968
74.	सर ज़निश	मलामत करना, बुरा भला केहना Rebuke, Reprimand, Admonish	फिरोजुल लुगात सफहा : 787
75.	खिल्अत	वोह पौशाक जो बादशाह की तरफ से बतौरे इज़्ज़त अफज़ाई मिले	फिरोजुल लुगात सफहा : 594
76.	नकब	दीवार में बडा सुराख, सुरंग, शगाफ Digging in wall	फिरोजुल लुगात सफहा : 1369
77.	खुम्स	माले गनीमत का पांचवा हिस्सा जो बैतुलमाल में जमा' किया जाए (20%)	फिरोजुल लुगात सफहा : 596
78.	सरबराह	मुन्तज़िम, मुहतमिम, Superintendent, Manager	फिरोजुल लुगात सफहा : 787

नं.	लफ्ज़	लफ्ज़ के मा'नी और उसकी तफसील	हवाला
79.	जसत	छलांग, फांद, चोकडी, कुद फांद, फलांग to Leap	फिरोजुल लुगात सफहा : 461
80.	बाग	लगाम, रास, अनान Rein, Bridle	फिरोजुल लुगात सफहा : 171
81.	सफ बन्दी	कतार बन्दी, जंग आज़्माई, पर्रा जमाना, नबरद आज़्माई, Formation	फिरोजुल लुगात सफहा : 863
82.	नबरद आज़्मा होना	लडाई करना, जंग करना, मुकाबला Battle, war	फिरोजुल लुगात सफहा : 1350
83.	तैग ज़नी	तलवार चलाना, शमशीर ज़नी	फिरोजुल लुगात सफहा : 404
84.	ज़र्ब	मार, चोट, धक्का, ज़ख्म, सदमा	R.P.E.D. Page-244

मुल्के शाम में अहम किरदार अदा करने वाले मुजाहेदीन

(अलिफ)

हज़रत अबू उबैदा आमिर बिन जर्राह
हज़रत अबू सुफ्यान बिन हर्ब बिन उमैया
हज़रत अबान बिन उस्मान बिन अफ्फान
हज़रत अबू हुरैरा अद्दोसी
हज़रत अबू अय्युब अन्सारी
हज़रत असद बिन जाबीर
हज़रत अबी मुस्लिम हज़रमी
हज़रत अबू ज़र गिफारी
हज़रत अबू ज़ुबैद बिन आमिर ज़ुबैदी
हज़रत अस्वद बिन सुवैद माज़नी
हज़रत अबूलुबाबा बिन मुन्ज़र
हज़रत उसामा बिन ज़ैद ताई
हज़रत अबूजुन्दल बिन सुहैल
हज़रत असैद बिन उसामा
हज़रत इरम बिन फैयाज़ ईसा
हज़रत औस बिन खालिद रबई
हज़रत अश्हब बिन सवाद
हज़रत अबान बिन सईद बिन आस

(बा)

हज़रत बक्र बिन अब्दुल्लाह तमीमी
हज़रत बिलाल बिन आमिर यश्करी
हज़रत बिलाल बिन हुमामा हबशी (मोअज़्ज़िने रसूल)
हज़रत बादर बिन औन हुम्यरी
हज़रत बासील बिन औन बिन मुस्लेमा

(सा)

हज़रत साबित बिन अल्कमा

(जिम)

हज़रत जअद बिन जीरान यश्करी
हज़रत जरीर बिन नोफिल हुम्यरी
हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी
हज़रत जाबिर बिन सईद
हज़रत जुज़अल बिन आसिम ताई
हज़रत जुन्दब बिन आमिर बिन तुफैल अद्दोसी

(हा)

हज़रत हस्सान बिन औफ
हज़रत हुमरान बिन असद हज़रमी
हज़रत हस्सान बिन नो'मान ताई
हज़रत हब्बान बिन तमीम
हज़रत हर्स बिन अब्दुल्लाह
हज़रत हर्स बिन हिशाम
हज़रत हारिस बिन सलीम
हज़रत हमज़ा बिन उमर
हज़रत हर्ब बिन अदी
हज़रत हुज़ैफा बिन यमान

(खा)

हज़रत खालिद बिन वलीद बिन अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन मख्ज़ूमी कुरैशी

(दाल)

हज़रत दामिस अबूल हुलूल
हज़रत दारिम बिन साबिर

(ज़ाल)

हज़रत जुलकुलाअ हुम्यरी

(रे)

हज़रत रबीआ बिन मालिक तमीमी
हज़रत राशिद बिन सअद
हज़रत रबीआ बिन आमिर
हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई
हज़रत राफेअ बिन अब्दुल्लाह सहमी
हज़रत राशिद बिन कैस नखई
हज़रत राफेअ बिन सुहैल
हज़रत राशिद बिन सईद
हज़रत राशिद बिन जुबैर
हज़रत रिफाआ बिन जुहैर यमनी

(ज़े)

हज़रत जुमर बिन सईद बयाज़ी
हज़रत जुबैर बिन अव्वाम (हवारीये रसूल)
हज़रत ज़हीर बिन अकालुद्दम
हज़रत ज़ैद बिन वहब

(सीन)

हज़रत सैफ बिन उबाद हज़रमी
हज़रत सलमा बिन हिशाम
हज़रत सईद बिन जबीर अद्दोसी
हज़रत सालिम बिन फरकद यरबूआ
हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफैल अदवी
हज़रत सईद बिन आमिर बिन जरीह अन्सारी
हज़रत सनान बिन औस अन्सारी
हज़रत सईद बिन अम्र गनवी
हज़रत सुराका बिन कादिम खनी
हज़रत सालिम बिन अदी खज़ाई
हज़रत सईद बिन खालिद बिन सईद
हज़रत सैफ बिन खालिद बिन सईद
हज़रत सैफ बिन दिफाअ बाहली
हज़रत सईद बिन जबीर तमीमी
हज़रत सुहैल बिन सबाह ईसा
हज़रत सलाम बिन गनम अदवी
हज़रत सलमा बिन हबीब
हज़रत सुहैल बिन उमर तमीमी
हज़रत सलमा बिन सैफ यरबूई
हज़रत सालिम बिन हमीद नख्ई
हज़रत सुराका बिन मुरादस कुन्दी (दास के मालिक)
हज़रत सअद बिन सईद हनफी
हज़रत सालिम बिन मफरह

(शीन)

हज़रत शदाद बिन औस
हज़रत शुरहबील बिन हसना (कातिबे रसूल)

(साद)

हज़रत साबिर बिन हनाना लैसी
हज़रत सफवान बिन आमिर अस्लमी
हज़रत सफवान बिन फज़लुल–मो'तल सलमी
हज़रत सफवान बिन उमैया
हज़रत साबिर बिन औस

(ज़ाद)

हज़रत देहाक बिन हस्सान ताई
हज़रत ज़िरार बिन अज़वर बिन सनान बिन तारिक हिजाज़ी
हज़रत ज़हर बिन गानिम
हज़रत देहाक बिन सुफ्यान
हज़रत ज़खर बिन हर्ब उमवी
हज़रत देहाक बिन हस्सान (हज़रत खालिद बिन वलीद के हम शक्ल)

(तोय)

हज़रत तल्हा बिन नौफल आमरी

(ऐन)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन कर्त यमानी
हज़रत अब्दुल्लाह बिन रबीआ
हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र अद्दोसी
हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर इब्ने खत्ताब
हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर बिन अबी तालिब
हज़रत अब्दुल्लाह बिन यासिर
हज़रत अब्दुल्लाह बिन उवैस
हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा सहमी
हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस जहनी
हज़रत अब्दुल्लाह बिन कर्त अज़्दी
हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद
हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र सिद्दीक
हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हमीद हजमी
हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी रबीआ आमरी
हज़रत अब्दुर्रहमान बिन मुआज़ बिन जबल
हज़रत अब्दुर्रहमान बिन उबैद
हज़रत आमिर बिन अबिल वक्कास
हज़रत आमिर बिन तुफैल अद्दोसी
हज़रत आमिर बिन रबीआ
हज़रत आमिर बिन कैस
हज़रत आमिर बिन काकुल फज़ारी
हज़रत उबाद बिन तअबा नबहानी
हज़रत उबाद बिन सईद हज़रमी
हज़रत उबादा बिन राफेअ
हज़रत उबादा बिन सामित
हज़रत अब्बास बिन कैस
हज़रत अब्दलमुनज़िर बिन औफ
हज़रत उबैद बिन औस
हज़रत अम्र बिन अलआस बिन वाइल कर्शी सहमी
हज़रत अम्र बिन मअदी कर्ब ज़ुबैदी
हज़रत अम्र बिन सअद यश्करी
हज़रत अम्र बिन उमैया ज़मरी
हज़रत उतबा बिन अबीवक्कास ज़हरी
हज़रत आसिम बिन खौल यरबूई

हज़रत आसिम बिन अम्र
हज़रत अदी बिन हातिम ताई
हज़रत अदी बिन सेहाब
हज़रत अयाज़ बिन सुहैल बिन सईद ताई
हज़रत अयाज़ बिन गनम अशअरी
हज़रत औन बिन सालिम
हज़रत औन बिन कारिब
हज़रत औफ बिन साइद
हज़रत इकरमा बिन अबी जहल
हज़रत अमार बिन यासिर अबसी
हज़रत अमारा सदोसी
हज़रत उमैर बिन सईद बिन उमैर अन्सारी
हज़रत उरफा बिन नासेह नखई
हज़रत उर्वा बिन महलहल बिन यज़ीद अल जबल
हज़रत अतिया बिन साबित
हज़रत अता बिन जअद फसानी
हज़रत ईदाक बिन हाशिम कर्शी
हज़रत ईद बिन बाहर
हज़रत अब्दुर्रहमान बिन मालिक बिन हर्स उश्तर नखई
हज़रत उतबा बिन आस

(गैन)

हज़रत गालिबा बिन सालिम
हज़रत गानिम बिन अब्दुल्लाह
हज़रत गयास बिन जरीद आमरी
हज़रत गयाज़ बिन गनम बिन तारिक हिलाली

(फा)

हज़रत फतहान बिन ज़ैद ताई
हज़रत फज़ल बिन अब्बास बिन अब्दुलमुत्तलिब

(का)

हज़रत कारअ बिन मुरमला
हज़रत कसामा बिन अलकतानी
हज़रत कैस बिन आमिर अन्सारी
हज़रत कैस बिन सईद खज़–रजी
हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी
हज़रत कैस बिन सईद
हज़रत का'कअ बिन अम्र तमीमी

(क)

हज़रत कअब बिन मालिक अन्सारी
हज़रत कअब बिन जुमरा जुमरी

(मीम)

हज़रत माजिद बिन रौयम ईसा
हज़रत माज़न बिन आमिर
हज़रत मालिक बिन हर्स उश्तर नखई
हज़रत मालिक बिन कनास मुरादी
हज़रत मालिक बिन नज़र
हज़रत मिरकाल हाशिम बिन उतबा बिन अबी वक्कास
हज़रत मस्रूक बिन नहान ब–नसी
हज़रत मसऊद बिन औन जमही
हज़रत मुसय्यब बिन नजीबतुल फज़ारी
हज़रत मश्अर बिन हस्सान
हज़रत मुसअब बिन महारिब यश्करी

हज़रत मुराह बिन मराहिम हिन्दी
हज़रत महकम बिन अदी नबहानी
हज़रत मुखल्लद बिन औफ कुन्दी
हज़रत मुतरब बिन अब्दुल्लाह तमीमी
हज़रत मआज़ बिन जबल
हज़रत मुअम्मर बिन राशिद
हज़रत मुगीस बिन कैस
हज़रत मुगैरा बिन शो'बा
हज़रत मफरह बिन आसिम
हज़रत मुफर्रत बिन जअदा
हज़रत मिकदाद बिन उमर रबई
हज़रत मिकदाद बिन अस्वद कुन्दी
हज़रत मुल-तमिस बिन आमिर
हज़रत मुअम्मर बिन खुवैलद सकसकी
हज़रत मैसरा बिन मस्रूक अबसी
हज़रत मैसरा बिन कैस

(नून)

हज़रत निबहा बिन मुर्राह
हज़रत नजम बिन मुफरह कतानी
हज़रत नजम बिन मुफरह फहरी
हज़रत नौमान बिन अज़्दी
हज़रत नौमान बिन मकरन
हज़रत नईम बिन अदी
हज़रत नौफिल बिन दारम

(वाव)

हज़रत वासिला बिन अस्का
हज़रत वाजिद बिन अबिलऔन
हज़रत वक्कास बिन औफ अदवी
हज़रत वहबान बिन सुफ्यान

(हे)

हज़रत हाशिम बिन सईद ताई
हज़रत हश्शाम बिन अल्आस
हज़रत हिलाल बिन मुर्राह
हज़रत हिलाल बिन ज़ैद ताई
हज़रत हाशिम बिन उतबा

(या)

हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान
हज़रत यसार बिन औन
हज़रत या'कूब बिन सबाह ताई

मुल्के शाम की जंगों में शरीक ख्वातीने इस्लाम

1. हज़रत खौला बिन्ते अज़्वर
2. हज़रत अफीरा बिन्ते अफ्फार हुमीरीया
3. हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र
4. हज़रत हिन्दा बिन्ते उतबा (ज़ौजा अबू सुफियान)
5. हज़रत उम्मेहकीम बिन्ते हर्स
6. हज़रत उम्मे तमीम (ज़ौजा खालिद बिन वलीद)
7. हज़रत उम्मे अबान बिन्ते उतबा बिन रबीआ
8. हज़रत फरूआ बिन्ते अम्लूक
9. हज़रत लिना बिन्ते सवा
10. हज़रत सलमा बिन्ते नौमान बिन मकरन
11. हज़रत सलमा बिन्ते ज़ारा बिन उरवा
12. हज़रत लुब्ना बिन्ते सालिम
13. हज़रत उम्मे अबान ज़ौजा अबान बिन सईद बिन आस
14. हज़रत सलमा बिन्ते लवी बिन आसिम
15. हज़रत उम्मे अबान ज़ौजा इकरमा बिन अबी जहल
16. हज़रत गज़्ना बिन्ते आमिर
17. हज़रत रमला बिन्ते तल्हा जुबैदी
18. हज़रत लीना बिन्ते जरीर हुमैरिया
19. हज़रत सईद बिन्ते आसिम खौलानी
20. हज़रत खौला बिन्ते सअलबा अन्सारिया
21. हज़रत कऊब बिन्ते मालिक बिन आसिम
22. हज़रत नअम बिन्ते कनाज़
23. हज़रत ज़रीआ बिन्ते हर्स
24. हज़रत उम्मे हकीम बिन्ते अअवस
25. हज़रत सलमा बिन्ते आसिम
26. हज़रत मज़रआ बिन्ते अमलुक हुमैरिया

"मुल्के शाम में शहीद होने वाले अहम मुजाहेदीन"

अस्माए शोहदा ए किराम

''फलस्तीन''

हज़रत सईद बिन खालिद बिन सईद
हज़रत सुराका बिन अदी
हज़रत नौफिल बिन आमिर
हज़रत सईद बिन कैस
हज़रत अब्दुल्लाह खुवैलद माज़नी
हज़रत सालिममौला आमिर बिन बदर यरबूई
हज़रत जाबिर बिन राशिद हज़रमी
हज़रत औस बिन सलमा हवाज़नी

''अजनादीन''

हज़रत सलमा बिन हिश्शाम मख्ज़ूमी
हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र अद्दोसी
हज़रत हिश्शाम बिन अल्आस अस्सहमी
हज़रत हबान बिन सुफ्यान
हज़रत ज़र बिन औफ तमीरी
हज़रत राअत बिन रहीन खज़रजी
हज़रत कादिम बिन मिकदाम ज़हरी
हज़रत जुलयसार बिन खिज़रजा तमीमी
हज़रत हिज़ाम बिन सालिम अनवी
हज़रत सईद बिन आस अबीलैला कलाबी
हज़रत उमिया बिन हबीब बिन यसार
हज़रत अहद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुद-दार
हज़रत मालिक बिन नौमान ताई
हज़रत सालिम बिन तल्हा गिफारी

अस्माए शोहदा ए किराम

''दमिश्क''

हज़रत अबान बिन सईद बिन आस
हज़रत खालिद बिन सईद

''हुमुस''

हज़रत इकरमा बिन अबी जहल

''यरमूक''

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अख्ज़म
हज़रत सुवैद बिन बहेराम
हज़रत आमिर बिन तुफैल अद्दोसी
हज़रत जुन्दब बिन आमिर बिन तुफैल अद्दोसी
हज़रत यूनिस (नजीब) राहबर

''हल्ब(नहर)''

हज़रत सईद बिन मफलज
हज़रत इबाद बिन आसिम नजीबी
हज़रत जुमर बिन आमिर बयाज़ी
हज़रत खाज़िम बिन शहाब
हज़रत काएला बिन महस तफरी
हज़रत कैस बिन तालिब जुमरी

''हल्ब (किल्ले' के बाहर)''

हज़रत हस्सान बिन हन्ज़ला राबई
हज़रत अता बिन सामिर मलाबी
हज़रत सुरका बिन मुस्लिम बिन औफ अदवी

अस्माए शोहदा ए किराम

हज़रत ज़ैद बिन सैफ अदवी
हज़रत सवाद बिन मालिक अदवी
हज़रत आमिर बिन अस्ला राबई
हज़रत मरवान बिन उबैद राबई
हज़रत मालिक बिन जुजअली राबई
हज़रत सुलैमान बिन रखाअ आमरी
हज़रत आसिम बिन फादह अदवी
हज़रत मुर्राह बिन सुफ्यान अदवी

''हल्ब(जंगल)''

हज़रत मनादिस बिन देहाक ताई
हज़रत यासिर बिन औफ ताई
हज़रत फज़्ल बिन साबित ताई
हज़रत मुईता बिन आमिर ताई

''हल्ब(किल्ले के अंदर)''

हज़रत अबूहामिद बिन सुराका तमीरी
हज़रत औस बिन आमिर जर्री
हज़रत फारिग बिन मुसय्यब तमीमी
हज़रत मुज़ारा बिन शदाद अनवी
हज़रत रबीअ बिन हाबिर अब्दरी
हज़रत हिलाल बिन यअरब हश्मी
हज़रत उमिया बिन कादह दारी
हज़रत अस्वद बिन मलाईब बिन मिकदाम हज़रमी

''बसरा''

हज़रत बद्र बिन हरमला नखई
हज़रत अली बिन रिफाआ हमदानी
हज़रत माज़न बिन औफ हमदानी
हज़रत सहल बिन नाशता बहीली

अस्माए शोहदा ए किराम

हज़रत हाबिर सरारा हमदानी
हज़रत रबीअ बिन हामिद हमदानी
हज़रत इबाद बिन बशीर बहीली

''मर्जुल कबाइल (पहाडी इलाका)''

हज़रत हर्स बिन यरबू
हज़रत सहम बिन जाबिर
हज़रत अब्दुल्लाह बिन साइद
हज़रत जरीर बिन सालेह
हज़रत ईद बिन बाहर
हज़रत नौमान बिन बहीर
हज़रत ज़ैद बिन अरकम
हज़रत ज़िरादा बिन हातिम
हज़रत रवाहा बिन सुहैल

मुल्के शाम में कत्ल होने वाले अहम रूमी सरदार

नं.	मक्तूल का नाम	मक्तूल का मुख्तसर तआरूफ	किसने कत्ल किया	ब मकाम
1	बतरीक बातलीक	दो हज़ार सवारों का सरदार	हज़रत रबीआ बिन आमिर	तबूक
2	बतरीक जरजीस	ऐज़न- और बतरीक बातलीक का भाई	हज़रत रबीअ बिन आमिर	तबूक
3	बतरीक लूका बिन शम्आन	ऐज़न-और शुर्ता नाम के मकाम का हाकिम	आम मुजाहिदों की यल्गार	तबूक
4	बतरीक सलीया	ऐज़न-और अस्कलान और गज़्ज़ा का हाकिम	आम मुजाहिदों की यल्गार	तबूक
5	बतरीक रूबीस	एक लाख के रूमी लश्कर का सरदार	आम मुजाहिदों की यल्गार	फिलिस्तीन
6	बतरीक सरदार दरीहान	हरकिल ने बसरा की कुमक करने भेजा बसरा का हाकिम बना	हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र	बसरा
7	बतरीक इज़राईल	हाकिमे दमिश्क	हज़रत खालिद बिन वलीद	दमिश्क
8	रूमी सरदार कलूस	हरकिल ने पांच हज़ार सवार दे कर दमिश्क की कुमक को भेजा	हज़रत खालिद बिन वलीद	दमिश्क
9	हमरान बिन वरदान	रूमी सरदार वरदान का बेटा	हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर	बैतुल लहिया

नं.	मक्तूल का नाम	मक्तूल का मुख्तसर तआरूफ	किसने कत्ल किया	ब मकाम
10	बतरीक बुलीस बिन बल्का	कूच करके दमिश्क से जाते हुए इस्लामी लश्कर पर हमले की सरदारी ली	बहुकमे हज़रते खालिद, हज़रत मुसय्यब बिन नजबुतन अन्सारी	मुर्ज राहित
11	बतरीक बतरस बिन बल्का	बतरीस बुलिस का भाई – दस हज़ार पैदल का सरदार	हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर	नहरे इस्तरयाक
12	बतरीक तिबरीया	हाकिमे तिबरीया	हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर	अजनादिन
13	बतरीक तिबरीया	अमान का हाकिम	हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर	अजनादिन
14	मारिस बिन मुनाफ	अमान के अतराफ के इलाके का हाकिम था	मुजाहिदों की आम यल्गार	अजनादिन
15	मुर्कस बिन लुब्ना	समीन का हाकिम	मुजाहिदों की आम यल्गार	अजनादिन
16	दमद बिन काला	जोलान, कहफ और रकीम का हाकिम	मुजाहिदों की आम यल्गार	अजनादिन
17	लावन बिन जंबना	जबलुस-सवाद और आमला का हाकिम	मुजाहिदों की आम यल्गार	अजनादिन
18	बतरीक मर्ज़ऊन बिन रूवैस	गर्रा और अस्कलान का हाकिम	मुजाहिदों की आम यल्गार	अजनादिन
19	नजा बिन अब्दुलमसीह	हलहुल और इसके मु-त-अल्लिक बिलाद का हाकिम	मुजाहिदों की आम यल्गार	अजनादिन

नं.	मक्तूल का नाम	मक्तूल का मुख्तसर तआरूफ	किसने कत्ल किया	ब मकाम
20	जरकयास बिन जर्दन	याफा और रमला का हाकिम	मुजाहिदों की आम यल्गार	अजनादिन
21	बतरीक मुरीदनस	अर्जे़ बल्का का हाकिम	मुजाहिदों की आम यल्गार	अजनादिन
22	बतरीक कुरक	ताबलिस का हाकिम	मुजाहिदों की आम यल्गार	अजनादिन
23	बतरीक सरदार वरदान	हुमुस का हाकिम और नव्वे हज़ार रूमी लश्कर का सरदार	हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर	अजनादिन
24	बतरीक जरजी बिन काला	बाबे जाबिया से रातमें अबू उबैदा के गिरोह पर हमला किया	हज़रत अबूउबैदा बिन जर्राह	दमिश्क
25	हाकिमे दमिश्क तूमा	हरकिल बादशाह का दामाद	हज़रत खालिद, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र	मुर्ज दीबाज
26	बतरीक हरबीस	हाकिमे दमिश्क तूमा का वज़ीर	हज़रत खालिद बिन वलीद	मुर्ज दीबाज
27	बतरीक लूका	कन्सरीन का हाकिम	हज़रत खालिद बिन वलीद	कन्सरीन
28	बतरीक मरीस	हुमुस का हाकिम	हज़रत सईद बिन ज़ैद	हुमुस
29	बतरीक दरीहान	एक लाख रूमी फौज का सरदार	हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर	यरमूक
30	बतरीक मरबूस	लान नाम के मकाम का बादशाह और रूमी सरदार	हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर	यरमूक

नं.	मक्तूल का नाम	मक्तूल का मुख्तसर तआरूफ	किसने कत्ल किया	ब मकाम
31	हाकिम रूसिया बतरीक	लान के मक्तूल बादशाह मरबूस का दामाद	हज़रत खालिद बिन वलीद	यरमूक
32	बतरिक नस्तूर	मरअश का बादशाह और हरकिल का दामाद	हज़रत खालिद बिन वलीद	यरमूक
33	बतरीक सरदार जरजीर	एक लाख रूमीं सिपाहियों का सरदार	हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह	यरमूक
34	बतरीक सरजिस	सरदार जरजीर का रिश्तेदार और रूमी लश्कर का अहम रुकन	हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर	यरमूक
35	बतरीक सरदार बाहान अरमनी	रूमी लश्कर का सिपेहसालारे आ'ज़म	हज़रत नौमान बिन अज़्दी या हज़रत आसिम बिन खौल यरबूई	यरमूक दमिश्क
36	हाज़िम बिन अब्देयगूस गस्सानी	जबला का भतीजा और नस्रानी अरबों के लश्कर का सरदार	हज़रत दामिस अबूल-हलूल	इन्ताकिया
37	अनान बिन जर्हम गस्सानी	बाबे जबला शहर का हाकिम और जबला बिन ऐहम का चचाज़ाद भाई	हज़रत मआज़ बिन जबल	लाज़िकिया
38	बतरीक दादरीस	किल्ल-ए ए'ज़ाज़ का हाकिम और हज़रत यूकना का चचाज़ाद भाई	इस के बेटे हज़रत लूका बिन दादरीस	ए'ज़ाज़

नं.	मक्तूल का नाम	मक्तूल का मुख्तसर तआरूफ	किसने कत्ल किया	ब मकाम
39	बालीस बिन रैबूस	हिरकल का हमशक्ल, खादिमे खास जो हिरकल की जगह ठहरा था	ब हुक्मे हज़रत अबू उबैदा गर्दन मारी गई	इन्ताकिया
40	बतरीक फलीस बिन जरीह	हिरकल बादशाह का मुसाहिब और मुकर्रब	हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफा	मुर्जुल कबाइल
41	बतरीक कैदमून	हिरकल का मो'तमिद और कुस्तनतीन का खास मुहाफिज़ और दायां बाज़ू	तलीहा बिन खुवैलद असदी जिस ने नबुव्वत का दा'वा किया था मगर बा'द में तौबा कर ली।	नख्ल
42	बतरीक जर्फास	तीन हज़ार का लश्कर ले कर तराबलिस के किल्ले की हिफाज़त करने कैसारिया गया था	हज़रत यूकना अब्दुल्लाह	तराबलिस
43	बतरीक अरमोविल बिन किस्ता	किल्ल-ए सूर का हाकिम	हज़रत यूकना अब्दुल्लाह	किल्ल-ए सूर

वोह रूमी हाकिम और बतारका जो ईमान लाए और इस्लाम की नुमायां खिदमात अंजाम दीं

नं. **अस्माए गिरामी**

1 हाकिमे बसरा हज़रत रूमास

2 हाकिमे हल्ब हज़रत यूकना अब्दुल्लाह

3 हाकिमे हल्ब यूकन्ना के छोटे भाई जिनको हाकिम यूकना ने शहीद किया वोह हज़रत युहना

4 हाकिमे ए'ज़ाज़ के बडे बेटे लूका बिन दादरीस जिन्हों ने अपने बाप हाकिम दादरीस को कत्ल किया

5 हाकिमे ए'ज़ाज़ के छोटे बेटे लावन बिन दादरीस जिन्हों ने हज़रत यूकना को आज़ाद कर दिया

6 रूमतुल कुबरा के हाकिम हज़रत फलीतानूस जिन्हों ने इन्ताकिया की जंग में नुमायां काम किया।

7 दमिश्क का रूमी पेश्वा राहबर यूनिस (नजीब) जो हज़रत खालिद को हाकिम दमिश्क तूमा के तआकुब में मर्जुद-दीबाज तक ले गए।

8 हाकिमे सूर के चचाज़ाद भाई बासील बिन मिनजाईल जिन्हों ने हुज़ूर अकदस का दीदार बहीरा राहीब के सोमआ में किया था। हज़रत यूकना को कैद से आज़ाद कर दिया।

9 सूबए फलस्तीन के सरदार हज़रत कअब बिन अहबार अमीरूल मो'मिनीन की खिदमत में बैतुल मुकद्दस आए। ईमान कुबूल किया और फिर अमीरूल मो'मिनीन के हमराह मदीना मुनव्वरह आए।

वोह रूमी जिन्हों ने इस्लाम कुबूल नहीं किया मगर अपने और अपने अह्लो अयाल के लिये अमान हासिल करने की शर्त पर इस्लामी लश्कर की मदद की

1 दाउद नसरानी, सरदार वरदान का ऐलची – हज़रत खालिद को शहीद करने के लिये वरदान के मक्रो फरेब से हज़रत खालिद को आगाह कर दिया । ब मकाम अजनादीन

2 यूसा बिन कर्स बतरीक दमिश्क – किल्ल-ए दमिश्क की दीवार से अपने मुलहिक मकान से हज़रत खालिद के लश्कर को किल्ले में दाखिल कर दिया ।

3 हुमुस का बाशिन्दा अबूल जईद रूमी – रूमी लश्कर से इन्तेकाम लेते हुए मक्रो फरेब करके जंगे यरमूक में हज़ारों रूमी सिपाहियों को याकूसा नदीमें गर्क कर दिया ।

अहम मकामात के पुराने नाम और उनके मौजूदह जदीद अंग्रेज़ी नाम

नं.	मकाम का नाम	जदीद अंग्रेज़ी नाम
1	मुल्के शाम	Syria
2	दमिश्क	Damascus
3	बसरा	Bassorah
4	इन्ताकिया	Anticoh
5	बैतुल मुकद्दस	Jerussalem
6	तुर्क	Turkey
7	हल्ब	Allepo
8	हब्शा	Ethiopia / Abyssinia
9	इस्कन्दरिया	Alexandria
10	मिस्र	Egypt
11	हुमुस	Homs
12	उरदन	Jordan
13	अरमन	Armenia
14	फलस्तिन	Palestine
15	फारस	Persia / Iran
16	इस्फाहान	Ispahan
17	कुस्तुन-तुनिया	Istambol
18	कैसारीया	Strato's Tower
19	काहेरा	Cairo
20	हिजाज़	Saudi Arabia
21	निहाविन्द	A city in Iraq
22	नज्द	Riyadh (Saudi Arabia)

''उन मकामात के नाम जिन का ज़िक्र इस किताब में है''

मकामात के नाम

(अलीफ)

ओहद
अबवा
अवतास
ईला
अरिका
अजनादीन
अर्ज़े समावा
अर्ज़े बलका
अफरन्ज
अब्रस
उरदुन
ए'ज़ाज़
अरता
इन्ताकिया
अदरगमा
अर्ज़े अवासिम
अरमन
उकसर
इस्कन्दरिया

मकामात के नाम

(बा)

बदर
बवाता
बतने नख्ला
बीरे मऊना
बैते लहिय्या
बिलादे अवासिम
बअलबक
बैतुल मुकद्दस
बहरे अस्वद
बुक्का जुन्दरास
बराआ
बन्ज
बैरूत
बसरा
बेकाअ
पुल उम्मे हकीम
बतात
बल्दा

मकामात के नाम

(ता)

तबूक
तदम्मुर
तल बनी सैफ
तीरा
तुर्क
ताब्लिस

(सा)

सनियतुल इकाब

(जिम)

जमूम
जर्फ
जबला
जबले बारिक
जरामका
जौसिया
जज़ीरए कयरिस
जबले अबी कुबैस
जाबिया
जामिआ
जौलान
जज़ीरए अफ्रीतस
जबलुस सवाद
जिद्दा
जु'राना

मकामात के नाम

(हा)

हुनैन
हुदैबिया
हवाज़्न
हुमुस
हिस्ने अबील कदस
हद्दे खलीज
हुमात
हल्ब
हारिम
हलहूल
हज़्रे मौत
हिजाज़

(खा)

खैबर
खब्त
खवाज़िन

(दाल)

दवमतुल जुन्दल
दैरूल बकीअ
दरास
दस्तक
दैरे सम्आन
दहाज़िम

मकामात के नाम

दमिश्क
दैरे खालिद

(ज़ाल)

ज़ातुर रिकाअ
ज़ी कर्द
ज़ातुस सलासिल
ज़ातुल मनार
ज़ुल हुलैफ़ा

(रा)

रू-मतुल कुबरा
रूसिया
रावन्दान
रू-मिया
रमला
रनिया
रकीम
रूमान

(ज़े)

ज़राआ

(सीन)

सुवैक
सैफुल बहर
समीन
सुवी
सिकन्दर
सख्ना
सल्मीना
सूरिया
सुवैद
सकालिया
सबा
सकबाबर्स
सतीह

(शीन)

शहूरा
शी—रज़
शर्ता
शक

(साद)

सूर
सैकालिया
सय्अब
सन्आ

(तोय)

ताइफ
तर्फ
तर्तूस
तराब्लिस

मकामात के नाम

(ऐन)

अशीरा
ऐस
आमिला
इराक
ऐनुत तमर
अर्का
उमूरिया
अम
इक्का
अस्कलान
अमात

(गैन)

गतफान
गज़्ज़ा
गज़्वा
गौता
गुमूस

(फा)

फिदक
फर्ज़ा
फारस
फलिस्तीन
फागिना

(काफ)

कय्नकाअ
कुरकरतुल किरा
कराकर
कवरस
किल्ला नजम
कामिया
कुस्तुन-तुनिया
कैसारिया
कन्सरीन
कादसिया

(काफ)

कदीद
कफरुल अज़ीज़ा
कफर तात
कहफ
कैसा
कोहे सलमा
कोहे इजा

(लाम)

लाज़िकया
लान
लिब्रिया
लब्वा

मकामात के नाम

(मीम)

मक्कए मुअज़्ज़मा
मदीनए मुनव्वरह
मैफा
मारिब
मुर्जे राहित
मौता
मुर्जे सगीर
मुअर्रात
मुर्जे सलसला
मीरमैन
मुर्जे दीबाज
मिस्र
मुर्जे वाबिक
मरअश
मुर्जे कबाइल
मईआ
माहिया
मारिहा
मआन

(नून)

नजरान
नज्द
नहरे इस्तिरयाक
नहरे मक्लूब
नख्ल
नहरे साहूर
नहरे मा'लून
निहावन्द
नाअम

(वाव)

वादीए खरार
वादीए हयात
वज़ीरे खालिद
वादियुल कुरा

(या)

यमन
याफा
याकूसा
यरमूक

मआखज़ व मराजेअ

नं.	अस्माए कुतुब	मुसन्निफ, मुफस्सिर, मुरत्तिब, मुअल्लिफ, मुतर्जम
1	कन्जुल ईमान फी तर्जुमतिल कुरआन	इमाम अहमदरज़ा मोहद्दिस बरेल्वी (आ'ला हज़रत)
2	बद्रुल अन्वार फी आदाबिल आसार	इमाम अहमदरज़ा मुहद्दिस बरेल्वी (आ'ला हज़रत)
3	मदारिजुन नबुव्वत	शैखे मुहक्किक शाह अब्दुलहक्क मुहद्दिस देहल्वी
4	हदाइके बख्शिश	इमामे इश्को महब्बत हज़रत रज़ा बरेल्वी
5	मगाज़ियुस सादिका	इमाम अजल अल्लामा मुहम्मद अहमद कुस्तलानी
6	मवाहिबुल लदुन्निया अलश शमाइलुल मुहम्मदिया	इमाम अजल अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र अल वाकदी
7	तफसीर खज़ाइनुल इरफान	सद्रुल अफाज़िल मौलाना सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी
8	फुतूहूश्शाम	अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र अल वाकदी
9	अन्वारुल इन्तेबा फी हल्ले निदाए या रसूल्ललाह	इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिस बरेल्वी (आ'ला हज़रत)
10	बरकातुल इम्दाद ले अहलिल इस्तिमदाद	इमाम अहमदरज़ा मुहद्दिस बरेल्वी
11	मुनीरूल ऐन फी हुक्मे तकबीलुल इबहामैन	इमाम अहमदरज़ा मुहद्दिस बरेल्वी

नं.	अस्माए कुतुब	मुसन्निफ, मुफस्सिर, मुरत्तिब, मुअल्लिफ, मुतर्जम
12	फीरोजुल लुगात	अल्हाज मौल्वी फीरोजुद्दीन
13	तक्वियतुल ईमान	मौल्वी इस्माईल देहल्वी (वहाबी)
14	फतावा रशीदिया	मौल्वी रशीद अहमद गंगोही (वहाबी)
15	बहिश्ती ज़ैवर	मौल्वी अशरफअली थान्वी (वहाबी)
16	कुरआने मजीद का तर्जुमा	मौल्वी मेहमुदुल हसन देवबन्दी (वहाबी)
17	मुख्तसर सीरते नब्विया	मोल्वी अ ।शकूर काकोरवी (वहाबी)
18	कुरआने मजीद का तर्जुमा	मोल्वी अशरफअली थानवी (वहाबी)
19	हुस्नुल अज़ीज़	ख्वाजा अज़ीजुल हसन खलीफा थान्वी (वहाबी)
20	कमालाते अशरफिया	मौल्वी ईसा इलाहाबादी (वहाबी)
21	The Oxford World Atlas Book	25th Edlion
22	The New Royal Persian Eng. Dictionary	Dr. S. C. Paul (3rd Edlion)

अज़ :- फकीहे मिल्लत मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी (रहमतुल्लाह तआला अलैह)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

लकल हम्दो या अल्लाहो ! वस्सलातो वस्सलामो अलैक या रसूलुल्लाह !

अर्से से एक ऐसी किताब की सख्त ज़रूरत मेह्सूस की जा रही थी जो आसान उर्दू ज़बान में इस्लामी तारीख पर मुश्तमिल हो और बिल-खुसूस उस में आशिकाने मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की जांनिसारी व सरफरोशी की मुफस्सल दास्तानें हों । बे-हम्देही तआला **अलहाज मौलाना अब्दुस्सत्तार साहिब हमदानी बरकाती रज़्वी नूरी** मुतवत्तिन पोरबन्दर (गुजरात) ने ज़ेरे नज़र किताब लिख कर वह ज़रूरत पूरी कर दी ।

हम ने कईं जगहों से इस का थोडा थोडा हिस्सा मुतालआ किया । जितना पढा इसे बहुत खूब पाया । मौलाना मौसूफ ने शुरू में हल्ले लुगात भी लिख दिया है, जिस से किताब के समझने में बडी आसानी होती है । और कईं सफ्हात पर फैली हूई मुफस्सल फेहरिस्ते मज़ामिन के साथ दूसरी भी कईं तरह की फेहरिस्तें तह्रीर की हैं । जिन से किताब की इफादियत बहुत बढ गई है । **अव्वल** मुल्के शाम में अहम किरदार अदा करने वाले मुजाहेदीन । **दोम** मुल्के शाम में शुजाअत दिखा कर रूमियों से जंग करने वाली इस्लामी ख्वातीन । **सोम** मुल्के शाम, फलस्तीन, अजनादीन, दमिश्क, हुमुस, यर्मूक और हल्ब वगैरा में शहीद होने वाले अहम मुजाहेदीन । **चहारुम** मुल्के शाम में कत्ल होने वाले अहम रूमी सरदार । **पन्जुम** वह रूमी हाकिम और बतारका जो ईमान लाए और इस्लाम की नुमायां

खिदमत अंजाम दीं। **शशुम** वह रूमी सरदार जिन्हों ने इस्लाम तो कबूल नहीं किया मगर अपने और अपने अह्लो अयाल के लिये अमान की शर्त पर इस्लामी लश्कर की मदद की। **हफ्तुम** उन मकामात के नाम जिन का ज़िक्र इस किताब में है और साथ ही अह्म मकामात के पुराने और मौजूदह अंग्रेज़ी नाम भी तह्रीर कर दिये हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है। ऐसे लोगों को पहले मक्का आना चाहिये कि वहां तलवार पैगम्बरे इस्लाम के हाथ में नहीं थी बल्कि कुफ्फारे मक्का के हाथों में थी। बेशक वहां तलवारें भी चलीं, नैज़े भी उठे, तीर भी बरसे और ताकतें भी इस्ते'माल हूईं मगर इस्लाम फैलाने के लिये नहीं बल्कि इसे मिटाने के लिये।

लैकिन इस के बा-वुजूद दुनिया ने पहली बार इश्को मोहब्बत का यह हैरत अंगेज़ तमाशा देखा कि इस्लाम कबूल करने वाले तलवार और नैज़ों से घायल होते रहे, पत्थरों की चोट पर चोट खाते रहे, गर्म गर्म चट्टानों पर जलते रहे, अंगारों पर लोटते रहे और जिस्म की चर्बियां पिघलती रहीं मगर उन के दिल से इस्लाम की मुहब्बत का नशा उतरने की बजाए चढता ही रहा।

खुलासा यह कि **हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम** ने तलवार चला कर नहीं बल्कि कुरआन सुना कर इस्लाम फैलाया है। मौलाना हमदानी साहिब ने इस किताब में मुस्तनद वाकेआत और ठोस दलाइल से साबित किया है कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से नहीं बल्कि अपनी हक्कानियत और हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के हुस्ने अख्लाक से फैला है। गर्ज़ कि मौलाना मौसूफ ने यह ज़खीम तारीखी किताब बडी मेहनत और निहायत अर्क रेज़ी के साथ लिखी है। जो कारेईन को बडी मा'लूमात फराहम करती है। **और किताब में इबारत की रवानी व जुम्लों की बे साख्तगी भी खूब है कि उन से यह अंदाज़ा ही नहीं होता कि मौलाना की मादरी ज़बान गुजराती है।**

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जल्ला मज्दहु ने मौलाना हमदानी साहिब को बहुत सी खूबियों से नवाज़ा है कि वह अपनी गैर मा'मूली मस्रूफियात के बा-वुजूद तस्नीफो तालीफ के लिये भी काफी वक्त निकाल लेते हैं इस लिये अब तक सौ से ज़ाइद किताबें वह लिख चुके हैं और अभी यह सिलसिला जारी है। आज तक्रीर से ज़ियादह तह्रीरी काम की ज़रूरत है। लैकिन जमाअत में अक्सर बा-सलाहियत हज़रात आराम तलबी व तन आसानी के खूगर हैं। लेहाज़ा, तह्रीरी काम उस रफ्तार से नहीं हो रहा है जिस की ज़रूरत है। इस लिये मौलाना हमदानी साहिब इस ज़रूरत को पूरी करने के लिये मुसल्सल जद्दो-जहद कर रहे हैं।

और इन्हों ने इस्लाम व सुन्नियत और मस्लके आ'ला हज़रत की तब्लीगो इशाअत के लिये अपना सब कुछ कुरबान करने का अज़्मे मुसम्मम कर लिया है। अरब शुयूख में मुफ्त तक्सीम करने के लिये अकाइद अह्ले-सुन्नत की ताईद करने वाली **मवाहिबुल लदुन्निया** और **शिफा** वगैरा जैसी अह्म अरबी किताबें अपने खर्च से बडे एहतिमाम के साथ उमदा कागज़ पर छपवा चुके हैं और इसी मक्सद से आइन्दा भी इसी तरह की दूसरी किताबें शाए' करने का इरादा रखते हैं।

मौलाना हमदानी साहिब पर सिल्सिलए बरकातिया के बानी हज़रत सय्यिद शाह बरकतुल्लाह, दीगर बुज़ुर्गाने मारहरा मुत्तहरा और आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिस बरैलवी व हज़रत मुफ्ती आ'ज़म हिन्द मुस्तफा रज़ा खां अलैहिमुर रह्मतो व रिद्वान का खुसूसी फैज़ान है जो इस तरह की अपनी खिदमत वह अंजाम दे रहे हैं।

दुआ है कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल मौलाना अब्दुस्सत्तार साहिब हमदानी को सेहतो सलामती के साथ बहुत दिनों की ज़िन्दगी अता फरमाए, हमेंशा तस्नीफो तालीफ और इशाअते कुतुब के सिलसिला को जारी रखने की तौफीक बख्शे। और हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम व बुज़ुर्गाने दीन के सदके व तुफैल में आप की सारी मज़हबी खिदमत को कबूल फरमा कर अज्रे जज़ील व जज़ाए जलील से सरफराज़ फरमाए। आमीन बे-हुर्मते सैयेदुल मुर्सलीन सल्वातुल्लाहे तआला व सलामहु अलैहे व अलैहिम अज्मईन।

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

मोह्तमिम मर्कज़ तर्बियते इफ्ता औझा गंज, जिल्ला :- बस्ती (यू.पी.)

4, रबीउल आखिर, 1422 सन हिजरी

27, जून 2001, सन ईस्वी

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नह्मदुहु व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम

आगाज़ो कलाम

हुस्ने यूसुफ पे कटीं मिस्र में अंगुश्त ज़नाँ
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अरब

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

अबूल बशर, खलीफतुल्लाह फिल अर्ज़, मस्जूदे मलाइका, हज़रत सय्यिदोना आदम अला नबिय्येना व अलैहिस्सलातो वस्सलाम के ज़माना से ले कर हज़रत रूहुल्लाह सय्यिदोना ईसा अला नबिय्येना व अलैहिस्सलातो वस्सलाम के अह्द तक अल्लाह तआला के भेजे हुए मुकद्दस अम्बिया व रुसुल खल्के खुदा की हिदायतो रहनुमाई के लिये दुनिया में तशरीफ लाए और ए'लाए कलेमतुल हक्क का फरीज़ा अहसन तरीके से अंजाम दिया। हर नबी और रसूल के ज़माने में अह्ले बातिल ने राह में कांटे बिछाए और हक्क को नेस्तो नाबूद करने की सईए नाकाम की। लैकिन हमेंशा अम्बिया व रुसुल ही फातेह और गालिब रहे। अह्ले बातिल ने नूरे हक्क की रौशनी को बुझाने के लिये ताकत, सर्वत व दौलत और हुकूमत का भरपूर इस्ते'माल किया। जंग और किताल के कई मा'रके रूनुमा हुए, जिन का तफ्सीली बयान कुरआने मजीद, कुतुब अहादीस और कुतुबे सैर व तवारीख में मौजूद है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम के आस्मान पर उठाए जाने के बा'द सैयेदुल मुर्सलीन, अफज़लुल अम्बिया, महबूबे रब्बुल आलमीन, रहमतुल लिल आलमीन, खातेमुन नबियीन, हुज़ूरे अक्दस, **हज़रत मुहम्मद मुस्तफा** सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के ज़मानए खैर तक के तवील अर्से में कोई नबी या रसूल मब्ऊस नहीं हुवा। लोग हज़रत ईसा

अलैहिस्सलातो वस्सलाम की अस्ल ता'लीमातो रिवायात को रफ्ता रफ्ता फरामोश करते गए या इस में अपनी ख्वाहिश से रद्दो बदल कर दिया। और शिर्क, कुफ्र, अफ्आले रज़ीला व शनीआ आम और राइज हो गए। इस तरह से गुमराहियतो ज़लालत की हौलनाक तारीकी ने पूरी दुनिया को अपनी लपेट में ले लिया। शराब, ज़िना, कत्ल, चोरी, डकैती, जुवा, बद-अहदी, दगा, फरेब और बद-अख्लाकी का बाज़ार गर्म था। लोग अपनी लडकियों को ज़िन्दा दफ्न करते हुए भी झिझकते नहीं थे। आदमी इन्सान नहीं, वहशी जानवर बन गया था। अरब, ईरान, चीन, हिन्दुस्तान बल्कि दुनिया का हर खित्ता कुफ्रो ज़लालत के दलदल में फंसा था। रुश्दो हिदायत नाम को भी न थी। ऐसे संगीन माहौल में अल्लाह तबारक व तआला ने अपने बन्दों की हिदायतो रहबरी के लिये अपने महबूबे आ'ज़म हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को मब्ऊस फरमाया। कुरआने मजीद में इर्शादे बारी तआला है :

" قَدْ جَآءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتَابٌ مُّبِيْنٌ "

"कद जा-अकुम मिनल्लाहे नुरून व किताबुम-मुबीन"

(सूरतुल माइदा, आयत : 15)

तर्जुमा : "बे शक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ से एक नूर आया और रौशन किताब।" **(कन्ज़ुल ईमान)**

इस आयत में नूर से मुराद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की ज़ात सुतूदा सिफात है और रौशन किताब से मुराद कुरआने मजीद है। तफ्सीर में है कि **"सैयदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को नूर फरमाया गया क्यूं कि आप से कुफ्र की तारीकी दूर हूई और राहे हक्क वाज़ेह हूई।"**

(तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 198)

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की उम्रे शरीफ जब चालीस साल की हूई और आप ने अपनी नबुव्वत का ऐ'लान फरमा कर पर्चमे तौहीद बुलन्द फरमाया और बुत परस्ती से रोका और अपनी कौम को सिर्फ एक खुदा की परस्तिश की हिदायत फरमाते हुए कल्म-ए तौहीद "**ला इलाह इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह**" की दा'वत दी, तो आप की कौम आप की जानी दुश्मन हो गई। तरह तरह की अज़ीयतें और तक्लीफें पहुंचाईं, लैकिन

आप ने सब्र व तहम्मुल से काम लेते हुए फरीज़ए नबुव्वत को ब-खूबी अंजाम दिया। नतीजा यह हुवा कि आप का पैगामे हक़ दिलों पर असर अन्दाज़ हुवा और सईद लोग इस्लाम कबूल कर के उखरवी ने'मतों से सरफराज़ होने लगे। रसूले उम्मी सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की दा'वत हक़ की बढती हूई मक्बूलियत देख कर मुश्रेकीने अरब बुग्ज़ व हसद की आग में जल उठे और उन्हों ने हक़ के मुकाबिल तमाम बातिल हर्बे आज़्मा लिये। लैकिन उन की कोई भी तद्बीर कार आमद न हूई। खुसूसन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का अज़ीम मो'जिज़ा कुरआने मजीद ऐसा दिल नशीं हुवा कि मुल्के अरब के उमरा व अकाबिर इस्लाम के ज़ुमरे में शामिल हो गए।

उस वक्त मुल्के अरब के बाशिन्दों की फसाहतो बलागत का यह आलम था कि नौ उम्र लडका भी आ'ला किस्म के अश्आर फिल फौर कहने की महारत रखता था। अरबों की ज़बान दानी इस उरूज पे थी कि जाहिल, अनपढ और जंगल में बसने वाले शुतरबान भी बेहतरीन शाइर की हैसियत रखते थे और ऊंटों के चरवाहे अपने मुकाबिल पूरी दुनिया को अजमी या'नी गुंगा और जाहिल समझते थे। जब जाहिलों की ज़बान दानी का यह आलम था तो मुल्के अरब के अदिब्बा व फुस्हा की ज़बान दानी का क्या आलम होगा? लैकिन बडे बडे बोलगा और ज़बान आवर फुस्हा की फसाहतो बलागत नबीये उम्मी सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सामने आफ्ताब के मुकाबिल ज़र्रा की भी हैसियत न रखती थी। ब-कौल इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैल्वी :

तेरे आगे यूं हैं दबे लचे, फुस्हा अरब के बडे बडे
कोई जाने मुंह में ज़बां नहीं, नहीं बल्कि जिस्म में जां नहीं

महबूबे रब्बुल आलमीन सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के मो'जिज़ए सादिका व अज़ीमा कुरआने मजीद की आयात, नीज़ आप की ज़बाने हक़ तर्जुमान से निकली हूई हर बात ऐसी फसीह और बलीग होती थी कि मुल्के अरब के बडे बडे शोअरा भी हैरत से दांतों तले उंग्लियां दबा लेते। क्यूं कि आप की ज़बान से निकली हूई हर बात वहीए खुदा होती थी। कुरआन शरीफ में इर्शादे बारी तआला है :

"وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ○ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوحٰى ○"

"वमा यन्तेको अनिल हवा इन हुवा इल्ला वहयुंय यूहा"

(सूरए नज्म, आयत : 3 व 4)

तर्जुमा : "और वह कोई बात अपनी ख्वाहिश से नहीं करते, वह तो नहीं मगर वही जो इन्हें की जाती है।" **(कन्ज़ुल ईमान)**

तफ्सीर रूहुल ब्यान में है कि "**नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम, अल्लाह तआला की ज़ात व सिफात में फना के उस आ'ला मकाम पर पहुंचे कि अपना कुछ बाकी न रहा। तजल्लीये रब्बानी का यह इस्तीलाए ताम हुवा कि जो कुछ फरमाते हैं वह वहीए इलाही होती है।**"

(ब-हवाला : तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 946)

ब-कौल इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैल्वी :

वह दहन जिस की हर बात वहीये खुदा
चश्मए इल्मो हिक्मत पे लाखों सलाम

और

मैं निसार तेरे कलाम पर मिली यूं तो किस को ज़बां नहीं
वह सुखन है जिस में सुखन न हो वह बयां है जिस का बयां नहीं

मुश्रेकीने अरब ने एजाज़े कलामे हक़ का मुकाबला कर ने के लिये एडी चोटी का ज़ोर लगाया लैकिन नतीजा यह हुवा कि वह मब्हूत व साकित हो गए। उन की बे माईगी और बे कसी का यह आलम था कि वह कुरआने मजीद के मुकाबले में एक छोटी सी आयत भी न ला सके। मुश्रेकीने अरब की बे बसी पर गैरत दिलाते हुए कुरआने मजीद में इर्शाद है :

"فَأْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ"

"फा'तु बेसूरतिम मिम-मिस्लेही वदऊ शुहदा-अकुम मिन दूनिल्लाह" (सूरतुल बकरह, आयत : 23)

तर्जुमा : ''तो इस जैसी एक सूरत तो ले आओ और अल्लाह के सिवा अपने सब हिमायतियों को बुला लो।'' (कन्ज़ुल ईमान)

कुरआने मजीद की फसाहतो बलागत के मुकाबिल अपने कलाम को बे वक्अत और बे नमक मेह्सूस कर के मुश्रेकीने अरब इतने मायूस हो गए कि उन्हों ने अख्लाक को बालाए ताक रख कर वहशियाना अतवार अपना लिये और रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की अदावत व दुश्मनी में इस हद को पहुंचे कि तरह तरह की ईज़ाअें पहुंचाने और सख्तियां करने के बा-वुजूद भी दिल की भडास न निकली तो ''**दारुन-नदवा**'' में जमा हो कर आप को शहीद करने का मश्वरा किया, लैकिन अल्लाह तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को काफिरों की साज़िश से मुत्तलेअ फरमा दिया। चुनांचे सरवरे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम अपने रफीके कल्बी, अस्दकुस सादिकीन, सय्यदुल मुत्तकीन, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो के साथ रात के वक्त मक्का मुअज़्ज़मा से निकल कर मदीना तय्यबह की जानिब हिज्रत फरमा गए।

कुरआने मजीद में हिज्रत का वाकेआ मुन्दरजा ज़ैल आयात में बयान किया गया है :

"وَاِذْيَمْكُرُبِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْيَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ط
وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُاللّٰهُ ط وَاللّٰهُ خَيْرُ الْماكِرِيْنَ٥"

"व-इज़् यम्कोरो बिकल्लज़ीना कफरू ले-युस्बेतूका अव यकतोलू-का अव यख्रजू-का व यम्कुरू-ना व यम्कोरूल्लाहो वल्लाहो खैरुल माकेरीन" (सूरए अन्फाल, आयत : 30)

तर्जुमा : ''और ऐ महबूब ! याद करो जब काफिर तुम्हारे साथ मक्र करते थे कि तुम्हें बन्द कर लें या शहीद कर दें या निकाल दें और वह अपना सा मक्र करते थे और अल्लाह अपनी खुफिया तद्बीर फरमाता था और अल्लाह की खुफिया तद्बीर सब से बेहतर।'' (कन्ज़ुल ईमान)

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ए'लाने नबुव्वत करने के बा'द

तेरह (१३) साल तक मक्का मुअज़्ज़मा में कयाम पज़ीर रहे और जब कुफ्फारे मक्का व मुश्रेकीने अरब की अदावत और तकालीफ हद से मुतजाविज़ हो गईं तब आप ने ब-हुक्मे रब हिज्रत फरमा कर मदीना मुनव्वरा में सुकूनत इख्तेयार फरमाई, लैकिन मदीना मुनव्वरा में आप को अरब के कुफ्फार, मुश्रेकीन और यहूद ने ईज़ाअें और तक्लीफें पहुंचाने की हस्बे इस्तिताअत कोशिशें कीं। मदीना मुनव्वरा की सर ज़मीन को अपने मुकद्दस कदमों से मुशर्रफ फरमाने के वक्त तक या'नी आप की हिज्रत के वक्त तक मदीना मुनव्वरा में यहूदी काफी ता'दाद में आबाद थे। तिजारती, सकाफती, इक्तेसादी, समाजी व दीगर अह्म उमूर में यहूदियों का काफी असर और तसल्लुत था और माली ए'तबार से भी वह अह्ले सर्वत में शुमार होते थे। मक्का मुअज़्ज़मा के कुफ्फार व मुश्रेकीन और मदीना मुनव्वरा के कुफ्फार और यहूद के मा-बैन तिजारती और समाजी मरासिम गहरे थे और उन के तअल्लुकात इतने इस्तवार थे कि एक दूसरे के सुख दुख के साथी हुवा करते थे। मक्कए मुअज़्ज़मा के कुफ्फार ने अपने कासिदों के ज़रीए अपने हम ख्याल व हम प्याला लोगों को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के खिलाफ उक्साने और उभारने में कोई कसर न उठा रखी। लैकिन मदीना मुनव्वरा में महबूबे रब्बुल आलमीन सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की दा'वते तौहीद व रिसालत आम हो चुकी थी। शमए इश्के नबुव्वत के जां निसार परवानों की ता'दाद में दिन ब दिन इज़ाफा होता जा रहा था। इलावा अज़ीं हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के शैदाई और फिदाई यके बा'द दीगरे मक्का मुअज़्ज़मा से हिज्रत कर के मदीना मुनव्वरा आते ही जाते थे और मदीना मुनव्वरा मर्कज़े इस्लाम की हैसियत से कवी और मुस्तहकम होता जा रहा था। मुल्के अरब के रूउसा और कौमे यहूद के ओलमा में अह्मियत रखने वाले ज़ी असर और बा-शुजाअ लोग इस्लाम में दाखिल हो कर इस्लाम की ताकत बढा रहे थे। और इस्लाम उरूज और तरक्की पर आ रहा था।

मक्का के मुश्रेकीन खुसूसन अबू जहल, अबू लहब, उमय्या बिन खल्फ, उत्बा बिन रबीआ, हारिस बिन आमिर, अबू सुफियान (जो उस वक्त तक इस्लाम न लाए थे) वगैरा ने मदीना के मुसलमानों पर तरह तरह के ज़ुल्म व सितम ढाए, दस्त दराज़ियां कीं, बुग्ज़ व हसद और तशद्दुद की हदें पार कर गए। लैकिन रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने सब्र व तहम्मुल से काम लिया और अपने जां निसार सहाबा को भी हमेंशा सब्र की ता'लीम व तल्कीन फरमाई। मुसलमानों के सब्र व तहम्मुल को कुफ्फार व यहूद ने कमज़ोरी में शुमार किया और उन के हौसले

बहुत ज़ियादह बढ गए, नौबत यहां तक पहोंची कि मुसलमान रोज़ मर्रा कुफ्फार व मुश्रेकीन के हाथ और ज़बान से ईज़ा व आज़ार पाते । लैकिन रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की ता'लीमो तर्बियत ने सहाबए किराम में अख्लाके हसना के वह महासिन पैदा कर दिये थे कि किसी ने भी सब्र का दामन हाथ से नहीं छोडा । जब मुसलमानों पर ज़ुल्म व सितम की इन्तेहा होने लगी तो अल्लाह तबारक व तआला ने हुक्म नाज़िल फरमाया :

"اُذِنَ لِلَّذِیْنَ یُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا"

"उज़े-ना लिल्लज़ीना युकातेलूना बे अन्नहुम ज़ुलेमू"

(सूरतुल-हज्ज, आयत : 39)

तर्जुमा : "परवानगी (इजाज़त) अता हूई उन्हें जिन से काफिर लडते हैं इस बिना पर कि उन पर ज़ुल्म हुवा ।" (कन्ज़ुल ईमान)

इस आयत की शाने नुज़ूल में वारिद है कि **"कुफ्फारे मक्का अस्हाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को रोज़ मर्रा हाथ और ज़बान से शदीद ईज़ाऐं देते और आज़ार पहुंचाते रहते थे और सहाबा हुज़ूर के पास इस हाल में पहुंचते थे कि किसी का सर फटा है, किसी का हाथ टूटा है, किसी का पाऊं बंधा हुवा है । रोज़ मर्रा इस किस्म की शिकायतें बारगाह अक्दस में पहोंचती थीं और अस्हाबे किराम कुफ्फार के मज़ालिम की हुज़ूर के दरबार में फरियादें करते । हुज़ूर यह फरमा दिया करते कि सब्र करो, मुझे अभी जेहाद का हुक्म नहीं दिया गया । जब हुज़ूर ने मदीना तय्यबह को हिज्रत फरमाई तब यह आयत नाज़िल हूई और यह वह पहली आयत है जिस में कुफ्फार के साथ जंग करने की इजाज़त दी गई है ।"**

(तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान ,सफहा : 605)

कुरआन में आयात जेहादो किताल

सूरतुल-हज्ज की मज़्कूरा आयत में जेहाद की इजाज़त अता फरमाने के बा'द कुरआन शरीफ में जेहाद और किताल के तअल्लुक से मुतअद्दिद आयातें नाज़िल हूईं । चंद आयात ज़ैल में दर्ज हैं : --

अल्लाह तबारक व तआला इर्शाद फरमाता है :

"وَقَاتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ الَّذِیْنَ یُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا"

"व कातेलू फी सबीलिल्लाहिल्लज़ीना युकातेलूनकुम वला ता'तदू"

(सूरतुल बकरह,आयत : 190)

तर्जुमा : "और अल्लाह की राह में लडो उन से जो तुम से लडते हैं और हद से न बढो ।" (कन्ज़ुल ईमान)

तफ्सीर : "या'नी जो कुफ्फार तुम से लडें या जंग की इब्तिदा करें तुम उन से दीन की हिमायत और ए'ज़ाज़ के लिये लडो । यह हुक्म इब्तिदा-ए इस्लाम में था फिर मन्सूख किया गया और कुफ्फार से किताल करना वाजिब हुवा ।" (तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 55)

कुरआने मजीद में इर्शाद है :

"قَاتِلُوا الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْیَوْمِ الْاٰخِرِ"

"कातेलूल-लज़ीना ला यूमेनूना बिल्लाहे वला बिलयौमिल आखेरे"

(सूरए-तौबा, आयत : 29)

तर्जुमा : "लडो उन से जो ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और कयामत पर ।"

(कन्ज़ुल ईमान)

इर्शादे बारी तआला है :

"وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ"

"व मा लकुम ला तुकातेलूना फी सबीलिल्लाहे" (सूरए निसा, आयत : 75)

तर्जुमा : ''और तुम्हें क्या हुवा कि न लडो अल्लाह की राह में।''

(कन्जुल ईमान)

तफ्सीर : ''या'नी जेहाद फर्ज़ है इस के तर्क का तुम्हारे पास कोई उज़्र नहीं।''

(तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 161)

अल्लाह तबारक व तआला मोमेनीन को हुक्म फरमाता है :

"وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَاتَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ"

"व कातेलूहुम हत्ता ला तकू-ना फिलतव व यकूनुद्दीनो कुल्लोहु लिल्लाहे" (सूरतुल अन्फाल, आयत : 39)

तर्जुमा : ''और उन से लडो यहां तक कि कोई फसाद बाकी न रहे और सारा दीन अल्लाह ही का हो जाए।'' (कन्जुल ईमान)

अल्लाह तबारक व तआला अपने महबूबे आ'ज़म ﷺ से इर्शाद फरमाता है :

"يٰاَيُّهَا النَّبِىُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ"

"या अय्युहन नबीय्यो जाहेदिल कुफ्फारा वल मुनाफेकीना वग्लुज़ अलैहिम"

1 – (सूरए-तहरीम, आयत : 9)

2 – (सूरए-तौबा, आयत : 73)

तर्जुमा : '' ऐ गैब की खबरें देने वाले (नबी) जेहाद फरमाओ काफिरों और मुनाफिकों पर और उन पर सख्ती करो।'' (कन्जुल ईमान)

इर्शाद रब तबारक व तआला है :

"فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَ اقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ"

"फक्तुलूल मुश्रेकीना हयसो व जत्तुमूहुम व खुज़ूहुम वह्सुरूहुम वक्उदू ल-हुम कुल्ला मर्सदिन" (सूरए-तौबा, आयत : 5)

तर्जुमा : ''तो मुशरिकों को मारो जहां पाओ और उन्हें पकडो और कैद करो और हर

जगह उन की ताक में बैठो।'' (कन्जुल ईमान)

कुरआने मजीद में इर्शादे बारी तआला है :

"قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ"

"कातेलूहुम युअज़्ज़िब-हुमुल्लाहो बे-अय्दीकुम व युख्ज़िहिम व यन्सुरुकुम अलैहिम" (सूरए-तौबा, आयत : 14)

तर्जुमा : ''तो उन से लडो, अल्लाह उन्हें अज़ाब देगा तुम्हारे हाथों और उन्हें रुस्वा करेगा, और तुम्हें उन पर मदद देगा।'' (कन्जुल ईमान)

मज़्कूरा आयात के इलावा कुरआने मजीद में जेहाद व किताल के अहकाम नाज़िल फरमाए गए हैं। जेहाद का पहला हुक्म सन हिजरी 2 (दो) में नाज़िल हुवा। इस से पहले किताल की इजाज़त न थी। जब हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम मदीना मुनव्वरा में रौनक अफरोज़ हुए और सहाबए किराम की जर्मईय्यत हो गई तो नुस्रते इलाही काइम हूई और आ'दाए दीन के साथ जेहाद व किताल का सिलसिला मुस्तकिल तौर पर मश्रूअ हो गया।

गज़वा और सर्या की ता'रीफ

गज़्वा के मुतअल्लिक अर्बाबे सैर की इस्तेलाह यह है कि हर वह लश्कर जिस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ब-नफ्से नफीस खूद तश्रीफ फरमा हों उसे गज़्वा कहते हैं। और जिस लश्कर में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम खूद मौजूद न हों बल्कि कोई लश्कर रवाना फरमाया हो, उसे बअस या सर्या कहते हैं। सहाबए किराम की मुकद्दस जमाअत ने अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के इश्क में सरशार हो कर ऐसी शुजाअत व जां निसारी का मुज़ाहेरा किया कि कुफ्र व शिर्क के ऐवान मुन्हदिम हो गए और इस्लाम की जडें और बुन्यादें ऐसी मुस्तहकम हो गईं कि कलील अर्से में इस्लाम का पैगामे हक्क मुल्के अरब की सरहदें उबूर कर के दुनिया के गोशे गोशे तक पहोंच गया। अद्याने बातिला के किल्ले मुन्हदिम हो कर ''**हबा अम मन्सूरा**'' की तरह उड गए और उफ्के आलम पर इस्लाम का पर्चमे हक्क लहराने लगा।

गज़वात और सराया की तफ्सील

गज़वात की ता'दाद सत्ताइस (27) है। उन में से सिर्फ नौ (9) गज़वात में ही किताल वाकेअ हुवा। अट्ठारह (18) गज़वात में किताल (जंग) वाकेअ न हुवा।

जिन नौ गज़वात में किताल वुक़ूअ में आया वह हस्बे ज़ैल हैं :-

(1) जंगे बद्र 2, सन हिजरी

(2) जंगे ओहद 3 सन हिजरी

(3) जंगे मरीसी' (बनिल मुस्तलक) 5 सन हिजरी

(4) जंगे अहज़ाब (जंगे खन्दक)5 सन हिजरी

(5) जंगे बनू कुरैज़ा 5, सन हिजरी

(6) जंगे खैबर 7, सन हिजरी

(7) जंगे फतहे मक्का 8, सन हिजरी

(8) जंगे हुनैन (हवाज़िन) 8, सन हिजरी

(9) जंगे ताइफ 8, सन हिजरी

जिन अट्ठारह (१८) गज़वात में किताल वाकेअ नहीं हुवा वह हस्बे ज़ैल हैं :-

(1) गज़वए अब्वा 2 सन हिजरी

(2) गज़वए बवात 2 सन हिजरी

(3) गज़वए अशीरा 2 सन हिजरी

(4) गज़वए बद्रे ऊला 2 सन हिजरी

(5) गज़वए करकरतुल कुदा 2 सन हिजरी

(6) गज़वए सवीक 2 सन हिजरी

(7) गज़वए कैनका' 7 सन हिजरी

(8) गज़वए गतफान 3 सन हिजरी

(9) गज़वए नज्रान 3 सन हिजरी

(10) गज़वए बनी नदीर 4 सन हिजरी

(11) गज़वए बद्रे सुग्रा 4 सन हिजरी

(12) गज़वए दौमतुल जुन्दूल 5 सन हिजरी

(13) गज़वए ज़ातुर्रिका' 6 सन हिजरी

(14) गज़वए ज़ी कर्द 6 सन हिजरी

(15) गज़वए बनी लहियान 6 सन हिजरी

(16) गज़वए हुदैबिया 6 सन हिजरी

(17) गज़वए वादियुल कुरा 7 सन हिजरी

(18) गज़वए जैशुलउस्रत (तबूक) 9 सन हिजरी

सराया की ता'दाद सेंतालीस (47) और बा'ज़ छप्पन (56) शुमार करते हैं :-

उन में से कुछ सराया के नाम ज़ैल में दर्ज हैं :

(1) सर्या दारे अरकम 2, सन हिजरी (2) सर्या स'अद बिन अबी वक्कास ब-जानिब वादियुल खरार 2, सन हिजरी (3) सर्या अब्दुल्लाह बिन ज हश ब-मकाम बतने नख्ला 2, सन हिजरी (4) सर्या उमैर बिन अदी 2, सन हिजरी (5) सर्या सालिम बिन उमैर 2, सन हिजरी (6) सर्या करवाह 3, सन हिजरी (7) सर्या रजीअ 3, सन हिजरी (8) सर्या अबू सलमा मख्ज़ूमी ब-मकाम मौज़ा कतन 3 सन हिजरी (9) सर्या अब्दुल्लाह बिन अनिस ब-मकाम बतने उर्या 3, सन हिजरी (10) सर्या बीरे मऊना 4, सन हिजरी (11) सर्या अबू उबैदा बिन जर्राह ब-जानिब सैफुल बहर 5 सन हिजरी (12) सर्या मुहम्मद बिन मुस्लेमा ब-जानिब बनी केलाब 6 सन हिजरी (13) सर्या मुहम्मद बिन मुस्लेमा ब-जानिब बनी सा'लबा 6, सन हिजरी (14) सर्या मुहम्मद बिन मुस्लेमा ब-मकाम नज्द 6, सन हिजरी (15) सर्या अक्काशा बिन मेहसिन ब-जानिब बनी असद 6 सन हिजरी (16) सर्या ज़ैद बिन हारेसा ब-मकाम वादियुल कुर्रा 6, सन हिजरी (17) सर्या ज़ैद बिन हारेसा ब-मकाम मौज़्-ए- जमूम 6 सन हिजरी (18) सर्या ज़ैद बिन हारेसा ब-मकाम मौज़्-ए-ऐस 6 सन हिजरी (19) सर्या ज़ैद बिन हारेसा ब-जानिब उम्मे कुर्का 6 सन हिजरी (20) सर्या ज़ैद बिन हारेसा ब-सूए चशमए तर्फ 6 सन हिजरी (21) सर्या ज़ैद बिन हारेसा

ब-जानिब बख्शी 6 सन हिजरी (22) सर्या ज़ैद बिन हारसा ब-मकाम वादियुल कुरा (बारे दोम) 6 सन हिजरी (23) सर्या अब्दुर्रहमान बिन औफ ब-जानिब बनी का'ब 6 सन हिजरी (24) सर्या अली मुरतज़ा ब-जानिब फ़िद्क 6 सन हिजरी (25) सर्या अब्दुल्लाह बिन रवाहा ब-मकाम खैबर 6 सन हिजरी (26) सर्या अबू बक्र सिद्दीक 7 सन हिजरी (27) सर्या उमर बिन खत्ताब 7 सन हिजरी (28) सर्या बिश्र बिन स'अद अन्सारी 7 सन हिजरी (29) सर्या गालिब बिन अब्दुल्लाह लैसी ब-जानिब मैफा 7 सन हिजरी (30) सर्या गालिब बिन अब्दुल्लाह जानिब बनियुल मौज 7 सन हिजरी (31) सर्या गालिब लैसी ब-सूए कदीद 8 सन हिजरी (32) सर्या फिदक 8 सन हिजरी (33) सर्या मौता 8 सन हिजरी (34) सर्या उमर बिन अल-आस ब-मकाम ज़ातुस्सलासिल 8 सन हिजरी (35) सर्या अबू उबैदा बिन जर्राह ब-मकाम अल-खब्त 8 सन हिजरी (36) सर्या अबू आमिर अश्अरी, जंगे अवतास 8 सन हिजरी (37) सर्या हज़रत अली मुरतज़ा ब-जानिब कबीलए बनी तै 9, सन हिजरी (38) सर्या खालिद बिन वलीद ब-जानिब दौमतुल जुन्दूल 9, सन हिजरी (39) सर्या खालिद बिन वलीद ब-जानिब कबीला बनी हारिस बिन का'ब 10, सन हिजरी (40) सर्या जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली ब-जानिब ज़िल केलाअ बिन कूर । मुल्के ताइफ 10. सन हिजरी (41) सर्या उसामा बिन ज़ैद ब-जानिब बहरे रूम 11, सन हिजरी (ब-हवाला: मदारिजुन नबुव्वत, अज़ शैख अब्दुलहक्क मोहद्दीसे देहलवी, उर्दू तर्जुमा, जिल्द दौम)

इस्लाम तलवार के ज़ोर से नहीं फैला

हर दौर में इस्लाम दुश्मन अनासिर इस्लाम की हक्कानियत को मज्रूह करने के लिये तरह तरह के हर्बे इस्ते'माल करते हैं। खुसूसन कुफ्फार व मुश्रेकीन और यहूदो नसारा इस्लाम की आलमगीर मक्बूलियत कि जिस का सबब इस्लाम की हक्कानियत है इस से कतए नज़र कर के ब-नज़्रे तअस्सुब व इनाद यह प्रोपेगन्डा करते हैं कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है और मआज़ल्लाह यह कहते हुए भी शर्म व हया नहीं मेह्सूस करते कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने एक हाथ में कुरआन और दूसरे हाथ में तलवार थाम कर इस्लाम की नश्रो इशाअत की है। किज़्ब और दरोग गोई पर मुश्तमिल अपने इस दा'वे के सुबूत में हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की हयाते तय्यिबह में वाकेअ गज़्वात और सराया की फेहरिस्त ब-तौर दलील पैश करते हैं।

और अबू जहल, उत्बा बिन रबीआ, उमय्या बिन खल्फ व दीगर रूउसा-ए मुश्रेकीने अरब के वाकेआत का तज़्केरा करते हैं। लैकिन हकीकत यह है कि इस्लाम अपनी हक्कानियत और हुज़ूरे अक्दस के अख्लाके करीमा, इन्सानियत पर मुश्तमिल ता'लीम, आ'ला उसूल, तमद्दुन और दीगर बे-शुमार महासिन की बिना पर लोगों के दिलों में रासिख हुवा है।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की हयाते तय्यबह का जाइज़ा लेने से यह साबित होता है कि आप की ज़ाहेरी हयात के चालीस साल या'नी जब तक आप ने नबुव्वत का ऐ'लान नहीं फरमाया था। आप को तमाम लोग **"मुहम्मदे अमीन"** (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) के मुअज़्ज़ज़ लकब से मुलक्कब करते थे। चालीस (४०) साल की उम्रे शरीफ में आप ने दुनिया को तौहीद का पैगाम दिया। और तेरह (१३) साल तक मक्का मुअज़्ज़मा में रौनक अफरोज़ रह कर लोगों को कुफ्र की ज़ुल्मत से हिदायत की रौशनी की तरफ बुलाते रहे। मक्की ज़िन्दगी के पूरे तिरपन (५३) साल में आप ने अपनी हयात के हर शो'बा में अख्लाकी महासिन का ही मुज़ाहेरा फरमाया बल्कि चालीस से तिरपन साल के दरमियान तेरह साल का अर्सा तो आप ने कुफ्फारे मक्का के ज़ुल्म व सितम की कुल्फत बरदाश्त करते हुए गुज़ारा। आप पर किये जाने वाले ज़ुल्म व सितम का जवाब देना या इन्तेकाम लेना तो एक तरफ रहा बल्कि आप ने कभी भी उन ज़ालिमों की कोई शिकायत तक नहीं की और पैकरे सब्र व तहम्मुल बन कर मसाइब बरदाश्त किये। जब ज़ुल्म व सितम अपनी इन्तेहा को पहुंचे तो आप ने मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना मुनव्वरा हिज्रत फरमाई। **मक्का मुअज़्ज़मा आप ने ब-हैसियते मज़्लूम छोडा था।** आप के खिलाफ ज़ालिमों ने ऐसा परागन्दा माहौल काइम कर दिया था कि आप को रात की तारीकी में खुफिया तौर पर निकल्ना पडा। फिर आप मदीना मुनव्वरा सुकूनत पज़ीर हुए और दस (१०) साल के बा'द पर्दा फरमाया। इस हिसाब से आप की उम्रे शरीफ तिरसठ (६३) साल हूई। जिस में तिरपन साल मक्की ज़िन्दगी और दस साल मदनी ज़िन्दगी। आयते जेहाद मदीना मुनव्वरा में 2 सन हिजरी में नाज़िल हूई। उस वक्त हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की उम्रे शरीफ पचपन (५५) साल थी। और आयते जेहाद के नाज़िल होने के आठ (८) साल बा'द आप ने दुनिया से पर्दा फरमाया। अल-हासिल जेहाद व किताल की मुद्दत सिर्फ आठ साल रही है।

अब कारेईने किराम तवज्जोह फरमाऐं कि जिस ज़ाते गिरामी ने कुल तिरसठ साल की ज़ाहेरी दुन्यवी ज़िन्दगी पाई, उस में से पचपन साल का अर्सा इस तरह गुज़रा कि आप पर ज़ुल्म व सितम किये गए, अज़ीयतें दी गईं, तक्लीफें और मुसीबतें पहुंचाई गईं, लैकिन आप

ने उफ तक न किया, सब्र व तहम्मुल करते हुए दुश्मनों के आज़ार बरदाश्त फरमाए, ज़ालिमों की बद-गोई करने के बजाए उन्हें दुआऐं दीं, यहां तक कि अपने मुत्तबेईन को भी सब्र की तल्कीन करते हुए ज़ुल्म व सितम बरदाश्त करने की ता'लीमो तर्बियत दी, जिस ज़ाते गिरामी ने अपनी समाजी, खान्दानी, अज़्दवाजी, तिजारती और रवाबती ज़िन्दगी में किसी से झगडा फसाद तो क्या बल्कि ऊंचे सुर में बात न की, किसी के साथ बद-कलामी न की, गाली का जवाब दुआ से दिया, तवाज़ोअ व इन्किसारी का जो पैकरे जमील रहा, हुस्ने अख्लाक का जो नमूनए अमल रहा, जो सरापा मुहब्बत व हमदर्दी का मख्ज़न रहा, जिस के अख्लाक व अतवार की तहारत व पाकीज़गी का दुश्मनों ने भी ए'तेराफ किया, अफ्वो करम में जो बे मिस्ल व मिसाल, बुर्दबारी में जो यगानए आलम, ज़ुल्म व सितम को नेस्तो नाबूद करना जिस का वतीरा, उस ज़ाते गिरामी ने अपनी ज़ाहेरी हयात के पचपन साल, या'नी तक्रीबन अठ्ठासी फीसद ज़िन्दगी (**87.30 %**) तक तलवार थामी नहीं, उस ज़ाते गिरामी पर शम्शीर ज़नी का घटिया इल्ज़ाम आइद करना दयानत व इन्साफ को ज़ब्ह करने के मुतरादिफ है।

अलबत्ता ! आप सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने दस्ते अक्दस में तलवार थामी और जेहाद व किताल फरमाया लैकिन आप ने सिर्फ और सिर्फ दफए ज़रर के लिये तलवार थामी। आप ने शम्शीर का वार ज़ुल्म ढाने के लिये नहीं बल्कि ज़ुल्म मिटाने के लिये किया। जिस का सहीह अंदाज़ा आप की हयाते तय्यबह में वाकेअ होने वाले गज़्वात का ब-नज़रे अमीक मुतालआ करने से होगा कि आप ने किन हालात में जेहाद फरमाया, किन लोगों के सामने जेहाद फरमाया, ज़ालिम व जफा कश, कज़्ज़ाक और सितमगर गिरोह के ज़ुल्म व तशद्दुद के बढते हुए सैलाब की रोक थाम के लिये आप ने जेहाद की आहनी दीवार काइम फरमा दी और मज़्लूम व बेकस लोगों की नुस्रत व हिमायत कर के अद्ल व इन्साफ का माहौल काइम फरमा दिया। रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम पर शम्शीर ज़नी का झूठा इल्ज़ाम आइद करने वाले मुतअस्सिब अनासिर तारीख, सैर और गुज़िश्ता वाकेआत की मा'लूमात से यक लख्त अन्जान व बे-खबर हैं या फिर इनादन व कसदन इफ्तेरा परदाज़ी से काम लेते हैं। ज़रा गौर फरमाऐं कि जिस ज़ाते गिरामी की ज़ाहेरी हयात का तक्रीबन 88 % फी-सद हिस्सा गुज़र चुका हो और सिर्फ 12 % फी-सद ज़ाहेरी हयात के अय्याम बाकी रहे हों और इस कलील अर्से में जिस ज़ाते गिरामी ने दुनिया की फलाह व बेह्बूद के लिये अक्वाले ज़र्रीन या'नी अहादीस का अज़ीम ज़खीरा सरमायए हयात व नजात की हैसियत से अता फरमाने के लिये हमा वक्त सुखन तराज़ हो। इलावा अज़ीं अपनी अमली ज़िन्दगी से इन्सानियत, रहम दिली, उखुव्वत, सिद्क, अद्ल, इन्साफ,

सदाकत, एहसान, खिदमत, तवाज़ोअ, इन्किसारी, तर्के तमाअ, केनाअत, तवक्कुल, तक्वा, परहेज़गारी, इबादत, रियाज़त, रुश्दो हिदायत, करम व इनायत, जूद व सखावत वगैरा बे-शुमार अख्लाकी महासिन की ता'लीमो तर्बियत में मस्रूफ हो, **उस ज़ाते गिरामी ने अगर कभी अपने मुकद्दस हाथों में तलवार थामी है तो ज़ुल्म को फरोग देने के लिये नहीं बल्कि ज़ुल्म व सितम को नेस्तो नाबूद करने के लिये।**

एक ज़रूरी अम्र की तरफ भी तवज्जोह दरकार है कि सिपाहगरी करने वाला बचपन से ही इस पेशा की तरफ मुल्तफित होता है या तो उस का खान्दानी और आबाई पेशा सिपाहगरी होता है और अपने आबा व अज्दाद का पेशा अपना कर सिपाहगरी करता है। लैकिन इस की सिपाहगरी अय्यामे जवानी में शबाब पर होती है। उमूमन अठ्ठारह से पेंतालीस बरस की उमर तक वह सिपाहगरी के फन में उरूज पर होता है और इस उमर के बा'द इस के फन में ज़वाल शुरू होता है। क्यूं कि उमर का तकाज़ा और जिस्मानी ज़ो'फ का मुक्तज़ा यही है कि अब आराम व इस्तेराहत करने के दिन हैं। और तक्रीबन पचास या पचपन साल की उमर के बा'द उस को अपने फन से फित्री तौर पर रग्बत कम हो जाती है। अलबत्ता ब हालते मजबूरी कभी हालात के तेवर ललकार दें तो वह फन्ने शुजाअत दिखाने में कोताही नहीं करता। रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की हयाते तय्यबह का जाइज़ा लेने से यह बात रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह होती है कि आप ने अपनी ज़ाहेरी हयात के पचपन साल तक आलाते जंग की तरफ कतअन इल्तिफात नहीं फरमाया। 2 सन हिजरी में सूरए हज्ज की आयत के ज़रीए आप को जेहाद का अल्लाह ने हुक्म फरमाया। तब आप की उम्रे शरीफ पचपन (५५) साल थी। जिस का मत्लब यह हुवा कि जिस उम्र में आम तौर से आदमी हाथ में तलवार लेने से उक्ताता है और इस्ते'फा दे कर या रिटायर हो कर अपने फन की इन्तेहा करता है, उस उम्र में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हाथ में तलवार थामने की इब्तेदा फरमाई। इस से साबित होता है कि आप सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हालात के पैशे नज़र बहुत ही नाज़ुक वक्त में अपने दस्ते अक्दस में तलवार थामी। हालां कि आप ने माज़ी में कभी भी तलवार नहीं उठाई। और न ही आप को इस का तजरबा व मलका था।

इस्लाम की दरख्शां तारीख के ज़र्रीन अवराक शाहिद आदिल हैं कि रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने जिन गज़्वात में शिर्कत फरमाई या अपने जां निसारों को मा'रकए जेहाद में (सर्या) इर्साल फरमाया, वह तमाम गज़्वात और सराया मज़्लूमीन के देफाअ और ज़ालेमीन के इस्तीसाल के लिये ही थे। तमाम गज़्वात **तवक्कल अलल्लाह**

और **नस्रूम मिनल्लाह** की बुन्याद पर ही थे। क्यूं कि उन तमाम गज़्वात में कहीं भी मसावात और बराबरी का मुक़ाबला न था। कुफ्फार व मुश्रेकीन भारी ता'दाद में भरपूर जंगी हथियारों के साथ होते थे। और इस्लामी लश्कर बहुत ही कलील ता'दाद में और बे सरो सामान होता था। कुफ्फार के लश्कर में भारी डील डोल के, शिकम सैर, हथियारों से लैस और घोडों पर सवार लडने वाले होते थे। जब कि इस्लामी लश्कर के मुजाहेदीन नहीफ व नातवां कमज़ोर जिस्म वाले, भूके प्यासे, बगैर हथियारों के पैदल लडने वाले होते थे। मसलन :

जंगे बद्र (2 सन हिजरी) में दोनों लश्कर का मोवाज़ना हस्बे ज़ैल है :

तफ्सील	लश्करे इस्लाम	लश्करे कुफ्फार
अफ्राद	313	950
ऊंट	70	700
घोडे	3	100
तलवारें	8	950
ज़िरहें	6	950

नोट : (1) कुफ्फार के लश्कर में खाने पीने का सामान बडी कसरत से था। रोज़ाना ग्यारह (११) ऊंट ज़ब्ह कर के खाते थे। जब कि इस्लामी लश्कर में ज़ादे राह की यह हालत थी कि किसी के पास एक साअ तो किसी के पास दो साअ खजूरें थीं।

(2) कुफ्फार के लश्कर में ऐश व इश्रत का सामान भी काफी ता'दाद में था। यहां तक कि किसी पानी के किनारे पडाव करते तो खैमे नस्ब करते और उन के हमराह गाने वाली तवाइफ और आलाते तरब थे। जब कि मुसलमानों के पास एक खैमा तक नहीं था। सहाबए किराम ने खजूर के पत्तों और टहनियों से एक अरीश (झोंपडी) तैयार कर के हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को उस में ठहराया। आज उस अरीश की जगह मस्जिद बनी हूई है। (हवाला : मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 147)

नतीजा : कुफ्फार के लश्कर से सत्तर (७०) आदमी कत्ल हुए, जिन में अबू जहल भी था। इलावा अज़ीं लश्करे कुफ्फार से सत्तर (७०) आदमी कैद हुए। जिन में हज़रत अब्बास बिन अब्दुलमुत्तलिब भी थे। जो बा'द में ईमान ले आए। इस्लामी लश्कर से चौदह (१४) हज़रात शहीद हुए थे।

जंगे ओहद ३ सन हिजरी की मुख्तसर कैफियत

(1) कौमे कुरैश ने दारुन-नदवा में मीटिंग कर के बीस हज़ार मिस्काल सोना लश्कर की तैयारी के लिये जमा किया और मक्का से चार शख्सों को अतराफ में गश्त करने पर मुकर्रर किये ताकि वह लोगों को मदीना मुनव्वरा पर हम्ला करने के लिये उभारें और काफी ता'दाद में लश्कर जमा हो।

(2) मक्का मुअज़्ज़मा से लश्करे कुफ्फार अबू सुफियान की सरदारी में रवाना हुवा। लश्कर में तीन हज़ार (३०००) आदमी थे। जिन में से सात सौ (७००) ज़िरह पोश, दो सौ (२००) घोडे और तीन हज़ार (३०००) ऊंट थे। लश्कर में तीर अन्दाज़ी में महारत रखने वाले लोग ब-कस्रत थे।

(3) काफी ता'दाद में तलवारें, नैज़े, खन्जर, बर्छियां, तीर, कमान वगैरा आलाते हर्ब थे।

(4) गाने बजाने वाली औरतें और आलाते तरब, नीज़ खाने पीने व दीगर आसाइश के सामान से लश्कर को आरास्ता कर के, मदीना मुनव्वरा को ताख्त व ताराज करने के फासिद इरादे से मक्का से लश्कर को रवाना किया गया।

(5) अबू सुफ्यान ने मदीना मुनव्वरा से पांच मील के फास्ले पर मकाम ज़ुल-हुलैफा में लश्कर को ठहराया और वहां तीन दिन कयाम किया।

(6) लश्करे कुफ्फार के कयाम के दौरान मुशरिकों ने अपने ऊंटों और घोडों को मुसलमानों के खेतों में छोड दिया। चुनांचे ऊंटों और घोडों ने खेतियों को रौंद कर पामाल कर दिया और तमाम सब्ज़ा चर गए और हालत यह हूई कि अतराफे मदीना के तमाम खेतों में से किसी भी खेत में सब्ज़ा बाकी न रहा।

(7) लश्करे कुफ्फार हम्ला कर के अह्ले मदीना को ताख्त व ताराज करने आ पहुंचे इस से पहले ही उन को रोकने और उन का मुकाबला कर के उन के शर व ज़रर से अह्ले मदीना को महफूज़ व मामून रखने के लिये रहमते आलम

सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम एक हज़ार मुजाहेदीन को ले कर उन से ब-मकाम ओहद मुकाबिल हुए। लश्करे इस्लाम में एक भी घोडा न था। सिर्फ एक सौ मुजाहेदीन ज़िरह पोश थे। चंद हज़रात के पास तीर और कमान थे। कुछ लोगों के पास तलवारें और नैज़े थे। या'नी लश्करे कुफ्फार के मुकाबिल इस्लामी लश्कर ता'दाद और साज़ो सामान के ए'तबार से बहुत ही कलील और बे सरो सामान था।

(8) इस्लामी लश्कर से सत्तर हज़रात (७०) शहीद हुए जिन में हज़रत हम्ज़ा, हज़रत हन्ज़ला गसीलुल मलाइका, हज़रत मुस्अब बिन उमैर, हज़रत स'अद बिन रबीअ, हज़रत नो'मान बिन मालिक वगैरा थे। (रदियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन।)

(9) कुफ्फार के लश्कर से तीस आदमी (३०) जहन्नम रसीद हुए और उन के हौसले टूट गए। लेहाज़ा अबू सुफियान लश्कर को ले कर रवाना हो गए और जाते वक्त यह धमकी दी कि अब हमारी और तुम्हारी मुलाकात आइन्दा साल बद्र में होगी।

हवाला : (1) मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 1, सफहा : 191 से 221

(2) मगाज़ीयुस सादिका अज़् अल्लामा वाकदी, उर्दू तर्जुमा, सफहा : 144 से 230

जंगे अहज़ाब (गज़वए खन्दक) 5 सन हिजरी के मुख्तसर अहवाल

(1) खैबर से कबीले बनी नज़ीर के यहूदियों का वफ्द मक्का मुअज़्ज़मा जा कर अबू सुफियान से मिला और तय किया कि हम सब मुत्तहिद हो कर मदीना पर हम्ला कर दें। चुनांचे अबू सुफियान मक्का से कुरैश का लश्कर ले कर रवाना हुए उन के साथ तीन सौ (३००) घोडे और एक हज़ार (१०००) ऊंट सवार थे।

(2) खैबर के यहूदियों ने अपने साथ कबील-ए कैस के लोगों को बर-अंगेख्ता कर के लडने के लिये साथ लिया।

(3) अरब के दीगर कबाइल अस्लम, अश्जा', अबू मुर्रा, केनाना, फराज़ा और गतफान से भी बडी ता'दाद में लोग लश्करे कुरैश में आ के शामिल हो गए। उन सब की मज्मूई ता'दाद दस हज़ार (१०,०००) हो गई।

(4) इस्लामी लश्कर की ता'दाद तीन हज़ार (३०००) थी और इस्लामी लश्कर में सिर्फ छत्तीस (३६) घोडे थे।

(5) रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने मदीना तय्यबह की मशरिक की जानिब कोह सलअ के करीब खुले मैदान में खन्दकें खूदवाईं ताकि ज़ालिम दुश्मन शहर के बाशिन्दों को अज़ीयतें न पहुंचा सकें।

(6) लश्करे कुफ्फार ने चौबीस (२४) दिनों तक मदीना का मुहासरा किया और अह्ले शहर को तंग किया।

(7) इस गज़्वा में किताल वाकेअ हुवा। लैकिन अल्लाह तबारक व तआला ने मोमेनीन की मदद के लिये मलाइका का लश्कर भेजा और आस्मान से ऐसी तैज़ आंधी चली कि मुश्रेकीन के लश्कर के तमाम खैमे मुन्हदिम हो गए, खाना पकाने के लिये देगें चुल्हों पर चढाई थीं वह ज़मीन पर उलट गईं, तैज़ हवा से संगरेज़ों ने उड उड कर उन को शदीद चोटें लगाईं और लश्करे कुफ्फार के हर गोशा से फरिश्तों की तकबीरों की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। लेहाज़ा कुफ्फार खौफ ज़दा हो कर अपना माल अस्बाब छोड कर भाग निकले।

हवाला : (1) मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 289 से 301

(2) मगाज़ीयुस सादिका, अज़् अल्लामा वाकदी, उर्दू, सफहा : 284 से 292

❀ **जंगे मौता** 8, सन हिजरी तीन हज़ार के इस्लामी लश्कर के सामने हिरक्ल बादशाह की नस्रानी फौज और कबाइले अरब के मुश्रेकीन मुत्तहिद हो कर मुकाबिल हुए थे और उन के लश्कर की ता'दाद एक लाख से भी ज़ियादह थी।

(हवाला : मदारिजुन नबुव्वत, जिल्द : 2, सफहा : 453 ता 457)

इस जंग की मुख्तसर वज़ाहत अगले सफ्हात में मुलाहेज़ा फरमाऐं कि इस जंग की वजह क्या थी ? और इस का पस मन्ज़र क्या था ? इस जंग का क्या नतीजा हुवा ?

मज़कूरा जंगों के इलावा दीगर जंगों में भी इसी किस्म के तफावुत पाए जाते हैं। यहां हम ने सिर्फ चार मशहूरो मा'रूफ जंगों का सरसरी खाका पैश किया है। अल-हासिल रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने ज़रुरतन और दफए ज़रर के लिये ही किताल फरमाया है। इस किताल से ज़ालिम के जुल्म व सितम का इस्तीसाल फरमा कर अमन व अमान काइम करना ही मक्सूद था। कुफ्र व शिर्क, जुल्म व सितम, जौर व जफा, ना-इन्साफी व ज़ोर जताई और इन्सानियत कुश जराइम का पर्दा चाक करने के मुस्तहसन अज़्म से ही आप ने शम्शीर दस्ते अक्दस में थामी। **किसी पर ज़ोर या दबाव डालने के लिये आप ने हरगिज़ तलवार नहीं उठाई।**

इस्लाम तलवार से नहीं बल्कि हक्कानियत की बिना पर ही फैला है। क्यूं कि अगर इस्लाम तलवार ही के बल बूते पर फैला होता, तो इस्लाम की जडें ता-दैर मुस्तहकम न रहतीं। बल्कि कलील अर्से में ही मुतज़लज़िल हो कर उखड गई होतीं लैकिन पंदरह सौ साल का अर्सा गुज़रने के बा-वुजूद भी इस्लाम अपनी शान व शौकत से काइम व दाइम रहते हुए रोज़ अफ्ज़ूं फैल रहा है।

इस्लाम तलवार से फैला है, यह इल्ज़ाम आइद करने वाले मुतअस्सिब अनासिर को दन्दां शिकन जवाब देने के लिये ज़ैल में कुछ अहम नुककात ज़ियाफते कारेईन की गर्ज़ से पैशे खिदमत हैं।

तारीख की गवाही

अब हम तारीख के हवाले से चंद ऐसे दलाइल पैश करते हैं कि मुखालेफीन को भी नाचार व मजबूर हो कर इस्लाम की हक्कानियत का ए'तराफ करना पडेगा। महबूबे रब्बुल आलमीन, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की हयाते तय्यबह के ज़ाहेरी दुन्यवी साल को ब-ए'तबार ईस्वी तकाबुल कर के फिर इस के ज़िम्न में कुछ गुफ्तगू की जाएगी। हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने 63 साल की उम्र शरीफ इस दुनिया में बसर फरमाई। आप की विलादत बा-सआदत से ले कर दुनिया से

पर्दा फरमाने तक तिरसठ साल का जो अर्सा है। उस अर्सा के दरमियान वुकूअ में आए हुए अहम वाकेआत, हालात, हवादिस, उमूर, वगैरा को ईस्वी सन के ए'तबार से टटोलें।

हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की हयाते ज़ाहेरी

पैदाइश : 12 रबीउल अव्वल शरीफ हिज्रत के 53 साल कब्ल (ईस्वी 571)

दुनिया से पर्दा फरमाना : 12 रबीउल अव्वल शरीफ हि. स. 11 (632 सन ईस्वी)

नोट : कमरी साल के ए'तबार से आप की उम्र शरीफ 63 साल और शम्सी साल के ए'तबार से आप की उम्र शरीफ 61 साल होती है।

अब हम शम्सी साल के ए'तबार से आप की हयाते तय्यबह देखें।

(1) **विलादत :-** 571 सन ईस्वी, 53 साल कब्ल हिज्रत

(2) **ए'लाने नबुव्वत :-** 610 सन ईस्वी, जब आप की उम्र शरीफ कमरी ए'तबार से चालीस साल थी।

(3) **हिज्रत :-** 622 सन ईस्वी, जब आप की उम्र शरीफ कमरी ए'तबार से तिरपन (५३) साल थी।

(4) **जेहाद का हुक्म :-** 623 सन ईस्वी, उम्र शरीफ 55 साल, 2 सन हिजरी

(5) **रेहलत :-** 632 सन ईस्वी, उम्र शरीफ 63 साल, 11, सन हिजरी

मज़कूरा बाला तफ्सील को दो हिस्सों में तक्सीम करें

हिस्सा अव्वल : विलादत 571सन ईस्वी से जेहाद का हुक्म नाज़िल होना 623 सन ईस्वी या'नी 2, सन हिजरी तक

हिस्सा दोम : जेहाद का हुक्म 623 सन ईस्वी, (2 सन हिजरी) से रेहलत 632 सन ईस्वी या'नी 11 सन हिजरी तक

नतीजा :

हिस्सा अव्वल की मुद्दत : 53 साल
\+
हिस्सा दोम की मुद्दत : 8 साल
= 61 साल

या'नी कुरआने मजीद की सूरए हज्ज की आयते करीमा "اُذِنَ لِلَّذِیْنَ یُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا" **"उज़े-न लिल्लज़ीना युकातेलूना बे अन्नहुम ज़ोलिमू"** 623 सन ईस्वी में नाज़िल हूई और 623 सन ईस्वी (2 सन हिजरी) से जेहाद का आगाज़ हुवा। 623 सन ईस्वी से पहले इस्लामी तारीख में एक भी जंग नहीं हूई। जिस का ए'तेराफ उन लोगों को भी है जो यह इल्ज़ाम आइद करते हैं कि इस्लाम तलवार से फैला है। (मआज़ल्लाह)। जिस का मत्लब यह हुवा कि इस्लाम को तलवार से फैला ने का आगाज़ 623, सन ईस्वी से हुवा। तो अगर इस्लाम तलवार ही से फैला होता तो 623, सन ईस्वी से पहले इस्लाम की नश्र व इशाअत न हूई होती। लैकिन हम तारीख के शवाहिद व दलाइल की रौशनी में दा'वे के साथ कह सक्ते हैं कि 623, सन ईस्वी से पहले ही इस्लाम अपनी हक्कानियत की बिना पर लोगों के दिलों में नक्श हो गया था। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाकी महासिन और खसाइसे कुब्रा ने दुनिया को मुतअस्सिर कर दिया था। आप के नूरे नबुव्वत ने ज़ुल्मत कदा में भटकने वालों को हिदायत की रौशनी अता फरमा दी थी।

ज़ैल में हम चंद ऐसे वाकेआत और उमूर की तरफ कारेईने किराम की आली तवज्जोहात को मर्कूज़ करने के लिये इख्तिसारन सिर्फ इशारा करते हैं कि जिन पर ब-नज़रे अमीक खौज़ व फिक्र करने से वाज़ेह तौर पर यह हकीकत अयां होगी कि इस्लाम हरगिज़ तलवार के बलबूते पर नहीं फैला बल्कि इस्लाम अपनी सदाकत और हक्कानियत की बिना पर आलम गीर पैमाने पर फैला है।

582 सन ईस्वी

जब कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की उम्रे शरीफ सिर्फ बारह (१२) साल थी। या'नी कि आयते किताल के नाज़िल होने के 43 साल पहले, आप ने अपने चचा अबू तालिब के हमराह मुल्के शाम का सफर फरमाया। जब आप का काफला

बसरा पहुंचा तो बसरा के करीब एक दैहात में एक सौमआ था। उस सौमआ में बुहैरा नाम का एक राहिब रहता था जो तौरेत, इन्जील और दीगर आस्मानी किताबों का ज़बरदस्त आलिम था। और उस का शुमार यहूद और नसारा के अह्बार में होता था। जब भी कोई अरब से आने वाला काफला उस के सौमआ के करीब आ कर ठहरता, तो बुहैरा राहिब अपने सौमआ से बाहर आ कर काफले के हर शख्स को घूर घूर कर देखता। गोया उसे किसी की तलाश थी। लैकिन हर मरतबा वह मायूस और नाकाम होता और अपने सौमआ में वापस लौट जाता। लैकिन 582, सन ईस्वी में **हुज़ूरे अक्दस, जाने आलम व रहमते आलम व बाइसे तख्लीके आलम** सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम कुरैश के काफले के हमराह इस सौमआ के करीब आ कर ठहरे, तो बुहैरा राहिब ने अपने सौमआ से बाहर आ कर जब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को देखा कि बादल आप पर साया किये हुए है। हर शजरो हजर आप को सलाम कर रहा है, तो उस ने यकीन कर लिया कि मुझ को जिस की तलाश थी वह ज़ाते गिरामी यही है। बुहैरा राहिब ने पूरे काफले की दा'वत की। जब हुज़ूरे अक्दस बुहैरा राहिब के पास तश्रीफ ले गए, तो बुहैरा राहिब ने आप से चंद सवालात किये और तसल्ली बख्श जवाबात पाए। फिर उस ने आप सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के शानए अक्दस पर उस मुहरे नबुव्वत को भी देखा, जिस का ज़िक्र उस ने आस्मानी किताबों में पढा था। बुहैरा ने मुहरे नबुव्वत को बोसा दिया और आप पर ईमान लाया। बुहैरा उन में से एक है जो हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम पर आप के इज़्हारे नबुव्वत से पहले ईमान लाए हैं।

(हवाला : – मदारिजुन नबुव्वत, अज़ शैखे मुहक्किक शाह अब्दुलहक्क मोहद्दीसे देहलवी, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 41)

582 सन ईस्वी

582 सन ईस्वी में बुहैरा राहिब का मज़्कूरा वाकेआ जब पैश आया तब मुल्के शाम का एक शख्स बासील बिन मिन्जाईल भी बुहैरा राहिब के सौमआ में मौजूद था। और उस ने अपनी आंखों से मज़्कूरा मामला देखा था। फिर वह शख्स अपने घर चला गया। बासील बिन मिन्जाईल को पुख्ता यकीन था कि बुहैरा राहिब हक्क के सिवा कुछ नहीं कहता। लेहाज़ा वह भी उसी वक्त से गरवीदा हो गया। फिर वह शख्स कस्तुनतुनिया चला गया। फिर वहां से कैसारिया जिस का पुराना नाम Strato's Tower है वहां चला गया। जब बासील बिन

मिन्जाईल कैसारिया में था तब उस ने सुना कि मक्का मुअज़्ज़मा में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने ए'लाने नबुव्वत फरमाया है, तो वह आप पर ईमान लाया। बासील बिन मिन्जाईल मुल्के शाम के शहर किल्ल-ए सूर के हाकिम अरमोविल बिन किस्ता का चचा ज़ाद भाई था।

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, उर्दू तर्जुमा, मत्बूआ नवलकिशोर-लखनऊ, सफ्हा : 415)

नोट : बासील बिन मिन्जाईल ने अपना ईमान पोशीदह रखा। यहां तक कि 640, सन ईस्वी (19, सन हिजरी) में मुल्के शाम में किल्ल-ए सूर की जंग के मोकेअ पर उन्हों ने अपना ईमान ज़ाहिर किया और इस्लामी लश्कर की अज़ीम खिदमत अंजाम दीं। जिस का तफ्सीली बयान इस किताब में फुतूहात मुल्के शाम के ज़िम्न में "फतहे किल्ल-ए सूर" के उन्वान के तहत मुलाहेज़ा फरमाओं।

610 सन ईस्वी

610 सन ईस्वी से पहले हज़रत हबीब नज्जार और अस्हाबे करिया वगैरा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अवसाफे जमीला अगली आस्मानी किताबों में पढ कर ए'लाने नबुव्वत के पहले ईमान लाए थे।

(हवाला :- मदारिजुन नबुव्वत, जिल्द : 2, सफ्हा : 41)

613 सन ईस्वी

613 सन ईस्वी या'नी ए'लाने नबुव्वत के पांचवें साल मक्का मुअज़्ज़मा से कुछ मुसलमान कुफ्फारे मक्का के ज़ुल्म व सितम से तंग आ कर हब्शा की तरफ हिज्रत कर गए। क्यूं कि मक्का मुअज़्ज़मा में मुसलमानों का रहना मुशरिकों ने दूभर कर दिया था। लेहाज़ा रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के हुक्म से नबुव्वत के पांचवें साल माहे रजब में मुसलमानों की बहुत बडी जमाअत ने हब्शा की जानिब हिज्रत की। इस हिज्रत को हिज्रते अव्वल कहते हैं। हिज्रत करने वालों में हज़रत उस्मान बिन अफ्फान, हज़रत जा'फर बिन अबी तालिब, वगैरा जलीलुल कद्र सहाबए किराम थे। जब मुश्रेकीने मक्का को पता चला कि मुसलमान हिज्रत कर के

हब्शा गए हुए हैं, तो उन्हों ने एक जमाअत को ब-हैसियते वफ्द बहुत सारे हदाया व तहाइफ के साथ हब्शा के बादशाह के पास भेजा। हब्शा के बादशाह को नज्जाशी कहा जाता है। उस वक्त के नज्जाशी का नाम अस्महा था। कुफ्फारे मक्का के वफ्द ने नज्जाशी बादशाह से मुसलमानों की शिकायतें कीं और ज़हर उगल उगल कर बादशाह के कान भरने की भरपूर कोशिश की और यह दरख्वास्त की कि मुसलमानों को हब्शा से निकाल दें, बादशाह नज्जाशी अस्महा ने कहा कि मुसलमानों ने मेरे मुल्क में पनाह ली है, लेहाज़ा मैं जब तक उन से रूबरू बात चीत न कर लूं ऐसा कोई हुक्म सादिर नहीं कर सकता। चुनांचे मुसलमान शाही दरबार में तलब किये गए। बादशाह ने मुसलमानों से दीने इस्लाम के तअल्लुक से कुछ सवालात किये। हज़रत जा'फर बिन अबी तालिब रदियल्लाहो तआला अन्हो ने इस्लामी अहकाम की ऐसी नफीस तर्जुमानी की कि बादशाह के दिल पर रिक्कत तारी हो गई। फिर नज्जाशी बादशाह ने कहा कि रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम पर जो कलाम नाज़िल हुवा है, उस में से कुछ तिलावत करो। हज़रत जा'फर बिन अबी तालिब रदियल्लाहो तआला अन्हो ने सूरए मरयम तिलावत की। अल्लाह तआला के मुकद्दस कलाम को सुन कर नज्जाशी बादशाह और उस के इर्द गिर्द पादरियों का जो गिरोह था, वह तमाम रोने लगे। तमाम ने यक ज़बान कहा कि **"खुदा की कसम ! यह कलाम और वह कलाम जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम पर नाज़िल हुवा था, दोनों कलाम एक ही मिश्कात से निकले हैं।"**

फिर नज्जाशी ने कहा कि मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं और यह वो ज़ाते गिरामी है जिन की बशारत हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने दी है। "इस के बा'द नज्जाशी ने कुरैशे मक्का के तोहफों को लौटा दिया और उन को ज़लील व रुस्वा कर के अपने दरबार से निकाल दिया। चुनांचे मुश्रेकीने मक्का का वफ्द खाइब व खासिर हो कर ना-काम्याब वापस लौटा। (हवाला :- मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफ्हा : 65)

तवज्जोह दरकार !

मज़कूरा तमाम वाकेआत 623, सन ईस्वी में जेहाद की आयत नाज़िल होने से पहले के हैं। बुहैरा राहिब, बासील बिन मिन्जाईल, हबीब नज्जार और अस्हाब करिया के वाकेआत तो ए'लाने नबुव्वत 610, सन ईस्वी के पहले के हैं। उन का ए'लाने नबुव्वत से पहले ईमान लाना इस बात की रौशन दलील है कि तौरेत, इन्जील, और दीगर कुतुबे समावी में

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अवसाफे जमीला और दीने इस्लाम की सदाकत व हक्कानियत मज़कूर थी। जिस को पढ कर उन्हों ने जान लिया था कि नबी-ए-आखिरुज़्ज़मां सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की ज़ात सुतूदा सिफात किन किन अवसाफ की हामिल होगी और जब उन्हों ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के दीदार का शर्फ हासिल किया, तो उन्हों ने हुज़ूर को ऐन उन तमाम अवसाफ के मुताबिक पाया, जो अगली किताबों में मर्कूम थे। लेहाज़ा उन्हों ने बिला किसी ताम्मुल व ताखीर ईमान लाने में सब्कत की। **उन्हों ने हक्क पढा, हक्क सुना, हक्क देखा, हक्क को जाना, हक्क को माना और हक्क को कबूल किया।** कोई तलवार ले कर उन के सर पर न खडा था कि ब-हालते इक्रा-हो मजबूरी उन्हों ने कल्मा का इक्रार किया। तलवार से उन की कोई गर्दन उडा देने वाला न था कि अपनी जान बचाने के लिये कल्म-ए शहादत का ए'तेराफ किया,बल्कि उन्हों ने सिद्क दिल से, इस्लाम और रहमते आलम की हक्कानियत व सदाकत को "अज़हर-मिनश-शम्स" ज़ाहिरो बाहिर देख कर इमानो इस्लाम कबूल किया था।

इसी तरह नज्जाशी बादशाह के किस्से में तो यह हकीकत और वाज़ेह हो गई कि इस्लाम को तलवार से नहीं फैलाया गया। अलबत्ता तलवार से इस्लाम को खत्म करने की ज़रूर कोशिश की गई। नबुव्वत के पांचवें साल मक्का से हब्शा की तरफ मुसलमानों की बहुत बडी जमाअत का हिज्रत करना इस बात की दलील है कि दीने हक्क इस्लाम कबूल करने की वजह से मक्का मुअज़्ज़मा के कुफ्फार मुसलमानों के खून के प्यासे हो गए थे। कुतुबे सैर व तवारीख में बे-शुमार वाकेआत इस किस्म के पाए जाते हैं कि इस्लाम के इब्तिदाई दौर में ईमान लाने वालों को इस्लाम से मुन्हरिफ करने के लिये कुफ्फार व मुश्रेकीन ने मुसलमानों पर मुसीबतों के पहाड तोडे और उन का जीना मुश्किल कर दिया था। इस्लाम कबूल करने के बा'द मुसलमान अमन व अमान को तरस गए और अमन व अमान और चैन व सुकून की तलाश व जुस्तजू में ही उन्हों ने मक्का मुअज़्ज़मा से हब्शा तक का तवील सफर किया था। एक बडी जमाअत का मक्का से हब्शा तक हिज्रत करना साबित करता है कि उन्हों ने इस्लाम की सदाकत को ऐसा जाना और माना कि तहफ्फुज़े ईमान की खातिर अपने मादरे वतन को खैर आबाद व अलवदाअ कर दिया। मक्का मुअज़्ज़मा में उन पर जो जुल्म व सितम ढाए गए, वह सिर्फ इस्लाम कबूल करने की वजह से ही ढाए गए थे। अगर इस्लाम तलवार से फैला होता तो इस्लाम कबूल करने वाली एक बडी जमाअत मक्का से हरगिज़ हिज्रत न करती। **इस्लाम ने तलवार नहीं उठाई थी बल्कि इस्लाम पर तल्वार उठाई गई थी। इस्लाम को तलवार से नहीं फैलाया जा रहा था बल्कि इस्लाम को तलवार से मिटाने की कोशिश की जा रही थी।**

कुफ्फारे मक्का की इस्लाम दुश्मनी तशद्दुद व तअस्सुब की हदें उबूर कर चुकी थी। लेहाज़ा मक्का मुअज़्ज़मा से हिज्रत करने वालों को हब्शा में भी परेशान करने के फासिद इरादे से कुफ्फारे मक्का का वफ्द मुसलमानों के तआककुब में हब्शा पहोंच गया। हब्शा के बादशाह को अपना मुवाफिक बनाने के लिये कीमती तोह्फे बादशाह की खिदमत में पैश किये या'नी इस्लाम को खत्म करने के लिये अपना तन, मन और धन सब खर्च करने लगे। तहाइफ और हदाया के ज़रीए शाही दरबार में रसाई हासिल होने पर उन्हों ने पहली फरमाइश मुसलमानों को हब्शा से जेला वतन करने की की। लैकिन इन्साफ पसन्द बादशाह ने मुसलमानों को गुफ्त व शुनीद का मौका' दिया। जिस वक्त मुसलमान नज्जाशी बादशाह के दरबार में तलब किये गए, उस वक्त मुसलमान मज़्लूमियत की हालत में थे। उन पर शर अंगेज़ी का इल्ज़ाम था। ब-हैसियते मुल्ज़िम वह शाही दरबार में खडे थे। उन के मुस्तकबिल का फैसला होने वाला था। जेला वतनी की तलवार उन के सरों पर लटक रही थी। मुसलमानों के हाथों में तलवार न थी। लैकिन "अल हक्को या'लू वला यो'ला" या'नी हक्क गालिब होता है मग्लूब नहीं होता, के मुताबिक शाही दरबार में हक्क की सदाकत का पर्चम लहराया। यहां तक कि नज्जाशी बादशाह ने इस्लाम की सदाकत का ए'तेराफ किया और दौलते ईमान से मुशर्रफ हुवा। तो क्या शाह हब्शा नज्जाशी ने तलवार के खौफ से इस्लाम की सदाकत का ए'तेराफ किया था ? हरगिज़ नहीं, बल्कि मुआमला बर-अक्स था। तलवार मुसलमानों के हाथों में नहीं बल्कि बादशाह के तसर्रुफ में थी। बादशाह के अदना इशारे पर मुसलमानों की गर्दनें धड से अलग हो सक्ती थीं। बादशाह मुख्तार था मजबूर न था। उस ने तलवार के खौफ से ए'तेराफे हक्क नहीं किया था, बल्कि कलामुल्लाह की हक्कानियत ने उस के दिल को हक्क पज़ीर किया था।

शाहे हब्शा नज्जाशी उन सआदत मन्दों में से हैं जिन की नमाज़े जनाज़ा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने पढी। 9, सन हिजरी में शाह हब्शा ने रेहलत की। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहो अन्हुमा से मर्वी है कि जिस दिन शाहे हब्शा नज्जाशी ने वफात पाई, नबीए करीम, हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने सहाबए किराम से फरमाया कि आज तुम्हारे भाई मर्द सालेह अस्महा ने वफात पाई। उठो और उन की नमाज़े जनाज़ा पढो और अपने भाई के लिये इस्तिग्फार करो। इस के बा'द हम हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के पीछे सफ बांध कर खडे हो गए और हम ने ईद गाह में नमाज़े जनाज़ा पढी।

(हवाला : मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 637)

एक ज़रूरी अम्र की वज़ाहत पैशे खिदमत है कि जनाज़-ए गाइब की नमाज़ पढने में ओल्मा का इख्तिलाफ है। हज़रत इमाम शाफई, इमाम अहमद बिन हम्बल रहेमहुमल्लाह तआला फरमाते हैं जाइज़ है और इमाम आ'ज़म अबू हनीफा और इमाम मालिक रदियल्लाहो तआला अन्हुमा का मज़हब यह है कि जाइज़ नहीं, क्यूं कि नमाज़े जनाज़ा के शराइत में से यह है कि नमाज़ पढने वाले के सामने मय्यत का मौजूद होना ज़रूरी है। और गाइब की नमाज़े जनाज़ा पढने में नमाज़ पढने वालों के सामने मय्यत मौजूद नहीं होती। लैकिन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने नज्जाशी बादशाह की गाइबाना नमाज़े जनाज़ा पढने का ज़िक्र मज़्कूरा बाला हदीसे हज़रत जाबिर में है। इस का जवाब अइम्मा-ए दीन यह देते हैं कि नज्जाशी बादशाह के किस्से में भी वह नमाज़े जनाज़ा गाइब पर न थी बल्कि ज़मीन को लिपट कर नज्जाशी बादशाह का जनाज़ा **आलिमे- मा- काना- व- मा- यकून, गैब जानने वाले प्यारे आका** सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सामने ज़ाहिर कर दिया गया था। या जनाज़ा को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सामने लाया गया था। इलावा अज़ीं नमाज़े जनाज़ा में मुक्तदियों का जनाज़ा देखना शर्त नहीं। अगर इमाम ने जनाज़ा देख कर पढाई तो इमाम का देखना मुक्तदियों के लिये काफी है।

शैखुल अजल, इमामुल अद्ल, अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र अल वाकदी रदियल्लाहो तआला अन्हो अपनी तफ्सीर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत करते हैं, उन्हों ने फरमाया कि **हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के लिये नज्जाशी के जनाज़ा को पैशे नज़र कर दिया गया था। यहां तक कि आप ने मुलाहेज़ा फरमा कर जनाज़ा की नमाज़ पढी।**

इस्लाम अपनी हक्कानियत की वजह से फैला

❀ **614 सन ईस्वी** या'नी नबुव्वत के ऐ'लान के छटे साल मक्का मुअज़्ज़मा में कौमे कुरैश के सब से ज़ियादह गैरत मन्द, शहे ज़ोर, शुजाअ और बहादुर हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब ईमान लाए। उन के ईमान लाने के तीन रोज़ के बा'द हज़रत उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहो तआला अन्हो ईमान लाए। हज़रत उमर के ईमान लाने का वाकेआ भी हैरत अंगेज़ है। उन को पता चला कि उन की बहन फातिमा और उन के बेहनोई हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफैल रदियल्लाहो तआला अन्हो कि जिन का शुमार अशरए मोबश्शेरह

में होता है। यह दोनों मुसलमान हो गए हैं। लेहाज़ा वह अपनी बहन के पास गए और खूब पीटा, यहां तक कि वह लहु-लुहान हो गईं। उन की बहन ने कहा कि तुम चाहो तो मुझे कत्ल कर दो लैकिन हकीकत यह है कि में मुसलमान हो गई हूं। थोडे वक्फे के बा'द हज़रत उमर फारूक ने अपनी बहन से फरमाया कि मैं जब घर में दाखिल हुवा, तो तुम और सईद बिन ज़ैद कुछ पढ रहे थे। मुझे दिखाओ कि तुम क्या पढ रहे थे ? बहन ने कहा कि तुम नापाक और मुशरिक हो। और हम ऐसी किताब पढ रहे थे कि जिस को सिर्फ पाक लोग ही छू सक्ते हैं। हज़रत उमर ने गुस्ल फरमाया और सूरए ताहा को पढना शुरू किया और आप पर गिर्या तारी हो गया और आप ने उसी वक्त कल्मए शहादत पढ लिया। (मवाहिबुल लदुन्निया, अज़ अल्लामा अहमद बिन मुहम्मद अल मिस्री अल-कुस्तुलानी)

हज़रत उमर फारूके आज़म और हज़रत हम्ज़ा रदियल्लाहो तआला अन्हुमा दोनों मक्का मुअज़्ज़मा के बहादुरों में शुमार होते थे। उन दोनों को इस्लाम कबूल करने पर किस ने तलवार दिखा कर मजबूर किया था ? बल्कि हज़रत उमर तो तलवार ले कर अपनी बहन और बहनोई को मारने गए थे, लैकिन कुरआने मजीद की हक्कानियत से इत्ने मुतअस्सिर हुए कि जिस तलवार से अपने बहन बहनोई को मारने गए थे उसी तलवार से अपने कुफ्र को काट डाला और ईमान की ला-ज़वाल दौलत से मालामाल हो गए।

❀ **619 सन ईस्वी** या'नी ए'लाने नबुव्वत के ग्यारहवें साल अय्यामे हज्ज में मदीना तय्यबह के करीबी इलाके खज़्रज का एक वफ्द मक्का मुअज़्ज़मा आया। उस वक्त रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ब-मकाम मिना उक्बा के करीब तशरीफ फरमा थे। वह वफ्द हाज़िरे खिदमते अक्दस हो कर इस्लाम से मुशर्रफ हो कर मदीना मुनव्वरा लौटा। मदीना मुनव्वरा में हर घर और हर मजलिस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का ज़िक्र होने लगा। साले आइन्दा मदीना तय्यबह से एक दूसरा वफ्द हाज़िरे बारगाहे रिसालत हो कर ईमान से मुशर्रफ हुवा और उस वफ्द में हज़रत उबादा बिन सामित रदियल्लाहो तआला अन्हो थे। उस वफ्द की ख्वाहिश पर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हज़रत मुस्अब बिन उमैर रदियल्लाहो तआला अन्हो को उन के साथ मदीना मुनव्वरा भेजा ताकि वह अह्ले मदीना को कुरआन की ता'लीम दें और दीन के मसाइल सिखाऐं। इसी साल मदीना मुनव्वरा में जुम्आ की नमाज़ शुरू हुई। हज़रत मुस्अब बिन उमैर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने इशाअते दीन में सईए बलीग फरमाई। चुनांचे मदीना मुनव्वरा में नूरे ईमान की ज़ियाऐं फैलने लगीं। और लोग जूक दर जूक इस्लाम में दाखिल

होने लगे । इस्लाम की सदाकत का फरैरा मदीना तय्यबह में लहरा ने लगा । (हवाला : – मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 84 ता सफहा : 86)

❀ **621 सन ईस्वी** या'नी ए'लाने नबुव्वत के तेरहवें साल हज़रत मुस्अब बिन उमैर रदियल्लाहो तआला अन्हो अन्सार की एक कसीर जमाअत ले कर हज्ज के ज़माने में मक्का मुअज़्ज़मा आए । मदीना तय्यबह से मुश्रेकीन भी काफी ता'दाद में ब-इरादए हज्ज मक्का मुअज़्ज़मा आए हुए थे । हज़रत मुस्अब के साथ कौम औस और कौम खज़्रज के पांच सौ आदमी आए हुए थे । यह तमाम लोग मदीना से आए हुए मुश्रिकों से छुप कर अक्बा के करीब पहाड पर जमा हुए वहां हुज़ूरे अक्दस सैयेदुल मुर्सेलीन तशरीफ ले गए और तमाम को बैअते इस्लाम से मुशर्रफ फरमाया । मदीना से आए हुए इस वफ्द में बारह हज़रात मदीना के रूउसा और अकाबिर थे । दौलते ईमान से सरफराज़ होने के बा'द उन में ऐसा ईमानी जज़्बा और वल्वला पैदा हुवा कि इस वफ्द में से एक शख्स ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह ! आप इजाज़त मरहमत फरमाऐं तो इस वक्त मिना में जो मुश्रेकीन जमा हैं हम उन को तलवार की धार पर रख लें और कत्ल कर दें । हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया कि **"मुझे इस का हुक्म नहीं दिया गया है कि तलवार सौंतू और मुश्रिकों के साथ जंग करूं ।"** इस के बा'द अन्सार का वह काफला मदीना मुनव्वरा लौटा ।

मक्कए मुअज़्ज़मा से मदीना मुनव्वरा लौटते वक्त अन्सार के काफले ने बारगाहे रिसालत में इल्तिमास व गुज़ारिश की कि या रसूलुल्लाह ! अगर आप हमारे साथ मदीना तय्यबह तशरीफ ले चलें तो ज़हे सआदत ! आप जो भी हुक्म फरमाऐंगे हम जान व दिल से ताबेए फरमान होंगे । हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया कि **"मुझे अभी मक्का मुअज़्ज़मा से निकलने का हुक्म नहीं हुवा है और मेरी हिज्रत के लिये कोई मकाम मुतअय्यन नहीं किया गया है । जिस वक्त भी हुक्म होगा और जहां के लिये भी हुक्म होगा वहां हिज्रत करूंगा ।"** यह फरमा कर हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने अन्सारे मदीना के काफले को रुखसत फरमा दिया । जब मक्का मुअज़्ज़मा के कुफ्फार को पता चला कि अन्सारे मदीना का काफला यहां आया था और इस्लाम कबूल कर के वापस लौट गया है, तो वह हसद की आग में जल उठे । हसरत व यास से सीने पर हाथ मारने लगे और ज़िल्लत व नदामत की खाक से अपने सरों को आलूदह करने लगे । (हवाला : मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 87 ता 90)

कारेईन तवज्जोह फरमाऐं कि मदीना मुनव्वरा से जूक दर जूक मक्का मुअज़्ज़मा आ कर इस्लाम कबूल करने की लोगों को किस ने तर्गीब दी ? किस ने मुस्तइद किया ? किस ने आमादा किया ? **सिर्फ और सिर्फ इस्लाम और रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की सदाकत ने ।** इस्लाम में दाखिल होने वाले उन शैदाइयों को किस ने तलवार दिखा कर डराया था या धमकी दी थी ? के मुसलमान हो जाओ वरना गर्दन काट दी जाएगी । हरगिज़ नहीं बल्कि ईमान लाने वाले अन्सार की जमाअत कुफ्फार व मुश्रेकीन से खौफ-ज़दा थी इसी लिये तो खुफिया तौर पर उक्बा के करीब वाकेअ एक पहाड पर जमा हो कर दाखिले इस्लाम हुए थे । उन हज़रात को मुसलमानों की तलवारों का बिल्कुल खौफ न था । अलबत्ता कुफ्फार व मुश्रेकीन की मुतशद्दिद शम्शीरों से ज़रूर खाइफ थे । इस्लाम के आलमगीर पैगामे अमन व अमान का तो उन्हों ने ज़ाती तजरबा और मुशाहेदा कर लिया कि जब वफ्द में से एक शख्स ने कुफ्फार व मुश्रेकीन पर तलवार ज़नी की इजाज़त तलब की तो रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने मुमानेअत फरमा दी ।

❀ **622 सन ईस्वी** शजरे इस्लाम को परवान चढता देख कर कुफ्फार व मुश्रेकीन बोखला गए । इस्लाम की रौशनी-ए-हिदायत को मज़ीद फैलने से रोकने के लिये उन्हों ने तमाम तर्कीबें आज़मा लीं । लैकिन नाकाम व नामुराद रहे । लेहाज़ा तर्कश का आखरी तीर इस्ते'माल करते हुए मुश्रेकीन ने दारुन-नदवा में शैख नज्दी की राए और मश्वरे से इत्तेफाक करते हुए यह तय किया कि आफ्ताब नबुव्वत व रिसालत की रौशनी को ब-शक्ल इस्लाम फैलने से हम नहीं रोक सक्ते तो अब यह करो कि आफ्ताबे रिसालत को ही गुरूब कर दो । या'नी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को शहीद कर दो ताकि न आफ्ताब रहे, न इस की रौशनी फैले । गोया कि कुफ्फार ने "न रहे बांस न बजे बांसुरी" वाली कहावत पर अमल करने का मुसम्मम और पुख्ता इरादा कर के जाने आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को शहीद करने की साज़िश की । लैकिन अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को कुफ्फार के फासिद इरादे से मुत्तलेअ फरमा दिया और आप ने 622 सन ईस्वी में मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना तय्यबह की जानिब हिज्रत फरमाई ।

जब अह्ले मदीना को रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की हिज्रत की इत्तेलाअ मिली तो मदीना मुनव्वरा में खुशी की लहर दौड गई । लोग फर्ते मसर्रत से झूम उठे और आप का शानदार इस्तेक्बाल करने की गर्ज़ से रोज़ाना मदीना मुनव्वरा से

बाहर निकल कर मुन्तज़िर रहते। बिल–आखिर वह वक्त भी आ पहुंचा कि आफ्ताबे रिसालत व माहताबे नबुव्वत, जाने आलम व रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने कुदूम मैमनत लुज़ूम फरमाया। वह दिन दोशम्बा मुबारका का था और इसी दिन से हिजरी सन (कमरी हिजरी) लिखने की इब्तिदा हूई। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने मदीना मुनव्वरा में रौनक अफ्रोज़ होने के बा'द मस्जिदे कुबा शरीफ की तासीस व ता'मीर फरमाई और यह वह पहली मस्जिद है जो इस्लाम में ता'मीर की गई। और यह वह पहली मस्जिद है जिस में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने सहाबए किराम की जमाअत के साथ नमाज़ पढी है।

मदीना तय्यबह में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के दस्त हक्क परस्त पर इस्लाम लाने के लिये लोगों का तांता लग गया, अतराफ के इलाकों और कुर्ब व ज्वार के दैहातियों से गिरोह बन्दी से लोग आ कर दाखिले इस्लाम होने लगे और इस्लाम को तकवीयत व गल्बा हासिल होना शुरू हुवा और मदीना मुनव्वरा मर्कज़े इस्लाम की हैसियत से मश्हूरो मा'रूफ होने लगा। शम्अ–ए–रिसालत के परवानों की ता'दाद में रोज़ अफ्ज़ूं इज़ाफा होने लगा। यह तमाम वाकेआत 22 सन ईस्वी या'नी 1 सन हिजरी के हैं और उस वक्त तक रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को इज़्ने जेहाद न मिला था। उस वक्त तक कोई बडी जंग तो दर किनार बल्कि मा'मूली मुकातला भी रूनुमा न हुवा था। लैकिन हज़ारों की ता'दाद में लोग मुशर्रफ बा इस्लाम हो चुके थे। उन तमाम को क्या तलवार के बल बूते पर मुसलमान बनाया गया था ? हाशा लिल्लाह हाशा लिल्लाह ! रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की दिलकश व मुतवाज़िन शख्सियत, आप की शीरीं–मकाली, तवाज़ोअ, इन्किसारी, अख्लाकी महासिन और इस्लाम के हयात बख्श उसूलों ने लोगों को ऐसा गरवीदा और फरेफ्ता कर दिया था कि अपने आबाई बातिल दीन को आने वाहिद में तर्क कर के परस्ताराने हक्क में शामिल हो गए।

❀ **622 सन ईस्वी, 1 सन हिजरी :-** यहां एक ज़रूरी अम्र की भी वज़ाहत करना लाज़िमी है कि मदीना मुनव्वरा में जाने आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की तशरीफ आवरी पर जो लोग ब–शौक व इश्तेयाक दाखिले इस्लाम हो रहे थे। उन में कौम के अदिब्बा, फुज़्ला, उमरा, ओल्मा, सुल्हा, रूउसा और हुक्मा भी शामिल थे। वह तमाम सिर्फ रवादारी या देखा देखी इस्लाम में दाखिल नहीं हुए थे। बल्कि उन्हों ने रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अवसाफ को देखा, जांचा, टटोला, परखा और

सदाकत पर मब्नी पा कर इक्रारे तौहीद व रिसालत किया था। यहां तक कि इस्लाम की सख्त तरीन दुश्मन कौमे यहूद के जय्यद और माय–ए–नाज़ ओल्मा व फुज़्ला ने भी साबिका कुतुबे समावी की रौशनी में इस्लाम को हक्क पाया और दौलते ईमान की सआदत हासिल की। मसलन :-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम का कबूले इस्लाम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की औलाद में से थे। उन का शुमार अकाबिरे ओलमा–ए यहूद में होता था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम मदीना मुनव्वरा में कदम रंजा हुए और लोग आप की मजलिस मुबारक की हाज़री में सब्कत करने लगे तो मैं भी उन के हमराह हुज़ूर की बारगाह में बारयाबी से मुशर्रफ हुवा। जब मेरी पहली नज़र आप के रूए अन्वर पर पडी तो मैं ने जान लिया कि यह कज़्ज़ाबों या'नी झूटों का चेहरा नहीं है। फिर मैं ने आप की ज़बाने अक्दस से पन्द व नसीहत के कलेमात समाअत किये। बा'दहु अपने घर लौट आया। आप की गुफ्तगू से मैं बहुत मुतअस्सिर हुवा था। लेहाज़ा दूसरी मरतबा खिल्वत में हुज़ूर की खिदमत में हाज़री दी। उस वक्त की हाज़री में मैं ने आलिमे मा कान व मा यकून से तीन ऐसे सवालात किये जिन का जवाब नबी के सिवा दूसरा कोई नहीं दे सक्ता। जब मैं ने अपने सवालों का शाफी और काफी जवाब सुना तो ब–आवाज़े बुलन्द कल्मए शहादत पढ कर इस्लाम में दाखिल हो गया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ने इस्लाम कबूल करने के बा'द अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह ! यहूद ऐसी कौम है जो किज़्ब व बोहतान में अपना जवाब नहीं रखती। बावुजूदे कि वह मेरे इल्म, मेरी सियादत और सरदारी के काइल हैं लैकिन जब उन को पता चलेगा कि मैं ईमान ले आया हूं तो वह बोहतान बांधेंगे। लेहाज़ा आप मेरा ईमान लाना उन पर पोशीदह रख कर पहले मेरे बारे में उन की राए दर्याफ्त फरमा लें। चुनांचे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने उन को पोशीदह मकाम में बिठा दिया और यहूदियों की एक जमाअत को बुला कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम के मुतअल्लिक पूछा कि वह कैसे शख्स हैं ? तमाम ने यक ज़बान हो कर कहा कि **"वह हमारे सरदार, हमारे सरदार के फर्ज़न्द, हम में सब से ज़ियादह आलिम, हमारे पेश्वा, हम में बेहतरीन, हम में दाना तरीन हैं।"** हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने जमाअते यहूद से बार बार हज़रत

अब्दुल्लाह बिन सलाम के मुतअल्लिक पूछा । हर मरतबा उन्हों ने यही जवाब दिया और उन की ता'रीफ व तौसीफ के पुल बांधे । फिर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया : ऐ इब्ने सलाम बाहिर आओ । हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम कल्म-ए शहादत पढते हुए बाहिर आए और फरमाया ऐ गिरोहे यहूद ! ईमान ले आओ । इस पर गिरोहे यहूद ने कहना शुरू किया कि अब्दुल्लाह बिन सलाम हम में बद-तरीन व जाहिल हैं और बद-तरीन और जाहिल तरीन के फर्ज़न्द हैं ।

(हवाला मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 107 ता 113)

इस को कहते हैं बुग्ज़ व इनाद । थोडी देर पहले जिन्हों ने अपनी ज़बानों से एक मरतबा नहीं बल्कि कईं मरतबा जिस की ता'रीफ में आस्मान व ज़मीन के कुलाबे मिला दिये थे, वही लोग उसी नशिस्त में, उन ही ज़बानों से चंद लम्हों के बा'द हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम की तज़लील में आस्मान सर पर उठा रहे थे । सिर्फ इस्लाम कबूल करने की वजह से हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम अपनी कौम की नज़रों में मदह व सना के बजाए ता'न व तश्नीअ के सज़ा वार हो गए थे । लैकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहो तआला अन्हो ने कौमे यहूद की इफ्तरा परदाज़ी से कतेअ नज़र फरमा कर सदाकत व हिदायत से मुन्हरिफ न हुए । क्या हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहो तआला अन्हो की गर्दन पर तलवार की धार रख कर ईमान लाने पर मजबूर किया गया था ? हरगिज़ नहीं बल्कि उन को इस्लाम से मुन्हरिफ करने के लिये कौमे यहूद ने एडी चोटी का ज़ोर लगाया था । मगर वह अपने मज़्मूम इरादों में काम्याब न हो सके । इस्लाम तलवार से नहीं फैला अलबत्ता सादा मुसलमानों को तलवार के ज़ोर से इस्लाम से फैरने की कोशिश की गई है । अगर इस्लाम तलवार से फैला होता तो इस्लाम लाने वाले तलवार के खौफ से इस्लाम से फिर जाते और मुर्तद हो जाते, लैकिन तमाम बातिल ताकतें मुत्तहिद हो कर भी मुसलमानों के ए'तेकाद व यकीन में तज़ल्ज़ुल बर्पा न कर सके और मुसलमान दीने हक्क पर साबित कदम रहे और रहेंगे ।

हुक्मे जेहाद क्यूं नाज़िल हुवा ?

इस्लाम की बढती हूई शान व शौकत देख कर कुफ्फार व मुश्रेकीन के साथ साथ यहूदो नसारा भी हसद व इनाद में तिल्मिला उठे । कौमे यहूदो नसारा के आलिम इस्लाम में अलल ए'लान दाखिल हुए । मसलन हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम । इसी तरह हज़रत सलमान फारसी रदियल्लाहो तआला अन्हो जो कि अस्फहान के रहने वाले थे, उन्हों ने दीन

की तलाश में दूर दराज़ की मुसाफत तय की थी । हज़रत सलमान फारसी ने दीने नसरानी इख्तेयार किया था और इन्जील के ज़बरदस्त आलिम थे । जब उन्हों ने मदीना मुनव्वरा में रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम से मुलाकात का शर्फ हासिल किया तो उन्हों ने हुज़ूरे अक्दस में वह अवसाफे जमीला पाए जो उन्हों ने इन्जील में नबी-ए-आखिरुज़-ज़मां की ता'रीफ में पढे थे । लेहाज़ा वह भी ईमान ला कर इस्लाम में दाखिल हो गए । इलावा अज़ीं रोज़ाना गिरोह के गिरोह उमडते हुए सैलाब की तरह आते और शम्ए नबुव्वत व रिसालत पर परवाना वार निछावर होते थे । लेहाज़ा अद्याने बातिल के सरगना के सरों पर खून सवार हो गया । मदीना मुनव्वरा के मुश्रेकीन व यहूद ने मक्का मुअज़्ज़मा के कुफ्फार व मुश्रेकीन से राब्ते बढाए और इस्लाम दुश्मनी पर हाथ मिलाए और इस्लाम की बीखकुनी के लिये कमर बस्ता हुए । मक्का मुअज़्ज़मा, खैबर, वगैरा मकामात पर फौजें तश्कील दी जाने लगीं । जंगी हथियार भारी ता'दाद में जमा किये जाने लगे । इलावा अज़ीं समाजी और मुआशरती ज़िन्दगी में उन्हों ने मुसलमानों को सख्त अज़ीयतें देनी शुरू कीं । ज़ुल्म व जफा का बाज़ार गर्म किया । बल्कि मुसलमानों पर ज़ुल्म करने में फख्र और फलाह मेहसूस करने लगे । बच्चे, बुड्ढे, औरतें, ज़ईफ, बीमार, और नातवां को सताने में भी कोई कसर न उठा रखी । मुसलमान उन के ज़ुल्म व तशद्दुद का आए दिन शिकार होते थे । मजरूह व ज़ख्मी हो कर बारगाहे रिसालत में आते और ज़ालिमों के मज़ालिम की शिकायतें करते । लैकिन रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम हमेंशा मज़्लूमीन को सब्र करने की तल्कीन फरमाते ।

हालात ऐसे रूनुमा हो गए थे कि कुफ्फार व मुश्रेकीन की जुरअतें दिन ब दिन बढती जा रही थीं । अपने मुसलमान भाइयों पर किये जाने वाले ज़ुल्म व सितम देख कर साहिबे इस्तिताअत, शहे ज़ोर, शुजाअ और ज़ी कुव्वत मोमेनीन के सब्र का पैमाना लबरेज़ हो जाता, कुव्वते ज़ब्त व तहम्मुल जवाब दे जाती, तब वह बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर जंग व किताल की इजाज़त तलब करते । लैकिन रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम हमेंशा यही इर्शाद फरमाते कि मुझे जेहाद करने का हुक्म नहीं मिला । मुसलमानों का सब्र करना और जवाब न देना महज़ रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की तल्कीने सब्र की बिना पर था, हालां कि अब मुसलमान ऐसी पोज़ीशन में थे कि वह **ईंट का जवाब पत्थर से** दे कर ज़ालिमों की **ईंट से ईंट बजा देते ।** लैकिन मुसलमानों ने अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के हुक्म को सर आंखों पर लिया और जवाबी कारवाई की तरफ इल्तिफात न किया, जिस का कुफ्फार व मुश्रेकीन ने गलत मफ्हूम

अखज़ किया कि मुसलमान हम से डरते हैं या मुसलमानों में हमारा मुकाबला करने की ताकत नहीं, लेहाज़ा उन के हौसले खूब बुलन्द हुए और ज़ुल्म की आग के शो'ले मज़ीद तेज़ भडकने लगे। जब ज़ालिमों के ज़ुल्म की कोई इन्तेहा न रही और पानी सर से ऊंचा हो गया, तब मशीयते इलाही ने ज़ालिमों की सरकोबी के लिये रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को जेहाद की इजाज़त मरहमत फरमाई। चुनांचे 2, सन हिजरी या'नी 623, सन ईस्वी में जेहाद की इजाज़त व हुक्म नाज़िल हुवा।

2, सन हिजरी में जेहाद का हुक्म नाज़िल होने के बा'द गज़वात व सराया का आगाज़ हुवा। रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने सब से पहले जंगे बद्र 623 सन ईस्वी में शिर्कत फरमाई और सब से आखरी गज़वा कि जिस में आप तशरीफ फरमा थे। वह गज़वा जैशुल इस्रत 630 सन ईस्वी (तबूक 9 सन हिजरी) है। या'नी आप ने अपनी ज़ाहेरी हयात के सिर्फ आठ साल ही गज़वात में शिर्कत फरमाई है। इलावा अज़ीं आप ने जिन जिन गज़वात में शिर्कत फरमाई है, वह तमाम गज़वात दफए ज़रर व तुग्यान के लिये ही थे। **आप की हयाते तय्यबह में जो गज़वात वुकूअ पज़ीर हुए वह ज़ुल्म ढाने के लिये नहीं बल्कि इमारते ज़ुल्म ढाने के लिये थे। आप ने मज़्लूम पर उठने वाली ज़ालिम की तलवार को रोकने के लिये तलवार उठाई थी।** ज़ुल्म की ज़न्जीरों में जकडे हुए बे सहारा मज़्लूमों को नजात दिलाने के लिये आप ने तलवार उठाई और आप ने ज़ुल्म की उन ज़न्जीरों पर तल्वार की कारी ज़र्बें लगा कर पाश पाश फरमा दिया और आलमे दुनिया को यह पैगाम इनायत फरमाया कि ज़ालिम को ज़ुल्म करने से रोकने में दोहरी भलाई है। पहली यह कि ज़ालिम को ज़ुल्म से बाज़ रखने में उस की भलाई है और मज़्लूम को ज़ुल्म का शिकार होने से बचाने में मज़्लूम की भलाई है।

अगर रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम जेहाद न फरमाते तो ज़ुल्म की रोक थाम न होती और बढते हुए ज़ुल्म को रोकना इन्सानियत का अहम फरीज़ा व तकाज़ा है। ज़ुल्म के सामने सीना सिपर हो कर खडा होना और उस का दिलेराना मुकाबला करना बहादुरी की अलामत है और इस के बर-अक्स ज़ुल्म को देख कर घुटने टेक देना और सर पर हाथ धरे बैठे रहना बुज़दिली और काहिली है। इस किस्म की बुज़दिली दिखाने से ज़ालिम के हौसले और बढेंगे और मुआशिरे से अमन व अमान दाइमी तौर पर रुखसत हो जाएगा। अपनी हकीकी दुख्तर को अपने ही हाथों ज़िन्दा दफ्न करना, शराब के नशे में धुत हो कर किसी भी शरीफ औरत से बद-सुलूकी करना, अस्मत दरी करना, औरत को दिल बेहलाने

का खिलौना समझ कर उस के साथ वहशियाना सुलूक करना, चोरी, डकैती, कज़्ज़ाकी, लूट मार, खयानत, दगाबाज़ी, फरेब कारी, धोका बाज़ी, जुवा, शराब नोशी, ज़िना कारी, किसी का माल नाजाइज़ तौर पर दबा लेना, बे हयाई, उर्यानियत, फहश कलामी, तोहमत वगैरा अफआले रज़ीला व शनीआ से मुआशिरे को पाक व साफ करना इन्सानियत का अव्वलीन अख्लाकी फरीज़ा है। जब तक इन उमूरे कबीहा को रुखसत न किया जाएगा, दुख्तर परवरी, पारसाई, दयानत दारी, परहेज़ गारी, पाक दामनी, हमदर्दी, रास्त कलामी, हयादारी, अमानत दारी, सिद्क गोई वगैरा अख्लाकी महासिन की फिज़ा काइम करना दुश्वार है। रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने आलमे दुनिया को अमन व अमान का ही पैगाम दिया है और अमन व अमान की बुन्यादें मुस्तहकम करने के इरादे से ही आप ने जेहाद फरमाया, ताकि सितम शआर और सितम ज़रीफ लोगों की सितम गारी की जडें उखाड कर उस का सहीह मा'नी में इस्तीसाल किया जाए।

रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को अल्लाह तआला ने रहमतुल लिल आलमीन बना कर मब्ऊस फरमाया था और आप की रहमते आम्मा से पूरी काएनात बहरा मन्द हूई और होती रहेगी। लेहाज़ा आप ने रहमत का पहलू इख्तेयार फरमा कर ही जेहाद फरमाया था। जिस्म के छोटे उज़्व, मिसाल के तौर पर हाथ की उंगली में जुज़ाम (Leprosy) का मर्ज़ लाहिक हो जाए और तबीबे हाज़िक कहे कि अगर उंगली काट कर जिस्म से अलग नहीं की गई तो यह मर्ज़ पूरे बदन में फैल जाएगा, ऐसी सूरत में ज़ी अक्ल शख्स फौरन ही तबीबे हाज़िक की राए पर अमल पैरा होगा। हकीम साहिब पर यह इल्ज़ाम कतअन आइद नहीं किया जाएगा कि हकीम जी हाथ की उंगली के पीछे पड गए हैं और उंगली को कत्ल करने के दरपै हुए हैं। यकीनन जुज़ाम से मुतअस्सिर होने वाली उंगली कटने से जिस्म को थोडी देर के लिये ईज़ा व तक्लीफ होगी लैकिन उस के नतीजे में पूरा जिस्म मुहलिक मर्ज़ से महफूज़ रहेगा। इसी तरह किसी शरीफ आदमी के मकान में कोई बदमाश घुस जाए और नंगी तलवार दिखा कर साहिब खाना की जवान बेटी की इज़्ज़त व अस्मत लूटना चाहे। ऐसी सूरत में उस शरीफ आदमी पर फर्ज़ है कि वह अपने हाथ में तलवार थामे और अपनी नूरे चश्म की अस्मत व इफ्फत की हिफाज़त करे। अगर उस ने वक्त की नज़ाकत से ला-उबालीपन किया और मैं शरीफ आदमी हूं, तलवार हाथ में लेना मेरा काम नहीं, इस ज़अम व गुमान में रहा और इज़्ज़त लूटने वाले का मुकाबला नहीं करेगा, तो उस की नज़रों के सामने उस के खान्दान की इज़्ज़त मल्या मेट हो जाएगी। उस का खान्दान, उस का समाज और उस की वह बेटी कि जिस की इज़्ज़त लूटी गई है, वह उस की बुज़दिली पर मलामत करेगी और उस को कभी मुआफ नहीं

करेगी बल्कि खुद उस का ज़मीर भी इस पर ज़िन्दगी की आखरी सांस तक ला'न ता'न करता रहेगा। अगर उस ने अपनी बेटी की इज़्ज़त बचाने की खातिर तलवार उठा ली होती, तो उस की शराफत पर कोई हर्फ नहीं आता, बल्कि उस की इज़्ज़त को चार चान्द लग जाते क्यूं कि उस वक्त का तकाज़ा यही था कि तलवार उठा कर ज़ालिम के पंजा-ए सितम से मज़्लूम की हिफाज़त की जाए। इस मिसाल को ज़हन नशीं रखते हुए रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के गज़्वात पर मुन्सिफाना और आदिलाना नज़र कर के गैर जानिबदाराना तजज़िया करेंगे, तो यह हकीकत सामने आएगी कि आप ने इन्सानियत की इज़्ज़तो आबरू बचाने के लिये ज़ुल्म व जफा और बर्बरियत के खिलाफ ही तलवार उठाई थी।

अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को जेहाद का हुक्म दिया उस से पहले आप ने कभी भी किसी से, कहीं भी, कोई जंग न की थी। इस के बा-वुजूद आप ने जो जंगी उमूर अंजाम दिये हैं वह हैरत अंगेज़ हैं।

अल्लाह तआला ने अपने महबूबे अकरम [h] को तमाम उलूम अता फरमाए

अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को तमाम उलूमे अव्वलीन व आखरीन अता फरमाए थे। और हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम अपने रब की अता व इनायत से **''आलिमे मा काना व मा यकून''** के मन्सबे आ'ला पर फाइज़ थे। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को अल्लाह तआला ने इन्साने कामिल और बे मिस्ल व मिसाल बनाया। अपने महबूब को जो इल्म अता फरमाया वह भी तमाम मख्लूक में बे मिस्ल व बे नज़ीर था। आप के तबह्हुरे इल्मी को देख कर आज भी माहेरीने इल्म व फन अंगुश्त ब-दन्दां हैं।

कुरआने मजीद में इर्शादे बारी तआला है :

"وَعَلَّمَكَ مَالَمۡ تَكُنۡ تَعۡلَمُ"

"व अल्लमका मा लम तकुन ता'लम" (सूरए निसा, आयत : ११३)

तर्जुमा : ''और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे। (कन्जुल ईमान)

इस आयत की तफ्सीर में मुफस्सिरीने किराम फरमाते हैं कि **''अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को तमाम काएनात के उलूम अता फरमाए और किताब व हिकमत के अस्रार व हकाइक पर मुत्तलेअ किया।''**

(तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान,सफहा : 174)

रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को अल्लाह तबारक व तआला ने जब तमाम काएनात के उलूम अता फरमाए थे तो उन उलूम में इल्मे हर्ब या'नी जंगी मुआमलात का इल्म भी शामिल है। आप ने अपने रब की अता से मैदाने कारज़ार में जिस तरीके से इस्लामी लश्कर की कयादत फरमाई है वह एक सिपाह सालारे आज़म की शायाने शान थी। आलाते हर्ब से आरास्ता भारी ता'दाद के लश्करे कुफ्फार के सामने रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम बे सरो सामान और कम ता'दाद के इस्लामी लश्कर को ऐसी आ'ला तर्तीब से मुरत्तब फरमाते कि यल्गार व देफाअ के लवाज़िमात की कामिल तौर पर अदायगी हो जाती। मैमना और मैसरा की तश्कील, मुकद्दमा व अकब का इख्तेसास, कल्ब व वस्त का तकर्रुर, सफ बन्दी, इख्तिलाते अफराद, वगैरा उमूर में जंगी महारत व तजरबा की पुख्तगी अयां होती। रज़्म गाह का जुग्राफिया, कमीन गाह का इन्तेखाब, लश्कर के हर फर्द पर निगरानी, हौसला अफ्ज़ाई, जैसे बारीक बारीक उमूर की तरफ तवज्जोह करना और उन में कोताही न हो इस का ख्याल रखना। मुजाहेदीन को फज़ीलते जेहाद, राहे खुदा में किताल करने का अज्रे अज़ीम और बशारते जन्नत सुना कर उन में जौश और वल्वला पैदा करना, दुश्मन के मुकाबले में आहनी दीवार की तरह जमे रहने की तर्गीब देना, बाहमी रब्त व तसल्सुल बर-करार रखते हुए हर महाज़ से अलग अलग तौर से हम्ला आवर होने की ता'लीम ने मुठ्ठी भर मुजाहिदों में वह महारत पैदा कर दी कि दुश्मन का ज़ोर आवर लश्कर पीठ दिखा कर राहे फरार इख्तेयार करने में ही अपनी खैरियत व आफियत महसूस करता। क्यूं कि मुजाहेदीने इस्लाम की कफन बरदोश मुख्तसर सी जमाअत मुश्रेकीन के कसीर लश्कर की सफें की सफें दम भर में उलट कर रख देती थी। अपने को बहुत बडा शुजाअ, माहिरे फन्ने जंग, और आलाते जंग के इस्ते'माल का कुहना तजरेबा कार समझने वाला और तकब्बुर व गुरूर के नशे में अपना पाऊं ज़मीन पर न रखने वाला कोई सरकश जब किसी नहीफ और नातवां इस्लामी मुजाहिद से टकराया, तो सिर्फ एक गरदावे में उस की नाक खाक आलूद हो जाती। अपनी जिस्मानी ताकत के घमंड में इतराने वाला सकील जसामत का कोई मुशरिक जब कभी किसी लागर जिस्म वाले इस्लामी मुजाहिद से भिडा तो इस्लामी मुजाहिद की रूहानी ताकत ने उस की पसलियां पीस कर रख दीं।

अपने लश्कर की भारी अक्सरियत और आलाते हर्ब की बोहतात पर ए'तेमाद कर के अपनी काम्याबी और गल्बा का यकीन रखने वाला सरकश जब मुजाहिदों की कलील जमाअत से टकराया, तो एक ही ज़र्ब में वह खाक व खून में तडपता नज़र आने लगा। अपनी शुजाअत और बहादुरी के गुन गाने, रज्ज़ के फख्रिया अश्आर पढ कर गला फाड फाड कर डकारने वाले का कलेजा मुजाहेदीने इस्लाम की सदाए तक्बीरो तहलील सुनते ही फट जाता। जब मैदाने जंग में दोनों लश्कर आमने सामने होते तो रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम इस्लामी लश्कर की सफ बन्दी करने ब-नफ्से नफीस लश्कर में गश्त फरमाते और लश्कर के हर फर्द को तम्बीह फरमा कर इस तरह कतार बन्द खडा करते कि कोई शख्स भी कतार से सरे-मू तजावुज़ न करता और सफें सीधी कर के, एक दूसरे से मुलहिक हो कर जब इस्तादा होते तो ऐसा मेहसूस होता कि आहनी दीवार काइम कर दी गई है। जिस को फांदना अम्रे मुहाल है। लश्करे कुफ्फार के रूउसा इस्लामी लश्कर की सफ बन्दी देख कर मुतहैयर और मुतअज्जिब होते और उन के दिलों पर इस्लामी लश्कर का रोअब और दबदबा छा जाता। जंग के फन में महारत रखने वाले बडे बडे सरदाराने मुश्रेकीन अपने लश्कर में सफ बन्दी करने के मुआमले में रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की महारत के सामने तिफ्ले मक्तब की भी हैसियत न रखते थे। इस्लामी लश्कर की सफ बन्दी देख कर दुश्मन के लश्कर पर ऐसी हैबत तारी होती कि वह बोखला जाते थे।

अल्लाह तबारक व तआला को मुजाहेदीने इस्लाम की मैदान जेहाद में की जाने वाली सफ बन्दी की मौज़ूनियत इतनी पसन्द आई कि कुरआने मजीद में सूरए "सफ" नाज़िल हूई और मुजाहेदीन की सफ बन्दी की ता'रीफ यूं की गई।

कुरआने मजीद में इर्शादे बारी तआला है :

"اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ"

"इन्नल्लाहा युहिब्बुल लज़ीना युकातिलूना फी सबीलिहि सफ्फन क-अन्नहुम बुन्यानुम मर्सूस" (सूरतुस-सफ, आयत : ४)

तर्जुमा : "बे शक अल्लाह दोस्त रखता है उन्हें जो उस की राह में लडते हैं पर्रा (सफ) बांध कर, गोया वह इमारत हैं रांगा पिलाई (सीसा पिलाई दीवार)"

(कन्जुल ईमान)

तफ्सीर : "या'नी एक से दूसरा मिला हुवा। हर एक अपनी जगह जमा हुवा। दुश्मन के मुकाबिल सब के सब मिस्ले शै वाहिद के।"

(तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 994)

रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने अपनी ज़ाहेरी हयाते तय्यबह के पचपन (55) साल बसर फरमाने के बा'द पहली मरतबा 623, सन ईस्वी ब-मुताबिक 2, सन हिजरी में जंगे बद्र में शिर्कत फरमाई। पहली ही जंग में आप ने लश्कर की तर्तीब ऐसे बेहतरीन सलीके से अंजाम दी कि दुनिया के सामने एक मिसाल काइम फरमा दी। इस की अहम वजह यह है कि आप को अल्लाह तआला ने तमाम उलूम व फुनून के साथ साथ इल्म व फन्ने हर्ब भी वदीअत फरमाया था। इलावा अज़ीं इल्मे गैब की वजह से आप तमाम हवादिस पर मुत्तलेअ थे।

जंगे बद्र के दिन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने अपने सहाबा के साथ मैदाने जंग का मुआइना फरमाया। हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि **हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने ज़मीन पर अपना दस्ते मुबारक रख कर फरमाया : "यह फुलां के मर कर गिरने की जगह है, यह फुलां के मर कर गिरने की जगह है, यह फुलां का मक्तल है, और यह फुलां की जाए कुश्तन है, और एक एक मारे जाने वाले का नाम और उस के मक्तल का निशान बताया और उन में से कोई एक भी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की बताई हूई जगह के बर-खिलाफ न मारा गया चुनांचे उस जगह से एक बालिश्त भी तफावुत व तजावुज़ न हुवा।"** (हवाला : - मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 144 और 147)

मज़कूरा वाकेआ से साबित होता है कि गैब बताने वाले रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को अल्लाह तआला ने अपने खज़ानए गैब से इल्मे गैब अता फरमाया था और आप यह जानते थे कि कौन, कब, किस तरह और कहां मरेगा।

रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हर जंग में बारीक बीनी से फौज की तदवीन फरमाई और इस अम्र का बडी पाबन्दी से लिहाज़ फरमाया कि मुजाहेदीन का हौसला हर हाल में बर-करार रहना चाहिये। लेहाज़ा उन के जज़्बात को फरोग देने के लिये जेहाद की फज़ीलत के तअल्लुक से नाज़िल शुदा आयाते कुरआनी को तिलावत फरमा कर

और अज्रे अज़ीम की बशारत सुना कर शुजाअत का वल्वला पैदा फरमाते थे। इलावा अज़ीं आप ने जंग के तअल्लुक से कार आमद नए उमूर भी ईजाद फरमाए। मसलन :

अलम :- मैदाने जंग में सिपाही अपनी बहादुरी और जवांमर्दी का भरपूर इस्ते'माल कर के लडाई के कर्तब दिखा कर दादे शुजाअत हासिल करता है। लैकिन हर सिपाही की दिलैरी का मदार सरदार पर होता है। अगर लश्कर का सरदार मारा जाता है तो पूरे लश्कर का हौसला पस्त हो जाता है और लश्कर शिकस्त से दो चार होता है। कभी कभी सरदारे लश्कर के मारे जाने की गलत अफ्वाह भी उडती है जिस के नतीजे में लश्कर में इन्तिशार व इख्तिलाल फैलता है। जिस की वजह से लडने वालों के हौसले टूट जाते हैं। लेहाज़ा सरदारे लश्कर का बकैदे हयात रहेना लश्कर के लिये रूहे रवां के मुतरादिफ है। इसी नज़रिया के तहत रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने अलम मश्रूअ किया और लश्कर के सरदार के हाथ में अलम दिया जाने लगा। ताकि लश्कर का सिपाही दूर से अलम देख कर मुत्मइन रहे कि मेरे लश्कर का सरदार सलामत है। अलम का एक फाइदा यह भी होता है कि जिस के हाथ में अलम होता है वह थोडे वक्फे के बा'द अलम को जुंबिश देता है या'नी ज़ोर से हिलाता है। और यह एक किस्म का इशारा होता है कि मैं पूरे जौशो खरोश से दुश्मन का मुकाबला कर रहा हूं तुम भी डट कर मुकाबला करो और दुश्मन के कदम उखेड दो। अलम को जुंबिश में आया हुवा देख कर हर सिपाही में एक नया जौश पैदा होता है और वह अपने सरदार के इशारए हुक्म की बजा आवरी में अपनी जान पर खेलता है।

''2, सन हिजरी में सब से पहला अलम जो इस्लाम में तैयार किया गया वह हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहो तआला अन्हो का अलम है। अबू जहल लईन तीन सौ आदमियों को ले कर मदीना के करीब आया था। उस की सरकोबी के लिये रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हज़रत हम्ज़ा रदियल्लाहो तआला अन्हो को अलम दे कर अस्सी सवारों के साथ रवाना फरमाया था, लैकिन कोई किताल वाकेअ नहीं हुवा और अबू जहल मक्का मुकर्रमा की तरफ भाग गया।''

(हवाला : - मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 134)

अलम एक झन्डा होता है। तक्रीबन बारह फुट (१२) लम्बी लक्डी, बांस या नैज़ा के सिरे पर एक कपडा बांध दिया जाता है और वह कपडा पर्चम की तरह लहराता है। रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने दो (२) किस्म के अलम तज्वीज़ फरमाए थे :

(1) **छोटा अलम :** इस को अरबी में ''लिवा'' कहते हैं।

(2) **बडा अलम :** इस को अरबी में ''रायत'' कहते हैं।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने अलग अलग मौकों पर दोनों किस्म के अलम दस्ते अक्दस में थामे हैं। मुस्नद अहमद और तिर्मिज़ी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से एक हदीस इन लफ्ज़ों में मर्वी है कि **''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का ''रायत'' सियाह था और आप का ''लिवा'' सफेद था।''** तबरानी के नज़दीक भी हज़रत बरीदा रदियल्लाहो तआला अन्हो से ऐसा ही मर्वी है।

लैकिन इब्ने अदी के नज़दीक हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहो तआला अन्हो से इत्ना ज़ियादह रिवायत किया गया है कि **उन अलमों में ''ला इलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहे'' लिखा हुवा था।**

अलम के छोटे और बडे होने में क्या हिकमत है ? और इस में कैसी बेहतरीन दूर अन्देशी है, इस को मुलाहेज़ा फरमाऐं।

जब इस्लामी लश्कर छोटी ता'दाद में होता तो सिर्फ एक ही अलम होता लैकिन कभी कभी ऐसा भी हुवा है कि लश्कर की ता'दाद हज़ारों से मुतजाविज़ होती। ऐसी सूरत में लश्कर के अलग अलग दस्ते बनाए जाते। और हर दस्ता पर एक सरदार मुकर्रर किया जाता। वह तमाम सरदार सिपाह सालार के मा-तहत होते। सिपाह सालारे आज़म उन सरदारों को जो हुक्म देता उस की मुताबिकत में सरदार अपने मा-तहत दस्ता (फौज का हिस्सा) को हुक्म देता। हर सरदार को अलग अलग अलम दिया जाता। सरदार की हैसियत को मल्हूज़ रखते हुए और उस के मा-तहत सिपाहियों की ता'दाद को मद्दे-नज़र रखते हुए उस को छोटा या बडा अलम दिया जाता। या'नी किसी को ''लिवा'' और किसी को ''रायत'' दिया जाता। अलम की फराहमी में एक ज़रूरी बात यह होती थी कि हर अलम का रंग जुदा जुदा होता। सियाह, सफेद, सुर्ख, हरा, पीला वगैरा अलग अलग रंग के कपडों के अलम बनाए जाते। इलावा अज़ीं हर सरदार के मा-तहत उस की कौम के लोग होते।

मज़्कूरा तक्सीम के नफा' बख्श नताइज की तरफ इल्तिफात करने से बे-साख्ता ज़बान से मर्हबा और सद आफरीन की सदा मुतरन्निम होगी। बडी ता'दाद के लश्कर को अलग अलग हिसस में मुन्कसिम कर के हर हिस्से पर एक सरदार मुकर्रर कर देने से हर

सरदार को एक महदूद दस्तए फौज की ही निगरानी करनी पडती है, जो आसान है। इलावा अज़ीं हर सरदार के मा-तहत उस की ही कौम के आदमियों की टुक्डी रखने का बडा फाइदा यह होता है कि हर सरदार अपनी बिरादरी के लोगों को तल्कीन करता है कि मैदाने जंग में बुज़दिली दिखा कर अपनी बिरादरी का नाम मत डुबोना। बल्कि मैदाने जंग में शुजाअत और दिलैरी में दूसरी कौमों पे सब्कत ले जाना। और अल्लाह के प्यारे महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खुशनूदी हासिल करने में हर मुम्किन कोशिश कर के अपनी जान की बाज़ी लगा देना। फर्ज़ करो कि मैमना पर मुहाजिरीन हैं तो मैमना पर कौम मुहाजिर से ही किसी शख्स को सरदार बनाया जाता। उस को किसी भी एक रंग का अलम दे दिया जाता। इसी तरह हर हिस्स-ए फौज की तक्सीम होती। दौराने जंग हर सिपाही अपने सरदार के अलम को देखता रहेगा। हालां कि लश्कर में कई अलम होंगे, लैकिन हर अलम का रंग अलग अलग होने की वजह से हर सिपाही अपने सरदार के अलम को आसानी से पहचान लेगा। सरदार अलम को जुंबिश दे दे कर अपने ज़ेरे दस्त सिपाहियों को जौश दिला कर उन को उभारेगा। सिपाह सालार भी तमाम अलम ब-यक वक्त मुलाहेज़ा करता रहेगा और अगर खुदा न ख्वास्ता कोई सरदार शहीद हो जाए तो अलम गिरने की वजह से फौरन पता लग जाएगा कि हमारे लश्कर के इस हिस्से पर दुश्मनों का हम्ला शदीद है, लेहाज़ा वह उन की कुमुक करने फौरन पहोंच जाएगा। नीज़ लश्कर के हर सिपाही को मा'लूम रहेगा कि मेरा सरदार इस वक्त कहां है क्यूं कि अलम उस के सरदार की निशानदही करता रहता है कि फुलां रंग का अलम फुलां सरदार के हाथ में है।

इलावा अज़ीं अलम में कल्मा शरीफ **''ला इलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहे''** लिखना। ताकि मुजाहिद जब अलम को देखेगा तो कल्मा शरीफ देख कर तौहीद व रिसालत की गवाही पर उस का अकीदा मज़ीद पुख्ता होगा और वह यह तसव्वुर करेगा कि इस मैदान में इस्लाम का कल्मा बुलन्द और नुमायां है और इस कल्मा को बुलन्दी से पस्ती पर लाने की कोशिश में बातिल ताकत आज अपना एडी चोटी का ज़ोर लगा रही है लैकिन जब तक मेरे दम में दम है मैं इस्लाम का कल्मा हरगिज़ मिटने नहीं दूंगा। इस के लिये मुझे चाहे मिट जाना पडे। मैं अपने जिस्म के खून के आखरी कतरे से गुलशने इस्लाम की आबयारी कर के इस्लाम की आब व ताब पर आन्च नहीं आने दूंगा। इस तखय्युल की तद्कीक से उस में एक ऐसा जौश व वल्वला पैदा होता है कि वह दुश्मनों पर कहरे इलाही की बिजली बिन कर टूट पडता है और ''ए'लाए कलेमतुल हक्क'' की तडप

मर्दाने अरब..... हिस्सा अव्वल

और बेताबी में मिस्ले शेर हम्ला आवर हो कर दुश्मने इस्लाम के लश्कर की सफें उलट कर रख देता है। गोया वह ज़बाने तलवार से यूं गोया होता है :

फैर दिजे पंजए देवे लअीं
मुस्तफा के बल पर ताकत कीजिये

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

खन्दक : 5, सन हिजरी में गज़्वए अहज़ाब वुकूअ में आया। इस गज़्वा को गज़्वए खन्दक भी कहते हैं। इस की वजह यह है कि इस गज़्वा में मदीना तय्यबह के गिर्द खन्दकें खोदी गई थीं। उन खन्दकों की वजह से मक्का मुअज़्ज़मा से आया हुवा दस हज़ार (१०,०००) का लश्करे कुफ्फार मदीना मुनव्वरा में दाखिल न हो सका। मुल्के अरब में यह पहला हादिसा था कि दुश्मनों के शर से अह्ले शहर को अमन में रखने के लिये शहर के गिर्द खन्दकें खोदी गई हों। मक्का से आया हुवा लश्करे कुफ्फार भी उन खन्दकों को देख कर रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के देफाई इन्तेज़ाम पर शश्दर हो कर रह गया।

मुख्तसर यह कि अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को जंगी उमूर का भी कामिल इल्म अता फरमाया था। आप ने अपने जां निसार सहाबा को फन्ने जेहाद की ऐसी आ'ला ता'लीमो तर्बियत फरमाई कि आप की इनायत कर्दा ता'लीम को मश्अल राह बना कर उन्हों ने आप की रेहलत के बा'द कलील अर्सा में अज़ीम फुतूहात हासिल कर के इस्लाम का पर्चम दुनिया के गोशे गोशे में लहेरा दिया।

जेहाद की फज़ीलत :-

कुरआने मजीद में इर्शादे बारी तआला है :

"اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ يُقْتَلُوْنَ"

"इन्नल्लाहश्तरा मिनल मो'मिनीना अन्फुसहुम व अमवालहुम बे अन्ना लहुमुल जन्न-ता युकातेलूना फी सबीलिल्लाहे फ-यक्तुलूना व युक्तलूना " (सूरए-तौबा, आयत : 111)

तर्जुमा : ''बे शक अल्लाह ने मुसलमानों से उन के माल और जान खरीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है। अल्लाह की राह में लडें तो मार दें और मरें।'' (कन्जुल ईमान)

तफ्सीर : ''राहे खुदा में जान और माल खर्च कर के जन्नत पाने वाले ईमान दारों की एक तम्सील है। जिस से कमाले लुत्फ़ व करम का इज़्हार होता है कि परवरदिगारे आलम ने इन्हें जन्नत अता फरमाना उन के जानो माल का इवज़् करार दिया और अपने को खरीदार फरमाया। यह कमाले इज़्ज़त अफ्ज़ाई है कि वह हमारा खरीदार बने और हम से उस चीज़ को खरीदे जो न हमारी बनाई हूई, न हमारी पैदा की हूई है। जान है तो उस की पैदा की हूई है। माल है तो उस का अता फरमाया हुवा है।''

(तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 368)

कुरआने मजीद में रब तबारक व तआला इर्शाद फरमाता है :

"وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِىْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ"

''व मिन्नासे मंय यशिर नफ्सहुब-तिगाअ मर्दातिल्लाहि''

(सूरा अल-बकरह, आयत : 207)

तर्जुमा : ''और कोई आदमी अपनी जान बेचता है अल्लाह की मर्ज़ी चाहने में।''

(कन्जुल ईमान)

अल्लाह तबारक व तआला का इर्शाद गिरामी है :

"فَلْيُقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
بِالْاٰخِرَةِ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ
فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْراً عَظِيْماً"

"फल-युकातिल फी सबीलिल्लाहिल-लज़ीना यश्रूनल हयातद्दुनिया बिल आखिरते व मंय युकातिल फी सबीलिल्लाहे फ-युक्तल अव यग्लिब फ-सौफा नू'तीहे अज्रन अज़ीमा" (सूरए निसा, आयत : 74)

तर्जुमा : ''तो इन्हें अल्लाह की राह में लडना चाहिये जो दुनिया की ज़िन्दगी बेच कर आखेरत लेते हैं और जो अल्लाह की राह में लडे फिर मारा जाए या गालिब आए तो अन्करीब हम इसे बडा सवाब देंगे।'' (कन्जुल ईमान)

मज़्कूरा बाला आयाते कुरआनी में मुजाहिद को राहे खुदा में जेहाद करने के सिला में जन्नत का वा'दा और आखेरत की ने'मतों व आसाइशों का मुज़्दा सुनाया गया है। रज़ाए इलाही और अज्रे अज़ीम की तलब में मुजाहेदीने इस्लाम ने अल्लाह की राह में मौत की तमन्ना और शहादत की ख्वाहिश में अपनी जान की कतअन परवाह न की। अपना सब कुछ दाव पर लगा दिया और दुनिया के ऐश व आराम और अपना माल व अपनी जान अल्लाह के महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के हाथ बेच कर उस के इवज़् में आखेरत की ला-ज़वाल दौलत व ने'मत खरीद ली।

ब-कौल हज़रत रज़ा बरैलवी :

जान व दिल तेरे कदम पर वारे
क्या नसीबे हैं तेरे यारों के

शहीद के मरातिब व दरजात और हयात

अल्लाह तबारक व तआला इर्शाद फरमाता है :

"فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْافِىْ سَبِيْلِىْ
وَقٰتَلُوْ وقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّآتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ
مِنْ تَحْتِهَا الانْهَارُ"

"फल्लज़ीना हाजरू व उख्रेजू मिन दियारिहिम व ऊज़ू फी सबीली व कतलू व कुतेलू ल उ कफ्फिरन्ना अन्हुम सय्यिआतिहिम वल उद खिलन्नहुम जन्नातिन तज्री मिन तहतिहल अन्हार"

(सूरह आले इमरान, आयत : 195)

तर्जुमा : ''तो वह जिन्हों ने हिज्रत की और अपने घरों से निकाले गए और

मेरी राह में सताए गए और लडे और मारे गए, मैं ज़रूर उन के सब गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर इन्हें बागों में ले जाऊंगा जिन के नीचे नहरें रवां।'' (कन्ज़ुल ईमान)

❁ कुरआने मजीद में अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है :

"وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ بَلْ اَحْيَاءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ"

"वला तकूलू लेमंय युक्तलो फी सबीलिल्लहे अमवातुन बल अह्याउं वलाकिल्ला तश्उरून" (सूरा अल-बकरा, आयत : 154)

तर्जुमा : ''और जो खुदा की राह में मारे जाऐं उन्हें मुर्दा न कहो,बल्कि वह ज़िन्दा हैं, हां तुम्हें खबर नहीं।'' (कन्ज़ुल ईमान)

तफ्सीर : ''शाने नुज़ूल : यह आयत शोहदाए बद्र के हक्क में नाज़िल हूई। लोग शोहदा के हक्क में कहते थे कि फुलां का इन्तेकाल हो गया और वह दुन्यवी आसाइश से महरूम हो गया। उन के हक्क में यह आयत नाज़िल हूई और इर्शाद हुवा कि मौत के बा'द ही अल्लाह तआला शोहदा को हयात अता फरमाता है। उन की अर्वाह पर रिज़्क पैश किये जाते हैं, इन्हें राहतें दी जाती हैं, उन के अमल जारी रहते हैं, अज्र और सवाब बढता रहता है। हदीस शरीफ में है कि शोहदा की रूहें सब्ज़ परिन्दों के कालिब में जन्नत की सैर करती हैं और वहां के मेवे और ने'मतें खाती हैं।''

(तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 42)

❁ शोहदा की हयात के बारे में अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है :

"وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا بَلْ اَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ"

"वला तह्सबन्नल्लज़ीना कोतेलू फी सबीलिल्लाहे अमवातन बल अह्याउन इन्दा रब्बेहिम युर्ज़कून" (सूरए, आले इमरान, आयत : 170)

तर्जुमा : ''और जो अल्लाह की राह में मारे गए, हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख्याल करना बल्कि वह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं, रोज़ी पाते हैं।''

(कन्ज़ुल ईमान)

तफ्सीर : ''अक्सर मुफस्सेरीन का कौल है कि यह आयत शौहदाए ओहद के हक्क में नाज़िल हूई है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहो तआला अन्हुमा से मर्वी है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया कि जब तुम्हारे भाई ओहद में शहीद हुए, अल्लाह तआला ने उन की अर्वाह को सब्ज़ परिन्दों के कालिब अता फरमाए। वह जन्नती नहरों पर सैर करते फिरते हैं। जन्नती मेवे खाते हैं, तलाई कनादील जो ज़ेरे अर्श मुअल्लक हैं, उन में रहते हैं, जब उन्हों ने खाने पीने रहने के पाकीज़ा ऐश पाए तो कहा कि हमारे भाइयों को कौन खबर दे कि हम जन्नत में ज़िन्दा हैं, ताकि वह जन्नत से बे रग्बती न करें और जंग से बैठ न रहें। अल्लाह तआला ने फरमाया कि मैं उन्हें तुम्हारी खबर पहुंचाऊंगा। पस यह आयत नाज़िल फरमाई (अबू दाउद)। इस आयत से साबित हुवा कि अर्वाह बाकी हैं, जिस्म के फना होने के साथ फना नहीं होतीं और ज़िन्दों की तरह शोहदा खाते पीते ऐश करते हैं। सियाके आयत इस पर दलालत करता है कि हयात रूह और जिस्म दोनों के लिये है। शोहदा के जिस्म कब्रों में महफूज़ रहते हैं। मिट्टी उन को नुक्सान नहीं पहुंचाती। ज़मानए सहाबा में और इस के बा'द ब-कस्रत मुआइना हुवा है कि अगर शोहदा की कब्रें खुल गईं तो उन के जिस्म तरोताज़ा पाए गए।'' (तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, 129 व 130)

शौहदाए किराम की हयात कुरआने मजीद की मुन्दरजा बाला आयात से बय्यिन तौर पर साबित होती है। इलावा अज़ीं कुतुबे सैर व तारीख व अहादीस में ऐसे सैंकडों वाकेआत मर्कूम हैं कि शौहदाए किराम के अज्साम साल्हा साल का अर्सा गुज़रने के बा'द भी उन की कब्रों में तरोताज़ा और सहीह व सालिम पाए गए हैं और उन के अज्साम में ज़िन्दा इन्सान की तरह खून रवां होता है। मसलन :

(1) शैख मुहक्किक, शाह अब्दुलहक्क मोहद्दीसे देहलवी कुद्दिसा सिर्रहु फरमाते हैं कि :

"अर्बाबे सैर बयान करते हैं कि छयालीस (४६) साल के बा'द किसी वजह से बा'ज़ शोहदाए ओहद की कब्रों को खोला गया। वह वैसी ही तरोताज़ा मिस्ल गुन्चहाए गुल अपने कफनों में थे। तुम यही कहोगे कि इन्हें आज ही दफ्न किया गया है। उन में से बा'ज़ों को देखा गया कि ज़ख्मों पर हाथ रखे हुए हैं। जब ज़ख्मों से हाथ उठाया गया तो ज़ख्मों से ताज़ा खून बहने लगा। जब उन के हाथों को छोडा गया तो वह ज़ख्मों पर ही वापस पहोंच गए।"

(हवाला : - मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 236)

(2) तारीखे मदीना में इमाम ताजुद्दीन सुबुकी कुद्दिसा सिर्रहु से शिफाउस सिकाम में मन्कूल है कि :

"जब हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहो अन्हो अपनी अमारत के ज़माने में शोहदाए ओहद के करीब से नहर खुदवा रहे थे और वह नहर शोहदाए ओहद के करीब से गुज़री तो एक कुदाल हज़रत सय्यदुश्शोहदा अमीर हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहो तआला अन्हो के कदम अक्दस पर लगा और उस से खून बहने लगा।" (हवाला :- ऐज़न)

(3) हुज़ूरे अक्दस जाने आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के आशिके सादिक हज़रत खुबैब बिन अदी रदियल्लाहो तआला अन्हो को कुफ्फारे मक्का ने फरेब और धोका से कैद कर लेने के बा'द मक्का मुअज़्ज़मा के करीब "मौज़-ए-तन्ईम" नामी मकाम पर ले गए और सूली पर चढा कर चालीस आदमियों ने बर्छियां और नैज़े चुभो चुभो कर बडी ही बेदर्दी और बेरहमी से शहीद कर दिया और उन की मुबारक लाश को दार पर ही लटकी हूई छोड दिया कि उन के कत्ल की खबर सारे अरब में फैल जाए और लोग कुफ्फारे मक्का से डरें। हुज़ूरे अक्दस आलिमे मा कान व मा यकून सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को हज़रत खुबैब रदियल्लाहो तआला अन्हो की शहादत की खबर उस वक्त ही हो गई थी जब कि उन को शहीद किया गया था। बा'दहु हुज़ूर ने हज़रत खुबैब रदियल्लाहो तआला अन्हो की लाश को सूली से उतार कर मदीना तय्यबह ले आने के लिये हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम और हज़रत मिक्दाद बिन अस्वद रदियल्लाहो तआला अन्हुमा को रवाना फरमाया। यह दोनों हज़रात छुपते छुपाते मौज़-ए-तन्ईम पहुंचे। वहां हज़रत खुबैब बिन अदी रदियल्लाहो तआला अन्हो की लाश दार पर लटकी हूई थी। चालीस आदमी दार के गिर्द बराए निगरानी सोये हुए थे। रात का वक्त था। यह दोनों हज़रात बहुत ही आहिस्तगी से दार तक पहुंचे और हज़रत खुबैब को उतारा। हज़रत खुबैब की शहादत को चालीस दिन

का अर्सा गुज़र गया था। लैकिन हनूज़ उन का मुकद्दस जिस्म तरोताज़ा था और उन के ज़ख्मों से खून टपक रहा था।"

(हवाला : - मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 246)

(4) हज़रत अबी फर्दा रदियल्लाहो तआला अन्हो से मर्वी है कि एक रोज़ रसूले खुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम शोहदाए ओहद की ज़ियारते कुबूर के लिये तशरीफ ले गए, फरमाया "ऐ मेरे रब ! तू ही इबादत का मुस्तहिक है। बिला-शुब्हा तेरा यह बन्दा और तेरा रसूल गवाह है कि यह जमाअत तेरी रज़ा में शहीद हूई।" इस के बा'द फरमाया **"जो शख्स इन की ज़ियारत करता है और इन की तहीयत व सलाम बजा लाता है, यह कयामत तक उन को जवाब देते रहेंगे।"**

इस हदीस के ज़िम्न में मुहक्किक अलल इत्लाक, शैख अब्दुलहक्क मोहद्दीसे देह्लवी कुद्दिसा सिर्रहु ने शौहदाए ओहद की हयात के सुबूत में एक वाकेआ नक्ल फरमाया है, जो हस्बे ज़ैल है :

"अताफ बिन खालिद मख्ज़ुमी अपने मामूं से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने बयान किया कि मैं शोहदाए ओहद की ज़ियारत को गया। मेरे साथ दो गुलाम थे जो मेरे घोडे की हिफाज़त करते थे। उन के सिवा कोई मौजूद न था। चूं कि मैं ने सुना था कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया कि इन्हें सलाम करो क्यूं कि यह ज़िन्दा हैं और सलाम का जवाब देते हैं। तो मैं ने सलाम किया और सलाम का जवाब सुना। फिर शोहदाए ओहद ने फरमाया "बिला-शुब्हा हम तुम्हें पहचानते हैं।" इस पर मैं हैबत से लरज़ा बर-अन्दाम हो कर गिर पडा। फिर मैं जल्दी से सवार हो कर रवाना हो गया।"

(हवाला : मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा जिल्द 2, सफहा : 236)

शोहदा की हयात के सुबूत में इस किस्म के वाकेआत मो'तबर व मो'तमद कुतुब में इतनी कसरत से पाए जाते हैं कि जिन का सिर्फ इशारतन तज़्केरा करने के लिये भी दफातिर दरकार हैं, लेहाज़ा सिर्फ चार वाकेआत का इख्तिसारन ज़िक्र कर के सिर्फ इत्ना अर्ज़ करना है कि अल्लाह तबारक व तआला के कलामे सादिक कुरआने मजीद में शोहदा की हयात का जो ऐ'लान किया गया है वह सिर्फ कहने तक ही महदूद नहीं बल्कि उस की हकीकत का बे-शुमार लोगों ने मुशाहेदा किया है।

सहाबए किराम का जज़्बए इश्के नबी और शौके शहादत

हर नबी और रसूल अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम के जां निसार और हवारी हर दौर में हुए और हर दौर के हवारियों ने अपनी मुहब्बत व वफादारी का सुबूत देते हुए अपने नबी की इताअत व मदद में हर मुम्किन कोशिश की। लैकिन सय्यिदुल-अम्बिया वल मुर्सलीन, अफज़लुल खल्क, सैयदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के हवारी या'नी साथियों ने इश्को मोहब्बत का जो आलमगीर पैगाम और सुबूत दिया है उस की मिसाल दुनिया की किसी भी तारीख में नहीं पाई जाती। सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन की मुकद्दस और पाकीज़ा जमाअत ने अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के साथ हमेंशा इश्के सादिक का सुलूक करते हुए अपने कौल व फे'ल से यही कहा और किया :

करूं तेरे नाम पे जां फिदा, न बस एक जां, दो जहां फिदा
दो जहां से भी नहीं जी भरा, करूं क्या करोड़ों जहां नहीं

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

महबूबे रब्बुल आलमीन सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के इश्को मोहब्बत में सरशार हो कर उन्हों ने दुनिया की किसी भी चीज़ की परवाह नहीं की। बडी से बडी ताकत को खातिर में नहीं लाए। तहफ्फुज़े नामूसे रिसालत की खातिर अपना सब कुछ निछावर कर दिया। अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की अज़्मत व मुहब्बत को सब से मुकद्दम जान कर इस मुहब्बत के आदाब की बजा आवरी में हंसी खुशी अपनी जान तक कुरबान कर दी। अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के नाम पर मर मिटने में ही उन्हों ने अपनी हयात जानी और इस शौक में अपने सर कटा कर हयात जावेदानी पाई।

मरने वाले को यहां मिलती है उमर जावेद
ज़िन्दा छोडेगी किसी को न मसीहाई दोस्त

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

जंगे बद्र के मौका' पर हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने सहाबए किराम के साथ मश्वरा फरमाया और लश्करे कुफ्फार के मुकाबले में जंग व किताल के मुतअल्लिक उन की राए तलब फरमाई, तो सहाबए किराम ने अपने आका व मौला सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की खिदमत में यूं अर्ज़ किया :

"हज़रत स'अद बिन उबादा रदियल्लाहो तआला अन्हो ने अर्ज़ किया कि "या रसूलल्लाह! खुदा की कसम! आप हमें अद्न तक ले जाऐंगे तो हम अन्सार में से कोई एक शख्स भी आप के हुक्म की खिलाफ वर्ज़ी नहीं करेगा।"

"हज़रत मिक्दाद बिन अम्र ने यूं अर्ज़ किया कि "या रसूलुल्लाह! हम आप के साथ हैं। आप जहां चाहें हमें ले जाऐं। हम कभी भी वह बात अपने मुंह से न निकालें गे, जो बनी इसराईल ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कही थी कि **"फज़्हब अन्ता व रब्बुका फ-कातिला इन्ना हाहुना काइदून"** या'नी आप जाइये और आप का रब, तुम दोनों लडो, हम यहां बैठे हैं कसम है उस ज़ात की जिस ने आप को हक्क के साथ भेजा। हम आप के साथ जाऐंगे और जहां आप जाऐंगे आप के साथ मिल कर मरदाना वार लडेंगे।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम के साथ बनी इसराईल का सुलूक

जब फिरऔन दरियाए नील में गर्क हो गया और बनी इसराईल की कौम ने ईमान कबूल किया और हज़रत मूसा अला नबिय्येना व अलैहिस्सलातो वस्सलाम को इत्मीनान हासिल हो गया, तब अल्लाह तआला का हुक्म हुवा कि आप बनी इसराईल का लश्कर ले कर बैतुल मुकद्दस में दाखिल हो जाऐं। उस वक्त बैतुल मुकद्दस पर कौम "अमालका" का कब्ज़ा था। जो बद-तरीन काफिर और ज़ालिम लोग थे। कौमे अमालका के लोगों के जिस्म बहुत ही बडे और ताकतवर थे। और उन के बदन की जसामत देख कर ही आदमी खौफ-ज़दा हो जाए, ऐसे बडे डील डोल वाले लोग थे। इलावा अज़ीं कौमे अमालका बहुत ही जफा कश और जंगजू थी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम छे लाख (६,००,०००) बनी इसराईल को हमराह ले कर कौमे अमालका से जेहाद करने रवाना हुए। जब यह लश्कर बैतुल मुकद्दस शहर

के करीब पहुंचा, तो बनी इसराईल एक दम बुज़दिल हो गए और कहने लगे कि इस शहर में कौमे अमालका के ज़ोर आवर और ज़बरदस्त लोग हैं। लेहाज़ा जब तक यह लोग हैं और जब तक यह लोग शहर में हैं, हम हरगिज़ शहर में दाखिल न होंगे। हज़रत मूसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने कौमे अमालका का हाल दर्याफ्त करने के लिये अपने दो खलीफा हज़रत युशाअ बिन नून और हज़रत कालिब बिन यूकन्ना अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम को भेजा। उन्हों ने बैतुल मुकद्दस शहर में जा कर कौमे अमालका का हाल दर्याफ्त किया और वापस आ कर कौमे बनी इसराईल से फरमाया कि ऐ कौम! घभराओ नहीं। बे खौफ हो कर शहर में दाखिल हो जाओ। अगर तुम शहर में दाखिल हो गए तो तुम्हारा ही गल्बा है क्यूं कि कौमे अमालका के जिस्म बडे बडे ज़रूर हैं लैकिन उन के दिल निहायत कमज़ोर हैं। अल्लाह की मदद पर भरोसा करो। अल्लाह ने मदद का वा'दा फरमाया है और अल्लाह का वा'दा ज़रूर पूरा होता है। हज़रत यशाअ बिन नून और कालिब बिन यूकन्ना की मन को ढारस देने वाली बात सुन कर भी बनी इसराईल में जेहाद का जज़्बा पैदा न हुवा, बल्कि उन्हों ने निहायत ही बुज़दिली और ना-मर्दी का सुबूत देते हुए हज़रत मूसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम से कहा :

"قَالُوا يٰمُوسىٰ اِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا اَبَداً مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ
وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ"

(सूरा अल-माइदा, आयत : 24)

तर्जुमा : "बोले, ऐ मूसा! हम तो वहां कभी न जाऐंगे जब तक वह वहां हैं, तो आप जाइये और आप का रब। तुम दोनों लडो, हम यहां बैठे हैं।"

(कन्जुल ईमान)

"कौमे बनी इसराईल की ज़बान से खुद गर्ज़ी और जान परवरी की बात सुन कर हज़रत मूसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम को बडा रंज व सदमा हुवा। अल्लाह के मुकद्दस नबी को सदमा पहुंचाने का यह नतीजा हुवा कि कौमे बनी इसराईल पर अल्लाह तआला का गज़ब व जलाल नाज़िल हुवा और कौमे बनी इसराईल के छे लाख (६,००,०००) लोग एक वसीअ मैदान में चालीस साल (४०) तक भटकते रहे, लैकिन इस मैदान से बाहर न निकल सके। इस मैदान का नाम मैदाने तीह है।" (तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान,सफहा : 201)

इसी मैदाने तीह में बनी इसराईल के खाने पीने के लिये "मन्नो सल्वा" नाज़िल हुवा और पत्थर पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपना असा मारा तो पानी के बारह (१२)

चश्मे जारी हो गए, इस वाकेआ का कुरआने मजीद में कई मकामात पर मुख्तलिफ उन्वानों के साथ बयान हुवा है लैकिन कुरआने मजीद की सूरतुल माइदा में यह वाकेआ कदरे तफ्सील के साथ मज़कूर है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम की कौम की मुहब्बत व अकीदत अपने नबी की बाबत और हुज़ूरे अक्दस सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के मुकद्दस सहाबा के इश्क में कितना अज़ीम फर्क है कि बनी इसराईल छे लाख की कसीर ता'दाद में होने के बा-वुजूद बुज़दिली दिखा रहे थे, जब कि शम्ए नबुव्वत व रिसालत सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के परवाने अपने महबूब आका पर अपनी जानें छिडकते थे। और अपनी जानें निसार करने में दरेग नहीं करते थे।

शम्ए रिसालत पर सहाबा की परवाना वार जां निसारी

सुल्हे हुदैबिया के मौके पर कुफ्फारे कुरैश की जानिब से उरवा बिन मस्ऊद सकफी को बात चीत करने के लिये हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमत में ब-हैसियते नुमाइन्दा भेजा गया था। उरवा बिन मस्ऊद सकफी ने हुज़ूरे अक्दस जाने ईमान सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के साथ गुरूर और तकब्बुर के लह्जे में गुफ्तगू करते हुए शाने अक्दस के खिलाफ जुम्ले कहे, नीज़ कहा कि आप के आस पास अव्बाश और आवारा लोग जमा हो गए हैं और जब वक्त आएगा तो आप को तन्हा छोड कर भाग जाऐंगे। उरवा बिन मस्ऊद सकफी ने जां निसार सहाबए किराम को बे-वफा और भागने वाला कह कर सहाबए किराम के "**फना फीर्रसूल**" के जज़्ब-ए सादिक पर कारी ज़र्ब लगाई थी। उरवा की बात सुन कर अस्दकुस सादेकीन, इमामुल मुत्तकीन, हज़रत सय्यिदोना अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो को जलाल आ गया और आप ने उरवा को मुखातब कर के फरमाया कि "**उम्सुस बज़रल-लात**" लात या'नी (बुत) की शर्म गाह चाट, आगे आप ने फरमाया कि "**अ-नह्नु नफिर्रो मिन्हो व नदउहु**" या'नी क्या हम भाग जाऐंगे और आप को तन्हा छोड देंगे?" उरवा बिन मस्ऊद सकफी ने हज़रत सिद्दीके अक्बर की बात पर सर उठाया और कहने लगा कि यह कौन हैं जो ऐसी बात कहते हैं? सहाबा ने बताया कि यह अबू बक्र सिद्दीक हैं। पस उरवा ने कोई जवाब न दिया।

फिर उरवा बिन मस्ऊद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम से गुफ्तगू करने लगा और दौराने गुफ्तगू बार बार हुज़ूर की रैश मुबारक या'नी दाढी मुबारक तक अपना हाथ ले जाता, और कुछ गुस्ताखाना हर्कतें करता। उरवा को इस तरह गुस्ताखाना लहजे में बात करता देख कर हज़रत मुगीरा बिन शो'बा रदियल्लाहो तआला अन्हो गुस्सा में लाल हो गए और उन्हों ने अपनी तलवार के कन्दे से इस के हाथ पर मार कर फरमाया कि **''ओ बे अदब ! अपने हाथ को बचा के रख और हद से तजावुज़ न कर।''** उरवा बिन मस्ऊद सकफी ने पूछा कि यह कौन शख्स है ? सहाबा ने बताया कि यह मुगीरा बिन शो'बा हैं। उरवा ने अपनी ना-ज़ेबा हरकत थोडी ही दैर में, दो (२) आशिकों की जझ्रो तौबीख से सहम कर तर्क कर दी, और गुस्ताखाना तर्ज़े गुफ्तगू छोड कर सन्जीदगी से बात करने लगा। अर्बाबे सैर बयान करते हैं कि बात चीत के दौरान उरवा बिन मस्ऊद गोशए चश्म से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की मजलिस में मौजूद सहाबए किराम को देख रहा था और सहाबए किराम के जज़्ब-ए अदब व ता'ज़ीम और पास व लिहाज़े अज़्मते रसूल का मुशाहेदा कर रहा था। सहाबए किराम का इकराम व तौकीर देख कर वह हैरान व शश्दर था।

जब उरवा बिन मस्ऊद मुशरिकों के गिरोह में वापस गया तो इस ने कहा कि ''ऐ गिरोहे कुरैश ! मैं बडे बडे मुतकब्बिर व मग्रूर सलातीन व बादशाहों की मजलिसों में रहा हूं, मैं कैसरो किस्रा और नज्जाशी के दरबारो में गया हूं और उन की खिल्वत व जल्वत में रहा हूं, लैकिन मैं ने उन में से किसी बादशाह के किसी खिदमतगार को ऐसा अदब व एहतराम करते नहीं देखा, जैसा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम)के अस्हाब उन का अदब व एहतराम करते हैं। जब वह अपने दहन मुबारक से लुआब शरीफ निकालते हैं, तो सहाबा इसे अपने हाथों में ले कर अपने रुख्सारों पर मिलते हैं। जब किसी अदना और मा'मूली काम का हुक्म देते हैं, तो इस की ता'मील के लिये बुजुर्ग तरीन सहाबा भी सब्कत करते हैं। जब उन के हुज़ूर कोई बात करता है तो वह आवाज़ को पस्त कर के बात करता है। और जब वह गुफ्तगू फरमाते हैं तो तमाम लोग इन्तेहाई अदब व एहतराम के साथ हमा तन गोश हो कर सुनते हैं और उन के रूए मुबारक पर कोई निगाह नहीं जमा सक्ता। जब वुज़ू करते हैं तो वुज़ू का पानी ज़मीन पर नहीं गिरता, बल्कि सहाबा उसे भी अपने हाथों में ले लेते हैं और उस के हुसूल में ऐसी सब्कत करते हैं कि झगडे तक की नौबत आ पहोंचती है और ऐसा गुमान गुज़रता है कि इस पर खूनरैज़ी शुरू हो जाएगी। जब दाढी शरीफ और सर में कंधा फरमाते हैं और कोई मूए मुबारक जिस्म शरीफ से अलग होता है, तो उस को इज़्ज़त व एहतराम के साथ तबर्रुक जान कर सहाबा अपने पास महफूज़ कर लेते हैं। यह वह हालात हैं जिन का मैं ने अपने सर की आंखों से मुशाहेदा किया है।

उरवा बिन मस्ऊद ने मज़्कूरा बाला बातें कहने के बा'द कौमे कुरैश के सामने सहाबए किराम की शुजाअत, मरदानगी ,यक जहती, उलूल अज़्मी, जोशे जेहाद,आली हिम्मती, शौके शहादत, आपस में एक दूसरे के साथ ईसार व मुहब्बत का ज़िक्र करते हुए अपनी कौम से कहा कि **खुदा की कसम ! मैं ने ऐसा लश्कर देखा है जो तुम से कभी मुंह न मोडेगा। मैदाने जंग में यह तुम सब को मार डालेंगे और तुम पर गालिब आ जाएंगे।**

नोट : हज़रत उरवा बिन मस्ऊद सकफी सुल्हे हुदैबिया के बा'द ईमान लाए। ईमान लाने के बा'द अपने वतन पहोंच कर अपनी कौम को दा'वते इस्लाम दी, लैकिन उन की कौम इन्कार कर के सरकशी पर उतर आई। यहां तक कि एक दिन फज्र की नमाज़ के वक्त वह अपने मकान की खिडकी दरवाज़ों को खुला रख कर अलल ए'लान अज़ान कहने लगे। अज़ान में जब कल्मए शहादत पर थे कि उन की कौम के किसी शख्स ने तीर फेंका और हज़रत उरवा बिन मस्ऊद शहीद हो गए। (रदियल्लाहो अन्हो)

(हवाला : - मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा जिल्द : 2, सफहा : 353 ता 356)

सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन का अपने आका व मौला के साथ वालेहाना इश्क और अपने आका व मौला के नाम पर मर मिटने का जो जज़्ब-ए सादिक था। उस की मिसाल किसी भी तारीख में नहीं पाई जाती। आप के हुक्म की बजा आवरी में अपनी जान कुरबान कर देने में ही वह सआदते दारैन समझते, जामे शहादत पीने में लम्हा भर भी ताखीर व ताम्मुल नहीं करते थे।

हज़रत उमर बिन अल-हुमाम का शौके शहादत

जंगे बद्र के दिन हुज़ूरे अक्दस, मालिके कौनेन सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने सहाबए किराम को मुखातब कर के फरमाया :

''और जान लो कि कसम है उस ज़ात की जिस के कब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है, जो हक्क तआला की रज़ा और तलबे सवाब में उन काफिरों से जंग करेगा, फिर वह खुदा की राह में शहीद हो जाए, तो उस के लिये बहिश्ते जावेदां है।''

हज़रत उमर बिन अल-हुमाम रदियल्लाहो तआला अन्हो चंद खजूरें हाथ में लिये खा रहे थे, उन्हों ने कहा कि मुझे खुशी और मुज़्दा हो कि मेरे और जन्नत में दाखिला के दरमियान

अब कोई फास्ला नहीं। ब-जुज़ इस के कि मैं काफिरों के हाथ से शहीद हो जाउं। यह कह कर उन्हों ने हाथों से खजूरें फैंक दीं और तलवार हाथ में ले कर कुफ्फ़ार के साथ जंग करने में मश्गूल हो गए और शहीद हो गए।

(हवाला : – मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफ्हा : 152)

यह था सहाबए किराम का इश्के रसूल में मर मिटने का जज़्ब-ए-सादिक, जिस को सहाबए किराम ने हर अम्र, हर ख्वाहिश और हर तमन्ना पर मुकद्दम रखा, अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खुशनूदी और रज़ा हासिल करने के लिये अपनी जानें ब-तौर नज़्राना इस तरह पैश कीं कि तारीख भी इस तरह मुतरन्निम लह्जे में कहती है कि :

सदके होने को चले आते हैं लाखों गुलज़ार
कुछ अजब रंग से फूला है गुलिस्ताने अरब

(अज़ :- इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत हन्ज़ला गसीलुल मलाइका की फिदा कारी

शम्ए नबुव्वत पर निसार होने वाले परवानों में हज़रत हन्ज़ला बिन अबी आमिर रदियल्लाहो तआला अन्हो भी थे। जिस दिन ओहद का मा'रका वुकूअ में आया उसी दिन उन की शादी हूई थी। अपनी ज़ौजा के साथ हुज्रए उरूसी में थे, शबे ज़ुफाफ अपनी शरीके हयात की दिलदारी फरमा रहे थे कि अचानक कान में आवाज़ आई कि महबूबे खुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम और उन के साथियों पर कुफ्फ़ारे मक्का हम्ला आवर हुए हैं। हज़रत हन्ज़ला को हम्माम जा कर गुस्ल करने की भी मोहलत न मिल सकी। फौरन मा'रकए ओहद की तरफ निकल पडे। हज़रत हन्ज़ला रदियल्लाहो तआला अन्हो जब मैदाने ओहद में पहुंचे तो जंग की आग के शो'ले बुलन्द हो गए थे। लडाई का तन्नूर गर्म हो चुका था। वह मुजाहेदीन के हमराह मस्रूफे जेहाद हो गए और इत्तेफाक से उन का सामना अबू सुफियान बिन हर्ब से हो गया। हज़रत हन्ज़ला ने अबू सुफियान को घोडे से खींच कर ज़मीन पर गिरा दिया। अबू सुफियान चिल्लाने लगा कि ऐ गिरोहे कुरैश मैं अबू सुफियान हूं और हन्ज़ला मेरे कत्ल पर आमादा हुवा है, यह कह कर वह भागने लगा। हज़रत हन्ज़ला ने अबू सुफियान का तआककुब किया। इसी अस्ना में अस्वद बिन शऊब अबू सुफियान की मदद

को आ पहुंचा और उस ने हज़रत हन्ज़ला पर हम्ला कर के इस शिद्दत से भाला (नैज़ा) मारा कि नैज़ा उन के सीने के आर पार हो गया और वह शहीद हो गए।

जंग खत्म होने पर तमाम शोहदा की लाशों को देखा गया तो कुफ्फ़ार ने लाशों का मुस्ला कर दिया था या'नी तमाम शोहदा के नाक और कान काट लिये थे ,सिवाए हज़रत हन्ज़ला के ,क्यूं कि शहीद होने के बा'द फरिश्तों ने उन की ना'श को आस्मान की तरफ उठा लिया था। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फरमाया "मैं ने मलाइका को देखा कि वह हन्ज़ला बिन अबी आमिर को आस्मान और ज़मीन के दरमियान चांदी के एक बडे तश्त में माए-मुज़्न (या'नी बरसात का सफेद पानी) से गुस्ल देते थे।"

एक फिक्ही मस्अला अर्ज़ खिदमत है कि शहीद के अहकाम में से है कि शहीद को गुस्ल और कफन नहीं दिया जाता बल्कि उस को गुस्ल दिये बगैर उन्ही खून आलूद कपडों के साथ दफ्न किया जाता है। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम शोहदाए इस्लाम को इसी तरह बे गुस्ल व कफन, सिर्फ नमाज़े जनाज़ा पढ कर दफ्न फरमाते थे।

"हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हज़रत हन्ज़ला को फरिश्तों का गुस्ल देने का मन्ज़र मुलाहेज़ा फरमाने का जब ज़िक्र फरमाया तो अबू उसैद अस्सामरी ने हज़रत हन्ज़ला बिन अबी आमिर की लाश को जा कर देखा तो एक अजीब मन्ज़र था। हज़रत हन्ज़ला गुस्ल दिये गए थे और उन के सर से पानी के कतरे टपक रहे थे। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने किसी को भेज कर हज़रत हन्ज़ला की बीवी हज़रत जमीला से दर्याफ्त फरमाया तो उन्हों ने कहा कि हज़रत हन्ज़ला मेरे पास से हालत जनाबत में निकले थे। हुज़ूरे अक्दस ने फरमाया कि हज़रत हन्ज़ला को फरिश्तों का गुस्ल देना जनाबत की वजह से है क्यूं कि इन्हें गुस्ल की हाजत थी और वह शहीद हो गए।" (हवाला :- मगाज़ीयुस सादिका, अज़ अल्लामा वाकदी, उर्दू तर्जुमा, सफ्हा : 202)

हज़रत अम्र बिन जमूह अन्सारी का जज़्बए इश्क

हज़रत अम्र बिन जमूह अन्सारी रदियल्लाहो तआला अन्हो एक पाऊं से लंगडे थे। उन के चार नौ-जवान साहिबज़ादे हमेंशा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमत में हाज़िर रहते, और तमाम गज़्वात व जेहाद में शरीक रह कर अपनी खिदमत पैश करते। जब जंगे ओहद 3, सन हिजरी का मा'रका पैश आया, तो हज़रत अम्र

बिन जमूह अन्सारी ने चाहा कि वह बज़ाते खुद गज़्वए ओहद में हाज़िर हो कर सैयदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमत गुज़ारी का शर्फ, और जेहाद का अज्रे अज़ीम हासिल करें लैकिन उन की कौम के लोगों ने उन से कहा कि तुम लंगडे होने की वजह से मा'ज़ूर हो। तुम पर जेहाद फर्ज़ नहीं। क्यूं कि कुरआने मजीद में है :

"وَلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ" (सूरतुल फत्ह, आयत : 17)

तर्जुमा : "और लंगडे पर मुज़ाइका नहीं।" (कन्ज़ुल ईमान)

इलावा अज़ीं तुम्हारे चार (४) फर्ज़न्द तो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमत में मा'रकए ओहद में हाज़िर हैं। यह सुन कर हज़रत अम्र बिन जमूह ने कहा कि मेरे बेटों की कितनी खुश नसीबी है कि वह तो जन्नत में चले जाअें और मैं यहां बैठा रहूं। अल-मुख्तसर ! वह जेहाद के शौक में बे चैन व बे करार हो गए। घर आ कर अपनी बीवी हिन्दा बिन्ते उमर बिन हराम से अपने इरादे का ज़िक्र किया। उन की बीवी ने कहा कि तुम किस तरह जेहाद कर सक्ते हो ? तुम तो मा'ज़ूर हो। अगर तुम मैदाने जंग में गए तो भाग कर लौट आओगे, ऐसा मुझे मेह्सूस होता है। अपनी बीवी की बात सुन कर हज़रत अम्र बिन जमूह अन्सारी तैश में आ गये और अपना हथियार थामा और बारगाहे खुदावन्दी में दस्त बदुआ हो कर यूं अर्ज़ की "اَللّٰهُمَّ لَاتَرُدَّنِیْ اِلٰی اَهْلِیْ خِزْیًا وَّ ارْزُقْنِیْ شَهَادَة" या'नी **ऐ मेरे परवर्दगार मुझे अपने घर वालों की तरफ शर्मिन्दा और ख्वार मत लौटाना और मुझे शहादत नसीब फरमा।** यह दुआ मांग कर आप अपने घर से मा'रकए ओहद की तरफ रवाना हुए और मस्रूफे जेहाद हो गए।

हज़रत अबू तल्हा रिवायत फरमाते हैं कि मैं ने अम्र बिन जमूह को मैदाने कारज़ार में देखा कि वह लडखडा कर चलते और यह कहते हुए जंग करते कि खुदा की कसम में जन्नत का मुश्ताक हूं। उन के चारों बेटों ने अपने वालिद के हमराह जंग में दिलैरी और जवांमर्दी दिखा कर दादे शुजाअत हासिल की, यहां तक कि हज़रत अम्र बिन जमूह और उन के चारों साहिबज़ादे मारक-ए ओहद में शहीद हो गए। उन के साथ हज़रत अम्र बिन जमूह के साले या'नी उन की बीवी हिन्दा बिन्त अम्र बिन हराम के भाई अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम भी शहीद हो गए।

उम्मुल मो'मिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका रदियल्लाहो तआला अन्हा से मर्वी है कि हज़रत अम्र बिन जमूह की ज़ौजा हिन्द बिन्त अम्र बिन हराम रदियल्लाहो तआला अन्हा को

इत्तेलाअ मिली कि उन के शौहर, चारों बेटे और भाई शहीद हो गए हैं, तो यह मैदाने जंग में आईं और अपने शौहर, भाई और बेटों की लाशों को ऊंट पर लाद कर मदीना लाना चाहती थीं, ताकि इन्हें मदीना में दफ्न करें। लैकिन ऊंट ज़ानू के बल बैठ जाता। जब भी ऊंट को झिडक कर उठाना चाहतीं तो वह मुत्लक हिलता नहीं। एक मरतबा ज़ोर कर के ऊंट को खडा किया तो वह ओहद की तरफ चलने लगा। ओहद की तरफ ऊंट को चलातीं तो बगैर किसी दुश्वारी के चलता, लैकिन जब भी ऊंट को मदीना की तरफ हांकतीं तो ऊंट बैठ जाता। परेशान हो कर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हो कर तमाम माजरा बयान किया। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया कि तेरे शौहर ने घर से निकलते वक्त क्या कहा था ? हिन्द बिन्त अम्र बिन हराम ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह ! मेरे शौहर ने घर से निकलते वक्त रू ब-किब्ला हो कर दुआ की थी कि **ऐ खुदा ! मुझे मेरे घर की तरफ न लौटाना। हुज़ूर ने फरमाया कि यही वजह है कि ऊंट मदीना की तरफ नहीं जाता क्यूंकि ऊंट खुदा के हुक्म पर मामूर है।**

फिर हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया कि ऐ हिन्द ! तेरा शौहर, तेरे बेटे और तेरा भाई यह सब जन्नत में एक दूसरे के साथ हैं। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने उन तमाम को मैदान ओहद में दफ्न फरमाया। हज़रत अम्र बिन जमूह और अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम को एक ही कब्र में दफ्न फरमाया। रदियल्लाहो तआला अन्हुम।

(हवाला :- मगाज़ीयुस सादिका, अज़ अल्लामा वाकदी, उर्दू तर्जुमा : 195 ता 197)

हज़रत सवाद और इश्के रसूल

जंगे बद्र में जब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम लश्करे इस्लाम के मुजाहेदीन की सफें सीधी फरमा रहे थे, तो आप के दस्त पाक में एक छडी थी। हज़रत सवाद बिन अज़िया ज़रीफ तबा' व खुश फहम सहाबी थे, सफ से निकल कर आगे खडे हो गए। हुज़ूर ने उस छडी (पतली लक्डी) से उन के सीना पर मार कर फरमाया "**इस्तवे या सवाद**" या'नी ऐ सवाद सफ में ठीक खडे रहो। हज़रत सवाद ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! आप ने तक्लीफ देने वाली मार मुझ पर लगाई है। अल्लाह तआला ने आप को हक्क के साथ भेजा और अद्ल व इन्साफ आप के हाथ में है। मेरा किसास (बदला) दीजिए। हुज़ूरे अक्दस सय्येदुल आदेलीन सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने अपना

लिबास मुबारक अपने सीनए अक्दस से दूर कर के फरमाया कि **"ऐ सवाद ! इसी वक्त अपना किसास ले लो ।"** हज़रत सवाद ने फिल फौर अपना चेहरा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सीना पाक पर रख कर इस का बोसा ले लिया । हुज़ूर ने फरमाया ऐसा क्यूं करते हो ? अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ! यह मेरा आखरी वक्त है । मैं इस हंगामए जंग में शहीद हो जाऊंगा । लेहाज़ा **मैं ने चाहा कि ज़िन्दगी के आखरी लम्हात में मेरा जिस्म आप के जिस्मे अक्दस से मस हो जाए ।** (हवाला :- मदारिजुन नबुव्वत, अज़ः- शैख अब्दुलहक्क मोहद्दीसे देहलवी, जिल्द : 2, सफहा : 149)

मज़्कूरा तमाम वाकेआत से सिर्फ इश्के रसूल का जज़्ब-ए सादिक अयां होता है । सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन, ने अपने महबूब आका सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के साथ अपने कल्बी लगाव और वालेहाना अकीदत व शैफ्तगी के तकाज़ों की तक्मील में ईसार व कुरबानी की ऐसी मिसालें पैश की हैं कि उन के हरकात व सक्नात गोया हैं :

किसका मुंह तकिए, कहां जाइये, किस से कहिये
तेरे ही कदमों पे मिट जाए यह पाला तेरा

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी को अपने अंधे पन की दुआ व तमन्ना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी रदियल्लाहो तआला अन्हो अपने खेत पर थे और उन को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की रेहलत की इत्तेलाअ मिली । हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद साहिबे इज़्न और मुस्तजाबुद-दा'वात थे । उन्हों ने बारगाहे दावन्दी में दुआ की कि ऐ खुदा ! दुनिया को देखने वाली मेरी आंखें ले ले । अब इन आंखों का क्या काम ! जब कि तेरे हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के जमाल जहां आरा के मुशाहिदे से महरूम हो गईं । मैं उन आंखों से तेरे महबूब के जमाल के सिवा और कुछ देखना नहीं चाहता और तेरे महबूब ने पर्दा फरमा लिया । अब मुझे इन आंखों का क्या काम ? चुनांचे उन की दुआ फौरन कबूल हूई और वह उसी वक्त नाबीना हो गए । (ब-हवाला : - मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 755)

ब-कौल इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी :

तेरे कदमों में जो हैं गैर का मुंह क्या देखें
कौन नज़रों पर चढे देख के तल्वा तेरा

हज़रत खुबैब बिन अदी का जज़्बए इश्क और तसव्वुरे जाने जानां

हज़रत खुबैब बिन अदी रदियल्लाहो तआला अन्हो जिन का ज़िक्र **"शहीद के मरातिब व दरजात और हयात"** के उन्वान में ऊपर गुज़रा । जब कि कुफ्फार उन को शहीद करने के लिये मक्का से मौज़-ए-तन्ईम की तरफ ले जा रहे थे । तो अस्नाए राह कुफ्फार उन से कहने लगे कि इस वक्त तो तुम्हारी ख्वाहिश यह होगी कि तुम्हारे बजाए इस दार पर मुहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम)होते और तुम अपने घर में सलामती के साथ होते । इस पर हज़रत खुबैब ने फरमाया कि "खुदा की कसम ! मैं तो यह भी गवारा नहीं करता के हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के मुबारक पाऊं में एक कांटा चुभे और में घर में सलामत बैठा रहूं ।" इस पर कुफ्फार बर-अंगेख्ता हुए और आप के साथ तरह तरह की सख्तियां और बेहूदगियां कीं और आप को कत्ल करने पर आमादा हुए । हज़रत खुबैब रदियल्लाहो तआला अन्हो उस संगीन माहौल में अपने आका व मौला, जाने आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की याद और तसव्वुर में मुस्तग्रक थे और अपने महबूब आका के दरबारे आली में अपनी दिली कैफियत को पहुंचाने के लिये परवरदिगारे आलम जल्ला जलालहु की बारगाह में दुआ करते हैं कि " ऐ खुदा ! मैं इस जगह दुश्मनों के सिवा किसी को नहीं देखता हूं और दोस्तों में से कोई यहां मौजूद नहीं, जो मेरा पैगाम तेरे हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम तक पहुंचाए । ऐ खुदा ! तुं ही मेरा सलाम बारगाहे रिसालत में पहुंचा दे ।"

हज़रत ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की मजलिस शरीफ में ब-मकाम मदीना मुनव्वरा एक जमाअत के साथ मौजूद था कि यकायक हुज़ूर पर वही के आसार व अलामात ज़ाहिर हूईं । उस के बा'द हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया कि **"रेहमतुल्लाह अलैह"** और फरमाया कि खुबैब को कुरैश ने शहीद कर दिया और यह जिब्रईल अमीन हैं जो उन का सलाम मुझे पहुंचा रहे हैं ।

(हवाला :- मदारिजुन नबुव्वत, अज़ शैख अब्दुलहक्क देहल्वी, जिल्द : 2, सफहा : 245)

हज़रत खुबैब बिन अदी रदियल्लाहो तआला अन्हो को अपनी ज़िन्दगी के आखरी लम्हात में अपने अइज़्ज़ा व अक़्रबा की याद नहीं आई और न ही उन तक अपना पैगाम व सलाम पहुंचाने की ख्वाहिश हूई। मगर अपने महबूब आका सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के साथ उन के वालेहाना इश्क की यह कैफियत थी कि नज़रों के सामने मौत सर पर नाच रही है। घडी दो घडी में जान जिस्म से जुदा हो जाएगी। मगर इस की कोई फिक्र नहीं बल्कि ईमान की जान सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की जुदाई और फिराक का रंज व गम है। बारगाहे रिसालत की हाज़री और बारयाबी की ही ख्वाहिश है :

सरहाने उन के बिस्मिल के यह बेताबी का मातम है
शहे कौसर तरह्हुम तिश्ना जाता है ज़ियारत का

और

मौत सुनता हूं सितम तल्ख है ज़हराबए नाब
कौन ला दे मुझे तलवों का गुसाला तेरा

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

अब्दुल्लाह बिन उबई सलूल तलवार के साए में

अब्दुल्लाह बिन उबई सलूल मुनाफिक हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का दुश्मन और गुस्ताख था। लैकिन उस के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह मुख्लिस मोमिन और आशिके रसूल थे। गज़्वए बनी मुस्तलक जिस को गज़्वए मरीसीअ भी कहते हैं। गज़्वा मरीसीअ से लौटते वक्त अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफिक ने गुस्ताखाना जुम्ला कहा कि अगर हम इज़्ज़त वाले लोग मदीना लौट गए तो हम मदीना शहर से ज़लील लोगों को या'नी अस्हाबे रसूल को निकाल भगाऐंगे। जिस का बयान कुरआने मजीद में इस तरह है :

"يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ"

(सूरतुल मुनाफिकून, आयत : 8)

तर्जुमा : कहते हैं हम मदीना फिर कर गए तो ज़रूर जो बडी इज़्ज़त वाला है वह इस में से निकाल देगा उसे जो निहायत ज़िल्लत वाला है।" (कन्ज़ुल ईमान)

मुनाफिक अब्दुल्लाह बिन उबई सलूल ने "**अअज़्ज़ो**" (बडी इज़्ज़त वाला) से खुद को मुराद लिया था और "**अज़ल्ल**" (बडी ज़िल्लत वाले) से अस्हाबे रसूल को मुराद लिया था। अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफिक के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह को जब मा'लूम हुवा कि मेरे बाप ने ऐसा ज़लील जुम्ला कहा है तो बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम में अर्ज़ किया कि अगर हुज़ूर चाहें तो मैं अपने बाप का सर उतार कर ले आऊं। फिर हज़रत अब्दुल्लाह अपनी तलवार सौंत कर शहर के दरवाज़े पर आ कर खडे हो गए और अपने मुनाफिक बाप का इन्तिज़ार करने लगे। जब अब्दुल्लाह बिन उबई सलूल मदीना लौटा और शहर के दरवाज़े पर पहुंचा तो हज़रत अब्दुल्लाह ने अपने बाप को शहर में दाखिल होने से रोका और कहा कि अब तो अपनी ज़बान से यह कह कि "اَنَا اَذَلُّ النَّاسِ وَاَصْحَابُ مُحَمَّدٍ اَعَزُّ النَّاسِ" या'नी "**मैं लोगों में सब से ज़ियादह ज़लील हूं और अस्हाबे रसूल लोगों में सब से ज़ियादह इज़्ज़तदार हैं।**" वरना मैं तेरी गर्दन उडा दूंगा। अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफिक ने अपने बेटे से कहा कि क्या तू सच कहता है ? और यूं ही करेगा ? हज़रत अब्दुल्लाह ने अपने मुनाफिक बाप से फरमाया कि हां मैं तेरी गर्दन उडा दूंगा। जब अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफिक ने अपने बेटे के तेवर देखे तो समझ गया कि आज इस का रंग बदला हुवा है और आंखों से शो'ले बरस रहे हैं। वह सहम गया और अपनी जान बचाने के लिये मज़कूरा अल्फाज़ अपनी ज़बान से कईं मरतबा अदा किये और इस का इक्रार किया तब हज़रत अब्दुल्लाह ने उसे छोडा। (हवाला : – मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 1, सफहा : 531)

इसी तरह हज़रत अम्र बिन आस रदियल्लाहो तआला अन्हो ने अपने काफिर बाप आस बिन वाइल को और अमीनुल उम्मत हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने अपने काफिर बाप अब्दुल्लाह बिन जर्राह को अपने ही हाथों से कत्ल कर दिया और दुनिया को यह सबक दिया कि नबी की मुहब्बत व अज़्मत के मुकाबले में अगर हकीकी बाप भी आ जाए तो एक मोमिन नबी की अज़्मत को बाप की हयात पर तर्जीह देता है। सहाबए किराम का इश्के रसूल इत्ना पाकीज़ा था कि वह अपने इश्क में दीवानगी की हद तक पहोंच गए थे। उन का जीना सिर्फ इश्के रसूल की बिना पर था। इश्के रसूल उन के दिलों की धडकन बन चुका था। अपने महबूब आका सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की मुहब्बत व गुलामी में वह इतने मुन्हमिक और मुस्तग्रक हो चुके थे कि उन्हें दुनिया की किसी चीज़ और किसी निस्बत से कोई गर्ज़ न थी :

मैं निसार ऐसा मुसल्मां कीजिये
तोड डालें नफ्स का ज़ुन्नार हम

(अज़ : इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हुज़ूरे अक्दस ﷺ के अख्लाकी महासिन

अब हम फिर एक मरतबा इस दा'वे का एआदा करते हैं कि इस्लाम हरगिज़ तलवार से नहीं फैला बल्कि हुज़ूरे अकरम रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाके करीमा व अतवारे जमीला से फैला है। हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की हयाते तय्यबह का ब-गौर जाइज़ा लेने से यह बात साबित होती है कि आप की हयाते तय्यबह का हर लम्हा नौए इन्सानी के लिये उस्वए हसना है। अल्लाह तबारक व तआला ने अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की ज़ाते बा-बरकात को ऐसी आली सिफात और मम्बउल बरकात बनाई थी कि आप के तमाम अख्लाक व खसाइल इस कद्र आ'ला व अरफअ, अतम व अक्मल, अहसन व अज्मल और अशरफ व अफ्ज़ल थे कि जिन को एहातए हस्र में ला कर इस का कमा हक्कहु बयान करना मुम्किन नहीं।

कुरआने मजीद में इर्शादे बारी तआला है :

"وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ" (सूरए कलम, आयत : 4)

तर्जुमा : "और बे-शक तुम्हारी खू-बू (खुल्क) बडी शान की है।"

(कन्जुल ईमान)

हदीस : हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम फरमाते हैं कि :

"اُكْمِلُ مَحَاسِنَ الْاَفْعَالِ"

तर्जुमा : "मुझे अच्छे कामों को मुकम्मल करने के लिये भेजा गया।"

हदीस : सरकार अबदे करार सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम इर्शाद फरमाते हैं कि :

"بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الاخلَاقِ"

तर्जुमा : "मुझे अख्लाक की खूबियों की तक्मील के लिये भेजा गया है।"

उम्मुल मो'मिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका रदियल्लाहो तआला अन्हा से मर्वी है, आप से हुज़ूरे अक्दस जाने आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाके करीमा के बारे में दर्याफ्त किया गया तो हज़रत आइशा सिद्दीका रदियल्लाहो तआला अन्हा ने जवाब में फरमाया कि : "كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآن" या'नी कुरआन ही आप का अख्लाक था।

शैखे मुहक्किक, शाह अब्दुलहक्क मोहद्दीसे देहलवी कुद्दिसा सिर्रहु फरमाते हैं कि :

"जिस तरह कुरआन के मा'नी गैर मुतनाही हैं। आप के अख्लाक की खूबियां और महासिन जमीला हर आन और हर हाल में ताज़ा ब ताज़ा और नौ' ब नौ' होते हैं।"

(हवाला : - मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 1, सफहा : 65)

इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी बारगाहे रिसालत में यूं अर्ज़ करते हैं :

तेरे खुल्क को हक्क ने अज़ीम कहा, तेरी खल्क को हक्क ने जमील किया
कोई तुझ सा हुवा है न होगा शहा, तेरे खालिके हुस्नो अदा की कसम

हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की ज़ाते सुतूदा सिफात की वह अरफअ शान है कि आप के मकामे हकीकत को खुदा के सिवा कोई नहीं पहचान सक्ता। जिस तरह खुदाए तआला को महबूबे खुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सिवा दूसरा कोई नहीं पहचान सका, इसी तरह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह को अल्लाह के सिवा कोई नहीं पहचान सका, खुद सरकार फरमाते हैं "لَمْ يَعْرِفْنِىْ حَقِيْقَةً غَيْرُ رَبِّىْ" या'नी **"मुझ को मेरे रब के सिवा कोई नहीं जान सका।"** जब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की हकीकते ज़ात बे मिस्ल व बे मिसाल है तो आप के तमाम अवसाफे जमीला भी बे मिस्ल व बे मिसाल हैं और इन्ही अवसाफ में से आप के अख्लाके करीमा हैं। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के हुस्ने अख्लाक की बराबरी का दा'वा करने वाला न कोई आज तक पैदा हुवा है और न कभी पैदा होगा।

आप सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का मादरे शफीक के शिकम अत्हर में इस्तकरार फरमाना, तवल्लुद, अय्यामे शीर-ख्वारगी, बचपन, जवानी और दुनिया से पर्दा फरमाने तक की ज़ाहेरी हयात के मुख्तलिफ शो'बे मसलन : इन्फिरादी, इजतिमाई, मआशी, इक्तेसादी, तिजारती, मुआमलाती, मुआशरती, अज़्दवाजी, खान्दानी, इन्तिज़ामी, मजलिसी, समाजी, खिदमाती, मज़हबी और जेहादी ज़िन्दगी के किसी भी पहलू को टटोल कर देखेंगे तो आप सिर्फ और सिर्फ दयानतदारी,

अमानतदारी, ईमानदारी, रवादारी, रास्त बाज़ी, सिद्क गोई, रास्तगुफ्तारी, वफादारी, तवाज़ोअ व इन्किसारी, गरीब परवरी, हाजत रवाई, अफ्व व इनायत, जूदो सखा, रहम व करम, अद्ल व इन्साफ और ईफाए अह्द जैसे अख्लाकी महासिन की आ'ला कद्रों के आईना दार हैं। यहां इतनी गुन्जाइश नहीं कि तमाम अख्लाकी महासिन पर सैर हासिल गुफ्तगू की जाए। लेहाज़ा सिर्फ जेहादी ज़िन्दगी से तअल्लुक रखने वाले अफ्वो करम पर मुश्तमिल उन वाकेआत की तरफ निशानदही की जाती है जो हमारे मौज़ूअ से मुतअल्लिक हैं।

जंगे ओहद में दन्दाने मुबारक शहीद

जंगे ओहद में अब्दुल्लाह बिन कुमैय्या ने रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम पर ऐसा ज़ोर से पत्थर मारा कि आप का रुख्सार मुबारक खून आलूद हो गया। और उतबा बिन अबी वक्कास ने जो पत्थर मारा था उस से आप का लबे-ज़ेरीं या'नी नीचे का होंट मुबारक लहूलहान हो गया और आगे के निचले दन्दान मुबारक शहीद हो गए। अब्दुल्लाह बिन शिहाब ने हुज़ूर की कोहनी मुबारक को ज़ख्मी कर दिया। सहाबए किराम को आप की यह हालत सख्त दुश्वार और ना-गवार मा'लूम हूई। वह अर्ज़ करने लगे कि काश ! आप उन ज़ालिमों पर दुआए हेलाकत फरमाते ताकि वह अपने कर्तूतों की सज़ा पाऐं। इस पर आप ने फरमाया कि "मुझे ला'नत और बद-दुआ करने के लिये नहीं भेजा गया, बल्कि मख्लूके खुदा को खुदा से मिलाने और उन पर रहमत व शफ्कत करने के लिये भेजा गया है" और यह दुआ फरमाई : اَللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِی فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

तर्जुमा : "ऐ खुदा मेरी कौम को हिदायत फरमा क्यूं कि वह मुझे जानती नहीं।"

रिवायत : हज़रत अबू सईद खुद्री रदियल्लाहो तआला अन्हो रिवायत करते हैं कि जब रूए पुर अनवार सय्यिदे अब्रार सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम से खून जारी हुवा, तो मेरे वालिद मालिक बिन सेनान रदियल्लाहो तआला अन्हो अपने मुंह को टपक्ते हुए खौद की जगह रख कर खून मुबारक पी जाते थे। इस पर लोगों ने कलाम किया तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया कि **"जिस के खून में मेरा खून मिल जाए उसे आतिशे दोज़ख नहीं छू सक्ती।"** (हवाला :- मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 222)

- हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को शहीद करने की साज़िश से खैबर के मकाम में बकरी की ज़हर आलूद रान देने वाली यहूदिया ज़ैनब बिन्ते हारिस को और आप को ज़रर व नुक्सान पहुंचाने के फासिद इरादे से आप पर जादू करने वाले यहूदी लबीद बिन अल-आ'सम को आप ने मुआफ फरमा दिया।

- एक मरतबा आप कैलूला फरमा रहे थे। अचानक आप सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने चश्माने मुबारक खोलीं तो देखा कि एक ए'राबी बरहेना तलवार लिये हुए आप के सिरहाने खडा है और कह रहा है कि अब आप को मुझ से कौन बचाएगा ? और कौन मुझ से महफूज़ रखेगा ? आप ने फरमाया "अल्लाह।" यह सुन कर उस ए'राबी के हाथ से तलवार गिर पडी। हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने तलवार उठाई और फरमाया अब तू बता ! तुझे अब कौन बचाएगा ? वह शख्स लरज़ने और कांपने लगा। इस पर हुज़ूरे अक्दस ने उस शख्स को छोड दिया और मुआफ फरमा दिया।

(हवाला : - मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 1, सफहा : 74)

हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम पर किये जाने वाले जानी और माली ज़ुल्म व सितम पर आप हमेंशा सब्र फरमा कर दर गुज़र करते। आप किसी के साथ न तो खुद सख्त कलामी फरमाते थे और न किसी की सख्त कलामी का बदला लेते। बल्कि अफ्वो करम से काम लेते थे। इस का मुखालेफीन पर इत्ना गहरा असर पडा कि वह आप के हुस्ने अख्लाक से मुतअस्सिर और गरवीदा हो कर अपने इर्तिकाबे जुर्म पर पशैमान व नादिम हुए। हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाके करीमा मुखालेफीन के तालीफे कुलूब के लिये तिर्याक का काम करते थे और आप के जानी दुश्मन और खून के प्यासे आप के अख्लाक से मुतअस्सिर और अपने किये पर मुतअस्सिफ हो कर आप की सदाकत व हक्कानियत का इक्रार करते और अगर तौफीके ऐज़दी शामिले हाल होती तो दौलते ईमान से सरफराज़ हो जाते और फिर वह अपने माज़ी के कर्तूतों के तदारुक में सिद्क दिल से इस्लाम की खिदमत गुज़ारी में नुमायां कारनामे अंजाम देते। यहां तक कि मुकर्रबे बारगाहे रिसालत होने का उन्हें शर्फ हासिल हो जाता।

चंद मिसालें इख्तिसारन ज़ियाफते कारेईन की खातिर पैशे खिदमत हैं :

(1) हज़रत अबू सुफियान बिन हर्ब बिन उमय्या कुफ्र व ईमान के तनाज़ुर में

हज़रत अबू सुफियान रदियल्लाहो तआला अन्हो जब तक ईमान न लाए थे, तब तक उन्हों ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की अदावत व दुश्मनी में कोई कसर उठा न रखी थी। इस्लाम को नुक्सान पहुंचाने वालों की सरबराही करते और उन की पुश्त पनाही में वह हमेंशा गर्म जोशी से काम लेते थे। मसलन :

- जंगे बद्र के लिये कुफ्फारे मक्का को उन्हों ने ही उक्साया और लश्करे कुफ्फार को मक्का से मदीना बुला कर बद्र में खडा किया और फिर खुद भी लश्करे कुरैश में शामिल रहे।
- जंगे बद्र के मक्तूलीन का इन्तेकाम लेने और मुसलमानों को नेस्तो नाबूद करने की गर्ज़ से एक अज़ीम लश्कर की तर्बियत के लिये अबू सुफियान ने दारुन-नदवा में मीटिंग की और बीस हज़ार (२०,०००) मिस्काल का चन्दा मक्का के ताजिरों से वुसूल कर के लश्कर की तैयारी के लिये खर्च किया।
- 3, सन हिजरी में हज़रत अबू सुफियान की सिपाह सालारी में लश्करे कुफ्फार मक्का से रवाना हो कर मदीना मुनव्वरा पर हम्ला करने आया और ओहद पहाड के दामन में एक मा'रका वुकूअ पज़ीर हुवा जो जंगे ओहद के नाम से मश्हूर है।
- 5, सन हिजरी में हज़रत अबू सुफियान ने खैबर के यहूदियों से मदद तलब की और यहूद व कुफ्फार का मुश्तरका लश्कर ले कर उन्हों ने मदीना मुनव्वरा पर दस हज़ार (१०,०००) अफराद के साथ हम्ला किया और गज़्वए अहज़ाब या'नी गज़्वए खन्दक का वाकेआ पेश आया।
- गज़्वए खन्दक से लौटने के बा'द अबू सुफियान ने मक्का से एक बदवी शख्स को मदीना तय्यबह इस गर्ज़ से भेजा कि वह मौका पाते ही हुज़ूरे अक्दस, जाने आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को शहीद कर दे। अबू सुफियान ने उस शख्स को सवारी का ऊंट और ज़ादे राह अपनी तरफ से

दिया था। वह शख्स मदीना मुनव्वरा आया। पकडा गया। हुज़ूर ने मुआफ फरमा दिया। लेहाज़ा वह मुसलमान हो गया। (मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 302)

- 6, सन हिजरी में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम मदीना मुनव्वरा से ब निय्यते उमरा मक्का मुअज़्ज़मा के लिये रवाना हुए, तो अबू सुफियान ने हुज़ूर का मक्का मुअज़्ज़मा में दाखिला रोकने के लिये मुश्रेकीने मक्का को जमा किया और हुज़ूर को रोकने के लिये जिद्दा के रास्ता पर वाकेअ मौज़ए बलदा पर लश्कर का पडाव डलवाया। बा'दहु सुल्हे हुदैबिया हूई।
- सुल्हे हुदैबिया के बा'द हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हिरक्ल, शाहे रूम को इस्लाम की दा'वत का मक्तूब (खत)इर्साल फरमाया। उस वक्त इत्तेफाक से अबू सुफियान बिन हर्ब तिजारत के सिल्सिले में मुल्के शाम आए हुए थे। जहां उन्हों ने हिरक्ल बादशाह के दरबार में जा कर हुज़ूर के खिलाफ हिरक्ल के खूब कान भरे और किज़्ब बयानी से काम लिया।

(मदारिजुन नबुव्वत जिल्द : 2, सफहा : 381)

मुख्तसर यह कि इस्लाम और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के खिलाफ कोई भी तहरीक या कोई भी महाज़ हो, अबू सुफियान बिन हर्ब उस में बडी गर्म जोशी से हिस्सा लेते और इस्लाम के खिलाफ अपनी तमाम तर ताकत व दौलत सर्फ करते, लैकिन उन की तक्दीर में ईमान लिखा हुवा था। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की खिदमत में फतहे मक्का के दिन 8, सन हिजरी में हाज़िर हुए। अपने माज़ी के अफ्आल पर नदामत व शर्मिन्दगी का इज़्हार कर के मा'ज़ेरत ख्वाह हुए और सूरए यूसुफ में मज़्कूर बिरादराने हज़रत यूसुफ अला नबिय्येना व अलैहिस्सलातो वस्सलाम का मकोला जिस की हिकायत कुरआन ने की हय पैश किया :

"لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِئِيْنَ" (सूरए यूसुफ, आयत : 91)

तर्जुमा : "बे शक अल्लाह ने आप को हम पर फज़ीलत दी और बे शक हम खता वार थे।" (कन्ज़ुल ईमान)

जवाब में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने वही फरमाया जो हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने अपने भाइयों से फरमाया था। या'नी :

"لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ" (सूरए यूसुफ, आयत : 92)

तर्जुमा : "आज तुम पर कुछ मलामत नहीं। अल्लाह तुम्हें मुआफ करे और वह सब मेहरबानों से बढ कर मेहरबान है।" (कन्जुल ईमान)

हज़रत अबू सुफियान रदियल्लाहो तआला अन्हो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के दस्त हक्क परस्त पर ईमान लाए। हुज़ूर ने उन की तमाम खताअें मुआफ फरमा कर अख्लाके करीमा का मुज़ाहेरा फरमाया। हालां कि हज़रत अबू सुफियान रदियल्लाहो तआला अन्हो ने इस्लाम लाने से पहले हुज़ूर को इत्ना सताया था कि अगर हुज़ूरे अक्दस के बजाए दुनिया में और किसी को इत्ना सताने के बा'द मुआफी के तलब गार होते, तो मुआफी मिलने की कोई उम्मीद न होती। बल्कि जान के लाले पड जाते। लैकिन हुज़ूरे अकरम रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने कमाले अफ्वो करम से उन पर निगाहे लुत्फ व इनायत फरमा कर मुआफ फरमा दिया। बल्कि अपने दामन में पनाह अता फरमाई :

चोर हाकिम से छुपा करते हैं यां इस के खिलाफ
तेरे दामन में छुपे चोर अनोखा तेरा

और

कर के तुम्हारे गुनाह मांगें तुम्हारी पनाह
तुम कहो दामन में आ तुम पे करोडों दुरूद

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत, हज़रत रज़ा बरैली)

हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाके जमीला ने हज़रत अबू सुफियान को ऐसा गरवीदए इस्लाम कर दिया कि उन्हों ने अपनी माज़ी की खताओं का कफ्फारा अदा करते हुए खुलूसे दिल से इस्लाम की ज़र्रीं खिदमत अंजाम दीं। अपनी तमाम सलाहियतों को इस्लाम के फरोग के लिये ही इस्ते'माल कीं और उन का शुमार अकाबिरे सहाबए किराम में होने लगा। हज़रत अबू सुफियान ने इस्लाम और बानीए इस्लाम की जो बेश बहा खिदमत अंजाम दी हैं, उस की कुछ झल्कियां ज़ैल में मुलाहेज़ा फरमाअें :

- जंगे हुनैन 8, सन हिजरी में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के हम रिकाब थे और हुज़ूर की सवारी की लगाम थामे हुए थे।
- जंग ताइफ 8, सन हिजरी में हुज़ूर के साथ शरीक हुए। इस जंग में तीर लगने की वजह से हज़रत अबू सुफियान की एक आंख जाती रही। हुज़ूर ने इन्हें जन्नत में आंख मिलने का वा'दा फरमाया।

(मदारिजुन नबुव्वत, जिल्द : 2,सफहा : 528)

- हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के हुक्म से अरब के बडे बुत मनात के बुत खाने को मुन्हदिम कर दिया।
- हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमत में हाज़िर रह कर वहीए इलाही की किताबत की खिदमत अंजाम दी।
- मुल्के शाम में लश्करे इस्लाम के साथ रह कर बडी जां फेशानी से रूमियों से लडे। खुसूसन जंगे यर्मूक के बारहवें दिन जब इस्लामी लश्कर ने हज़ीमत उठाई और मुजाहेदीने इस्लाम पीछे हटने लगे, तब हज़रत अबू सुफियान ने ललकार कर दादे शुजाअत देते हुए इस्लामी लश्कर को साबित कदम रखा।
- जंगे यर्मूक में ही हज़रत अबू सुफियान तीर लगने की वजह से अपनी दूसरी आंख भी खो बैठे और वह दोनों आंख से नाबीना हो गए।
- मुल्के शाम में हज़रत अबू सुफियान ने जंगे दमिश्क, जोसिया, रुस्तन, कन्सरीन, बा'ल्बक, हुमुस और यर्मूक में अपनी खिदमात पैश कीं।

(2) हज़रत खालिद बिन वलीद बिन मुगीरा अल-मखज़ूमी अल-कर्शी

हुज़ूरे अक्दस जान ईमान सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सब से बडे गुस्ताख वलीद बिन मुगीरा के आप बेटे थे। हज़रत खालिद अशराफ व आ'याने कुरैश में से थे। ज़मान-ए-जाहिलियत में घोडों की एनान उन के हाथ में थी। नौ-उम्री के ज़माने से ही वह शुजाअ, बहादुर, जंगजू, माहिरे फन्न जंग, और तलवार के धनी थे। सुल्हे हुदैबिया तक वह काफिरों के साथ रहे और इस्लाम के खिलाफ लडते रहे। मसलन :

- जंग ओहद 3, सन हिजरी में लश्करे कुफ्फार व मुश्रेकीन के आप मुकद्दमतुल जैश थे।
- जंग ओहद में लश्करे कुफ्फार ने हज़ीमत उठाई और शिकस्त से दो चार और पस्पा हो कर भाग रहा था। लैकिन हज़रत खालिद ने मुशरिकों की एक जमाअत के साथ पहाड के पीछे से आ कर इस्लामी लश्कर पर हम्ला कर दिया और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रदियल्लाहो तआला अन्हो और उन के साथियों को शहीद कर दिया और जंग का तख्ता पलट दिया।
- 6, सन हिजरी में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को सुल्हे हुदैबिया के मौके पर मक्का मुअज़्ज़मा में दाखिल होने से रोकने के लिये जिद्दा के रास्ते पर मौज़-ए बलदा में लश्करे कुफ्फार के सरगना की हैसियत रखते थे।

लैकिन 7, सन हिजरी में हज़रत खालिद बिन वलीद की किस्मत का सितारा चमका। जंगे मौता 8, सन हिजरी के दो माह कब्ल इस्लाम से मुशर्रफ हुए। (हवाला :- मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 935) बा'ज़ अह्ले सैर हज़रत खालिद का कबूल इस्लाम 8, सन हिजरी में बताते हैं।

जब हज़रत खालिद बिन वलीद बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और सलाम पैश किया तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने खन्दा पेशानी से उन के सलाम का जवाब इनायत फरमाया और तबस्सुम फरमाया। नज़र से नज़र क्या मिली ? कि हज़रत खालिद ने अपना दिल सरकारे दो जहां के कदमों में रख दिया। खुदा के महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाके करीमा ने ऐसा दीवानए इश्क कर दिया कि माज़ी में इस्लाम कुशी की जो खताअें सर्ज़द हूई थीं, उन खताओं पर शर्मिन्दगी का इज़्हार करते हुए हज़रत खालिद ने अर्ज़ किया कि :

"या रसूलल्लाह ! आप ने मुलाहेज़ा फरमाया है कि मैं ने नैकी की राहों में हक्क के साथ कैसी कैसी दुश्मनियां की हैं। अब दुआ फरमाइये कि हक्क तआला उन्हें मुआफ फरमा दे। और मेरे गुनाहों को बख्श दे।"

जवाब में रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया **"अल इस्लामो यजुब्बो मा कब्लहु"** या'नी इस्लाम कबूल करना अगले गुनाहों को मह्व कर देता है और सब खताओं को मिटा देता है।

(हवाला : - मदारिजुन नबुव्वत, जिल्द : 2, सफहा : 450)

अपने सामने शर्मिन्दा और नादिम होने वाले की इस तरह दिलजूई फरमा कर मगफेरत की बशारत सुनाने का नुस्खा ऐसा कार-आमद हुवा कि उस वक्त से ले कर दमे आखिर तक हज़रत खालिद बिन वलीद ने इस्लाम की वह खिदमत अंजाम दीं कि हज़रते खालिद का मुबारक इस्मे गिरामी सिर्फ इस्लामी तारीख में ही नहीं बल्कि दुनिया की तारीख में सुन्हरी हुरूफ से मुनक्कश हो गया। हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलेहे व सल्लम की ज़ाहेरी हयाते तय्यबह में और पर्दा फरमाने के बा'द भी दीने इस्लाम की ताईद व तकवीयत के लिये मसाई-ए-जमीला व अज़ीमा अंजाम देने में किसी किस्म की कोताही नहीं की। मसलन :

- जंगे मौता 8, सन हिजरी में तीन हज़ार का इस्लामी लश्कर ले कर आप रूमियों के एक लाख के अज़ीम लश्कर से भिड गए और रूमियों को शिकस्ते फाश दी। जंगे मौता में आप ने जो दिलैरी दिखाई, उस से खुश हो कर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने आप को **"सैफुल्लाह"** के लकब से सरफराज़ फरमाया।

नोट : जंगे मौता का तफ्सीली बयान अगले सफ्हात में मुलाहेज़ा फरमाअें।

- आप ने अपनी ज़िन्दगी में एक सौ (१००) से ज़ियादह जंगों में शिर्कत फरमा कर अज़ीम फुतूहात हासिल कीं, जंग बाज़ी में ऐसे मुन्हमिक व कोशां रहे कि आप के जिस्म में एक बालिश्त ऐसा हिस्सा नहीं था जहां नैज़ा, तीर और तलवार के ज़ख्म न लगे हों। मुल्के शाम की फुतूहात अगले सफ्हात में तफ्सील से ज़िक्र की जाअेंगी उन फुतूहात में हज़रत खालिद बिन वलीद की शुजाअत व दिलैरी, जवांमर्दी व बहादुरी और फन्ने जंग की महारत का बयान पढ कर कारेईने किराम वाकई हैरत ज़दा रह जाअेंगे।
- मुद्दई नबुव्वत मुसैलमा कज़्ज़ाब के चालीस हज़ार जंगजू लश्कर के साथ 11, सन हिजरी में जंग यमामा हूई। इस्लामी लश्कर के सिपाह सालार हज़रत खालिद रदियल्लाहो तआला अन्हो थे। इस जंग में मुसैलमा मारा गया।
- मुद्दई नबुव्वत तलीहा बिन खोवैलिद असदी की सरकोबी के लिये अमीरुल मोमेनीन हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत खालिद को इस्लामी लश्कर का अमीर मुकर्रर कर के भेजा था।

- हज़रत खालिद बिन वलीद ने कातिबे बारगाहे रिसालत की हैसियत से भी अपनी खिदमत पेश की हैं।

(3) हज़रत इक्रमा बिन अबू जहल बिन हिशाम

अबू जहल का नाम हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के दुश्मनों में सरे फेहरिस्त है। इस्लाम और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सब से बडे अदू और बद-ख्वाह की हैसियत से उस ने अपना माल पानी की तरह बहाया और अपनी जान भी अदावते रसूल में जंगे बद्र के दिन ज़ाए' की। उसी अबू जहल के बेटे हज़रत इक्रमा बिन अबी जहल भी अपने बाप के नक्श कदम पर चल कर हुज़ूरे अकरम रहमते आलम व जाने आलम की ईज़ा रसानी और तक्लीफ दही में मशहूर थे। इस्लाम के खिलाफ हर महाज़ पर वह अशकिया के गिरोह के सरदार और सर बर आवुरदा थे। अपने बाप के वारिस और जा-नशीं होने की वजह से इस्लाम की अदावत की शनाअत इन्हें वर्से में मिली थी। मसलन :

- 8, सन हिजरी तक जितने गज़्वात हुए, उन तमाम गज़्वात में हज़रत इक्रमा बिन अबी जहल ने शिर्कत कर के लश्करे कुफ्फार की सरदारी और कयादत की।
- 3, सन हिजरी जंगे ओहद में पहाड के पीछे से घूम कर इस्लामी लश्कर पर हम्ला करने में वह हज़रत खालिद बिन वलीद के हमराह थे।
- सुल्हे हुदैबिया के मौकेअ पर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को मक्का मुअज़्ज़मा में दाखिल होने से रोकने के लिये लश्करे कुफ्फार का जो हरावल दस्ता बनाया गया था, उस में हज़रत खालिद के हमराह थे।
- 8, सन हिजरी फतहे मक्का के दिन वह अपने एक कदीम साथी और दोस्त हज़रत खालिद बिन वलीद के मुकाबले में कुफ्फार की जानिब से ब-मकाम खरवरह में शिद्दत से लडे।

जब मक्का मुअज़्ज़मा फतह हो कर मुसलमानों के कब्ज़े में आ गया, तो हज़रत इक्रमा

बिन अबी जहल अपनी जान बचाने के लिये साहेली इलाके में चले गए। हज़रत इक्रमा की बीवी हज़रत उम्मे हकीम बिन्ते हारिस इस्लाम कबूल कर के अपने शौहर के लिये हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम से अमान हासिल कर के उस की जुस्तजू में निकली हूई थी। जब उम्मे हकीम अपने शौहर इक्रमा से मिली तो इत्तेलाअ दी कि मैं ने तेरे लिये रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम से अमान हासिल कर ली है। हज़रत इक्रमा ने जब अमान मिलने की खबर सुनी तो वह हैरान और मुतअज्जिब हो कर कहने लगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) को मैं ने बे-शुमार ईज़ाअें और तक्लीफें पहुंचाई हैं, इस के बा-वुजूद भी उन्हों ने मुझे अमान दी है ? उम्मे हकीम ने कहा कि हां ! हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम इतने ज़ियादह रहम दिल और करीम हैं कि उन की जितनी भी ता'रीफ की जाए कम है। हज़रत इक्रमा बिन अबी जहल अपनी ज़ौजा उम्मे हकीम के साथ मक्का मुअज़्ज़मा लौट कर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमते अक्दस में हाज़िर हुए। हुज़ूर ने उन्हें मर्हबा कहा। इक्रमा ने अर्ज़ किया कि क्या वाकई आप ने मुझे अमान दी है ? फरमाया "हां ! मैं ने अमान दी है।" हज़रत इक्रमा ने फौरन कल्मए शहादत पढा और मुशर्रफ बा इस्लाम हुए।

फिर हज़रत इक्रमा रदियल्लाहो तआला अन्हो ने इन्तेहाई शर्मसारी से अपना सर झुका कर अर्ज़ किया कि **"या रसूलुल्लाह ! हर वह दुश्मनी, गुस्ताखी, बे अदबी, गीबत और बुराई आप के साथ जो हो सक्ती थी मैं ने की है। अब दुआ फरमाअें कि हक्क तआला मुझे मुआफ फरमाए और मुझे बख्श दे।** हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने दस्ते अक्दस उठा कर दुआ फरमाई और जो कुछ हज़रत इक्रमा ने किया था उस की मुआफी व बख्शिश खुदाए तआला से मांगी। हज़रत इक्रमा रदियल्लाहो तआला अन्हो महवे हैरत थे। जिस ज़ाते गिरामी को सताने में कोई दकीका फरो गुज़ाश्त न किया और राह में कांटे बिछाने में हद दर्जा कोशिश की थी और जिस की सज़ा गर्दन ज़नी के सिवा और कुछ नहीं हो सक्ती। लैकिन आफरीं ! सद आफरीं ! इस ज़ाते करीमा के अख्लाके जमीला पर कि इन्तेकाम लेना तो दर किनार बल्कि दुआए मगफेरत से नवाज़ रहे हैं। हां हां ! यह वही हैं जो अफ्वो करम में यक्ताए ज़माना हैं। जूदो सखा में बे मिस्ल व बे मिसाल हैं। उन की गुलामी सनद है हयाते जावेदानी की। उन के कदमों पर मिट जाने में दाइमी बका है। अब उन के कदमों से ही लिपटे रहने में फलाह व भलाई है। उन के मुकद्दस इश्क में अपने आप को जला कर राख कर देने से माज़ी के गुनाह जल कर राख हो जाअेंगे। अब उन से कभी भी दूर न होना चाहिये :

शम्ए तय्यबह से मैं परवाना रहूं कब तक दूर
हां जला दे शररे आतिशे पिन्हां हम को

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत इक्रमा रदियल्लाहो तआला अन्हो के दिल में जज़्बात का समन्दर उमड पडा और अपने वल्वल–ए इश्क का बार गाह रिसालत में इन अल्फाज़ में इज़हार फरमाया कि या रसूलुल्लाह ! ज़मान–ए–जाहिलियत में हक्क की मुखालेफत में जितना माल खर्च किया है, मेरी तमन्ना है कि उस से ज़ियादह अब राहे हक्क में सर्फ करूं। जितनी जंगें खुदा के महबूब व मक्बूल बन्दों से लडी हैं, उस से दूगनी जंग अब दुश्मनाने खुदा से लडूं। इस के बा'द हज़रत इक्रमा ने कुफ्फार व मुश्रेकीन के साथ अपने अह्द व पैमान, दोस्ती और कराबत के तमाम रिश्ते तोड दिये और प्यारे आका व महबूब मौला की गुलामी की ज़न्जीरों में अपने आप को जकड दिया :

देव के बन्दों से हम को क्या गर्ज़
हम हैं अब्दे मुस्तफा फिर तुझ को क्या

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत इक्रमा रदियल्लाहो तआला अन्हो अपनी ज़िन्दगी की आखरी सांस तक दीने इस्लाम की खिदमत में हमा तन मशगूल व मस्रूफ रहे और कुफ्फार व मुश्रेकीन से हर महाज़ पर लडते रहे। मसलन :

- नबुव्वत का झूठा दा'वा करने वाला अस्वद उन्सी ने सनआ के बादशाह शहर बिन बाज़ान को कत्ल कर के अह्ले सनआ पर अपना गल्बा और तसल्लुत काइम किया, तो उस की सरकोबी के लिये हज़रत इक्रमा को इस्लामी लश्कर का अमीर बना कर भेजा गया था।
- इस्लाम की बुन्यादें मुस्तहकम करने के लिये आप इस्लामी लश्कर के हमराह मुल्के शाम गए थे। और दमिश्क, जोसिया, रुस्तन, कन्सरीन, बा'ल्बक और हुमुस की जंग में रूमियों से लडे और दादे शुजाअत दी।
- हुमुस के किल्ले की जंग में लडते हुए आप ने जामे शहादत नौश फरमाया। (रदियल्लाहो तआला अन्हो)

(4) हज़रत अम्र बिन अल–आस बिन वाइल कर्शी सहमी फातेहे मिस्र

हज़रत अम्र बिन अल–आस अरब के दानिशवरों और रूउसा में से थे। वह साहिबे फहम व फरासत और मुद्ब्बिर व बा सलाहियत शख्स थे। बहुत ही बहादुर और शुजाअ, फन्ने जंग और लडाई के मुआमलात में वह अपनी मिसाल आप थे। 8, सन हिजरी तक मुश्रेकीन के गिरोह में रह कर इस्लाम के खिलाफ मुतहर्रिक व सरगर्म रहे और मुसलमानों से लडते रहे।

- रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की दा'वते तौहीद पर लब्बैक कहने वाले मोमेनीन को कुफ्फारे मक्का ने शदीद तकालीफ देनी शुरू कीं तो ए'लाने नबुव्वत के पांचवें साल (613, सन ईस्वी) में कुछ मुसलमानों ने मक्का से हब्शा हिज्रत की थी। हब्शा से मुसलमानों को जेला वतन कराने और मुसलमानों के खिलाफ शाहे हब्शा नज्जाशी के कान भरने, मक्का से मुश्रिकों का एक वफ्द हज़रत अम्र बिन अल–आस की कयादत में हब्शा गया था।
- 5, सन हिजरी में दस हज़ार कुफ्फार का लश्कर मदीना पर हम्ला करने आ पहुंचा और गज़्वए खन्दक (अहज़ाब) वुकूअ में आया। इस जंग में हज़रत अम्र बिन अल–आस कुफ्फार के लश्कर के अह्म रुक्न थे।

लैकिन हज़रत अम्र बिन अल–आस की तक्दीर में इस्लाम और हुज़ूरे अकरम की अज़ीम खिदमत करने की सआदत मक्तूब थी। 8, सन हिजरी में वह हब्शा में थे। हब्शा के बादशाह नज्जाशी के साथ उन के तअल्लुकात और बेहतर मरासिम थे। बल्कि शाही दरबार तक उन की रसाई थी। इत्तिफाकन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का मुबारक खत ले कर हज़रत अम्र बिन जुमरी रदियल्लाहो तआला अन्हो ब–हैसियते कासिद, नज्जाशी के पास आए। जब हज़रत अम्र बिन अल–आस को इस की इत्तेला हूई तो उन्हों ने नज्जाशी बादशाह से कहा कि अम्र बिन उमय्या जुमरी को मेरे हवाले कर दो ताकि मैं इन्हें कत्ल कर के कुरैश के सामने सुर्ख–रू बनूं। शाहे हब्शा नज्जाशी हज़रत अम्र बिन अल–आस की यह फरमाइश सुन कर तौबा करने के अन्दाज़ में अपने रुख्सारों को थपथपाया और कहा कि :

"मैं क्यूं कर उस मुकद्दस हस्ती के कासिद को तुम्हारे हवाला करूं जिस हस्ती की खिदमत में नामूसे अक्बर (हज़रत जिब्रईल का लकब) हाज़िर होते हैं और वह हस्ती खुदा का रसूले बर-हक़ है।"

इस के बा'द शाह नज्जाशी ने हज़रत अम्र बिन अल-आस को फहमाइश करते हुए फरमाया कि :

"ऐ अम्र ! मेरी बात गौर से सुन ! और हुज़ूरे अक्दस की पैरवी इख्तेयार कर।"

शाहे हब्शा नज्जाशी की नसीहत ने हज़रत अम्र बिन अल-आस के दिल की दुनिया पलट दी। ईमान उन के दिल में नसब हो गया और मदीना तय्यबह की तरफ चल दिये। जब मौज़-ए "हुद्दा" नामी मकाम पर पहुंचे, तो वहां उन की मुलाकात हज़रत खालिद बिन वलीद से हूई, जो ईमान लाने की निय्यत से मक्का से मदीना जा रहे थे। दोनों में मुलाकात हूई, तबादला ख्याल हुवा तो राज़ खुला कि दोनों एक ही इरादे से निकले हैं। चुनांचे दोनों हज़रात एक साथ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और कल्म-ए शहादत पढ कर ईमान की ला-ज़वाल दौलत हासिल की। पहले हज़रत खालिद ने कल्मए तौहीद का इक्रार किया, उस के बा'द हज़रत अम्र बिन अल-आस हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सामने हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि :

"या रसूलुल्लाह ! अपना दस्ते अक्दस बढाइए ताकि मैं बैअत करूं।"

हज़रत अम्र बिन अल-आस की गुज़ारिश पर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने अपना दस्ते मुबारक बढाया लैकिन अम्र बिन अल-आस ने अपना हाथ खींच लिया। हुज़ूर ने फरमाया : " ऐ अम्र ! क्या बात है ? हाथ क्यूं खींच लिया ?

अर्ज़ किया : मेरी एक शर्त है।

फरमाया : क्या शर्त है ?

अर्ज़ किया : शर्त यह है कि मेरे गुनाह बख्श दिये जाअें।

फरमाया : ऐ अम्र ! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि ईमान पिछले तमाम गुनाहों को मुआफ कर देता है। और दारुल कुफ्र से हिज्रत कर के दारुस्सलाम आना और हज्ज करना यह दोनों अमल ऐसे हैं कि हर एक साबिका तमाम गुनाहों को नापैद और महव कर देता है।

(हवाला : मआरिजुन्नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफहा : 449 ता 452)

अल-गर्ज़ ! 8, सन हिजरी में फतहे मक्का से छ माह कब्ल हज़रत अम्र बिन अल-आस मुशर्रफ ब ईमान हुए। उस वक्त से ले कर ता-दमे मर्ग उन्हों ने इस्लाम की अज़ीम खिदमत सर अन्जाम दीं। मसलन :

- जंगे ज़ातुस्सलासिल 8, सन हिजरी में उन को हुज़ूरे अक्दस ने अमीरे लश्कर मुकर्रर फरमाया।
- हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने नौ हज़ार (९,०००) के लश्कर पर इन्हें सरदार बना कर फलस्तीन भेजा और फलस्तीन उन के हाथों फतह हुवा।
- मुल्के शाम की तमाम जंगों में आप हाज़िर रहे और मुल्के शाम पर पर्चमे इस्लाम लहराने में आप ने अहम किरदार अदा किया।
- खिलाफते फारूकी में आप ने मिस्र फतह किया।
- खिलाफते उस्मानी में आप ने इसकन्दरिया फतह किया।

इश्के रसूल के कैफ में सरशार हो कर हज़रत अम्र बिन अल-आस मुल्के शाम व मिस्र के ताकतवर और जंगजू हाकिमों से बडी दिलैरी से टकराए। कलील ता'दाद के इस्लामी लश्कर से लाखों की ता'दाद पर मुश्तमिल रूमी लश्करों को खाक व खून में मिला दिया।

(5) वहशी बिन हर्ब हब्शी गुलाम

वहशी नाम का एक हब्शी, जुबैर बिन मुत्इम बिन मुत्इम बिन अदी का गुलाम था। जंगे बद्र में जुबैर बिन मुत्इम बिन अदी के चचा तईमा बिन अदी को सय्यदुश शौहदा हज़रत अमीर हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहो तआला अन्हो ने कत्ल किया था। इलावा अज़ीं अबू सुफियान बिन हर्ब की बीवी हिन्दा के बाप उत्बा बिन रबीआ को भी हज़रत हम्ज़ा ने कत्ल फरमाया था। जब मक्का मुअज़्ज़मा से लश्करे कुरैश मैदाने ओहद की तरफ रवाना हुवा, तो जुबैर बिन मुत्इम बिन अदी ने अपने गुलाम वहशी को लश्करे कुरैश के साथ यह कह कर भेजा कि अगर तू हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रदियल्लाहो तआला अन्हो) को कत्ल कर दे तो तेरे लिये आज़ादी है। चुनांचे वहशी गुलाम लश्करे कुफ्फार के हमराह मारक-ए मैदान में हाज़िर हुवा।

जब जंग के शो'ले बुलन्द हुए, तो लश्करे कुफ्फार से सेबा बिन अब्दुलउज़्ज़ा खुज़ाई निकला और लडने के लिये मुकाबिल तलब किया। इस्लामी लश्कर से हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब निकले और एक ही गरदावे में सेबा को काट के रख दिया। वहशी उस वक्त एक पत्थर की आड में छुप कर बैठा था। सेबा को कत्ल कर के हज़रत हम्ज़ा इस पत्थर के करीब हुए तो अचानक वहशी को देखा कि वह हम्ला करने का इरादा करता है, लेहाज़ा हज़रत अमीर हम्ज़ा वहशी की तरफ बढे ताकि उस का काम भी तमाम कर दें। लैकिन एक गढे की वजह से उन का पाऊं फिसल गया और ज़मीन पर गिर पडे। इस मौके का फाइदा उठाते हुए वहशी ने हज़रत हम्ज़ा के पेट में ब-कुव्वते तमाम ऐसा नैज़ा मारा कि मसाना से पार हो गया और वह वार मुहलिक साबित हुवा और हज़रत अमीर हम्ज़ा शहीद हो गए।

हज़रत हम्ज़ा रदियल्लाहो तआला अन्हो को शहीद करने के बा'द वहशी गुलाम हिन्दा बिन्ते उत्बा बिन रबीआ (ज़ौजा अबू सुफियान बिन हर्ब) के पास आया। लैकिन हिन्दा बिन्ते उतबा के पास जाते वक्त वहशी ने अपने खन्जर से हज़रत हम्ज़ा के शिकमे अत्हर को चाक कर के आप का जिगर (कलेजा) निकाला और अपने साथ हिन्दा बिन्ते उतबा के पास लाया। वहशी ने आ कर हिन्दा बिन्ते उतबा के सामने उस के बाप का रोज़े बद्र हज़रत हम्ज़ा के हाथ से कत्ल होने का सदमा याद दिलाया और पूछा कि अगर मैं तेरे बाप के कातिल को मार डालूं तो मुझे क्या इन्आम दोगी ? हिन्दा बिन्ते उतबा ने कहा कि इस वक्त मेरे बदन पर जो लिबास और ज़ेवरात हैं वह तेरे हैं। तब वहशी ने हज़रत हम्ज़ा का जिगर देते हुए कहा कि ले ! यह तेरे बाप के कातिल हम्ज़ा का जिगर है। हिन्दा बिन्ते उतबा ने हज़रत हम्ज़ा के जिगर को वहशी से लिया और मुंह में डाल कर चबाया और फिर थूक दिया।

हिन्दा बिन्ते उतबा ने खुश हो कर वहशी को अपने दोनों कपडे, बाज़ूबन्द, पाज़ैब वगैरा ज़ेवारात उतार कर ब-तौर इन्आम दे दिये और वहशी से कहा कि मुझे हम्ज़ा की लाश दिखा दे। मक्का पहोंच कर तुझे सुर्ख सोने की दस अशर्फियां मज़ीद इन्आम के तौर पर दूंगी। वहशी हिन्दा बिन्ते उतबा को हज़रत हम्ज़ा रदियल्लाहो तआला अन्हो की लाश पर लाया। हिन्दा बिन्ते उतबा ने हज़रत हम्ज़ा की मुकद्दस लाश के साथ ऐसी घिनावनी हरकत की कि तारीख के अवराक भी उस पर अश्के नदामत बहाते हैं। हिन्दा बिन्ते उतबा ने हज़रत हम्ज़ा को मुस्ला किया। या'नी आप के नाक और दोनों कान काट लिये। मज़ीद बरां आप के मज़ाकीर (ज़कर और उन्सय्यैन) भी काट लिये और अपने साथ मक्का ले आई।

(हवाला : - मगाज़ीयुस सादिका, अज़ अल्लामा वाकदी, सफ्हा : 211 ता 213)

वहशी ने हज़रत हम्ज़ा रदियल्लाहो तआला अन्हो को शहीद किया था, लेहाज़ा तमाम सहाबए किराम उस के कत्ल के दरपै थे और उस की टोह और तलाश में थे। लैकिन वह भाग कर ताइफ चला गया और वहीं रहने लगा। जिस ज़माना में ताइफ का वफ्द हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमत में जा रहा था, तो लोगों ने कहा कि तू भी वफ्द के साथ हुज़ूर की बारगाह में चला जा। क्यूं कि हुज़ूरे अक्दस कासिदों और एलचियों को कत्ल नहीं करते लेहाज़ा तू वफ्द में शामिल हो कर पहोंच जा और इक्बाले जुर्म व खता कर के मुआफी तलब कर ले और इस्लाम कबूल कर ले।

वहशी ताइफ के वफ्द के साथ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और आते ही कहने लगा कि "اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً رَّسُوْلُ اللّٰهِ" हुज़ूरे अकरम ने सुना और निगाह उठा कर देखा और पूछा कि क्या तू ही वहशी है ? अर्ज़ किया हां ! मैं ही वहशी हूं। फरमाया बैठ जा और मुझे बता कि मेरे चचा को तू ने किस तरह शहीद किया था ? वहशी ने हज़रत हम्ज़ा रदियल्लाहो तआला अन्हो की शहादत की पूरी कैफियत बयान की। और बा'द में मा'ज़ेरत व मुआफी चाही। हुज़ूर ने मुआफ फरमा दिया और फरमाया तू मेरे सामने न आना और अपना चेहरा मुझे न दिखाना। सिर्फ इस लिये कि मुझे अपने चचा की याद तडपाएगी।

वहशी का जुर्म इत्ना सख्त था कि उस जुर्म की सज़ा सिवाए गर्दन ज़दनी के कुछ नहीं हो सक्ती थी। लैकिन हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाके करीमा ने अफ्वो करम की भीक इनायत फरमाई। खुद वहशी कहते हैं कि इस के बा'द मैं कई मरतबा बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा, लैकिन जब भी हाज़िर होता तो हुज़ूरे अक्दस के सामने न आता बल्कि आप की पुश्त की तरफ बेठता।

हुज़ूरे अक्दस के हुस्ने अख्लाक ने हज़रत हम्ज़ा के कातिल वहशी को यह हकीकत बावर करा दी कि इस्लाम ही एक ऐसा दीन है कि जिस दीन में "اَلْحُبُّ فِی اللّٰہِ وَالْبُغْضُ فِی اللّٰہِ" या'नी अल्लाह ही के लिये दोस्ती और अल्लाह ही के लिये दुश्मनी का दर्स दिया जाता है। और यही इस्लाम की सदाकत है कि अपने ज़ाती मुआमलात के मुकाबले में दीन के मुआमलात को अहमियत व तर्जीह दी जाती है। अपने खान्दानी इन्तेकाम को इक्रारे कल्मा पर फरामोश कर दिया जाता है। अपने जानी दुश्मन और कातिल को भी अल्लाह के लिये मुआफ कर दिया जाता है। लेहाज़ा माज़ी के इर्तिकाबे जराइम का कफ्फारा अदा करने के लिये अब हमा वक्त रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के कदमों पर अपने आप को निसार करने के लिये मुस्तइद रहना चाहिये। चुनांचे उन्हों ने कत्ले हम्ज़ा के फे'ल मज़मूम के मुकाबले में कत्ले कज़्ज़ाब का फे'ल मुस्तहसन अंजाम दे कर अपनी खताए अज़ीम का कफ्फारा अदा करने की कौशिश की।

खिलाफते हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो के ज़माना में नबुव्वत के झूटे दा'वेदार मुसैलमा बिन समामा कज़्ज़ाब के चालीस हज़ार के लश्कर के सामने चौबीस हज़ार का इस्लामी लश्कर हज़रत खालिद बिन वलीद की सरदारी में जंगे यमामा के महाज़ पर गया, तो वहशी भी इस्लामी लश्कर में शामिल थे और उन्हों ने जिस हर्बा से हज़रत हम्ज़ा रदियल्लाहो तआला अन्हो को शहीद किया था उसी हर्बा का वार मुसैलमा कज़्ज़ाब पर किया और उसे जहन्नम रसीद किया। खुद वहशी फरमाते हैं कि "اَنَا قَاتِلُ خَيرِ النَّاسِ فِیْ الْكُفْرِ وَاَنَا قَاتِلُ شَرِّ النَّاسِ فِی الْاِسْلَامِ" या'नी ब हालते कुफ्र मैं ने सब से बेहतर इन्सान को शहीद किया और इस्लाम की हालत में सब से बद-तर आदमी को कत्ल किया। (हवाला :- मदारिजुन नबुव्वत, जिल्द : 2, सफहा : 503)

(6) हिन्द बिन्ते उत्बा बिन रबीआ, ज़ौजाए अबू सुफियान बिन हर्ब

हिन्द बिन्ते उतबा जिस ने सय्येदुश शौहदा हज़रत अमीर हम्ज़ा का कलेजा चबाया और आप को मुस्ला कर के अपनी शकावते कल्बी का मुज़ाहेरा किया था और रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को सख्त दिली अज़ीयतें पहुंचाई। वह हिन्द बिन्ते उतबा बा'द फतहे मक्का जब औरतें हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम से बैअते ईमान करने के लिये हाज़िर हूईं, तो हिन्द बिन्ते उतबा भी अपने चेहरे पर नकाब डाल कर मस्तूरात के गिरोह के साथ आई और मुसलमान हो गई। कल्मए शहादत का इक्रार करने के बा'द उस ने अपने चेहरे से नकाब उठा कर कहा कि मैं हिन्द बिन्ते उतबा हूं। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया कि "जब मुसलमान हो कर आई है तो अच्छा हुवा।"

बस इतनी ही ता'ज़िर ! रसूलुल्लाह के इर्शाद गिरामी में इशारा था कि तेरा गुनाह इत्ना बडा है कि तेरी गर्दन मारना भी इस जुर्म का खूं बहा होना काफी नहीं। लैकिन तू मुसलमान हो कर आई है, यह तेरे हक्क में अच्छा हुवा, कि ईमान के इक्रार ने हमारी तलवार और तेरी गर्दन के दरमियान एक आहनी सिपर काइम कर दी, तेरा गुनाह हरगिज़ मुआफ करने के काबिल न था, लैकिन तेरा मुसलमान होना तेरी जां बख्शी की ज़मानत हो गया। लेहाज़ा तेरे दुखूले इस्लाम के बा'द अब हमारे हाथ बंध गए हैं। अपने अम्मे मोहतरम के किसास में

अब सिवाए हाथ ठहराने के कुछ नहीं हो सक्ता। अच्छा हुवा कि तू मुसलमान हो कर हाज़िर हूई। हुज़ूरे अकरम रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाक की बुलन्दी और शराफत की आ'ला मिसाल इस से बढ कर और क्या हो सक्ती है ? कि आप ने हज़रत हम्ज़ा रदियल्लाहो तआला अन्हो की ना'श के साथ ना-ज़ेबा हरकत करने वाली हिन्द बिन्ते उतबा को एक लफ्ज़ तक नहीं कहा। बल्कि यह फरमाया कि अच्छा हुवा कि तू मुसलमान हो कर आई।

हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाके करीमा ने हिन्द बिन्ते उतबा को इत्ना मुतअस्सिर किया कि जब वह अपने घर लौटी तो घर में जितने बुत थे सब को तोड डाला और कहने लगी कि इन्हीं बूतों के गुरूर और फरेब के बाइस अब तक हम गुमराही में मुब्तला थे। बा'दहु उन्हों ने अपनी ज़िन्दगी की आखरी सांस तक सिद्क दिल से खिदमते इस्लाम कीं और मुहब्बते रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम पर काइम व दाइम रहीं। इस्लाम ने उन को वह हौसला और जज़्बा वदीअत किया कि खिलाफते फारूकी में वह अपने शौहर हज़रत अबू सुफियान और अपने बेटे हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान के हमराह मुल्के शाम के जंगी महाज़ पर गईं और ख्वातीने इस्लाम के साथ रह कर रूमी लश्कर के सूरमाओं के सामने बहादुरी से लड कर उन के दांत खट्टे कर दिये।

जंगे यर्मूक में मुसलमानों के सिर्फ आधे लाख फौजी मुजाहिद के मुकाबले रूमियों का तक्रीबन ग्यारह लाख अफ्राद पर मुश्तमिल लश्कर हम्ला आवर हुवा था और इस्लामी लश्कर पर शिद्दत और तंगी का वक्त था। तब हज़रत हिन्दा बिन्ते उतबा ने औरतों की जमाअत के साथ रह कर जो शुजाअत दिखाई उसे देख कर इस्लामी लश्कर के मुजाहेदीन में एक नया जौश और वल्वला पैदा हुवा। तफ्सीली मा'लूमात के लिये अगले सफ्हात में जंगे यर्मूक का मुतालआ फरमाऐं। यहां ज़ैल में सिर्फ एक कारनामा पेश है।

"वाकदी रहमतुल्लाह अलैह ने बयान किया है कि देखा मैं ने हिन्दा बिन्ते उतबा को कि उन के हाथ में हिन्दी तलवार थी और वह शम्शीर ज़नी करती थीं मुश्रेकीन में और पुकार कर कहती थीं अपनी बुलन्द आवाज़ से कि ऐ गिरोह अरब के ! काट डालो तुम गब्बरों बे खत्ना बुरीद को साथ तलवारों के।"

(हवाला :- फुतूहुश्शाम, अज़ अल्लामा वाकदी, उर्दू तर्जुमा, सफहा : 262)

(7) अदी बिन हातिम बिन अब्दुल्लाह बिन स'अद ताई

मुल्के अरब के मश्हूर सखी हातिम ताई के नाम से शायद ही कोई ना-आश्ना होगा। उसी हातिम ताई के बेटे हज़रत अदी का एक वाकेआ भी बडा अजीब व गरीब है। हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाके करीमा और अफ्वो करम ने अदी बिन हातिम को इस्लाम का गरवीदा और इश्के रसूल में दीवाना बना दिया था। 9, सन हिजरी तक वह इस्लाम लाने की सआदत से महरूम थे।

अदी बिन हातिम भी अपने वालिद हातिम ताई की तरह सखी और जव्वाद थे। वह कबीला "**बनी तय**" के सरदार थे। वह अपनी कौम में अज़ीज़, शरीफ, फाज़िल, खतीब और हाज़िर जवाब थे। कबीला बनी तय की बस्ती में एक बडा बुत खाना था। 9, सन हिजरी में हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने मौलाए काएनात हज़रत अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहो तआला वज्हहु को कबीला बनी तय की इस्लाह के लिये भेजा। तो कबीला बनी तय के लोग मुज़ाहिम हुए। लैकिन हज़रत अली रदियल्लाहो तआला अन्हो ने मुकाबला कर के उस बुत खाने के बेख व बुन उखाड फेंका। कबीला बनी तय का सरदार अदी बिन हातिम भाग कर मुल्के शाम चला गया। हज़रत अली कबीला बनी तय से कुछ लोगों को कैद कर के मदीना मुनव्वरा लाए। उन कैदियों में अदी बिन हातिम की बहन सकाना बिन्ते हातिम ताई भी थी। तमाम कैदियों को मदीना मुनव्वरा में एक मकान में मुकय्यद रखा गया।

एक दिन हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम उस मकान के करीब से गुज़रे, जहां आले हातिम ताई को कैद रखा गया था। हातिम ताई की बेटी सकाना निहायत खुबसूरत, हसीन व जमील और फसीहुल लिसान औरत थी। उस ने हुज़ूर को असीरों के मकान के करीब आते देखा तो खडी हो गई और कहने लगी कि "या रसूलल्लाह! मेरे बाप का इन्तेकाल हो गया है और मेरा भाई गाइब है, मुझ पर एहसान फरमाइये, हक्क-तआला आप पर फज़्ल व करम फरमाएगा"। हुज़ूर ने फरमाया कि तेरा फिद्या कौन अदा करेगा? उस ने अर्ज़ किया कि मेरा भाई अदी बिन हातिम। फरमाया कि "**वह तो खुदा और रसूले खुदा से भागा हुवा है।**" यह फरमा कर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम तशरीफ ले गए।

दूसरे दिन भी ऐसा ही हुवा, लैकिन तीसरे दिन हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने तवज्जोह फरमाई और सकाना को सवारी और सफर खर्च अता फरमा कर बा-इज़्ज़त रुखसत कर दिया। सकाना अपने कबीला में गई। फिर

मर्दाने अरब..... हिस्सा अव्वल

वहां से वह मुल्के शाम गई और अपने भाई से मिली और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाके करीमा और एहसान व इनायत का ज़िक्र किया और यह भी कहा कि तुम्हारे मुतअल्लिक हुज़ूरे अक्दस ने ऐसा फरमाया है कि "वह खुदा और रसूले खुदा से भागा हुवा है।" अपनी बहन सकाना की बात का अदी बिन हातिम पर गहरा असर हुवा और वह कहने लगा कि भला खुदा और रसूल से कहां भाग सक्ता हूं। फिर वह "**बनी तय**" के वफ्द के साथ हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम कबूल किया।

हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाके करीमा ने हज़रत अदी बिन हातिम को शम्ए नबुव्वत का परवाना बना दिया। माज़ी के जुर्म व इस्यां की पादाश में उन्हों ने अपने आप को दीने इस्लाम के लिये वक्फ कर दिया और इस्लाम की नश्रो-इशाअत में नुमाया किरदार अदा किया।

- हज़रत अदी बिन हातिम रदियल्लाहो अन्हो ने मुल्के शाम जाने वाले इस्लामी लश्कर में शमूलियत की और मुल्के शाम की तमाम जंगों में रूमियों से दिलेराना किताल फरमाया।
- जंगे यर्मूक के पहले दिन रूमी लश्कर की जानिब से जबला बिन ऐहम गस्सानी साठ हज़ार (६०,०००) अरब मुतनस्सिरा के साथ मैदान में आया था। उन साठ हज़ार के रूमी लश्कर के सिपाहियों के सामने लडने के लिये हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर से सिर्फ साठ (६०) आदमी ले कर मा'रकए जंग में गए थे। या'नी एक हज़ार रूमी सिपाही के मुकाबले में सिर्फ एक मुजाहिदे इस्लाम था। हज़रत खालिद बिन वलीद ने लश्करे इस्लाम से जिन साठ (६०) दिलैर और शुजाअ मुजाहिदों का इन्तेखाब किया था उन में हज़रत अदी बिन हातिम ताई भी थे। ता'दाद के इतने अज़ीम फर्क से लडी गई जंग की नज़ीर तारीख में कहीं नहीं मिलेगी। उन कफन बरदोश मुजाहेदीने इस्लाम ने रूमियों के कदम उखाड कर रख दिये। पहले दिन की जंग का नतीजा देख कर अक्ल हैरान रह जाएगी कि इस्लामी लश्कर से सिर्फ दस (१०) मुजाहिद शहीद हुए थे जब कि रूमी लश्कर के पांच हज़ार सिपाही कत्ल हुए। इस जंग का तफ्सीली मुतालआ करने के लिये कारेईने किराम इस किताब की अवराक गरदानी की ज़हमत गवारा फरमाऐं।

(8) हब्बार बिन अल-अस्वद का जुर्मे अज़ीम मुआफ

हब्बार बिन अस्वद ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को बहुत ईज़ाऐं और तक्लीफें पहुंचाई थीं। हिज्रत के बा'द हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने अपनी साहिबज़ादी ज़ैनब को मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना तय्यबह लाने के लिये अपने गुलाम हज़रत अबू राफेअ और सलमा बिन अस्लम को भेजा। हज़रत ज़ैनब रदियल्लाहो तआला अन्हा मक्का मुअज़्ज़मा में अबूल आस बिन अर-रबीअ की ज़ौजियत में थीं। जब हज़रत ज़ैनब को उन के शौहर हज़रत अबूल आस ने ऊंट पर महमिल में बिठा कर मदीना तय्यबह रवाना किया, तो हब्बार बिन अल-अस्वद को पता चला कि हुज़ूरे अक्दस, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की साहिबज़ादी भी हिज्रत कर के जा रही हैं, तो वह कौमे कुरैश के चंद अव्बाश लोगों को साथ ले कर रास्ता रोक कर खडा हो गया और एक नैज़ा हज़रत सय्येदा ज़ैनब रदियल्लाहो तआला अन्हा को मारा। आप ऊंट से एक बडे पत्थर पर गिर पडीं। हज़रत ज़ैनब हामेला थीं। नैज़ा लगने और पत्थर पर गिरने की वजह से उन का हमल साकित हो गया। वह बीमार हो गईं और इसी बीमारी में उन का इन्तेकाल हो गया।

हब्बार बिन अल-अस्वद की इस शनीअ हरकत पर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को सख्त नाराज़गी और जलाल था। यहां तक कि आप ने हब्बार बिन अल-अस्वद को कत्ल कर देने का हुक्म फरमाया। फतहे मक्का के अय्याम में उस को बहुत तलाश किया गया मगर वह हाथ न आया। जब हुज़ूरे अक्दस मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना तय्यबह वापस तशरीफ ले आए, तो एक दिन अचानक वह मजलिस शरीफ में नमूदार हुवा और ज़ोर से कहने लगा कि या रसूलुल्लाह ! इस्लाम का इक्रार करते हुए हाज़िर हुवा हूं। मैं आप का मुजरिम हूं और अपने गुनाहों पर शर्मसार हूं। रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने अपना सरे मुबारक झुका लिया और हब्बार बिन अल-अस्वद की मआज़रत ख्वाही की वजह से उस पर इताब करने के बजाए उस का इस्लाम कबूल करते हुए फरमाया कि :

''ऐ हब्बार ! मैं ने तुझे मुआफ किया और इस्लाम तमाम जराइम को खत्म कर देता है और गुज़िश्ता गुनाहों की बुन्यादों को फना कर देता है।''

हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाके करीमा की रिफ्अत का अंदाज़ा कीजिये कि जिस शख्स ने आप की लख्ते जिगर व नूरे नज़र के साथ ना-काबिले तलाफी जुर्म किया था और जिस का खून बहाना मुबाह फरमा दिया था, उस शख्स को सिर्फ कबूले इस्लाम की वजह से मुआफ फरमा दिया और दुनिया को यह बावर करा दिया कि इस्लाम तलवार से नहीं बल्कि अख्लाक से फैला है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को उम्र भर तक्लीफें देने वाले ने भी जब कभी आप के हुस्ने अख्लाक का तजरबा किया तो उस को यही कहना पडा कि :

कर के तुम्हारे गुनाह, मांगें तुम ही से पनाह
तुम कहो दामन में आ, तुम पे करोडों दुरूद

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

❀ इसी तरह अब्दुल्लाह बिन अज़्ज़ुब्अरी अपनी शाइरी के ज़रीए हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की हिज्जू करता और मुशरिकों को मुसलमानों के खिलाफ भडकाता था। उस के साथ हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हुस्ने अख्लाक का सुलूक फरमा कर उस के दिल की अदावत को मुहब्बत व इताअत से बदल कर आलमे दुनिया को यह दर्स दिया कि **''अख्लाक से दिलों को फतह किया जाता है, तलवार से नहीं।''** हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अख्लाके करीमाना के ज़रीए फैला हुवा दीन लोगों के दिलों में ऐसा नक्श हो गया कि किसी के मिटाने से मिटना ना-मुम्किन और मुहाल हो गया। बल्कि मिटाने वाले खुद मिट कर रह गए। इस्लाम की हक्कानियत और सदाकत का सिक्का रवां हो गया। यहां तक कि इस्लाम के बडे बडे दुश्मनों के खान्दान और नस्ल से ही ऐसे मुजाहिद व मुबल्लिग उठ खडे हुए कि उन्हों ने इस्लाम की शौकत को चार चान्द लगाने के साथ साथ इश्के रसूल के बे मिसाल नमूना बने। चंद अस्माए गिरामी ज़ैल में पैश किये जाते हैं,जिन के आबा व अज्दाद ने इस्लाम दुश्मनी में कोई कसर उठा न रखी थी। लैकिन उन हज़रात ने खिदमते इस्लाम में अपना तन मन और धन सब कुरबान कर दिया और मौका' आने पर अपने खून के रिश्ता दारों को भी तहे तैग करने में किसी किस्म की झिझक मेहसूस नहीं की।

(1) दुश्मने रसूल अबू जहल बिन हिशाम के बेटे हज़रत इक्रमा बिन अबी जहल

(2) गुस्ताखे रसूल वलीद बिन मुगीरा के बेटे हज़रत खालिद बिन वलीद

(3) रईसुल मुनाफेकीन अब्दुल्लाह बिन सलूल के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह

(4) बदख्वाहे नबी आस बिन वाइल सहमी के बेटे हज़रत हज़रत अम्र बिन अल-आस

(5) दुश्मने इस्लाम अब्दुल्लाह बिन जर्राह के बेटे हज़रत अबू उबैदा बिन अब्दुल्लाह बिन जर्राह

(6) दुश्मन रसूले उमय्या बिन खल्फ के बेटे हज़रत सफ्वान बिन उमय्या

(7) मुन्किरे रिसालत उत्बा बिन रबीआ की बेटी हज़रत हिन्द बिन्ते उतबा (ज़ौजा अबू सुफियान)

इन हज़रात के इलावा बे-शुमार उश्शाके रसूल ने दीन की खातिर अपनी जानी और माली कुर्बानियां पैश कर के अपने खूने जिगर से गुलशने इस्लाम की आबयारी की और इश्के रसूल के ऐसे फूल खिलाए कि जिस की खुश्बू और महक से आलम मुअत्तर हो गया। सहाबए किराम की जां निसारी ने दुनिया को यह पैगाम दिया कि **''जब तक मुसलमान के दिल में अपने महबूब आका सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की अज़्मत व मुहब्बत जल्वागर है, दुनिया की कोई भी सल्तनत और ताकत उन पर हुकूमत नहीं कर सक्ती।''** इश्के रसूल वह ताकत है कि आशिके रसूल जिस्मानी ए'तबार से नहीफ व नातवां होने के बा-वुजूद अगर पहाड से भी टकरा जाएगा तो उस को पाश पाश कर देगा। उमडते हुए समन्दर की तुग्यानी और तूफानी थपेडों के दरमियान से भी वह कश्तीए इश्क पर सफीन-ए-नूह की मानिन्द सहीह व सालिम किनारे पर पहोंच जाएगा। रब्बुल आलमीन के अकरम व आ'ज़म महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की ज़ाते बा-बरकत पर उस का ए'तेकाद व यकीन इत्ना पुख्ता और रासिख होता है कि मसाइब व आलाम के नाजुक लम्हात में वह यही कहता है :

न क्यूं कर कहूं या हबीबी अगिस्नी
इसी नाम से हर मुसीबत टली है

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

इस्लाम के खिलाफ कुफ्फार व यहूद की साज़िश

मदीना तय्यबह में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की जल्वा फरमाई को सिर्फ पांच या छ साल का ही अर्सा गुज़रा होगा कि इस्लाम की बुन्यादें मज़बूत हो गईं। 6, सन हिजरी तक तक्रीबन पचास के करीब गज़वात व सराया वुकूअ में आ चुके थे और हर मा'रके में इस्लाम की फतहे मुबीन हूई। अपने बाज़ूओं की ताकत व कुव्वत पर इतराने वाले दुश्मनाने इस्लाम ने तलवार के ज़रीए इस्लाम का पर्चम नीचा करने की सई में इस्लाम पर हाथ उठाया, लैकिन हर महाज़ पर इस्लाम का पर्चम ऊंचा रहा। इस्लाम का गल्बा और दायर-ए तसल्लुत रोज़ ब-रोज़ बढता रहा। लोग गिरोह दर गिरोह और जूक दर जूक दाखिले इस्लाम हो रहे थे। मुल्के अरब के कुफ्फार, मुश्रेकीन और यहूद मुत्तहेदा महाज़ की तश्कील दे कर भी इस्लाम का मुकाबला न कर सके। मदीना मुनव्वरा इस्लाम के मर्कज़ की हैसियत से पूरे जज़ीर-ए अरब में नुमाइन्दगी करने लगा। मुल्के अरब में हर जगह इस्लाम और रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का बोल बाला हो गया। यहूद और मुश्रेकीन के हौसले टूट गए। इस्लाम का मुकाबला करना अब हमारे बस की बात नहीं। इस एहसास ने उन को मफ्लूज कर दिया। लैकिन इस्लाम की बढती हूई शान व शौकत किसी उन्वान गवारा न थी। अदावत व हसद और इन्तेकाम की आग में उन के सीने झुलस रहे थे। पस अब उन्हों ने एक नई चाल यह चली कि मुल्के शाम में ईसाइयों की मुस्तहकम हुकूमत काइम हो जाए। मुल्के शाम का इलाका भी ज़रखैज़ और तिजारतो हिर्फत का मर्कज़ तसव्वुर किया जाता था। मेवा जात, फल व दीगर अश्या-ए खुरद व नौश में दुनिया की अह्म मंडियों में शुमार किया जाता था। लोग हर ए'तबार से आसूदह खातिर और खुश हाल थे। सैंक्डों की ता'दाद में छोटी छोटी रियासतें थीं और हर रियासत का वाली (बादशाह) अलग था और उन तमाम बादशाहों का शहनशाह हिरक्ल बादशाह था। मुल्के शाम में हिरक्ल बादशाह की फौजी ताकत की ज़बरदस्त धाक व शोहरत थी। इस के रोअब व दबदबा का यह आलम था कि मुल्के शाम के कुर्ब व ज्वार के ममालिक इस पर लश्कर कशी का तसव्वुर करने से भी कांपते थे। क्यूं कि हिरक्ल बादशाह के लश्कर ने फारस और तुर्क की अज़ीम फौजी ताकत के पुरज़े बिखेर दिये थे। अरब के मुश्रेकीन और शाम के यहूद में तिजारती और सन्अती तअल्लुकात बडे हमवार थे। क्यूं कि मुल्के अरब और मुल्के शाम की सरहदें एक दूसरे से मिलती हैं इलावा अज़ीं मुल्के अरब के अक्सर मकामात में मुल्के शाम से तिजारती

सामान कसीर ता'दाद में बर आमद होता था। दोनों ममालिक के तुज्जार गाहे गाहे तिजारती सफर की वजह से एक दूसरे से खासे मुतआरफ थे। मुल्के अरब में तिजारत की बाग डोर और मंडी कुफ्फार व यहूद के ज़ेरे तसल्लुत होने की वजह से मुल्के शाम में उन की और उन के यहां रूमियों की आमदो रफ्त ज़ियादह थी। मुल्के अरब के कुफ्फार व यहूद की नई साज़िश यह थी कि इस्लाम के खिलाफ ईसाइयों को बर-अंगेख्ता करना शुरू किया। हिरक्ल बादशाह को इस्लाम की बढती हूई ताकत का खौफ दिलाया और यहां तक डराया के अगर मुसलमानों के बढते हुए कदमों को अभी से न रोका गया और उन की दीनी दा'वत का सद्दे बाब और तब्लीगी सरगर्मियों का इन्सिदाद न हुवा तो अन्करीब वह वक्त आने वाला है कि मुसलमान जज़ीरतुल अरब की सरहदें पार कर के मुल्के शाम को ताख्त व ताराज करने आ पहुंचेंगे और मुल्के शाम पर काबिज़ हो जाएंगे। तुम को महकूम बना कर रखेंगे और तुम पर हुक्मरानी करेंगे। गर्ज़ कि ईसाई सल्तनत को ज़ेहनी तौर पर मुसलमानों की अदावत पर तरह तरह से उक्सा दिया।

ईसाइयों के साथ जंग का आगाज़

मुल्के अरब के कुफ्फार और यहूद ने मुल्के शाम के साथ अपने तिजारती रवाबित का नाजाइज़ फाइदा उठाते हुए मुल्के शाम के शहर बसरा के गवर्नर तक रसाई हासिल कर ली और बसरा के गवर्नर के कान भरने शुरू कर दिये। उन की हमदर्दी और खैर ख्वाही का लुबादा ओढ कर पसे पर्दा इस्लाम दुश्मन ताकतों को अपनी तह्रीक में शामिल करना था। इस दौरान 7, सन हिजरी में गज़्वए खैबर का मा'रका हुवा। खैबर का किल्ला यहूदियों का मर्कज़ था। खैबर आठ (८) किलओं के मज्मूए का नाम है। खैबर एक बडे शहर का नाम है। इस के आठ (८) किल्ले थे। (1) कैसा (2) नाओम (3) स'अब (4) शक (5) गुमूस (6) बतात (7) सतीह और (8) सालिम।

अमीरुल मोमेनीन सय्यिदोना मौला अली रदियल्लाहो तआला अन्हो की शुजाअत व कुव्वत का वाकेआ मश्हूर है कि आप ने किल्ले का दरवाज़ा उखाड कर उस की ढाल बना कर जंग लडे थे। वह आहनी दरवाज़ा किल्ल-ए गुमूस का था। मुल्के अरब में यहूदियों की आबादी खैबर में ब-कस्रत आबाद थी। लैकिन 7, सन हिजरी में खैबर की फतह ने मुल्के अरब के यहूदियों की कमर तोड दी। लेहाज़ा अब उन की तमाम तवज्जोहात मुल्के शाम की ईसाई सल्तनत को इस्लाम के खिलाफ वरगलाने की तरफ मर्कूज़ हूईं। मुल्के अरब के यहूद

की मकामे खैबर में शिकस्ते फाश ने कुफ्फार और मुश्रेकीन के भी हौसले पस्त कर दिये। लेहाज़ा वह भी मुल्के शाम की ईसाई सल्तनत को अपनी उम्मीद गाह की हैसियत से देखने लगे। मुल्के अरब के कुफ्फार व यहूद हर मुम्किन कोशिश करते थे कि किसी बहाने मुल्के शाम की ईसाई सल्तनत को इस्लाम के खिलाफ भडका दिया जाए। ताकि वह दूर खडे तमाशा देखते रहें और अपनी शिकस्तों का इन्तेकाम लेने का इत्मीनान हासिल करें। सूए इत्तेफाक उन की दिली ख्वाहिश पूरी हो गई। कुछ ऐसे हालात रूनुमा हुए कि रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की ज़ाहेरी हयाते तय्यबह में मुल्के शाम की ईसाई सल्तनत और इस्लाम के दरमियान जंग का दरवाज़ा खुल गया। 8, सन हिजरी में जंगे मौता हूई और 9, सन हिजरी में गज़्वए तबूक वुकूअ में आया।

हिरक्ल को अपनी सल्तनत के ज़वाल का यकीन

मुल्के शाम की हुकूमत को **"सल्तनते रूम"** कहा जाता था। वहां के बादशाह को **"कैसरे रुम"** के लकब से पुकारा जाता था। उस वक्त जो कैसरे रुम था उस का नाम **"हिरक्ल"** था। हिरक्ल वह सब से पहला बादशाह है जिस ने सिक्का और अशर्फियां बनाईं और दीनारों पर हुकूमत का ठप्पा लगाया। हिरक्ल बादशाह की हुकूमत का दारुस-सल्तनत (राजधानी) मुल्के शाम का मज़बूत किल्ले वाला शहर हुमुस था। बा'द में शहरे इन्ताकिया को दारुस-सल्तनत बनाया गया। हालां कि हिरक्ल बादशाह मुल्के शाम के शहर "कस्तुनतुनिया" का बाशिन्दा था। उस का आबाई मकान वहीं था।

जब मुल्के फारस के साथ रूम की जंग हूई तो रूम (शाम) के कुछ इलाके उन के हाथ से निकल कर फारसियों (आतिश परस्तों) के कब्ज़े में चले गए। लेहाज़ा हिरक्ल बादशाह ने मिन्नत मानी थी कि अगर वह मक्बूज़ा इलाका वापस मिल जाओं तो मैं कस्तुनतुनिया से बरहेना पा बैतुल मुकद्दस हाज़री दूंगा और मस्जिदे अक्सामें नमाज़ पढूंगा और इबादत करूंगा। चुनांचे जब रूमी लश्कर ने फारसियों को शिकस्त दी और मक्बूज़ा इलाके रूमियों के कब्ज़े में वापस आए तो हिरक्ल बादशाह ने हुक्म दिया कि कस्तुनतुनिया से बैतुल मुकद्दस तक के रास्ता में फर्श बिछा या जाए और फर्श पर खुश्बुदार फूल डाले जाओं। हिरक्ल बादशाह के हुक्म की ता'मील की गई और वह फूलों पर पाऊं रखता हुवा बैतुल मुकद्दस गया और अपनी मन्नत पूरी की।

हिरक्ल बादशाह जब बैतुल मुकद्दस में था तो एक रात उस ने सितारों की गर्दिश, फलकी अस्रात और नताइज पर गौर किया। इल्मे नुजूम व ज़ीजात के ज़रीए उस ने मा'लूम कर लिया कि उस की ज़ात और सल्तनत में तगय्युरो तबद्दुल वाकेअ होगा। लेहाज़ा वह मग्मूम हो कर गहरी सोच व फिक्र में डूब गया। उस के मुसाहिबों ने पूछा कि क्या बात है कि आप कबीदा खातिर और गमगीन हैं ? हिरक्ल ने कहा कि फलकी सय्यारों की गर्दिश से ऐसा ज़ाहिर होता है कि "मलेकुल खतान" ने ज़हूर किया है या'नी उस कौम के बादशाह ने ज़हूर किया है जिस कौम में खत्ना करने की सुन्नत राइज है। और अन्करीब उस का दस्ते तसल्लुत हमारी मम्लकत के इलाके में दाखिल होगा और हमारे शहरों के बाशिन्दों पर वह फतह व गल्बा हासिल करेगा। ऐ मेरे साथियो ! मुझे बताओ कि ऐसी कौन सी कौम है जिन में खत्ना करने की सुन्नत है ? लोगों ने बताया कि मुल्के अरब में एक शख्स ज़ाहिर हुवा है, जिस के अजीब व गरीब अहवाल की खबरें आ रही हैं। लोग कहते हैं कि वह नबी आखिरुज़ ज़मां (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) हैं और यह बात मुहक्कक है कि वह शख्स मख्तून हैं या'नी खत्ना शुदा हैं। हिरक्ल ने कहा कि सितारों की रहनुमाई से मुझ पर जो मुन्कशिफ हुवा है और जिस जमाअत के बादशाह के ज़हूर का पता चला है वह यही जमाअत है।

उसी वक्त से हिरक्ल बादशाह को मुल्के शाम में अह्ले इस्लाम के तसल्लुत की फिक्र लाहिक हो गई। लेहाज़ा उस ने देफाई तदाबीर का अक्दाम किया।

जंगे मौता का पस मन्ज़र

जंगे मौता 8, सन हिजरी में हूई। मौता एक मौज़े' का नाम है जो शहर बल्का के करीब, बैतुल मुकद्दस से तक्रीबन एक सौ (१००) मील के फास्ले पर वाकेअ है। इस्लामी तारीख में जंगे मौता का शुमार अहम सराया में होता है। यह जंग बडी सख्त वाकेअ हूई और इस जंग में फतह के बा'द जज़ीर-ए अरब के बाहर दीगर बहुत सी सल्तनतों पर इस्लाम की हैबत का सिक्का बैठ गया।

जंगे मौता के वुकूअ का सबब यह है कि रसूल आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने बसरा के हाकिम को इस्लाम की दा'वत का मक्तूबे गिरामी (खत) लिखा था। यहां जिस मकाम बसरा का ज़िक्र हो रहा है वह मुल्के शाम का शहर है। हालां कि एक बसरा नाम का शहर मुल्क इराक में भी है, जो दुनिया की मश्हूरो मा'रूफ बन्दरगाह भी है। दोनों के मा-बैन लतीफ फर्क यह है कि रस्मुल खत अलाहिदा है। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हज़रत हारिस बिन उमैर अज़्दी रदियल्लाहो तआला अन्हो को खत दे कर ब-हैसियते कासिद बसरा की जानिब रवाना फरमाया। मदीना मुनव्वरा से बसरा जाने वाले रास्ते में "**मौता**" नाम का गांव आया। हज़रत हारिस जब मौता पहुंचे तो वहां का हाकिम शुरहबील बिन उमर गस्सानी ने उन्हें देख लिया और अजनबी चेहरा देख कर समझा कि कोई जासूस मेरे इलाके में आया है इस की तह्कीक करने के लिये उन को रोका और पूछा कि तुम कौन हो ? कहां से आए हो ? और कहां जा रहे हो ? हज़रत हारिस रदियल्लाहो तआला अन्हो ने जवाब दिया कि मैं मदीना से आया हूं, कासिद हूं और पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का खत ले कर बसरा के हाकिम के पास जा रहा हूं। शुरहबील गस्सानी हिरक्ल बादशाह के मुअज़्ज़ज़ उमरा में से था और इस्लाम का कट्टर दुश्मन था। शुरहबील ने हज़रत हारिस अज़्दी रदियल्लाहो तआला अन्हो को बिला किसी कुसूर के, कासिद होने के बा-वुजूद शहीद कर दिया। हालां कि बैनुल अक्वामी कानून के मुताबिक उस ज़माना में भी किसी कासिद को कत्ल करना सख्त मम्नू' और जुर्म है। और दुनिया के हर बादशाह पर कासिदों की अमान वाजिबी अम्र था। जैसा कि मन्कूल है कि एक मरतबा नबुव्वत के झूटे दा'वेदार मुसैलमतुल कज़्ज़ाब का एलची बारगाहे रिसालत में आया, कुफ्री कल्मात बके और

हुज़ूर की सख्त गुस्ताखियां कीं लैकिन एलची होने की वजह से उसे बिला किसी ता'ज़िर के जाने दिया गया।

हज़रत हारिस बिन उमैर अज़्दी रदियल्लाहो तआला अन्हो की शहादत की खबर मदीना मुनव्वरा पहोंची। मुसलमानों में गम व गुस्से की लहर दौड गई। यहां तक कि रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के खातिरे अक्दस पर यह मुआमला बडा शाक गुज़रा। मौता के हाकिम शुरहबील ने कत्ले कासिद का संगीन जुर्म कर के अपनी बर्बरियत का सुबूत दिया था,साथ साथ मुसलमानों की गैरत व तहम्मुल को ललकार कर सरकशी का मुज़ाहेरा किया था। लेहाज़ा पैकरे हुस्ने अख्लाक, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने ऐसे ज़ालिम व जाबिर फरमां-रवा की सरकोबी के लिये मौता पर लश्कर-कशी की और जुर्म व जफा ,जब्र व इस्तिबदाद का किल्ला कमाअ कर के वहां अमन व आश्ती की फिज़ा पैदा करने के लिये मुजाहेदीने इस्लाम को रवाना करने का इरादा फरमाया।

मौता पर लश्कर कशी

जब मदीना मुनव्वरा में यह खबर फैली कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हज़रत हारिस के किसास में हाकिम मौता पर लश्कर कशी का इरादा फरमाया है तो मुजाहेदीने इस्लाम जज़्ब-ए जेहाद में मा'मूर जमा होने लगे और देखते ही देखते तीन हज़ार (३,०००) का लश्कर मौज़-ए जरफ में इकठ्ठा हो गया। फिर हुज़ूरे अक्दस वहां तशरीफ ले गए और फरमाया कि **"मैं ज़ैद बिन हारेसा को तुम्हारा अमीर मुकर्रर करता हूं। अगर वह शहीद हो जाऐं तो हज़रत जा'फर बिन अबी तालिब अमीर बनें। अगर जा'फर भी शहीद हो जाऐं तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा अमीर मुकर्रर हों। अगर वह भी शहीद हो जाऐं तो फिर मुसलमान जिस को चाहें अमीर बना लें।"**

इस के बा'द हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने सफेद कपडे का अलम हज़रत ज़ैद बिन हारेसा रदियल्लाहो तआला अन्हो को अता फरमाया और लश्कर को रुखसत करने सनीयतुल विदाअ तक आए। यहां पर आप ने तवक्कुफ फरमाया और अमीरे लश्कर को नसीहत फरमाई कि मैदाने जंग में उतरने से पहले हाकिम मौता शुरहबील को और उन तमाम लोगों को जो वहां मौजूद हों इस्लाम की दा'वत देना। अगर वह तुम्हारी दा'वत पर इस्लाम कबूल कर लें, तो उन से हरगिज़ मत लडना और अगर वह तुम्हारी दा'वत को ठुक्रा दें, तो अल्लाह तआला से मदद मांग कर जेहाद करना। रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने बा'द नसीहत लश्कर को दुआए खैर देते हुए रुखसत फरमाया।

मुजाहेदीने इस्लाम का लश्कर हज़रत ज़ैद बिन हारेसा की कयादत में मदीना से निकल कर मौता की तरफ रवाना हुवा कि यह खबर मौता के हाकिम शुरहबील गस्सानी को मिल गई। उस ने मुकाबला के लिये बहुत बडा लश्कर जमा किया, इलावा अज़ीं हिरक्ल बादशाह से भी मदद मांगी। हिरक्ल ने भी बडी ता'दाद में लश्कर भेज दिया। हिरक्ल ने शुरहबील की मदद के लिये जो लश्कर भेजा था उस में कबाइले अरब के मुश्रेकीन भी बडी ता'दाद में शामिल थे। चुनांचे दुश्मनों के लश्कर की ता'दाद एक लाख से मुतजाविज़ थी।

सिर्फ तीन हज़ार (३०००) मुजाहेदीने इस्लाम के सामने रूमियों का एक लाख का लश्कर मुकाबला करने आ पहुंचा था। जब लश्करे इस्लाम में दुश्मनों की कसरत की खबर आई तो मुसलमानों ने यह मश्वरा किया कि इस की इत्तेलअ फौरन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को होनी चाहिये, ताकि वह हमारी मदद के लिये मज़ीद लश्कर इर्साल फरमाऐं या हमें वापस बुला लें। ब-ज़ाहिर इस्लामी लश्कर में थोडी तश्वीश व घबराहट फैली थी। यह देख कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा जो बारगाहे रिसालत के मुकर्रब व मक्बूल शाइर थे। उन्हों ने मुजाहेदीन को मुखातब कर के फरमाया कि ऐ तौहीद व रिसालत के मतवालो ! क्या तुम उस चीज़ से घबराते हो जिस की ख्वाहिश और तमन्ना में हम अपने घरों से निकले हैं या'नी अल्लाह की राह में मौत। याद रखो ! हम दो खूबियों से हरगिज़ खाली नहीं। या तो हम फतह मन्द हो कर गालिब आ कर अपनी मुराद पाऐंगे या शहादत की सआदत हासिल कर के जन्नत में अपने उन साथियों से मिल जाऐंगे जो हम से पहले शहादत का मरतबा हासिल कर चुके हैं। उस वक्त इस्लामी लश्कर "मआन" नामी मकाम में पडाव किये हुए था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने इस्लामी लश्कर को अपनी तक्रीर से ऐसा जौश में ला दिया कि लश्कर का हर मुजाहिद जामे शहादत नौश करने की तडप में अपने सरों का नज़्राना राहे खुदा में पैश करने मआन से मौता आ पहुंचा।

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि "मैं गज़वए मौता में हाज़िर था। जब मुश्रिकों का लश्कर नमूदार हुवा तो इतनी कसरत से घोडे, हथियार, रैश्मी कपडे और दीगर साज़ो सामान मैं ने देखे कि मेरी आंखें चौंधिया गईं। दोनों लश्कर आमने सामने आए और सफें सीधी हूईं। इस्लामी लश्कर की तरफ से अमीरे लश्कर हज़रत ज़ैद बिन हारसा अलम लहराते हुए मैदाने कारज़ार में आए और शुजाअत व दिलैरी के जौहर दिखाए। उन की तलवार बिजली की मानिन्द घूमती थी और तौके अदू को आन की आन में जिस्म से जुदा करती थी। मुजाहिदे इस्लाम की शम्शीर की ताब लाने की दुश्मनों में सकत न थी। लेहाज़ा तीरों की बौछार

से हज़रत ज़ैद बिन हारसा के जिस्म को छलनी कर दिया। हज़रत ज़ैद बिन हारसा बहादुरी से लडते हुए शहीद हो गए।

हज़रत जा'फर बिन अबी तालिब (जा'फरे तय्यार) की शहादत :-

हज़रत ज़ैद बिन हारसा के शहीद होने पर ब-मुजिब फरमाने रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम इस्लामी लश्कर का अलम हज़रत जा'फर बिन अबी तालिब ने संभाल लिया। आप अपने घोडे से उतर कर प्यादा लडने लगे। आप की शम्शीर ज़नी के नतीजे में दुश्मनों के लश्कर में तहलका मच गया। आप ने दुश्मन के लश्कर की सफें की सफें उलट कर रख दीं। किसी भी दुश्मन को हिम्मत न होती थी कि अकैला आ कर आप से टकराए लेहाज़ा मज्मूई तौर पर हम्ला आवर हुए। इस हर्बा में आप का दाहिना हाथ कट कर जिस्म से अलग हो गया। आप ने अलम को बाअें हाथ में थाम लिया। फिर आप का बायां हाथ भी कट गया, तो अब दुश्मनों के हौसले बढे और आप के करीब आने की हिम्मत हूई। एक ज़ालिम ने नज़्दीक आ कर आप की कमर पर तलवार की ऐसी शदीद ज़र्ब मारी कि आप का जिस्म दो टुक्डे हो कर ज़मीन पर आ गया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहो तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि मैं जंगे मौता में मौजूद था। जब मैं ने मैदान में लाशों के दरमियान हज़रत जा'फर की ना'श को तलाश किया तो उन के मुबारक जिस्म पर में ने पचास से ज़ियादह ज़ख्म शुमार किये और उन ज़ख्मों में से कोई एक ज़ख्म भी उन की पुश्त की जानिब न था बल्कि तमाम ज़ख्म सीना की जानिब ही थे। रदियल्लाहो तआला अन्हो व अर्दाहो अन्ना। (हवाला : – मदारिजुन नबुव्वत जिल्द : 2, सफ्हा : 458)

शाइरे इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा की शहादत :-

हज़रत जा'फर बिन अबी तालिब की शहादत के बा'द लश्करे इस्लाम का अलम हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने थाम लिया। आप रज्ज़ के अश्आर पढते हुए मैदाने कार ज़ार में मश्गूले किताल हुए। आप बुलन्द आवाज़ से अश्आर पढते थे जिस का मज़्मून यह था कि **''ऐ नफ्स ! तू क्यूं शहादत में ज़ौक व शौक नहीं रखता और जन्नत में दाखिल होने में दैर लगाता है।''**

अर्बाबे सैर व तारीख बयान करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने तीन दिन से कुछ न खाया था। उन के चचा ज़ाद भाई ने खूब इस्रार कर के थोडा गोश्त खाने को दिया।

उन्हों ने गोश्त का एक टुक्डा मुंह में डाला और दांतों से चबाया कि उसी वक्त हज़रत जा'फर बिन अबी तालिब की शहादत की खबर आई। उन्हों ने उसी लम्हा गोश्त को यह फरमाते हुए थूक दिया कि '' ऐ नफ्स ! जा'फर तो दुनिया से चले गए और तू अभी तक दुनिया में मश्गूल है ? ऐ नफ्स ! शहादत की तरफ माइल हो जा। शहादत से मत भाग, खुदा के नाम पर कुरबान हो जा।'' यह कहते हुए मा'रका में दाखिल हुए और आ'दाए दीन से किताल करते हुए शहीद हो गए।

हज़रत खालिद बिन वलीद लश्करे इस्लाम के सिपाह सालार :-

इस्लामी लश्कर को मदीना तय्यबह से रवाना करते वक्त आलिमे मा कान व मा यकून सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने इस्लामी लश्कर के अमीर के तकर्रुर के सिलसिला में हज़रत ज़ैद के बा'द हज़रत जा'फर बिन अबी तालिब और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा के नाम इर्शाद फरमाए थे और यह भी इर्शाद फरमाया था कि हज़रत अब्दुल्लाह के बा'द मुसलमान किसी एक शख्स की अमारत पर मुत्तफिक हो जाअें। जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा शहीद हो गए तो हज़रत साबित बिन अहराम अन्सारी ने सब्कत कर के अलम को थाम लिया और ब-आवाज़े बुलन्द पुकारा कि ऐ गिरोह मोमेनीन ! किसी एक की अमारत पर मुत्तफिक हो जाओ। तमाम ने ब-यक ज़बान कहा कि तुम ही इस काम को संभालो। हज़रत साबित ने जवाब दिया कि में इस मन्सब को नहीं संभाल सक्ता। लेहाज़ा तमाम ने हज़रत खालिद बिन वलीद का इन्तेखाब किया। इस पर हज़रत खालिद ने हज़रत साबित से कहा कि ''ऐ साबित ! आप मुझ से ज़ियादह इस मन्सब के मुस्तहिक हो क्यूंकि आप अस्हाबे बद्र में से हो। मुझ से उमर में ज़ियादह और बुज़ुर्ग हो।'' हज़रत साबित ने कहा ''ऐ खालिद ! शुजाअत व जवांमर्दी तुम्हारा काम है और मैं ने इस अलम को तुम्हारे लिये ही थामा है।''

अल-मुख्तसर ! हज़रत खालिद बिन वलीद ने तमाम मुजाहिदों के इस्रार पर लश्करे इस्लाम का अलम अपने हाथों में लिया।

अर्बाबे सैर बयान करते हैं कि जिस वक्त हज़रत खालिद ने अलम थामा उस वक्त जंग का नक्शा यह था कि इस्लामी लश्कर को हज़ीमत का सामना था। मुश्रेकीन अपनी तमाम ताकत व कुव्वत से उन पर टूट पडे थे। उमडते हुए सैलाब की तरह हज़ारों का लश्कर मुजाहिदों की छोटी जमाअत को अपने नर्गे में ले लिया। कहां सिर्फ तीन हज़ार परदेसी और बे सरो सामान मुजाहिदों की मुख्तसर फौज और कहां एक लाख मुकीम और तमाम जंगी साज़ो सामान से आरास्ता लश्करे जर्रार ! ब-ज़ाहिर ऐसा मेह्सूस हो रहा था कि रूमी लश्कर

का सैलाब लश्करे इस्लाम को तिन्के की तरह बहा ले जाएगा। इस्लामी लश्कर के अह्म शेह सवार यके बा'द दीगरे शहीद हो रहे थे, मुश्रेकीन के हौसले बढ रहे थे। इस्लामी लश्कर के सिपाही बडी शिद्दत और तंगी में थे। पीछे को हट रहे थे। मुन्तशिर हो रहे थे। मायूसी का आलम था। हज़रत खालिद बडी शुजाअत से मुशरिकों के हम्ले को रोकने की कोशिश कर रहे थे और इस्लामी लश्कर को साबित कदम रखने में कोशां थे। उस वक्त कुत्ला बिन आमिर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने ब-आवाज़े बुलन्द पुकारा कि **"ऐ गिरोह मुस्लिमीन ! जंग करते हुए मर जाना फरार हो कर मरने से बेहतर है।"** इस ललकार ने लश्करे इस्लाम में एक नया जौश व हौसला पैदा किया।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने लश्करे इस्लाम को पलट कर यक-बारगी हम्ला करने पर उक्साया। हज़रत खालिद ने इस नाजुक वक्त में इस्लामी लश्कर के डगमगाते हुए कदमों को संभाला और सब ने मुत्तहिद हो कर जवाबी हम्ला किया। हज़रत खालिद मिस्ले शेरे बबर दुश्मनों पर टूट पडे और मुश्रेकीन की एक बडी जमाअत को तहे तैग किया। ऐसा लगता था कि दुश्मनों के लश्कर में भेड बकरियां हैं जो खुदा के दीन के शेर के सामने मब्हूत हो कर लुक्म-ए अजल बन रही हैं। हज़रत खालिद बिन वलीद ने जंगे मौता के दिन अपनी उन गुज़िश्ता गलतियों की तलाफी कर दी जो मुशरिकों की हिमायत में कभी उन्हों ने जंगे ओहद में लश्करे इस्लाम को नुक्सान पहुंचा कर की थी। जंगे मौता में हज़रत खालिद के हाथ में नौ (९) तलवारें टूटीं और यह अम्र उन की फज़ीलत बन कर ज़ाहिर हुवा कि **"खालिद सैफूम मिन सुयूफिल्लाह"** या'नी खालिद खुदा की तलवारों में से एक तलवार है। चुनांचे हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो को "सैफुल्लाह" का लकब जंगे मौता के मौके पर दिया गया।

अर्बाबे सैर बयान करते हैं कि हज़रत खालिद बिन वलीद और उन के साथियों ने डट कर दुश्मनों का मुकाबला किया। आफ्ताब गुरूब होने पर जंग मौकूफ हूई और दोनों लश्कर लडाई से हाथ खींच कर अपने अपने कैम्प में वापस हुए। दूसरे दिन सुब्ह हूई तो हज़रत खालिद ने अलम उठाया और लश्कर को मैदान में उतारा। उस दिन हज़रत खालिद ने जौश के साथ होश की आमेजि़श करते हुए सफों की तर्तीब में ऐसी तब्दीली की कि दुश्मन मब्हूत हो गए। गुज़िश्ता कल जो लोग मैमना पर रह कर लडते थे उन को मैसरा पर और जो मैसरा पर थे उन को मैमना पर ले लिया। इसी तरह मुकद्दमा वाले हिस्से को साका और साका को मुकद्दमा बना दिया। लैकिन ईसाइयों और मुशरिकों का लश्कर गुज़िश्ता कल की तर्तीब

से आया। उन के मैमना वालों ने इस्लामी लश्कर के मैमना को देखा तो आज उन के तमाम सिपाही दूसरे ही मा'लूम हुए। इसी तरह मैसरा, मुकद्दमा और साका में भी हुवा। दुश्मनों ने यह गुमान किया कि आज इस्लामी लश्कर की इम्दाद के लिये दूसरा लश्कर आ पहुंचा है। इस एहसास का नफ्सियाती असर यह हुवा कि उन के दिलों में खौफ व दहशत भर गई। वह मैदाने जंग में पिछले जैसा जौशो खरोश नहीं दिखा पा रहे हैं। नतीजा यह हुवा कि उन के कदम उखड गए। पीठ दिखा कर भागने लगे। हज़रत खालिद ने दुश्मन के मफरूर लश्कर का तआककुब किया और कसीर ता'दाद में मुशरिकों को तहे तैग कर के दिलैरी और मरदानगी का हक्क अदा किया। यहां तक कि अल्लाह तआला ने उन के हाथों पर मुसलमानों को फतह व नुस्रत से नवाज़ा और पर्चमे इस्लाम सर-बुलन्द रहा।

महबूबे खुदा का इल्मे गैब अताई

सहाबए किराम, ताबेईन, तब्ए ताबेईन ,ओलमा-ए दीन, सल्फे सालेहीन और तमाम बुजुर्गाने दीन का अकीदा था कि अल्लाह तआला ने अपने महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को गैब का इल्म भी अता फरमाया था। और महबूबे रब्बुल आलमीन अपने रब की इनायत से मुगीबात पर मुत्तलेअ थे। उन की मुकद्दस निगाहों के सामने से हिजाबात हटा दिये गए थे। रूए ज़मीन उन के लिये समेट कर एक हथेली की मानिन्द कर दी गई थी कि जिस तरह आदमी अपनी हथेली को बिला किसी तकल्लुफ व तरद्दुद देख सक्ता है, महबूबे खुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम पूरी दुनिया बल्कि काएनात की हर शय को अपनी चश्माने दूर रस से मुलाहेज़ा फरमाने का तसर्रुफ व इख्तेयार रखते थे। इस का सुबूत जंगे मौता के वाकेआ से फराहम होता है।

बुखारी, मुस्लिम, अबू दाउद, तिर्मिज़ी, नसाई और इब्ने माजा ने सेहते रिवायत के साथ मज़कूरा वाकेआ बयान किया है :

"जब इस्लामी लश्कर जंगे मौता में लश्करे कुफ्फार के साथ मुकाबला में मस्रूफे किताल था उस वक्त हुज़ूरे अक्दस, आलिमे मा कान व मा यकून, महबूबे रब्बुल आलमीन सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम मदीना मुनव्वरा में सहाबए किराम की मुकद्दस जमाअत के साथ मस्जिदे नबवी शरीफ में तश्रीफ फरमा थे। आप की नज़र मुबारक से हिजाबात उठ गए थे और जंगे मौता के तमाम हालात ब-चश्मे खुद इस तरह मुलाहेज़ा

फरमा रहे थे, गोया कि आप मैदाने कारज़ार में खुद तशरीफ फरमा हो कर मुआइना फरमा रहे हों। आप अपने सहाबा से फरमाते जाते कि ज़ैद बिन हारसा ने अलम उठाया है और अब वह शहीद हो गए। उन के बा'द जा'फर बिन अबी तालिब ने अलम लिया और वह भी शहीद हो गए। अब अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने अलम थामा है। अब वह भी शहीद हो गए, रदियल्लाहो तआला अन्हुम, आप यह फरमाते जाते और आंखों से आंसू जारी थे, **थोडी देर के बा'द फरमाया कि अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार या'नी खालिद बिन वलीद ने अब अलम अपने हाथ में ले लिया है और उन ही के हाथ पर फतह हासिल होगी।** उसी दिन से हज़रत खालिद रदियल्लाहो अन्हो का लकब सैफुल्लाह (अल्लाह की तलवार) मश्हूर हो गया।" (हवाला : मदारिजुन नबुव्वत, अज़ शैखे मुहक्किक शाह अब्दुलहक्क मोहद्दीसे देह्लवी, जिल्द : 2, सफहा : 460)

कारेईने किराम गौर फरमाऐं ! कहां मारक-ए मौता और कहां मदीना मुनव्वरा ? इतनी दूर की मुसाफत के बा-वुजूद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने जंग के तमाम हालात मिन व अन उसी वक्त मदीना मुनव्वरा में अपने सहाबए किराम के सामने इस तरह बयान फरमा दिये कि गोया आप मैदाने जंग में मौजूद हो कर देख रहे हों। ऐसे तो बे-शुमार वाकेआत कुतुबे अहादीस और कुतुबे सैर व तवारीख में मर्कूम हैं। इस वक्त उन तमाम वाकेआत का ज़िक्र व बयान न करते हुए सिर्फ इत्ना ही कहना है :

फज़्ले खुदा से गैब शहादत हुवा इन्हें
इस पर शहादत आयत व वही व असर की है।

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

मज़कूरा बाला शे'र की तशरीह तफ्सील के साथ मुलाहेज़ा फरमाने के लिये फकीर सरापा तक्सीर की किताब "**इरफाने रज़ा दर मदहे मुस्तफा**" का मुतालआ फरमाऐं।

हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम को कतई व यकीनी तौर पर ब-अताए इलाही गैब का इल्म हासिल था। और यह बात हद्दे तवातुर को पहोंच चुकी है कि गैब पर मुत्तलेअ होना और जो कुछ माज़ी में हो चुका है और जो कुछ आइन्दा होने वाला है उन तमाम उलूमे गैबिया की खबर देना आप के तसर्रुफ व इख्तेयार में था। कुरआन व हदीस इस हकीकत पर शाहिद आदिल की हैसियत से नातिक हैं, जो साहब इस मस्अला की तह्कीकी मा'लूमात हासिल करने का शौक रखते हों, वह इमामे इश्को मोहब्बत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शैखुल

इस्लाम वल मुस्लिमीन, आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिस बरैलवी कुद्दिसा सिर्रहु की मुन्दरजा ज़ैल तसानीफ की तरफ रूजूअ फरमाऐं :

(1) **अद्दौलतुल मक्किया बिल्माद्दतिल गैबिया**

(2) **खालिसुल ए'तेकाद**

(3) **इम्बाउल मुस्तफा बहाले सिर्रे व इख्फ़ा**

(4) **इज़ाहतुल ऐब बेसैफिल गैब**

(5) **अल लूलुउल मक्नून फी इल्मिल बशीरे मा काना व मा यकुन**

इस वक्त हम कारेईने किराम के साथ मुल्के शाम में इस्लामी लश्कर को हासिल शुदा फुतूहात के तअल्लुक से तम्हीदी गुफ्तगू कर रहे हैं और इस किताब का उन्वान फुतूहाते शाम का तज़्केरा है, लेहाज़ा उन्वान को सर्फे नज़र कर के दीगर उन्वानात की तरफ इल्तिफात करना नहीं चाहते, इस लिये अकाइद के तअल्लुक से जो उमूर ज़िम्नन आते हैं उन की तरफ बहुत ही इख्तिसार के साथ सिर्फ इशारा कर देते हैं।

अगले सफ्हात में मुल्के शाम में जो मा'रकए जेहाद रूनुमा हुए थे, उन का तफ्सीली तज़्केरा करना मक्सूद है लेहाज़ा इस वक्त हम सिर्फ इस नज़रिये के तहत तम्हीदी गुफ्तगू कर रहे हैं कि मुल्के शाम में इस्लामी लश्कर भेजने की ज़रूरत क्यूं दर-पैश हूई। मुल्के अरब के कुफ्फार व यहूद की गन्दी सियासत व पालिसी की वजह से मुल्के शाम की ताकतवर ईसाई सल्तनत इस्लाम से टकराने पूरे तुमतुराक के साथ मैदान में आई थी। पहला मा'रका, जंगे मौता के नाम से वुकूअ में आया और तब से इस्लाम और नस्रानियत की जंग का आगाज़ हुवा।

गज़वए तबूक (जैशुल उस्रत)

मुशरिकों और ईसाइयों के मुश्तरका एक लाख से भी ज़ियादह ता'दाद के लश्कर ने जंगे मौता में सिर्फ तीन हज़ार के इस्लामी लश्कर से ऐसी मुंह की खाई कि हवास बाख्ता हो गए। सल्तनते शाम की जंगी ताकत व कुव्वत का घमंड टूट कर हवा में उड गया। उन के वहमो गुमान से वरा ऐसी शिकस्ते फाश से दो चार होना पडा कि वह किसी को मुंह दिखा ने के काबिल न रहे। जंग व किताल के सिलसिले में उन की जो हवा बंधी हूई थी उस की हकीकत खुल गई। शाहे फारस खुस्रू परवेज़ की अज़ीम जंगी ताकत पर गालिब आने वाले रूमी सिपाही मुठ्ठी भर मुसलमानों से मग्लूब हो गए थे। जंगे मौता की शिकस्त से ईसाई सल्तनत की आबरू कौडी की तीन हो गई। लेहाज़ा उन के लिये अपनी आबरू बचाना लाज़िमी और ज़रूरी हो गया था। दिलों में इन्तेकाम की आग शो'ला ज़न हो रही थी। जंगे मौता में अपनी शिकस्त का बदला लेने की गर्ज़ से रूमियों ने वसीअ पैमाने पर जंगी तैयारियां शुरू कर दीं। मौज़-ए मौता के हाकिम शुरहबील गस्सानी ने शाहे रूम हिरक्ल को दू-बारा फिर उक्साया और मदद तलब की। चालीस हज़ार की मुसल्लह फौज ले कर हिरक्ल बादशाह बज़ाते खुद कुमुक करने आ पहुंचा। हिरक्ल बादशाह ने मुल्के अरब के ईसाई या'नी अरब मुतनस्सिरा के जंगजू कबाइल को भी इस्लाम के खिलाफ अपने लश्कर में बडी ता'दाद में शामिल किये थे।

उन दिनों मुल्के शाम से एक तिजारती काफला मदीना तय्यबह आया और इत्तेलअ दी कि शाहे रूम हिरक्ल ने बहुत बडा लश्कर जमा किया है। उस लश्कर में अरब के नस्रानी कबाइल मसलन कबीला लख्म, कबीलए जुज़ाम, कबीलए आमिला और कबीलए गस्सान वगैरा के लोग भी भारी ता'दाद में शामिल हैं। हिरक्ल का जमा कर्दा यह लश्करे अज़ीम मदीना मुनव्वरा पर हम्ला करने के लिये आने वाला है। हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को जब यह खबर पहोंची तो आप ने भी लश्कर जमा करने के लिये सहाबए किराम को हुक्म दिया और अतराफे मदीना के कबाइल में मुनादी करा

दी, ताकि लोग मअ साज़ो सामान जंग में जमा हों। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने मुल्के शाम पर लश्कर कशी का इरादा फरमा कर इल्मे नफ्सियात में महारते ताम्मा का मुज़ाहेरा फरमाया। क्यूं कि अगर रूमी लश्कर हम्ला करने की निय्यत से जमा हुवा है और मदीना तय्यबह की जानिब कूच कर के आता है तो यह अम्र दर-पर्दा इस की शान व शौकत का बाइस होता है कि मुल्के शाम से मदीना पर हम्ला करने आया है। लेहाज़ा अगर हम खुद ही उन के सामने जाअें तो यह अम्र उन के लिये बाइस खौफ होगा कि जिस पर हम हम्ला करने का इरादा रखते हैं वह खुद सामने चल कर जब आया है तो ज़रूर इस में इतनी ताकत व कुव्वत होगी कि वह हम से नबर्द आज़मा हो सके।

इस गज़्वे का एक नाम ''जैशे उस्रत'' भी है। क्यूं कि इस गज़्वा में लश्करे इस्लाम के मुजाहिदों को भूक, प्यास और दीगर मसाइबो तकालीफ का बडा सामना करना पडा था। दूर दराज़ का सफर, तवील मुसाफत, सख्त गर्मी का मौसम, लश्कर की ता'दादे कसीर, ज़ादे राह कलील ,साज़ो सामान की किल्लत, सवारी के जानवरों की कम याबी वगैरा वुजूहात की बिना पर यह सफर सख्त कुल्फत व मशक्कत का था। किरम खुरदा खजूरों का आटा, घिन लगे जवार और बोसीदा घी सफर का तोशा था। मुजाहेदीन दरख्तों के पत्ते खा कर सफर की मुसाफत तय करते थे। दरख्तों के पत्ते खाने की वजह से उन के मसोडों में वरम आ गये थे और होंट सूज कर ऊंट के होंटों की मानिन्द हो गए थे।

हालां कि सहाबए किराम रिदवानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन में से जो आसूदह हाल थे, उन्हों ने बडी फराख दिली से सखावत कर के लश्करे इस्लाम के लिये मालो अस्बाब मुहय्या करने में अपना माल राहे खुदा में खर्च किया। मसलन :

हज़रत सय्यिदोना अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो ने अपना तमाम मालो अस्बाब दे दिया। हज़रत सय्यिदोना उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो ने अपने तमाम माल का निस्फ पैश फरमाया। हज़रत उस्मान गनी रदियल्लाहो तआला अन्हो ने एक हज़ार ऊंट और सात सौ घोडे मुजाहिदों की सवारी के लिये इनायत किये। इलावा अज़ीं दो सौ ऊंट मअ अस्बाब के और दो सौ उकिय्या चांदी पैशे खिदमते अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम किये। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने उन अमवाल को ज़रूरत मन्दों पर खर्च फरमाया। ताकि वह अपनी ज़रुरियात का सामान फराहम कर के सफर की तैयारी कर सकें, ताहम लश्कर की ता'दाद इतनी ज़ियादह थी कि ज़ादे राह की किल्लत मेह्सूस की जाती रही। लश्कर की ता'दाद तक्रीबन चालीस हज़ार थी।

मदीना मुनव्वरा से माहे रजब 9, सन हिजरी ब-रोज़ पंजशम्बा लश्कर ने कूच की और जब लश्कर मदीना मुनव्वरा के बाहर ''सनियतुल वेदाअ'' मकाम पर आया तो रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने अलम और झन्डों की तर्तीब फरमाई। फिर लश्कर के अलग अलग दस्तों के अमीर मुकर्रर फरमाए। हज़रत खालिद बिन वलीद को मुकद्दमा पर, हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह को मैमना पर और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ को मैसरा पर मुकर्रर फरमाया। इस्लामी लश्कर मनाज़िल व मराहिल तय कर के तबूक नामी मकाम में पहुंचा। तबूक मदीना तय्यबह से चौदह मन्ज़िल के फास्ला पर मुल्के शाम की सरहद के करीब जज़ीरए अरब का एक इलाका है। (हवाला : The oxford world Atlas Book,25th Edlion,Page No.33)

इस्लामी लश्कर ने तबूक में कुछ दिनों के लिये पडाव किया, ताकि लश्कर के मुजाहेदीन तवील सफर की मुशक्कत से आसूदह हाल हो जाऐं और इस्तेराहत करें। हिरक्ल बादशाह और उस के लश्कर को जब खबर हूई कि बडी ता'दाद में इस्लामी लश्कर तबूक तक आ पहुंचा है, तो उन पर एक हैबत तारी हूई। दीने इस्लाम की शान व इज़्ज़त और रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के एजाज़ व अज़्मत का तसव्वुर उन के ज़हनो पर छा गया। वह यह सोचने लगे कि जिन पर हम हम्ला करने की तैयारी कर रहे थे, वह खुद चल कर यहां आ पहुंचे हैं तो ज़रूर वह इतनी कुव्वतो इस्तिताअत के हामिल होंगे कि हम पर हम्ला आवर हों। उन के ज़हनो पर एक गैर मुतरक्कबा असर हुवा और एहसासे कमतरी के शिकार हुए, और फित्री तौर पर एक किस्म का खौफ व रोअब उन पर बैठ गया। रूमी लश्कर में इस्लामी लश्कर की हैबत व शौकत का गलगला फैल गया और उन्हों ने राहे फरार इख्तेयार करने में अपनी खैरो आफियत जान कर नौ दो ग्यारह हो गए, लेहाज़ा इस्लामी लश्कर बगैर किसी जंग व जिदाल मदीना मुनव्वरा वापस आया।

तबूक में जंग वाकेअ न हूई, लैकिन बगैर जंग किये इस्लाम की शान व शौकत में इत्ना इज़ाफा हुवा कि पूरे मुल्के शाम और अतराफो अक्नाफ के सलातीन के दिलों में मुजाहेदीने इस्लाम का रोअब घर कर गया। इलावा अज़ीं इस सफर में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के जो मो'जिज़ात व अलामाते नबुव्वत ज़हूर पज़ीर हुए वह इस सफर के फैज़ बख्श नताइज की हैसियत से कुतुबे सैर में मस्तूर हैं, जिन का यहां पर तफ्सीली ज़िक्र मुम्किन नहीं।

ईसाई तीसरी मरतबा आमाद-ए जंग

जंगे मौता 8, हिजरी सन और गज़वए तबूक 9, सन हिजरी के दोनों महाज़ पर रूमी लश्कर की ज़िल्लतो रुस्वाई के बा-वुजूद मुल्के शाम की ईसाई सल्तनत के कैसरे रुम शाह हिरक्ल की अक्ल ठिकाने न आई। माज़ी के तजर्रुबात से नसीहत हासिल करने के बजाए मज़ीद फज़ीहत की तरफ कदम आगे बढाए। 11, सन हिजरी में हिरक्ल बादशाह ने मदीना मुनव्वरा पर फौज कशी करने के लिये फिर वसीअ पैमाने पर जंगी तैयारी शुरू कर दी। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को नस्रानी सल्तनत की सरगर्मियों का इल्म हुवा तो आप ने फिर उन की सरकोबी के लिये एक लश्कर तैयार कर के हज़रत उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहो तआला अन्हो को अमीर मुकर्रर कर के रवानगी का हुक्म सादिर फरमाया।

हज़रत उसामा के वालिद हज़रत ज़ैद बिन हारसा जंगे मौता में शहीद हुए थे। जिस का बयान गुज़िश्ता अवराक में गुज़रा। हज़रत ज़ैद के कातिलों से किसास लेने और दीने इस्लाम को ज़रर पहुंचाने वाले शर-पसन्द अनासिर को ताजियानए सैफ लगाने के लिये हज़रत उसामा बिन ज़ैद 26, सफर 11, सन हिजरी को मदीना मुनव्वरा से रवाना हुए। हज़रत उसामा ने मदीना के करीब मकाम जरफ में पडाव किया ताकि अतराफ व जवानिब के मुजाहेदीन लश्कर में शामिल होने वहां आ जाऐं।

28, सफर 11, सन हिजरी को रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम दर्दे सर और शदीद बुखार की वजह से जिस्मानी तौर पर ब-ज़ाहिर अलील हुए। लेहाज़ा हज़रत उसामा ने कूच करने में उज्लत न की और तवक्कुफ किया और कुर्ब व जवार से मुजाहिदों को जमा करते रहे। जब लश्करे इस्लाम तमाम जंगी साज़ो सामान से आरास्ता हो गया तो हज़रत उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहो तआला अन्हो बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम में 11, रबीउल अव्वल शरीफ 11, सन हिजरी के दिन रुखसत की इजाज़त हासिल करने हाज़िर हुए। हज़रत उसामा आए और हुज़ूरे अक्दस के सिरहाने खडे हो गए और अपना सर झुका कर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सर अन्वर और दस्ते मुनव्वर को बोसा दिया। उस वक्त हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला तआला अलैह व सल्लम ने अपना दस्ते अक्दस आस्मान की जानिब उठा कर हज़रत उसामा के लिये दुआ फरमाई। हज़रत उसामा हुजरा शरीफ से बाहर आए और लश्कर में चले गए। दूसरे दिन 12, रबीउल अव्वल शरीफ 11, सन हिजरी दो शम्बा को लश्कर को कूच का हुक्म दिया ही

था कि हज़रत उसामा की वालेदा उम्मे ऐमन रदियल्लाहो अन्हा ने पैगाम भेजा कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम निज़ाअ के आलम में हैं। हज़रत उसामा फौरन मदीना तय्यबह आए। उसी दिन आफ्ताबे रिसालत व माहताबे नबुव्वत, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने पर्दा फरमाया।

मलेकुल मौत की खिदमते अक्दस में हाज़री

मुहक्किक अलल इत्लाक, आशिके रसूल, शाह अब्दुलहक्क मोहद्दीसे देहलवी कुद्दिसा सिर्रहु ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की रेहलत शरीफ का ज़िक्र इन अल्फाज़ में किया है :

"मर्वी है कि मलेकुल मौत ने हाज़िर होने की इजाज़त मांगी। फिर वह हुज़ूरे अकरम के पास आए और आप के सामने खडे हो गए और अर्ज़ करने लगे "या रसूलुल्लाह ! या अहमद ! हक्क तआला ने मुझे आप की तरफ भेजा है और हुक्म दिया है कि मैं आप की इताअत करूं, जो कुछ भी आप फरमाऐं कि मैं आप की रूह कब्ज़ करूं अगर आप इजाज़त दें और अगर फरमाऐं तो कब्ज़ न करूं। इस में हक्क तआला ने आप को इख्तेयार मरहमत फरमाया है। फिर जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आ कर अर्ज़ किया "ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) हक्क तआला आप का मुश्ताक है और आप को बुलाता है।" इस पर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया "ऐ मलेकुल मौत ! जो तुम्हें हुक्म दिया गया है, अपने उस काम में मशगूल हो जाओ।" जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया "ज़मीन पर मेरा आना यह आखरी है। दुनिया में मेरे आने की ज़रूरत आप का वुजूदे गिरामी था। मैं आप के लिये दुनिया में आता था।" (मदारिजुन नबुव्वत, उर्दू तर्जुमा, जिल्द : 2, सफ्हा : 729)

सुब्हानल्लाह ! अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को मौत का भी इख्तेयार अता फरमाया था कि अगर महबूब की मर्ज़ी हो तो मलेकुल मौत रूहे अक्दस कब्ज़ करें और अगर महबूब की मर्ज़ी न हो तो बगैर रूह कब्ज़ किये वापस लौट जाऐं। नबीए आ'ज़म व रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के साथ बराबरी और हमसरी का दा'वा करने वाले गिरोह को इस तसर्रुफ की हकीकत से सबक हासिल करना चाहिये कि जिन की मर्ज़ी और इजाज़त के बगैर मलेकुल मौत रूह कब्ज़ न करें। उस ज़ाते गिरामी से हमसरी और बराबरी का दा'वा करना ईमान

का तोता उडाने के मुतरादिफ है। नबी से हमसरी का दा'वा करने वाले कुछ अफ्राद ऐसे भी गुज़रे हैं कि जो चलती ट्रेन में या बैतुलखला में नजासत से लथपथ चार पाई पर मौत की गहरी नींद सो गए और बैबसी और बैकसी के आलम में इस दुनिया से गए। ऐसे लोगों की इब्रतनाक और ज़िल्लत की मौत से उन का नबी के साथ हमसरी का बातिल दा'वा काफ़ूर हो जाता है।

❀ हुज़ूरे अक्दस की मुफारकत में सहाबा का इज़्तिराब :-

शबे चेहार शम्बा 14 रबीउल अव्वल शरीफ 11, सन हिजरी को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को कब्रे अन्वर में दाखिल किया गया। दफ्न के बा'द सहाबए किराम सय्येदा फातिमा ज़हरा रदियल्लाहो तआला अन्हा के पास आए तो उन्हों ने फरमाया कि ऐ गिरोहे सहाबा ! तुम्हारे दिलों ने कैसे गवारा किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के जिस्मे अक्दस को सुपुर्दे खाक करो ? सहाबए किराम ने अर्ज़ किया कि ऐ जिगर गोशए रसूल ! ऐ खातूने जन्नत ! आप ने ठीक फरमाया। हम भी यही ख्याल करते थे कि जिस्म अक्दस को किस तरह सुपुर्दे खाक करें ? इसी गम में हम भी मुब्तला थे लैकिन हम कर भी क्या सक्ते थे ? शरीअत के हुक्म की बजा-आवरी के सिवा चारए कार नहीं था।

सहाबए किराम की यह हालत थी कि वह हसरत व यास और गमो अन्दोह के अथाह समन्दर में गर्क थे। अपने महबूब आका के फिराक व हिज्र में निढाल थे। बे चैनी व बैकरारी के आलम में दिल तडप रहे थे और आंखें अश्क बार थीं। **हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि "मदीना तय्यबह में उस दिन से बेहतर व नुरानी तर कोई दिन न था जिस दिन सय्यदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम यहां तशरीफ लाए और मदीना तय्यबह में उस दिन से बद-तर और तारीक तर कोई दिन नहीं था जिस दिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने इस जहान से पर्दा फरमाया।"**

हुज़ूरे अक्दस जाने आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की रेहलत के सानेहा ने सहाबए किराम के दिलों को हिला कर रख दिया। रंज व गम से उन की हालत दिगरगूं थी। मदीना मुनव्वरा में एक कोहराम मचा हुवा था। हर तरफ उदासी का समां था, नमनाक आंखें, सिस्कियां और नाल-ए गम की हिच्कियां हर शख्स के साथ लाज़िम व मल्ज़ूम की हैसियत से मुलहिक थीं। अजिल्ल-ए सहाबए किराम मसलन हज़रत उमर फारूके आज़म

रदियल्लाहो तआला अन्हो जैसे साहिबे तहम्मुल की कुव्वते ज़ब्त भी जवाब दे चुकी थी। रसूले खुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के नूरानी रुखे ज़ैबा के दीदार से अब हम महरूम हो गए हैं, यह ख्याल आते ही उन को अपनी ज़िन्दगी बोझ मा'लूम होती थी :

इक तेरे रुख की रौशनी चैन है दो जहान की

इन्स का उन्स इसी से है जान की वह ही जान है

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

सहाबए किराम पर अपने महबूब आका सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का फिराक इत्ना शाक था कि किसी के आंसूओं की धारा थम नहीं रही थी। महबूब आका के बगैर जीना ही उन के लिये दुश्वार था। जिसे देखो वह शिकस्ता हाल और शिकस्ता खातिर है। हर एक चेहरे का रंग उतरा नज़र आता। करारे जान व दिल रुखसत हो गया है। हज़रत फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो ने तो तलवार तान ली और फरमाया कि जो यह कहे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम फौत हो गए, मैं उन की गर्दन उडा दूंगा। कौन किस को संभाले ? कौन किस को तसल्ली दे ? कौन किस की मातम पुर्सी करे ? लैकिन ऐसे नाज़ुक वक्त में खलीफतुल मुस्लिमीन, अमीरुल मोमेनीन, सय्यिदोना सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने मुज़्तरिब व बैकरार सहाबए किराम की जमाअत को संभाला।

खिलाफते सिद्दीकी में फित्नों का तूफान

ब-इत्तेफाके राए जमीउल मो'मिनीन हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो खलीफतुल मुस्लिमीन मुन्तखब हुए। तमाम सहाबए किराम ने आप के हाथ पर बैअत की। हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो अपने महबूब आका व जाने जानां सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की मुफारकत के सदमे से बाहर भी नहीं हुए थे। और आप ने अभी पूरी तरह उमूर खिलाफत का इन्तेज़ाम भी नहीं फरमाया था कि फित्नों की आंधी शुरू हूई। अरब के कुछ कबाइल ने ज़कात का इन्कार कर दिया, नबुव्वत के झूटे दा'वेदार उठ खडे हुए, मुनाफिकों ने भी सर उठाया, ईसाइयों ने अरब के यहूद व कुफ्फार की इश्तराकियत में मदीना मुनव्वरा पर हम्ला की तैयारियां शुरू कर दीं, हालात की संगीनी और वक्त की बे रहमी देख कर मुसलमानों में बैचेनी व इज़्तिराब की कैफियत रूनुमा हूई। लैकिन हज़रत

सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो मुत्लक नहीं घबराए। आप के पाए इस्तिकामत में ज़र्रा बराबर लग्ज़िश नहीं वाकेअ हूई। बल्कि कामिल अज्मो ए'तमाद के साथ हर फित्ने का सद्दे बाब और मुकाबला करने पर आमादा हो गए।

हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो के इस्तिकलाले मोहकम और यकीने पुख्ता का अंदाज़ा इस बात से हो जाएगा कि जब मज़कूरा फितन की खबरें मदीना मुनव्वरा पहुंचीं, तो बा'ज़ सहाबए किराम ने मश्वरा दिया कि जब तक यह फित्ने थम न जाअें आप हज़रत उसामा के लश्कर को मुल्के शाम की मुहिम पर रवाना न फरमाअें, बल्कि मदीना मुनव्वरा में वापस बुला लें। क्यूं कि इस नाज़ुक वक्त में दुश्मनाने इस्लाम को मा'लूम होगा कि लश्करे इस्लाम मदीना से बाहर गया हुवा है, तो उन के हौसले बढेंगे और वह दिलैर हो कर रख्ना अन्दाज़ी और फित्ना परवरी में सरगर्म होंगे। इस वक्त हज़रत उसामा के लश्कर का मदीना में मौजूद रहना ज़रूरी है ताकि मुनाफिकीन व मुर्तद्दीन पर रोअब रहे और ज़रूरत पडने पर उन की सरकोबी में लश्कर काम भी आए।

❀ लैकिन अमीरुल मोमेनीन, सय्यिदोना सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो के इश्के रसूल और इताअते फरमाने नबवी पर हज़ारों दाद व तह्सीन ! आप ने फरमाया कि जिस लश्कर को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने रवाना फरमाया है। अबू बक्र में जुर्अत व ताकत नहीं कि इसे वापस बुला ले। जिस लश्कर को हुज़ूरे अक्दस ने रवाना फरमाया है वह रवाना हो कर रहेगा, हालात जैसे भी हों, वह हरगिज़ नहीं रुकेगा।

❀ अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि लश्करे उसामा भेजने से मैं मुर्तदों का लुक्मा बन जाऊंगा, तब भी मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का रवाना कर्दा लश्कर वापस नहीं बुलाऊंगा। चुनांचे आप ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहो तआला अन्हो को मुल्के शाम की जानिब रवाना फरमाया। हज़रत उसामा माहे रबीउल आखिर 11, सन हिजरी में रवाना हुए। मकामे अब्ना में ईसाइयों के लश्कर से ज़बरदस्त मुकाबला हुवा। काफी ता'दाद में ईसाई कत्ल हुए। हज़रत उसामा बिन ज़ैद बिन हारसा ने अपने वालिद के कातिल को भी कत्ल किया और कसीर मिक्दार में माले गनीमत हासिल कर के चालीस दिन के बा'द मदीना मुनव्वरा फातेहाना शान से वापस आए।

❀ हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने बडी पामर्दी से तमाम फितन

का इस्तीसाल फरमाया। जिन लोगों ने ज़कात देने से इन्कार कर के नस्से कतई या'नी कुरआन के सरीह हुक्म की खिलाफ वर्ज़ी की। उन के साथ हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने किसी किस्म की नर्मी या रिआयत नहीं बर्ती, बल्कि सख्ती से पैश आए। आप की सख्ती देख कर बा'ज़ सहाबा ने मश्वरा देते हुए अर्ज़ किया कि ऐ अमीरुल मोमेनीन ! इस वक्त इस्लाम बहुत ही नाजुक हालात से दो चार है लेहाज़ा आप नर्मी इख्तेयार फरमाअें तो बेहतर है। इस वक्त मसलेहत का तकाज़ा यही है कि सख्ती न की जाए। उस वक्त हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया कि जो शख्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के ज़माना में रस्सी का एक टुक्डा ब-तौर ज़कात अदा करता था लैकिन अब देने से इन्कार करता है, तो उस के लिये मेरी तलवार है। या'नी उस से मैं जंग करूंगा। चुनांचे आप ने बडी उलूल अज़्मी और साबित कदमी से ज़कात देने से इन्कार करने वालों के साथ सख्ती से काम लिया और फित्न-ए इर्तिदाद का सर कुचल कर रख दिया। मुर्तद्दीन ने नए सिरे से इस्लाम कबूल किया और सिद्क दिल से तमाम इस्लामी अहकाम पर अमल पैरा हुए।

❀ नबुव्वत के झूटे दा'वेदार (1) मुसैलमा बिन समामा अल-मा'रूफ मुसैलमतुल कज़्ज़ाब (2) अस्वद बिन का'ब अन्सी (3) तलीहा बिन खोवैलिद असदी (4) सब्हाह बिन्ते अल-हारिस बिन सुवैद तमीमा की सरकोबी व इस्तीसाल में अज़्मे मोहकम से काम लिया। मुसैलमतुल कज़्ज़ाब जंगे यमामा में मारा गया। उस की बीवी सब्हाह बिन्ते अल-हारिस एक जज़ीरा में छुप गई और हलाक हो गई। अस्वद बिन का'ब अन्सी, हज़रत इक्रमा रदियल्लाहो तआला अन्हो के लश्कर के साथ लडते हुए मारा गया। और तलीहा बिन खोवैलिद असदी मुल्के शाम भाग गया। तलीहा बिन खोवैलिद असदी ने खिलाफत फारूकी में इस्लाम कबूल किया। सिद्क दिल से ईमान पर काइम रहा और इस्लामी लश्कर में शामिल हो कर जेहाद करते हुए, "जंगे नहाविन्द" में शहादत पाई। तलीहा बिन खूवैद असदी का वापस इस्लाम कबूल करने का तफ्सीली हाल इस किताब में "फतहे तराबलिस, सूर, कैसारिया" वगैरा उन्वान के तहत मज़कूर है।

मुल्के शाम पर इस्लामी लश्कर कशी का पस मन्ज़र

हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के दुनिया से पर्दा फरमाते ही फित्नों की एक ज़ोरदार आंधी चली। जिस का तज़्केरा गुज़िश्ता सफहात में हुवा। मुसलमानों के दरमियान इन्तिशार फूट पडा। मुल्के शाम की नस्रानी सल्तनत ने यह मौका' गनीमत समझ कर इस से फाइदा उठाने की गर्ज़ से फिर एक मरतबा मदीना तय्यबह पर हम्ला करने की अज़ीम पैमाने पर तैयारी शुरू कर दी। जंगे मौता, गज़्व-ए तबूक और सर्या उसामा बिन ज़ैद के ज़रीए इस्लामी लश्कर ने ज़िल्लत व रुस्वाई और शिकस्त का जो मज़ा चखाया था, इस से उन के दिलों में हसद और इन्तेकाम की आग शो'ला ज़न थी। "हारा जुवारी पगडी रखे" की मिसाल बिल्कुल मेहसूस शक्ल में देखी जा सक्ती है कि जब माज़ी की फज़ीहत व हज़ीमत से सबक न हासिल कर के नस्रानी फिर दू-बारा उछलना शुरू हुए। शामियों को मुल्के अरब पर हम्ला कर के इस्लामी सल्तनत का तख्ता पलट देने के ख्वाब नज़र आ रहे थे। इस्लाम में पैदा शुदा फितन और इस्लामी लश्कर को अन्दरूने मुल्क इन्तेज़ाम व इन्सिराम की बहाली में उलझा देख कर इस खुश फहमी में मुब्तला थे कि अब सुन्हरी मौका' हाथ लगा है। लेहाज़ा उन्हों ने लश्कर जमा करना शुरू किया। मुल्के शाम में हो रही लश्कर की तैयारी की खबर अमीरुल मोमेनीन सय्यिदोना अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो को मिली, लैकिन उस वक्त आप नबुव्वत के झूटे दा'वेदार, मुर्तद्दीन और मानेईने ज़कात की सरकोबी में मस्रूफ थे। हज़रत सिद्दीके अक्बर के अज़्मे मोहकम व अमले पैहम ने बहुत ही जल्द तमाम फित्नों के सर कुचल कर रख दिये और मुल्के अरब में फिर अमन व सुकून का माहौल काइम हो गया।

जब मुल्के अरब की फिज़ा हमवार व खुशगवार हो गई, तो हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने मुल्के शाम की नस्रानी सल्तनत की तरफ तवज्जोह मर्कूज़ फरमाई और फिक्रे फर्दा के तौर पर बाहर से होने वाले हम्लों का तजज़िया फरमाया तो कैसरे

रुम का छिछोरापन और नित नए रोज़ चोंच मारने की हर्कतें करना, उभर कर सामने आया। अब इस का कान मरोडना ज़रूरी है। कैसरे रुम हम पर लश्कर कशी करे, इस से कब्ल ही इस्लामी लश्कर शाम भेज कर फिस्ताई ताकत का गुरूर खाक में मिला देना चाहिये ताकि इस की हमेंशा की छेडछाड का सद्दे बाब हो जाए :

दिले आ'दा को रज़ा तैज़ नमक की धुन है
इक ज़रा और छिडकता रहे खामा तेरा

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

फुतूहात मुल्के शाम और ऐ'लाने जेहाद :-

ईसाइयों की चीरा-दस्ती ने मुसलमानों को मुल्के शाम पर लश्कर कशी के लिये मजबूर किया और इस्लामी लश्कर के अमन पसन्द मुजाहेदीन तहफ्फुज़े नामूसे रिसालत और बकाए इस्लाम के लिये शाम पर हम्ला करने के लिये हालात के हाथों मजबूर थे। लेहाज़ा उन्हों ने अपने सर धड की बाज़ी लगा कर अपने से बडी ताकत से टक्कर ली, मगर अल्लाह ने इन्हें फतह दी और पूरे मुल्के शाम पर उन्हों ने पर्चमे इस्लाम लहरा दिया। इस खिदमते अज़ीम की अदायगी में मुजाहेदीने इस्लाम ने जिस शुजाअत व दिलैरी का मुज़ाहेरा किया है और जो पुर-खुलूस कुर्बानियां दी हैं, इस की नज़ीर तारीख में नायाब है। इस्लामी तारीख में तलाई हुरूफ से वह तमाम वाकेआत मर्कूम व मस्तूर हैं।

मश्हूर तारीख निगार अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र वाकदी ने उन तमाम वाकेआत को अपनी तस्नीफ "फुतूहुश्शाम" में बित्तफसील बयान फरमाया है। जिन को पढ कर हर मोमिन का दिल बाग बाग हो जाता है कि हमारे अस्लाफ ने इश्के रसूल के जज़्बए सादिक में अपनी जानों पर खेल कर शुजाअत और बहादुरी से इस्लाम की अज़्मत को दुनिया के गोशे गोशे तक पहुंचाई। तारीखे इस्लाम का यह दरख्शां बाब और अक्वामे आलम पर मुसलमानों की शान व शौकत इस बात की गवाही देती है, कि **इस्लाम न किसी से माज़ी में दबा और न आइन्दा किसी ताकत से दब सक्ता है। इश्के रसूल एक ऐसी ताकत है कि इस का सौदा जिस सर में समा गया, वह चट्टान से भी टकराएगा तो उसे भी पाश पाश कर देगा। बहरे ज़ुल्मात की तुग्यानी में छलांग लगाने में आशिके रसूल तअम्मुल नहीं करता और सफीनए इश्के रसूल की ब-दौलत उसे आसानी से उबूर कर लेता है।** इस हकीकत की बय्यन शहादत मुल्के शाम की फुतूहात के वाकेआत के मुतालआ से मिलती है। अल्लामा

वाकदी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने अपनी तस्नीफ में गुलू से कतई तौर पर ए'राज़ व एहतेराज़ करते हुए सिर्फ बयाने अम्रे वाकई से ही काम लिया है। मौज़ूअ और ज़ईफ रिवायात मतरूक फरमा कर सहीह रिवायात ही अखज़ फरमाई हैं, रावियों की सकाहत व अदालत का कामिल इल्तेज़ाम फरमा कर अपनी तमाम तसानीफ को सेहत व सदाकत से आरास्ता फरमा कर अपने आप को सेकह् रावियों के ज़ुमरे में शामिल किया है। अल्लामा वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु की तसानीफ ओलमा-ए मिल्लते इस्लामिया की नज़रों में मो'तमद व मुस्तनद हैं। अल्लामा वाकदी ने तारीखे इस्लाम की तदवीन में जो अर्क रेज़ी की है मिल्लते इस्लामिया ता-कयामत उन की मर्हूने मिन्नत व शुक्र गुज़ार रहेगी। बल्कि उन की तसानीफ को ईमानी व इरफानी दस्तावेज़ का मरतबा दे कर उन को सहीह मा'नों में खिराजे अकीदत व दाद तह्सीन के तहाइफ पैश करती रहेगी। अल्लामा वाकदी के कलमे हक्क इर्कम ने सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन के अक्वाल व इर्शाद और अफ्आल व किरदार की जो अक्कासी की है, वह उन की खुश अकीदगी और हुस्ने सीरत की आईना दार है। अल्लामा वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु की तमाम तसानीफ का मा-हसल और लुब्बे लुबाब यही है कि इश्के रसूल ही सहाबए किराम की मुकद्दस जमाअत की फतह व नुस्रत का राज़ था। जिस की ब-दौलत वह दुनिया की बडी ताकतों और अज़ीम सल्तनतों पर गालिब आई थी। इश्के रसूल ही उन के लिये सब कुछ था। उन की जान, उन की हयात, उन की ज़िन्दगी, उन का सबात, उन के दिल की धडकन, उन के सांसों की आमदो रफ्त, उन का हथियार, उन की सिपर, उन की ढाल, उन के गम का इज़ाला, उन के दर्द का दर्मां, उन की पनाह, उन की हिफाज़त, उन की नुस्रत, उन की रिफ्अत, बल्कि उन की बका का इन्हिसार भी इश्के रसूल था :

जान है इश्के मुस्तफा, रोज़ फुज़ू करे खुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा, नाज़े दवा उठाए क्यूं

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

अल्लामा वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु की तसानीफ का मुतालआ करते वक्त ऐसा मेहसूस होता है कि उन की कलम से रोशनाई नहीं इश्के रसूल की चाश्नी टपक्ती है और मुतालआ करने वाला कैफ इश्क में मस्त हो कर सदाए अहसनत बुलन्द करता है। जिस इश्के रसूल ने सहाबए किराम को सर-बुलन्दी अता फरमाई। उसी इश्के रसूल ने अल्लामा वाकदी को अर्बाबे सैर व तवारीख पर बर-तरी बख्शी।

❁ अबूल-हसन अन्नौज़ी और अबू तल्हा बिन अल-अव्वाम रिवायत करते हैं कि अबू यज़ीद मुहम्मद बिन अब्दुलआ'ला अस-सनआनी ने फरमाया कि मैं ने मो'तमर बिन सुलैमान से इस कद्र हदीसें सुनी हैं कि न शुमार कर सकता हूं, न याद रख सक्ता हूं। नीज़ वह फरमाते थे कि मैं ने अपने वालिद से सुना है कि तवारीख में अल्लामा वाकदी की किताब से ज़ियादह तर मो'तबर किसी किताब को नहीं पाता हूं।

(हवाला :- मगाज़ीयुस सादिका तर्जुमा मगाज़ीयुर रसूल ,सफहा : 357)

❁ इमामे इश्को मोहब्बत, इमामे अह्ल सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत आ'ला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, शैखुल इस्लाम वल मुस्लिमीन, इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिस बरैलवी कुद्दिसा सिर्रहु ने अपनी तस्नीफे लतीफ "मुनीरुल ऐन फी हुक्मे तक्बीलुल इब्हामैन" में अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु का शुमार "सेकह् रावी" के जुमरे में कर के उन की तसानीफ को मो'तमद व मुस्तनद का दर्जा दे कर अल्लामा वाकदी की जनाब में खिराजे अकीदत पैश किया है।

अब हम अल्लामा वाकदी की किताब "फुतूहुश्शाम" को माखज़ व मर्जा' बना कर मुल्के शाम में लश्करे इस्लाम की फुतूहात का तज़्केरा शुरू करते हैं, अल्लामा वाकदी की तस्नीफ से सिर्फ अस्ल वाकेआ अखज़ कर के, वाकेआ व मा'रका की मन्ज़र कशी की कोशिश की है नीज़ इस के तअल्लुक से इस्लामी अकीदा, सहाबए किराम का ए'तेमाद व यकीन, फिर्कए बातिला के फासिद अकाइद व नज़रियात का रद्द और मौजूदा दौर में मुसलमानों की पसमान्दगी व बुज़दिली और एहसासे कमतरी के वुजूहात, अस्रात व मुहलिक नताइज पर सैर हासिल गुफ्तगू करने के बा'द उस के तदारुक व मुआलिजा की अहम ज़रूरत व तद्बीर की तरफ इशारा करते हुए कारेईने किराम को मुल्के शाम की सैर व तफरीह कराने का शर्फ हासिल करूंगा।

❀ हज़रत सिद्दीके अक्बर का सहाबए किराम से मश्वरा :-

अमीरुल मोमेनीन हज़रत सय्यिदोना अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो ने मुल्के शाम पर लश्कर कशी से कब्ल अस्हाबे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम से मश्वरा करने और उन की राए मा'लूम करने की गर्ज़ से इन्हें जमा कर के फरमाया कि ऐ

गिरोहे सहाबा ! आप को यह बात अच्छी तरह मा'लूम होगी कि रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने ईसाइयों की सरकशी और ज़ियादतियों का सद्दे बाब करने के लिये मुल्के शाम की ईसाई सल्तनत से जेहाद करने का इरादा फरमाया था। लैकिन आप के अज़्म के इस्तिकमाल के कब्ल अल्लाह तबारक व तआला ने अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को अपने पास बुला लिया। लेहाज़ा मैं लश्करे इस्लाम को मुल्के शाम की जानिब इर्साल करने का इरादा रखता हूं। और यह भी जान लो कि सरवरे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने दुनिया से पर्दा फरमाने से पहले मुझ से फरमाया था कि :

"मेरे लिये ज़मीन लपेटी गई, पस मैं ने ज़मीन के मशरिक व मग्रिब को देखा और अन्करीब मेरी उम्मत की हुकूमत वहां तक पहुंचेगी जहां तक मैं ने देखा है।" लेहाज़ा ऐ जमाअत मुस्लिमीन ! मुझे इस अम्र में अपनी उमदा राए और मश्वरे ज़ाहिर करो। तमाम सहाबा ने ब-यक ज़बान यही जवाब दिया कि ऐ हमारे सरदार ! हम आप के हुक्म के ताबेअ व महकूम हैं। आप की इताअत व फरमांबरदारी हम पर फर्ज़ है क्यूं कि अल्लाह तबारक व तआला ने कुरआने मजीद में इर्शाद फरमाया :

"اَطِيۡعُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوا الرَّسُوۡلَ وَاُولِى الۡاَمۡرِ مِنۡكُمۡ"

(सूरए निसा, आयत : 59)

तर्जुमा : हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और उन का जो तुम में हुकूमत वाले हैं (कन्ज़ुल ईमान)

लेहाज़ा ऐ अमीरुल मोमेनीन ! आप को जो मन्ज़ूर हो उस का हुक्म फरमाइये और जहां फौज कशी का कस्द है, हम को इर्साल फरमाइये। हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो जुम्ला मोमेनीन का यह जवाब सुन कर बहुत मसरूर हुए और आप ने उसी दिन जेहाद का ए'लान फरमा दिया। मुल्के अरब के तमाम शहरों और कस्बों के उमरा को एक ही मज़्मून व इबारत का खत लिखा कि मैं मुल्के शाम की तरफ इस्लामी लश्कर को भेजता हूं ताकि वह कुफ्फार व अशरार का मुकाबला करे। और उस मुल्क को फतह करे। अल्लाह की इताअत की तरफ दौडो और अपनी जान व माल से अल्लाह की राह में जेहाद करो।

हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो का यह खत ले कर हज़रत

अनस बिन मालिक रदियल्लाहो तआला अन्हो यमन, मक्कए मुअज़्ज़मा और उस के अतराफ में गए। अमीरुल मोमेनीन के खत ने मुसलमानों में जेहाद का जज़्बा पैदा कर दिया। लोग लब्बैक कहते हुए سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا की सदाअें बुलन्द करते हुए जेहाद की तैयारी में लग गए। ज़ादे राह और सामाने जंग फराहम करने में मसरूफ हो गए और हज़रत अनस बिन मालिक को यह कह कर मदीना तय्यबह रवाना किया कि आप पहले जा कर हमारे आने की इत्तेलाअ अमीरुल मोमेनीन की खिदमत में पहुंचा दें। हम आप के पीछे पीछे आ रहे हैं। लेहाज़ा हज़रत अनस ने मदीना लौट कर अमीरुल मोमेनीन को मुतफर्रिक मकामात से मुतअद्दिद कबाइल की आमद की इत्तेलाअ व खुशखबरी सुनाई। चंद ही दिनों के बा'द मुजाहेदीने इस्लाम जूक दर जूक और गिरोह दर गिरोह मदीना तय्यबह में जमा होने लगे।

- यमन से कौमे हुमैर ज़ेर सरदारी हज़रत जुल कला'उल हुमैरी सब से मुकद्दम आए।
- उन के बा'द कौमे मज़हज = उन के सरदार हज़रत कैस बिन हबीरा अल-मुरादी थे।
- उन के बा'द कबाइले कौमे तय = उन के सरदार हज़रत हाबिस बिन सईद ताई।
- उन के बा'द कौमे अज़्द = उन के सरदार हज़रत जुन्दब बिन अम्र अद्दौसी, इस गिरोह में हज़रत अबू हुरैरा भी थे।
- उन के बा'द कौमे बनू अबस = उन के सरदार हज़रत मैसरा बिन मस्रूक थे।
- उन के बा'द कौमे किनाना = उन के सरदार हज़रत कसम बिन शियम अल-कनानी थे।

तमाम मुजाहेदीन का लश्कर अतराफे मदीना में जमा हुवा। तमाम मुजाहेदीन अपने साथ सामाने जंग, घोडे, सवारी के दीगर जानवर, ज़ादे राह, और अह्लो अयाल भी ले आए थे।

इस्लामी लश्कर की मुल्के शाम रवानगी :-

इस्लामी लश्कर मदीना के करीब ठहरा हुवा था। अतराफे मदीना से भी काफी ता'दाद में मुजाहेदीन अज़्मे जेहाद कर के लश्कर में शामिल हुए थे। लश्कर की ता'दाद में रोज़ाना इज़ाफा हो रहा था। लश्कर के मुजाहेदीन शहरे मदीना मुनव्वरा से अश्या-ए खुरद

व नौश और अपने जानवरों का दाना व चारा मौल लेते थे। चंद दिनों में मदीना के ताजिरों का अनाज व गल्ले का ज़खीरा खत्म हो चला और अश्याए सर्फ की किल्लत मेहसूस की जाने लगी। खाने पीने और चारे की फराहमी में तक्लीफ होने लगी। लेहाज़ा बाहर से आए हुए कबाइल के सरदारों ने मश्वरा किया कि यहां ज़ियादह इकामत कर ने में किल्लते अश्या की तक्लीफ मज़ीद बढेगी। मुनासिब यह है कि हम हज़रत अमीरुल मो'मिनीन की खिदमत में जा कर इस्तिदआ करें कि वह हमें मुल्के शाम की जानिब कूच करने की इजाज़त मरहमत फरमाअें। तमाम कबाइल के सरदार मुत्तहेदा तौर पर अमीरुल मो'मिनीन की खिदमत में गए और अपना मुद्दआ गोश गुज़ार किया। अमीरुल मो'मिनीन ने उन की गुज़ारिश को शर्फे कबूलियत से नवाज़ते हुए उसी वक्त इस्तादा हो गए। अपने हमराह हज़रत उमर फारूक, हज़रत उस्मान गनी, हज़रत अली शेरे खुदा, हज़रत सईद बिन ज़ैद, हज़रत अम्र बिन नुफैल बिन ज़ैद व दीगर अकाबिरे सहाबए किराम रदियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन को ले कर उस मकाम पर तशरीफ लाए जहां मुजाहेदीने इस्लाम फिरोकश थे। मुजाहेदीन ने तहलीलो तक्बीर से आप का खैर मकदम किया। अमीरुल मोमेनीन ने तमाम को दुआए खैर से नवाज़ा और बा'दहु आप ने हस्बे ज़ैल तर्तीब से इस्लामी लश्कर को रवाना फरमाया।

- हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान को अलम अता कर के एक हज़ार सवारों पर सरदार मुकर्रर फरमाया।
- हज़रत रबीआ बिन आमिर को अलम अता कर के एक हज़ार सवारों पर सरदार मुकर्रर फरमाया।

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अबू बक्र रदियल्लाहो अन्हो ने लश्कर को कूच का हुक्म दिया और सनियतुल वदाअ नामी मकाम तक लश्कर के साथ पैदल चलते हुए गए और हस्बे ज़ैल वसाया फरमाने के बा'द वापस लौटे :

(1) सफर के दौरान बहुत तैज़ रफ्तारी से चलने का इस्रार मत करना।

(2) कोई शख्स भी लश्कर से अलग हो कर अकैला न चले।

(3) अह्म काम में मश्वरा करना।

(4) अद्ल व इन्साफ का तरीका इख्तेयार करना।

(5) ज़ुल्म व सितम से बाज़ रहेना।

(6) जब दुश्मन पर फतह पाओ तो कमसिन बच्चों, बुढों और औरतों को कत्ल न करना।

(7) खजूर और फलदार दरख्तों को न काटना।

(8) खेतियों को न जलाना।

(9) जिन जानवरों का खाना हलाल है उन के इलावा किसी भी जानवर को बिला-वजह कत्ल न करना।

(10) कुफ्फार से भी अगर अहद व पैमान करो तो इस में बे-वफाई न करना।

(11) सुलह को न तोडना।

(12) तारिकुद्दुनिया लोगों को कत्ल न करना और न ही उन के इबादत खानों को ढाना।

(13) दुश्मन के सामने तीन बातें पैश करना :

अव्वल यह कि इस्लाम कबूल करें।

दोम यह कि अगर इस्लाम कबूल नहीं करते तो जिज़्या अदा करें।

और सोम यह कि इस्लाम और जिज़्या दोनों का इन्कार करें तो उन के सरों पर अपनी तलवारें सौंतना।

मुल्के शाम की तरफ यह पहला लश्कर था जो हज़रत सिद्दीके अक्बर ने रवाना फरमाया। हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान और हज़रत रबीआ बिन आमिर दोनों के लश्कर तबूक और जाबिया के रास्ते से दमिश्क की तरफ कूच करते हुए आगे बढे।

पहला मा'रका ब-मकामे तबूक

हिरक्ल बादशाह ने मदीना मुनव्वरा में अपने कुछ जासूस मुखबिरी के लिये मुतअय्यन कर रखे थे और वह अरब मुतनस्सिरा या'नी नस्रानी अरब थे। जब इस्लामी लश्कर मुल्के शाम पर हम्ला के लिये जमा हो रहा था, तो जासूसों ने हिरक्ल बादशाह को इत्तेलाअ भेजी के लश्करे इस्लाम अन्करीब मुल्के शाम पर हम्ला करने के लिये कूच करने वाला है। इत्तेलाअ मिलते ही हिरक्ल ने अर्काने हुकूमत को जमा किया और उन को इस्लामी लश्कर की आमद की तफ्सील बताई। अर्काने हुकूमत ने कहा कि हम ज़रूर उन से लडेंगे। उन को अपने मुल्क में दाखिल होने से बाज़ रखेंगे बल्कि उन के मुल्क पर धावा बोल देंगे और उन के का'बा को खोद कर फैंक देंगे और उन में से किसी को ज़िन्दा न छोडेंगे। कैसरे रुम हिरक्ल ने अर्काने दौलत का यह जवाब सुना तो उस का सीना मारे खुशी के फूल गया और उस ने फौरन आठ हज़ार (८०००) सवारों का लश्कर हस्बे ज़ैल तर्तीब दे कर रवाना किया।

- दो हज़ार सवारों पर बतरीक बातलीक को सरदार मुकर्रर किया।
- दो हज़ार सवारों पर बातलीक के भाई बतरीक जर्जीस को सरदार मुकर्रर किया।
- दो हज़ार सवारों पर शर्ता के हाकिम लूका बिन शम्आन को सरदार मुकर्रर किया।
- दो हज़ार सवारों पर ग्ज़्ज़ा और अस्कलान के हाकिम सलिया को सरदार मुकर्रर किया।

मज़्कूरा चारों सरदार शुजाअत और ज़ीरकी में मश्हूर ज़माना और जंगी उमूर और फन्ने हर्ब में यक्ताए रोज़ गार थे। उन चारों की सरदारी में आठ हज़ार का रूमी लश्कर अपने मज़हबी मरासिम अदा करने के बा'द तबूक की जानिब रवाना हुवा। इस्लामी लश्कर तीन दिन से तबूक में पडाव किये हुए था। चौथे दिन लश्कर कूच की तैयारी कर रहा था कि नागाह रूमी लश्कर दूर से आता हुवा नज़र आया। आठ हज़ार सवारों के लश्कर के चलने की वजह

से गुबार मिस्ल बादल उठता हुवा नज़र आ रहा था । गुबार देख कर इस्लामी लश्कर होशियार हो गया । हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने एक हज़ार मुजाहिदों को कमीन गाह में छुपा दिया और हज़रत रबीआ बिन आमिर को उन पर अमीर मुकर्रर किया । बाकी मांदा एक हज़ार को रूमी लश्कर से मुकाबला करने मैदान में सामने रखा और सफों को तर्तीब देने लगे ।

आठ हज़ार का रूमी लश्कर अकडता, इतराता, आगे बढता हुवा आहिस्ता आहिस्ता इस्लामी लश्कर से करीब हो रहा था । रूमी लश्कर के सिपाहियों के खौद, ज़िरहें, नैज़े, तलवारें और सिपर आफ्ताब की रौशनी में मिस्ल आईना चमक रहे थे । और उन से शुआअें उठ रही थीं । ऐसा मेह्सूस हो रहा था कि आहनी इन्सानों का समुन्दरी सैलाब आ रहा है । रूमी सिपाही नाकूस बजा बजा कर सोने और चांदी की सलीबें बुलन्द कर के कलेमाते कुफ्र रटते हुए और शौर करते हुए, दिल धडका देने वाली हैबत का मुज़ाहेरा कर रहे थे । अब दोनों लश्करों के दरमियान बहुत ही कम फास्ला रह गया था । दोनों लश्कर एक दूसरे का आसानी से जाइज़ा ले सके, इतनी नज़दीकी हो गई थी । धडकनें तैज़ होती जा रही थीं । रूमी लश्कर की कसरत और साज़ व सामान की फरावानी देख कर इस्लामी लश्कर में कुर्ब व इज़तिराब की कैफियत थी । दिल की बे-करारी चेहरे से नुमायां होने लगी । हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने रूमी लश्कर की ता'दाद का तख्मीना लगाया तो उन को रूमी लश्कर की ता'दाद आठ से दस हज़ार तक मेह्सूस हूई । इस्लामी लश्कर सिर्फ दो हज़ार अफ्राद पर मुश्तमिल था । एक हज़ार मैदान में और एक हज़ार कमीन गाह में पोशीदह । हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने मुजाहेदीन में बढती हूई तश्वीश मेह्सूस कर ली । लेहाज़ा उन्हों ने मुजाहेदीन को ढारस देते हुए फरमाया कि ऐ गिरोहे मोमेनीन ! इस बात का यकीन रखो कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी मदद का वा'दा फरमाया है । कई मा'रकों में फरिश्तों को भेज कर तुम्हारी एआनत व मदद फरमाई है । ऐ इस्लाम के खिदमतगारो ! रूमी लश्कर की ता'दाद को खातिर में मत लाओ । रूमियों की कसरत और अपनी किल्लत से मुत्लक खौफ न खाओ । तुम्हारा नासिर और मददगार परवर्दगार है और वह कुरआने मजीद में इर्शाद फरमाता है :

"كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً بِإِذْنِ اللّٰهِ ط وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ"

(सूरा अल-बकरा, आयत : 249)

तर्जुमा : "बारहा कम जमाअत गालिब आई है ज़ियादह गिरोह पर अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह साबिरों के साथ है ।" (कन्ज़ुल ईमान)

अय मुसल्मानो ! हमारे महबूब आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया :

"اَلْجَنَّةُ تَحْتَ ظِلَالِ السُّيُوْفِ"

या'नी : "जन्नत तलवारों के साया के नीचे है"

लेहाज़ा, ऐ तौहीद व रिसालत के मतवालो ! गम न खाओ, खौफ न करो, अल्लाह की मदद पर ए'तेमाद कुल्ली रखो, मुल्के शाम में यह तुम्हारा पहला मा'रका है, इस्लामी लश्कर की तुम पहली किस्त हो, तुम यकीन और उम्मीद रखो कि इस्लामी लश्कर की दीगर किस्तें अन्करीब तुम्हारी कुमुक को पहुंचने वाली हैं । तुम अपने गुमान में अपने मुसलमान भाइयों को अपने करीब जानो । दुश्मन तुम पर हावी हो कर तुम्हारे कत्ल की जुर्अत न करें इस बात का ख्याल रखते हुए एहतियात और होशियारी से काम लो ।

हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान पन्दो नसाएह के ज़रीए मुजाहेदीन में एक जौश पैदा कर रहे थे कि रूमी लश्कर बिल्कुल करीब आ पहुंचा । रूमियों ने इस्लामी लश्कर की कलील ता'दाद देखी तो उन के हौसले बुलन्द हो गए । रूमी सरदारों ने अपने लश्कर को लल्कारते हुए कहा कि इन मुठ्ठी भर अरबों को नैज़ों की नोक पर लो और एक को भी ज़िन्दा भागने न दो । सलीब से मदद मांगो । सलीब की बरकत से ज़रूर तुम को फतह व गल्बा हासिल होगा । अपने सरदारों के उक्साने और जौश दिलाने पर रूमी लश्कर ने दफ्अतन यल्गार कर दी । आठ हज़ार के रूमी लश्कर ने एक हज़ार के इस्लामी लश्कर को नर्गा में ले लिया । जंग की आग के शो'ले भडक उठे । तलवारों की झन्कार, नैज़ों की बौछार, समसाम की भरमार, इस्लाम के कफन बरदोश मुजाहेदीन बडी दिलैरी से दुश्मनों का मुकाबला कर रहे थे । कत्ल व किताल शबाब पर था । ऐन उसी वक्त हज़रत रबीआ बिन आमिर एक हज़ार सवारों को ले कर कमीन गाह से निकले । घोडों की बागें ढीली छोड दीं और बिजली की मानिन्द दुश्मन के लश्कर पर टूट पडे । दूसरी जानिब से इस्लामी लश्कर के नए हम्ले से रूमी लश्कर बोखला गया । इस्लामी लश्कर की कुमुक आ पहोंची है इस वहमो गुमान में उन के अवसान खता कर गए । कदम डगमगा गए । दिल कांप उठे, हौसले टूट गए । हज़रत यज़ीद बिन सुफ्यान के साथियों ने हज़रत रबीआ बिन आमिर के लश्कर की सदाए तक्बीर सुनी तो उन में नया जौश पैदा हुवा । हम्ले की शिद्दत और जसत व खैज़ की सुरअत से रूमी घबरा उठे । तलवारों को मज़बूती से थामे हुए हाथ लरज़ने लगे । अपना देफ़ाअ करने की भी सकत न रही । रूमी लश्कर पूरे दबाव में आ गया । उन के सिपाही पीछे हटने लगे । इस्लामी

लश्कर के मुजाहिदों ने उन के सरों पर तलवार रख कर गाजर मूली की तरह काटना शुरू कर दिया। रूमी लश्कर को साबित कदम रखने के लिये रूमी सरदार बातलीक सिपाहियों को जंग की तर्गीब देने लगा। हज़रत रबीआ बिन आमिर ने करीब जा कर उस को शिद्दत से नैज़ा मारा, जो सुरीन तोड कर दूसरी जानिब निकला। बातलीक नैज़ा की मार की ताब न ला सका। ज़ौर से चींखा और बुरी तरह डकारता हुवा ज़मीन पर मुर्दा गिरा। बातलीक की मौत से रूमी लश्कर में कोहराम मच गया। बद-हवासी के आलम में राहे फरार इख्तेयार की और पीठ दिखा कर भागना शुरू किया।

मुजाहिदों ने मफरूर रूमियों का तआककुब किया और शम्शीर ज़नी के जौहर दिखाते हुए उन को काफी दूर तक हांक भगाया। इस मा'रका में रूमी लश्कर के दो हज़ार दो सौ (2200) सिपाही कत्ल हुए। इस्लामी लश्कर से एक सौ बीस (120) मुजाहिदों ने जामे शहादत नौश फरमाया।

भागते हुए रूमियों का दू-बारा पलटना :-

रूमी लश्कर के सिपाही मुजाहिदों से खौफ-ज़दा हो कर अपनी जान की खैर मनाते हुए दूम दबा कर भाग रहे थे। मक्तूल रूमी सरदार बातलीक के भाई सरदार जर्जीस ने अचानक मफरूर रूमी लश्कर को ठहरने का हुक्म दिया और फिर मुखातब हो कर कहा कि ऐ बन्दगाने सलीब ! हम कौन सा मुंह ले कर कैसरे रुम हिरक्ल के सामने जाअेंगे। मुसलमानों के छोटे से लश्कर ने हमारे बडे लश्कर को शिकस्ते फाश दे कर हमारे बहादुरों की लाशों से ज़मीन को भर दिया है। लेहाज़ा मैं ऐसी ज़िल्लत और हज़ीमत के साथ बादशाह के रूबरू जा कर शर्मसार नहीं होना चाहता। नीज़ मेरे भाई सरदार बातलीक को मुसलमानों ने बडी बे दर्दी से कत्ल किया है और जब तक मैं अपने भाई का इन्तेकाम न ले लूंगा हरगिज़ यहां से न जाऊंगा। अगर तुम मेरा साथ दो, फबेहा वरना मैं अकैला ठहरता हूं, तुम्हें बुज़दिलों की तरह भागना है तो भाग जाओ।

सरदार जर्जीस की मज़कूरा वल्वला खैज़ गुफ्तगू ने रूमी लश्कर में एक नया जौश पैदा कर दिया और तबूक से भाग कर जहां तक पहुंचे थे वहीं पर लश्कर ठहर गया। खैमे नस्ब कर के पडाव किया। लश्कर को ठहरा कर जर्जीस सरदार ने अपने मो'तमद नस्रानी अरब कदाह बिन वासेला को इस्लामी लश्कर की तरफ ब-तौर एलची भेजा ताकि वह इस्लामी लश्कर से किसी आकिल व दाना शख्स को ब-हैसियते नुमाइन्दा तलब कर के अपने साथ लाए और उस से दर्याफ्त कर के मा'लूम करें कि इस्लामी लश्कर हम से क्या चाहता है ?

अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र वाकदी रिवायत करते है कि जब कदाह बिन वासेला रूमी सरदार जर्जीस का पैगाम ले कर इस्लामी लश्कर में आया तो हज़रत रबीआ बिन आमिर उस के साथ जाने के लिये खडे हुए। हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने हज़रत रबीआ से सरगोशी करते हुए फरमाया कि ऐ मेरे ईमानी भाई ! रूमी लश्कर में तुम्हारा जाना मुझे मुनासिब मा'लूम नहीं होता क्यूं कि तुम ने रूमी लश्कर के सरदार को कत्ल किया है। लेहाज़ा अंदेशा है कि रूमी तुम्हारे साथ गद्र और बे-वफाई करेंगे। हज़रत रबीआ ने कुरआने मजीद की आयत तिलावत फरमाई :

"قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَا اِلَّا مَاكَتَبَ اللّٰهُ لَنَا هُوَ مَوْلٰنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ"

(सूरए-तौबा, आयत : 51)

तर्जुमा : "तुम फरमाओ हमें न पहुंचेगा मगर जो अल्लाह ने हमारे लिये लिख दिया। वह हमारा मौला है और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये।" (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत रबीआ बिन आमिर, कदाह बिन वासेला के साथ रूमी लश्कर के कैम्प में जाने के लिये रवाना हुए। लैकिन रवाना होते वक्त उन्हों ने हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान से कहा कि में जब तक रूमी लश्कर के कैम्प में रहूं तब तक आप मुसल्सल रूमी लश्कर की हरकात व सक्नात पर नज़र रखें और इस्लामी लश्कर को हम्ला के लिये तैयार रखें। अगर रूमी मेरे साथ गद्र और बे-वफाई करें तो तुम फौरन धावा बोल देना। हज़रत रबीआ बिन आमिर रूमी लश्कर के कैम्प में पहोंच कर जर्जीस के खैमा में दाखिल हुए लैकिन घोडे की बाग हाथ में लिये हुए ज़मीन पर बैठ गए। जर्जीस ने हज़रत रबीआ से कहा कि ऐ अरबी बिरादर ! तुम हम से क्या चाहते हो ? फरमाया इस्लाम या जिज़्या या फिर जंग, जर्जीस ने कहा कि हम तुम्हारे लश्कर के हर पैदल सिपाही को एक वसक गल्ला और एक दीनार, नीज़ तुम्हारे लश्कर के हर सरदार को दस वसक गल्ला और एक सौ (१००) दीनार देंगे। इलावा अज़ीं तुम्हारे खलीफा को एक हज़ार (१०००) दीनार और एक सौ वसक गल्ला देंगे लैकिन इस शर्त पर कि तुम हम से सुलह कर लो और सुल्हा नामा तह्रीर कर लिया जाए कि फरीकैन में से कोई भी किसी फरीक पर हम्ला न करे। हज़रत रबीआ बिन आमिर ने जर्जीस की पैशकश ना-मन्ज़ूर कर दी और फरमाया कि हमारी जो तीन शर्तें हैं या'नी (1) कबूले इस्लाम या (2) जिज़्या

(3) या जंग, जो मैं तुम को पहले बता चुका हूं, उन के इलावा किसी दूसरी शर्त पर हम तुम से सुल्हा नहीं कर सक्ते।

हिरक्ल बादशाह ने रूमी लश्कर के साथ दीने नस्रानी के ज़बरदस्त राहिब और मलाहिम के आलिम को बरकत व नुस्रत की दुआ करने के लिये भेजा था। उस का नाम ''सैकला'' था। सरदार जर्जीस ने सैकला को अपने खैमा में बुलाया, ताकि वह हज़रत रबीआ के साथ दीने इस्लाम और रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के तअल्लुक से सवालात करे और तह्कीक करे कि दीने इस्लाम की हकीकत क्या है ? सैकला ने हज़रत रबीआ बिन आमिर से नबी-ए आखिरुज़ ज़मां, मे'राज, रमज़ान के रोज़े, नैकी का अज्र, दुरूद व सलाम के तअल्लुक से कुतुबे साबिका में मज़्कूर शहादत व बशारत की रौशनी में सवालात किये। हज़रत रबीआ बिन आमिर ने सैकला के तमाम सवालात के कुरआने मजीद की आयात के हवालों से इत्मीनान कुन व तसल्ली बख्श जवाबात मरहमत फरमाए। जिन को सुन कर सैकला महवे हैरत हो गया और करीब था कि वह जर्जीस को इस्लाम की सदाकत का ए'तेराफ व इकरार करने का हुक्म दे दे कि एक हादिसा पैश आया...

दौराने गुफ्तगू जर्जीस के अह्बाब में से एक शख्स ने हज़रत रबीआ बिन आमिर को पहचान लिया कि यह शख्स तो सरदार जर्जीस के भाई बातलीक का कातिल है। वह अपनी जगह से उठ कर जर्जीस के पास आया और हज़रत रबीआ के मुतअल्लिक कान में बात कही। सुनते ही जर्जीस आग बगोला हो गया। गुस्सा के मारे उस की आंखें लाल हो गईं। फौरन तलवार को म्यान से निकाल कर हज़रत रबीआ पर हम्ला करने खडा हो गया। हज़रत रबीआ बिन आमिर पहले से ही मोहतात और चौकन्ना थे। कब्ल इस के कि जर्जीस उन पर वार करने में काम्याब हो, उन्हों ने बिजली की सुरअत से अपनी शम्शीर को बरहेना कर के जर्जीस का सर उडा दिया। जर्जीस के साथी यह देख कर बर-अंगेख्ता हो गए और तमाम के तमाम हज़रत रबीआ की तरफ लपके ताकि उन को पकड कर शहीद कर दें। लैकिन हज़रत रबीआ ने एक जसत लगाई और घोडे की पीठ पर जा पहुंचे और अपने वफादार घोडे को एडी लगाई। अपने मालिक का इशारा पाते ही वफादार अस्प चिराग-पा हो कर ऐसा चमक कर दौडा कि जो भी सामने आता उस पर चढ बेठता। हज़रत रबीआ भी घोडे की पीठ पर बैठे हुए अपनी तलवार घूमाने लगे। रूमी लश्कर में एक हलचल मच गई। रूमी घबराहट में दौड भाग करने लगे। दूर खडे हुए हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने रूमियों की खल्बली देखी तो

ताड लिया कि ज़रूर कुछ गडबडी हूई है। लेहाज़ा उन्हों ने ना'रए तक्बीर कहते हुए घोडों की बागें ढीली छोड दीं। इधर हज़रत रबीआ बिन आमिर तने तन्हा रूमियों के नर्गा में जान हथेली में लिये दुश्मनों से टक्कर ले रहे थे कि इस्लामी लश्कर आ पहुंचा और जो मुकातला हुवा है उस की सहीह मन्ज़र कशी अल्फाज़ में मुम्किन नहीं। रूमी सिपाही भी अपनी जान पर आ कर लडते थे। लैकिन इस्लामी लश्कर के शेरों का मुकाबला करना उन के लिये ना-मुम्किन मरहला था। मुजाहिदों ने रूमियों को अपनी तलवारों और नैज़ों की नोकों पर लिया। रूमियों को दिन में तारे नज़र आने लगे। इस पर तुर्रा यह कि जब दोनों लश्कर अपनी पूरी ताबो तवानाई से मस्रूफे जंग थे ऐन उसी वक्त हज़रत शुरहबील बिन हसना कातिबे रसूल इस्लामी लश्कर ले कर वहां पहुंचे। अपने भाइयों को मुशरिकों से जंग करते देख कर वह भी शामिले जंग हो गए। रूमियों को हर तरफ से घैर लिया और शम्शीर ज़नी की वह शिद्दत की कि रूमी लश्कर का एक सिपाही भी ज़िन्दा न बचा। संगरेज़ों के बजाए रूमी लश्कर के सिपाहियों की लाशों से मैदान भर गया :

वह चका चाक खन्जर से आती सदा
मुस्तफा तेरी सौलत पे लाखों सलाम

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

नोट : अभी कातिब रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम हज़रत शुरहबील बिन हसना का ज़िक्र हुवा है उन के नाम में अक्सर लोग गलती करते हैं। और ''शरजील'' कहते हैं यह गलत है। सहीह नाम शुरहबील है।

रूमी लश्कर की तबाही व बरबादी का यह आलम था कि आठ हज़ार (८०००) सिपाही से एक फर्द भी ज़िन्दा न बचा। तमाम मौत की आगोश में पहोंच कर वासिले जहन्नम हो गए। आठ हज़ार के लश्कर का माल व अस्बाब और ''सामाने हर्ब, अश्या-ए-सर्फ, मल्बूसात और दीगर बहुत सारी चीज़ें मैदान में ला-वारिस पडी हूई थीं, जो इस्लामी लश्कर के कब्ज़े में ब-तौरे गनीमत आईं। मुल्के शाम में इस्लामी लश्कर की यह पहली फतह थी और सब से पहला माल था जो गनीमत में हासिल हुवा।

माले गनीमत के अहकाम

अब हम यहां माले गनीमत के तअल्लुक से कुछ गुफ्तगू करेंगे। गनीमत के जो शरई अहकाम हैं उन तमाम अहकाम को यहां बयान करना मुम्किन नहीं, एक दो बुन्यादी हुक्म का तज़्केरा किया जाएगा, ताकि अवाम को मा'लूम हो जाए कि गनीमत क्या है ? और किस तरह तक्सीम होती है ? इस तरह एक सरसरी मा'लूमात इन्हें हासिल हो जाए।

शरई इस्तेलाह में गनीमत उस माल को कहा जाता है जो मुसलमानों को कुफ्फार व मुश्रेकीन से जंग में ब-तरीके कहरो गल्बा हासिल हो। जैसा कि अभी अभी आप जंगे तबूक के सिलसिले में मुतालआ फरमा चुके कि आठ हज़ार के रूमी लश्कर का साज़ो सामान इस्लामी लश्कर के हाथ लगा।

यह अम्र मुसल्लम है कि जब दो लश्कर मैदाने जंग में टकराते हैं तो एक को फतह हासिल होती है और एक को शिकस्त। जीतने वाला लश्कर हारने वाले लश्कर के जंगी साज़ो सामान और मालो अस्बाब पर कब्ज़ा कर लेता है। लश्कर का सिपाह सालार उस माल को अपनी मर्ज़ी और मन्शा के मुताबिक लश्कर में तक्सीम करता है या फिर जिस बादशाह का लश्कर होता है, उस को पहुंचा देता है। हज़रत आदम अलैहिस्सलातो वस्सलाम के ज़माना से ले कर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के ज़मान-ए अक्दस तक हज़ारों साल का फास्ला है। इस दौरान बे-शुमार सल्तनतें, हुकूमतें, अमारात, बादशाहत वुकूअ में आईं और हर एक के पास अपने मुल्की इन्तेज़ाम की बहाली, दुश्मन से हिफाज़त और सरकशों के ज़रर से देफाअ के लिये फौजें थीं, जिन में गाहे गाहे जंग व किताल होता था। अह्दे माज़ी में रूए ज़मीन पर हज़ारों जंगें हूईं और जैसा कि हम ने अर्ज़ किया कि हर जंग में एक की जीत और दूसरे की हार होती है। और जीतने वाले लश्कर का हारने वाले लश्कर के मालो अस्बाब पर कब्ज़ा जाइज़ व दुरुस्त होता है, गसब नहीं। लैकिन मक्बूज़ा माल जिस को माले गनीमत कहा जाता है। उस के तसर्रुफ और तक्सीम का कोई काएदा और उसूल न था। नतीजतन गनीमत के माल की वजह से आपसी जंग व जिदाल,झगडा फसाद, मारपीट, चोरी, डकैती, खयानत, अदावत, बगावत, वगैरा जैसे रज़ील हादेसात पैश आते थे। आपसी ए'तेमाद और अह्द व वफा पर कारी ज़र्ब लगती थी। मिसाल के

तौर पर ज़ैद नाम के बादशाह का लश्कर बक्र नाम के बादशाह के लश्कर से मैदाने जंग में टकराया। ज़ैद बादशाह के लश्कर को फतह हासिल हूई और बक्र बादशाह के लश्कर को शिकस्त। ज़ैद बादशाह के लश्करी बक्र बादशाह के लश्कर का मालो अस्बाब लूटें गे। इस लूट मार की कैफियत पर गौर करें। लश्कर का साज़ो सामान किसी एक मकाम पर तो नहीं होगा बल्कि मैदान में जहां लश्कर का पडाव होगा वहां बे-शुमार खैमे होंगे। इलावा अज़ीं मैदाने कारज़ार में हज़ारों मक्तूलीन की लाशें पडी होंगीं और उन मुर्दा जिस्मों पर कीमती लिबास, सोना, चांदी हीरे और जवाहिर के ज़ैवरात, ज़िरह, खौद, अस्लहे वगैरा होंगे। माले गनीमत जमा करने और लूटने वाले भी हज़ारों की ता'दाद में होंगे। अब हर शख्स की यही कोशिश होगी कि जितना हो सके कीमती और ज़ियादह माल हासिल कर लूं। इस लालच में हर एक दूसरे पर सब्कत की कोशिश करेगा।

फर्ज़ कीजिये एक लाश पर कीमती ज़ैवरात थे उस पर दो शख्स आ पहुंचे। फित्री बात है कि हर एक कीमती ज़ैवरात खुद हासिल करने की कोशिश करेगा। नौबत छीना छीनी और मार पिट की आ जाएगी। ज़ोर आवर शख्स कमज़ोर के हाथ कुछ नहीं आने देगा और सारा माल अपनी जैब में डाल कर रफू-चक्कर हो जाएगा। कमज़ोर शख्स मुंह तक्ता रह जाएगा और शिर्कते जंग पर कफे अफसोस मलता रहेगा। लैकिन उस जाने वाले को अच्छी तरह पहचानता होगा। पस बसा अवकात जंग से वापस लौटने के बा'द वह कमज़ोर शख्स अपने हल्का के ज़ोर आवरों को ले कर उस शख्स से अपना हक्क लेने के लिये कोशिश करेगा। नतीजा यह होगा कि माल उगलवाने के सिलसिले में आपस में ही झगडा, फसाद और कत्ल व गारतगरी शुरू हो जाएगी।

कभी ऐसा भी होता कि सारा माले गनीमत बादशाह के खज़ाने में जमा कराने का हुक्म होता, सिपाही "कीमती माल अपनी जैब में और मा'मूली माल बादशाह के पेट में" पर अमल करने की कोशिश करते। ऐसी सूरत में खयानत परवान चढती कि दयानतदारी से सारा माल खज़ाने में जमा कर देता है, तो खुद कुछ नहीं पाता। लेहाज़ा हक्क तल्फी होती और अगर चंद ऐसे यक जा जमा हो जाते तो बगावत होती।

मज़्कूरा सूरते अहवाल के इलावा और भी फित्ने गनीमत की वजह से पैदा हो सक्ते थे। मसलन :

आपसी इख्तिलाफात, गनीमत की तक्सीम में जानिबदाराना रवय्या और बे ए'तदाली वगैरा, अल-गर्ज़ गनीमत की वजह से बहुत से फित्ने पैदा होने के कवी इम्कानात थे और

तारीख में ऐसी कईं मिसालें पाई जाती हैं कि गनीमत की तक्सीम में इन्साफ न होने पर मुल्की खाना जंगी शुरू हूई।

अल-मुख्तसर ! इस्लाम से पहले गनीमत के लिये कोई बा-ज़ाब्ता कानून न था। मौका' व महल के ए'तबार से गनीमत का मुआमला सुलझाया जाता था और अद्ल व इन्साफ का खून कर के जब्रो गसब से काम लिया जाता था।

लैकिन इस्लाम एक ऐसा दीन है जो अद्ल व इन्साफ और एतदाल व मसावात का अलम-बरदार है। यह इन्सानी ज़िन्दगी के हर पहलू को अद्ल व इन्साफ से आरास्ता करता है। इस्लाम ने बनी नौ' इन्सान को जो ज़ाबत-ए हयात अता किया वह बडा आदिलाना है। इस्लाम के दस्तूरुल अमल के हर कानून में यह खूबी पाई जाती है कि वह अद्ल व इन्साफ की कसौटी पर बिल्कुल खरा उतरता है। जो हर ए'तबार से नफा' बख्श है।

इस्लामी तारीख के अवराक जंगों के तज़्किरे से आरास्ता हैं। इस्लामी लश्कर ने करीब करीब तमाम जंगों में फतह व नुस्रत हासिल की है और खासी मिक्दार में गनाइम पाए हैं। लैकिन रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने गनाइम के मुआमले में आलमे दुनिया को एक नई राह और रौशनी अता फरमाई है। अज़ीम सल्तनतों के लश्करे आ'ज़म के कमान्डर इन चीफ जिन उमूर को सतही और सरसरी नज़र से देखने से आजिज़ो कासिर थे, उन उमूर को रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की दूर-बीं निगाहों ने नफा' बख्श ज़ाविया से मुलाहेज़ा फरमाया और जो अहकाम व कवानीन नाफिज़ फरमाए, वह निज़ामे शरीअत की बुन्याद के लिये आहनी इस्तेहकाम साबित हुए। गनीमत के तअल्लुक से इस्लाम में जिस कद्र अहकाम सादिर किये गए हैं इतने अहकाम किसी भी मज़हब में कतअन नहीं पाए जाते। किसी मुल्क के महकम-ए फौज के आईन में भी शायद न पाए जाऐंगे।

۞ इस्लामी लश्कर को जब गनाइम हासिल होने लगे और मुजाहेदीने इस्लाम के हाथ गनाइम से भर ने लगे, तो गनाइम के तअल्लुक से अहकाम नाज़िल होने शुरू हुए। कुरआने मजीद में है :

" يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ط قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ "

(सूरतुल अन्फाल, आयत : 1)

तर्जुमा : " ऐ महबूब ! तुम से गनीमतों को पूछते हैं। तुम फरमाओ गनीमतों के मालिक अल्लाह और रसूल हैं।" (कन्जुल ईमान)

मुन्दरजा बाला आयत में अल्लाह तबारक व तआला ने गनीमत का तज़्केरा फरमाया है। कुरआने मजीद में गनीमत से मन्सूब कर के पूरी सूरह नाज़िल फरमाई है। जिस का नाम अल-अन्फाल है। इस सूरह में दस रुकू' और पच्हत्तर आयात हैं। अल-अन्फाल के मा'नी गनीमत के होते हैं। लुगत के हवाले टटोलें :

अन्फाल = लूट का माल = Plunder - Spoil (हवाला :- **दी रॉयल पर्शियन, इंग्लिश डिक्शनरी,** सफहा : 40)

गनीमत = लूट का माल, मुफ्त मिली हूई चीज़, काबिले कद्र, उमदा,

जमा :- गनाइम, Plinder, Pillage, Spoli, Booty, good fortune,Abundance

हवाला : (1) **फीरोज़ुल-लुगात**, सफहा : 918

(2) **दी रॉयल पर्शियन इंग्लिश डिक्शनरी**, सफहा : 282

नोट :- चूं कि मैदाने जंग में फतह हासिल करने वाला लश्कर शिकस्त पाने वाले लश्कर का तमाम मालो अस्बाब छीन लेता है। लेहाज़ा इस को इस्तेलाहे लुगत में लूट का माल कहते हैं। क्यूं कि जो लूट का माल होता है वह किसी भी किस्म की कीमत या मुआवज़ा अदा किये बगैर मुफ्त हासिल होता है और मैदाने जंग में जो गनाइम हासिल होते हैं वह भी मुफ्त ही हासिल होते हैं। इस हकीकत और मा'नी पर महमूल कर के लुगत की इस्तेलाह में गनीमत को लूट का माल कहा जाता है। चोरी, कज़्ज़ाकी, डकैती, धोका, बाज़ी, बे ईमानी, बद-अहदी, फरेब या गसब किये हुए माल को हरगिज़ गनीमत नहीं कहा जाएगा।

अब हम सूरए अन्फाल की मुन्दरजा बाला आयत की तरफ रूजूअ करें। इस आयत में अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को मुखातब फरमा कर इर्शाद फरमाया है कि ऐ महबूब ! तुम से गनीमत के बारे में लोग पूछते हैं। या'नी मैदाने जंग में जो गनीमत का माल हासिल होता है, इस में अपना हिस्सा पूछते हैं और मा'लूम करना चाहते हैं कि हासिल शुदा माले गनीमत में से हम को कितना मिलेगा ? इस सवाल से उन की ज़ाती मफाद परस्ती, नफ्स की तमाअ और हरीस ज़ेहनियत का पता

चलता है । इस्लामी लश्कर का मुजाहिद दुनिया के माल की तरफ अपनी तवज्जोह मर्कूज़ कर के इस के हुसूल का ख्वाहिशमन्द हो, यह एक ऐसा अम्र है जो मुख्लिस मर्दे मोमिन की शायाने शान नहीं । क्यूं कि इस्लाम का मुजाहिद माल की लालच में नहीं बल्कि अल्लाह और रसूल की रज़ा और खुशनूदी हासिल करने के लिये जेहाद करता है । उस के जेहाद की सई का बदला दुनिया का माल नहीं बल्कि आखेरत की दाइमी ने'मतें और अबदी सआदतें हैं । लेहाज़ा मुजाहिद की निय्यत को माले दुनिया की तमाअ की आमेज़िश से मुबर्रा और मुनज़्ज़ह करने के लिये यह हुक्म नाज़िल फरमाया गया :

"اَلْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ" या'नी गनीमतों के मालिक अल्लाह और रसूल हैं । ताकि मुजाहिद मैदाने जंग में अपनी तमाम तर कुव्वतो ताकत से लडते वक्त अपने दिल में यह ख्याल भी पैदा न करे कि जंग में फतह के इन्आम में माले गनीमत भी हासिल होगा बल्कि वह माले गनीमत से बे परवाह, और मुस्तग्नी हो कर अपनी निय्यत को सिर्फ अल्लाह और रसूल की रज़ा मन्दी के लिये खालिस बनाए और पूरी जां फेशानी से मस्रूफे जेहाद व किताल हो । उस को हर वक्त यह ख्याल मुस्तहज़र रहे कि जो माले गनीमत हासिल होगा उस में मेरा कुछ भी नहीं । सब कुछ अल्लाह और रसूल का है । मेरा काम तो सिर्फ "اِعْلَاءِ كَلِمَةِ الْحَق" है और इस काम के लिये मुझे अपनी जान भी कुरबान करनी पडे तो कोई हरज नहीं । अगर ज़िन्दा रहा तो **''गाज़ी''** और अगर मर गया तो **''शहीद''** का रुत्बा मिलेगा । इसी जज़्बए ईसार व कुरबानी को मतमहे नज़र बना कर और इसी नैक निय्यती के साथ मुजाहेदीने इस्लाम मैदाने जंग में अल्लाह की राह में जेहाद करते हैं ।

हिज़्बुल्लाह और जैशुर रहमान के कफन बरदोश मुजाहिदों ने गनाइम के हुसूल की तमाअ से बईद रेह कर अल्लाह और रसूल की खुशनूदी की खातिर इख्लासे निय्यत के साथ अपना सब कुछ कुरबान कर के दिखा दिया । सिर्फ ज़बानी इक्रार तक महदूद न रहते हुए उसे अमली जामा पहना कर साबित कर दिया और दुनिया को यह आलमगीर पैगाम दिया :

देहन में ज़बां तुम्हारे लिये, बदन में है जां तुम्हारे लिये
हम आए यहां तुम्हारे लिये, उठें भी वहां तुम्हारे लिये

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

मुजाहेदीने इस्लाम की बे लौस खिदमते जेहाद पर इन्आमात और रब्बे नईम व मुन्इम की रहमत व ने'मत का नुज़ूल शुरू होता है । और गनीमत के मुतअल्लिक इर्शादे बारी तआला होता है :

" وَاعْلَمُوْا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِی الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ "

(सूरतुल अन्फाल, आयत : 41)

तर्जुमा : ''और जान लो कि जो कुछ गनीमत लो, तो उस का पांचवां हिस्सा खास अल्लाह और रसूल व कराबत वालों और यतीमों और मोहताजों और मुसाफिरों का है ।'' (कन्जुल ईमान)

इस आयत में मुजाहिदों के लिये गनीमत में हिस्सा मुकर्रर फरमाया गया । इब्तेदा में तो यह हुक्म था कि ''गनीमतों के मालिक अल्लाह और रसूल हैं ।'' या'नी गनीमत के माल से मुजाहिदों को कुछ भी न मिलेगा । तमाम माले गनीमत अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की मिल्कीयत है । मुजाहिदों ने पहले हुक्म पर सर तस्लीमे खम करते हुए "آمَنَّا وَصَدَّقْنَا" की अमली तस्वीर बन कर सरफरोशी और जां निसारी पर साबित कदम रहे । अब दूसरा हुक्म नाज़िल हुवा और मुजाहिदों को गनाइम से बडा हिस्सा दिया जा रहा है । इर्शाद होता है : فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ या'नी पांचवां हिस्सा खास अल्लाह और रसूल के लिये । जिस का मत्लब यह हुवा कि हासिल शुदा माले गनीमत से पांचवां हिस्सा या'नी 20 फीसद (20%) अल्लाह और उस के रसूल का और बाकी चार हिस्से या'नी 80 फीसद (80%) मुजाहिदों का ।

अब हम अल्लाह व रसूल का जो पांचवां हिस्सा है इस के मुतअल्लिक शरई अहकाम देखें । तफ्सील से वज़ाहत करना यहां मुम्किन नहीं । लेहाज़ा इख्तिसारन बुन्यादी कानून पैशे खिदमत हैं ।

मुन्दरजा बाला सूरए अल–अन्फाल की आयत : 41 में अल्लाह और रसूल का पांचवां हिस्सा मुकर्रर किया गया । इस में कराबत वाले, यतीम और मुसाफिर का भी ज़िक्र किया गया है । पांचवें हिस्सा (20%) में से ज़िल कुर्बा, यतामा, मसाकीन और इब्नुस्सबील भी हिस्सा पाऐंगे । इस आयत की तफ्सीर में मुफस्सिरीने किराम ने वज़ाहत फरमाई है :

तफ्सीर : माले गनीमत पांच हिस्सों पर तक्सीम किया जाए। इस में से चार हिस्से गानेमीन (मुजाहिदों) के लिये है। गनीमत का पांचवां हिस्सा फिर पांच हिस्सों पर तक्सीम होगा। उन में से एक हिस्सा माल का पचीसवां 25 वां हिस्सा हुवा। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के लिये है। और एक हिस्सा आप के अहल कराबत के लिये और तीन हिस्से यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफिरों के लिये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के बा'द हुज़ूर और आप के अहल कराबत के हिस्से भी यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफिरों को मिलेंगे और यह पांचों हिस्से इन्ही तीन पर तक्सीम हो जाअेंगे। यही कौल है इमाम अबू हनीफा रदियल्लाहो तआला अन्हो का।

(हवाला : - तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान ,सफहा : 327)

मज़्कूरा तक्सीम को वाज़ेह तौर पर समझने के लिये मुन्दरजा ज़ैल खाका ज़हन नशीं करने की कारेईने किराम की खिदमत में मुअद्दबाना गुज़ारिश है :-

माले गनीमत 100%

तक्सीमे हिसस

गानेमीन (मुजाहिदों) का हिस्सा	अल्लाह और रसूल का हिस्सा
कुल माल के चार हिस्से = 80%	कुल माल का पांचवां हिस्सा = 20%
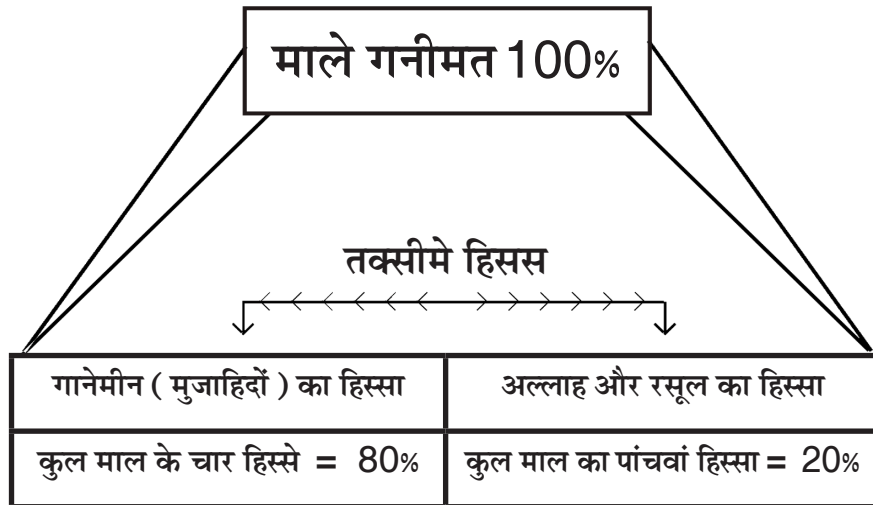
तक्सीम का तरीका	तक्सीम का तरीका	
अगले सफ्हात में " मुजाहिदों में गनाइम की तक्सीम में रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का इख्तेयार" उन्वान के तहत तफ्सील मुलाहेज़ा फरमाअें।	1. रसूले अक्दस का हिस्सा	4%
	2. हुज़ूर के रिश्तेदारों का हिस्सा	4%
	3. यतीमों का हिस्सा	4%
	4. फुकरा मसाकीन का हिस्सा	4%
	5. मुसाफिरों (इब्नुस्सबील) का हिस्सा	4%
	मीज़ान	20%

नोट : मुन्दरजा बाला तक्सीम में 20 फीसद से रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का हिस्सा 4% फीसद और आप के कराबत दारों का हिस्सा 4% फीसद मिला कर 8% फीसद हिस्सा भी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के दुनिया से पर्दा फरमाने के बा'द यतामा, मसाकीन और मुसाफिरों पर तक्सीम होने लगा। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का हिस्सा और आप के कराबत दारों का हिस्सा सिर्फ आप की ज़ाहेरी हयात तक था। आप के पर्दा फरमाने के बा'द कुल माल का 20 फीसद (20%) माल यतीमों, मिस्कीनों, और मुसाफिरों के हिस्से में आने लगा।

गनाइम की तक्सीम से मुजाहिदों की हौसला अफ्ज़ाई

सिर्फ अल्लाह और रसूल की खुशनूदी व रज़ामन्दी हासिल करने के लिये खुलूसे निय्यत से राहे खुदा में जेहाद करने वालों को अल्लाह तआला ने गनीमत जैसे बडे तोहफे से नवाज़ा और उन की खिदमते दीन का अज्रे अज़ीम आखेरत के लिये मुअख्खर फरमा के माल व मताए दुनिया का तोहफा मुकद्दम अता फरमाया। इस से मुजाहिदों की हौसला अफ्ज़ाई और कदरदानी हूई। इस हकीकत को यूं समझो कि एक बहुत बडे रईस ताजिर के डिपार्टमेन्टल स्टोर में पचास मुलाज़िम काम कर रहे हैं। उन को सिर्फ खाने पीने और ज़रुरियाते ज़िन्दगी पूरी करने के लिये मा'मूली सी तनख्वाह दी जाती थी। लेकिन फिर भी वह तमाम मुलाज़िमीन

बडी मेहनत और दयानतदारी से काम कर के अपने मालिक का लाखों का मुनाफ़ा' करा देते। हर महीने मुलाज़िमीन की तनख्वाह व दीगर ज़रूरी अखराजात सर्फ करने के बा'द लाखों का खालिस मुनाफ़ा' मालिक की तिजोरी में ज़खीरा होता। मालिक को अपने तमाम मज़दूरों पर ए'तेमादे कामिल था और वह उन की खिदमत का रोज़ाना मुआइना करता। अपने मुलाज़िमीन की दयानत दारी और इख्लासे निय्यत का वह मो'तरिफ था। एक दिन मालिक ने अपने तमाम मुलाज़िमीन को जमा कर के फरमाया कि अब तक तुम लोगों ने बडी मेहनत व मशक्कत बरदाश्त कर के मेरी तिजारत को उरूज व बुलन्दी की मन्ज़िल तक पहुंचाया। मैं तुम्हारी फर्ज़ शनासी से बहुत खुश हूं। लेहाज़ा मैं ने फैसला किया है कि अब से इस तिजारत में जो भी आमदनी होगी इस में से मैं सिर्फ पांचवां हिस्सा (20%) ले कर बकिया चार हिस्से (80%) का मुनाफ़ा' तुम लोगों को ब-तौर इन्आमो इकराम मुस्तकिल देता रहूंगा। ज़रा गौर फरमाओं ! मालिक की इस सखावत से उस के नौकर की खुशी व फरहत का क्या आलम होगा ? उन के वहमो गुमान में भी जो बात न थी, बल्कि ऐसी बात वह ख्वाब में सोच नहीं सक्ते थे, वह अम्र वाकेआ और सच हो गई। तमाम मुलाज़िमीन मालिक की सखावत व इनायत और छोटे लोगों की कदरदानी की ऐसी बे मिसाल नवाज़िश पर आफरीं सद आफरीं पुकार उठेंगे। उन की कितनी बडी हौसला अफ्ज़ाई की गई। अब उन के काम करने का हौसला,तरीका और अन्दाज़ कितना निराला और अनोखा होगा। अब तक यकीनन खुलूसे निय्यत से काम अंजाम देते थे। लैकिन अब दोहरे जौशो खरोश से अपने फराइज़ अंजाम देने में मुन्हमिक होंगे। इलावा अज़ीं अपने मालिक की शुक्र गुज़ारी और इताअत व ता'ज़ीम में किसी किस्म की कसर उठा नहीं रखेंगे।

बिला तम्सील जिन मुजाहेदीने इस्लाम को गनाइम से कुछ नहीं मिलता था, उन को दफ्अतन अस्सी फीसद (80%) हिस्सा अता फरमा कर मालिके बे नियाज़ जले जलालहु ने उन को मआश के इक्तिसाब की कुल्फत से बे नियाज़ व सुबुक्दोश फरमा दिया। अब मुजाहिदों को फिक्रे मआश नहीं। अपनी तमाम तवज्जोहात सिर्फ दीने इस्लाम की नश्रो इशाअत और जेहाद फी सबीलिल्लाह की तरफ मर्कूज़ कर ली। रब तबारक व तआला की तरफ से इन्आमो इकराम और नवाज़िश की शुक्र गुज़ारी में वह अपना खून राहे खुदा में पानी की तरह बहाने के लिये हर वक्त मुस्तइद रहेगा और जंग के मैदान में उतरते ही मिस्ले शैरे बबर हम्ला आवर हो कर दुश्मनों को भेड और बकरी की तरह फाड कर रख देगा। इलावा अज़ीं शुक्रे नेअम के शौक में इबादतो रियाज़त, तक्वा व परहैज़गारी, कसरत सौम व सलात, ज़िक्र व अज़्कार, तिलावत व वज़ाइफ, ताअत व बन्दगी वगैरा आ'माल सालेहा की तरफ अपनी रग्बत बढा कर हुक्मे "وَاشْكُرُوْالِىْ" की ता'मील में मसरूफ रहेगा।

मुजाहिदों में गनाइम की तक्सीम में रसूले अकरम [h] का इख्तेयार

माले गनीमत में से 20 फीसद अल्लाह और रसूल का हिस्सा निकालने के बा'द बकिया 80 फीसद माल मुजाहिदों में तक्सीम किया जाएगा। लैकिन इस तक्सीम में किस को कितना हिस्सा देना है ?इस का कामिल और कुल्ली इख्तेयार अल्लाह तआला ने अपने महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को अता फरमाया।

ज़मानए जाहिलियत में जब अरबों के दरमियान जंग होती थी और जब माले गनीमत हासिल होता, तो उस की तक्सीम में बे ए'तदाली और ना-इन्साफी होती थी।

"ज़मान-ए-जाहिलियत में दस्तूर था कि गनीमत में से एक चेहारुम (25 फीसद) माल सरदार ले लेता। बाकी कौम के लिये छोड देता। इस में से मालदार लोग बहुत ज़ियादह ले लेते थे और गरीबों के लिये बहुत ही थोडा बचता था।"

(हवाला : - तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 983)

लैकिन इस्लाम ने ना-इन्साफी की तमाम रस्में उठा दीं और मीज़ाने अद्ल व इन्साफ काइम कर के हक्क दारों को उन का हक्क दिलाया। रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने गनीमत के तअल्लुक से जो कवानीनो अहकाम नाफिज़ फरमाए, उन में अद्ल व इन्साफ की झलक के साथ साथ फौज की हौसला अफ्ज़ाई का पहलू वाज़ेह तौर पर नुमायां है। अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को जमीअ उलूम अता फरमाने के साथ साथ उन उलूम के सहीह इस्ते'माल की महारते कामिला भी वदीअत फरमाई थी। गनाइम की तक्सीम के सिलसिला में इर्शादे बारी तआला है :

"وَمَا اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا"

(सूरतुल हश्र, आयत : 7)

तर्जुमा : "और जो कुछ तुम्हें रसूल अता फरमाओं वह लो, और जिस से मना' फरमाओं बाज़ रहो।" (कन्जुल ईमान)

तफ्सीर : ''या'नी गनीमत में से क्यूं कि वह तुम्हारे लिये हलाल है।''

(तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 983)

अब हम लश्कर की तश्कील, उस के महकमे, हर महकमे की अलाहिदा ज़िम्मेदारी, उस के ओहदे के लाइक अफराद का तकर्रुर वगैरा पर सरसरी गुफ्तगू करेंगे। लैकिन इस गुफ्तगू के आगाज़ से कब्ल एक वज़ाहत कर दूं कि हम चौदह सौ साल पहले की फौज की बात कर रहे हैं। उस ज़माने में जदीद आलाते जंग तो कुजा ? बन्दूक या ट्रक भी न थे। किसी किस्म की कोई मशीनरी ईजाद न हूई थी। तमाम उमूर हाथ से अंजाम दिये जाते थे। न बिजली ईजाद हूई थी, न टेलीफोन की सहूलत थी।

उस ज़माने में जब लश्कर मुरत्तब व मुरक्कब किया जाता, तो मुख्तलिफ अन्वा' व अक्साम के अफराद, बहाइम और अश्या पर मुश्तमिल होता। लडने वाले सिपाही भी कई तरह के होते। कोई घोडे पर सवार, कोई ऊंट पर, तो कोई दराज़गोश या खच्चर पर, सवारी के घोडे भी अलग अलग मसलन अतीक, असील, हज्जीन, शहरी वगैरा होते। लश्कर में सिपाही भी कई किस्म के होते थे, कोई तलवार ज़नी पर मामूर, कोई तीर अन्दाज़ी पर मुतअय्यन, कोई अलम-बरदारी और मुखबिरी के काम पर मुकर्रर, कोई ज़ख्मियों की मर्हम पट्टी या'नी जर्राही की खिदमत अंजाम देने पर मुअय्यन, कोई तब्बाखी और खैमे नस्ब करने और बोझ उठाने की हम्माली वगैरा पर मामूर होता। इसी तरह लश्कर के दस्ते भी अलग अलग होते। मुकद्दमा, मैसरा, मैमना, कल्ब, वस्त, अकब, खलफ वगैरा। किसी को खतरे के मकाम में लडना पडता, मसलन मुकद्दमा वाले को लश्कर के आगे रहना है और यह सब से ज़ियादह खतरे का मकाम होता है। कोई महफूज़ और सलामत जगह पर इस्तादा होता है, मसलन अकब या'नी फौज के पीछे के हिस्सा वाले पर कम खतरा होता है।

अल-गरज़ मुख्तलिफ नौइयत और अलग अलग तब्कात के अफराद से फौज मुरक्कब होती है। अगर गनीमत में सब का हिस्सा यक्सां व बराबर होगा तो जो लोग ज़ियादह खतरे मोल लिया करते हैं उन की सहीह कदरदानी न होगी। जो शख्स अपनी मिल्कियत का कीमती घोडा ले कर लश्कर में शामिल हुवा है उस को अगर पा-प्यादा सिपाही के बराबर हिस्सा दिया जाए तो उस की बे कद्री होगी। लेहाज़ा रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हर सिपाही का हिस्सा उस के काम की नौइयत और अहमियत के पैशे नज़र मुकर्रर फरमाया। ताकि अद्ल व एतेदाल भी काइम रहे और सिपाहियों की मुनासिब कदरदानी कर के उन की हौसला अफ्ज़ाई और शुजाअत की रग्बत दिलाई जाए। मसलन :

- पा-प्यादा लडने वाले मुजाहिद से सवार मुजाहिद का हिस्सा ज़ियादह मुतअय्यन फरमाया ताकि अपनी सवारी के जानवर को चारा वगैरा खिलाने में जो अखराजात साहिबे सवारी ने बरदाश्त किये हों, उस का मुआवज़ा मिल जाए और वह दो-बारा जब भी ज़रूरत पैश आए तो घोडे पर सवार हो कर हाज़िर हो। इलावा अज़ीं पा-प्यादा को भी मुस्तकबिल में सवारी ले कर आने की रग्बत हो।
- घोडे पर सवार हो कर आने वाले को अपना हिस्सा मज़ीद मिलने के इलावा घोडे का भी हिस्सा अलग से दिया जाता और उस हिस्से का ए'तबार घोडे की नस्ल पर मुन्हसिर होता। या'नी अरबी नस्ल के अस्ल घोडे का हिस्सा गैर नस्ल के कम असील और हज्जीन घोडे से दूगना दिया जाता था। क्यूं कि कम असील घोडे के मुकाबले में असील घोडे की कीमत बहुत ज़ियादह होती है। इलावा अज़ीं हज्जीन और कम असील घोडे के मुकाबले में अरबी नस्ल का असील व अतीक घोडा जंग के मैदान में ज़ियादह कार आमद होता है। लेहाज़ा असील घोडे का हिस्सा ज़ियादह मुकर्रर करने से आइन्दा जंग में सिपाही इसी नस्ल के घोडे का इन्तेखाब कर के इस्लामी लश्कर की जंगी ताकत में इज़ाफा करेगा।
- इसी तरह जो शख्स मुखबिरी के काम पर गया हुवा है और मैदाने जंग में मौजूद नहीं फिर भी उस को गनाइम के हिस्से से बहरा मन्द फरमाया।
- दो लश्कर आमने सामने खडे हों और यल्गार शुरू न हूई हो और दुश्मन के लश्कर से कोई शख्स मैदान में आ कर लडने के लिये मुकाबिल तलब करे और इस्लामी लश्कर से कोई शख्स उस का मुकाबला करने जाए और दुश्मन को कत्ल कर दे तो मक्तूल का तमाम साज़ो सामान, मुकाबला करने वाले शख्स को तन्हा दिया जाएगा। इस में लश्कर के दीगर मुजाहिदों को हिस्सा नहीं दिया जाएगा। इस इन्आम की नवाज़िश में यह मसलेहत है कि दुश्मन के लश्कर से जब भी कोई आ कर मुकाबला के लिये लल्कारे तो मुजाहेदीने इस्लाम मुकाबला के लिये सब्कत करें और बिला तवक्कुफ निकल कर इस्लामी लश्कर की हैबत बिठा दें।

इसी तरह लश्कर के हर महकमा के हर अफराद के हिसस उस के काम की नौइयत के ए'तबार से मुकर्रर किये गए। जिन का तफ्सीली जाइज़ा इस वक्त मुम्किन नहीं। अगर उन तमाम के हिसस पर ही गुफ्तगू की जाए, तो इस उन्वान पर एक मुस्तकिल और ज़खीम किताब मुरत्तब हो जाएगी। लेहाज़ा इस उन्वान की मुफस्सल गुफ्तगू में साअत व किर्तास की किल्लत मानेअ और तूले तह्रीर का खौफ सद्दे राह है। कुतुबे तफासीर व अहादीस व सैर व तवारीख व फिक्ह में मर्कूम व मस्तूर तफ्सील के मुतालाअ से मा'लूमात में इज़ाफा फरमाऐं। गनीमत की तक्सीम के तअल्लुक से नाज़ेरीन की ज़ियाफते तबआ की खातिर कुछ अहादीस पैशे खिदमत हैं :

हदीस : हज़रत जुबैर बिन अल–अव्वाम जिन का शुमार अशरए मोबश्शरह में होता है, नीज़ वह हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के फूफी ज़ाद भाई, और जिन का लकब हवारीए रसूल है, वह रिवायत फरमाते हैं कि जंगे हुनैन के दिन मेरे साथ दो घोडे थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने मुझ को पांच सहम (हिस्से)और मेरे घोडे को चार सहम अता फरमाए। अमीरुल मोमेनीन खलीफतुल मुस्लिमीन सय्यिदोना उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया कि सच्चे हैं जुबैर बिन अल–अव्वाम ,ब–तहकीक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हुनैन के दिन उन को पांच सहम अता फरमाए थे।"

(हवाला फुतूहुश्शाम, अज़ अल्लामा वाकदी, सफहा : 275)

हदीस : "हज़रत सय्यिदोना उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो रिवायत फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने कम असील घोडे के लिये एक हिस्सा और असील घोडे के लिये दो हिस्से मुकर्रर फरमाए।"

(हवाला : – हाशिया फुतूहुश्शाम, सफहा : 274)

हदीस : जंगे बद्र को जाते हुए हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हज़रत सहल बिन अतीक बिन नो'मान बिन अम्र बिन अतीक और हज़रत हारिस बिन सुमा बिन अम्र बिन ऐतक को मकामे रौहा में किसी काम से भेजा। यह दोनों हज़रात लश्कर से जुदा हो गए और जंगे बद्र के मा'रका में मौजूद न थे। लैकिन लश्कर के काम से गए हुए थे, लेहाज़ा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने बद्र के माले गनीमत से उन दोनों को हिस्सा अता फरमाया।

(हवाला :– मगाज़ीयुस सादिका, अज़ :– अल्लामा वाकदी, सफहा : 118)

हदीस : हज़रत सय्यिदोना उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं : कि गनाइम की तक्सीम में अह्ले शम्शीर को फज़ीलत दो और हर ज़ी हक्क को उस का हक्क दो।

(हवाला : – हाशिया फुतूहुश्शाम अज़ अल्लामा वाकदी, सफहा : 274)

हासिल कलाम यह कि इस्लाम ने दुनिया के सामने अद्ल व इन्साफ की ऐसी खुश्गवार फिज़ा काइम की है कि जिस की नज़ीर नहीं मिलती। ज़मानए जाहिलियत में लश्कर के सिपाही को गनाइम से बराए नाम ही हिस्सा दिया जाता था और इस की हक्क तल्फी की जाती। लैकिन इस्लाम ने ज़ी हक्क को उस का हक्क दिला कर अद्ल व एतदाल काइम किया। लश्कर के हर शख्स को हस्बे मर्तबा और फै'ल की नौइयतो खुसुसियत को मद्दे–नज़र रख कर उस की मेहनत का मुनासिब मुआवज़ा अता किया गया ताकि किसी को एहसासे महरूमी व ना–कद्री न हो। हर शख्स मश्कूर व मुत्मइन रहे, और काम करने वाले का हौसला बर–करार रहे और इस के जौश व जज़्बा में किसी किस्म की कमी वाकेअ न हो। ज़मान–ए–जाहिलियत में यह दस्तूर था कि लश्कर का सरदार 25 फीसद ले लेता, हालां कि 25 फीसद कहने को होता था। और हकीकत में वह 25 फीसद से बहुत ज़ियादह ले लेता था। माल का मग्ज़ सरदार के पेट में चला जाता था। उस के बा'द अह्ले सर्वत और ताकत अपना हाथ साफ करते और कीमती माल अपनी झोली में डाल लेते। माल का गोश्त उन के शिकम में पहोंच जाता। सिपाहियों के लिये टूटा, फूटा बे कद्र व कीमत, और रद्दी

माल बचता। सूखी हड्डियां उन के हिस्से में आतीं। मेहनत व जां फशानी वह करते, कुल्फत व मशक्कत वह बरदाश्त करते, जान को हथेली में ले कर खतरों से वह खेलते लैकिन मुआवज़ा बराए नाम होता। **"माल खाए मदारी और मार खाए बन्दर"** वाली कहावत जैसा मुआमला होता। और इस पे भी जुल्म यह होता कि सिपाहियों के लिये मग्ज़ चूसने के बा'द जो माल बचता उस की तक्सीम में भी छीना छीनी और खींचा तानी होती। किसी को मिला ,किसी को नहीं। जिस को जो कुछ मिला इस पर बा दिले ना-ख्वास्ता मुत्मइन है और मुत्लक महरूम रहने वाला कफे अफसोस मलता है। न माल का शुमार होता, न लश्कर की ता'दाद का सहीह अंदाज़ा लगाया जाता,न हिस्से की मिक्दार मुतअय्यन होती, न मुहज़्ज़ब तरीके से बटवारा होता बल्कि इफ्रात व तफ्रीत का तर्ज़ अमल इख्तेयार किया जाता।

लैकिन रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने माज़ी के दस्तूर और रस्म व रिवाज की ना इन्साफी और बे ए'तदाली के तौर तरीके यक्सर नेस्तो नाबूद फरमा कर अद्ल गुस्तरी का निज़ाम काइम फरमा दिया। गनीमत के माल का शुमार होता, उस की मौजूदह कीमत बाज़ार के निर्ख से मुतअय्यन की जाती। मुतअद्दिद अक्साम के अस्बाब की अलग अलग फेहरिस्त मुरत्तब की जाती, सब का मीज़ान लगाया जाता, मुजाहिदों की ता'दाद, इन के काम की नौइयत, मरातिब, सवारी के घोडे का शुमार, उन के अक्साम वगैरा का बारीकी से जाइज़ा लिया जाता और उस के बा'द हिसस की मिक्दार तय कर के हर एक को हस्बे मरातिब इज़्ज़तो इकराम के साथ उस का हिस्सा दिया जाता। कारेईने किराम की फरहत तबाअ की खातिर ज़ैल में तक्सीमे गनाइम के तरीके की इफ्हामी तम्सील पेश है :-

❁ फर्ज़ करो कि फतह हासिल करने वाले इस्लामी लश्कर की ता'दाद सात सौ (७००) है। इस में पांच सौ मुजाहिद घोडों पर सवार हैं। उन पांच सौ घोडों में से तीन सौ (३००) घोडे खालिस अरबी नस्ल के असील और अतीक हैं और दो सौ घोडे कम असील और हज्जीन हैं। इस तरह कुल पांच सौ सिपाही सवारी वाले हैं और बकिया पा प्यादा की ता'दाद दो सौ है। कुल मिला कर सात सौ सिपाही हुए। फतह के सिला में लश्कर को जो माले गनीमत हासिल हुवा उस की कीमत दस लाख दिरहम है। अब यह माल हस्बे ज़ैल तरीके से मुजाहिदों में तक्सीम होगा :-

कुल माल दस लाख (10,00,000) में से अल्लाह व रसूल का पांचवां हिस्सा (20%) जिस को इस्लामी इस्तेलाह में "खुम्स" कहते हैं, वह निकाला जाएगा। जो दो लाख होगा।

कुल माले गनीमत	10,00,000
खुम्स —	2,00,000
बचत	8,00,000

आठ लाख दिरहम मुजाहिदों में हस्बे ज़ैल तरकीब से तक्सीम होंगे :-

- **पांच सौ सिपाही घोडे पर सवार हो कर लडे लेहाज़ा हर एक को दो सहम (हिस्से)** = 1000 सहम
- **दो सौ सिपाही पा प्यादा लडे लेहाज़ा हर एक को एक सहम** = 200 सहम
- **तीन सौ घोडे अरबी नस्ल के असील व अतीक होने की वजह हर घोडे के दो सहम** = 600 सहम
- **दो सौ घोडे कम असील और हज्जीन होने की वजह से हर घोडे का एक सहम** = 200 सहम
- **मीज़ान** 2000 सहम

या'नी कुल माल के दो हज़ार (२०००) सहम (हिस्से) किये जाअेंगे और हर सहम चार सौ दिरहम का होगा। लेहाज़ा :

❁ जिस मुजाहिद ने अरबी नस्ल के घोडे पर सवार हो कर शम्शीर ज़नी की है उस को हस्बे ज़ैल हिस्सा मिलेगा :

- **शम्शीर ज़नी की अहमियत की वजह से उस के काम की कद्र व मन्ज़िलत पर दो सहम** = 800 दिरहम
- **अरबी नस्ल के असील घोडे का इस्ते'माल करने की वजह से घोडे के दो सहम** = 800 दिरहम
- **मुजाहिद कुल हिस्सा पाएगा चार सहम** 1600 दिरहम

❁ जिस मुजाहिद ने कम असील और हज्जीन घोडे पर सवार हो कर शम्शीर ज़नी की है उस को हस्बे ज़ैल हिस्सा मिलेगा :

- **शम्शीर ज़नी की अहम खिदमत की कद्र व मन्ज़िलत की वजह से इस को दो सहम** = 800 दिरहम
- **कम अस्ल व हज्जीन घोडे पर सवार होने की वजह से घोडे का एक सहम** = 400 दिरहम
- **मुजाहिद कुल हिस्सा पाएगा तीन सहम** 1200 दिरहम

۞ **जिस मुजाहिद ने पा प्यादा जेहाद में शिर्कत की और शम्शीर ज़नी नहीं की उस को एक सहम = 400 दिरहम**

۞ जिस मुजाहिद ने कम अस्ल व हज्जीन घोडे पर सवार हो कर शम्शीर ज़नी नहीं की उस को हस्बे ज़ैल हिस्सा मिलेगा :

- **शम्शीर ज़नी न करना और सिर्फ जेहाद में शिर्कत करना और दीगर खिदमत अंजाम देना एक सहम** = 400 दिरहम
- **कम अस्ल व हज्जीन घोडे पर सवार होने की वजह से घोडे का एक सहम** = 400 दिरहम
- **मुजाहिद कुल हिस्सा पाएगा दो सहम** = 800 दिरहम

मज़्कूरा तक्सीम कारेईन के इफ्हाम व तफ्हीम के लिये कयासी व इख्तेराई मिसाल है। हालां कि गनीमत की तक्सीम अलग अलग मरातिब व खिदमत के ए'तबार से बहुत ही तवील अहकाम पर मुश्तमिल है। मुख्तसर यह कि इस्लाम ने दुनिया को बावर करा दिया कि हमारे यहां हर मुआमले में इन्साफ व एतदाल ही है। नैकी करने वाले की नैकी और अमल करने वाले का अमल ज़ाए' नहीं होता। आखेरत में तो यकीनन अज्रे अज़ीम मिलेगा लैकिन दुनिया में भी उसे माल व दौलत के इन्आमो इकराम से नवाज़ा जाता है।

कुरआने मजीद में अल्लाह तबारक व तआला का इर्शाद गिरामी है :

"اِنَّ اللّٰہَ لَا یُضِیۡعُ اَجۡرَالۡمُحۡسِنِیۡنَ"

(सूरए-तौबा ,आयत : 120)

तर्जुमा : ''बे शक अल्लाह नेकों का नेग (अज्र) ज़ाए' नहीं करता।''

(कन्ज़ुल ईमान)

जेहाद फी सबीलिल्लाह बहुत बडी नैकी है और कुरआन में किये गए वा'दे के मुताबिक नैकी करने वाले को उस की नैकी का नेग या'नी बदला, मुआवज़ा, अज्र अल्लाह तआला दुनिया में भी अता फरमाता है और आखेरत में भी ज़रूर अता करेगा। दुनिया में जेहाद कर ने वालों की कद्र करते हुए माले गनीमत के इन्आम से नवाज़ा गया। इस इन्आमे गनीमत का एक बडा फाइदा यह हुवा कि मुजाहिदों को हस्बुल मरातिब हिसस देने से इस्लामी लश्कर खुद ब-खूद तश्कील व तर्तीब पा गया। दीगर ममालिक के बादशाह अपने मुल्क

की हिफाज़त के लिये हमेंशा फौज का दस्ता मुस्तइद करते। फौज के सिपाही व अफ्सरान की तनख्वाहें और दीगर अखराजात बरदाश्त करते थे। लैकिन रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने गनाइम की तक्सीम की जो तर्तीब मुतअय्यन फरमाई थी, इस का सब से बडा फाइदा यह हुवा कि फौज के मुस्तकिल और दाइमी अखराजात से बराअत हासिल हूई। जब भी लश्कर कशी की ज़रूरत मेह्सूस हूई एक ऐ'लान कर दिया कि दीने इस्लाम पर वक्त आ पडा है। दुश्मनाने इस्लाम से मुकाबला होने वाला है, लेहाज़ा मुजाहेदीन जेहाद के लिये हाज़िर हो जाऐं। बस इत्ना ऐ'लान करना काफी हो जाता था। किसी को यह कहने की भी ज़रूरत न होती थी कि अच्छी नस्ल के घोडे पर सवार हो कर आना। बल्कि हर मुजाहिद यह कोशिश करता था कि अच्छी नस्ल के घोडे पर सवार हो कर जाउं ताकि उमदा नस्ल के घोडे की वजह से जंग अच्छी लडूं, गनीमत से ज़ाइद हिस्सा उस पर मुस्तज़ाद। इसी तरह जंग के मैदान में दुश्मन के मुकाबले में शम्शीर ज़नी करने से भी कोई मुजाहिद गुरेज़ न करता था क्यूं कि हर मुजाहिद को मा'लूम था कि शम्शीर ज़नी करने वाले मुजाहिद की मुनासिब कदरदानी कर के गनीमत के इन्आम व इकराम से नवाज़ा जाता है। इस्लाम की यह जम्हूरियत पर मुश्तमिल पालीसी इतनी नफा' बख्श साबित हूई कि लश्करे इस्लाम में शामिल होने वाला हर मुजाहिद आ'ला किस्म के घोडे और बुलन्द हौसले के साथ शामिल होता और मारक-ए कारज़ार में शुजाअत के जौहर दिखा कर दुश्मन की छावनी को मातम कदा में तब्दील कर देता।

۞ अहकामे शरीअत में हुज़ूरे अक्दस का इख्तेयार व तसर्रुफ :-

एक अम्र की भी वज़ाहत कर देना ज़रूरी है कि गनीमत के तअल्लुक से जो अहकाम व ज़वाबीत हैं उस पर उम्मत को अमल करना लाज़मी और ज़रूरी है। सहाबए किराम रिदवानुल्लाह तआला अलैहिम के दौर में गनीमत के तअल्लुक से कोई मुआमला दर पैश होता तो वह हज़रात इस का फैसला हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के कौल व फे'ल की रौशनी में करते थे। लैकिन जब तक हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला तआला अलैह व सल्लम ने दुनिया से पर्दा नहीं फरमाया था, तब तक इस्लामी अहकाम व कवानीन रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की मुबारक मर्ज़ी पर मुन्हसिर थे। अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को अहकामे शरीअत के तअल्लुक से भी तमाम इख्तियारात अता फरमाए थे। जिस दस्तूर को चाहें उसे बर-करार रखें, जिस कानून को चाहें उसे मौकूफ व मन्सूख

फरमा दें। जिस हुक्म में चाहें उस में तर्मीम फरमाऐं जिस को चाहें अता करें ,जिस को न चाहें महरूम फरमा दें, जिस के लिये जो भी चाहें हलाल कर दें, जिस के लिये जो कुछ भी चाहें हराम फरमा दें। यह अम्र मुसल्लम है कि अहकामे शरीअत हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को मुफव्विज़ हैं। आप मुख्तारे कुल हैं। आयाते कुरआन व मत्ने अहादीस इस पर शाहिद आदिल हैं। तमाम सहाबा, ताबेईन, ओलमा और अइम्मा बल्कि तमाम उम्मत का इस पर इज्मा' है और सब के नज़दीक यह अम्र मुसल्लम है :

तेरी कज़ा खलीफए अहकामे ज़ुल जलाल
तेरी रज़ा हलीफ कज़ा व कदर की है

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

इमामे इश्को मोहब्बत ,इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रहु के इस शे'र की तशरीह व तौज़ीह फकीर सरापा तक्सीर की किताब **"इरफाने रज़ा दर मदहे मुस्तफा"** में मुलाहेज़ा फरमाऐं।

माले गनीमत में खुम्स की वज़ाहत :-

जैसा कि अवराके साबिका में बयान हुवा कि माले गनीमत में अल्लाह व रसूल का (खुम्स) पांचवां (20%) हिस्सा होता है, फिर इस के पांच हिस्से किये जाते हैं।

(1) हुज़ूरे अक्दस का हिस्सा

(2) हुज़ूरे अक्दस के कराबत दारों का हिस्सा

(3) यतीमों का हिस्सा

(4) मिस्कीनों का हिस्सा

(5) मुसाफिरों का हिस्सा।

खुम्स या'नी कुल गनीमत का 20% फीसदी माल हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की बारगाहे आली में पैश किया जाता और हुज़ूरे अक्दस इस माल को सहीह मस्रफ में इस्ते'माल फरमाते।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का हिस्सा और आप के कराबत दारों का हिस्सा भी ज़ियादह तर हाजत मन्द मोमेनीन के इस्ते'माल में ही आता।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम अपने लिये कुछ न रखते थे। बल्कि जो कुछ भी आप के पास होता था अता फरमा देते थे। आप ने किसी भी ज़रूरत मन्द को मायूस नहीं किया। आप ने कभी भी किसी साइल के सवाल को **"ना"** कह कर रद्द नहीं किया। किसी को **"ना"** कहना आप की आदत ही नहीं थी।

- बुखारी शरीफ और मुस्लिम शरीफ में हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहो तआला अन्हो से मर्वी है :

"हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम लोगों में सब से ज़ियादह करीम सब से बढ कर सखी और सब से बढ कर जूद वाले थे"

- अहादीस सहीहा में मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम से कभी कोई ऐसा सवाल न किया गया और न कोई ऐसी चीज़ मांगी गई, जिस के जवाब में आप ने **"ला"** या'नी **"नहीं"** फरमाया हो। जो शख्स आप से कुछ मांगता कबूल करते और मरहमत फरमाते।

(मदारिजुन नबुव्वत, जिल्द 1, सफहा 92)

हम भिकारी वह करीम उन का खुदा उन से फुज़ू,
और "ना" कहना नहीं आदत रसूलुल्लाह की।

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

- तिर्मिज़ी शरीफ की रिवायत में है कि एक मरतबा आप की खिदमत में नव्वे हज़ार (90,000) दिरहम लाए गए। आप ने उन्हें चटाई पर रख कर तक्सीम करना शुरू कर दिया और किसी साइल को महरूम न रखा, यहां तक कि सब तक्सीम फरमा दिये। सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम।

- सहीह बुखारी शरीफ में हज़रत अनस रदियल्लाहो तआला अन्हो से मर्वी है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमत में "बहरैन" से कुछ माल लाया गया। आप ने फरमाया इसे मस्जिद में फैला दो (उस वक्त आप मस्जिद में तशरीफ फरमा थे) फिर आप मस्जिद से बाहर तशरीफ ले आए और उस माल की तरफ नज़र तक न डाली। फिर जब आप

वापस मस्जिद में तशरीफ लाए, तो नमाज़ से फारिग हो कर माल के नज़दीक तशरीफ फरमा हुए और लोगों को बांटना शुरू किया और जब आप उठे तो एक दिरहम भी बाकी न रहा था।

हज़रत इब्ने अबी शैबा रदियल्लाहो तआला अन्हो की रिवायत में है कि वह माल एक लाख दिरहम थे। जिसे हज़रत अला बिन हज़रमी रदियल्लाहो तआला अन्हो ने बहरैन के खिराज से भेजा था और यह पहला माल था, जो हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमत में लाया गया था।

❁ जंगे हुनैन (हवाज़िन) 8, सन हिजरी में इस्लामी लश्कर की फतहे अज़ीम हूई और गनीमत का माल जमा कर के "जोअराना" नाम के मकाम पर लाया गया। छ हज़ार बुर्दे (गुलाम) चौबीस हज़ार ऊंट, चालीस हज़ार से ज़ियादह बकरियां और चार हज़ार उकिय्या चांदी माले गनीमत में आया था। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने दस्ते जूदो सखा लोगों पर कुशादह फरमाया और तमाम माल तक्सीम फरमा दिया।

(मदारिजुन नबुव्वत, जिल्द : 2, सफहा : 532)

तूले तह्रीर को मद्दे नज़र रखते हुए मुन्दरजा बाला चंद वाकेआत पर इक्तिफा करते हुए सिर्फ इत्ना अर्ज़ करना है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम में जूद व करम और सखा व अता की सिफत तबई और पैदाइशी थी। जो कुछ आप के पास मौजूद होता अता फरमा देते और इस शान से अता फरमाते कि अपने लिये कुछ बाकी न रखते और माल न रहने का खौफ व अंदेशा न फरमाते। ऐसे वाकेआत की तफ्सीली मा'लूमात के लिये फकीर सरापा तक्सीर की किताब "**इरफाने रज़ा दर मदहे मुस्तफा**" में मुन्दरजा ज़ैल अश्आर की तशरीह में मर्कूम वाकेआत मुलाहेज़ा फरमाऐं :

मेरे करीम से गर कतरा किसी ने मांगा,
दरिया बहा दिये हैं दूर्र बे बहा दिये हैं।
वाह क्या जूदो करम है शहे बतहा तेरा,
नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा।

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

गनीमत से अल्लाह व रसूल का पांचवां हिस्सा (20%) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमत में पैश होता, तो खुम्स में से आप अपने लिये और अपने कराबत दारों के लिये कुछ न लेते बल्कि तमाम माल फुकरा व मसाकीन और यतामा को इनायत फरमा देते। उस माल में से ज़रूरत मन्दों की ज़रुरियात पूरी फरमाते। कभी ऐसा होता कि जेहाद में शिर्कत कर ने की निय्यत से कोई मोमिन मुख्लिस आया, लैकिन सफरे जेहाद के लिये ज़ादे राह और सामाने जंग नहीं है, तो उस को रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम उस माल से साज़ो सामान इनायत फरमा देते। इस तरह गरीबों, मोहताजों, मिस्कीनों, यतीमों, मुसाफिरों और खस्ता हालों की ज़रुरियात खुम्स से पूरी फरमाते और खुम्स का माल बैतुल माल की सूरत में तब्दील हो जाता। इस्लाम में बैतुल माल का तरीका राइज कर के रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने गरीब परवरी और मिस्कीन नवाज़ी की मिसाल पैश की है।

अगर रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम खुम्स से अपना और अपने कराबत दारों का मुअय्यन हिस्सा लेते और जमा करते तो आप के पास और आप के कराबत दारों के पास काफी माल जमा होता और आसाइशे ज़िन्दगी के सामान फराहम कर के ऐश व आराम की ज़िन्दगी बसर कर सक्ते थे, लैकिन आप ने दुनिया और माले दुनिया की तरफ लहज़ा भर भी इल्तिफात नहीं फरमाया। बल्कि "اَلْفَقْرُ فَخْرِىْ" या'नी "**फकीरी पर मैं नाज़ा हूं**" फरमाया। इस का अंदाज़ा ज़ैल में मज़कूर सिर्फ दो वाकेआत से लगा सक्ते हैं :

❁ शहेनशाहे कौनेन की शहेज़ादी, जिगर पारए रसूल, राहते जाने नबी, सय्यदतुन निसा, खातूने जन्नत, सय्येदा,ताहिरा, तय्यबेह, ज़ाहेरा, सय्यदतुना फातिमा रदियल्लाहो तआला अन्हा अपने घर का तमाम काम अपने मुबारक हाथों से अंजाम देती थीं। आग के सामने बैठ कर रोटी पकाना, झाड़ू देना, चक्की पीसना, वगैरा। यहां तक कि आप के मुकद्दस हाथों में छाले पड गए। एक मरतबा अपने वालिद शफीक, रब के रफीक, जाने आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की खिदमते अक्दस में हाज़िर हो कर एक खादिमा तलब की, ताकि वह घरेलू काम में आप का हाथ बटाए। मालिके कौनेन सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया, मैं तुम्हें ऐसी चीज़ बताता हूं जो खादिम से बेहतर है। जब तुम सोने का इरादा करो तो 33, मरतबा सुब्हानल्लाह, 33, मरतबा अलहम्दो लिल्लाह, 34, मरतबा अल्लाहु अक्बर पढ लिया करो।

अगर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम हासिल शुदा माले गनीमत के खुम्स में से अपने कराबत दारों का मुतअय्यन हिस्सा उन पर सर्फ फरमाते, तो शहज़ादी-ए रसूल, हज़्रत फातिमा रदियल्लाहो तआला अन्हा को चक्की पीसने की नौबत न आती, बल्कि एक के बजाए दस खादिमा उन की खिदमत में हाज़िर होतीं।

❁ बयहकी शरीफ में हज़्रत सहल बिन स'अद रदियल्लाहो अन्हो से मर्वी है : "हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने अपनी अलालत के ज़माना में जितने भी दीनार काशानए अक्दस में थे, वह तमाम फुकरा पर तक्सीम फरमा दिये। घर में सिर्फ सात दीनार बाकी रहे, जो उम्मुल मोमेनीन सय्यदतुना आइशा सिद्दीका रदियल्लाहो तआला अन्हा के पास रखे हुए थे। आप जब अलील हुए तो फरमाया "ऐ आइशा! वह सात दीनार कहां हैं? अर्ज़ की मेरे पास हैं। आप ने फरमाया "उन को खर्च कर दो" यह फरमाने के बा'द आप बे-हौश हो गए। जब हौश आया तो हज़्रत आइशा रदियल्लाहो तआला अन्हा से फरमाया कि "क्या तुम ने उन दीनारों को खर्च कर दिया" ? अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह अभी तक खर्च नहीं कर सकी। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने वह दीनार तलब फरमाए और उन दनानीर को अपने दस्ते अक्दस में रख कर फरमाया कि ऐ दनानीर! क्या तेरा यह ख्याल है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) अपने रब से इस हाल में मिलेगा के तू मेरे पास मौजूद हो फिर आप ने उन दीनारों को मिस्कीनों पर तस्दुक फरमा दिये।"

जब दो शम्बा (पीर) की शाम हूई तो हज़्रत आइशा सिद्दीका रदियल्लाहो तआला अन्हा ने घर का चिराग रौशन करने का इरादा किया, तो चिराग में तेल ही न था। लेहाज़ा आप ने किसी को चिराग ले कर हमसाया अन्सारी औरत के पास भेजा और यह कहलाया कि अगर तुम्हारे घर में तेल हो तो इस में चंद कतरे डाल दें क्यूं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम नज़ाअ के आलम में हैं।

(हवाला :- मदारिजुन नबुव्वत, अज़ :- शैख अब्दुलहक्क मोहद्दीसे देह्लवी, जिल्द : 2, सफहा : 721)

मर्दाने अरब..... हिस्सा अव्वल

सुब्हानल्लाह! अभी सात दीनार खैरात फरमाए गए हैं और घर में चिराग के अन्दर तेल तक मौजूद नहीं। इस में मुद्दइयाने तरीकए इत्तेबा को नसीहत है कि माले दुनिया की रग्बत और तमाअ से इजतिनाब कर के अल्लाह तआला की तरफ रागिब व माइल रहना चाहिये :

मालिके कौनेन हैं, गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं उन के खाली हाथ में

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़्रत रज़ा बरैलवी)

गनीमत के उन्वान को मज़ीद तूल न देते हुए अब हम कारेईने किराम को मुल्के शाम पर इस्लामी लश्कर की कूच का तज़्केरा सुनाते हैं। हालां कि गनीमत का उन्वान इत्ना वसीअ है कि हम ने इस उन्वान पर जो कुछ भी अर्ज़े खिदमत किया है वह कुछ भी नहीं। लेकिन हम कारेईने किराम को मुल्के शाम के सफर पर ले कर निकले हैं और यह सफर इत्ना तवील है कि हज़ारों सफ्हात इर्काम करने के बा-वुजूद भी हमारा सफर अधूरा ही शुमार होगा। अब तक तो हम ने मुल्के शाम की सरहदों में दुखूल भी नहीं किया बल्कि मुल्के शाम की सरहद के करीब तबूक नामी मकाम पर पहुंचे हैं। जहां पर इस्लामी लश्कर ने फुतूहाते शाम के सिलसिले में पहेली फतेह हासिल की है। रूमी लश्कर के आठ हज़ार सिपाहियों को तहे तैग कर के कसीर ता'दाद में माले गनीमत हासिल किया, जो मुल्के शाम की फुतूहात का पहला माल था।

गनीमत के हुसूल पर हम ने कारेईने किराम के मुल्के शाम के सफर का एक छोटा सा वक्फा कर के गनीमत के अहकाम की गुफ्तगू करने के लिये तवक्कुफ किया। इस बहाने सफर की तकान दूर कर के कदरे आराम व इस्तेराहत का मौका' मिल गया। आइये अब हम मुल्के शाम का सफर दू-बारा शुरू करते हैं।

तबूक का माले गनीमत

जैसा कि अगले सफ्हात में मज़्कूर हुवा कि आठ हज़ार के रूमी लश्कर का मालो अस्बाब मुसलमानों को गनीमत में हासिल हुवा। गनीमत का दस्तूर यह था कि बैतुल माल के लिये खुम्स (20%) निकाल कर मदीना मुनव्वरा अमीरुल मोमेनीन की खिदमत में भेज दिया जाए और बाकी चार हिस्से (80%) मुजाहेदीन में तक्सीम हों। लेकिन हज़्रत

यज़ीद बिन अबी सुफ्यान, हज़रत रबीआ बिन आमिर और हज़रत शुरहबील बिन हसना इन तीनों ने बाहम मश्वरा किया कि यह माले गनीमत मुल्के शाम की फतह के सिलसिले में हासिल होने वाला पहेला माल है, लेहाज़ा मुनासिब यह है कि अमीरुल मोमेनीन की खिदमत में खुम्स भेजने के बजाए कुल माल भेज दिया जाए, ताकि यह माल देख कर मुसलमानों में जेहाद की रग्बत पैदा हो और ज़ियादह से ज़ियादह लोग मुल्के शाम की तरफ जेहाद का कस्द करें। इलावा अज़ीं इस माले गनीमत से जंगी अस्बाब व दीगर सामाने सफर खरीद कर उन लोगों को दिया जाए, जो जेहाद का इरादा रखते हैं लैकिन अस्बाब के फुकदान की वजह से आज़िमे सफर नहीं हो सक्ते। इस तरह मुसलमानों को तकवीयते अज़्मे जेहाद हासिल होगी। इन तीनों सरदारों ने अपना इरादा तमाम मुजाहेदीन के सामने पैश कर के उन की राए तलब की। तमाम मुजाहिदों ने इस अम्र को ब-खूशी मन्ज़ूर किया और सब ने मुत्तफिक हो कर इस बात की इजाज़त दी कि तमाम माल खलीफतुल मुस्लिमीन सय्यिदोना अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो की खिदमत में मदीना मुनव्वरा भेज दिया जाए। चुनांचे हज़रत शद्दाद बिन औश की रहबरी में छोटे काफले के हमराह तमाम माल मदीना मुनव्वरा रवाना कर दिया गया।

हज़रत शद्दाद बिन औश गनीमत का माल ले कर मदीना मुनव्वरा आए। अह्ले मदीना कसीर ता'दाद में माल देख कर बहुत मस्रूर हुए, तहलीलो तक्बीर की सदाएं बुलन्द कीं। जिस को सुन कर अमीरुल मो'मिनीन ने दर्याफ्त फरमाया कि क्या माजरा है ? लोगों ने अर्ज़ किया कि हज़रत शद्दाद बिन औश मुल्के शाम की पहली फतह का माले गनीमत ले कर आए हैं। लेहाज़ा अह्ले मदीना फर्ते मसर्रत में तहलीलो तक्बीर बुलन्द कर रहे हैं और अपनी खुशी का इज़हार कर रहे हैं।

अल-मुख्तसर ! हज़रत शद्दाद बिन औश तमाम माल ले कर मस्जिदे नबवी के पास आ कर ठहरे। सवारियों से उतर कर मस्जिदे नबवी में दो रकअत तहीय्यतुल मस्जिद अदा की। फिर शहनशाहे कौनेन सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की बारगाहे बैकस पनाह की हाज़री से मुशर्रफ हुए। इतने में अमीरुल मो'मिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक भी तशरीफ ले आए। हज़रत शद्दाद ने आप से मुलाकात की और जंग की तमाम कैफियात बयान कीं। अमीरुल मोमेनीन बे हद मस्रूर हुए और आप ने हज़रत शद्दाद को मुजाहेदीने इस्लाम की अज़ीम फतह पर मुबारकबादी दी और इस फतह को इस्लाम की फुतूहाते अज़ीमा के लिये नैक शगून तसव्वुर फरमाया।

मुजाहेदीन के नए लश्कर की तश्कील

अमीरुल मोमेनीन ने तमाम माले गनीमत मुसलमानों में तक्सीम फरमाया और एक मज़ीद लश्कर आरास्ता करने का फैसला फरमाया। अह्ले मदीना और कुर्ब व ज्वार के लोग जेहाद की तैयारी में मस्रूफ हो गए इलावा अज़ीं हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने अह्ले मक्का को जेहाद की तर्गीब देने के लिये एक खत अह्ले मक्का के नाम तहरीर किया और हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफा के हाथों रवाना किया। अमीरुल मो'मिनीन ने अह्ले हवाज़िन या'नी क्लाब, अह्ले सकफ वगैरा को भी ब-ज़रीए खत जेहाद के लिये आमादा होने की तर्गीब दी।

चंद दिनों में मक्का मुअज़्ज़मा से हज़रत सुहैल बिन अम्र, हज़रत हारिस बिन हिशाम और हज़रत इक्रमा बिन अबी जहल अपने हमराह कौमे बनी मख्ज़ूम, कौमे आमिर, कौमे हवाज़िन और कौमे सकफ के लोगों को बडी ता'दाद में ले कर मदीना मुनव्वरा आ पहुंचे। ताइफ, हज़्रे मौत, कबीलए कलाब वगैरा के भी बहुत से लोग मदीना मुनव्वरा इस्लामी लश्कर में जमा होना शुरू हुए। साकिनाने मदीना से मुहाजिरीन व अन्सार की जमाअतें भी लश्कर में शामिल होने "जरफ" पहोंच गईं। मकामे जरफ मुजाहिदों से भर गया। एक अज़ीम लश्कर जमा हो गया। हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने तमाम लश्कर पर अमीनुल उम्मत, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को सरदार मुकर्रर किया और मुल्के शाम की मुहिम पर रवाना तमाम फौज का, कुल्ली तौर पर सिपाह सालारे आज़म मुकर्रर फरमाया।

मदीना से इस्लामी लश्कर की दूसरी किस्त रवाना

अमीरुल मो'मिनीन हज़रत सय्यिदोना सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हस्बे ज़ैल तर्तीब से इस्लामी लश्कर की दूसरी किस्त रवाना फरमाई :

- हज़रत अम्र बिन अल-आस को नौ हज़ार (9000) की फौज के साथ "ईला" के रास्ते से "फलस्तीन" की जानिब रवाना फरमाया। इस लश्कर को ताकीद फरमाई कि तुम "तबूक" के रास्ते से फलस्तीन की तरफ मत जाना, बल्कि ब-राहे ईला जाना। इस लश्कर का जो मुकद्दमतुल जैश

(तलीआ) था उस में हज़रत सुहैल बिन अम्र, हज़रत इक्रमा बिन अबी जहल, हज़रत हिशाम बिन हर्स और हज़रत सईद बिन खालिद को शामिल फरमाया। लश्कर का अलम हज़रत सईद बिन खालिद के हाथ में था। वह अलम को जुंबिश दे कर मुजाहिदों में जेहाद का जज़्बा पैदा करते थे और रज्ज़ के अश्आर पढ कर शुजाअत पर उभारते थे।

- हज़रत अम्र बिन अल-आस के लश्कर को रवाना करने के एक दिन के बा'द अमीनुल उम्मत हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को "जाबिया" की तरफ रवाना फरमाया।
- हज़रत अबू उबैदा के लश्कर को रवाना फरमाने के बा'द हज़रत खालिद बिन वलीद को कौमे बनी लख्म, कौम जुज़ाम और लश्करे ज़हफ पर सरदार मुकर्रर कर के "ईला" और "फारस" की तरफ रवाना किया। हज़रत सिद्दीके अक्बर ने रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का बडा अलम जो सियाह रंग का था, उसे हज़रत खालिद बिन वलीद को अता फरमाया। हज़रत खालिद बिन वलीद अपना लश्कर ले कर इराक की जानिब रवाना हुए।

हज़रत खालिद बिन वलीद के साथ जो लश्करे ज़हफ था, उस की ता'दाद नौ सौ (900) थी। यह तमाम सवार निहायत बहादुर और लडाई के फन के माहिर थे। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के साथ तमाम गज़वात में शामिल हुए थे और दादे शुजाअत दी थी।

मज़्कूरा तमाम लश्करों को रवाना फरमा कर अमीरुल मोमेनीन मदीना तय्यबह वापस आए। आप इस्लामी लश्कर के लिये बहुत ही फिक्र मन्द थे और अल्लाह तआला से उन की हिफाज़तो सियानत और नुस्रतो फतह की दुआ मुसल्सल कर रहे थे। अपने मुजाहिद भाइयों की फिक्र के आसार आप के चेहरए पाक से नुमायां थे। हज़रत उस्मान बिन अफ्फान ज़ुन्नूरैन रदियल्लाहो तआला अन्हो से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने मुल्के शाम फतह होने का वा'दा फरमाया है। हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया कि ऐ उस्मान! आप सच कहते हो। मुझे यकीन है कि मुल्के शाम की फतह के मुतअल्लिक हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का फरमान दुरुस्त है। इस में कुछ खिलाफ नहीं। बे शक हम रूम और फारस पर गालिब होंगे।

जंगे फलस्तीन

अवराके साबेका में पैश किया जा चुका है कि अह्ले मदीना गेहूं, जौ, अंजीर, रौगन, ज़ैत वगैरा मुल्के शाम से मंगाते थे। मुल्के शाम के कुछ ताजिर ब-सिल्सिलए तिजारत मदीना मुनव्वरा में कइ दिनों से मुकीम थे। मदीना में उन लोगों ने अज़ीम इस्लामी लश्कर को मुल्के शाम रवाना होता देखा था। लेहाज़ा उन्हों ने लश्कर की रवानगी की कैफियत, नीज़ मकामे तबूक में इस्लामी लश्कर का हिरक्ल के आठ हज़ार लश्कर का सफाया कर देने की हकीकत से हिरक्ल बादशाह को मुत्तलाअ किया।

इत्तिलाअ मिलते ही हिरक्ल बादशाह ने अर्काने दौलत और लश्कर के अह्म अफ्राद को अपने शाही दरबार में जमा कर के हकीकते हाल से आगाह करते हुए कहा कि मुसलमानों ने तुम्हारे भाइयों को तबूक में मार डाला है और अब वह हमारे मुल्क पर चढाई करने आ रहे हैं। मुसलमानों का लश्कर अन्करीब हम तक पहुंचने वाला है। मुझे खौफ है कि वह कहीं मेरे तख्त के मालिक न हो जाअें। लेहाज़ा तुम अपने मज़्हब, अपने अह्लो अयाल, अपने माल व अस्बाब और खुद अपनी हिफाज़त के लिये कमर बस्ता हो जाओ। ऐश व इश्रत और काहेली छोड कर मुसलमानों के मुकाबले के लिये मैदाने जंग में कूद पडो। शुजाअत और बहादुरी से मुसलमानों का मुकाबला कर के उन को भगा दो, वरना तुम्हारा मुल्क व दौलत मुसलमान छीन लेंगे। तुम्हारी औरतों को कनीज़ और तुम्हारे बच्चों को गुलाम बना लेंगे।

हिरक्ल की यह तक्रीर सुन कर हाज़ेरीन तबूक में अपने साथियों की हिलाकत पर फूट फूट कर रोने लगे। उन के रोने पर हिरक्ल बादशाह को गुस्सा आया और उस ने डांटते हुए कहा कि औरतों की तरह रोने से कुछ नहीं होने वाला। रोना छोड दो। बुज़्दिली और काहेली तर्क कर के मर्दे मैदान बन जाओ, वरना तुम्हारा वुजूद बाकी नहीं रहेगा।

हिरक्ल बादशाह की डांट डपट का हाज़ेरीन पर काफी असर हुवा और उन में जौशे जंग व जिदाल पैदा हुवा। तमाम ने ब-यक ज़बान हलफ लिया कि हम अपने जिस्म के आखरी कतरए खून तक मुसलमानों से मुकाबला करेंगे और अपने मुल्क की हिफाज़त के लिये अपनी जानें कुरबान कर देंगे। लोगों के इस अज़्मो इस्तिक्लाल को देख कर हिरक्ल

बादशाह बहुत खुश हुवा । उस ने एक सोने की सलीब मंगाई और रूमी लश्कर के सरदार "रूबीस" को देते हुए कहा कि मैं ने तुझ को एक लाख सवारों के लश्कर पर हाकिम मुकर्रर किया । ऐ बहादुर सरदार ! अपने लश्कर को ले कर जल्द अज़ जल्द कूच कर और अहले अरब को फलस्तीन में दाखिल होने से बाज़ रख । और याद रख कि शहरे फलस्तीन सर सब्ज़ो शादाब और मेवादार है । यह नफीस शहर मुल्के शाम की नाक है । हमारी इज़्ज़त है । सरदार रूबीस उसी दिन लश्कर ले कर रवाना हो गया ।

इस्लामी लश्कर फलस्तीन में और जंग का समां :-

इस्लामी लश्कर ले कर हज़रत अम्र बिन अल-आस मदीना मुनव्वरा से रवाना हुए । मुसल्सल सफर की मुसाफत तय करने से मुजाहेदीन थक गए । सवारी के जानवर भी लागर और कमज़ोर हो गए । जब फलस्तीन का इलाका आया तो वहां का सरसब्ज़ व शादाब खित्ता, लहलहाते खेत, घास और चारा से भरपूर मैदान, पानी की फरावानी, फल वगैरा की कसरत देख कर लश्कर ने पडाव किया । मुजाहेदीन को इस्तेराहत के लिये तवक्कुफ करने की हाजत थी, ताकि सफर की थकान दूर कर के ताज़ा दम हो जाअें और जानवर भी हरी घास चर कर फर्बा और तवाना हो जाअें । इस्लामी लश्कर अर्दे फलस्तीन में ठहर गया । इस्लामी लश्कर के मुजाहेदीन ने कदरे आराम हासिल किया । एक दिन हज़रत अम्र बिन अल-आस ने लश्कर के अह्म अर्कान को बराए मश्वरा बुलाया कि अब यहां से कब और किस तरफ बढें ? यह हज़रात मश्गूले मश्वरा थे कि अचानक हज़रत आमिर बिन अदी वहां आए । हज़रत आमिर बिन अदी मुख्लिस मोमिन सहाबी थे । मुल्के शाम में ब-गर्ज़े तिजारत और अपने रिश्तेदारों से मिलने अक्सर व बेशतर आते जाते रहते थे । लेहाज़ा वह मुल्के शाम के शहरों और रास्तों से अच्छी तरह वाकफीयत रखते थे । हज़रत आमिर बिन अदी को जब इत्तेलाअ मिली कि इस्लामी लश्कर ने फलस्तीन में कयाम किया है, तो वह ब-गर्ज़े मुलाकात आए । लैकिन उन के चेहरे से इज़्तेराब व तफक्कुर के आसार नुमायां थे । वह बहुत ज़ियादह घबराए हुए थे । अम्र व बिन अल-आस ने उन से फरमाया कि : ऐ इब्ने अदी ! तुम्हारी घबराहट व परेशानी की क्या वजह है ? उन्हों ने जवाब में कहा कि ऐ सरदार ! तुम्हारे मुकाबले के लिये हिरक्ल बादशाह का लश्करे जर्रार उमडते हुए सैलाब की तरह आ रहा है । वह जहां से गुज़रता है वहां के दरख्तों को उखाडता हुवा और सब्ज़ों को रौंदता हुवा इस तरह चलता है कि ज़मीन में ज़ल्ज़ला डाल देता है । उमदा सवारियों पर आ'ला किस्म के आलाते हर्ब से आरास्ता इस लश्कर का हर सिपाही इस्लामी लश्कर को खत्म करने का इरादा रखता है । हज़रत आमिर

बिन अदी ने मज़ीद इत्तेलाअ देते हुए कहा कि वह लश्कर "**वादियुल अहमर**" में जमा हुवा है । मैं ने वादियुल अहमर के करीब वाकेअ एक पहाड पर चढ कर इस लश्कर को देखा है और उन की ता'दाद तक़रीबन एक लाख मा'लूम होती है ।

हज़रत अम्र बिन अल-आस के साथ जो लश्कर था, उस की ता'दाद सिर्फ नौ हज़ार (९,०००) थी । लेहाज़ा कुछ लोग ब तकाज़ाए बशरीयत मुज़्तरिब व मुतफक्किर हुए । हज़रत अम्र बिन अल-आस ने लश्कर को मुखातब कर के फरमाया कि बडी भारी ता'दाद में दुश्मन का लश्कर हमारी जानिब आ रहा है । हम सहाबीए रसूल अपने महेबूब आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की मुहब्बत में दीवाने हैं, हम मौत से नहीं डरते । शहादत हमारी ख्वाहिश व तमन्ना है । तहफ्फुज़े नामूसे रिसालत के खातिर हम दुश्मनों के वार अपने सीनों पर लेने का हौसला रखते हैं और हम ज़ख्मी हो कर भी पस्त हौसला नहीं होते, बल्कि यह कहते हैं :

मेरे हर ज़ख्मे जिगर से यह निकलती है सदा
ऐ मलीहे अरबी कर दे नमक दां हम को ।

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत अम्र बिन अल-आस रदियल्लाहो तआला अन्हो ने मज़ीद फरमाया कि ऐ शम्ए रिसालत के परवानो ! अल्लाह की नुस्रत और मदद पर यकीने कामिल रखो । जेहाद के लिये तैयार हो जाओ और मुझ को मश्वरा दो कि इस मुआमले में मुझे क्या तद्बीर करनी चाहिये ? कुछ लोगों ने मश्वरा दिया कि आप लश्कर को ले कर जंगल में छुप जाअें । जब रूमी लश्कर गाफिल होगा, तो उन पर छापामार देंगे । हज़रत अम्र बिन अल-आस ने फरमाया कि इस राए से तमाम हाज़िरीन मुत्तफिक हैं ? हज़रत आमिर बिन सुहैल ने कहा कि ऐ सरदार ! यह तरीका तो बुज़दिली का है । इस्लामी लश्कर का हर शख्स नबर्द आज़्मा है । हर फर्द मर्दे मैदां है । हम अपनी मरदानगी दिखाअेंगे । जंगल में छुप कर छापा मारने की ना-मर्दी हम नहीं करेंगे बल्कि "**मर्द मरे नाम को**" पर अमल करते हुए खुले मैदान में दुश्मनों का मुकाबला करेंगे ।

हज़रत आमिर बिन सुहैल की पुर-जौश तज्वीज़ की हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूके आ'ज़म ने भरपूर ताईद करते हुए फरमाया कि खुदा की कसम ! हम दुश्मनों से खौफ-ज़दा हो कर पोशीदह न होंगे और न अपने कदम पीछे हटाअेंगे बल्कि पूरे इस्तेकलाल

के साथ कदम आगे बढा कर दुश्मनों का दिलैराना मुकाबला करेंगे । मौत के डर से हम हरगिज़ वापस न लौट जाअेंगे क्यूं कि जो शख्स वापस लौट जाएगा, वह खुदा के हुक्म की ना–फरमानी करेगा । हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने अपनी वल्वला खैज़ गुफ्तगू से इस्लामी लश्कर को जौश में ला दिया । हज़रत अम्र बिन अल–आस ने उन को एक हज़ार सवारों पर सरदार मुकर्रर कर के ब–तौर तलीआ रवाना किया । ताकि वह दुश्मन के लश्कर का सुराग लगाअें, उन की नक्ल व हरकत पर नज़र रखें और इस्लामी लश्कर को खबरदार करें ।

अब्दुल्लाह बिन उमर रूमियों से बर–सरे पैकार :-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर–फारूक "अलम" अपने हाथ में लिये कौमे बनी क्लाब और अह्ले ताइफ व सकीफ के एक हज़ार सवारों को ले कर रवाना हुए । मुसल्सल एक दिन और एक रात चलते रहे । सुब्ह के वक्त उन्हों ने गर्द उठते हुए देखी । साथियों से कहा कि वह दूर से गुबार उठता हुवा नज़र आ रहा है । शायद दुश्मन के लश्कर का तलीआ आ रहा है । हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक ने लश्कर को तवक्कुफ करने का हुक्म दिया, कुछ पुर–जौश मुजाहिदों ने अर्ज़ किया कि अगर आप इजाज़त दें तो हम जा कर देख आअें कि यह गुबार कैसा है ? आप ने फरमाया कि इस वक्त हमारा एक दूसरे से जुदा होना मुनासिब नहीं, लेहाज़ा इसी मकाम पर ठहरे रहो ।

थोडी दैर में दूर से नज़र आने वाला गुबार लश्कर की शक्ल में करीब आ गया । यह लश्कर दस हज़ार (10,000) फौजी अफ्राद पर मुश्तमिल था । जिस को रूमी सरदार रूबीस ने ब–तौर तलीआ भेजा था । जब रूमी लश्कर करीब आया, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक ने साथियों से कहा कि ऐ तौहीद व रिसालत के मतवालो ! यह लश्कर हम पर हम्ला करने आ रहा है, लेहाज़ा उन को मोहलत न दो । अल्लाह तआला तुम को गालिब व फतह मन्द करेगा । दुश्मनों पर टूट पडो । हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक के जौश दिलाने पर इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों ने नारए तक्बीर अल्लाहु अक्बर और कल्म–ए तय्यबह को ब–यक आवाज़ इस तरह कहा कि तक्बीरो तहलील की सदाए बुलन्द से कोह व सहरा गूंज उठे । दुश्मनों पर एक खौफ व लरज़ा तारी हुवा । वह मुतहैयर हो कर सोच रहे थे कि यह क्या आवाज़ है ? उसी वक्त इस्लामी लश्कर के शैर रूमी लश्कर के गीदडों पर टूट पडे । सब से पहले हज़रत इक्रमा बिन अबी जहल और हज़रत सुहैल बिन अम्र ने हम्ला किया । उन के बा'द हज़रत ज़ेहाक बिन सुफ्यान अपने साथियों के साथ लल्कारते हुए हम्ला आवर हुए । मुहाजेरीन व अन्सार भी मर्दे मैदान की शायाने शान शुजाअत का मुज़ाहेरा करते हुए टूट पडे । इस्लामी

लश्कर की इस तरह की दफ्अतन यल्गार से रूमी लश्कर हिल गया । वह सोच भी नहीं सक्ते थे कि मुठ्ठी भर मुसलमान हम पर इस तरह हम्ला आवर होंगे ।

अल–गरज़ दोनों लश्कर आपस में मिल गए । तलवारों और नैज़ों ने अपना काम दिखाया । मुजाहिदों की तलवारों में वह शिद्दत और कुव्वत थी कि रूमी सिपाही उस की ताब न ला सक्ते थे । उन की जान के लाले पडे हुए थे । मुजाहिदे इस्लाम की एक ज़र्ब में ही रूमी सिपाही खाक व खून में तडपता नज़र आता । पतझड में सूखे पत्ते जिस तरह दरख्त से टूट टूट कर ज़मीन पर गिरते हैं इस तरह वह अपने घोडों से कट कट कर ज़मीन पर गिरते थे । शिद्दते ज़ख्म से चीखते, तडपते और दम तोडते थे ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूके आ'ज़म रूमियों के साथ बडी दिलैरी से मस्रूफे जंग थे कि एक बडे डील डोल का रूमी सवार जो अपने लश्कर का अह्म रुक्न था, अपने घोडे को गरदावे दे रहा था और अपने साथियों को लडाई पर उक्साता और उभारता था हालां कि वह खुद घबराया हुवा था । उस के चेहरे पर खौफ व हरास के अस्रात हुवैदा थे, वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक पर आ पडा । हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने उस का वार खाली कर दिया और खुद जवाबी वार किया । उस रूमी पहलवान ने भी बहादुरी के जौहर दिखाते हुए हज़रत अब्दुल्लाह का वार चुका दिया । हज़रत अब्दुल्लाह को उस की जंगी महारत का अंदाज़ा हो गया । हज़रत अब्दुल्लाह ने ज़ोर से अपने घोडे की लगाम खींची । घोडा बुलन्द आवाज़ से हिनहिना कर पिछले दोनों पाऊं पर खडा हो गया । रूमी पहलवान महवे हैरत हो कर घोडे को देख रहा था कि दफ्अतन हज़रत अब्दुल्लाह ने म्यान से तलवार निकाल कर घोडे को पाऊं की एडी मारी । वफादार घोडा गोया अपने मालिक का इरादा जान गया और इस तरह कूदा कि एक आन में रूमी पहलवान के घोडे के करीब पहोंच गया । रूमी पहलवान ने अपने नैज़े से हज़रत अब्दुल्लाह पर वार करना चाहा लैकिन आप ने अपनी तलवार से उस के नैज़ा का फल काट कर नैज़े को चौब से अलग कर दिया । रूमी पहलवान ने नैज़े की लक्डी फैंक कर घोडे की ज़ीन में लटकी हूई तलवार के कब्ज़ा पर हाथ पहुंचाया और म्यान से तलवार निकाल रहा था, इतनी दैर में तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने तलवार का ऐसा वार किया कि इस के शाना की रग काटती हूई जिस्म के दो हिस्से कर दिये । वह अपने घोडे से ज़मीन पर गिरा । हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक ने उस रूमी पहलवान के जिस्म का सारा साज़ व सामान ले लिया ।

जब रूमियों ने देखा कि उन का सरदार बुरी तरह कत्ल हुवा, तो उन के दिल हिल गए, कदम लडखडा गए, हौसला पस्त हो गया। हर एक को अपनी जान की फिक्र हूई। अब लडने का नज़रिया बदल गया। हम्ला करने के बजाए अब देफाई तरीका इख्तेयार किया, लैकिन मुजाहेदीने इस्लाम की बर्क अफ्शार शम्शीरों के सामने ज़ियादह दैर ठहर न सके ,पानी की बूंदों की मानिन्द उन के सर जिस्मों से अलग हो कर टपक्ने लगे और ज़मीन खून से सुर्ख होने लगी। इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों की शुजाअत देख कर रूमी सिपाहियों ने राहे फरार इख्तेयार करने में खैरियत देखी। रूमी लश्कर में इन्तिशार फैला। मुजाहेदीने इस्लाम ने उन के सरों पर तलवारें रखीं और बडी ता'दाद में रूमी कत्ल हुए। छ सौ (600) रूमी सिपाही कैद हुए। इस मा'रका में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक के इलावा हज़रत ज़ेहाक बिन सुफ्यान और हज़रत हर्स बिन हिशाम ने बडी जवांमर्दी और दिलैरी का मुज़ाहेरा किया और दुश्मनों पर गालिब आने में अहम किरदार अदा किया। इस मा'रका में सात मुजाहिद शहीद हुए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक के हुक्म से मुजाहेदीन ने मक्तूलीन का माल व अस्बाब और दीगर सामाने जंग यक्जा किया, कसीर मिक्दार में गनीमत हाथ लगा। हज़रत अब्दुल्लाह असीराने जंग, माले गनीमत और अपने लश्कर को ले कर वापस उस मकाम पर लौटे, जहां हज़रत अम्र बिन अल-आस इस्लाम के मुजाहिदों का लश्कर लिये मुकीम थे। इस तरह फतह व गनीमत के साथ हज़रत अब्दुल्लाह के लौटने से हज़रत अम्र बिन अल-आस बहुत खुश हुए। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने कैदीयों से रूमी लश्कर का हाल दर्याफ्त किया, तो उन्हों ने बताया कि हिरक्ल बादशाह ने सरदार रूबीस को एक लाख का लश्कर दे कर तुम्हारे मुकाबले के लिये रवाना किया है और उसे हुक्म दिया है कि मुसलमानों को मुल्के शाम से निकाल भगाए। एक लाख के लश्कर से सरदार रूबीस ने इस दस हज़ार सवारों को ब-तौर तलीआ पहले भेजा था। जिस ने तुम्हारे छोटे लश्कर के हाथों हज़ीमत उठाई है, लैकिन अब भी सरदार रूबीस के साथ नव्वे हज़ार (90,000) का लश्करे जर्रार मौजूद है, जो उमदा किस्म के जंगी साज़ो सामान से आरास्ता है और हिरक्ल बादशाह की नज़र में सरदार रूबीस से बडा कोई शख्स लडाई का माहिर और आज़मूदए कार नहीं। वह लश्कर अन्करीब तुम तक पहुंचने वाला है और तुम को हलाक व तबाह कर देगा। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने फरमाया कि जिस तरह रूमी लश्कर की तलीआ का सरदार मारा गया इसी तरह इन्शा अल्लाह सरदार रूबीस भी मारा जाएगा और उस के लश्कर का भी वही हश्र होने वाला है जो लश्कर के तलीआ का हुवा है। फिर हज़रत अम्र बिन अल-आस ने तमाम असीरों पर इस्लाम पैश किया, जिस का उन्हों ने इन्कार किया लेहाज़ा सब की गर्दनें मारी गईं। इस्लामी लश्कर से जो सात (७) मुजाहिद शहीद हुए थे। उन के अस्मा गिरामी यह हैं :—

(1) नौफिल बिन आमिर

(2) सुराका बिन अदी

(3) सईद बिन कैस

(4) सालिम मौला आमिर बिन बद्र अल-यर्बूई

(5) अब्दुल्लाह बिन खुवैलद

(6) जाबिर बिन राशिद अल हज़रमी

(7) औस बिन सलमा अल हवाज़नी

(रदियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन)

फलस्तीन का खूं आशाम मा'रका

रूमी कैदियों की गर्दनें मारने के बा'द हज़रत अम्र बिन अल-आस ने इस्लामी लश्कर को कूच करने का हुक्म दिया। इस की वजह यह थी कि रूमी लश्कर इस्लामी लश्कर की तरफ आ रहा था। लेहाज़ा इस्लामी लश्कर खुद चल कर दुश्मन के सामने जाए तो इस से रूमियों के ऊपर एक नफसियाती असर होगा कि इस्लामी लश्कर कलील ता'दाद में होने के बा-वुजूद हमारी कसरते ता'दाद से कतअन डरता नहीं। जिस पर हम हम्ला करने जा रहे थे, वह खुद चल कर हम से टक्कर लेने आए हैं। इस तरह रूमी लश्कर पर रोअब डालने की दूर अन्देशी से हज़रत अम्र बिन अल-आस ने लश्कर रवाना किया। अभी लश्कर ने थोडा ही फास्ला तय किया था कि रूमी लश्कर दिखाई दिया। लश्कर क्या था ? उमडता हुवा सैलाब था। लश्कर में नौ (९) सलीबें बुलन्द नज़र आ रही थीं और हर सलीब के नीचे दस हज़ार सवार थे। रूमी लश्कर की कुल ता'दाद नव्वे हज़ार थी, जब कि इस्लामी लश्कर सिर्फ नौ हज़ार का था। या'नी एक मुसलमान के मुकाबले में दस (१०) रूमी थे। रूमी सरदार रूबीस को अपने लश्कर के तलीआ की हज़ीमत व ख्वारी और बतरीक सरदार के मारे जाने की इत्तेलाअ मिल चुकी थी। लेहाज़ा वह गम व गज़ब में था। अपने लश्कर को बडे जौश से उभारता था और अपने भाइयों के इन्तेकाम का जज़्बा दिलाता था। रूमी लश्कर के सिपाही पूरी तरह मुश्तइल थे और इस्लामी लश्कर को लुक्मए तर समझ कर निगलने के लिये आगे बढ रहे थे।

हज़रत अम्र बिन अल–आस ने रूमी लश्कर को देखते ही फौरन इस्लामी लश्कर को तर्तीब देना शुरू कर दिया। मैमना पर हज़रत ज़ेहाक बिन अबी सुफियान, मैसरा पर सईद बिन खालिद,साका में अबू दरदा और कल्ब में खुद ठहरे। आप ने अपने आका व मौला रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम से पाई हूई ता'लीमो तर्बियत को ब–रूए कार लाते हुए इस्लामी लश्कर की उमदा सफ बन्दी की। मुजाहिदों के घोडे इस तरह इस्तादा थे कि बाग से बाग और रिकाब से रिकाब मिली हूई है। गोया एक मज़बूत आहनी दीवार खडी की गई है। हर सफ का यही आलम था। सफ बन्दी की नफासत, दुरुस्तगी और सजावट देख कर रूमी सरदार रूबीस दंग रह गया। इस तरह की सफ बन्दी उस ने कभी देखी ही न थी। जंगी महारत में सरदार रूबीस मुल्के शाम में मश्हूरो मा'रूफ था, लैकिन इस्लामी लश्कर की सिर्फ सफ बन्दी देख कर वह एहसासे कमतरी में मुब्तला हो गया और एक ना–पदीद खौफ उस पर छा गया। वह सोचने लगा कि इस्लामी लश्कर की सफ बन्दी का जब यह आलम है, तो शम्शीर ज़नी का आलम कैसा होगा ? उस के ज़हन में अपने लश्कर तलीआ की हलाकत का धुन्दला सा मन्ज़र दिखाई देने लगा और उस का ज़मीर कह रहा था कि शायद मेरा और मेरे साथियों का भी वही हाल होने वाला है। लेहाज़ा उस ने हम्ला करने से तवक्कुफ किया और इस्लामी लश्कर के सामने थोडे फास्ला पर अपना लश्कर ठहरा दिया। ताकि देखे कि इस्लामी लश्कर की तरफ से क्या कारवाई होती है ? उस में अब इतनी हिम्मत व हौसला न था कि हम्ला करने में सब्कत करे।

हज़रत सईद बिन खालिद बिन सईद की शहादत

जब रूमी लश्कर ने तवक्कुफ किया और उन की जानिब से कोई पहल न हूई, तो इस्लामी लश्कर से हज़रत सईद बिन खालिद निकल कर मैदान में आए। बुलन्द आवाज़ से लल्कारा और लडने के लिये मुकाबिल तलब किया। लैकिन रूमी लश्कर में से किसी के कान पर जू तक न रेंगी। सब के सब खामोश बुत बने खडे रहे। हज़रत सईद बिन खालिद अपने घोडे पर सवार मैदान में चक्कर लगाते और पुकार पुकार कर मुकाबिल तलब करते थे, लैकिन रूमी लश्कर से कोई नहीं निकला। तो उन्हों ने रूमी लश्कर के मैमना और मैसरा पर हम्ला कर दिया। ऐसा मेहसूस होता था कि भेड और बकरियों का रेवड है और उस पर शैर हम्ला आवर हुवा है। हज़रत सईद बिन खालिद ने रूमी लश्कर की सफें उलट कर रख दीं और बहुत से रूमी सिपाहियों को जहन्नम रसीद कर दिया। तब रूमियों ने हरकत की और

मुजतमेअ हो कर हज़रत सईद पर टूट पडे। नैज़ों, बर्छियों और तलवार की नोकों से उन के मुकद्दस जिस्म को छलनी कर दिया, लैकिन हज़रत सईद आखरी दम तक लडते रहे और खुदा व रसूल की राह में अपनी जान दे दी।

कज़ा हक्क है मगर इस शौक का अल्लाह वाली है,

जो उन की राह में जाए वह जान अल्लाह वाली है।

(अज़ :- इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत सईद बिन खालिद रदियल्लाहो तआला अन्हो की शहादत के सान्हा से इस्लामी लश्कर में रंज व गम छा गया। हज़रत अम्र बिन अल–आस सब से ज़ियादह मलूल हुए, क्यूं कि हज़रत सईद बिन खालिद उन के भतीजे थे। हज़रत अम्र बिन अल–आस ने इस्लामी लश्कर को यल्गार का हुक्म दिया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक, हज़रत मआज़ बिन जबल, हज़रत अबू दरदा, हज़रत जुल केलाअ हुमैरी, वगैरा शेहसवाराने इस्लाम ने हम्ला करने में सब्कत की और उन हज़रात की मुताबेअत में पूरा इस्लामी लश्कर रूमियों पर टूट पडा। अब रूमी लश्कर भी पूरी ताकत से मुकाबला करने पर आमादा हो गया था। नव्वे हज़ार (90,000) रूमियों ने मुठ्ठी भर मुजाहिदों को नर्गा में ले लिया। तलवार से तलवार और नैज़ा से नैज़ा टकरा रहा था। गर्दो गुबार बादल की तरह उठ रहे थे। एक अजीब शौरो गुल बर्पा था। रूमी लश्कर का सरदार रूबीस अपने सिपाहियों को पुकार पुकार कर कहता था कि ऐ बन्दगाने सलीब ! उन अरबों में से एक को भी ज़िन्दा न छोडना। सलीब तुम्हारी मदद कर रही है। दीने मसीह की हिमायत में अपनी जान की परवाह मत करना। सलीब की बरकत से तुम ज़रूर गालिब आओगे। अपने सरदार की आवाज़ पर रूमी सिपाही निहायत जौशो खरोश से लडने लगे। इस्लाम के मुजाहिदों पर बडी शिद्दत और तंगी का वक्त था। मुजाहेदीन तहलीलो तक्बीर की सदाअें बुलन्द करते थे और अल्लाह तबारक व तआला से यह दुआ करते थे :

"اَللّٰهُمَّ انْصُرْ اُمَّةَ مُحَمَّدٍ صَلَی اللّٰهُ و اٰلِهٖ وَسَلَّمَ علیٰ مَنْ يَّتَّخِذُ مَعَكَ شَرِيْكًا"

तर्जुमा : ''ऐ परवर्दगार ! मदद फरमा उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की उन लोगों पर जो तेरे साथ दूसरों को शरीक ठहराते हैं।''

अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक से रिवायत किया है कि उस दिन सुब्ह से ले कर दो–पहर तक शिद्दत से जंग जारी रही। उस दिन सख्त गर्मी थी और हवा भी आग के शो'ले बरसा रही थी। ज़वाल के वक्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने लश्करे मुवहहेदीन की नुस्रत के लिये वह दुआ मांगी जो उन को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने ता'लीम फरमाई थी। हज़रत अब्दुल्लाह ने दुआ के अल्फाज़ अभी खत्म ही किये थे कि क्या देखते हैं कि आस्मान में एक सूराख हो गया है और उस सूराख से सब्ज़ घोडे निकल रहे हैं। उन घोडों पर हाथों में सब्ज़ निशान लिये हुए सवार हैं, उन के हाथों में जो निशान थे उन की नोकें चमकती थीं और कोई पुकारने वाला पुकार रहा था :

" اَبْشِرُوْا يَا اُمَّةَ مُحَمَّدٍ صَلَى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ فَقَدْ اَتٰيْكُمُ النَّصْرُ
مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ تَعَالىٰ"

तर्जुमा : "बशारत हो तुम को ऐ उम्मत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की। बतह्कीक तुम्हारे पास अल्लाह तआला की जानिब से मदद आ गई।"

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक फरमाते हैं :–

"पस मैं ने यह देख कर कहा कि फतह हासिल हूई उम्मत को ब–बरकत दुआ हमारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के। पस कुछ दैर नहीं गुज़री थी कि देखा मैं ने रूमियों को पीठ फैर कर भागते हुए और मुसलमान उन के पीछे तआक्कुब में हैं और मुनादी आवाज़ फतह की दे रहा है और थे जानवर मुसलमानों के ज़ियादह तर दौडने वाले रूमियों के जानवरों से। पस मार डाला हम ने बीच इस लडाई फलस्तीन के दस हज़ार रूमियों को या ज़ियादह इस से ।" (हवाला : – फुतूहुश्शाम, अज़ अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र अल वाकदी, उर्दू तर्जुमा, मुतर्जिम : – सय्यिद इनायत हुसैन सैदनपूरी, मत्बूआ : – नवलकिशोर लखनऊ, साल तबाअत 1903 सन ईस्वी, बारे चहारुम, सफहा : 26)

नोटः मुन्दरजा बाला इबारत का हवाला हम ने किताब, मुसन्निफ, व मुतर्जिम, मत्बूआ, साल तबाअत और बार तबाअत के साथ बित्तफसील लिखा है, इस की वजह यह है कि जिस किताब को माखज़ व मर्जा' बना कर हम मुल्के शाम की सैर को निकले हैं उस किताब का यह पहला हवाला है जो हम ने

लफ्ज़ ब–लफ्ज़ नक्ल किया है। लेहाज़ा तफ्सील के साथ हवाला नक्ल किया है। अब हर मरतबा तफ्सील के साथ हवाला नक्ल न करते हुए सिर्फ नाम किताब और सफहा नम्बर दर्ज कर दिया जाएगा।

अल–किस्सा ! रूमी लश्कर ने हज़ीमत उठाई और पीठ दिखा कर भागे। मुजाहिदों ने उन का तआक्कुब किया और भारी ता'दाद में रूमियों की गर्दन ज़नी की। जब रात की सियाह ज़ुल्फें बिखरीं और उन ज़ुल्फों ने दुनिया को अपने साया में ले कर तारीकी फैलाई, तब इस्लामी लश्कर अपने कैम्प में वापस लौटा। हज़रत अम्र बिन अल–आस ने अज़ान व इकामत के साथ नमाज़ पढाई। रात का अंधेरा घटा टोप छा गया। लश्कर के सिपाही दिन भर जंग करने की वजह से काफी थक चुके थे। लेहाज़ा सब ने इस्तेराहत में शब बसर की।

सुब्हा मर्दुम शुमारी करने पर पता चला कि इस्लामी लश्कर से एक सौ तीस (130) मुजाहिदों ने जामे शहादत नौश फरमाया है। लेहाज़ा मैदाने जंग से शहीदों की लाशें जमाअ की गईं। लैकिन उन लाशों में हज़रत सईद बिन खालिद की लाश न थी। हज़रत अम्र बिन अल–आस बज़ाते खुद हज़रत सईद बिन खालिद की लाश को तलाश करने निकले। काफी तलाश व जुस्तजू के बा'द हज़रत सईद की लाश इस हालत में दस्तयाब हूई कि उन के जिस्म को घोडों के सुमों ने ऐसा रौंदा था कि तमाम हड्डियां चूर चूर हो गई थीं। हज़रत अम्र बिन अल–आस ने अपने भतीजे हज़रत सईद की ना'श को इस हालत में देखा तो उन से ज़ब्त न हो सका और गिर्या कुनां हुए। हज़रत सईद के लिये खूब रोए और दुआए मगफेरत व रहमत की। फिर तमाम की नमाज़े जनाज़ा पढ कर दफ्न किया।

शोहदा की तद्फीन से फरागत पाने के बा'द मुजाहिदों ने रूमी लश्कर का मतरूका मालो अस्बाब जमा करना शुरू किया। कसीर ता'दाद में माले गनीमत हासिल हुवा जो इस्लामी अहकाम के मुताबिक तक्सीम किया गया।

हज़रत सईद के वालिद को उन की शहादत की इत्तेलाअ :–

गनाइम की तक्सीम से फुर्सत पा कर हज़रत अम्र बिन अल–आस रदियल्लाहो तआला अन्हो ने इस्लामी लश्कर के सिपाह सालारे आज़म, अमीनुल उम्मत, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रदियल्लाहो तआला अन्हो की खिदमत में खत लिखा। इस खत में जंगे फलस्तीन की पूरी तफ्सील मर्कूम फरमाई और रूमी लश्कर से कुल ग्यारह हज़ार (11,000) सिपाहियों के कत्ल और कसीर माले गनीमत हासिल होने का हाल भी तहरीर

फरमाया। खत के इख्तिताम में इस्लामी लश्कर के एक सौ तीस (130) मुजाहिदों ,खुसूसन हज़रत सईद बिन खालिद की शहादत का ज़िक्र भी किया। हज़रत अम्र बिन अल-आस का खत ले कर हज़्रत अबू आमिर अद्दौसी रवाना हुए। उस वक्त हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह अपने लश्कर के साथ मुल्के शाम की सरहद पे थे और अभी अन्दर दाखिल नहीं हुए थे। हज़रत अबू आमिर ने हज़रत अबू उबैदा के कैम्प में पहोंच कर उन की खिदमत में खत पैश किया। हज़रत अबू उबैदा खत पढ कर बहुत खुश हुए, लैकिन मुजाहिदों की शहादत की खबर पढ कर मलूल व रंजीदा हुए। हज़रत अबू आमिर ने जंगे फलस्तीन के तमाम हालात हज़रत अबू उबैदा की मजलिस में तफ्सील के साथ बयान किये और हज़रत सईद बिन खालिद की शुजाअत व बहादुरी और उन की शहादत का आंखों देखा हाल कह सुनाया।

उस वक्त हज़रत सईद के वालिद हज़रत खालिद बिन सईद हज़रत अबू उबैदा के पास मौजूद थे। अपने बेटे की शहादत की खबर सुन कर तडप गए। अपने बेटे की जुदाई पर बे साख्ता रोने लगे, और इस दर्द से रोए कि तमाम हाज़ेरीन भी रो पडे। गम का समां बंध गया। हाज़ेरीन ने हज़रत खालिद बिन सईद की ता'ज़ियत की और सब्र की तल्कीन की। कुछ देर बा'द हज़रत खालिद बिन सईद की तबीअत कुछ पुर-सुकून हूई तो फौरन अपने घोडे पर सवार हो कर अपने बेटे की कब्र की ज़ियारत का इरादा किया और अर्दे फलस्तीन की जानिब रवाना होने की इजाज़त तलब करने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह की खिदमत में हाज़िर हुए। फिर क्या हुवा ? अल्लामा वाकदी लिखते हैं :

''पस अबू उबैदा बिन जर्राह ने उन से कहा कि कहां जाओगे ऐ खालिद ! हालां कि तुम एक रुक्न हो अर्काने मुसलमानों से। खालिद ने कहा कि मैं सिर्फ ब-इरादए ज़ियारते कब्र अपने बेटे के जाता हूं और उम्मीद रखता हूं कि मैं भी अपने बेटे से जा मिलूं। पस अबू उबैदा ने सुकूत किया और अम्र बिन अल-आस को खत का जवाब लिखा।''

(हवाला फुतूहुश्शाम, सफहा : 28)

नाज़िरीने किराम ! गौर फरमाऐं कि हज़रत खालिद बिन सईद रदियल्लाहो तआला अन्हो अजिल्लए सहाबए किराम में से थे। नीज़ अमीनुल उम्मत हज़रत अबू उबैदा रदियल्लाहो तआला अन्हो **''अशरए मोबश्शेरह''** में से हैं। जिन के बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने इर्शाद फरमाया :

''لِكُلِّ اُمَّةٍ اَمِيْنٌ وَاَمِيْنُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ اَبُوْعُبَيْدَةَ''

तर्जुमा : ''हर उम्मत के लिये एक अमीन होता है और इस उम्मत के अमीन अबू उबैदा हैं।''

वह जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद बिन सईद की जलालत व बुज़ुर्गी का ए'तेराफ करते हुए उन से फरमाया कि **''तुम एक रुक्न हो अर्काने मुसलमानों से''** या'नी हज़रत खालिद बिन सईद अकाबिरे सहाबए किराम में से हैं, वही जलीलुल कद्र और ज़ी मर्तबत सहाबीए रसूल मुल्के शाम की सरहद से अर्दे फलस्तीन का सफर सिर्फ अपने बेटे की कब्र की ज़ियारत के लिये कर रहे हैं और उन का सफर सिर्फ और सिर्फ ज़ियारते कब्र के लिये है। इस का ए'तेराफ व इकरार करते हुए फरमाते हैं :

''मैं सिर्फ ब-इरादए ज़ियारते कब्र अपने बेटे के जाता हूं।''

यह जुम्ला दलालत करता है कि जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल हज़रत खालिद बिन सईद ने सिर्फ **''ज़ियारते कब्र''** की निय्यत से ही सफर किया। ज़ियारते कब्र के इलावा इस सफर से उन का और कोई मन्शा व मत्लब नहीं था। साबित हुवा कि ''ज़ियारते कब्र'' की निय्यत व इरादा से दूर दराज़ का सफर करना **''सुन्नते सहाबा''** है। अगर ''ज़ियारते कब्र'' की निय्यत से सफर करना कुफ्र, शिर्क, नाजाइज़, हराम, बिदअत, या खिलाफे शरीअत होता, बल्कि इस में गुनाह का हल्का सा शाइबा भी होता, तो हज़रत खालिद बिन सईद हरगिज़ हरगिज़ सिर्फ ज़ियारते कब्र की निय्यत से सफर नहीं करते और न उन को ऐसा सफर करने की अमीनुल उम्मत इजाज़त देते बल्कि साफ मुमानेअत फरमा देते कि ऐ खालिद ! तुम अपनी मुहब्बते दिली के जज़्बे के तहत अपने बेटे की कब्र की ज़ियारत का अज़्म कर रहे हो, लैकिन इस तरह का सफर करना जाइज़ नहीं है। हज़रत अबू उबैदा रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत खालिद बिन सईद को सफरे ज़ियारते कब्र से मना' न फरमाया बल्कि उन के हाथों हज़रत अम्र बिन अल-आस को खत भेजा यह दलील है इस बात की कि उन्हों ने इस सफर की इजाज़त दी।

एक जलीलुल कद्र सहाबी का सफरे ज़ियारत और एक दूसरे जलीलुल कद्र सहाबी की इजाज़त, हमारे लिये सनद है कि **सफरे ज़ियारते कब्र जाइज़ है।**

लैकिन अफ्सोस ! सद अफ्सोस ! दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन ज़ियारते कब्र की गर्ज़

से किये जाने वाले मुबारक अस्फार की शिद्दत से मुखालिफत करते हैं और शिर्क व बिदअत के फत्वे नाफिज़ व सादिर करते हैं। अपने फासिद ए'तेकाद को दुरुस्त साबित करने के लिये ''ला-तुशद्दुर्रिहाल'' वाली हदीस के मन घडत मा'नी व मत्लब इख्तिरा' करते हैं और अपने दिल में भरी हूई औलियाए किराम की अदावत व खबासत और इन्कारे ता'ज़ीम का ज़हर फैलाने के लिये हदीस का गलत मा'नी व मफ्हूम बयान करते हैं।

हज़रत खालिद बिन सईद अपने बेटे की कब्र पर

हज़रत खालिद बिन सईद लश्करे इस्लाम के सिपाह सालार हज़रत अबू उबैदा का खत ले कर अर्दे फलस्तीन पहुंचे और हज़रत अम्र बिन अल-आस को खत दिया। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने उठ कर हज़रत खालिद बिन सईद से मुसाफहा किया। हज़रत खालिद बिन सईद अपने साहिबज़ादे के फिराक व गम में रो रहे थे। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने उन की ता'ज़ियत की और उन्हें तस्कीन दी। तमाम मुजाहिदों ने भी हज़रत खालिद बिन सईद से मुलाकात की और फरीज़-ए ता'ज़ियत अदा किया। हज़रत खालिद बिन सईद ने मुजाहिदों से अपने बेटे की कौशिशे जेहाद और कैफियते शहादत मा'लूम की, मुजाहिदों ने बताया कि उन्हों ने दिलैरी और जवांमर्दी के साथ दुश्मनों से जंग की, शुजाअत व बहादुरी के वह जौहर दिखाए कि दुश्मन के लश्कर में कयामत बर्पा कर दी। दीने इस्लाम की खिदमत अंजाम देने में किसी किस्म की कोताही नहीं की और खिदमते दीन में मश्गूल रह कर बा वकार शहादत पाई।

फिर हज़रत खालिद बिन सईद ने मुजाहिदों से अपने बेटे की कब्र मा'लूम की। निशाने कब्र तलाश कर के कब्र पर पहुंचे और .... ???

> ''और कहा ऐ मेरे बेटे! रोज़ी करे अल्लाह तआला मुझ को सब्र तुम्हारे ऊपर और मिलावे वह मुझ को तुम्हारे साथ। فَاِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيهِ رَاجِعُوْنَ फिर कहा कि अगर अल्लाह तआला ने मुझ को कुदरत और मुक्नत दी तो मैं तुम्हारा बदला लूंगा और नज़्दीक अल्लाह के उम्मीद मुज़्द और सवाब की रखता हूं मैं तुम्हारे लिये।''

(हवाला : - फुतूहुश्शाम, सफ्हा : 28)

हल्ले लुगत : (1) मुक्नत = कुदरत, ताकत, तवानाई, तवंगरी

(फीरोजुल-लुगात, सफ्हा : 1278)

(2) मुज़्द = मज़्दूरी, सिला, बदला, उज्रत, तनख्वाह

(फीरोज़ुल-लुगात,सफ्हा : 1238)

हज़रत खालिद बिन सईद रदियल्लाहो तआला अन्हो के फे'ल ने एक और इख्तेलाफी मस्अला हल कर दिया कि ''**सिमाए मौता**'' या'नी साहिबे कब्र का सुनना बर-हक्क है। दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन ने इस मस्अले के ज़िम्न में भी शौर व गौगा मचा रखा है और तहरीरो तक्रीर के ज़रीए बडी शिद्दत से प्रोपेगन्डा करते फिरते हैं कि साहिबे कब्र सुनने की इस्तिताअत नहीं रखते। बल्कि अपनी रुसवाए ज़माना कुतुब में यहां तक लिख देते हैं कि वह मर कर मिट्टी में मिल गए। अम्बिया व औलिया के मुतअल्लिक भी ऐसा रज़ील व ज़लील जुम्ला कहने और लिखने में ज़र्रा बराबर उन को हतक मेहसूस नहीं होती बल्कि शकावते कल्बी की ब-दौलत ऐसे गुस्ताखाना अल्फाज़ के ज़रीए तौहीन व तन्कीसे अम्बिया व औलिया में जरीह बनते हैं। सिमाए मौता हक्क है और इस पर उम्मत के ओल्मा व ओरफा का इत्तिफाको इज्मा' है। कुरआन व हदीस से इस का सुबूत हासिल है। लैकिन अब चौदहवीं सदी के मुस्लिम नुमा मुनाफिकीन इनादन इन्कार व इख्तिलाफ पर अडे हुए हैं। लैकिन हज़रत खालिद बिन सईद ने अपने बेटे हज़रत सईद बिन खालिद की कब्र पर जा कर उन को मुखातब कर के जो कलेमात कहे उन को हम ने अल्लामा वाकदी की किताब से नक्ल किया, लेहाज़ा अब सवाल यह है कि :

(1) अगर मय्यत का सुनना (सिमाए मौता) बर-हक्क नहीं तो हज़रत खालिद बिन सईद ने अपने बेटे को उन की कब्र पर जा कर मुखातब क्यूं हुए ?

(2) अगर सिमाए मौता हक्क नहीं तो क्या जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल हज़रत खालिद बिन सईद को इस हकीकत का इल्म नहीं था ?

(3) क्या अब चौदह सौ साल (१४००) के बा'द ही इस मस्अले से वाकफीयत रखने वाले आलिम वुजूद में आए हैं। माज़ी के तमाम हज़रात ना-वाकिफ और जाहिल थे ?

नाज़िरीने किराम की गैर जानिबदाराना अदालत में इस्तिगासा है कि आप फैसला फरमाएं कि सहाबीए रसूल का फे'ल हमारे लिये हुज्जत और काबिल ए'तेमाद है। या दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन की दरीदा दहनी ? एक हवाला पैशे खिदमत है :-

■ **''जो बा'ज़ लोग अगले बुज़ुर्गों को दूर दूर से पुकारते हैं और इत्ना ही कहते हैं कि या हज़रत तुम अल्लाह की जनाब में दुआ करो कि वह अपनी कुदरत से हमारी हाजत पूरी कर दे और फिर यूं समझते हैं कि हम ने कोई शिर्क नहीं किया । इस वास्ते कि उन से हाजत नहीं मांगी बल्कि दुआ करवाई है, यह बात गलत है । इस लिये कि इस के मांगने की राह से शिर्क साबित नहीं होता लैकिन पुकारने की राह से साबित हो जाता है कि उन को ऐसा समझा कि दूर से और नज़्दीक से बराबर सुन लेते हैं ।''** (हवाला :- तक्वीयतुल ईमान, मुसन्निफ : मौलवी इस्माईल देहल्वी, नाशिर :- दारुस्सल्फिया, मुम्बई, तारीख इशाअत : अप्रिल ईस्वी 1997, सफ्हा : 44)

तक्वीयतुल ईमान की मुन्दरजा बाला इबारत को कारेईने किराम ब-गौर मुलाहेज़ा फरमाऐं । इस इबारत का मा-हसल यह है कि बुज़ुर्गाने दीन दूर और नज़्दीक से सुन लेते हैं यह ए'तेकाद रखना ही शिर्क है । यहां इस्तेआनत और गैरूल्लाह से मदद मांगने का मुआमला नहीं, बल्कि तक्वीयतुल ईमान का मुसन्निफ यह कह रहा है कि दूर और नज़्दीक से सुन लेने का अकीदा रखना ही शिर्क है या'नी किसी को उस की कब्र से बहुत बईद के फास्ले से मुखातब कर के पुकारो या उस की कब्र से बिल्कुल मुलहिक हो कर पुकारो । **दोनों का एक ही हुक्म है या'नी शिर्क है ।** जिस का मत्लब यह हुवा कि किसी ने किसी को उस की कब्र से दूर के फास्ले से मुखातब कर के पुकारा या करीब से पुकारा वह पुकारने वाला मुशरिक है ।

"ला इलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहे" (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) का विर्द जारी रखते हुए कारेईने किराम गौर फरमाऐं कि मुन्दरजा बाला इबारत शिर्क के फत्वे की मशीन गन नहीं बल्कि एटम बम है कि एक फत्वे से मिल्लते इस्लामिया के बे-शुमार मुवहहेदीन व मोमेनीन के ईमान के पुरज़े उडा दिये । जिस काम को एक जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल ने क्या उस काम को सदियों के बा'द **''साबीए रसूल''** शिर्क करार दे रहा है । (नोट :- साबी = गुस्ताख)

(1) अगर साहिबे कब्र को मुखातब कर के पुकारना शिर्क है, तो क्या हज़रत खालिद बिन सईद इस हुक्म से ना-वाकिफ थे ? क्या उन को शिर्क जैसे अहम उमूर के हुक्म की शरई मा'लूमात न थी ?

(2) कारेईन किराम मीज़ाने अद्ल के एक पल्ले में जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल हज़रत खालिद बिन सईद का यह फे'ल रखें और दूसरे पल्ले में साबीए (गुस्ताखे) रसूल मौलवी इस्माईल देहल्वी का कौल रखें और फैसला करें कि दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन का अकीदा कितना घिनौना और फासिद है ।

इस बहस को तूल न देते हुए सिर्फ इत्ना कहना है कि हमारे लिये एक सहाबीए रसूल का फे'ल सनद है । हालां कि इस के इस्बात व जवाज़ में कुरआन व अहादीस के दलाइल से लबरेज़ कुतुबे मो'तमदा व मुस्तनदा बडी कसरत से मौजूद हैं । सिमाए मौता और निदा के जवाज़ो इस्बात में इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी कुद्दिसा सिर्रहु की मुन्दरजा ज़ैल कुतुब का मुतालआ कारेईन की मा'लूमात में इज़ाफा करने के साथ साथ ए'तेकाद की पुख्तगी के लिये बे हद फाइदा बख्श हैं :

(1) हयातुल ममात फी बयाने सिमाइल अमवात

(2) अनवारुल ईन्तिबाह फी हल्ले निदाए या रसूलल्लाह

(3) बरकातुल इम्दाद ले एहलिल इस्तिमदाद

(4) अल अम्नो वल उला ले-नअतिल मुस्तफा बे दाफेइल बला

हज़रत खालिद बिन सईद का रूमियों से इन्तेकाम

अपने नूरे नज़र की कब्र की ज़ियारत से फारिग हो कर हज़रत खालिद बिन सईद हज़रत अम्र बिन अल-आस की खिदमत में हाज़िर हुए और दरख्वास्त की कि थोडा सा लश्कर ब-तौर सर्या अपने साथ ले कर मुशरिकों की तलाश व जुस्तजू में जाउं । उम्मीद है कि मैं उन में से किसी को पालूं और कत्ल कर दूं ताकि अपने लख्ते जिगर का इन्तेकाम ले कर दिल को तस्कीन दूं । हज़रत अम्र बिन अल-आस ने कौमे हुमैर के तीन सौ (300) सवारों को उन के हमराह कर दिया । हज़रत खालिद बिन सईद जौश इन्तेकाम और वल्वलए जंग में इतने गर्क थे कि उसी वक्त तीन सौ (३००) सवारों के साथ रवाना हो गए ।

थोडी मसाफत तय करने के बा'द वह एक सर सब्ज़ मैदान में पहुंचे । सख्त धूप और शिद्दत की गर्मी थी, लेहाज़ा सब ने यह इरादा किया कि दिन का वक्त यहां गुज़ार दें ताकि हमारे जानवर चारा और घास खा लें और फिर रात के वक्त यहां से रवाना होंगे ।

लेहाज़ा सब ने उस मैदान में तवक्कुफ किया और अपने जानवरों को चरने के लिये खोल दिये । इस मैदान के करीब ही एक बुलन्द पहाड था । हज़रत खालिद बिन सईद अपने साथियों के साथ मैदान में ठहरे हुए थे । और अपने साथियों को जेहाद की तर्गीब दे रहे थे । दौराने गुफ्तगू उन्हों ने नज़र उठा कर पहाड की जानिब देखा तो पहाड की चोटी पर उन को चंद आदमी दिखाई दिये । हज़रत खालिद बिन सईद ने साथियों से कहा कि मेरा गुमान है कि यह लोग जासूस हैं । कहीं ऐसा न हो कि दुश्मन का कोई लश्कर इस मैदान के अतराफ में पोशीदह हो और यह लोग हमारी मुखबिरी कर दें, मबादा हम पर दुश्मन का लश्कर आ पडे । लेहाज़ा मुनासिब यही है कि हम उन जासूसों पर जा पडें और अपने कब्ज़े में ले लें । साथियों ने कहा कि ऐ खालिद ! यह किस तरह मुम्किन है ? क्यूं कि हम मैदान में हैं और वह लोग पहाड की बुलन्दी पर हैं और पहाड का जुग्राफिया इस तरह का है कि उस पर चढना अम्र दुश्वार है । हज़रत खालिद बिन सईद ने अपने साथ दस मुजाहिदों को लिया और बाकी मुजाहिदों को हुक्म दिया कि मैं जब तक वापस पलट कर न आऊं तुम इसी जगह ठहरना ।

हज़रत खालिद बिन सईद अपने दस साथियों के साथ पहाड के करीब गए । घोडों से उतर कर अपने तेह बन्द को बांधा, तलवार को गर्दन में लटका लिया और पहाड पर चढना शुरू किया । पहाड की बुलन्दी पर जाने के लिये उस जगह कोई रास्ता न था कि आदमी उस पर चल सके, लैकिन मुजाहिदों का अज़्मो इस्तिक्लाल इत्ना मज़बूत था कि पहाड भी उन के सामने नर्म था । तमाम मुजाहिद पहाड की चट्टान से चिपक कर रेंगते हुए आहिस्ता आहिस्ता पहाड की बुलन्दी उबूर करने लगे । ऐसा खतरनाक मरहला था कि ज़रा सी गलती हूई या पाऊं फिस्ला या हाथ से चट्टान सरक गई, तो सीधे ज़मीन पर आ जाते, लैकिन तमाम मुजाहिद अल्लाह की नुस्रत व मदद से पहाड की चोटी पर पहोंच गए । पत्थर की चट्टान की आड में छुपते छुपाते उस जगह पहोंच गए जहां रूमी लश्कर के जासूस ठहरे हुए थे । वह कुल छे (६) अश्खास थे । माहौल से गाफिल अपनी गुफ्तगू में खोए हुए थे कि मुजाहिदों ने उन को लल्कारा । वह चौंक पडे घबराहट व खौफ के आलम में अपने हथियारों की तरफ लपके, लैकिन मुजाहिदों ने उन को इत्ना मौका' न दिया । दो की गर्दनें उडा दीं और चार को गिरफ्तार कर लिया ।

गिरफ्तार होने वाले चार शख्सों को हज़रत खालिद बिन सईद ने ज़द व कोब की ज़ियाफत से नवाज़ा और उन का हाल दर्याफ्त किया कि वह कौन हैं ? और यहां क्या करने

आए थे ? उन्हों ने बताया कि हम इस पहाड के अतराफ में वाकेअ दैहात दैरुल बकी', जामिआ और कफ्रुल अज़ीज़ा के रहने वाले हैं, हम को यह इत्तेलाअ मिली कि मुल्के अरब का लश्कर हमारे इलाके पर चढाई करने आया है । दैहात के लोग तो भाग भाग कर मज़बूत किल्लों वाले शहरों में चले गए हैं । हम ने किल्लों से भी ज़ियादह महफूज़ मकाम इस पहाड को जाना और यहां आ कर पनाह गुज़ीं हुए । अतराफ के इलाकों की खबर के तजस्सुस में हम इस पहाड की चोटी पर आए थे और तुम ने हम को गिरफ्तार कर लिया । हज़रत खालिद बिन सईद ने उन लोगों से रूमी लश्कर का हाल पूछा तो उन्हों ने बताया कि हिरक्ल बादशाह ने ब-मकाम अजनादीन बहुत बडा लश्कर जमा किया है और वह फलस्तीन की तरफ कूच करने वाला है, ताकि इस्लामी लश्कर को बैतुल मुकद्दस में दाखिल होने से बाज़ रखे । उन चार असीरों ने मज़ीद इत्तेलाअ दी कि अजनादीन में जो रूमी लश्कर है उस की रसद (अनाज व अश्याए खुरदन) मुहय्या करने के लिये रूमी लश्कर के सरदारों में से एक सरदार हमारे इलाके में आया हुवा है और उस ने बहुत सारा गल्ला वगैरा ज़खीरा कर लिया है और उस को तुम्हारे लश्कर का खौफ है, लेहाज़ा वह रसद ले कर जल्द अज़ जल्द रवाना हो जाना चाहता है ।

हज़रत खालिद ने उन असीरों से पूछा कि रूमी सरदार रसद ले कर किस रास्ते से अजनादीन जाएगा ? उन्हों ने कहा कि वह उसी रास्ते से गुज़रेगा जहां तुम मैदान में ठहरे हुए हो, इस पहाड में एक बडा दुर्रा है, वह इस दुर्रा से हो कर गुज़रेगा । हज़रत खालिद ने पूछा कि वह इस वक्त कहां ठहरा हुवा है ? जवाब में उन्हों ने कहा कि इस पहाड के करीब एक बडा टीला है, जिस का नाम "तल बनी सैफ" है वहां पर वह मअ रसद व हम्माल ठहरा हुवा है । हज़रत खालिद बिन सईद ने उन से फरमाया कि अगर तुम अपनी ज़िन्दगी की खैरियत चाहते हो तो हम को तल बनी सैफ तक पहुंचा दो । हम तुम को छोड देंगे । उन्हों ने कबूल किया ।

हज़रत खालिद बिन सईद उन चार (४) असीरों को ले कर अपने दस साथियों के हमराह तल बनी सैफ की तरफ चल दिये । जो दो पहाडों के दरमियान वाकेअ दुर्रा के पास पहुंचे तो वहां तवक्कुफ किया और मैदान में ठहरे हुए अपने साथियों को भी पहाड के दुर्रा के पास बुलवा लिया । जब वह आ गये तो सब साथ मिल कर उज्लत के साथ तल बनी सैफ नाम के टीले की तरफ आगे बढे । जब इस्लाम के कफन बरदोशों की जमाअत उस टीले पर पहोंची तो देखा कि तक्रीबन छ सौ (600) रूमी सिपाही और कुछ दैहाती गुलाम जल्दी जल्दी जानवरों पर रसद के बोरे लाद रहे हैं । वह माहौल से बे-खबर रसद ले कर फौरन रवाना होने की फिक्र में थे । उन का सरदार जल्द अज़ जल्द काम तमाम करने की तल्कीन कर रहा था । वह रसद

लादने लदाने में मशगूल थे कि मुजाहिदों ने उन पर यल्गार कर दी। हज़रत खालिद बिन सईद और हज़रत ज़ुल केलाअ हुमैरी ने ऐसा शिद्दत से हम्ला किया कि रूमी मब्हूत हो गए। रसद लादने वाले गुलाम और हम्माल तो फौरन दूम दबा कर भाग निकले, रूमी सिपाहियों ने तलवारें तान लीं और मुज़ाहमत की। उन का सरदार बुलन्द आवाज़ से उन को लडने की तर्गीब और हिम्मत दिला रहा था। हज़रत खालिद बिन सईद रूमी सरदार की जानिब लपके और एक नैज़ा उस सितमगर को ऐसा मारा कि वह मुर्दा हो कर ज़मीन पर गिरा। मुजाहिदों ने भी बडी दिलैरी से उन के सरों पर शम्शीरें रखीं और तीन सौ बीस (320) रूमी सिपाहियों को काट कर फैंक दिया। बाकी बचे हुए सिपाही फरार हो गए।

हज़रत खालिद बिन सईद ने रूमी लश्कर की रसद और जानवरों पर कब्ज़ा कर लिया। नीज़ मक्तूलीन के हथियार, मालो अस्बाब जमा किया। बडी मिक्दार में गल्ला और माले गनीमत ले कर ब–खैर व आफियत हज़रत अम्र बिन अल–आस के कैम्प में ब–मकाम फलस्तीन वापस आए। हज़रत अम्र बिन अल–आस मुजाहिदों के सलामत लौटने और साथ में गनाइमे कसीरा लाने से बहुत खुश हुए और हज़रत खालिद बिन सईद और उन के साथियों को मुबारकबाद और दुआए खैरो बरकत से नवाज़ा। फिर हज़रत अम्र बिन अल–आस ने जंगे फलस्तीन और तल बनी सैफ से हासिल शुदा रसद व गनाइम की कैफियत का मुफस्सल खत इस्लामी लश्कर के सिपाह सालारे आज़म हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह और अमीरुल मोमेनीन सय्यिदोना अबू बक्र सिद्दीक को लिखा। रदियल्लाहो तआला अन्हुमा।

हज़रत अबू उबैदा की ओहदे से मा'ज़ूली और हज़रत खालिद का तकर्रुर

हज़रत अम्र बिन अल–आस की तरफ से हज़रत आमिर बिन तुफैल अद्दौसी खत ले कर अमीरुल मोमेनीन की खिदमत में मदीना मुनव्वरा पहुंचे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक ने वह खत पढ कर मुसलमानों को सुनाया। खत सुन कर अह्ले मदीना बहुत खुश हुए और सदाए तहलीलो तक्बीर से फिज़ा को मुतरन्निम कर दिया। बा'दहु हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत आमिर अद्दौसी से मुल्के शाम में इस्लामी लश्कर का हाल दर्याफ्त किया। हज़रत आमिर अद्दौसी ने बताया कि हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर को मुल्के शाम में अलग अलग मकामात पर मुतफर्रिक कर दिया है। और हज़रत अबू उबैदा अभी तक

अवाइले मुल्के शाम में मुकीम हैं और मुल्के शाम में दाखिल नहीं हो पाए हैं। इलावा अज़ीं हिरक्ल बादशाह ने ब–मकाम अजनादीन एक अज़ीम लश्कर जमा किया है, ताकि वह इस्लामी लश्कर से टक्कर ले।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो अन्हो ने हज़रत आमिर अद्दौसी की ज़बानी तमाम कैफियत समाअत फरमाई, तो उन्हों ने सोचा कि अबू उबैदा नर्म तबीअत और भोले मिज़ाज के शख्स हैं और रूमियों की फौजे कसीर से जंग करने की सलाहियत नहीं रखते, लेहाज़ा आप ने अकाबिरे सहाबए किराम से मश्वरा किया और कहा कि अगर हज़रत अबू उबैदा के बजाए हज़रत खालिद बिन वलीद को सिपाह सालारे आज़म के ओहदे पर मुकर्रर किया जाए तो ज़ियादह मुनासिब होगा। क्यूं कि वह मर्दे शुजाअ और जंगी उमूर में महारत रखते हैं। तमाम सहाबा ने हज़रत सिद्दीके अक्बर की राए से इत्तेफाक करते हुए ताईद की। लेहाज़ा हज़रत सिद्दीके अक्बर ने हज़रत खालिद बिन वलीद को इस्लामी लश्कर के सिपाह सालार के ओहदे पर मुकर्रर किया और हज़रत नज्म बिन मुफ्रेह कत्तानी के ज़रीए हज़रत खालिद बिन वलीद को खत रवाना किया। उस खत की अह्म इबारत मुलाहेज़–ए कारेईन की खातिर ज़ैल में दर्ज है :

"وَإِنِّى قَدْ وَلَّيْتُكَ عَلٰى جُيُوْشِ الْمُسْلِمِيْنَ وَأَمَرْتُكَ لِقِتَالِ الرُّوْمِ وَقَدْ جَعَلْتُكَ الأَمِيْرَ عَلٰى أَبِىْ عُبَيْدَةَ وَمَنْ مَّعَهٗ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ"

तर्जुमा : "और ब–तहकीक मैं ने सरदार किया तुम को मुसलमानों के लश्करों पर और हुक्म किया तुम को रूमियों से किताल करने का और ब–तहकीक मैं ने तुम को अबू उबैदा और उन के साथ मुसलमानों पर अमीर मुकर्रर किया।" (हवाला : फुतूहुश्शाम, सफहा : 31)

हज़रत खालिद बिन वलीद उन दिनों इराक के इलाके मुल्के फारस में आतिश परस्तों से मस्रूफे जेहाद थे और करीब था कि आप शहर कादसिया को फतह कर लें। हज़रत अमीरुल मोमेनीन सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो का खत ले कर हज़रत नज्म बिन मुफ्रेह वहां पहुंचे और हज़रत खालिद बिन वलीद को खत दिया। खत पढ कर आप ने कहा कि मुझ को अल्लाह और अल्लाह के रसूल के खलीफा की इताअत मन्ज़ूर है। हज़रत खालिद को अमीरुल मोमेनीन का खत पहुंचाने हज़रत आमिर बिन तुफैल अद्दौसी भी मदीना तय्यबह से हज़रत नज्म बिन मुफ्रेह के हमराह गए थे। हज़रत खालिद बिन वलीद ने फौरन

एक खत हज़रत अबू उबैदा के नाम तहरीर किया। उस में उन्हों ने हज़रत अबू उबैदा को उन की मा'ज़ूली और अपनी तकर्रुरी की इत्तेलाअ लिखी और यह भी लिखा :

"قَدْ وَلَّانِیْ أَبُوْ بَكْرعَلٰى جُيُوْشِ الْمُسْلِمِيْنَ فَلَا تَبْرَحْ مِنْ مَّكَانِكَ حَتّٰى أَقْدَمَ عَلَيْكَ"

तर्जुमा : "ब-तहकीक हज़रत अबू बक्र ने मुझे मुसलमानों के लश्कर पर सरदार मुकर्रर किया है। पस जब तक मैं तुम्हारे पास न आऊं तुम अपनी जगह से न हटना।" (हवाला :- फुतूहुश्शाम, सफहा : 31)

हज़रत खालिद ने वह खत हज़रत आमिर बिन तुफैल अद्दौसी को दे कर हज़रत अबू उबैदा की जानिब रवाना किया और खुद इस्लामी लश्कर को ले कर मुल्के शाम की तरफ कूच कर गए। हज़रत खालिद लश्कर को ले कर "ऐनुत-तमर" के रास्ते से सफर करते हुए "अर्ज़े समावा" पहुंचे। अब उन को वहां से "अरेका" नामी मकाम पर जाना था, वहां से मुल्के शाम में दाखिल होना था।

बगैर पानी सफर तय करने की निराली तद्बीर

लैकिन "**अर्ज़े समावा**" से "**अरेका**" तक का सफर निहायत दुश्वार और मुश्किल था। क्यूं कि इस मुसाफत के दरमियान कहीं पानी मिलने का इम्कान न था। और तक्रीबन तीन या चार दिन का सफर था। अर्ज़े समावा में कसरत से पानी था, लैकिन आगे का सफर बगैर पानी के बन्जर इलाके का था। इस्लामी लश्कर में पानी भरने के लिये मश्कें और बर्तन की किल्लत थी। अगर अर्ज़े समावा से तमाम बर्तन और मश्कें पानी की भर कर साथ लें, तो वह पानी लश्कर के सिपाहियों को सिर्फ दो या तीन दिन तक किफायत करे। लैकिन सवारी के जानवरों को पिलाने के लिये पानी की फराहमी अम्रे मुहाल था। प्यास से तमाम घोडे मर जाएं, हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई सहाबी-ए रसूल जो मुल्के शाम के इलाकों और रास्तों की अच्छी खासी वाकफीयत रखते थे। उन्हों ने अपनी राए और मश्वरा पैश करते हुए कहा कि तीस ऊंटों को सात दिन तक प्यासा रखो और फिर मैं जैसा कहूं करो। चुनांचे लश्कर ने अर्ज़े समावा में सात दिन तवक्कुफ किया और तीस ऊंटों को सात दिन तक प्यासा रखा।

जब लश्कर ने कूच की तैयारी की तो हज़रत राफेअ बिन ओमैरा ने सात दिन के

प्यासे ऊंटों को खूब पानी पिला कर उन के मुंह बांध दिये और सिपाहियों से कहा कि तमाम बर्तन और मश्कीज़े पानी से भर लो। तमाम मुजाहिदों ने इसी तरह किया और लश्कर वहां से कूच करता हुवा आगे बढा। जब किसी मन्ज़िल पर पडाव करते तो वहां हज़रत राफेअ बिन उमैरा दस ऊंट ज़ब्ह कर के उन के पेटों से पानी निकाल कर बडी मश्कों में भर लेते और जब वह पानी ठंडा हो जाता तो घोडों को पिला देते और ऊंट का गोश्त लश्कर के मुजाहेदीन खाते। इस तरह हर मन्ज़िल में करते। यहां तक कि तीस ऊंट ज़ब्ह हो गए, लैकिन सफर तय न हुवा। अब लश्कर की हालत खराब हूई। आदमियों के पीने के लिये बर्तनों और मश्कों में पानी नहीं था। जानवरों को पिलाने के लिये अब पानी वाला कोई ऊंट भी नहीं था। तमाम लश्कर प्यास की शिद्दत व कुल्फत बरदाश्त करता हुवा आगे बढ रहा था। पानी की अदम मौजूदगी से सब का बुरा हाल था। सवारी के घोडों के कदम भी लडखडाने लगे। मुजाहिदों के हलक और ज़बानें खुश्क हो गईं। मज़ीद बरां शिद्दत की गर्मी और धूप की तपिश से लश्कर के सिपाही सूख कर कांटा हो गए, पाऊं बोझल हो गए, चलने की ताकत न रही। कुव्वते बरदाश्त जवाब दे चुकी, दूर दूर तक कहीं पानी का नामो निशान न था। सब की हालत गैर थी। बा'ज़ तो राह में बैठ गए। अब एक कदम चलने की भी सकत न थी। ऐसा लगता था कि पूरा लश्कर पानी न मिलने की वजह से प्यासा हलाक हो जाएगा। हज़रत खालिद ने मुजाहिदों को हिम्मत और तसल्ली दी और अब अन्करीब पानी मिलने की उम्मीद दिलाई। लैकिन आप की भी हालत करीबे हलाकत थी। अब अल्लाह की नुस्रत और मदद के सिवा और कोई सबील नज़र न आती थी। :

ज़मीं तपती, कटीली राह, भारी बोझ, घायल पाऊं,
मुसीबत झेलने वाले, तेरा अल्लाह वाली है।

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद बिन वलीद लश्करे इस्लाम की हालत देख कर परेशान थे। लश्कर की ता'दाद आहिस्ता आहिस्ता कम होती जाती थी। थोडे थोडे फास्ले पर चंद अश्खास राह में ठहर जाते थे। ज़ो'फ व नातवानी की वजह से खडा रहना भी मुश्किल था। हज़रत खालिद परेशानी व इज़्तिराब के आलम में हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई के पास आए और कहा कि अब हमारा लश्कर करीबे हलाकत हो गया है। कोई तद्बीर सोचो! हमारे बहादुर मुजाहिदों की जान के लाले पडे हुए हैं।

हज़रत राफेअ ने कहा ऐ सरदार ! अब हम "**कराकर**" और "**सवी**" नाम के मकाम के करीब आ गये हैं । आप लश्कर को वहां तक पहुंचाने की कोशिश करो । चुनांचे हज़रत खालिद ने मुजाहिदों को हिम्मत व उम्मीद दे दे कर बडी मुश्किल से कराकर नामी मकाम तक पहुंचाया । लैकिन अक्सर मुजाहेदीन रास्ता में पीछे रह गए थे । मकाम कराकर में आ कर हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई वहां की ज़मीन को टटोलते हुए एक दरख्त के करीब आ कर ठहर गए और साथियों से कहा कि इस जगह खोदो । चंद फुट गहराई तक खूदाई की गई कि दफ्अतन वहां से पानी का चश्मा उबल पडा । मुजाहिदों ने फर्ते मसर्रत से तहलीलो तक्बीर की सदाअें बुलन्द कीं । सब ने पानी पिया और जल्दी जल्दी मश्कीज़ों में पानी भर के रवाना हुए ताकि राह में बिछडे हुए साथियों को जा कर सैराब करें । अल-किस्सा पानी के बुहरान की मुसीबत टल गई । राह में बिछड जाने वाले मुजाहेदीन पानी मिलने पर कुव्वत व तवानाई हासिल कर के वह भी मकामे कराकर में आ पहुंचे । मकामे कराकर में लश्कर ने तवक्कुफ किया और सफर की मशक्कत से नजात पाई । कदरे आराम व इस्तेराहत करने के बा'द लश्कर ने कूच की और मकाम "**अरेका**" के करीब आ पहुंचा । अरेका अब सिर्फ एक मन्ज़िल के फास्ले पर था । यहां का इलाका ज़रखैज़ और सर सब्ज़ो शादाब था । लश्कर ने कलील अर्सा के लिये यहां तवक्कुफ किया । इस दौरान चंद मुजाहेदीन रूमी लश्कर की खबर हासिल करने और इलाके का मुआइना करने की गर्ज़ से लश्कर से निकल कर करीब के एक खेत की तरफ गए । वहां उन को कुछ ऊंट और बकरियां नज़र आईं । मुजाहेदीन जल्दी से वहां गए ।

हज़रत खालिद बिन वलीद के कासिद कैद में

एक चरवाहा शराब पी रहा था और उस के करीब एक शख्स अह्ले अरब से मुश्कें बंधा हुवा पडा था । मुजाहिदों ने करीब जा कर देखा तो वह हज़रत खालिद बिन वलीद के नामा बर हज़रत आमिर बिन तुफैल अद्दौसी थे । उन को इस हालत में देख कर मुजाहेदीन दौडते हुए हज़रत खालिद के पास आए और सूरते हाल से आगाह किया । हज़रत खालिद बिन वलीद फौरन घोडा दौडाते हुए वहां पहुंचे, तो देखा कि रूमी चरवाहा शराब के नशे में धुत पडा हुवा है और उस के करीब हज़रत आमिर बिन तुफैल दौसी रस्सियों में बंधे हुए हैं । हज़रत खालिद बिन वलीद ने हज़रत आमिर से पूछा कि तुम क्यूं कर गिरफ्तार हुए ?

हज़रत आमिर बिन तुफैल ने अपनी दास्ताने अलम सुनाते हुए कहा कि कादसिया से आप का खत ले कर अपनी ऊंटनी पर सवार आप की रवानगी से पहले मैं चल पडा था । ऐनुत-तमर, अर्ज़े समावा और कराकर के रास्ते से मुसाफत तय करता हुवा मैं इस

मकाम पर जब पहुंचा तो शिद्दत की धूप और गर्मी थी । प्यास की वजह से मेरा बुरा हाल था । इस चरवाहे को मअ अपनी बकरियों और ऊंटों के देख कर मैं इस के पास आया ताकि इस से दूध मोल ले कर अपनी प्यास बुझाऊं । जब मैं इस के करीब आया तो क्या देखता हूं कि वह शराब पी रहा है । मैं ने इस से दूध तलब किया तो इस ने शराब का बर्तन मेरी तरफ बढा दिया । मैं ने डांटा के खुद शराब पीता है और मेरी तरफ भी शराब बढाता है । शराब पीना हराम है । तो इस ने मुझे धोका दिया कि तुम को गलत फहमी हूई है । यह शराब नहीं है बल्कि खालिस पानी है । अपनी सवारी से उतर कर खुद ही देख कर और सूंघ कर तह्कीक कर लो कि शराब है या पानी ? अगर शराब हो तो जो चाहो सज़ा देना । में इस की बातों में आ गया और अपनी ऊंटनी को बिठा कर पालान से उतरा और ज़ानू के बल बैठ गया ताकि देखुं कि इस के बडे कासे में शराब है या पानी ? जैसे ही मैं झुका इस ने अपने पास रखी हूई लाठी उठा कर मेरे सर पर दे मारी । मुझे ऐसा लगा कि मेरे सर की हड्डी टूट गई और मैं गश खा कर गिर पडा ।

जब होश आया तो मैं ने अपने आप को रस्सियों में मज़बूत बंधा पाया और यह चरवाहा मेरे पास बैठा हुवा शराब पी रहा था और कह रहा था कि तुम अस्हाबे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) से मा'लूम होते हो । लेहाज़ा जब तक मेरा मालिक जो बादशाह हिरक्ल के पास गया हुवा है, न लौटेगा तब तक में तुझ को इसी तरह कैद रखूंगा । मैं ने पूछा कि तेरा मालिक कौन है ? इस ने कहा कि अह्ले अरब से नस्रानी मज़हब है (अरब मुतनस्सिरा) । और इस का नाम कदाह बिन वासिला है ।

हज़रत आमिर ने हज़रत खालिद से कहा कि मैं तीन दिन से इसी हालत में हूं । यह शख्स मेरे पास आ कर बैठ कर शराब पीता है और फिर बाकी मांदा शराब मअ बर्तन मुझ पर डाल देता है । हज़रत खालिद बिन वलीद को हज़रत आमिर बिन तुफैल की ज़बानी दास्तान गम सुन कर बहुत गुस्सा आया । वह चरवाहा नशे में चूर पडा हुवा था । हज़रत खालिद ने चरवाहे को तलवार की ज़र्ब मारी और उस का सर फाड डाला । हज़रत खालिद के हमराह आए हुए साथियों ने तमाम मवेशी पर कब्ज़ा कर लिया और हज़रत आमिर को कैद से आज़ाद किया । हज़रत खालिद ने हज़रत आमिर से पूछा कि मैं ने तुम को हज़रत अबू उबैदा के नाम जो खत दिया था, वह क्या हुवा ? हज़रत आमिर ने जवाब देते हुए कहा कि वह खत अभी तक मेरे अमामा में पोशीदह और महफूज़ है । हज़रत खालिद ने फरमाया कि: अबू उबैदा को मेरा खत पहोंचाओ और अब सफर में पूरी एहतियात से काम लेना । हज़रत आमिर ने हज़रत खालिद को अलवदाअ कर के हज़रत अबू उबैदा की जानिब राह इख्तेयार की ।

फत्हे अरेका, सहना और तदम्मुर

हज़रत खालिद ने हज़रत आमिर बिन तुफैल अद्दौसी को हज़रत अबू उबैदा की जानिब रवाना करने के बा'द लश्कर को कूच का हुक्म दिया। कराकर से अरेका करीब ही था, लैकिन बीच में भयानक जंगल वाकेअ था। जंगल पार कर के लश्कर अरेका पहुंचा। इस्लामी लश्कर अरेका की तरफ आ रहा है यह खबर सुनते ही अरेका के अतराफ के इलाका में बसने वाले लोग भाग कर अरेका के किल्ले में महसूर हो गए। अरेका का हाकिम हिरक्ल बादशाह का मो'तमद और मुकर्रब शख्स था। वह मैदाने जंग का आज़मूदए कार था। उस ने अरेका के लोगों को जंग के लिये आमादा किया। किल्ले के तमाम दरवाज़े बन्द कर दिये और शहर पनाह पर चढ कर इस्लामी लश्कर का मुकाबला करने की तैयारी करने लगे। अरेका शहर में हलचल मची हूई थी क्यूं कि इस्लामी लश्कर की आमद की इत्तेलाअ हो चुकी थी। इलावा अज़ीं अरेका के हाकिम की तरफ से बडे पैमाने पर मुकाबले के लिये लोग जमा किये जा रहे थे।

अरेका में शम्आन नाम का एक हकीम रहता था, जो कुतुबे समावी का ज़बरदस्त आलिम, कौम रूम का मज़हबी पेश्वा और मलाहिम का जानने वाला था। मलाहिम उन किताबों को कहते हैं जिन में मुस्तकबिल में रूनुमा होने वाले फितन और जंगों की पैशीनगोइयां लिखी होती हैं। हकीम शम्आन अरेका के कुछ मुअज़्ज़ज़ लोगों के साथ अपने मकान में बैठा हुवा था कि उस को खबर पहोंची के इस्लामी लश्कर अरेका पर हम्ला करने आ पहुंचा है। खबर सुनते ही उस के चेहरे का रंग ज़र्द हो गया और मुज़्तरिब व बे-करार हो कर कहने लगा कि **"वक्त करीब आ गया।" "वक्त करीब आ गया"** हकीम शम्आन की मजलिस में मौजूद लोग उस की ज़बान से बार बार इस जुम्ला को सुन कर तअज्जुब और हैरत में पड गए। लोगों ने पूछा कि कौन सा वक्त करीब आ गया ? हकीम शम्आन ने कहा कि सल्तनते रूम की हलाकत का वक्त करीब आ गया। मेरे पास एक मलहमा (किताब) है उस में इस कौम का ज़िक्र है। नीज़ उस में यह भी मज़कूर है :

"कौमे अरब का पहला निशान यहां पर इराक की जानिब से आएगा और वह निशान फतह मन्दी का होगा। वह निशान सियाह होगा और उन का सरदार लम्बा, चौडा, तवील व मोटा, उस के दोनों शानों में काफी फर्क और उस के चेहरे पर चेचक के निशान होंगे। वही शख्स सरदार उन के लश्कर का होगा और उसी के हाथों फतह होगी।"

लोग हकीम शम्आन की बात सुन कर किल्ले की दीवार से इस्लामी लश्कर को झांक झांक कर देखने लगे, तो वाकई इस्लामी लश्कर का निशान सियाह था, जिस को हज़रत खालिद बिन वलीद अपने हाथों में थामे हुए थे और हज़रत खालिद बिन वलीद तवील कद्दो कामत वाले थे और उन के दोनों शाने कुशादह थे। नीज़ उन के चेहरे पर चेचक के निशान भी थे। हकीम शम्आन ने जो जो अलामात बयान की थीं उन का लोगों ने अपनी आंखों से मुशाहेदा किया। लेहाज़ा वह अरेका के हाकिम के पास आए और कहा कि हकीम शम्आन हमारे मज़हब का ज़ी-शान पेश्वा है और वह कोई भी बात हिकमत के खिलाफ नहीं कहता। आज उस ने हम से कौमे अरब के लश्कर के मुतअल्लिक जो आगही दी, उस को हम ने अपनी आंखों से देखा है, भलाई और बेहतरी इसी में है कि तुम इस्लामी लश्कर से टकराने का इरादा तर्क कर के उन से सुलह कर लो। ताकि हमारे मालो अस्बाब और अह्लो अयाल हलाकत से महफूज़ रहें।

अरेका का हाकिम इस्लामी लश्कर से जंग का अज़्मे मुसम्मम कर के जंगी तैयारी कर रहा था और यक लख्त जंग मौकूफ कर के सुलह की पैशकश करना उस को गिरां मा'लूम हुवा। उस का गुरूर और तकब्बुर सुलह की पैशकश को दफ्अतन मन्ज़ूर करने से रोकता था, उस ने कहा कि मुझे कुछ मोहलत दो, शब में इत्मीनान से सोच कर सुब्ह जवाब दूंगा। कौम ने कहा ठीक है। हाकिम अरेका रात भर सोचता रहा कि अकाबिरे कौम सुलह की तरफदारी कर रहे हैं और मैं जंग की तद्बीर कर रहा हूं। कहीं ऐसा न हो कि वह लोग सुलह कर लें और मुझे अरबों को सौंप कर बली का बकरा बना दें, नीज़ अरबों के लश्कर से मुकाबला करना भी मुश्किल है। फलस्तीन के मा'रके में सरदार रूबीस की बडी फौज मुसलमानों की छोटी जमाअत के हाथों बुरी तरह पिट गई और अरबों का रोअब व खौफ मुल्के शाम के तमाम लश्कर के

सिपाहियों पर छा गया है। अगर जंग में शिकस्त हूई तो मैं कहीं का न रहूंगा। अरबों के हाथ हज़ीमत उठाने के साथ साथ मेरी अपनी कौम की ला'नत व मलामत भी मेरे सर होगी। लेहाज़ा अकाबिरे कौम की राए से मुत्तफिक होना ही मुनासिब है।

सुब्ह अकाबिरे कौम ने हाकिमे अरेका से जवाब तलब किया तो उस ने भी सुलह की मुवाफिक्त की। कौम के अकाबिर हज़रत खालिद के पास आए और सुलह की गुफ्तगू कर के दो हज़ार दिरहम चांदी और एक हज़ार अशर्फी पर मुसालेहत की। हज़रत खालिद बिन वलीद ने अह्ले अरेका को सुलह की दस्तावेज़ लिख दी। हज़रत खालिद बिन वलीद बा'द सुलह अभी अरेका में मौजूद थे कि ''सख्ना'' और ''तदम्मुर'' के हाकिम ने भी आ कर सुलह की और सालाना जिज़्या देने की शर्तें मन्ज़ूर कीं। अह्ले सह्ना और अह्ले तदम्मुर से सुलह कर ने के बा'द हज़रत खालिद बिन वलीद ''हवरान'' और ''बसरा'' की तरफ रवाना हुए।

जंगे बसरा

हज़रत खालिद बिन वलीद का खत ले कर हज़रत आमिर बिन तुफैल अद्दौसी हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह की खिदमत में आए। खत पढ कर हज़रत अबू उबैदा मुस्कुराए और खुश हुए, अपनी खुशी का इज़्हार करते हुए उन्हों ने यह जुम्ला कहा :

" اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ لِلّٰهِ وَلِخَلِيْفَةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَى اللّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم "

तर्जुमा : ''तमाम खूबियां अल्लाह के लिये हैं, अल्लाह की और अल्लाह के रसूल के खलीफा की इताअत मन्ज़ूर है''

हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर के सिपाह सालारे आज़म के ओहदे से मा'ज़ूल किये जाने पर मुत्लक मलूल नहीं हुए बल्कि मस्रूर हुए और उसी वक्त तमाम मुजाहेदीने इस्लाम को जमा कर के अपनी मा'ज़ूली और हज़रत खालिद बिन वलीद की तकर्रुरी से मुत्तलेअ किया।

हज़रत अबू उबैदा ने अपनी मा'ज़ूली से पहले हज़रत शुरहबील बिन हसना कातिब रसूल को चार हज़ार सवारों का लश्कर दे कर बसरा की जानिब रवाना कर दिया था। हज़रत शुरहबील लश्कर ले कर बसरा पहुंचे और किल्ल-ए शहर के थोडे फास्ला पर पडाव किया।

हाकिमे बसरा की हैरत अंगेज़ जसामत :-

शहर बसरा के हाकिम का नाम रूमास था। वह हिरक्ल बादशाह और रूमियों के नज़दीक बडा मरतबा रखता था। कुतुबे साबिका और मलाहिम का आलिम और रूमियों के मज़हबी पेश्वा की हैसियत उसे हासिल थी। रूमास हाकिम का जिस्म बहुत ही तअज्जुब खैज़ था। अपने तवील कद्दो कामत और कसीफ जसामत की वजह से वह मुल्के शाम में मुन्फरिदुल जिस्म से मश्हूर था। दूर-दराज़ से लोग उस का जिस्म देखने के लिये आते थे। वह अक्सर व बेशतर इल्मी मजलिस मुन्अकिद कर के लोगों को इल्मो हिक्मत की बातें सुनाया करता था। शहरे बसरा बहुत सरसब्ज़ व शादाब था। तिजारत की

बडी मंडी में उस का शुमार होता था। हिजाज़ व यमन के ताजिर वहां पर खरीदो फरोख्त के लिये आया जाया करते थे। बसरा में किसी खास मौसम में एक मैला लगता था। उस मैले में काफी लोग शिर्कत करते थे। मैले के अय्याम में हाकिम रूमास इल्मी महाफिल का इन्एकाद करता था। एक लोहे की कुर्सी पर बैठ कर वह इल्मो हिक्मत की बातें लोगों को सुनाता था। लोग जूक दर जूक उस की महफिल में उस की बातें सुनने और खास कर उस का जिस्म देखने की गर्ज़ से शिर्कत करते थे।

हज़रत शुरहबील बिन हसना चार हज़ार (४०००) का लश्कर ले कर जब बसरा पहुंचे तो वहां मेला लगा हुवा था। हाकिम रूमास की तक्रीर हो रही थी दौरान तक्रीर इत्तेलाअ आई कि इस्लामी लश्कर ने किल्ल-ए शहर के करीब नुज़ूल किया है। खबर सुनते ही हाकिम रूमास ने रूउसा व अकाबिरे शहर को जमा किया और कहा कि तश्वीश व फिक्र करने की कोई ज़रूरत नहीं। मैं बज़ाते खुद जा कर इस्लामी लश्कर के सरदार से गुफ्तगू करता हूं और उन का मन्शा व मत्लब दर्याफ्त करता हूं। हाकिम रूमास घोडे पर सवार हो कर इस्लामी लश्कर के कैम्प के करीब जा कर ठहरा और पुकार कर कहा कि ऐ गिरोह अरब! मैं हाकिमे बसरा रूमास हूं और चाहता हूं कि तुम्हारे लश्कर के सरदार से गुफ्तगू करूं। हज़रत शुरहबील बिन हसना उस के सामने आए।

रूमास ने हज़रत शुरहबील से इस्लाम और रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के मुतअल्लिक सवाल किया और जवाब पाया। फिर उस ने मौजूदह अमीरुल मो'मिनीन के मुतअल्लिक पूछा हज़रत शुरहबील ने फरमाया कि इस वक्त अब्दुल्लाह अतीक बिन अबी कुहाफा या'नी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक खलीफतुल मुस्लिमीन हैं। रूमास ने कहा कि ऐ बिरादर अरबी! मैं अपने दीन की कसम खा कर कहता हूं कि तुम हक्क पर हो। लैकिन इस वक्त मैं ब-राहे हमदर्दी और मेहरबानी मश्वरा देता हूं कि तुम यहां से पलट जाओ। क्यूं कि इस वक्त बसरा में मुल्के शाम के मुतफर्रिक मकामात से कसीर ता'दाद में लोग आए हुए हैं और तुम बहुत कलील ता'दाद में हो। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम अपने वतन पलट जाओ। हम तुम्हारा रास्ता नहीं रोकेंगे और यह बात भी जान लो कि तुम्हारे खलीफा अबू बक्र मेरे दोस्त हैं। अगर वह यहां होते तो मुझ से न लडते।

हज़रत शुरहबील ने जवाब में फरमाया कि हमारे अमीरुल मो'मिनीन हज़रत अबू बक्र की वह आली ज़ाते गिरामी है कि अगर उन के अपने बेटे या भतीजे भी दीनो मिल्लत के खिलाफ हों, तो वह उन को भी मुआफ नहीं करेंगे क्यूं कि वह खुदा के हुक्म की ता'मील

पर मामूर हैं। यह मुआमला उन का ज़ाती नहीं बल्कि अल्लाह तबारक व तआला ने तुम से जेहाद करने का हुक्म फरमाया है। लेहाज़ा जब तक तुम तीन बातों में से किसी एक को इख्तेयार न करोगे, हम तुम से जुदा न होंगे। **दीने इस्लाम इख्तेयार करो या जिज़्या दो या हम से लडो।**

हाकिम रूमास ने कहा कि मेरा इख्तेयार होता तो हरगिज़ तुम से न लडता, क्यूं कि मैं जानता हूं कि तुम हक्क पर हो। लैकिन मेरे शहर में दूर दराज़ से रूमी कौम जमा हूई है और वह लडने पर आमादा है, फिर भी में वापस जा कर इन्हें समझाने की कोशिश और नसीहत करता हूं, देखुं कि इन्हें क्या मन्ज़ूर है?

हाकिम रूमास की नसीहत :-

हाकिम रूमास ने वापस आ कर अपनी कौम को जंग से बाज़ रहने की नसीहत की। जंगे फलस्तीन में सरदार रूबीस की हज़ीमत की मिसाल पैश कर के इस्लामी लश्कर का रोअब व खौफ ज़ाहिर किया। हज़रत खालिद बिन वलीद की अन्करीब आमद से भी डराया। जंग के मुहलिक और तबाहकुन नताइज से आगाह किया और सुलह करने और जिज़्या अदा करने का मश्वरा दिया।

हाकिम रूमास की तक्रीर सुन कर कौम मुश्तइल हो गई। अरबों को जिज़्या अदा कर के कौम को ज़लील व रुस्वा करने का मश्वरा देने वाले हाकिम को कत्ल कर दो। एक इश्तिआल बर्पा हो गया और रूमियों ने रूमास की सख्त मुखालिफत की बल्कि बा'ज़ मुतअस्सिब नस्रानी हाकिम रूमास के कत्ल पर आमादा हो गए। हाकिम रूमास ने लोगों के तैवर देखे तो उस ने भी रंग बदला और कौम को अपना मुवाफिक कर ने की गर्ज़ से बात का पहलू बदलते हुए कहा कि ऐ हामिलाने सलीब! क्या तुम यह समझते हो कि मैं वाकई अरबों से सुलह करना चाहता हूं? ? अरे! मैं तो तुम्हारी गैरत व हमीयत का इम्तिहान ले रहा था। मुझे तुम्हारी गैरत और खुददारी पर नाज़ है। अब मेरा अज़्म पुख्ता भी जान लो। अगर तुम सब अरबों से सुलह करने पर मुत्तफिक हो जाते तो भी मैं हरगिज़ सुलह न करता बल्कि तने तन्हा उन से जंग करता बल्कि एक और बात भी मेरी सुन लो! हम अरबों से ज़रूर लडेंगे और हाकिम रूमास लडाई में तुम सब से मुकद्दम रहेगा। हाकिम रूमास की ज़बानी इस किस्म की पुर-जौश और जज़्बाती गुफ्तगू सुन कर रूमियों में खुशी की लहर दौड गई और तमाम रूमी जंगी साज़ो सामान से आरास्ता हो कर ब-कसदे लडाई मैदान में जमा हो कर सफ बस्ता होने लगे।

ऐन लडाई में लश्करे खालिद की आमद :-

बारह हज़ार का रूमी लश्कर किल्ल-ए शहर से बाहर निकल कर मैदाने जंग में आने लगा। इस्लामी लश्कर की ता'दाद सिर्फ चार हज़ार थी। एक के मुकाबले में तीन का मुआमला था। रूमी लश्कर तूफाने सर-सर की मानिन्द शौरो गुल करता हुवा इस्लामी लश्कर की जानिब आगे बढ रहा था। जौशो खरोश का यह आलम था कि दूर से तलवारें घूमाते, नैज़े नचाते, उछलते, कूदते और दौडे चले आ रहे थे। हज़रत शुरहबील बिन हसना ने देखा कि रूमी लश्कर तैज़ आंधी की मानिन्द आ रहा है, तो इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों को पुकार कर कहा कि ऐ हामिलाने कुरआन ! जान लो कि रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया है :

"اَلْجَنَّةُ تَحْتَ ظِلَالِ السُّيُوْفِ" या'नी : **''जन्नत तलवारों के साया तले है।''**

फिर फरमाया कि : **''अल्लाह के नज़दीक सब से ज़ियादह महबूब खून का वह कतरा है जो उस की राह में बहाया जाए। ऐ मुजाहिदो ! दुश्मनों से खूब जेहाद करो और उन की सफें उलट दो।''**

बारह हज़ार (१२,०००) रूमियों का लश्कर आ धमका। चार हज़ार (४,०००) मुजाहिद बारह हज़ार रूमियों के घेरे में आ गऐ। जंग की आग शो'ला ज़न हूई। शम्शीर ज़नी का बाज़ार गर्म हुवा। नैज़ा बाज़ी आम हूई। घोडों की हिनहिनाहट, तलवारों की झन्कार, ज़ख्मियों की चीख व पुकार, बुलन्द हो रही थी। ज़ख्मियों से खून के फव्वारे उडने लगे। पके हुए आम की तरह बदन से सर गिरने लगे। कफन बरदोश मुजाहेदीने इस्लाम जान हथेली पर रख कर मौत से टक्कर ले रहे थे। सबात कदमी से रूमियों का मुकाबला कर रहे थे। दो पहर तक रूमी लश्कर के तूफानी हम्लों के थपेडों से टक्कर ले रहे थे। दुश्मनों की तमाअ बढती जा रही थी। इस्लामी लश्कर के मुजाहेदीन पर शिद्दत का वक्त था। ऐसी मुसीबत के आलम में इस्लामी लश्कर के सरदार हज़रत शुरहबील ने आस्मान की तरफ दोनों हाथ उठा कर दुआ की कि ऐ हय्यो ! ऐ कय्यूम ! ऐ बदीउस समावात वल अर्द ! ऐ ज़ुल जलाले वल इकराम ! ऐ हमारे रब ! **तू ने अपने प्यारे नबी की ज़बान से मुल्के शाम और फारस की फतह का वा'दा किया है। काफिरों पर हमारी मदद कर।**

हज़रत माजिद बिन रवहम अल-अबसी ने रिवायत की है कि बसरा की लडाई में हज़रत शुरहबील ने अपनी दुआ को तमाम भी नहीं किया था कि अल्लाह की मदद

आ गई। जब जंग का तन्नूर गर्म था और इस्लामी लश्कर के मुजाहेदीन रूमियों के घेरे में आ चुके थे और रूमी यह गुमान कर रहे थे कि अब हम गालिब हो चुके कि दफ्अतन ''हवरान'' के रास्ता से एक गुबार बुलन्द होता नज़र आया। वह गुबार क्या था ? गोया सियाह बदलियां आस्मान से नाज़िल हो कर सतहे ज़मीन के करीब आ गई थीं। थोडी ही देर में उस गुबार से पैश पैश चलने वाले घोडे दिखाई दिये। दो (२) सवार बहुत ही करीब आ गये और बुलन्द आवाज़ से पुकारा कि ऐ शुरहबील ! बशारत हो कि अल्लाह तआला की मदद तुम तक आ पहोंची। मैं खालिद बिन वलीद हूं। दूसरे ने कहा कि मैं अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र हूं। उन दोनों शेहसवारों की इत्तिबा' करते हुए कौम लख्म व जुज़ाम और तमाम मुजाहेदीन का लश्कर नमूदार हुवा। हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का अलम जिस का नाम **''रायतुल एकाब''** था और वह अलम हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत खालिद बिन वलीद को मदीना मुनव्वरा से रवाना करते वक्त इनायत फरमाया था। वह मुकद्दस अलम नुमायां नज़र आ रहा था। जिस को हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई उठाए हुए थे। हज़रत शुरहबील के लश्कर के मुजाहिदों ने जब देखा कि महबूब आका सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का अलम नुस्रते इलाही की आमद की निशानदही करता हुवा और अनवार व तजल्लियात बिखेरता हुवा आ पहुंचा है, तो उन में एक नया जौश पैदा हुवा। हज़रत खालिद के लश्कर ने इस शान से ना'रए तक्बीरो तहलील बुलन्द किया कि दुश्मनों पर लरज़ा तारी हो गया। हज़रत खालिद बिन वलीद का लश्कर आ पहुंचा है, यह सुनते ही रूमियों के चेहरों पर हवाइयां उडने लगीं। थोडी दैर पहले रूमी सिपाही इस्लामी लश्कर के मग्लूब होने के ख्वाब देख रहे थे। लैकिन हज़रत खालिद बिन वलीद की आमद की खबर सुनते ही अब उन को **दिन में तारे नज़र आने लगे।** कब्ल इस के कि हज़रत खालिद का लश्कर उन पर टूट पडे रूमियों ने भाग कर शहर में पनाह ले ली। किल्ले में घुस कर अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया।

हज़रत खालिद बिन वलीद के लश्कर ने हज़रत शुरहबील के लश्कर से मुलाकात की। दुआ व सलाम के बा'द हज़रत खालिद ने हज़रत शुरहबील से फरमाया कि हिरक्ल बादशाह ब-मकाम अजनादीन बहुत बडा लश्कर जमा कर रहा है और यह वक्त मुतफर्रिक हो कर रहने का नहीं है, बल्कि मुज्तमेअ हो कर रहने का है। तुम को शहरे बसरा पर युरिश करने की उज्लत न करनी चाहिये। हज़रत शुरहबील ने कहा कि मैं हज़रत अबू उबैदा के हुक्म की ता'मील में यहां आया हूं।

“जंगे बसरा का दूसरा दिन”

हज़रत खालिद और हाकिम रूमास में मस्नूई जंग :-

पहले दिन दो-पहर बा'द रूमी लश्कर मैदाने जंग से फरार हो कर किल्ले में घुस गया और जंग मौकूफ हो गई। हज़रत खालिद ने लश्कर को आराम करने का हुक्म दिया। दूसरे दिन सुब्ह को रूमी लश्कर जौशो खरोश के साथ शहर का दरवाज़ा खोल कर निकला। इस की वजह यह थी कि हिरक्ल बादशाह ने दरीहान नामी सरदार को लश्कर दे कर बसरा को कुमुक भेजा था। इधर इस्लामी लश्कर के सिपाह सालार ने सोचा कि हम को भी जल्दी निकल कर मैदान में आ जाना चाहिये ताकि हमारी थकान के मुतअल्लिक रूमियों का गुमान काफूर हो जाए और उन पर हमारा रोअब व दबदबा काइम हो।

हज़रत खालिद इस्लामी लश्कर को मैदान में लाए और सफ आराई शुरू की। मैमना पर हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई, मैसरा पर हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर, पैदल फौज पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हमीद हजमी को मुकर्रर किया। आप के साथ लश्करे ज़हफ का जो मख्सूस दस्ता था। उस को लश्कर के मुख्तलिफ हिस्सों में तक्सीम कर दिया और सब को हुक्म दिया कि जब मैं हम्ला करूं तो तुम भी हम्ला आवर होना। बा'दहु हज़रत खालिद लश्कर को जेहाद की फज़ीलत और तर्गीब दे रहे थे कि उन्हों ने देखा कि रूमी लश्कर की सफें इधर उधर हटनी शुरू हूईं और सफों के दरमियान से एक भारी डील डोल का लम्बा चौडा और मोटा शख्स घोडे पर सवार निकला। उस के और घोडे के जिस्म पर सोना, चांदी, हरीरो याकूत से लदे हुए लिबास और ज़ेवरात चमकते थे। वह सवार दोनों लश्करों के बीच खाली मैदान में आ कर ठहरा और कहा कि ऐ गिरोह अरब ! मेरे मुकाबला के लिये तुम्हारा सरदार ही निकले क्यूं कि मैं बसरा का सरदार और हाकिम रूमास हूं। ताकि सरदार से सरदार का मुकाबला हो। हाकिम रूमास के इस तरह ललकार कर दा'वते मुबारज़त देने पर हज़रत खालिद फौरन लश्कर से निकल कर उस के सामने आए।

हाकिम रूमास ने हज़रत खालिद रदियल्लाहो तआला अन्हो से पूछा कि क्या तुम मुसलमानों के सरदार हो ? हज़रत खालिद ने फरमाया कि हां ! मुसलमान लोग मुझे

ऐसा समझते हैं और मैं उन का सरदार उसी वक्त तक हूं कि जब तक अल्लाह तआला की इताअत पर काइम हूं और जब भी मुझ से अल्लाह तआला की ना-फरमानी होगी, उन पर मेरी सरदारी बाकी नहीं रहेगी। रूमास ने कहा कि में ने कुतुबे साबिका और मलाहिम में पढा है कि अल्लाह तआला नबी हाश्मी कर्शी अरबी मब्ऊस करेगा, जिन का नाम मुहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) होगा। हज़रत खालिद ने फरमाया हां ! वही हमारे आका व मौला और पैगम्बर हैं।

फिर हाकिम रूमास ने कुरआने मजीद, हुर्मते शराब, हुर्मते ज़िना, फर्ज़ियते नमाज़, फर्ज़ियते हज्ज और फर्ज़ियते जेहाद के मुतअल्लिक सवालात किये। हज़रत खालिद ने तमाम सवालात के इत्मीनान बख्श जवाबात मरहमत फरमाए। हाकिम रूमास ने कहा कि मुझे यकीन है कि तुम हक्क पर हो और मैं तुम को दोस्त रखता हूं। मैं ने अपनी कौम को तुम्हारे मुतअल्लिक खूब डराया धमकाया। लैकिन उन्हों ने मेरी एक न सुनी और मेरे कत्ल के दरपै हो गए। इस वक्त भी मैं अपनी कौम के डर से तुम्हारे मुकाबला के लिये निकला हूं। मैं हरगिज़ तुम से लडना नहीं चाहता। तुम दीने हक्क पर काइम हो। तुम्हारी हक्कानियत और सदाकत का मैं काइल व मो'तरिफ हूं। सिर्फ अपनी कौम के सामने दिखावा करने लडने निकला हूं।

हज़रत खालिद ने रूमास से फरमाया कि जब तू इस्लाम की हक्कानियत का इक्रार व ए'तेराफ करता है तो फिर कल्मए शहादत पढ कर अलल ऐ'लान मुसलमान क्यूं नहीं हो जाता ? ताकि कबूले इस्लाम से तेरा और हमारा हाल बराबर हो जाए और तू हमारा दीनी भाई बन जाए। हाकिम रूमास ने कहा कि अगर मैं मुसलमान हो जाउं तो मुझे डर है कि मेरी कौम मुझ को कत्ल कर के मेरे अह्लो अयाल को कैद कर लेगी। लैकिन मैं वापस जा कर एक मरतबा मज़ीद कोशिश करता हूं और मुसलमान होने की तर्गीब देता हूं। शायद अल्लाह इन्हें राहे रास्त पर गामज़न फरमाए। इत्ना कह कर हाकिम रूमास ने रूमी लश्कर की जानिब पलटने के लिये अपने घोडे को मोडा और जाने के कस्द से घोडे को एडी मारी। हज़रत खालिद ने उसे रोका और फरमाया कि ऐ हाकिमे बसरा ! ज़रा दिमाग से काम ले ! तू मुझ से लडे बगैर सिर्फ गुफ्तगू कर के वापस जाएगा और वापस जा कर अपनी कौम को इस्लाम की हक्कानियत व सदाकत बावर कराने की सई करेगा तो यकीनन तेरी कौम तुझ पर शुब्हा करेगी और मुझे अंदेशा है कि वह तेरे खून के प्यासे हो जाअेंगे। लेहाज़ा तू थोडी दैर सिर्फ दिखावे की खातिर मुझ से लड ले ताकि तेरी कौम का ए'तेमाद बर-करार रहे और तेरी शख्सियत उन की नज़रों में मश्कूक न हो। लेहाज़ा पहले मैं तुझ पर हम्ला करता हूं और फिर तू मुझ पर हम्ला कर, ताकि हमारे गठ जोड पर किसी को शक न हो।

हज़रत खालिद की पैश कर्दा तज्वीज़ मन्ज़ूर करते हुए हाकिम रूमास हज़रत खालिद के साथ मशगूले जंग हुवा । दोनों एक दूसरे पर हम्ला आवर हुए । दोनों लश्कर के सिपाही अपने अपने सरदारों की हौसला अफ्ज़ाई के लिये ज़ौर ज़ौर से शाबाशी दे रहे थे । दोनों सरदार भी इस तरह फन्ने लडाई का मुज़ाहेरा कर रहे थे, गोया हकीकत में लड रहे हों । इसी तरह थोडी दैर तक लडते रहे । फिर हाकिम रूमास ने हज़रत खालिद से कहा कि अब आप हम्ला में शिद्दत करो ताकि मैं पीठ फैर कर भाग जाउं । नीज़ इस के साथ साथ यह भी कहा कि हिरक्ल बादशाह ने बसरा के कुमुक के लिये दरीहान नाम के जंगजू और माहिर जंग सरदार को भेजा है । लेहाज़ा तुम इस से होशियार रहना और पूरी एहतियात से काम लेना । हज़रत खालिद ने इस इत्तेलाअ पर रूमास का शुक्रिया अदा करते हुए फरमाया कि अल्लाह तआला मुझ को उस पर गालिब करेगा और हमारी मदद फरमाएगा ।

फिर हज़रत खालिद ने हम्ले में शिद्दत दिखाई । हाकिम रूमास ने ऐसा ढोंग रचाया कि गोया उस में हज़रत खालिद के हम्ले की ताब नहीं । इस तरह का दिखावा करते हुए भागा । हज़रत खालिद ने थोडे फास्ला तक उस का तआककुब किया लैकिन घोडे की रफ्तार मुतवस्सित रखी और रूमास घोडे को तैज़ दौडाता हुवा रूमी लश्कर में पहोंच गया । रूमियों ने अपने सरदार को हज़ीमत उठा कर वापस होता देख कर उस से पूछा कि लडाई का क्या हाल रहा ? रूमास ने कहा कि कुछ मत पूछो । बडी मुश्किल से अपनी जान बचा कर भागा हूं । अरब बहुत बहादुर और सख्त हैं । उन की तलवार का वार ऐसा शदीद होता है कि सर और ज़िरह चीर कर रख दे । मुझ को तो मौत नज़र आने लगी । हम में अरबों के साथ जंग करने की ताकत नहीं । मैदाने जंग में उन के सामने ठहरना दुश्वार है, लेहाज़ा मेरा कहना मानो और जिस तरह अरेका और तदम्मुर के लोगों ने उन से सुलह की है, तुम भी इसी तरह अरबों से सुलह कर लो । तुम्हारी बेहतरी और भलाई का ख्वाहां होने की वजह से मैं तुम को नफा' बख्श राए दे रहा हूं ।

हाकिम रूमास की बात सुन कर रूमी गुस्सा से भडक उठे । खश्मनाक हो कर उस को लअन-व-तअन करने लगे । खूब झिडका और जी भर के बुरा भला कहा । अगर हिरक्ल बादशाह का लिहाज़ न होता तो उसे कत्ल कर देते । कौम ने हाकिम रूमास से कहा कि बुज़दिली और ना-मर्दी ने तुझे घैर लिया है, चूडियां पहन कर अपने मकान में औरतों

के साथ बैठ जा । लडाई करना अब तेरे बस की बात नहीं । अरबों से हम निपट लेंगे । हाकिम रूमास के लिये यह बात मन की हो गई । उस की ऐन ख्वाहिश और आरज़ू यही थी कि लश्करे इस्लाम के सच्चे मुजाहिदों से मैं लडने से बाज़ रहूं । लेहाज़ा उस ने किसी किस्म की मुखालेफत और मुखासमत किये बगैर लोगों का फैसला सर आंखों पर लेते हुए अपनी राह ली ।

हाकिम रूमास को घर बिठा कर अह्ले बसरा ने सरदार दरीहान को अपना हाकिम मुन्तखब कर लिया । दरीहान अपनी तर्कुरी पर बेहद मस्रुरो मग्रूर हुवा । घमंड और तकब्बुर के नशे में धुत हो कर शैखी मारते हुए कहा कि ऐ अह्ले बसरा ! अब तुम मेरा कमाल व फन देखना । उन अरबों को मैं मसल कर रख दूंगा । लेहाज़ा वह ज़िरह, खौद और हथियारों से आरास्ता और उमदा लिबास में बन संवर कर अपने घोडे पर सवार हो कर मैदान में आया और पुकार कर कहा कि अपने सरदार को मेरे मुकाबले में भेजो । हज़रत खालिद बिन वलीद उस के मुकाबले के लिये मैदान की तरफ निकलने का कस्द कर रहे थे कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सिद्दीक ने उन को रोका और कहा कि ऐ सरदार ! हमारी बका और सबात तुम्हारे दम कदम से है और तुम मुसल्सल लडते रहने की वजह से थक गए हो । बराए इस्तेराहत तवक्कुफ करो और मुझ को दुश्मन के मुकाबले में जाने की इजाज़त दो । हज़रत खालिद ने इजाज़त दी और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र मैदान में उतरे ।

मैदान में आते ही हज़रत अब्दुर्रहमान ने दरीहान पर शैराना हम्ला किया । हज़रत अब्दुल्लाह के हम्ले की शिद्दत से दरीहान घबरा गया । बडी मुश्किल से अपने आप को संभालते हुए देफाअ किया और जवाबी हम्ला किया । तरफैन में इस शिद्दत से मा'रका आराई हूई कि दोनों लश्कर के लोग गर्दनें उठा उठा कर उन की लडाई का खौफनाक मन्ज़र देख रहे थे । दोनों अपनी जंगी महारत का ब-खूबी मुज़ाहेरा कर रहे थे । बराबर की टक्कर और मुकाबला जमा था । लैकिन अल्लाह के दीन के शैर के सामने रूमी भेड ज़ियादह दैर तक न ठहर सका । हज़रत अब्दुर्रहमान ने तलवार की दो तीन ज़र्बें इतनी शिद्दत से रसीद कीं कि वार खाली कर ढाल पर लेते लेते दरीहान के पसीने छूट गए । ढाल पर तलवार की ज़द ऐसी शदीद थी कि उसे हिला कर रख दिया । दरीहान का दिल भी साथ में हिल गया । मौत नज़रों के सामने रक्स करने लगी । मारे डर के उस का दिल दहल गया । दिल उफ्तादा हो कर पीठ फैरी और अब भागने में ही अपनी खैरो आफियत समझा । लेहाज़ा

घोडे की बाग ढीली छोड दी और रूमी लश्कर की तरफ भागा। हज़रत अब्दुर्रहमान ने भी घोडे को एडी मारी और पीछा किया लैकिन दरीहान तो मौत देख कर भागा था। मौत का पंजा उस की गर्दन तक पहुंचने से बाज़ रहे इस कोशिश में तमाम तर ताकत लगा कर भागा और रूमी लश्कर में जा पहुंचा। दरीहान रूमी लश्कर में जब वापस पलटा तो खौफ व हैबत से भरा हुवा था और ज़ोर ज़ोर से सांस ले रहा था। ज़िन्दगी और मौत के दरमियान एक हाथ का फास्ला रह गया था। बलाए मौत से बच कर आया था लेहाज़ा हवास बाख्ता था और मारे खौफ के थर थर कांप रहा था। बोलने की भी सकत न थी। घबराहट की वजह से ज़बान न हिला सक्ता था। अपने सरदार का यह बुरा हाल देख कर रूमी लश्कर पर भी थर थर्राहट तारी हो गई। कहां थोडी दैर पहले का सरदार दरीहान जो शैखी और गुरूर के नशे में ज़मीन पर पाऊं न रखता था और अरबों को कच्चा चबा जाने के पटाखे छोडता था और कहां इस वक्त का सरदार दरीहान ? सांप सूंघ गया या किसी ने दम कर दिया ? दरीहान की गायत दर्जा बे चारगी देख कर रूमी लश्कर पर खौफ व खशीयत की चादर तन गई और रोअब व इज़्तिराब ने उन के दिलों में घर किया।

हज़रत खालिद बिन वलीद दूर से रूमी लश्कर का मुआइना कर रहे थे। उन्हों ने जान लिया कि सरदार दरीहान की हालत देख कर रूमी लश्कर मुज़्तरिब व मब्हूत है। लेहाज़ा इस मौके का पूरा फाइदा उठा कर इसी वक्त उन पर यल्गार कर देनी चाहिये। उन्हों ने पूरे लश्कर को यक-बारगी धावा बोलने का हुक्म दिया। हुक्म मिलते ही इस्लामी लश्कर रूमियों पर टूट पडा। रूमियों ने देफाई इक्दाम करते हुए मुकाबला किया। लैकिन इस्लामी लश्कर का हम्ला इत्ना सख्त था कि रूमी लश्कर ठहर न सका। मुजाहिदों की तलवारें कहरे इलाही की बिजली बन कर उन पर इस शिद्दत से पडीं कि मैदाने कारज़ार सुर्ख तालाब नज़र आने लगा। रूमी लश्कर के कदम उखड गए और किल्ल-ए शहर का रुख किया। रूमी लश्कर शहर में दाखिल हो गया और शहर पनाह के दरवाज़े बन्द कर दिये। शहर पनाह की दीवार पर चढ गए और नाकूस बजा बजा कर और कल्म-ए कुफ्र के साथ शौर करने लगे। हज़ारों की ता'दाद में रूमी सिपाही कत्ल हुए। इस्लामी लश्कर से दो सौ तीस (230) मुजाहिदों ने जामे शहादत नौश फरमाया। हज़रत खालिद ने नमाज़े जनाज़ा पढा कर शोहदा को दफ्न किया। आफ्ताब गुरूब हो गया। इस्लामी लश्कर किल्ले के बाहर अपने कैम्प में वापस हुवा, लैकिन किल्ले में बन्द रूमियों का मुहासरा जारी रखा।

हाकिम रूमास की तद्बीर से रात में ही बसरा का किल्ला फतह

रात के वक्त इस्लामी लश्कर के कैम्प की निगरानी और निगेहबानी के लिये हज़रत खालिद बिन वलीद ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सिद्दीक, हज़रत मुअम्मर बिन राशिद और हज़रत मालिक उश्तर नखई की सरदारी में लश्करे ज़हफ के एक सौ (१००) सवारों को मुकर्रर कर दिया। यह निगेहबान हज़रात लश्कर के इर्द गिर्द गश्त करते थे। जब रात का चौथाई हिस्सा गुज़रा, तो उन्हों ने देखा कि मोटे बालों के कम्बल में मल्बूस एक शख्स इस्लामी लश्कर के कैम्प की तरफ आ रहा है। उन्हों ने उस शख्स को लल्कारा और उस की तरफ लपके। उस शख्स ने बुलन्द आवाज़ से कहा कि ऐ अरबी बिरादर ! तवक्कुफ करो और मुझ से अपने हाथों को रोको, मैं हाकिमे बसरा रूमास हूं और ज़रूरी काम से तुम्हारे सरदार से मिलने आया हूं। हज़रत अब्दुर्रहमान रूमास को ले कर हज़रत खालिद के खैमे में आए।

हज़रत खालिद ने रूमास को देखते ही पहचान लिया, मुस्कुराए और खैर मक्दम किया। रूमास ने कहा कि तुम्हारे साथ मस्नूई जंग कर के जब मैं वापस गया तो मेरी कौम ने मुझ को मा'ज़ूल कर के अपने घर बैठा दिया है। मेरा मकान किल्ले की दीवार से बिल्कुल मुत्तसिल है। जब रात की तारीकी छाई तो मैं ने अपने गुलामों और लडकों को हुक्म दिया कि किल्ले की जानिब मकान की जो दीवार है उस को खोद कर एक दरवाज़ा बना डालो। उन्हों ने रास्ता बना डाला और मैं उसी दरवाज़े से निकल कर तुम्हारे पास आया हूं।

तुम्हारे पास इस वक्त आने से मेरा मत्लब यह है कि तुम मेरे साथ अपने बहादुर और पुर ए'तेमाद एक सौ (१००) सवार भेजो, जिन को मैं इस दरवाज़े से अपने मकान में दाखिल कर दूं और फिर हम शहर पर कब्ज़ा कर लेंगे। तुम लश्कर ले कर शहर के सद्र दरवाज़ा पर खडे रहना। हम अन्दर से दरवाज़ा खोल देंगे।

हज़रत खालिद ने हाकिम रूमास के साथ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सिद्दीक की ज़ेरे सरदारी एक सौ सवार रवाना किये। उन सवारों में हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर भी थे। हाकिम रूमास ने उन मुजाहिदों को अपने मकान में दाखिल कर लिया। वहां उन के लिये हथियारों का खज़ाना खोल दिया। तमाम मुजाहिदों को रूमी सिपाही का लिबास पहना दिया। और उन एक सौ (१००) मुजाहिदों को चार गिरोह में तक्सीम कर के शहर के चारों

कोनों में भेज दिये। उन चारों गिरोह को यह ताकीद की कि जब तुम तक्बीर की आवाज़ सुनो तो तुम सब भी मिल कर ब-आवाज़े बुलन्द तक्बीर कहते हुए हम्ला कर देना। फिर हाकिम रूमास ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र को अपने साथ लिया और उस बुर्ज की तरफ गया, जहां बैठ कर हाकिम दरीहान अपने मख्सूस अह्बाब के हमराह आइन्दा कल की जंग के मुतअल्लिक मश्वरा कर रहा था। रूमास हाकिम ने ईसाइयों के मज़हबी पेश्वा (बतरीक) का लिबास पहना था। और हज़रत अब्दुर्रहमान ने रूमी सिपाही का रूप इख्तेयार किया था। दोनों उस बुर्ज की तरफ गए जिस में दरीहान था। हाकिम रूमास ने अपने लिबास और हुलिया को ऐसा तब्दील कर दिया था कि दरीहान उन को पहचान न सका और पूछा कि तुम कौन हो और किस गर्ज़ से इस वक्त मेरे पास आए हो ? रूमास ने कहा कि मैं एक बतरीक हूं और मेरे साथ मेरा दोस्त है जो तुम्हारी मुलाकात का मुश्ताक है। दरीहान ने कहा कि उन का तआरुफ क्या है ? रूमास ने कहा कि यह शख्स अब्दुर्रहमान हैं और खलीफतुल मुस्लिमीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक के साहिबज़ादे हैं। तेरे पास इस लिये आए हैं कि तेरी रूह को दोज़ख में भेज दें। जब दरीहान ने यह कलाम सुना तो गुस्सा में आग बगोला हो गया और हज़रत अब्दुर्रहमान पर हम्ला करने का इरादा किया। लैकिन हज़रत अब्दुर्रहमान ने उसे उत्ना मौका' ही न दिया कि वह अपने हथियार संभाले। एक जसत लगा कर सुरअत से उस के शाने पर तलवार का ऐसा वार किया कि एक ही वार में वह ज़मीन पर मुर्दा गिरा।

दरीहान के अचानक इस तरह कत्ल होने से दरीहान के अह्बाब भडक उठे और वह तमाम के तमाम हज़रत अब्दुर्रहमान और हाकिम रूमास की तरफ लपके। हज़रत अब्दुर्रहमान ने अल्लाहु अक्बर का ना'रा बुलन्द किया। बाहर खडे हुए मुजाहिदों ने पुर-जौश आवाज़ में इस का जवाब दिया। एक गिरोह के जवाब तक्बीर से दूसरे गिरोह ने जवाब दिया। फिर तीसरे और चौथे गिरोह ने जवाब दिया। इस तरह शहर के हर गोशा से तक्बीर की सदा बुलन्द होने लगी। हालां कि शहर में सिर्फ एक सौ मुजाहिद ही दाखिल हुए थे। लैकिन अलग अलग गोशों में मुतफर्रिक थे और मुतफर्रिक गोशों से तक्बीर की आवाज़ें बुलन्द हूईं तो दरीहान के मुसाहिब और शहर के रूमी बाशिन्दे यह समझे कि बडी ता'दाद में इस्लामी लश्कर शहर में दाखिल हो गया है। लेहाज़ा वह खौफ व डर में मुब्तला हुए। मुजाहेदीने इस्लाम ब-दस्तूर सदाए तक्बीर बुलन्द करते हुए हम्ला आवर हुए। रात का वक्त था, गिने चुने लोग सडकों और गलियों में थे। जिन को मुजाहिदों ने तलवार की नोकों पर लिया। एक शौरो गुल बुलन्द हुवा। लोगों ने अपने मकानों के दरवाज़े और खिडकियां तक बन्द कर लीं। मुजाहेदीन शान व शौकत से तलवार के जौहर दिखाते हुए शहर के सद्र दरवाज़े पर पहोंच गए और उसे खोल दिया।

हज़रत खालिद बिन वलीद लश्कर ले कर दरवाज़े के बाहर मुन्तज़िर थे, दरवाज़ा खुलते ही इस्लामी लश्कर शहर में दाखिल हुवा और नारए तक्बीर की सदा बुलन्द की। एक साथ हज़ारों मुजाहिदों ने नारए तक्बीर ब-आवाज़े बुलन्द कहा और जो शौरे सदा फैला वह ऐसा बा-रोअब था कि शहर के बाशिन्दे ही नहीं बल्कि दर व दीवार भी कांपते हुए मेहसूस होने लगे। मुजाहिदों ने शिद्दत से रूमियों को तहे तैग करना शुरू किया। रूमियों में कोहराम मच गया। बचे, बुढ्ढे और औरतों ने चीख चीख कर **''लफून लफून''** पुकारना शुरू किया। हज़रत खालिद बिन वलीद ने पूछा कि यह लोग क्या कहते हैं ? बताया गया कि **अमान तलब करते हैं।** हज़रत खालिद ने फौरन तलवारें रोक लेने का हुक्म सादिर फरमाया और बसरा वालों को अमान दे दी। बाकी रात सब ने आराम और चैन में बसर की।

हाकिमे बसरा रूमास का अलल ऐ'लान कबूले इस्लाम :-

सुब्ह होते ही हज़रत खालिद ने अह्ले बसरा को जमा किया और ऐ'लाने अमान को फिर एक मरतबा दोहराया। रूमियों ने ए'तेराफ करते हुए कहा कि अगर हम पहले से ही अक्ल व शुऊर का सहीह इस्ते'माल कर के तुम से मुसालेहत कर लेते तो नौबत यहां तक न पहोंचती। हज़रत खालिद ने फरमाया कि अल्लाह का हुक्म टलता नहीं। वह हो कर ही रहता है। फिर अह्ले बसरा ने हज़रत खालिद से पूछा कि क्या आप यह बताअेंगे कि किस शख्स की रहनुमाई और इआनत से आप इस मज़बूत शहर में दाखिल होने में काम्याब हुए ? हज़रत खालिद ने मुरव्वत और हया की वजह से हाकिम रूमास का नाम नहीं बताया और बात सुनी अन सुनी कर के टाल दी। लैकिन हाकिम रूमास ने खडे हो कर कहा कि ऐ खुदा के दुश्मनो ! मैं ने खुदा की रज़ामन्दी हासिल करने और जेहाद का अज्र पाने की गर्ज़ से लश्करे इस्लाम को राह बताई है। तमाम रूमियों ने तअज्जुब करते हुए पूछा कि क्या तू हमारे तरीकए दीन व मज़हब पर नहीं ? हाकिम रूमास ने कल्मए शहादत पढते हुए फरमाया कि में ने अल्लाह को अपना मा'बूद, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को रसूल, इस्लाम को दीन, कुरआन को पेश्वा, का'बा को किब्ला और मुसलमानों को अपना भाई तस्लीम कर लिया है। हज़रत रूमास ने इस तरह इक्रारे ईमान और ऐ'लाने इस्लाम कर के इस्लामी लश्कर को शहर में दाखिल करने का भी ए'तेराफ किया। हज़रत रूमास की बात सुन कर रूमी बहुत नाराज़ हुए और उन के साथ बुराई का इरादा किया। हज़रत रूमास ने लोगों के चेहरों से उन के दिली इरादों का सफहा पढ लिया और हज़रत खालिद से कहा कि ऐ

सरदार ! अब मैं इन लोगों के साथ शहर में नहीं रहूंगा बल्कि आप के लश्कर में शामिल हो कर मुल्के शाम की फतह के सिलसिला में अपनी खिदमत पैश करूंगा । और जब पूरा मुल्के शाम फतह हो जाएगा तब यहां वापस आऊंगा ।

अल्लामा वाकदी ने मुअम्मर बिन सालिम बिन नज्म बिन मुफ्रेह से रिवायत फरमाया है कि हाकिम रूमास इस्लामी लश्कर के साथ शाम की तमाम जंगों में शरीक जेहाद हो कर अपनी मुख्लिसाना खिदमत पैश कीं । जब पूरा मुल्के शाम फतह हो गया तो हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह की दरख्वास्त पर अमीरुल मोमेनीन हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो ने अपने ज़मानए खिलाफत में हज़रत रूमास को बसरा का हाकिम मुकर्रर फरमाया । हज़रत रूमास ने कलील अर्सा वहां हुकूमत की और एक बेटा छोड कर इन्तेकाल फरमाया ।

रूमास की बीवी का कबूले इस्लाम :-

हाकिमे बसरा रूमास ने हज़रत खालिद बिन वलीद से दरख्वास्त की कि मैं इस शहर में रहने वाला नहीं लेहाज़ा आप मेरे साथ चंद मुजाहिदों को भेज दो जो मुझ को मेरा मालो अस्बाब और अहलो अयाल मेरे घर से लाने में इआनत करें । हज़रत खालिद ने चंद अश्खास उन के साथ भेजे । जब हाकिम रूमास अपने घर गए तो उन की ज़ौजा उन से उलझ गई । वह गुस्सा में भरी हूई एक शैरनी की मानिन्द बिफरी हूई थी, अपने शौहर से तैज़ ज़बान में गुफ्तगू करने लगी । हज़रत रूमास के साथ आए हुए लोगों से इस खातून ने कहा कि मेरा फैसला इस्लामी लश्कर के सरदार के पास होगा । लेहाज़ा उसे हज़रत खालिद बिन वलीद के पास लाया गया । हज़रत रूमास की बीवी के मुतअल्लिक लोगों ने हज़रत खालिद को बताया कि इस को अपने शौहर से सख्त नालिशो शिकायत है और वह आप से कुछ कहना चाहती है । हज़रत खालिद ने इजाज़त दी तो हाकिम रूमास की बीवी ने ब-वास्ता मुतर्जिम रूमी ज़बान में अपनी अर्ज़ दाश्त कही । जिस का अल्लामा वाकदी ने अपनी तस्नीफ में इन अल्फाज़ में ज़िक्र किया है :

"उस ने ब-वास्तए तर्जुमान के बयान किया कि हाल मेरा यह है कि रात को मैं ने ब-हालते ख्वाब एक शख्स निहायत खुबसूरत को, मिस्ल माहे शब चार दह के देखा कि वह कहते हैं कि यह शहर बसरा और तमाम मुल्के शाम और इराक इसी गिरोहे अरब के हाथ से फतह हो गया । मैं ने उन शख्स से पूछा कि आप कौन हैं । उन्हों ने फरमाया कि

मैं मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हूं (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) फिर मुझ को ब-जानिब इस्लाम के दा'वत फरमाई और मैं ने इस्लाम कबूल किया । फिर मुझ को आप ने दो सूरतें कुरआने मजीद की सिखाइं । पस खालिद बिन अल-वलीद ने यह कलाम उस का सुन कर तअज्जुब किया और ब-वास्तए तर्जुमान के उस से कहा कि वह दो सूरतें पढे । पस उस ने सूरए फातेहा और कुल हुवल्लाहो अहद पढ कर सुनाइं और खालिद बिन अल-वलीद के हाथ पर अपने इस्लाम को ताज़ा किया और अपने शौहर रूमास से कहा कि या तो मेरा दीन कबूल कर या मुझ को छोड दे । पस खालिद बिन अल-वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो यह कलाम उस का सुन कर हंसे और कहा "سُبْحَانَ مَنْ وَفَّقَهُمَا" (पाक है वह ज़ात जिस ने दोनों को तौफीक बख्शी) । फिर ब-वास्तए तर्जुमान के उस औरत से कहा कि तेरा शौहर तुझ से पहले मुसलमान हो चुका है । यह सुन कर वह औरत बहुत खुश हूई ।"

(हवाला :- फुतूहुश्शाम, अज़ :- अल्लामा वाकदी, सफहा : 42)

कारेईने किराम ! मुन्दरजा बाला इबारत को एक मरतबा नहीं बल्कि कईं मरतबा मुतालआ फरमाऐं और इस के एक एक जुम्ला पर गौर फरमाऐं । हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के तसर्रुफाते आलिया और इख्तियाराते ताम्मा की वह शान रफीअ है कि दुनिया से पर्दा फरमाने के बा'द भी जिस को चाहें दौलते ईमान अता फरमाऐं । हाकिमे बसरा रूमास की बीवी को सिर्फ इस्लाम से ही मुशर्रफ फरमा कर फैज़ मुन्कतेअ नहीं फरमाया बल्कि ईमान की दौलत अता फरमाने के साथ साथ कुरआने मजीद की दो जलीलुश्शान सूरतों की ता'लीम भी फरमाई । यहां तक कि उसे याद (हिफ्ज़) करवा दीं । हाकिम रूमास की बीवी ख्वाब में हुज़ूरे अक्दस, सरवरे काएनात सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के दीदार से मुशर्रफ हूई और ख्वाब ही में जमाले जहां आरा के दीदार से बहरा मन्द हूई । हाकिम रूमास की बीवी ने हुज़ूरे अक्दस के जमाल अक्दस का ज़िक्र इन अल्फाज़ में किया कि "चौदहवीं रात के चान्द की मानिन्द निहायत खुबसूरत" । अल्लाह तआला ने अपने महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को बे मिस्ल व मिसाल पैदा फरमाया और अपने महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सद्के और तुफैल में काएनात को वुजूद बख्शा और इन्हीं के नूर की खैरात चान्द और सूरज को मिली :

नूर की खैरात लेने दौडते हैं महरो माह

उठती है किस शान से गर्दे सवारी वाह वाह

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हाकिम रूमास की ज़ौजा के ख्वाब की तस्दीक इस बात से होती है कि उस ने कुरआने मजीद की सूरए फातेहा और सूरए इख्लास तिलावत कर के सुना दीं। बे शक अल्लाह के हबीब की इनायत से वह दौलते ईमान से ऐसी मुशर्रफ हूई और ईमान उस के दिल में ऐसा रासिख हुवा कि अब वह यह चाहती है कि मेरा शौहर भी मेरी तरह कुफ्र व शिर्क की गलाज़त से पाक व साफ हो जाए। अपने शौहर से सिर्फ इस लिये झगडती है कि वह मज़्हबे बातिल से मुन्हरिफ हो कर दीने हक्क की जानिब रूजूअ करे। लैकिन उस के शौहर की तक्दीर तो पहले ही से चमक उठी थी। हाकिम रूमास की बीवी को जब पता चला कि मेरा शौहर भी हल्कए इस्लाम में शामिल हो गया है, तो उस के सुरूर और मसर्रत की इन्तेहा न रही। गोया वह अपनी तक्दीर पर नाज़ करते हुए अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के फैज़े अतम व अक्मल की शुक्र गुज़ार थी :

तू ने इस्लाम दिया, तू ने जमाअत में लिया,

तू करीम, अब कोई फिरता है अतिय्या तेरा ।

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

जंगे दमिश्क (बार अव्वल)

हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो ने फतहे बसरा के बा'द लश्करे इस्लाम को दमिश्क की जानिब कूच करने का हुक्म दिया। बसरा से दमिश्क जाने से पहले आप ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को खत लिखा कि मैं दमिश्क की तरफ रवाना हो रहा हूं। लेहाज़ा आप भी अपने साथ जो लश्कर है, उसे ले कर दमिश्क पहुंचो। एक खत अमीरुल मो'मिनीन, खलीफतुल मुस्लिमीन सय्यिदोना अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो को लिखा कि :

"आप के हुक्म के मुताबिक मैं मुल्के शाम आ गया और अल्लाह तआला ने मेरे हाथों अरेका, सह्ना, हवरान, तदम्मुर और बसरा को फतेह किया। अब मैं दमिश्क की जानिब रवाना होता हूं।"

मज़्कूरा दोनों खत रवाना करने के बा'द हज़रत खालिद ने बसरा से कूच करते हुए एक गांव "सनीया" पहुंचे और तवक्कुफ किया। इस गांव को अब "सनियतुल अकाब" कहा जाता। वहां से "गोता" नामी शहर की तरफ कूच की और वहां एक दैर (खंडर) में ठहरे। अब इस जगह को "वज़ीरे खालिद" कहा जाता है हज़रत खालिद ने इस मकाम पर हज़रत अबू उबैदा के इन्तिज़ार में तवक्कुफ किया।

रूमी सरदार कलूस की सिपाह सालारी में दमिश्क की कुमुक :-

बादशाह हिरक्ल ब-मकाम अजनादीन ज़बर दस्त लश्कर जमा कर रहा था। इसी अस्ना में उसे इत्तेलाअ मिली कि बसरा मुसलमानों ने फतह कर लिया है और अब इस्लामी लश्कर दमिश्क की जानिब रवाना हुवा है। लेहाज़ा हिरक्ल बादशाह ने दारुस-सल्तनत इन्ताकिया में रूमी लश्कर के सरदारों की मीटिंग बुलाई और सूरते हाल से आगाह किया। हिरक्ल बादशाह ने कहा कि शहरे दमिश्क मुल्के शाम की बहिश्त है। अगर मुसलमानों ने दमिश्क भी फतह कर लिया तो हमारी इज़्ज़त व शौकत को बडा सदमा पहुंचेगा और हमारे लिये मुसीबत का बाइस होगा। मैं ने मुसलमानों के लश्कर की ता'दाद से दूगनी ता'दाद का

लश्कर दमिश्क के लिये तैयार रखा है। लेहाज़ा अब तुम में से कौन इस की कयादत का ज़िम्मा अपने सर लेने को तैयार है ? जो शख्स तुम में से मुसलमानों के लश्कर को शिकस्त दे कर भगा देगा उस को मैं वह तमाम शहर जो मुसलमानों के कब्ज़ा में थे, ब-तौर इन्आम दे कर उस का मालिक बना दूंगा। हिरक्ल बादशाह के दरबार में हाज़िर सरदारों में से एक सरदार कलूस नाम का खडा हुवा और हिरक्ल को इत्मीनान दिलाया कि मैं उस की मुराद पूरी कर के ही रहूंगा। हिरक्ल ने सोने की एक सलीब उस को दी और पांच हज़ार सवारों पर उस को सरदार मुकर्रर कर के दमिश्क की जानिब रवाना किया। हिरक्ल ने जिस सरदार को पांच हज़ार का लश्कर दे कर रवाना किया था वह सरदार कलूस था, जिस की बहादुरी और दिलैरी पूरे मुल्के शाम में मश्हूर थी। जब शाहे फारस किस्रा ने मुल्के शाम पर लश्कर कशी की थी तो कलूस ने बडी शुजाअत से मुकाबला कर के शाहे फारस के लश्कर को शिकस्त दी थी। कलूस पांच हज़ार (५,०००) सवारों को ले कर इन्ताकिया से रवाना हो कर **"हुमुस"** पहुंचा। उस की आमद की खबर सुनते ही अह्ले हुमुस ने उस का शानदार इस्तेक्बाल किया। हुमुस में भी काफी ता'दाद में रूमी सिपाही मअ हथियारों के मौजूद थे। कलूस ने एक दिन और रात वहां कयाम किया, फिर वह वहां से रवाना हो कर **"जोसिया"** पहुंचा। वहां भी उस का रूमियों ने इस्तेक्बाल किया। वहां से रवाना हो कर वह **"बा'ल्बक"** नामी मकाम पर आया। वहां के बाशिन्दे उस के पास रोते पीटते आए और कहा कि ऐ सरदार कलूस ! दमिश्क को मुसलमानों से बचाओ क्यूंकि उन्हों ने अरेका, सहना, हवरान, तदम्मुर और बसरा पर कब्ज़ा कर लिया है और अब दमिश्क का इरादा रखते हैं। कलूस ने कहा कि मैं ने सुना है कि उन का लश्कर तो "जाबिया" नामी मकाम में पडाव किये हुए है। यह लोग अरेका से बसरा तक कैसे पहुंचे ? लोगों ने कहा कि जाबिया का इस्लामी लश्कर अभी तक वहीं है। लैकिन मुसलमानों का एक लश्कर मुल्के इराक की जानिब से आ धमका है और उस लश्कर के सरदार खालिद बिन वलीद ने ही यह सब कारनामा अंजाम दे कर हम पर कयामत काइम कर रखी है। कलूस ने सब को इत्मीनान दिलाया और कहा कि मैं अरबों को मुल्के शाम से भगा दूंगा।

❀ हाकिमे दमिश्क इज़्राईल और सरदार कलूस में इक्तेदार की जंग :-

कलूस पांच हज़ार सवारों का लश्कर ले कर दमिश्क पहुंचा दमिश्क का हाकिम इज़्राईल नाम का बतरीक था। जो रूमियों का मज़हबी रेहनुमा होने की वजह से हिरक्ल बादशाह का मुकर्रब था और रूमियों में उस की बहुत ही इज़्ज़त थी। हिरक्ल ने इज़्राईल की कुमुक के लिये तीन हज़ार का मुसल्लह लश्कर पहले से ही भेज रखा था। इलावा अज़ीं

दमिश्क के कुर्ब व जवार के इलाकों से, हुमुस और जोसिया वगैरा से भी भारी ता'दाद में रूमी दमिश्क में आ पहुंचे थे। उन की ता'दाद बारह हज़ार थी। दमिश्क में कुल बीस हज़ार (२०,०००) रूमियों का लश्करे इस्लाम के खिदमतगारों से जंग करने जमा हुवा था। दमिश्क शहर रूमी लश्कर के सिपाहियों से भरे ग्लास की तरह छलक रहा था।

कलूस जब दमिश्क आया तो वहां भी उस का शानदार इस्तेक्बाल किया गया। दमिश्क के हाकिम इज़्राईल और कलूस के दरमियान पुरानी अन बन थी। दोनों एक दूसरे के सख्त मुखालिफ थे, बल्कि सरदार कलूस तो इज़्राईल को दमिश्क के हाकिम के ओह्दे पर देखना भी गवारा नहीं करता था। वह यह चाहता था कि किसी तरह से इज़्राईल को हाकिमे दमिश्क के ओहदे और मन्सब से मा'ज़ूल कर के मैं चढ बैठूं। जब दमिश्क के रूउसा व उमरा कलूस से ब-गर्ज़े मुलाकात और अरबों से जंग करने के तअल्लुक से उस के नज़रियात और तदाबीर के उमूर में गुफ्तगू करने आए, तो कलूस ने अपनी बहादुरी की शैखी मारने में आस्मान ज़मीन के कुलाबे मिला दिये। उस ने यहां तक डींग हांकी कि इस्लामी लश्कर के सरदार का सर काट कर अपने नैज़ा की नोक पर लटकाऊंगा। कलूस की ऐसी शैखी बाज़ी सुन कर अह्ले दमिश्क को ढारस और हिम्मत बंधी। वह बहुत खुश हुए और उस की बहादुरी और शुजाअत के गुन गाने लगे। कलूस ने अपने दिल में हाकिमे दमिश्क इज़्राईल की भरी अदावत की भडास निकालनी शुरू की और कहा कि अरबों को तो मैं चुटकी बजा कर नेस्तो नाबूद कर सकता हूं लैकिन यह काम इस अम्र पर मौकूफ है कि तुम इज़्राईल को अपने शहर से निकाल दो और यह काम मैं अकैला अंजाम दूं। मैं नहीं चाहता कि अरबों को भगा देने का काम मेरी शुजाअत की वजह से अंजाम पज़ीर हो और इज़्राईल ख्वाह म ख्वाह दाद व तह्सीन में शरीक हो। अह्ले दमिश्क ने कलूस से कहा कि यह वक्त आपसी इख्तिलाफात व जिदाल का नहीं। हमारे आपसी इख्तिलाफ अपनी जगह बर-करार सही, लैकिन वक्त का तकाज़ा यह है कि हम सब मुत्तहिद हो कर अरबों का मुकाबला करें। दो के बजाए दस सरदार के हाथों अरबों को भगाने का काम अंजाम दिया जाए, तो इस को भी सराहना चाहिये। हम सब अह्ले दमिश्क गुज़ारिश करते हैं कि तुम अपने आपसी और ज़ाती इख्तिलाफात को बालाए ताक रख कर शाना से शाना मिला कर अरबों के मुकाबले में एक हो जाओ। अह्ले दमिश्क की इस राए पर कलूस खामोश हो गया और कोई जवाब नहीं दिया।

हाकिमे दमिश्क इज़्राईल को जब पता चला कि सरदार कलूस ने मुझे हाकिम के मन्सब से मा'ज़ूल करने की मुहिम चलाई है, तो वह भी ज़िद पर उतर आया और सरदार

कलूस की मईयत में रह कर इस्लामी लश्कर से जंग करने का साफ इन्कार कर दिया। इख्तिलाफ ने तूल पकडा और बात बढती गई, तो दमिश्क के दानिशवरों ने इस मुआमला में मुदाखलत की और ब-इत्तेफाके राए फरीकैन की रज़ा मन्दी से यह बात तय पाई कि इस्लामी लश्कर के सामने एक दिन कलूस और एक दिन इज़्राईल लडे और जिस की बारी के दिन इस्लामी लश्कर को शिकस्त हो वह दमिश्क का हाकिम बने। ब-ज़ाहिर तो मुआमला रफ़ा' दफ़ा' हो गया। लैकिन दोनों की कल्बी अदावत ब-दस्तूर काइम रही, बल्कि अदावत पूरे शबाब पर आई और हर एक अपने खसम की हलाकत का ख्वाहां हो गया।

दमिश्क का खूं रैज़ मा'रका

जैसा कि अवराके साबिका में अर्ज़ किया गया कि हज़रत खालिद बिन वलीद ब-मकामे **"दैर खालिद"** में पडाव किये हुए लश्करे हज़रत अबू उबैदा का इन्तिज़ार कर रहे थे कि उन्हों ने देखा कि दमिश्क की जानिब से रूमियों की फौज टिड्डियों की मिस्ल आगे बढती हुई आ रही है। आप फौरन अपनी ज़िरह जो **"जंगे यमामा"** में मुद्दई नबुव्वत **मुसैलमतुल कज़्ज़ाब** को कत्ल कर के हासिल की थी, उसे पहन लिया और अपनी कमर को अमामा से बांध कर ब-आवाज़े बुलन्द मुजाहिदों को पुकारते हुए फरमाया कि ऐ तौहीद के परस्तारो ! दुश्मनाने दीन तुम पर आ पहुंचे हैं। ऐ हामिलाने कुरआन ! तुम इन मुशरिकों को अपनी तलवारों और नैज़ों की नोक पर ले लो ! अल्लाह के दीन की मदद करो, बेशक अल्लाह तुम्हारी मदद फरमाएगा। ऐ शम्ए रिसालत के परवानो ! तुम कुरआने मजीद की इस आयत के मिस्दाक हो :

"اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ
الْجَنَّةَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ يُقْتَلُوْنَ"

(सूरए-तौबा ,आयत : 111)

तर्जुमा : "बे शक अल्लाह ने मुसलमानों से उन के जानो माल खरीद लिये हैं, इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है अल्लाह की राह में लडें तो मारें और मरें।"

(कन्ज़ुल ईमान)

मर्दाने अरब..... हिस्सा अव्वल

हज़रत खालिद का कलाम सुन कर तमाम मुजाहेदीन फौरन मुसल्लह और सवार हो कर दुश्मन के मुकाबले में आ गये। रूमियों ने देखा कि मुसलमानों का छोटा सा लश्कर हमारी बडी फौज से खाइफ हो कर मुंह छुपाने के बजाए सीना सिपर हो कर मुस्तइदे जंग हुवा है। लेहाज़ा रूमी लश्कर ने कलील फास्ले पर तवक्कुफ किया। इस दौरान हज़रत खालिद बिन वलीद ने इस्लामी लश्कर की सफ बन्दी और तर्तीब का काम मुकम्मल कर डाला। मैमना पर हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई,मैसरा पर हज़रत मुसय्यब, दाओं बाज़ू में हज़रत शुरहबील बिन हसना, बाओं बाज़ू में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र,साका पर सालिम बिन नौफिल और खुद अपने साथियों के साथ वस्त में ठहरे। इसी अस्ना में रूमी लश्कर भी मुरत्तब और आरास्ता हो गया। दोनों लश्कर आमने सामने आ गये। एक तरफ बीस हज़ार (२०,०००) का रूमी लश्कर और दूसरी तरफ पांच हज़ार (५,०००) से कुछ ज़ियादह इस्लामी लश्कर रूमी लश्कर ता'दाद के ए'तबार से चार गुना था। ताहम रूमी लश्कर का हर सिपाही हज़रत खालिद के नाम से थर थर कांपता था। लेहाज़ा रूमी लश्कर से कोई भी लडने न निकला। वह इस इन्तिज़ार में थे कि देखें इस्लामी लश्कर कौन सा कदम उठाता है।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने देखा कि रूमी सिपाही जामिद हो कर ठहरे हुए हैं और मैदाने जंग में कोई नहीं आ रहा है तो आप ने हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर को हुक्म दिया कि उन पर टूट पडो और अपनी तलवार का मज़ा चखाओ। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर तवील कद्दो कामत और सियाह फाम थे। उन की आंखें मोटी मोटी थीं औरसीना कुशादह था। हाथ के बाज़ू शीशम की मानिन्द थे। मैदाने जंग में वह ज़िरह या खौद नहीं पहनते थे। सिर्फ एक पाजामा पहनते थे और बाकी बदन नंगा होता। उन की हैबतनाक सूरत और बदन की हैअत देख कर ही दुश्मन लरज़ जाता और एक अन्जान खौफ इस पर तारी हो जाता।

हज़रत ज़िरार ने अपनी बर्क रफ्तार सवारी का रुख रूमी लश्कर की तरफ मोडा और मिस्ल बादे सर सर उन पर टूट पडे। सफें उलट कर रख दीं। कसीर सिपाहियों को काट डाला। उन की शम्शीर ज़नी का यह आलम था कि देखने वाला ऐसा मेहसूस करता कि सूखी लक्डियों के ढैर पर आरा चल रहा है। रूमी लश्कर में हलचल मच गई। सवारों की गर्दनें कट कर एक तरफ और धड दूसरी तरफ गिरते थे। पैदल फौज की तरफ रुख मोडा तो एक गरदावे में छे (६) प्यादा सिपाहियों को खाक व खून में मिला दिया। रूमी लश्कर का हर फर्द उन की सुरअत और महारते जंग देख कर हैरत ज़दा था। किसी में इतनी हिम्मत व हौसला न था कि करीब जा कर वार करे। लेहाज़ा तीर और पत्थर बरसाने शुरू किये। हज़रत ज़िरार इस्लामी लश्कर में वापस आए।

हज़रत खालिद ने अब हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सिद्दीक को मैदान में उतारा। वह भी हज़रत ज़िरार की मानिन्द रूमी लश्कर में कोहराम मचा कर वापस आए। फिर हज़रत खालिद बिन वलीद बज़ाते खुद मैदान में आए। नैज़ा बाज़ी और शम्शीर ज़नी का फन दिखा कर रूमियों को तअज्जुब में डाल दिया। हज़रत खालिद अपने घोडे को मैदान में घूमाते और अपनी शुजाअत का मुज़ाहेरा करते थे रूमी सरदार कलूस आंखें फाडफाड कर हज़रत खालिद की जंगी महारत देख रहा था। उस ने गुमान किया कि यही मुसलमानों के सरदार मा'लूम होते हैं। हज़रत खालिद मैदान में घूमते हुए पुकार पुकार कर लडने वाला तलब करते थे। लैकिन मुकाबले के लिये एक भी माई का लाल न निकला। इत्तिफाकन हज़रत खालिद और सरदार कलूस की नज़रें चार हूईं, दोनों ने एक दूसरे को देखा कलूस ने समझा कि मेरा ज़र्क बर्क लिबास और साज़ो सामाने जंग देख कर हज़रत खालिद ने मुझे पहचान लिया है कि मैं ही लश्कर का सरदार हूं और वह मुझ पर हम्ला करने आ रहे हैं। लेहाज़ा वह लश्कर की सफ अव्वल से पीछे हटा और लश्कर के बीच में घुसने की उज्लत करने लगा। उस की इस हरकत से एक शौरो गुल हुवा और हज़रत खालिद के मुल्तफित होने का सबब बना और वाकई हज़रत खालिद उस तरफ आने के लिये आगे बढे। कलूस ने देखा कि हज़रत खालिद मेरी तरफ आ रहे हैं तो वह ब-ज़ोर तमाम लश्कर के बीच में घुस कर भागा। हज़रत खालिद ने उस का तआक्कुब किया और तने तन्हा रूमी लश्कर की सफों के दरमियान दाखिल हो गए। लैकिन सरदार कलूस हाथ न लगा। वह अपने लश्कर में पानी में नमक की तरह घुल गया। कलूस के मुहाफिज़ मुज़ाहिम हुए और नतीजा यह हुवा कि हज़रत खालिद की बर्क रफ्तार शम्शीर की ब-दौलत दस अश्खास के जिस्मों से सर गाइब हो गए। आप ने रूमियों को लल्कारा के मुझ तन्हा के मुकाबले में तुम दस अश्खास एक साथ आओ, फिर भी रूमियों को मुकाबला की हिम्मत न हूई।

कलूस और हज़रत खालिद के दरमियान मुकाबला, कलूस गिरफ्तार :-

हज़रत खालिद के बार बार पुकारने पर भी रूमी लश्कर से कोई मुकाबिल न निकला, तो हाकिमे दमिश्क इज़राईल ने कलूस से कहा कि हिरक्ल बादशाह ने तुझ को लश्कर का सरदार मुकर्रर किया है। मुसलमानों का सरदार कब से लडने वाला तलब कर रहा है, मगर न तू मुकाबला के लिये जाता है और न किसी को भेजता है। हमारे लिये यह शर्म की बात है। कलूस ने कहा कि अगर तुझ को अपनी कौम की गैरत का इत्ना ख्याल है तो बज़ाते खुद जा।

इज़राईल ने कहा मैं क्यूं जाउं ? सरदारे लश्कर तू बना बैठा है। तुझे जाना चाहिये। कलूस ने कहा दमिश्क के हाकिम के ओह्दे पर तू चढ बैठा है। मुसलमानों का हम्ला दमिश्क पर हुवा है। लेहाज़ा तेरी ज़िम्मेदारी है, पहले तू जा, बा'द में मेरा नम्बर है। तेरे और मेरे दरमियान यह शर्त रखी गई है कि एक दिन तू लडेगा और एक दिन मैं लडूंगा। दमिश्क में मुझ से पहले तू आया है, लेहाज़ा पहले तू निकल। आज तू लड, कल मैं लडूंगा। दोनों एक दूसरे को भेजने की कोशिश में ला ताइल हुज्जत करते रहे और मुआमला बढ कर तू तू मैं मैं तक पहोंच गया। सूरते हाल यह हो गई कि हज़रत खालिद से लडना भूल कर आपस में तलवारें तान लेते, लैकिन लश्कर के दीगर अराकीन ने मुदाखेलत कर के यह तय किया कि दोनों के नाम कुर्आ डाला जाए और जिस के नाम कुर्आ निकले वह मुकाबला के लिये जाए। चुनांचे दोनों के नाम कुर्आ डाला गया और रूमी लश्कर के सरदार कलूस के नाम कुर्आ निकला। सरदार कलूस के मुंह पर हवाइयां उडने लगीं। उस के चेहरे का रंग फक हो गया। इज़राईल उस की मुज़्तरिब हालत देख कर बहुत खुश हो रहा था और उस से तन्ज़न कहा कि मुसलमानों के सरदार ने जिस तरह अपनी शुजाअत दिखाई है तू भी इसी तरह अपनी शुजाअत ज़ाहिर कर। आज तेरा नम्बर है, आज तू जा कर शुजाअत दिखा। आइन्दा कल मैं अपनी शुजाअत के जौहर दिखाऊंगा। कल सब को मा'लूम हो जाएगा कि हम दोनों में से कौन ज़ियादह बहादुर और शेहसवार है।

कलूस अपने घोडे पर सवार हुवा और बा-दिले ना ख्वास्ता हज़रत खालिद के मुकाबले में गया। मैदान में आते ही उस ने हज़रत खालिद पर नैज़ा का वार किया, लैकिन हज़रत खालिद ने उस का वार खाली फेरा। कलूस बहुत ज़ियादह मुश्तइल और जज़्बाती हो कर लडने लगा। हाकिमे दमिश्क इज़राईल के तन्ज़ और ता'नों ने उस के दिल में आग लगा दी थी और वह अपने दिल की आग ठंडी करने शिद्दत से हम्ला कर के इज़राईल को दिखा देना चाहता था कि शुजाअत में मेरे सामने तेरी कुछ भी हैसियत नहीं। हज़रत खालिद और कलूस के दरमियान नैज़ा बाज़ी बडे ज़ोरो शौर से हूई। नैज़ों के टकराने से आग की चिंगारियां उडती थीं। कलूस की अब जुर्अत बढ रही थी। इस पार या उस पार के नज़रिया को अपना कर वह अपनी जान पर खेल रहा था। कलूस पूरे जौश से नैज़ा बाज़ी के कर्तब दिखा रहा था। हज़रत खालिद ने जौश के साथ होश की आमेज़िश की थी। कलूस के जौशो खरोश के ब-मुकाबिल शुरू में सख्त हम्ले न किये बल्कि कलूस को हम्ला कर ने के मौके देते रहे और देफाअ करते रहे, ताकि कलूस की कुव्वत सर्फ हो कर जल्दी खत्म हो जाए। कलूस घबराहट के आलम में वार पर वार कर रहा था और हज़रत खालिद उस के वार को फेरे देते थे। अब कलूस थक गया था। उस के वार में शिद्दत बाकी न रही और थकन के आसार अयां होने लगे।

अब हज़रत खालिद ने जवाबी वार की इब्तिदा की और ऐसे शदीद हम्ले किये कि कलूस हज़रत खालिद के हम्लों से किनारा कशी चाहने लगा। हज़रत खालिद उस की यह कमज़ोरी जान गए और अपने घोडे को थोडा पीछे हटाया। कलूस को थोडी राहत मेह्सूस हूई और यह गुमान किया कि हज़रत खालिद भी मेरी तरह थक गए हैं, लैकिन हज़रत खालिद ने अपना घोडा कूदा कर कलूस के घोडे के करीब कर दिया, ताकि कलूस के हाथ में जो लम्बा नैज़ा है वह वार करने के लिये कार आमद न हो सके। आप ने घोडे के ज़ीन से छोटा नैज़ा खींच कर उस के हलक में पैवस्त कर दिया और बुलन्द आवाज़ से "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَظِیْم" पढ कर उस को घोडे की ज़ीन से अलग कर के खींच लिया और अपने हाथों में दबोच कर घसीटते हुए इस्लामी लश्कर की तरफ ले गए। कलूस के हलक में नैज़े का ज़ख्म लगा था मगर मुहलिक न था। अलबत्ता शदीद ज़रूर था। कलूस दर्दे ज़ख्म की वजह से चिल्लाता था। हज़रत खालिद ने कलूस को अपने साथियों के हवाले करते हुए हुक्म दिया कि इस की मुश्कें खूब मज़बूत बांध दो।

हाकिमे दमिश्क इज़राईल और हज़रत खालिद में मुकाबला :-

हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो अन्हो ने रूमी लश्कर के सरदार कलूस को कैद कर के अपने साथियों के सुपुर्द फरमाया और फिर दू-बारा मैदान में जाने का अज़्म किया। लैकिन उन का घोडा निढाल हो गया था, तैज़ सांस ले कर कांप रहा था। आप ने अपना घोडा बदल दिया और मैदान की तरफ जाने लगे कि हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर ने उन को रोका और कहा कि ऐ सरदार ! आप रूमी सरदार की लडाई में सख्त मेहनत उठा चुके हैं। आप आराम करें और मुझ को इजाज़त दें कि मैं लडने जाउं। हज़रत खालिद ने मुस्कुराते हुए फरमाया कि ऐ ज़िरार राहत और आराम तो आलमे आखेरत में है और जो आज मेहनत व मशक्कत करेगा, वह कल राहत हासिल करेगा। यह फरमा कर आप मैदान की तरफ रवाना हुए आप को रवाना होते देख कर सरदार कलूस ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा और रूमी ज़बान में कुछ कहने लगा। हज़रत खालिद रुक गए और हाकिमे बसरा हज़रत रूमास से पूछा कि यह क्या कहता है ? रूमास ने कहा कि यह कहता है कि तुम को अपने नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की कसम ! मैं तुम से कुछ कहना चाहता हूं वापस पलटो और मेरी बात सुनो। फिर उस ने कहा कि दमिश्क के हाकिम इज़राईल और मुझ में इख्तिलाफ है। तुम इज़राईल को मुकाबला के लिये तलब करना और कत्ल कर देना। अगर तुम

ने इज़राईल को कत्ल कर दिया तो शहर दमिश्क तुम्हारे कब्ज़े में आ जाएगा। हज़रत खालिद ने फरमाया मैं तो किसी मुशरिक को ज़िन्दा नहीं छोडूंगा। फिर आप घोडे को दौडाते हुए मैदान में आ गये और मुकाबिल तलब किया।

रूमी लश्कर के अराकीन ने हाकिम इज़राईल से कहा कि शर्त के मुताबिक सरदार कलूस पहले मुकाबला के लिये निकला, लैकिन इत्तेफाक से कैद हो गया है। लेहाज़ा अब तेरी बारी है। अब तू मुकाबले के लिये निकल और इस अरब बदवी को कत्ल कर। इज़राईल ने कहा कि अगर मुसलमानों का सरदार मारा गया, तो उस की जगह दूसरा शख्स काइम मकाम हो जाएगा, लैकिन अगर मैं मारा गया तो तुम सब बगैर चरवाहे की बकरियों की मानिन्द बे सहारा हो जाओगे। मेरी राए यह है कि हम सब मिल कर यल्गार कर दें। रूमी लश्कर के अराकीन ने कहा कि इस सूरत में बहुत सिपाही मारे जाअेंगे। अपनी जान बचाने के लिये पूरी कौम को हलाकत में मत डाल। अराकीने लश्कर ने इज़राईल को खूब डांटा और धमकाया और कत्ल कर देने की धमकी दी तो नाचार बा-दिले ना-ख्वास्ता आमादए जंग हुवा।

हाकिम इज़राईल को अरबी ज़बान में गुफ्तगू करने का मलका था। वह मैदान में आया और हज़रत खालिद से कहा कि ऐ बिरादर अरबी ! मेरे करीब आओ ताकि मैं तुम से कुछ सवाल करूं। हज़रत खालिद ने फरमाया तू मेरे करीब आ, ताकि मैं तेरा सर तोडूं। यह कह कर आप ने उस पर हम्ले का कस्द किया। इज़राईल ने चिल्ला कर कहा ऐ बिरादर ! तवक्कुफ करो। तुम्हारा हुक्म मान कर मैं तुम्हारे करीब आता हूं। हज़रत खालिद ने देखा कि यह शख्स डर गया है, लेहाज़ा आप ने हम्ला करने में तवक्कुफ किया। इज़राईल ने करीब आ कर कहा कि मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि तुम्हारे लश्कर में शेहसवार और बहादुर लडने वाले मौजूद होने के बा-वुजूद तुम सरदार हो कर बार बार मुकाबला करने क्यूं निकलते हो ? अगर तुम को कुछ हो गया तो तुम्हारा लश्कर बगैर चरवाहे की बकरियों के मिस्ल हो जाएगा। हज़रत खालिद ने फरमाया कि तू ने मुझ से पहले मेरे दोनों साथी हज़रत ज़िरार और हज़रत अब्दुर्रहमान को देखा है। उन दोनों ने तुम्हारे लश्कर पर कयामत बर्पा कर दी थी। अगर मैं उन दोनों को वापस न बुलाता, तो वह तुम सब को फाड कर रख देते। मेरे तमाम साथी ऐसे ही बहादुर और शैर दिल हैं। लेहाज़ा मेरी मौत से कोई फर्क वाकेअ न होगा। फिर हज़रत खालिद ने पूछा कि तू कौन है ? कहा कि मैं दमिश्क का हाकिम हूं और मेरा नाम इज़राईल है। यह सुन कर हज़रत खालिद मुस्कुराए और फरमाया ऐ दुश्मने खुदा ! जिस के नाम पर तेरा

नाम रखा गया है, वह हज़रत इज़राईल मलेकुल मौत मुश्ताक हैं कि तुझ को जल्द अज़ जल्द दोज़ख में पहुंचा दें। फिर इज़राईल ने हज़रत खालिद से पूछा कि कलूस के साथ तुम ने क्या मुआमला किया ? फरमाया कि वह हाथ पाऊं बंधा हुवा हालते असीरी में पडा हुवा है। इज़राईल ने कहा कि वह एक बला है, उस को अभी तक कत्ल क्यूं नहीं किया ? फरमाया इस लिये कि तुम दोनों को एक साथ कत्ल करना है।

हज़रत खालिद की बात सुन कर इज़राईल सहम गया और उस ने लालच दिलाते हुए कहा कि अगर कलूस को कत्ल कर के उस का सर मुझे दे दो तो इस के इवज आप को एक हज़ार मिस्काल सोना, दस रैश्मी कपडे और पांच घोडे ब-तौरे इन्आम दूंगा। फरमाया कि यह तो कलूस के खून का इवज़ हुवा। अपने कत्ल करने का इवज क्या देगा ? इज़राईल ने कहा मुझ से तुम क्या लोगे ? फरमाया तेरा सर जिज़्या में लूंगा, हालां कि तू ज़लील व ख्वार होगा। इज़राईल ने नर्म लह्जा इख्तेयार करते हुए कहा कि ऐ अरबी बिरादर ! मैं जितनी तुम्हारी ता'ज़ीम और लिहाज़ करता हूं तुम उतनी ही मेरी इहानत व तज़लील करते हो। लेहाज़ा अब मैं तुम्हारे साथ सख्ती और शिद्दत इख्तेयार करता हूं। अपने को मुझ से बचाव क्यूं कि मैं तुम्हारा कातिल हूं। मैं मलेकुल मौत का हम नाम हूं।

हज़रत खालिद को उस की बेहूदा गुफ्तगू पर तैश आ गया और मिस्ल शौ'ला इज़राईल पर हम्ला आवर हुए। इज़राईल अपने को बचाता हुवा जवाबी हम्ले करने लगा। अब इज़राईल की जुर्अत बढ रही थी। हज़रत खालिद के हम्ले अभी शबाब पर नहीं आए थे बल्कि मुतवस्सित दर्जे के वार करते थे। लेहाज़ा इज़राईल ने यह गुमान किया कि उन से लडना इत्ना मुश्किल नहीं जितना मैं समझ रहा था। ख्वाह म ख्वाह उन को शोहरत दे दी गई है। अब उस के हौसले बढने लगे। इज़राईल का शुमार मुल्के शाम के नामवर बहादुरों में होता था। इज़राईल अब अपने अस्ल रंग में आ गया और तकब्बुर व गुरूर में मख्मूर हो कर हज़रत खालिद से कहा कि अगर मैं चाहूं तो तुम को पलक झपकने में ज़मीन पर मुर्दा गिरा सक्ता हूं, लेकिन तुम पर मेहरबानी और शफ्कत की नज़र करते हुए और तुम्हारे साथियों के हाल पर रहम करते हुए अफ्वो करम से काम लेता हूं। लेहाज़ा अब तुम अपने आप को मेरे हवाले कर दो, ताकि लोग देखें कि कलूस को कैद करने वाले को इज़राईल किस तरह कैद कर के ले आया ! फिर तुम को इस शर्त पर रेहा कर दूंगा कि मुल्के शाम के जिन शहरों पर तुम ने कब्ज़ा कर लिया है, वह हमारे सुपुर्द कर दो और मुल्के शाम से जज़ीर-ए अरब की तरफ कूच कर जाओ।

हज़रत खालिद ने फरमाया ऐ दुश्मने खुदा ! अन्करीब तुझे मा'लूम हो जाएगा कि हम दोनों में से कौन गालिब आता है। यह फरमा कर आप ने भी अपना असली रंग दिखाते हुए लडाई का ऐसा दाव दिखाया कि इज़राईल की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। उस ने अपना तर्ज़े गुफ्तगू बदलते हुए कहा कि ऐ बिरादर अरबी ! इत्ना गुस्सा क्यूं करते हो ? मैं तो यूंही मज़ाक कर रहा था। हज़रत खालिद ने फरमाया लेकिन मेरा मज़ाह खुदा की खुशनूदी हासिल करने के लिये तलवार मारना है। आप ने बढ कर तलवार की ज़र्ब लगाई, लेकिन इज़राईल ने लोहे की ज़िरह पहन रखी थी, लेहाज़ा तलवार ने कुछ काम नहीं किया। ताहम तलवार की ज़र्ब इतनी शदीद थी कि इज़राईल लडखडा गया। इस का दिल अन्दोहगीं हो गया और उस ने यकीन कर लिया कि इन का मुकाबला करना अम्रे मुहाल है। जान छुडा कर राहे फरार इख्तेयार करने में ही खैरियत समझ कर भाग निकला।

हज़रत खालिद ने उस का तआक्कुब किया। लेकिन इज़राईल का घोडा बहुत ही तैज़ रफ्तार था, वह आगे निकल गया और हज़रत खालिद उसे न पा सके। हज़रत खालिद का घोडा बुरी तरह थक चुका था, इज़राईल ने पीछे मुड कर देखा कि हज़रत खालिद का घोडा सुस्त हो गया है तो उस ने अपना घोडा ठहरा दिया। हज़रत खालिद उस के करीब पहुंचे तो इज़राईल ने फिर शैखी करते हुए कहा : शायद तुम ने यह गुमान किया होगा कि मैं तुम से डर कर भागा हूं, लेकिन हकीकत यह है कि मैं ने तुम्हारे साथ मक्र किया है ताकि तुम को तुम्हारे लश्कर से दूर ला कर गिरफ्तार कर लूं। इज़राईल ने हज़रत खालिद के घोडे को देखा तो वह पसीने में शराबोर था और बहुत तैज़ तैज़ सांस ले रहा है। अब यह घोडा कार आमद नहीं है। हज़रत खालिद ने फरमाया कि मेरे घोडे के बिछड जाने से तूने तमाअ की है, लेकिन मैं पैदल भी तेरा मुकाबला कर सकता हूं, यह फरमा कर आप घोडे की ज़ीन से उतर गए और तलवार निकाल कर इस पर हम्ला करने बढे। हज़रत खालिद को पा-प्यादा देख कर इज़राईल की जुर्अत और बढी। उस ने आप पर तलवार का वार किया, लेकिन हज़रत खालिद ने उस का वार खाली फैर दिया और बिजली की तरह तलवार की ज़र्ब लगा कर इस के घोडे की कूचें काट डालीं। इज़राईल ज़मीन पर गिरा, लेकिन फौरन खडा हो गया। और हिरन की तरह रूमी लश्कर की तरफ भागा, लेकिन हज़रत खालिद ने भी दौडने में तैज़ रफ्तारी से काम लेते हुए उस को पा लिया और उस को अपने मज़बूत हाथों में दबोच लिया। इज़राईल के मुंह से झाग उडने लगा। वह बुरी तरह से हज़रत खालिद की गिरफ्त में आ गया था।

इज़्राईल ने हज़रत खालिद की मज़्बूत पकड से छूटने के लिये खूब हाथ, पांव मारे, लैकिन नाकाम रहा। वह हज़रत खालिद के हाथों में तडप और बिलक रहा था। हज़रत खालिद ने उसे हाथ पर उठा लिया और चाहा कि ज़मीन पर ज़ोर से पटक कर उस का काम तमाम कर दें। रूमियों ने अपने हाकिम को ऐसी बे बसी की हालत में देखा तो उस की रिहाई के कस्द से हम्ला करने हज़रत खालिद की जानिब उमडते हुए सैलाब की तरह बढे। हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो उस वक्त इस्लामी लश्कर से दूर और रूमी लश्कर से करीब तने तन्हा थे। इज़्राईल को हाथों पर उठाए हुए हैं और सामने से रूमी फौज दौडती हूई आ रही थी। रूमी लश्कर को हज़रत खालिद की तरफ बढते देख कर इस्लामी लश्कर के मुजाहेदीन भी हज़रत खालिद की मदद और हिफाज़त के लिये बहुत तैज़ भागे, लैकिन फास्ला ज़ियादह था। ब-ज़ाहिर हज़रत खालिद की जान का खतरा खडा हो गया था। बचना मुश्किल नज़र आ रहा था। एक अकेली जान पर टूट पडने के लिये हज़ारों जानें आ रही थी। बडा नाज़ुक मरहला था।

लश्करे हज़रत अबू उबैदा की आमद :-

हज़ारों की ता'दाद में रूमी हज़रत खालिद बिन वलीद की तरफ बढ रहे थे कि ना'रहाए तक्बीर की कान के पर्दे फाडती बुलन्द आवाज़ें सुनाई दीं। रूमियों के लश्कर के करीब ही इस्लामी लश्कर के निशान नज़र आए। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह सैंतिस (37) हज़ार का लश्करे जर्रार ले कर आ पहुंचे थे। रूमियों ने देखा कि मुसलमानों का अज़ीम लश्कर आ पहुंचा है, तो हवास बाख्ता हो गए। हज़रत खालिद की तरफ बढना छोड कर किल्ले की तरफ रुख फेरा, सरदार जाए चुल्हे भाड में, हम चले किल्ले में, का रवय्या इख्तेयार किया। गिरते पडते ऐसे भागे कि किल्ले के अन्दर जा कर ही दम लिया। हाकिम इज़्राईल हज़रत खालिद के हाथों में पडा का पडा रह गया। तमाम रूमी भाग निकले और उन का हाकिम इज़्राईल हज़रत खालिद की कैद में आ गया।

हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद के करीब पहोंच कर सवारी से उतरना चाहा, लैकिन हज़रत खालिद ने कसम दे कर उन्हें सवारी से उतरने न दिया। क्यूंकि रसूले अकरम, खुदा के महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम

हज़रत अबू उबैदा को दोस्त रखते थे और उन की बहुत इज़्ज़त फरमाते थे। हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद से फरमाया कि ऐ मेरे बेटे ! खुदा की कसम ! हज़रत अबू बक्र सिद्दीक ने तुम को सरदार मुकर्रर किया इस से मैं बहुत खुश हूं। अहले फारस और मुश्रेकीने अरब के साथ जंग में तुम्हारी खिदमत से मैं अच्छी तरह वाकिफ हूं। वाकई तुम ही सिपाह सालार के मन्सब के लाइक हो। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक ने बेहतरीन इन्तेखाब किया है। हज़रत खालिद ने जवाब देते हुए कहा कि ऐ अमीनुल उम्मत ! अगर खलीफतुल मुस्लिमीन का हुक्म न होता तो मैं हरगिज़ आप की मौजूदगी में यह ओहदा मन्ज़ूर न करता क्यूं कि आप मुझ से पहले ईमान लाए और खासाने दरगाहे मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम से हैं। आप का रुत्बा और दर्जा बडा है। खुदा की कसम ! आप के मश्वरे के बगैर मैं कोई काम नहीं करूंगा और किसी मुआमले में आप से मुखालेफत नहीं करूंगा। फिर दोनों सहाबा ने आपस में मुसाफहा किया। हज़रत खालिद पा-प्यादा थे, लेहाज़ा उन के लिये घोडा लाया गया। वह सवार हुए और दोनों या'नी हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद घोडों पर सवार बातें करते हुए इस्लामी लश्कर के कैम्प की तरफ रवाना हुए। राह में हज़रत खालिद ने दोनों सरदारों की गिरफ्तारी, नीज़ अब तक की कार-गुज़ारी की दास्तान हज़रत अबू उबैदा को सुनाई। हाकिम इज़्राईल को लश्कर के मुजाहेदीन मुकय्यद कर के साथ चलते थे। इस तरह मकामे दैर खालिद में दोनों इस्लामी लश्कर की मुलाकात हूई। मुसलमानों ने सलाम और मुसाफहा व मुआनका किया और आपस में एक दूसरे से मिल कर बहुत मस्रूर हुए। शब आराम में बसर हूई।

(फुतूहुश्शाम, सफहा : 52)

जंग का दूसरा दिन और किल्ल-ए दमिश्क का मुहासरा

रूमी लश्कर के सरदार कलूस और दमिश्क के हाकिम इज़राईल के कैद हो जाने से अह्ले दमिश्क ने हिरक्ल बादशाह के दामाद "तोमा" को दमिश्क का हाकिम बनाया था। तोमा जंगी उमूर में बहुत माहिर था और इसी वजह से शाह हिरक्ल उस पर बहुत ए'तेमाद करता था। दूसरे दिन हाकिम तोमा लश्कर ले कर किल्ले से निकला और दैर वज़ीरे खालिद के करीब वसीअ मैदान में तवक्कुफ किया। इस्लामी कैम्प से हज़रत खालिद ने रूमी लश्कर को आते देखा, तो हज़रत अबू उबैदा से कहा कि रूमियों पर इस्लामी लश्कर का रोअब बैठ चुका है। मुनासिब है कि आप और मैं दोनों मिल कर यल्गार कर दें। हज़रत अबू उबैदा ने कहा कि तुम्हारा फैसला मुनासिब है। चुनांचे इस्लामी लश्कर ने नारए तक्बीर बुलन्द करते हुए यल्गार कर दी। तक्बीर की आवाज़ से कोह व सहरा गूंज उठे। इस्लामी लश्कर के कफन बरदोश मुजाहिदों ने ऐसा सख्त हम्ला किया कि पहले हम्ले में ही रूमियों के दिल हिल गए। मुजाहिदों ने रूमियों पर तलवारों के वार कर के मैदान को लाशों से भर दिया। रूमियों को लश्कर की तर्तीब और सफ बन्दी का भी मौका' मयस्सर न हुवा और मुजाहिदों ने उन को तलवारों की नोक पर लिया। मौत की तैज़ आंधी रूमी लश्कर पर चल गई। दुम दबा कर ऐसे भागे, जैसे शैर को देख कर बकरी। मुजाहिदों ने दैर खालिद से किल्ल-ए दमिश्क तक उन का तआककुब किया और जो भी हाथ लगा उसे वासिले जहन्नम किया। रूमी लश्कर दमिश्क के किल्ले में घुस गया और दरवाज़े बन्द कर लिये। मुजाहिदों ने किल्ले का मुहासरा किया। बाबे मश्रिकी पर हज़रत खालिद और बाबे जाबिया पर हज़रत अबू उबैदा लश्कर के साथ ठहरे। रूमी किल्ले की दीवार पर चढ कर देखने लगे कि इस्लामी लश्कर अब क्या करता है ? जब अह्ले दमिश्क किल्ले की दीवार से देख रहे थे उस वक्त हज़रत खालिद ने रूमी लश्कर के सरदार कलूस और दमिश्क के साबिक हाकिम इज़राईल को बुलाया और दोनों के सामने इस्लाम पैश किया।

लैकिन दोनों ने जब इस्लाम कबूल करने से साफ इन्कार किया तो हज़रत खालिद ने उन के कत्ल का हुक्म दिया। दोनों को किल्ले की दीवार के करीब लाया गया और किल्ले की दीवार पर मौजूद हज़ारों रूमियों की नज़रों के सामने दोनों की गर्दनें मारी गईं। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर ने इज़राईल को और हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई ने कलूस को कत्ल किया। अपनी नज़रों के सामने दोनों सरदारों की हलाकत का मन्ज़र देख कर अह्ले दमिश्क तिलमिला उठे। गम व हैबत ने उन को घैर लिया। अह्ले दमिश्क ने दोनों सरदारों के मारे जाने और दमिश्क का मुहासरा होने का हाल हिरक्ल बादशाह को लिखम। एक कासिद को खत दे कर उस की कमर में रस्सी बांध कर रात के वक्त उस को किल्ले की दीवार से लटका कर नीचे उतारा। वह कासिद दमिश्क से इन्ताकिया पहुंचा और हिरक्ल बादशाह को खत दिया।

सरदार वर्दान बारह हज़ार के लश्कर के साथ दमिश्क रवाना :-

हिरक्ल बादशाह ने अह्ले दमिश्क का खत पढा तो खत फैंक कर रोने लगा। अर्काने दौलत और मुसाहिब दरबार को जमा किया और दमिश्क की दास्तान सुनाई और कहा कि मैं ने तुम को इस से कब्ल भी अरबों की दिलैरी से मुतनब्बेह किया था कि मुसलमान मेरे तख्त तक के मालिक हो जाएंगे। लैकिन तुम ने हमेंशा मेरी बात के साथ बे ए'तेनाई करते हुए उस को अहमियत न दी। लैकिन अब पानी सर से ऊंचा हो गया है। अरब रेगिस्तान के रहने वाले और चना, जौ और खुर्मे जैसी खुश्क गिज़ा खाने वाले हमारे सरसब्ज़ व शादाब इलाकों के लज़ीज़ मेवा जात का मज़ा चख चुके हैं और अब वह सख्त लडाई के बगैर यहां से टलने वाले नहीं। हमारे लहलहाते खैत और बा रौनक शहर उन को अच्छे मा'लूम हुए हैं और वह पूरे मुल्के शाम पर कब्ज़ा और तसल्लुत के दरपै हुए हैं। अगर यह बात बाइसे नन्ग व आर न होती, तो मैं इन्ताकिया छोड कर अपने आबाई शहर कस्तुनतुनिया चला जाता और अपने अह्लो अयाल के साथ चैन व सुकून के साथ हिफाज़त से रहेता। लैकिन अब नौबत यहां तक पहोंची है कि मैं बज़ाते खुद अरबों के मुकाबले का इरादा रखता हूं। हाज़िरीने मजलिस ने कहा कि ऐ बादशाह ! आप क्यूं ज़हेमत गवारा फरमाते हैं। आप के लश्कर के सरदारों में एक बहादुर शख्स ऐसा है कि जिस ने लश्करे फारस के सामने शुजाअत के जौहर दिखा कर सब को दंग कर दिया था। और वह शख्स किल्ल-ए हुमुस का हाकिम वर्दान है। अरबों के लिये वह अकैला काफी है।

हिरक्ल ने हाकिमे हुमुस वर्दान को बुलाया और उसे अरबों के मुकाबला में जाने का हुक्म दिया। वर्दान ने कहा कि ऐ बादशाह ! आप ने मुझे याद करने में बडी दैर कर दी।

आप ने मुझे छोड कर दूसरे सरदारों को अरबों के मुकाबले में भेज कर हर महाज़ पर हज़ीमत उठाई और बाज़ी हाथ से निकल गई । अगर शुरू से ही मेरी खिदमत ली गई होती, तो में बहुत पहले अरबों को भगा चुका होता । हिरक्ल ने कहा कि मैं अरबों को बिल्कुल अहमियत नहीं देता और उन के सामने तुझ जैसे जलीलुल कद्र शुजाअ को भेजना तेरी शान के खिलाफ समझता था । लैकिन अरबों की जसारत इस कद्र बढ गई है कि उन के इस्तीसाल के लिये तेरा जाना लाज़िमी हो गया है । मैं ने तुझ को बारह हज़ार सवारों पर सरदार मुकर्रर किया है । लेहाज़ा तू जल्द अज़ जल्द कूच करने की तैयारी कर और जब तू ब-मकामे **बा'ल्बक** और **अजनादीन** पहुंचना, तो वहां जो लश्कर है उस से कहना कि मुसलमानों का एक लश्कर अम्र बिन अल-आस की सरदारी में **अर्दे फलस्तीन** में पडाव किये हुए है । वह इस लश्कर को खालिद बिन वलीद तक न पहुंचने दें । फलस्तीन से दमिश्क जाने वाले तमाम रास्ते मस्दूद कर दें । फिर तू वहां से **दमिश्क** की कुमुक को पहोंच जाना ।

वर्दान ने कहा कि ऐ बादशाह ! मैं आप की मुराद पूरी करूंगा । खालिद बिन वलीद और उस के साथियों के सर काट कर लाऊंगा और आप के कदमों में डाल दूंगा । फिर यहां से मुल्के हिजाज़ पर लश्कर कशी कर के मुसलमानों के का'बा को ढा दूंगा और मदीना को मिस्मार कर के खंडेर बना दूंगा । आप इजाज़त अता फरमाएं, आप का यह खादिम इसी वक्त कूच करने का इरादा रखता है । हिरक्ल ने वर्दान की हौसला अफ्ज़ाई करते हुए कहा कि अगर अरबों से मुकाबला कर के तू फतह हासिल करेगा और अपना कहा कर दिखाएगा, तो मैं वह तमाम शहर जो मुसलमानों ने फतह कर लिये हैं और हिजाज़ का जितना हिस्सा तू फतह करेगा, उन सब का तुझे मालिक कर दूंगा । यह वा'दा मैं मुकद्दस इन्जील का हलफ उठा कर करता हूं । और हां ! इस से बढ कर एक इन्आम यह कि मेरे इन्तेकाल के बा'द मुल्के शाम का तू ही बादशाह होगा और मैं उन तमाम वा'दों की दस्तावेज़ लिख जाऊंगा ।

हिरक्ल ने वर्दान को खिल्अत (शाही लिबास) दिया और एक सोने की सलीब दी, जिस के चारों किनारों में कीमती याकूत जडे हुए थे और कहा कि जिस वक्त दुश्मन से मुकाबला हो, इस सलीब को आगे रखना, यह सलीब तेरी मदद करेगी । फिर वर्दान ने कनीसा में जा कर इबादत की और कनीसा के पादरियों ने मज़हबी मरासिम अदा कर के उस के लिये फतह व नुस्रत की दुआ की । कनीसा से निकल कर वर्दान इन्ताकिया शहर के सद्र दरवाज़े "**बाबे फारस**" पर आया । वहां लश्कर जमा किया गया और जब बारह हज़ार (१२,०००) का लश्कर मुकम्मल हो गया, तो उस ने कूच की । वर्दान के लश्कर को रुखसत करने हिरक्ल

बादशाह लश्कर के हमराह लोहे के पुल तक गया । वर्दान का लश्कर "मुअर्रात" के रास्ते से "**अमात**" नामी मकाम से गुज़रता हुवा शहरे दमिश्क की तरफ आगे बढा ।

किल्ल-ए दमिश्क का मुहासरा जारी

इधर दमिश्क के किल्ले का इस्लामी लश्कर ने मुहासरा जारी रखा था । इस्लामी लश्कर के मुजाहेदीन किल्ले के इर्द गिर्द ब-इरादा जंग मौजूद रहते थे । अह्ले दमिश्क किल्ले की दीवार पर चढ कर उन पर पत्थर और तीर की बारिश बरसाते थे । मुजाहेदीन चमडों की ढालें हाथ में रखते थे और अपने को बचाते थे । मौका' पा कर मुजाहेदीने यमन भी तीर उन को मारते थे । इस तरह बीस दिन का अर्सा गुज़र गया, लैकिन कोई नतीजा बर आमद न हुवा । रूमी किल्ले में महसूर होने की वजह से सख्त तंगी व परेशानी में थे । किल्ले में रसद भी खत्म होने के करीब था । इलावा अज़ीं अह्ले दमिश्क के खैत किल्ले के बाहर थे, लेहाज़ा उन की काश्त कारी का कारोबार ठप पड गया था । किल्ले में गल्ला वगैरा नहीं आ सक्ता था । अश्या-ए सर्फ की भी किल्लत थी । गर्ज़ वह मुख्तलिफ मुसीबतों में गिरफ्तार थे ।

हज़रत शद्दाद बिन औस रिवायत करते हैं कि इस्लामी लश्कर ने बीस (२०) दिन तक दमिश्क का मुहासरा जारी रखा । एक दिन इस्लामी लश्कर में खबर आई कि हिरक्ल बादशाह ने "अजनादीन" में रूमियों का भारी लश्कर जमा किया है । खबर सुनते ही हज़रत खालिद बाबे शर्की से रवाना हो कर बाबे जाबिया हज़रत अबू उबैदा के पास आए और सूरते हाल से मुत्तलेअ करते हुए अपनी राए पैश की कि हम दमिश्क का मुहासरा तर्क कर के अजनादीन में जमा रूमी लश्कर से निपट लें । बा'द में दमिश्क का मस्अला हल करेंगे । अगर अल्लाह ने हम को फतह दी तो फिर यहां वापस पलट आऐंगे । हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि मेरी राए इस के बर-अक्स है क्यूं कि बीस दिन तक किल्ले में महसूर रहने की वजह से अह्ले दमिश्क तंग आ गये हैं और हमारा रोअब उन के दिलों में समा गया है । अगर हम यहां से कूच कर गए तो उन को राहत हासिल होगी और वह खाने पीने की चीज़ें किल्ले में काफी मिक्दार में ज़खीरा कर लेंगे और जब हम अजनादीन से यहां दू-बारा वापस आऐंगे तो वह लोग तवील अर्सा तक हमारा मुकाबला करने के लाइक हो जाऐंगे और उन पर तंगी की जो सूरते हाल अभी काइम है फिर न हो सकेगी । हज़रत खालिद ने हज़रत अबू उबैदा की राए से इत्तेफाक करते हुए मुहासरा जारी रखा और दमिश्क के किल्ले के मुतफर्रिक दरवाज़ों

पर इस्लामी लश्कर के तमाम मुतअय्यन सरदारों को हुक्म दिया कि अपनी अपनी तरफ से हम्ले में शिद्दत इख्तेयार करें। हज़रत खालिद के हुक्म की ता'मील करते हुए हर जानिब से इस्लामी लश्कर ने शदीद हम्ले शुरू किये।

इस तरह दमिश्क के मुहासरे को कुल इक्किस दिन गुज़र गए। हज़रत खालिद ने मुजाहिदों को हम्ले में शिद्दत करने की तर्गीब देते हुए खुद भी बाबे शर्की से सख्त हम्ला जारी रखा। अह्ले दमिश्क अब बिल्कुल तंग आ गए थे और हिरक्ल बादशाह की कुमुक के मुन्तज़िर थे। हज़रत खालिद ने पे दरपै हम्ले जारी रखे। वह इसी तरह मस्रूफे जंग थे कि उन्हों ने देखा कि किल्ले की दीवार पर जो रूमी थे वह दफ्अतन तालियां बजा कर नाचने कूदने लगे और खुशी का इज़्हार करने लगे। हज़रत खालिद हैरत से उन को देखने लगे। वह लोग पहाडों की जानिब वाकेअ **"बैतुल लहिया"** की तरफ हाथ से इशारा कर के एक दूसरे को कुछ दिखा रहे थे। हज़रत खालिद बिन वलीद ने पहाड की जानिब देखा तो एक बडा गुबार इस तरह उठता हुवा नज़र आया कि उस की वजह से आस्मान तारीक नज़र आता था। दिन के वक्त भी अंधेरा छाता हुवा दिखाई दिया। हज़रत खालिद फौरन समझ गए कि दमिश्क की कुमुक करने हिरक्ल बादशाह का लश्कर आ रहा है। थोडी ही दैर में चंद मुखबिरों ने खबर दी कि ऐ सरदार ! हम ने पहाड की घाटी की तरफ एक लश्करे जर्रार देखा है और वह बेशक रूमियों का लश्कर है। हज़रत खालिद ने "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَظِيْم" पढा और फौरन बाबे शर्की से बाबे जाबिया पर आए और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को सूरते हाल से आगाह किया और कहा कि ऐ अमीनुल उम्मत ! मैं ने यह इरादा किया है कि तमाम लश्कर ले कर हिरक्ल बादशाह के फिरस्तादा लश्कर से नबर्द आज़माई कर लूं, लेहाज़ा इस अम्र में आप का मश्वरा क्या है ? हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! यह मुनासिब नहीं क्यूं कि अगर हम ने इस जगह को छोड दिया तो अह्ले दमिश्क किल्ले से बाहर आ कर हम से जंग करेंगे। आगे से हिरक्ल का लश्कर हम्ला आवर होगा और पीछे से अह्ले दमिश्क हम्ला करेंगे। हम रूमियों के दो लश्कर के दरमियान में आ कर मुसीबत में फंस जाएंगे। इस पर हज़रत खालिद ने कहा कि तो फिर आप की इस मुआमला में क्या राए है ? हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया :

पांच सौ मुजाहिद सवारों का बारह हज़ार रूमी सिपाह से मुकाबला :-

तुम अपने लश्कर से किसी जवां मर्द और जंग आज़मूदा मुजाहिद के साथ एक

जमाअत रवाना करो और उन को हुक्म दो कि अगर उन को इस लश्कर से लडने की इस्तिताअत व कुव्वत का यकीन हो तो लड लें, वरना हमारे पास वापस पलट आओं। फिर हम और कोई तद्बीर करेंगे। हज़रत खालिद इस तरह का मश्वरा करने के बा'द फिर अपनी जगह बाबे शर्की पर आए और हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर को बुला कर फरमाया कि मैं ने तुम को पांच सौ सवारों पर सरदार मुकर्रर किया है। तुम उन सवारों को ले कर "बैतुल लहिया" की जानिब से आने वाले रूमी लश्कर की तरफ जाओ। अगर तुम उन को रोक सको तो ठीक है, वरना वापस आ जाना। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर फौरन पांच सौ सवारों को ले कर रवाना हो गए और बैतुल लहिया नाम के मकाम पर आए। यह वह मकाम है जहां **"आज़र"** संग तराश कर बुत बनाता था। हज़रत ज़िरार ने वहां आ कर देखा कि दुश्मन का लश्कर बकरियों के रेवड की तरह पहाड की घाटी से उतर रहा था। लश्कर के तमाम सिपाही लोहे की ज़िरहों में लिपटे हुए हैं और उन के सरों पर लोहे के खौद हैं। आफ्ताब की रौशनी में उन की ज़िरहें, खौद, तलवारें और नैज़े मिस्ले आईना चमक रहे हैं।

हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर के साथियों ने दुश्मन की कसीर ता'दाद देख कर हज़रत ज़िरार से कहा कि ऐ सरदार ! यह लोग बहुत ज़ियादह ता'दाद में हैं। बेहतर है कि हम पलट जाअें और हज़रत खालिद बिन वलीद को मुत्तलेअ करें। हज़रत ज़िरार ने फरमाया कसम खुदा की ! मैं खुदा की राह में ज़रूर शम्शीर ज़नी करूंगा और पीठ फैर कर हरगिज़ भागने वालों के ज़ुमरे में दाखिल नहीं होंगा। अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया है :

"يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ"

(सूरतुल अन्फाल, आयत : 15)

तर्जुमा : "ऐ ईमान वालो ! जब काफिरों के लश्कर से तुम्हारा मुकाबला हो, तो इन्हें पीठ न दो।" (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत ज़िरार ने मज़ीद फरमाया कि अगर मैं भाग कर वापस जाऊंगा तो गुनह्गार और अल्लाह का ना-फरमान शुमार किया जाऊंगा। हज़रत ज़िरार की गुफ्तगू सुन कर हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई भी जोश में आए और उन्हों ने मुजाहिदों को मुखातब कर के फरमाया कि ऐ गिरोहे मुस्लिमीन ! उन गबरों से क्या डरना ? अल्लाह तआला ने तुम को अक्सर

लडाइयों में मदद दी है और सब्र करने से खुदा की मदद करीब होती है। हमारे कलील गिरोह ने हमेंशा कसीर जमाअत को शिकस्त दी है। मुनासिब यह है कि अगले लोगों की राह पर चलो और तवाज़ोअ व इन्किसारी से अल्लाह की तरफ रूजूअ करो। अल्लाह तआला ने अपने मुकद्दस कलामे मजीद में साफ इर्शाद फरमाया है :

"كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً بِاِذْنِ اللّٰهِ، وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ"

(सूरा अल-बकरा, आयत : 249)

तर्जुमा : "बारहा कम जमाअत गालिब आई है ज़ियादह गिरोह पर अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह साबिरों के साथ है।" (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई की पुर-जौश तक्रीर ने मुजाहिदों के दिल जुंबिश में ला दिये। तमाम ने ब-यक ज़बान यही कहा कि अल्लाह तआला हमें भागता हुवा न देखे, हम ज़िन्दगी की आखरी सांस तक दुश्मनों से लडेंगे।

पांच सौ मुजाहिदों की बारह हज़ार रूमियों से मुदभेड :-

हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर तमाम साथियों को ले कर बैतुल लहिया के करीब कमीन गाह में छुप गए और रूमी लश्कर का इन्तिज़ार करने लगे। हज़रत ज़िरार ने सिर्फ शलवार पहनी थी। ऊपर का जिस्म नंगा कर के हाथ में लम्बा नैज़ा लिये हुए अरबी नस्ल की घोडी पर सवार थे। थोडी दैर बा'द रूमियों का बारह हज़ार का लश्कर अपनी मुतकब्बिराना शान व शौकत से आता हुवा नज़र आया। तमाम मुजाहिद होशियार हो गए। जब लश्कर करीब आया तो हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर अपने साथियों के साथ नार-ए तक्बीर कहते हुए टूट पडे। अचानक इस तरह के हम्ले से रूमी लश्कर के सिपाहियों के दिलों में रोअब समा गया। हज़रत ज़िरार बिफरे हुए शैर की तरह रूमियों पर हम्ला कर के उन को लुक्मए अजल बना रहे थे। उन के जिस्म व कामत की हैअत, सुरअत और जसत को देख कर रूमी मुतहैयर थे।

एक शख्स रूमी लश्कर का निशाने फौज उठाए हुए था। हज़रत ज़िरार ने उस के सीने में नैज़ा पैवस्त कर दिया। लश्कर के मैमना पर एक शख्स उमदा लिबास पहने हुए लश्कर के अहम अर्कान में से था। उस को भी हज़रत ज़िरार ने नैज़ा की एक ज़र्ब से खाक में मिला दिया। हिरक्ल बादशाह ने वर्दान के लश्कर को रवाना करते वक्त जो सोने की सलीब दी थी उस को एक बतरीक उठाए हुए था और वह तातारी घोडे पर सवार था। हज़रत ज़िरार

उस की तरफ लपके और ऐसा नैज़ा मारा कि इस के सुरीन को फाड दिया, और इस की आंतों को चीरता हुवा दूसरी जानिब निकला और वह मुर्दा हो कर ज़मीन पर गिरा। सलीब उस के हाथ से छूट कर ज़मीन पर गिरी। जब वर्दान ने सलीब को ज़मीन पर गिरते देखा तो उस को शगून बद में शुमार किया और उस को अपनी हलाकत का खौफ लाहिक हुवा। वर्दान ने घोडे से उतर कर सलीब को उठाने का कस्द किया लेकिन चंद मुजाहिदों ने सलीब को अपने घेरे में ले लिया। वर्दान को हिम्मत न हूई कि मुजाहिदों के हिसार से सलीब को उठाए। दफ्अतन हज़रत ज़िरार ने पुकार कर मुजाहिदों से कहा कि यह सलीब मेरा हक्क व हिस्सा है। इस को मत उठाओ। वैसे ही पडी रहने दो। हामिले सलीब रूमी के साथियों के कत्ल से फरागत पा कर इस सलीब को मैं उठाऊंगा। वर्दान ने जब हज़रत ज़िरार को देखा तो आप की सूरत व हैअत को देख कर कांपने लगा और लश्कर के बीच में घुसने के इरादा से पीछे की जानिब हटने लगा। उस के साथियों ने कहा ऐ सरदार कहां जाते हो ? वर्दान ने हज़रत ज़िरार की जानिब इशारा कर के कहा कि मैं इस शरीर शख्स से भागता हूं। ऐसी डरावनी सूरत व हैअत वाला शख्स में ने कभी नहीं देखा।

हज़रत ज़िरार ने वर्दान को भागता देख कर उस का तआक्कुब किया। वर्दान के मुहाफिज़ों ने हज़रत ज़िरार और वर्दान के दरमियान हाइल हो कर हज़रत ज़िरार को उस तक पहुंचने से बाज़ रखा। हज़रत ज़िरार ने वर्दान के कईं मुहाफिज़ों को अपने नैज़ा की नोक का मज़ा चखा कर उन को ज़िन्दगी से बे मज़ा कर दिया। वर्दान का बेटा हमरान हज़रत ज़िरार पर हम्ला आवर हुवा और उस ने आप के बाअें बाज़ू पर नैज़ा मारा, नैज़ा लगते ही खून का फव्वारा छुटा और हज़रत ज़िरार को सुस्त कर दिया, लैकिन एक लम्हे के बा'द आप ने ब-शिद्दत तमाम हमरान के दिल पर नैज़ा मारा। नैज़ा लगते ही दिल कट गया और वह वासिले जहन्नम हो गया। हज़रत ज़िरार ने हमरान के जिस्म से नैज़ा खींचा तो नैज़े का फल हमरान के जिस्म में पैवस्त रह गया और नैज़ा बगैर फल के मिस्ले चौब बाहर निकला। रूमियों ने हज़रत ज़िरार के हाथ में बगैर फल का नैज़ा देखा, तो शैर बन गए और हज़रत ज़िरार पर लपके और हज़रत ज़िरार को गिरफ्तार कर लिया।

हज़रत ज़िरार का गिरफ्तार होना मुजाहिदों पर शाक गुज़रा। सब ने सख्त हम्ला कर के हज़रत ज़िरार को छुडाने की कोशिश में जान हथेली में ले कर लडे, लैकिन हज़रत ज़िरार को छुडा न सके। अब मुजाहिदों के हौसले पस्त हो गए। छोटी जमाअत के मुकाबले में रूमियों का लश्करे जर्रार और इस पर तुर्रा यह कि इस्लामी लश्कर का शैर बबर रूमियों की

कैद में जकड गया। मुजाहेदीन ने भागने का इरादा किया तो हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई ने पुकार कर कहा कि ऐ कुरआन को हिफ्ज़ करने वालो ! ऐ कुरआन को उठाने वालो ! भाग कर कहां जाओगे। क्या तुम यह नहीं जानते हो कि जो शख्स जेहाद में पीठ फैर कर भागेगा, वह अल्लाह के गज़ब में मुब्तला होगा। अल्लाह तआला फरमाता है :

" وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَه اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزاً اِلٰى
فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللهِ وَ مَاْوٰهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ"

(सूरतुल अन्फाल,आयत : 16)

तर्जुमा : ''और जो उस दिन इन्हें पीठ देगा मगर लडाई का हुनर करने या अपनी जमाअत में जा मिलने को तो वह अल्लाह के गज़ब में पलटा और उस का ठिकाना दोज़ख है और क्या बुरी जगह है पलटने की।'' (कन्ज़ुल ईमान)

तफ्सीर : ''या'नी मुसलमानों में से जो जंग में कुफ्फार के मुकाबला से भागा वह गज़बे इलाही में गिरफ्तार हुवा। उस का ठिकाना दोज़ख है। सिवाए दो हालतों के। एक तो यह कि लडाई का हुनर या कर्तब करने के लिये पीछे हटा हो वह पीठ देने और भागने वाला नहीं है। दूसरे जो अपनी जमाअत में मिलने के लिये पीछे हटा हो वह भी भागने वाला नहीं।''

(तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान,सफहा : 321)

हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई ने मज़ीद फरमाया कि जन्नत के कुछ दरवाज़े ऐसे हैं जो मुजाहेदीन साबिरीन के इलावा किसी के लिये नहीं खोले जाअेंगे। ऐ दीन के खिदमतगारो ! सब्र करो और सलीब के पूजने वालों पर हम्ला करो। आगाह हो जाओ कि मैं तुम्हारे साथ हूं। मैं हम्ला करने में तुम से आगे रहूंगा। अगर तुम्हारे सरदार ज़िरार गिरफ्तार हो गए या शहीद कर दिये गए तो क्या हुवा ? अल्लाह तो ज़िन्दा है और तुम्हें देख रहा है।

इस कलाम को सुनते ही मुजाहिदों ने शुजाअत और बहादुरी का मुज़ाहेरा करते हुए रूमियों से बराबर टक्कर ली और मुकाबला करने में कोई कमज़ोरी नहीं दिखाई।

मुजाहिदों की मदद करने हज़रत खालिद का बैतुल लहिया पहुंचना :-

जब हज़रत ज़िरार रूमियों की कैद में आए थे, तो इस्लामी लश्कर से एक शख्स तेज़ रफ्तार घोडे पर सवार हो कर हज़रत खालिद के पास आया और उस ने हज़रत ज़िरार की गिरफ्तारी और बहुत से मुजाहिदों की शहादत की इत्तेलाअ दी और यह भी कहा कि मुजाहेदीन इस वक्त मुसीबत में गिरफ्तार हैं। हज़रत खालिद ने पूछा कि रूमी लश्कर की ता'दाद कितनी है ? अर्ज़ किया कि बारह हज़ार। हज़रत खालिद ने फरमाया खुदा की कसम ! मैं ने दुश्मनों की ता'दाद कम गुमान कर के मुजाहिदों को मुकाबला के लिये भेजने की जुर्अत की थी। हज़रत खालिद ने पूछा कि रूमी लश्कर का सरदार कौन है ? कहा कि हुमुस का हाकिम वर्दान। अलबत्ता इस के लडके हमरान को हज़रत ज़िरार ने कत्ल किया है। यह सुन कर हज़रत खालिद ने '' ला-हौल '' पढा। फिर अपने मो'तमद को हज़रत अबू उबैदा के पास भेज कर इस अम्र में उन का मश्वरा तलब किया। हज़रत अबू उबैदा ने कहला भेजा कि बाबे शर्की पर अपनी जगह किसी को नाइब बना कर तुम खुद दुश्मनों के मुकाबला के लिये जाओ। मुझे यकीन है कि तुम दुश्मनों को इस तरह पीस डालोगे जिस तरह चक्की गल्ले को पीस डालती है और दुश्मनों को बे-होश कर के मट्टी में डाल दोगे।

हज़रत खालिद ने हज़रत मैसरा बिन मस्रूक अबसी को अपना काइम मकाम मुकर्रर किया और एक हज़ार सवार उन के साथ कर दिये और बाकी सवारों को अपने साथ लिये और इन्हें हुक्म दिया कि घोडों की बागें ढीली छोड दो और नैज़े सीधे कर लो और जब दुश्मन के करीब पहुंचो तो सब यक-बारगी हम्ला करना और दुश्मन को अपना देफाअ करने का मौका' न देना। शायद इस तरह हम ज़िरार तक पहोंच जाअेंगे। अगर वह ज़िन्दा होंगे तो उन को छुडा लेंगे और अगर रूमियों ने जल्दी कर के इन्हें शहीद कर दिया होगा तो इन्शा अल्लाह हम रूमियों से ज़िरार का बदला ज़रूर लेंगे। उन के लश्कर में तबाही मचा देंगे और रूमियों की लाशों के ढेर लगा देंगे। फिर हज़रत खालिद और साथियों ने नारए तक्बीर बुलन्द करते हुए घोडे दौडाए। घोडे तेज़ रफ्तारी से दौडते, हवा से बातें करते जा रहे थे और आंधी के तेज़ झोंकों की तरह मुजाहेदीने इस्लाम अपने दीनी भाइयों की नुस्रत व इआनत करने कुदती हूई बिजली की रफ्तार से घोडों पर बैतुल लहिया की जानिब दौडे।

एक नकाब पोश ना-मा'लूम सवार मुजाहिद

हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के साथ बैतुल लहिया की तरफ बढ रह थे। आप सब से आगे रज्ज़ के अश्आर पढते हुए घोडे की रफ्तार तैज़ से तैज़ तर करते जा रहे थे। नागाह आप ने देखा कि आप के आगे सियाही माइल सुर्ख रंग के घोडे पर एक सवार बडी तैज़ी से जा रहा है। बुलन्द कद्दो कामत और हाथ में एक लम्बा नैज़ा था। उस ने सियाह लिबास इस तरह पहना था कि दोनों आंखों के इलावा उस के जिस्म का कोई हिस्सा नज़र नहीं आता था। उस नकाब पोश सवार ने अपने घोडे की बाग ढीली कर दी थी और उस का घोडा हवा से बातें करता हुवा जा रहा था। वह नकाब पोश सवार घोडे के ज़ीन पर इस तरह चिपक कर बैठा था कि गोया वह घोडे के जिस्म में चस्पां है। घोडे को एडी मारना, कूदाना, दौडाना और घोडे को मोडना व फेरना बडी सफाई से अंजाम दे रहा था। उस का अन्दाज़े रफ्तार उस की शहसवारी, होशियारी और दिलैरी की गवाही दे रहा था। उस ने लोहे की ज़िरह पहन रखी थी और कमर को एक चादर से मज़बूत बांध रखा था। शौके जेहाद में मुज़्तरिब व बैकरार हो कर सब से आगे मिस्ले आग के शो'ले जा रहा था। घोड सवारी के फन का माहिर और मश्शाक मा'लूम होता था। उस के तेवर उस की बुलन्द हौसलगी और शुजाअत की निशान दही कर रहे थे। ऐसा लगता था कि दुश्मन पर वह एक आंधी की तरह छा जाएगा। हज़रत खालिद बिन वलीद भी उस सवार को देख कर महवे हैरत थे और उस को पहचानने की कोशिश कर रहे थे कि यह कौन बहादुर मुजाहिद है जिस ने मुशरिकों से लडने के लिये अपने सर पर कफन बांध रखा है। थोडी दैर में हज़रत खालिद का काफला बैतुल लहिया के करीब पहोंच गया।

अल्लामा वाकदी रिवायत करते हैं कि हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई अपने साथियों के साथ मिल कर रूमी लश्कर के साथ मौत का सामना कर रहे थे बल्कि मौत के मुंह में जा पहुंचे थे। बडे सब्रो इस्तिक्लाल से मुकाबला कर रहे थे कि दफ्अतन हज़रत खालिद बिन वलीद लश्कर की कुमुक ले कर पहोंच गए। **वह नकाब पोश सवार सब से पहले रूमियों पर हम्ला आवर हुवा। उस के हम्ले की नौइयत शिकारी बाज़ के चिडयों के झुन्ड पर हम्ला करने की थी। इस तरह उस ने रूमी लश्कर को हिला कर रख दिया। रूमी लश्कर की सफें कच्चे धागे की तरह तोड कर रख दीं। वह सवार रूमी लश्कर के वस्त में घुस**

कर ओझल हो गया मगर थोडी दैर के बा'द वह लश्कर से इस हालत में बाहर निकला कि उस का नैज़ा खून से तर था। फिर वह लश्कर में गाइब हुवा और बाहर निकला और एक ही गरदावे में कई रूमियों को खाक व खून में मिला दिया। कहरे इलाही की बिजली बन कर जिस पर गिरता उस को जला कर राख कर देता। उस के नैज़े की ज़र्ब इतनी शदीद थी कि सिपर को फाड कर सिपर उठाने वाले को हलाक कर देती थी। मौत से बे खौफ हो कर वह नकाब पोश अपने को मअरिज़े हेलाकत में डाले हुए था। फिर अचानक वह रूमियों के लश्कर में पोशीदह हो गया और एक गिरोह को फाड डाला। उस का कलक और इज़्तिराब हर लम्हा बढता जाता था और उस के हम्ले की शिद्दत में इज़ाफा होता जाता था। हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई ने जब उस नकाब पोश सवार के कर्तब और लडाई के फन देखे तो यह गुमान किया कि यह सवार हज़रत खालिद बिन वलीद हैं। क्यूं कि ऐसे हम्ले हज़रत खालिद के इलावा और कोई नहीं कर सकता। हज़रत राफेअ इसी सोच में थे कि हज़रत खालिद उन के पास पहुंचे। हज़रत राफेअ ने हज़रत खालिद से पूछा कि जब आप मेरे पास हैं तो यह कफन बरदोश और नकाब पोश मुजाहिद कौन है? जो दुश्मनाने खुदा से लडने में दिलैरी कर के अपनी जान राहे खुदा में खर्च करने को तुला है। हज़रत खालिद ने फरमाया कि खुदा की कसम! मैं भी नहीं जानता कि यह सवार कौन है? इस की दिलैरी और शुजाअत ने मुझ को भी तअज्जुब में डाल रखा है।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने अपने लश्कर के साथ रूमियों पर हम्ला कर दिया और दोनों लश्कर एक दूसरे से गुथ गए। **वह नकाब पोश सवार रूमी लश्कर के कल्ब से बाहर निकला। उस का नैज़ा खून में शराबोर था। उस के घोडे से पसीने की धारें टपक्ती थीं। वह सवार अपने दाऐं बाऐं इस तरह नैज़ा मारता था कि जो भी उस की ज़द में आ जाता औंधे मुंह गिर कर खाक व खून में तडपता था। रूमी सिपाही उस नकाब पोश सवार से ऐसा डर गए थे कि उस को अपनी तरफ आता देख कर भागते थे। गोया वह सवार उन के लिये फरिश्तए मौत था।** चंद रूमी सिपाही मुत्तहिद हो कर उस सवार पर हम्ला आवर हुए, लैकिन मौत से बे परवाह हो कर वह सवार तने तन्हा दिलैरी से उन से नबर्द आज़मा हो कर आ'ला शुजाअत का मुज़ाहेरा कर रहा था, रूमी कसीर ता'दाद में थे और ऐसा लगता था कि उस पर गालिब आ जाऐंगे। लैकिन हज़रत खालिद बिन वलीद और उन के साथियों ने रूमियों पर हम्ला कर के उस सवार को नर्गा से निकाल कर बचाया। वह सवार इस्लामी लश्कर में आ मिला। मुजाहिदों ने उस नकाब पोश सवार को देखा तो ऐसा मेहसूस हुवा कि वह एक सुर्ख गुलाब है वह सवार खून से आलूदह था।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने उस नकाब पोश से फरमाया : खुदा तुझ को जज़ाए खैर दे ऐ नौ–जवान ! तू कौन है ? अल्लाह की राह में अपनी जान सर्फ करने वाले तेरा नाम क्या है ? लैकिन उस सवार ने हज़रत खालिद के सवाल का कोई जवाब न दिया बल्कि ए'राज़ करते हुए खामोश रहा । मुजाहिदों ने कहा कि ऐ मर्दे नैक ! लश्कर का सरदार तुझ से सवाल करता है और तू ए'राज़ कर के जवाब नहीं देता ? सिर्फ लश्कर के सरदार ही नहीं बल्कि तमाम मुसलमान तेरे तआरुफ के लिये बे–करार हैं । लेहाज़ा सिर्फ इत्ना बता दे कि तेरा नाम क्या है ? और तू किस कबीला का है ? उस नकाब पोश सवार ने कोई जवाब नहीं दिया और चुप रहा फिर हज़रत खालिद बिन वलीद ने इस्रार किया तो उस सवार ने ...

''नकाब के पीछे से औरत की आवाज़ में कहा कि ऐ सरदार ! मैं ने ना–फरमानी करते हुए जवाब देने में रूगर्दानी नहीं की । आप के हुक्म की ता'मील में ताखीर करने और आप के सवाल का जवाब देने में दैर लगा ने की वजह सिर्फ शर्म व हया है क्यूं कि मैं पर्दे में बैठने वाली हूं । मैं ने जो काम किया है वह मेरे दिल की रंजीदगी की वजह से किया है । हज़रत खालिद ने पूछा कि तुम कौन हो ? जवाब में कहा कि मेरा नाम ''खौला'' है मैं अज़वर की बेटी हूं और ज़िरार बिन अज़वर की बहन हूं । मैं औरतों के गिरोह में बैठी हूई थी कि मुझ को खबर मिली कि मेरे भाई ज़िरार को रूमियों ने कैद कर लिया है और आप अपने हमराहियों के साथ मेरे भाई की रिहाई के लिये जा रहे हैं, तो मैं अपना हुलिया तब्दील कर के आप के साथ शामिल हो गई और किया मैं ने जो किया ।''

हज़रत खौला को अपने भाई के न मिलने का बहुत गम और अफ्सोस था । अपने भाई के फिराक में रोने लगीं । उन की यह हालत देख कर हज़रत खालिद भी रोने लगे ।

हज़रत खालिद का रूमियों पर हम्ला और हज़रत खौला बिन्ते अज़वर की शुजाअत

हज़रत खालिद ने हज़रत खौला को इत्मीनान और तसल्ली देते हुए फरमाया कि अब हम सब यक–बारगी हम्ला करेंगे और हम को उम्मीद है कि खुदा हम को तुम्हारे भाई तक पहुंचा दे ताकि हम उन को कैद से छुडा लें । हज़रत खौला ने कहा कि इस हम्ले में मैं सब से आगे रहूंगी । चुनांचे मुजाहिदों ने रूमियों पर हम्ला कर दिया । हज़रत खौला ने ऐसे

शदीद हम्ले किये कि रूमी लश्कर में घबराहट फैल गई । रूमी सिपाही हज़रत खौला की जंगी महारत देख कर कहने लगे कि अगर सारे अह्ले अरब इस सवार की तरह बहादुर हैं तो हम में उन के मुकाबला की ताकत नहीं । हज़रत खालिद ने भी ऐसे कर्तबे जंग दिखाए कि रूमियों के कदम डगमगाने लगे । वर्दान ने अपने लश्कर की बुज़दिली और ना–मर्दी को ताड लिया । लेहाज़ा अपने लश्कर को साबित कदम रखने के लिये अह्ले दमिश्क की कुमुक की उम्मीद दिलाई, फतह व गल्बा का यकीन दिलाया, लैकिन हज़रत खालिद ने रूमियों को दाऐं बाऐं मुतफर्रिक और परेशान कर दिया । हज़रत खालिद ने हर चंद कोशिश की कि किसी तरह वर्दान तक पहोंच कर उस का काम तमाम कर दूं, लैकिन वर्दान मुहाफिज़ों के झुर्मट में और फास्ले पर होने की वजह से उस तक न पहोंच सके ।

हज़रत खौला का यह हाल था कि वह रूमी लश्कर में घुस कर दाऐं बाऐं फाड देती थीं । नैज़े का सुरअत से इस्ते'माल कर के कईं रूमियों के सीने छलनी कर दिये । हज़रत खौला नैज़ा बाज़ी करती जाती थीं और अपने भाई को ढूंढती थीं और अपने भाई के फिराक व गम में दर्द भरे अश्आर पढ कर अपने भाई को पुकारती थीं । हर मुसलमान मुजाहिद से अपने भाई का हाल दर्याफ्त करती थीं, लैकिन किसी ने नहीं कहा कि मैं ने ज़िरार को ब–हालते कैद या मक्तूल देखा । हज़रत खौला को अपने भाई का कहीं भी सुराग न मिला तो वह मायूस और ना–उम्मीद हो गईं और हुज़्न व अलम पर मुश्तमिल अश्आर पढती थीं और आह व बुका करती थीं । उन की मुज़्तरिब व बे–करार हालत देख कर तमाम मुजाहेदीन पर भी गिर्या तारी हो गया । तमाम मुजाहेदीन हज़रत ज़िरार के लिये रो रहे थे और बारगाहे खुदावन्दी में उन की हयात और उन से मुलाकात की रो रो कर दुआऐं करते थे गोया कि मुजाहेदीन की पुर खुलूस दुआऐं कबूल हूईं ।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने हज़रत ज़िरार का सुराग पाने के लिये फिर एक मरतबा हम्ला करने का इरादा किया । वह हम्ले की तैयारी कर रहे थे कि रूमी लश्कर से कुछ सवारों को तेज़ घोडे दौडाते हुए इस्लामी लश्कर की तरफ आते देखा । मुजाहेदीन यह समझे कि शायद यह सवार हम्ला करने आ रहे हैं । हज़रत खालिद अपने साथियों के साथ फौरन खडे हो गए और उन का मुकाबला करने के लिये मुस्तइद और आमादा हो गए । जब वह रूमी सवार करीब आए तो उन्हों ने अपने हथियार फैंक दिये और घोडों से नीचे उतर कर हाथों को ऊपर उठाए हुए **''लफून लफून''** चिल्लाने लगे । हज़रत खालिद ने इन्हें अमान दी और पूछा कि तुम कौन हो ? और क्या चाहते हो ? उन्हों ने कहा कि हम शहर हुमुस के बाशिन्दे

हैं। सरदार वर्दान के वरगलाने पर हम तुम से लडने आए थे, लैकिन अब हम को यकीन हो गया है कि तुम्हारा मुकाबला करने की हम में ताकत नहीं। तुम हम को और हमारे अहलो अयाल को अमान दो और हम को भी उन लोगों में शुमार करो जिन से तुम ने सुलह की है। आप जो भी मुआवज़ा तलब फरमाअेंगे हम हाज़िरे खिदमत कर देंगे। बल्कि अपने शहर के दीगर बाशिन्दों को भी सुलह पर रज़ा मन्द करेंगे। हज़रत खालिद ने फरमाया कि जब हम तुम्हारे शहर में आअेंगे तब तुम से सुलह करेंगे। इस वक्त मुम्किन नहीं। फिर हज़रत खालिद ने उन रूमी सवारों को हवालात में डालने का हुक्म फरमाया। और उन से हज़रत ज़िरार के मुतअल्लिक पूछा कि उन को कैद करने के बा'द रूमी लश्कर के सरदार ने उन के साथ क्या मुआमला किया ? वह ज़िन्दा हैं या उन्हें शहीद कर दिया गया ?

हज़रत ज़िरार की रिहाई

रूमी सवारों ने कहा कि शायद आप उस शख्स के मुतअल्लिक पूछते हैं जो नंगे बदन था और जिस ने हमारे बहुत से सिपाहियों को मार डाला और हमारे सरदार के बेटे को भी कत्ल कर के हमारे सरदार को रंज व गम में डाला है। हज़रत खालिद ने फरमाया हां ! **हां ! मैं उन के मुतअल्लिक ही पूछ रहा हूं ?, जल्दी बताओ वह कहां हैं ?** रूमी सवारों ने कहा कि उन का हाल यह है कि वर्दान ने उन को एक ऊंट पर बिठा कर सौ (१००) सवारों की निगरानी में हिरक्ल बादशाह के पास हुमुस रवाना किया है। हुमुस से उन को इन्ताकिया भेजा जाएगा। यह काम सरदार वर्दान ने इस लिये किया है कि वह हिरक्ल बादशाह के सामने अपनी बहादुरी और शुजाअत का इज़्हार करे कि हम ने इस्लामी लश्कर से ऐसे खूंखार शख्स को गिरफ्तार करने में काम्याबी हासिल की है।

हज़रत ज़िरार का सुराग मिलने पर हज़रत खालिद बिन वलीद बहुत खुश हुए। आप ने फौरन हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई को बुलाया और कहा कि ऐ राफेअ तुम मुल्के शाम के तमाम रास्तों से अच्छी तरह वाकिफ हो तुम्हारी तज्वीज़ और तद्बीर की वजह से हम ने अर्ज़े समावा से अरेका तक का बगैर पानी का इलाका तय किया था। ऊंटों को ज़ब्ह कर के उस के पेट से पानी निकाल कर घोडों को पिलाने और उस का गोश्त मुजाहिदों को खिलाने की तुम्हारी तद्बीर बहुत काम्याब रही। आज फिर तुम एक मरतबा मुल्के शाम के रास्तों की महारत का इआदा करो और ज़िरार बिन अज़्वर को छुडाओ। रूमी सरदार वर्दान ने हज़रत ज़िरार को सौ (१००) सवारों की निगरानी में हुमुस की जानिब रवाना किया है।

लेहाज़ा तुम कोई दरमियान से जाने वाले कम मुसाफत के छोटे रास्ते से उन का तआककुब करो और वह लोग ज़िरार को ले कर हुमुस पहुंचें इस से कब्ल उन से जा मिलो और ज़िरार को छुडा लो।

हज़रत खालिद बिन वलीद के हुक्म की ता'मील करते हुए हज़रत राफेअ बिन हुमैरा ने इस्लामी लश्कर से एक सौ (१००) सवार चुन लिये और रवानगी का इरादा किया। हज़रत खौला बिन्ते अज़्वर को खबर मिली तो वह खुशी से मचल गईं। फौरन मुसल्लह हो कर घोडे पर सवार हो कर हज़रत खालिद की खिदमत में हाज़िर हूईं। और अर्ज़ की कि ऐ सरदार ! आप को उस मुकद्दस ज़ाते पाक जो बेहतरीन खलाइक हैं या'नी **रसूले मक्बूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का वास्ता देती हूं** कि मुझ को भी इस जमाअत के साथ जाने की इजाज़त इनायत फरमाओ। ताकि अपने भाई को छुडाने में अपनी खिदमत पैश करूं। हज़रत खालिद ने हज़रत खौला को इजाज़त दे दी। लेहाज़ा वह भी हज़रत राफेअ बिन हुमैरा के साथ रवाना हूईं। वह मुसलमानों के पीछे पीछे थोडा फास्ला रख कर चलती थीं।

जब यह गिरोह **"सलमीना"** नामी मकाम पर पहुंचा तो हज़रत राफेअ ने वहां के मैदान में इधर उधर गश्त कर के ज़मीन पर घोडों के निशाने कदम तलाश किये, लैकिन उन को कहीं भी घोडों के निशाने कदम नज़र न आए। लेहाज़ा उन्हों ने कहा कि ऐ गिरोहे मुस्लिमीन ! बशारत हो कि रूमी काफला अभी तक यहां नहीं पहुंचा और उम्मीद है कि वह अन्करीब आ पहुंचे। हज़रत राफेअ ने तमाम मुजाहिदों को **"वादियुल हयात"** के मकाम पर एक कमीन गाह में छुपा दिया और रूमी काफला की आमद का इन्तिज़ार करने लगे। थोडी देर बा'द एक गुबार ज़ाहिर हुवा और एक काफला नज़र आया। हज़रत राफेअ ने देखा कि एक सौ रूमी सवार हज़रत ज़िरार को अपने बीच में घेरे हुए आ रहे हैं। जैसे ही वह काफला करीब आया, सब से पहले हज़रते खौला ने कमीन गाह से निकल कर तक्बीर कह कर हम्ला किया और उन के बा'द हज़रत राफेअ और मुजाहिदों ने ब-आवाज़े बुलन्द तक्बीर कहते हुए हम्ला किया। यह हम्ला क्या था ? एक चुटकी बजाने का मुआमला था। एक सौ रूमी के मुकाबले में एक सौ मुजाहिद थे। एक घडी में तमाम रूमी मरे हुए ज़मीन पर लेटे पडे थे। तमाम मुजाहिदों ने और खुसूसन हज़रत खौला ने हज़रत ज़िरार को सलाम व मर्हबा कहा और ब सलामत रिहाई पर मुबारकबाद पैश की। हज़रत ज़िरार ने तमाम मुजाहेदीन का शुक्रिया अदा किया और खैरियत पूछी। फिर मुजाहिदों ने मक्तूल रूमियों के घोडे, हथियार, कपडे और माल व अस्बाब ले लिये।

मुजाहेदीन माले गनीमत एक जगह जमा कर रहे थे कि अचानक कुछ रूमी सवार बैतुल लहिया की जानिब से भागते हुए आ रहे थे। हज़्रत राफेअ ने उन को देख कर गुमान किया कि यह लोग बैतुल लहिया में हज़्रत खालिद के लश्कर के हाथों पिट कर भागे हैं। लेहाज़ा हज़्रत राफेअ और उन के साथियों ने आगे बढ कर उन पर हम्ला किया। रूमियों ने कोई मुकाबला नहीं किया बल्कि "लफून लफून" पुकारने लगे लेहाज़ा तमाम को गिरफ्तार कर लिया गया। थोडी ही दैर में हज़्रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के हमराह उन का तआक्कुब करते हुए वहां आ पहुंचे और हज़्रत ज़िरार और हज़्रत राफेअ वगैरा से इत्तिफाकिया मुलाकात हो गई। हज़्रत राफेअ की ज़बानी हज़्रत ज़िरार की रिहाई की कहानी सुन कर हज़्रत खालिद बहुत खुश हुए। हज़्रत ज़िरार को ब सलामत रिहाई की मुबारक बादी दी और हज़्रत राफेअ के अज़ीम कारनामा की ता'रीफ करते हुए शुक्रिया अदा किया।

हज़्रत राफेअ ने खालिद से उन के यहां आने का सबब पूछा, तो बताया कि हज़्रत ज़िरार की रिहाई के लिये, हज़्रत राफेअ को रवाना करने के बा'द इस्लामी लश्कर ने ऐसा सख्त हम्ला किया कि वर्दान के लश्कर ने पीठ दिखा कर हर चारों जानिब भागना शुरू किया। मुजाहिदों ने मफरूर रूमियों का हर जानिब तआक्कुब किया। वर्दान कहां पोशीदह हो गया वह किसी को पता न चला। हज़्रत खालिद ने उस को बहुत तलाश किया ताकि उस को कत्ल कर दें, लैकिन वह हाथ न आया। कुछ रूमी सवार वादियुल हयात के रास्ते से भागे। शायद उन में वर्दान है यह गुमान कर के हज़्रत खालिद ने उन का तआक्कुब किया था और यहां आ पहुंचे।

अल-किस्सा ! हज़्रत खालिद बिन वलीद वहां से तमाम साथियों के हमराह किल्ल-ए दमिश्क पर वापस आए और हज़्रत अबू उबैदा बिन जर्राह को फतह की खुश्खबरी और तमाम रूदाद सुनाई। इस्लामी लश्कर में खुशी की लहर दौड गई और सब ने किल्ल-ए दमिश्क की फतह का पुख्ता यकीन किया।

इस्लामी लश्कर दमिश्क में मुकीम था और किल्ले' का मुहासरा जारी रखा कि बसरा से हज़्रत इबाद बिन सईद हज़्रमी हज़्रत खालिद के पास आए और इत्तेलाअ दी कि रूमियों का नव्वे हज़ार (९०,०००) का लश्कर ब-मकाम "अजनादीन" जमा हुवा है। हज़्रत खालिद ने हज़्रत अबू उबैदा से मश्वरा किया तो उन्हों ने फरमाया कि हमारा लश्कर मुल्के शाम में मुतफर्रिक मकामात में मुन्तशिर है। लेहाज़ा उन तमाम को खत लिख दो कि वह हम से अजनादीन में मिलें और हम भी अब किल्ल-ए दमिश्क का मुहासरा तर्क कर के अजनादीन की जानिब कूच करें।

जंगे अजनादीन

हिरक्ल बादशाह को वर्दान के लश्कर की शिकस्ते फाश और उस के बेटे हमरान के कत्ल का मुफस्सल हाल मा'लूम हो चुका था। लेहाज़ा हिरक्ल ने उस को खत लिखा और खूब डांट डपट की और यहां तक लिखा कि माज़ी में तूने रूमी लश्कर की जो खिदमत अंजाम दीं उस का लिहाज़ न होता तो मैं तेरे कत्ल का हुक्म सादिर करता। अब तुझ को एक मौका' देता हूं अजनादीन में नव्वे हज़ार (९०,०००) लश्कर पर तुझ को सरदार मुकर्रर करता हूं, तू वह लश्कर ले कर दमिश्क की कुमुक कर और थोडा लश्कर फलस्तीन की जानिब रवाना कर, ताकि फलस्तीन में जो इस्लामी लश्कर है उस को वहीं लडाई में उलझा रखे और उस लश्कर को दमिश्क की तरफ न जाने दे। हिरक्ल का खत मिलते ही वर्दान फौरन अजनादीन पहोंच गया और रूमी लश्कर की सरदारी संभाली।

इस्लामी लश्कर की मुल्के शाम में कैफियत और ता'दाद :-

मुल्के शाम में इस्लामी लश्कर की कैफियत और ता'दाद हस्बे ज़ैल थी :

- 33,000 का लश्कर हज़्रत अबू उबैदा बिन जर्राह के साथ जो दमिश्क आ कर हज़्रत खालिद के साथ मिल गया था।
- 4,000 का लश्कर हज़्रत शुरहबील बिन हसना के साथ था, जिन को हज़्रत अबू उबैदा ने बसरा की तरफ भेजा था।
- 15,00 का लश्करे ज़हफ हज़्रत खालिद बिन वलीद के साथ था जो हज़्रत अबू उबैदा के साथ दमिश्क में था।
- 9,000 का लश्कर हज़्रत अम्र बिन अल-आस के साथ मकामे फलस्तीन में था।
- 2,000 का लश्कर हज़्रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान और हज़्रत रबीआ बिन आमिर के साथ ब-मकाम अर्दे बलका था।

- 1,000 का लश्कर हज़रत मआज़ बिन जबल के साथ ब-मकाम हवरान था।
- 1,000 का लश्कर हज़रत नो'मान बिन मुक्रिन के साथ मकामे तदम्मुर में था।
- 51,500 (इक्कावन हज़ार पांच सौ) कुल लश्कर

हज़रत खालिद बिन वलीद ने तमाम लश्कर के सरदारों को एक ही मज़्मून का हस्बे ज़ैल खत लिखा :

"بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ـ اَمَّا بَعۡدُ ـ فَاِنَّ اِخۡوَانَكَ الۡمُسۡلِمُوۡنَ قَدۡ عَزَمُوۡا عَلَى الۡمَسِيۡرِ اِلٰى اَجۡنَا دِيۡنَ فَاِنَّ هُنَالِكَ مِنَ الۡعَدُوِّ لِتِسۡعِيۡنَ اَلۡفاً وَهُمۡ يُرِيۡدُوۡنَ الۡمَسِيۡرِ اِلَيۡنَا لِيُطۡفِئُوۡا نُوۡرَ اللّٰهِ بِاَفۡوَاهِهِمۡ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوۡرِهٖ وَ لَوۡ كَرِهَ الۡكَافِرُوۡنَ ـ فَاِذَا وَصَلَ اِلَيۡكَ كِتَابِىۡ هَذَا فَاقۡدِمۡ مَنۡ مَّعَكَ مِنَ الۡمُسۡلِمِيۡنَ اِلٰى اَجۡنَادِيۡنَ فَاِنَّكَ تَجِدُنَا هُنَالِكَ اِنۡ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَالسَّلَامُ عَلَيۡكَ وَ عَلٰى مَنۡ مَّعَكَ مِنَ الۡمُسۡلِمِيۡنَ"

तर्जुमा : **"बा'द हम्द व सलात के मत्लब यह कि तुम्हारे भाई मुसलमानों ने इरादा रवानगी का ब-जानिब अजनादीन के किया है। इस वास्ते कि वहां नव्वे हज़ार फौज दुश्मनों की है, जो कस्द आने का हमारी तरफ रखती है, ब-गर्ज़े बुझाने नूर अल्लाह तआला का अपने मुंहों से, हालां कि अल्लाह तआला पूरा करने वाला है अपने नूर का अगर चे काफिर लोग इस को बुरा जानें। पस जिस वक्त पहुंचे यह खत मेरा तुम्हारे पास तो जो मुसलमान तुम्हारे साथ हैं उन को ले कर अजनादीन में आओ कि तुम हम को वहीं पाओगे अगर चाहा अल्लाह तआला ने और सलामती हो तुम पर और तुम्हारे साथी मुसलमानों पर।"** (हवाला :- फुतूहुश्शाम, सफहा : 64)

हर सरदार के पास अलग अलग कासिद रवाना फरमाए। खुतूत की रवानगी के

बा'द हज़रत खालिद ने लश्कर को कूच का हुक्म दिया। हुक्म मिलते ही मुजाहिदों ने फौरन खैमे उखेडने शुरू किये और खैमे और माल अस्बाब लपेट कर ऊंटों पर लादना शुरू किया। गनीमत और मालो अस्बाब के ऊंटों को औरतों और बच्चों के साथ लश्कर के पीछे की जानिब रखा और सवार व मुजाहेदीन को लश्कर के आगे रखा। हज़रत खालिद बिन वलीद ने कहा कि मेरी राए है कि में औरतों और बच्चों के काफला के साथ लश्कर के पीछे रहूं और आप लश्कर के आगे रहें। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि मुम्किन है कि वर्दान अपना लश्कर ले कर अजनादीन से दमिश्क की तरफ रवाना हुवा हो और उस से आमाना सामना हो जाए। अगर तुम लश्कर के आगे रहोगे तो तुम उन को रोक सकोगे और मुकाबला कर सकोगे। लेहाज़ा तुम आगे रहो और मैं पीछे रहता हूं। हज़रत खालिद ने फरमाया आप की राए मुनासिब है, मैं आप की राए और तज्वीज़ के खिलाफ नहीं करूंगा।

इस्लामी लश्कर दमिश्क से अजनादीन की जानिब रवाना :-

हज़रत खालिद बिन वलीद लश्कर के सवारों के साथ लश्कर के आगे चले और हज़रत अबू उबैदा लश्कर के पीछे मस्तूरात और अतफाल के काफले के साथ चले और उन के साथ एक हज़ार सवार ब-गर्ज़े निगरानी और हिफाज़त थे। जब इस्लामी लश्कर दमिश्क का मुहासरा तर्क कर के रवाना हुवा, तो लश्कर को कूच करते देख कर अह्ले दमिश्क मारे खुशी के उछलने कूदने लगे और तालियां बजा कर अपनी खुशी का इज़्हार करने लगे। इस्लामी लश्कर की कूच के मुतअल्लिक अह्ले दमिश्क ने मुख्तलिफ आरा ज़ाहिर कीं, किसी ने कहा कि अजनादीन में हमारे अज़ीम लश्कर के जमा होने की खबर सुन कर मुल्के शाम में अपने दूसरे लश्कर के पास जमा होने गए हैं, किसी ने कहा कि मुहासरा से तंग आ कर किसी और मकाम पर लश्कर कशी करने जा रहे हैं। और बा'ज़ ने तो यहां तक कहा कि मुल्के हिजाज़ की तरफ भाग कर जा रहे हैं।

दमिश्क में बुलिस बिन बल्का नाम का एक बतरीक रहता था वह बडा दानिशमन्द और माहिरे जंग था। तीर अन्दाज़ी में पूरे मुल्के शाम में उस का कोई सानी नहीं था। तमाम नस्रानी और खुद हिरक्ल बादशाह के नज़्दीक उस का बडा मरतबा था। बुलिस अब तक कभी भी और कहीं भी इस्लामी लश्कर के मुकाबले में नहीं आया था। जब इस्लामी लश्कर दमिश्क से रवाना हुवा था, तब अह्ले दमिश्क ने किल्ले की दीवार से देखा था कि औरतों, बच्चों और माल व अस्बाब का काफला लश्कर के पीछे है, लेहाज़ा उन को यह तमाअ हूई कि इस पर छापा मार दिया जाए। अपने इस फासिद इरादे की तक्मील के लिये उन की नज़रें

में सिर्फ एक ही शख्स था और वह बुलिस बिन बल्का था। मुफसेदीन उस के पास आए और अपनी तज्वीज़ पैश की। बुलिस ने डांटते हुए जवाब दिया कि मुझे कोई ज़रूरत नहीं, क्यूं कि मैं ने देखा है कि अरबों के मुकाबले में तुम ने हमेंशा बुज़दिली और कम हिम्मती का ही मुज़ाहेरा किया है और इसी वजह से मैं ने आज तक अरबों से मुज़ाहिम होने से किनारा कशी इख्तेयार की है। में तुम जैसे ना-मर्दों को साथ ले कर अरबों से लडने में कोई दिलचस्पी नहीं रखता। अह्ले दमिश्क ने बतरीक बुलिस से कहा कि ऐ हमारे मुअज़्ज़ज़ पेश्वा ! अगर तुम हमारी कयादत करने पर रज़ा मन्द हो जाओ तो हम हक्के मसीह और इन्जील की कसम पर वा'दा करते हैं कि हम साबित कदम रहेंगे और हम में से एक फर्द भी फरार न होगा। और हम तुम को पूरा इख्तेयार देते हैं कि हम में से जो भी भागने की कोशिश करे तुम उस की गर्दन मार देना।

बतरीक बुलिस ने अह्ले दमिश्क का अज़्मो इस्तिक्लाल देखा तो वह रज़ा मन्द हो गया और दमिश्क में जितने सवार और पैदल लडने वाले थे तमाम को जमा किया और उस ने हस्बे ज़ैल लश्कर जमा कर लिया।

- अपनी सरदारी में छे हज़ार (६,०००) जंगजू सवारों को रखा।
- अपने भाई बतरिस की सरदारी में दस हज़ार (१०,०००) आज़मूदए कार लडने वाले मुन्तखब किये।

इस तरह कुल सोलाह हज़ार का लश्कर ले कर वह इस्लामी लश्कर के तआककुब में रवाना हुवा। इस्लामी लश्कर की कैफियत यह थी कि हज़रत खालिद बिन वलीद मअ अपने हमराहियों के घोडे पर सवार हो कर बहुत आगे निकल गए थे। जब कि हज़रत अबू उबैदा एक हज़ार सवारों के साथ औरतों और बच्चों के काफले और मालो अस्बाब के साथ ऊंट की चाल चलते हुए कई मील के फास्ले से पीछे चल रहे थे। अचानक उन के हमराही ने पीछे की जानिब एक गुबार उठता हुवा देखा और हज़रत अबू उबैदा को आगाह किया। गुबार देख कर हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि बेशक ! हमारे दुश्मन अह्ले दमिश्क हमारे तआककुब में आ रहे हैं। हज़रत अबू उबैदा ने काफले को ठहरने का हुक्म दिया और तमाम औरतों, बच्चों और बार बर्दार ऊंटों को एक जगह इकठ्ठा किया और उन को अपनी जगह मुत्तहिद हो कर बैठे रहने की ताकीद की और एक हज़ार सवारों को दुश्मनों से मुकाबला करने के लिये मुस्तइद और कमर बस्ता रहने का हुक्म दिया। अब रूमी लश्कर का गुबार बढता जा रहा था और नज़दीक आ रहा था। लश्कर का शौरो गुल भी साफ सुनाई देने लगा

। रूमियों का लश्कर तैज़ आंधी की तरह आ पहुंचा। एक हज़ार कफन बरदोश मुजाहिदों ने उन का मुकाबला किया। एक हज़ार सवारों ने रूमी लश्कर के छ हज़ार सवारों से टक्कर ली और शुजाअत के जौहर दिखाए, लैकिन रूमी लश्कर के दस हज़ार (10,000) पैदल सिपाहीयो ने औरतों, बच्चों और मालो अस्बाब पर कब्ज़ा कर लिया। क्यूं कि उन की निगरानी पर मुकर्रर एक हज़ार मुजाहिद सवार मस्रूफे जंग थे। बतरीक बुलिस के भाई बतरिस ने औरतों और बच्चों को कैद कर लिया और तमाम मालो अस्बाब लूट लिया और सब को ले कर **''नहरे इस्तिर्याक''** चला गया और अपने भाई बतरीक बुलिस से कहा कि मैं नहरे इस्तिर्याक नामी मकाम पर तुम्हारा इन्तिज़ार करता हूं।

इधर हज़रत अबू उबैदा एक हज़ार मुजाहिदों के हमराह रूमी लश्कर के छ हज़ार सवारों के बीच में घिर चुके थे। जंग की आग के शो'ले बुलन्द हो रहे थे। हज़रत अबू उबैदा मुजाहिदों को सब्र के साथ साबित कदम रह कर लडने की तर्गीब देते थे। और खुद भी शदीद किताल कर रहे थे। उस वक्त हज़रत अबू उबैदा यह जुम्ले फरमाते थे कि कसम है खुदा की ! राए वही अच्छी थी जो खालिद बिन वलीद ने तज्वीज़ की थी कि वह लश्कर के हिस्सए खलफ में रहें। हज़रत अबू उबैदा और उन के साथी सख्त मुसीबत में मुब्तला थे, लैकिन फिर भी दिलैरी से मुकाबले में जमे रहे। जब रूमी लश्कर ने औरतों के काफले को कैद कर लिया और हज़रत अबू उबैदा और उन के साथियों पर बलाए ना-गहानी आ पडी थी, तो हज़रत सुहैल बिन सबाह वहां से हज़रत खालिद की तरफ भागे। उन की सवारी में यमन का घोडा था। हज़रत सुहैल ने अपने घोडे की बाग ढीली छोड दी। घोडा बिजली की तरह चला बल्कि यूं कहिये के हवा में उडा। थोडी ही दैर में हज़रत सुहैल ने हज़रत खालिद के लश्कर को पा लिया और करीब पहुंचते ही बुलन्द आवाज़ से पुकारा कि **ऐ मुजाहिदो ! वापस पलटो, वापस पलटो, तुम्हारे भाई सख्त मुसीबत में मुब्तला हैं।** हज़रत खालिद का लश्कर यह पुकार सुन कर थम गया। हज़रत खालिद ने पूछा ऐ सुहैल ! क्या मुआमला है ? हज़रत सुहैल ने घबराई हूई आवाज़ में कहा कि रूमियों ने हमारी औरतों और बच्चों को कैद कर लिया। माल व अस्बाब लूट लिया और शदीद हम्ला कर दिया है। हज़रत अबू उबैदा और उन के साथी सख्त मुसीबत में हैं।

हज़रत सुहैल बिन सबाह से यह खबर सुन कर हज़रत खालिद बिन वलीद ने इस्तीरजाअ पढा। उन की नज़रों के सामने अपने दीनी भाइयों की हालत का कयासी मन्ज़र खडा हो गया। अपने दीनी भाइयों के हाल पर बै-करार हो गए और अपने साथियों को

पुकार कर कहा कि ऐ मुजाहिदो ! बागें फेरो ! और वापस पलटो ! हमारे भाइयों पर रूमी आ पडे हैं। अमीनुल उम्मत दुश्मनों के नर्गा में आ गये हैं। हज़रत खालिद की आवाज़ पर सब से पहले हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई एक हज़ार सवारों के साथ रवाना हुए। उन के रवाना होते ही हज़रत खालिद ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सिद्दीक को एक हज़ार सवारों के साथ रवाना फरमाया। फिर एक हज़ार सवारों के साथ हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर को और उन के पीछे हज़रत खालिद बज़ाते खुद एक हज़ार सवारों के साथ इस तरह रवाना हुए कि सब ने अपने घोडों की बागें ढीली छोड दीं और उन के घोडे हवा से बातें करते हुए उस मकाम पर जा पहुंचे जहां हज़रत अबू उबैदा रूमी लश्कर से मस्रूफे जंग थे। हज़रत खालिद का लश्कर पहुंचते ही रूमियों पर कहरे इलाही की बिजली टूट पडी। मुजाहिदों की तलवारों ने इस कसरत से रूमियों को काटा कि लाशों के ढेर लग गए।

हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर औरतों के कैद होने पर सख्त मुश्तइल थे और वह मिस्ले शो'ला हम्ला आवर थे। इत्तेफाक से उन का सामना बतरीक बुलिस से हो गया। बुलिस उन को देखते ही पहचान गया, क्यूं कि उस ने दमिश्क के किल्ले की दीवार से हज़रत ज़िरार को लडते हुए देखा था। वही डरावनी सूरत और ऊपर का बदन नंगा देख कर वह चौंक उठा और अपने साथियों से कहने लगा कि इस शैतान को मेरे पास मत आने दो। मुझे इस शरीर से अलग रखो। हज़रत ज़िरार ने फरमाया कि मैं शैतान तब कहलाऊंगा जब तेरी तलब और लडाई में कोताही करूं। यह कहते हुए हज़रत ज़िरार उस की तरफ बढे। बुलिस ने घोडा दौडाया और भागा। बुलिस को भागता देख कर हज़रत ज़िरार ने दूर से ही उस पर नैज़ा फेंका। नैज़े से महफूज़ रहने की गर्ज़ से बुलिस ने अपने आप को घोडे से ज़मीन पर गिरा दिया। फिर उठ खडा हुवा और जान हथेली पर ले कर भागा। हज़रत ज़िरार ने उस का तआककुब कर के पकड लिया और उस की गर्दन मरोड कर उस का दम निकालने का कस्द किया। बुलिस चिल्लाया कि ऐ अरबी! मुझ को बाकी रख और मत मार क्यूं कि मेरी बका में तुम्हारी औरतों की बका है। हज़रत ज़िरार ने हाथ रोक लिया और उस को गिरफ्तार कर लिया। इस दौरान हज़रत खालिद, हज़रत अब्दुर्रहमान, हज़रत अबू उबैदा, हज़रत राफेअ और उन के साथियों ने रूमियों में कसरत से तेग ज़नी कर के उन के पांच हज़ार नौ सौ (5900) फौजियों को कत्ल कर डाला। छे हज़ार सवारों में से सिर्फ एक सौ ही ज़िन्दा बचे थे और वह भी तमाम के तमाम गिरफ्तार हो गए थे। जिन में उन का सरदार बतरीक बुलिस भी था। यह जंगी हादिसा "**शमूरा**" नामी मकाम में हुवा था।

अब सब से अहम मस्अला उन औरतों को छुडाने का था जिन को बतरीक बुलिस का भाई बतरिस कैद कर के नहरे इस्तिर्याक नामी मकाम पर ले गया था। जो एक सौ सवार कैद हुए थे उन से हज़रत खालिद ने मा'लूम कर लिया कि औरतों को ले कर बतरिस कहां गया हुवा है। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर को जब पता चला कि उन की बहन खौला भी कैद हो गई हैं, तो वह बे-करार हो गए। हज़रत खालिद ने उन से फरमाया कि बे सब्री न करो। हम ने उन का सरदार और एक सौ सवार का गिरोह पकड लिया है। अगर हमारी औरतों को छुडाने की कोई सबील न हूई, तो उन कैदियों के इवज़ अपनी औरतों को छुडा लेंगे। हज़रत खालिद ने हज़रत अबू उबैदा के हमराह सारा लश्कर अजनादीन की जानिब रवाना कर दिया ताकि अगर वर्दान का लश्कर आ पहुंचे तो वह इस्लामी लश्कर की कुमुक करें। हज़रत खालिद ने अपने साथ दो हज़ार सवार रखे ताकि कैद होने वाली मुअज़्ज़ज़ ख्वातीने इस्लाम की रिहाई का मुआमला हल करें। एक सौ रूमी कैदियों को हज़रत अबू उबैदा के हमराह भेज दिये। मकाम "शमूरा" से हज़रत खालिद "नहरे इस्तिर्याक" की जानिब दो हज़ार सवारों के साथ रवाना हुए। लश्कर के आगे हज़रत खालिद बिन वलीद, हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई, हज़रत मैसरा बिन मस्रूक, हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर और रूउसा-ए मुस्लिमीन थे। उन के पीछे दो हज़ार मुजाहेदीन कतार बन्द घोडे दौडाते हुए आ रहे थे। जब हज़रत खालिद नहरे इस्तिर्याक के उस मकाम पर पहुंचे जहां बतरिस का दस हज़ार का पैदल लश्कर ख्वातीने इस्लाम को कैद में रख कर पडाव किये हुए था। हज़रत खालिद ने दूर से देखा कि लश्कर के बीच से गर्द उठ रही है और तलवारें और नैज़े चमक रहे हैं। यह तमाम अलामतें लडाई की थीं जो बतरिस के लश्कर में ख्वातीने इस्लाम और ना-मर्द रूमी सिपाहियों के दरमियान हो रही थी।

ख्वातीने इस्लाम का रूमियों से मुकाबला

बतरिस ख्वातीने इस्लाम को कैद करने के बा'द जब नहरे इस्तिर्याक पहुंचा तो उस ने हुक्म दिया कि तमाम औरतों को मेरे सामने पैश करो। हज़रत खौला बिन्ते अज़्वर सब से ज़ियादह खुबसूरत थीं। बतरिस ने कहा कि यह मेरे लिये है। इस औरत के मुआमले में कोई मुझ से झगडा न करे। इसी तरह हर इस्लामी खातून की निस्बत रूमी सिपाही कहने लगे कि यह मेरे लिये, या फलानी मेरे लिये है। फिर ख्वातीन को उन के खैमों में भेज दिया। रूमी सिपाही इस्लामी लश्कर का लूटा हुवा मालो अस्बाब एक जगह जमा कर रहे थे और बतरीक

बुलिस का इन्तिज़ार कर रहे थे कि वह आ कर सब को उस के हिस्से का माल और पसन्द की औरत तक्सीम कर दे ।

ख्वातीने इस्लाम अपने खैमों में आ कर मश्वरा करने जमा हूईं । कैद होने वाली ख्वातीन में कौम हुमैरा व अमालेका व तबायिआ की औरतें भी थीं । उन कबीलों की औरतें शुजाअत और बहादुरी, नीज़ घोडे की सवारी में पूरे मुल्के अरब में मश्हूर थीं । तमाम औरतों को मुखातब कर के हज़रत खौला बिन्ते अज़्वर ने कहा कि ऐ इस्लाम की बहादुर बेटियो ! क्या तुम इस बात पर राज़ी हो कि रूमी हम पर गालिब आ जाअें और हम उन मुशरिकों की बांदियां बन कर रहें ? हमारी वह बहादुरी का ज़िक्र जो मुल्के अरब की मजलिसों में होता है, वह बहादुरी कहां चली गई ? हमारी शुजाअत और दानिशमन्दी को आज क्या हो गया है ? ऐ इस्लाम की गैरत मन्द ख्वातीन ! **इन मुशरिकों की बांदी बन कर जीने से मर जाना मेरे नज़दीक ज़ियादह बेहतर है । ज़िल्लत की हयात से इज़्ज़त की मौत बेहतर है । आज वक्त का तकाज़ा है कि हम अपनी बहादुरी का मुज़ाहेरा करें और उन रूमियों से लडते हुए जामे शहादत नौश कर जाअें ।**

हज़रत खौला की पुर–जौश गुफ्तगू का जवाब देते हुए हज़रत अफीरा बिन अफ्फार हुमैरिया ने कहा कि ऐ खौला ! इस वक्त हम ऐसी मजबूरी की हालत में हैं कि हमारे पास तलवार, नैज़ा और सवारी का घोडा कुछ भी नहीं । हम बे सरो सामान और निहत्ते हैं । हम उन मुसल्लह रूमियों के सामने कर भी क्या सक्ती हैं ? हज़रत खौला ने कहा : ऐ बहादुर शहज़ादी ! खैमों की चौबें तो हैं, वह हमारा हथियार हैं । खैमों की लक्ड़ियां ले कर हम सब उन रूमी नाकसों पर हम्ला कर दें, शायद अल्लाह तआला हमारी मदद फरमा दे और हम उन पर गालिब आ जाअें । वरना और क्या होगा ? यही न ? कि वह हम को शहीद कर देंगे । इस तरह मर जाने से हम और हमारे खान्दान शर्म व आर से नजात और राहत हासिल करेंगे । हज़रत अफीरा बिन्ते अफ्फार ने जवाब देते हुए कहा कि ऐ अक्ल व दानिश की मलेका ! खुदा की कसम ! तुम ने जो बात कही इस से बेहतर कोई बात नहीं और जो तद्बीर तुम ने बताई इस से बेहतर कोई तद्बीर नहीं ।

तमाम ख्वातीन हज़रत खौला बिन्ते अज़्वर की तज्वीज़ को मन्ज़ूर करते हुए इज़्हारे शुजाअत पर कमर बस्ता हूईं । खैमों को मुन्हदिम कर के चौबें निकाल लीं और हर औरत ने अपने हाथ में एक एक चौब ले ली और यक–बारगी शौरो गुल मचाती हूईं रूमियों से मुकाबला करने निकल पडीं । गोया कि सरापा नज़ाकत ने पैकरे शुजाअत का

रूप इख्तेयार कर लिया । मस्तूरात का गिरोह एक ना–मा'लूम जज़्बे के तहत आज़िमे जंग व किताल हुवा था । तारीख में ख्वातीने इस्लाम का तज़्केरा तलाई हुरूफ से मुनक्क़श कराने अपना खून बहा देने पर आमादा हूई थीं । बल्कि रूमी नर को ज़िल्लतो रुस्वाई के कंगन पहेना कर उस को मादा बनाने पर आमादा हूई थीं । हज़रत खौला बिन्ते अज़्वर सब से पैश पैश चलती थीं । एक चौब उन के हाथ में थी और एक एक चौब कांधे और पीठ पर बांध रखी थीं, ताकि दौराने लडाई एक चौब टूट जाए तो फौरन दूसरी चौब इस्ते'माल में लाई जा सके । हज़रत खौला अपनी दीनी बहनों और सहेलियों को नसीहत करती थीं कि सब मुत्तहिद और यक्जा हो कर लडो और कोई एक दूसरे से जुदा न हो और साबित कदमी से मुकाबला करो । अल्लाह तआला से मदद तलब करो ।

ख्वातीन का गिरोह कदम बढाते हुए आगे चला । एक रूमी सिपाही सामने आया । हज़रत खौला ने चौब की ज़र्बे शदीद उस के सर पर रसीद की । ऐसा लगता था कि चौब नहीं तलवार मारी है क्यूं कि एक ही ज़र्ब में उस का सर तर्बूज़ की तरह फट गया और वह दुनिया से चल बसा । हज़रत खौला की इस जुर्अत ने गिरोहे ख्वातीन में एक जौश पैदा कर दिया । तमाम ख्वातीन के हाथ में चौबें और हम्ला की जुर्अत देख कर बतरिस ने ख्वातीन को धमकाते हुए कहा कि यह क्या हंगामा मचा रखा है ? अफीरा बिन्ते अफ्फार ने तन्ज़न जवाब दिया, ताकि हम अपने को तअने अरब से बचाअें और तुम्हारी खोपडी तोड कर तुम्हारी हयात का सिलसिला मुन्कतेअ कर दें । बतरिस ने सिपाहियों से कहा कि इन औरतों को मुतफर्रिक कर दो और इन को पकड लो, लैकिन इन पर तलवार या नैज़ा मत चलाना और खबरदार ! जो शख्स खौला को गिरफ्तार करे वह उस के साथ किसी भी किस्म की बद–तमीज़ी न करे । बतरिस के हुक्म पर सिपाहियों ने चारों अतराफ से ख्वातीन को घेर लिया, लैकिन किसी को करीब जाने की हिम्मत नहीं होती थी । क्यूं कि जो भी उन के करीब जाता था उस के घोडे के वह हाथ पाऊं तोड डालती थीं और उस को घोडे से गिरा कर लाठियों से पिट कर मार डालती थीं । अल्लामा वाकदी ने अपनी किताब में लिखा है कि इस तरह ख्वातीने इस्लाम ने तीस रूमियों को मार डाला । बतरिस ने जब यह हाल देखा तो उस ने सिपाहियों को हम्ला करने का हुक्म दिया । हज़रत खौला ने भी ख्वातीन को हम्ला के लिये मुस्तइद किया । हज़रत खौला बिन्ते अज़्वर बिफरी हूई शैरनी की तरह डकारती थीं और शुजाअत व बहादुरी के अश्आर पढ कर ख्वातीन को उभारती थीं और पुकार पुकार कर कहती थीं कि ऐ दुख्तराने इस्लाम ! तुम को ज़रूर मरना है, लैकिन बुज़दिलों की तरह मत मरना बल्कि बडे बहादुरों की शान से मौत को महबूब जान कर मरना है ।

बतरिस हज़रत खौला के करीब आया और निहायत नर्म लहजा इख्तेयार करते हुए कहा कि ऐ अरबी खातून ! शिद्दत से बाज़ आओ, और नर्मी इख्तेयार करो । मैं तुम्हारी ता'ज़ीम व एहतराम करता हूं और तुम्हारे लिये अपने दिल में वह अम्र रखता हूं कि तुम खुश हो जाओगी। मैं वह हूं कि मुल्के शाम की परी रू औरतें मुझ पर फरेफ्ता हो कर मेरी ख्वाहिश में बै-करार रहती हैं। लैकिन मैं किसी की तरफ इल्तिफात नहीं करता। मेरे मिल्क में वसीअ खैत, सरसब्ज़ व ज़रखैज़ ज़मीनें, मवैशी, मकानात और बे-शुमार मालो अस्बाब हैं, वह सब तुम्हारा है ब-शर्ते कि मुझ को तुम अपना मालिक बनाने पर राज़ी हो जाओ। बतरिस की इस बेहूदा गोई पर अल्फाज़ का तमांचा रसीद करते हुए हज़रत खौला ने जवाब दिया **ऐ काफिरा, नाकस और फाहिशा के बेटे ! कसम खुदा की ! अगर मैं तुझ पर ज़फर और गल्बा पाऊंगी तो इस चौब से तेरे सर का भैजा तोड दूंगी । तुझ को अपना मालिक तस्लीम करना तो दर किनार तुझ को मैं अपनी बकरियों और ऊंटों के चरवाहे के काबिल भी नहीं समझती ।** हज़रत खौला का जवाब सुन कर बतरिस गुस्सा से बर-अंगेख्ता हो गया और उस ने सिपाहियों से कहा कि ऐ ना-मर्दो ! इस से बढ कर तुम्हारे लिये शर्म व आर की बात क्या होगी कि अरब की औरतें तुम पर गालिब आ गईं । लेहाज़ा तुम मसीह और हिरक्ल के गज़ब से डरो । बतरिस के इस कलाम से रूमी सिपाही जुंबिश में आए और ख्वातीने इस्लाम पर हम्ला कर दिया। ख्वातीन ने बडी दिलैरी और शुजाअत से उन का मुकाबला किया। लडाई का तन्नूर गर्म हुवा । रूमियों ने तलवारें उठाईं लैकिन उन की तलवारें ख्वातीने इस्लाम तक न पहोंच सक्ती थीं क्यूं कि उन के हाथों में खैमे की लम्बी और दराज़ चौबें थीं । जिस से वह शम्शीर ज़न को अपने से दूर रखती थीं और मौका' पाते ही ज़र्बे चौब से उन के सरों को तोडती थीं। वह इस तरह मस्रूफे मुकाबला थीं कि हज़रत खालिद बिन वलीद का लश्कर नहरे इस्तिर्याक पहुंचा और दूर से उठते हुए गुबार को देखा । हज़रत खालिद ने रूमी लश्कर के पडाव के नज़दीक तवक्कुफ किया ।

हज़रत खालिद का ख्वातीने इस्लाम की कुमुक को पहुंचना :-

हज़रत खालिद ने हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई को भेजा, ताकि वह करीब जा कर तफ्तीश कर आएं कि यह उठता हुवा गुबार किस वजह से है ? हज़रत राफेअ ने जा कर देखा तो हैरत में गर्क हो गए। जांबाज़ ख्वातीन जौशो खरोश के साथ रूमियों का मुकाबला कर रही हैं । हज़रत राफेअ फौरन वापस आए और सूरते हाल से मुत्तलेअ किया । तमाम मुजाहेदीन को हज़रत खालिद ने हुक्म दिया कि तैज़ी से घोडे दौडाते हुए एक साथ पहुंचो । लैकिन जब

उन रूमियों के करीब पहुंचना तो चारों तरफ फैल जाना और रूमियों को बीच हिसार में ले लेना । हज़रत खालिद का हुक्म मिलते ही मुजाहिदों ने निशान बुलन्द किये, नैज़े सीधे कर लिये और घोडों की बागें ढीली छोड दीं और एक साथ इस तरह रवाना हुए कि जैसे हज़ारों कमानों में से एक साथ हज़ारों तीर छूटे हैं। अचानक इस्लामी लश्कर के आ पहुंचने से बतरिस का दिल धडकने लगा । उस के हाथ पाऊं कांपने लगे । तमाम रूमी सिपाहियों पर लरज़ह तारी हो गया । इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों ने उन को चारों तरफ से यूं घैर लिया कि सब को अपनी हलाकत का यकीन हो गया ।

मुकद्दस ख्वातीने इस्लाम पर नज़र बद कर के उन की अस्मत व इज़्ज़त से खेलने का नापाक ख्वाब देखने वालों को अब नज़रों के सामने मौत नज़र आने लगी । बतरिस ने अपना रवय्या तब्दील करते हुए ख्वातीने इस्लाम से कहा कि ऐ गिरोहे ख्वातीन ! मेरे दिल में तुम्हारे लिये मेहरबानी और ता'ज़ीम आ गई है क्यूं कि हम भी मां, बेटी, बहन, फूफी रखते हैं । सलीब के तुफैल मैं तुम सब को छोड देता हूं। जब तुम्हारे मर्द यहां आएं तो उन को कहना कि हमारे साथ नैक सुलूक किया गया है और यह भी कहना कि बतरिस के अल्फाज़ मुंह में रह गए क्यूं कि उस ने इस्लामी लश्कर से दो शख्सों को अपनी तरफ आते देखा । उन दो अश्खास में से एक ने ज़िरह वगैरा पहन रखा था और दूसरे नंगे बदन थे । दोनों अरबी सवारों ने घोडों की बागें ढीली छोड दीं थीं और उन के हाथ में नैज़े चमकते थे । दोनों इस शान से आते थे कि जैसे शैर अपने शिकार पर हम्ला करने आता हो । उन दोनों अश्खास में एक हज़रत खालिद बिन वलीद और दूसरे हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर थे । वह करीब आए कि फौरन हज़रत खौला ने पुकारा कि **ऐ भाई ! तुम्हारी बहन यहां है ।** अल्लाह ने हम को मदद दी और बिछडे हुए भाई बहन को फिर एक मरतबा मिला दिया ।

बतरिस ने जब यह सुना कि हज़रत ज़िरार को खौला ने जिस तरह मुखातब कर के पुकारा है इस से मा'लूम होता है कि यह उन की हकीकी बहन हैं। और मैं ने उन की बहन के साथ बहुत बद-तमीज़ी की है, लेहाज़ा यह नंगे बदन और डरावनी शक्ल व सूरत वाला अरबी सवार मुझ को कच्चा चबा जाएगा। यह ख्याल आते ही बतरिस के अवसान खता हो गए। इस तरह भागा जैसे कोई मौत को देख कर भागता है । बतरिस को भागता देख कर हज़रत खौला उस के तआककुब में दौडीं । हज़रत खौला को किसी रूमी के पीछे दौडते देख कर हज़रत खालिद और हज़रत ज़िरार ने अपने घोडे उस जानिब मोडे । अब इस्लामी लश्कर भी

रूमी कैम्प में दाखिल हो चुका था। बतरिस ने हज़रत ज़िरार को अपने करीब आते देख कर कहा कि ऐ बिरादर अरबी ! मुबारक हो, अपनी बहन को संभालो। यह मेरी तरफ से तुम को हद्या और तोह्फा है। हज़रत ज़िरार ने फरमाया कि मैं ने तेरा हद्या कबूल किया और इस हद्या व तोह्फा का बदला मेरे पास नैज़ा की नोक के इलावा कुछ नहीं। यह कह कर हज़रत ज़िरार ने उस के सीना पर नैज़ा मारा। हज़रत खौला ने पूरी ताकत का इस्ते'माल करते हुए उस के घोडे के पैरों में चौब फटकारी और घोडा झुका, बतरिस घोडे की ज़ीन से ज़मीन पर गिरा। हज़रत ज़िरार ने नैज़ा उस की सुरीन में पैवस्त कर दिया जो जिस्म के आरपार निकल गया और उस को मुर्दा कर दिया। हज़रत ज़िरार ने उस का सर काट कर नैज़े की नोक पर लटका लिया।

अपने सरदार के सर को नैज़े पर लटका देख कर रूमियों के दिल बैठ गए और पीठ दिखा कर भागना शुरू किया। मुजाहिदों ने तआक्कुब किया और शिद्दत से तेग ज़नी की। तीन हज़ार (3000) रूमी ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ कत्ल हुए, बाकी दमिश्क की तरफ भाग निकले। हज़रत खालिद ने मुजाहिदों को हुक्म दिया कि जल्द अज़ जल्द माले गनीमत जमा कर के अजनादीन की जानिब रवाना हो जाओ क्यूं कि हज़रत अबू उबैदा अजनादीन की तरफ आगे बढ रहे हैं और इस इलाके में वर्दान का अज़ीम लश्कर अपना जबडा फाडे हमारा मुन्तज़िर है। हुक्म की ता'मील करते हुए तमाम काम ब-उज्लत अंजाम देने के बा'द लश्करे इस्लाम अजनादीन की तरफ रवाना हुवा। राह में "मर्जे राहित" नाम के मकाम पर हज़रत अबू उबैदा के लश्कर से मुलाकात हो गई। हज़रत अबू उबैदा ख्वातीने इस्लाम की रिहाई और रूमियों की हज़ीमत की दास्तान सुन कर बहुत खुश हुए और हज़रत खालिद को मुबारकबाद और दुआए खैर से नवाज़ा।

हज़रत अबू उबैदा के लश्कर में एक सौ कैदी थे, जिन को बतरीक बुलिस के साथ शहूरा नामी मकाम पर गिरफ्तार किया गया था। हज़रत खालिद ने बुलिस को बुला कर इस्लाम की दा'वत दी और कहा कि कबूल कर वरना तेरा हाल भी तेरे भाई बतरिस जैसा करूंगा। बुलिस ने पूछा कि मेरे भाई बतरिस के साथ तुम ने क्या मुआमला किया ? हज़रत खालिद ने हज़रत ज़िरार के नैज़े की जानिब इशारा किया। बुलिस ने देखा कि उस के भाई बतरिस का कटा हुवा सर नैज़े की नोक पर लटक रहा था। बुलिस रोने लगा और कहा कि अब भाई के बगैर ज़िन्दगी का कोई लुत्फ नहीं। मुझ को भी मेरे भाई के साथ मिला दो। चुनांचे हज़रत खालिद के हुक्म से हज़रत मुसय्यब बिन नजीबतुल फज़ारी ने उसकी गर्दन उडा दी।

मुतफर्रिक इस्लामी लश्करों का अजनादीन में तजम्मुअ :-

जैसा कि अवराके साबेका में मज़्कूर हुवा कि हज़रत खालिद बिन वलीद ने मुल्के शाम में मुतफर्रिक इस्लामी लश्कर के सरदारों को खुतूत इर्साल कर के उन्हें अजनादीन पहुंचने की ताकीद की। इस के मुताबिक तमाम सरदार अपने अपने लश्कर के साथ अजनादीन पहोंच गए। हज़रत अम्र बिन अल-आस फलस्तीन में थे और वहां से अजनादीन की तवील मुसाफत होने की वजह से वह पहोंच नहीं सके थे। अल्लामा वाकदी की किताब "**फुतूहुश्शाम**" में अजनादीन की जंग के तज़्केरे में कहीं भी हज़रत अम्र बिन अल-आस का ज़िक्र नहीं। जंगे अजनादीन के फौरन बा'द जंगे दमिश्क (बारे दौम) हूई थी, उस के अहवाल में अल्लामा वाकदी ने हज़रत अम्र बिन अल-आस का ज़िक्र किया है, लेहाज़ा सूरते हाल यह हूई थी कि हज़रत अम्र बिन अल-आस फलस्तीन से जब अजनादीन आए, तो जंगे अजनादीन इख्तिताम पज़ीर हो चुकी थी और इस्लामी लश्कर अजनादीन से कूच कर के दमिश्क जा रहा था और हज़रत अम्र बिन अल-आस दमिश्क जाने वाले इस्लामी लश्कर से मुलहिक हुए थे। हज़रत अम्र बिन अल-आस का लश्कर जंगे अजनादीन में शरीक नहीं हुवा था। हज़रत शुरहबील बिन हसना, हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान, हज़रत नो'मान बिन मुक्रिन और हज़रत मआज़ बिन जबल के लश्कर ब-मकाम अजनादीन जमादिल ऊला 12, सन हिजरी में जमा हुए थे। हज़रत मआज़ बिन जबल के लश्कर में **हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम** सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के गुलाम **हज़रत सफीना** भी शामिल थे। तमाम लश्कर के सरदारों ने मअ अपने मुजाहेदीन के हज़रत खालिद बिन वलीद और हज़रत अबू उबैदा और उन के लश्कर से मुलाकात की।

रूमियों का लश्कर अजनादीन में :-

रूमी लश्कर पहले से अजनादीन में मौजूद था, बल्कि जब बैतुल लहिया का मा'रका हुवा था उस के पहले से ही हिरक्ल बादशाह ने अजनादीन में फौज जमा करना शुरू कर दिया था। करीब व बईद से रूमी जंग के लिये रोज़ ब-रोज़ लश्कर में शमूलियत करते थे और रूमी लश्कर की ता'दाद में दिन ब दिन इज़ाफा होता रहता था। रूमी लश्कर अजनादीन के मैदान में टिड्डी दल की तरह फैला हुवा था, बल्कि उभर रहा था। रूमी लश्कर नव्वे सफ में तर्तीब दिया गया था और हर सफ में एक हज़ार सिपाही थे। हज़रत खालिद बिन वलीद ने रूमी लश्कर की ता'दाद का सहीह अंदाज़ा लगाने के लिये हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर को भेजा और उन को खास ताकीद की कि तुम रूमी लश्कर की ता'दाद का तख्मीना कर के चले

आना । खुद ए'तेमादी और जुर्अत पसन्दी से काम लेते हुए तने तन्हा उन से मत उलझना । क्यूं कि अल्लाह तबारक व तआला का फरमान है :

" وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ وَاَحْسِنُوْا "

(सूरा अल-बकरा,आयत : 195)

तर्जुमा : "और अपने हाथों हलाकत में न पडो और भलाई वाले हो जाओ ।"

(कन्जुल ईमान)

हज़रत ज़िरार ने कहा में एहतियात से काम लूंगा और ऐसा कोई भी कदम नहीं उठाऊंगा कि बज़ाते खुद मुसीबत व हलाकत में मुब्तला हो जाउं । फिर हज़रत ज़िरार अपने घोडे पर सवार हो कर रूमी लश्कर की जानिब गए । गोया कि वह कोई मुसाफिर हों और सैर व तफरीह के लिये निकले हों, इस अन्दाज़ से रूमी लश्कर के करीब गए और लश्कर के साज़ो सामान,खैमे, निशान, अफराद वगैरा को देखने लगे । ऐसा मेह्सूस हुवा कि खैमों का शहर बसा हुवा है । रूमी सिपाही के जिस्म पर लोहे के गिलाफ चढे हुए हैं । खैमों पर थोडे थोडे फास्ले पर झन्डे लहेरा रहे थे । हज़रत ज़िरार ने शुमार किया तो नव्वे झन्डे थे और हर झन्डे के नीचे एक हज़ार सिपाही थे । आफ्ताब की रौशनी में सिपाहियों के खौद, ज़िरहें, नैज़े, तलवारें वगैरा इस तरह चमक रहे थे जैसे एक साथ हज़ारों कुमकुमे रौशन किये गए हों । हज़रत ज़िरार रूमी लश्कर का मुआइना करने में खोए हुए थे कि रूमी लश्कर के सरदार वर्दान ने उन को देख लिया । फौरन हुक्म दिया कि कोई मुसलमान हमारे कैम्प की जासूसी करने आया हुवा है । लेहाज़ा उसे गिरफ्तार कर के मेरे पास हाज़िर करो ।

तीस रूमी सवार हज़रत ज़िरार की तरफ लपके । उन को देख कर हज़रत ज़िरार ने अपने घोडे का रुख इस्लामी लश्कर की जानिब फैरा और भागे । रूमी सिपाही ने गुमान किया कि यह डर कर भाग रहा है, यकीनन यह मुखबिरी के काम के लिये ही आया था । इस को गिरफ्तार करना ज़रूरी है । रूमी सिपाहियों ने आपस में कहा कि घोडों की बागें ढीली छोड दो, शिकार हाथ से निकल न जाए । रूमी सिपाहियों ने हज़रत ज़िरार का तआककुब किया । कुछ फास्ला तय करने के बा'द हज़रत ज़िरार ने ज़ोर से अपने घोडे की लगाम खींची, घोडा चराग-पा हो कर ठहर गया और हिनहिनाने लगा । हज़रत ज़िरार ने घोडे का रुख इस्लामी लश्कर से फैर कर रूमी लश्कर की जानिब कर दिया । सामने से तीस रूमी सिपाही इन्हें

गिरफ्तार करने तैज़ी से आ रहे थे । दरमियान में थोडा फास्ला था । हज़रत ज़िरार ने घोडे को एडी मारी । घोडा गोया अपने मालिक के दिल का इरादा समझ गया । घोडे ने लम्बी जसत लगाई और हवा से बातें करता हुवा अपनी तमाम ताकत इस्ते'माल करते हुए दौडा । रूमी सिपाही सामने से आ रहे थे हज़रत ज़िरार ने अपना नैज़ा रास्त कर लिया और रूमी सिपाहियों के बराबर मुकाबिल घोडा दौडाते हुए उन के दरमियान पहोंच गए और एक सिपाही के सीने में नैज़ा पैवस्त कर दिया । वह मुर्दा हो कर ज़मीन पर गिरा । रूमी सिपाही घबरा उठे । इस तरह के बाज़गश्त हम्ले का उन्हों ने तसव्वुर नहीं किया था । वह कुछ सोचें और समझें और कोई कदम उठाअें, इतनी दैर में तो हज़रत ज़िरार ने नैज़ा से आराकशी करते हुए तीन सिपाहियों को ढा दिये । हज़रत ज़िरार मिस्ल शैरे नर रूमी भेडों पर टूट पडे थे । अपने चार साथियों को पलक झपकने में कुश्ता देख कर उन की आंखों के आगे अंधेरा छा गया । रूमी सिपाहियों ने भागने में ही आफियत गुमान की । अपनी सवारियों के रुख रूमी लश्कर की जानिब फैर कर पीठ दिखा कर भागना शुरू किया । थोडी दैर पहले रूमी सिपाही हज़रत ज़िरार का तआककुब कर रहे थे ।

लैकिन अब मुआमला बर-अक्स था । रूमी सिपाही भाग रहे थे और हज़रत ज़िरार तआककुब कर रहे थे । तआककुब करते हुए हज़रत ज़िरार ने नैज़ा ज़नी जारी रखी और जिस के भी करीब पहोंच जाते उस के सीने में नैज़ा घुसेड देते और उस को सवारी से ज़मीन पर मुर्दा गिरा देते । इस तरह रूमी लश्कर की हद आने तक हज़रत ज़िरार ने नैज़ा बाज़ी करते हुए तआककुब किया । तीस में से सिर्फ ग्यारह सिपाही रूमी लश्कर में ज़िन्दा वापस गए और उन्नीस सिपाही की लाशें मैदान में बिखरी पडी थीं । हज़रत खालिद बिन वलीद दूर से हज़रत ज़िरार का यह कारनामा देख रहे थे । हज़रत ज़िरार रूमी सिपाहियों का तआककुब करते हुए रूमी लश्कर तक गए और जब बचे हुए ग्यारह सिपाही लश्कर में दाखिल हो गए, तब हज़रत ज़िरार वापस पलट कर इस्लामी लश्कर में आए । हज़रत खालिद ने उन से फरमाया कि ऐ ज़िरार ! मैं ने तुम को ताकीद की थी कि खुद ए'तेमादी के भरम में किसी किस्म की कोई जुर्अत मत करना, फिर भी तुम ने रूमी सिपाहियों से लडाई क्यूं मोल ली ? हज़रत ज़िरार ने कहा कि ऐ सरदार ! आप के हुक्म की ना-फरमानी करते हुए मैं ने उन पर हम्ला नहीं किया, बल्कि उन्हों ने मुझ पर हम्ला किया था मैं ने तो सिर्फ मुकाबला किया है । ऐ सरदार ! अगर आप की डांट और मलामत का खौफ न होता तो में उन के लश्कर पर हम्ला किये बगैर वापस न आता । बल्कि रूमी लश्कर में कोहराम मचा देता :

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिये,

मुल्हिदों की क्या मुरव्वत कीजिये ।

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

रूमी लश्कर की सफ बन्दी और वर्दान का लश्कर से खिताब :-

रूमी लश्कर बहुत दिनों से अजनादीन में पडाव किये हुए था, लेहाज़ा लश्कर की तर्तीब और सफ बन्दी का काम पायए तक्मील को पहोंच चुका था । लैकिन इस्लामी लश्कर की आमद के बा'द रूमी सरदार वर्दान ने नज़रे सानी करते हुए तर्तीब शुदा लश्कर का मुआइना किया और मा'मूली तर्मीम व तज्दीद की । रूमी लश्कर में ईसाइयों के मज़हबी काइद व पेश्वा या'नी बतारका और अतराफ के इलाकों की रियास्तों के बादशाह भी काफी ता'दाद में थे । वर्दान ने तमाम बतारका, मुलूक, अर्काने लश्कर और निशान बर्दारों को खुसूसन, और तमाम रूमी सिपाहियों को उमूमन खिताब करते हुए कहा कि कैसरे रुम शाह हिरक्ल को तुम पर नाज़ और भरोसा है । इस लश्कर में मुल्के शाम के आज़मूदा जंग बहादुर शेहसवार मौजूद हैं । हिरक्ल बादशाह की बहुत सी उम्मीदें तुम से वाबस्ता हैं और तुम्हारी ज़िम्मेदारी है कि अरबों को ज़िल्लत व रुस्वाई की शिकस्त दे कर बादशाह की आंखें ठंडी करो । अगर तुम ने साबित कदमी और इत्तेफाके बाहमी से मुकाबला किया तो काम्याबी तुम्हारे कदम चूमेगी । सलीब से मदद मांगो, सलीब तुम्हारी इआनत करेगी । मुसलमानों के लश्कर की ता'दाद तुम से बहुत कम है । उन के एक सिपाही के मुकाबले में तुम तीन हो । लेहाज़ा उन का रोअब और खौफ दिल से निकाल दो और बुलन्द हिम्मती से काम लो । अगर तुम ने इस जंग में बुज़दिली दिखा कर शिकस्त खाई तो मुसलमानों का रोअब मुसल्लत हो जाएगा और फिर उन का मुकाबला करने की किसी में जुर्अत न होगी और तुम्हारा मुल्क, तुम्हारी जागीर, तुम्हारी दौलत के वह मालिक हो जाअेंगे और तुम्हारे मर्दों को गुलाम और औरतों को कनीज़ें बनाअेंगे ।

वर्दान की तक्रीर ने रूमियों को जुंबिश में ला दिया और तमाम रूमियों ने हक्के मसीह और इन्जील के हलफ उठाए और खून के आखरी कतरे तक इस्लामी लश्कर से मुकाबला करने का अज़्मे मोहकम किया ।

इस्लामी लश्कर की सफ बन्दी और हज़रत खालिद की तर्गीबे जेहाद

हज़रत खालिद ने हज़रत ज़िरार और दीगर ज़राए से रूमी लश्कर की सहीह ता'दाद मा'लूम कर ली थी । आप ने इस्लामी लश्कर की सफ बन्दी शुरू की । मैमना पर हज़रत मआज़ बिन जबल, मैसरा पर हज़रत सईद बिन आमिर अन्सारी ,दाअें बाज़ू पर हज़रत नो'मान बिन मुक्रिन, बाअें बाज़ू पर हज़रत शुरहबील बिन हसना, साका में हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान को चार हज़ार सवारों के साथ औरतों और बच्चों की हिफाज़त के लिये और कल्ब में हज़रत खालिद खुद ठहरे । हज़रत खालिद ने अपने साथ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सिद्दीक, हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी, हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई, हज़रत मुसय्यब फज़ारी ,हज़रत ज़ुल केलाअ हुमैरी, हज़रत रबीआ बिन आमिर वगैरा को ठहराया । सफ आराई मुकम्मल कर के हज़रत खालिद ने लश्कर में सफों के दरमियान गश्त किया और मुजाहेदीन को जेहाद की तर्गीब दी । हज़रत खालिद बुलन्द आवाज़ से फरमाते कि ऐ गिरोहे मुस्लिमीन ! अल्लाह के दीन की मदद करो, अल्लाह तुम्हारी मदद फरमाएगा । अल्लाह की राह में मुश्रिकों से जेहाद करो और दुश्मन से जंग करते वक्त सब्रो इस्तिक्लाल से काम लो । जब तक मेरा हुक्म न हो हम्ला मत करो । अल्लाह से मदद तलब करो, वह ज़रूर तुम्हारी मदद करेगा । और तुम्हें फतह व गल्बा इनायत फरमाएगा ।

दोनों लश्कर मुकाबला के लिये मैदान में आमने सामने :-

हज़रत खालिद इस्लामी लश्कर को कैम्प से मैदान में ले आए । वर्दान ने देखा कि इस्लामी लश्कर मैदान में आ पहुंचा है, तो उस ने भी लश्कर को मैदान की तरफ रवाना होने का हुक्म दिया । रूमी लश्कर ने अपनी कसरत से मैदान के तूल व अर्ज़ को भर दिया । रूमी सिपाही कल्मए कुफ्र बुलन्द करते हुए और सलीब व निशान को बुलन्द करते तकब्बुर व गुरूर से अकडते हुए मैदान में आए । दरमियान में थोडा फास्ला छोड कर दोनों लश्कर आमने सामने ठहरे । दोनों लश्कर मुकाबला के लिये बिल्कुल तैयार थे ।

रूमी लश्कर से एक बुढ्ढा शख्स सियाह लिबास पहने हुए बर आमद हुवा । उस के साथ गबर थे । वह बढ्ढा इस्लामी लश्कर के करीब आया और अरबी ज़बान में गुफ्तगू करते हुए कहा कि तुम्हारा सरदार मेरे सामने आए और मुझ से गुफ्तगू करे । हज़रत खालिद बिन वलीद घोडा बढा कर उस के सामने आए । बुढ्ढे ने कहा क्या तुम ही मुसलमानों के सरदार

हो ? हज़रत खालिद ने फरमाया हां ! मुसलमान मुझ को ऐसा समझते हैं । लेकिन मैं उन का सरदार उस वक्त तक हूं जब तक मैं अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की इताअतो फरमांबरदारी में हूं और अगर मुझ में कोई कमी और तब्दीली वाकेअ हो जाए तो मुसलमानों पर मेरी सरदारी बाकी न रहेगी । बुढ्ढे ने कहा कि तुम्हारे तवाज़ोअ और मज़हब की इताअत व पाबन्दी की वजह से ही तुम हम पर गालिब हो गए हो । अगर तुम अपने तौर तरीके में तगय्युर और तबद्दुल करते तो हरगिज़ हम पर गालिब न होते ।

फिर इस बुढ्ढे ने कहा कि हमारा मुल्के शाम वह है कि अह्‌ले फारस और जरामका इस के शहरों पर कब्ज़ा करने आए थे, लैकिन शिकस्त खा कर वापस लौट गए । तुम अह्‌ले अरब हमारे कुछ शहरों पर काबिज़ हो गए हो, लैकिन कब्ज़ा और गल्बा हमेंशा बाकी नहीं रहता । हमारे लश्कर के सरदारों ने तुम पर शफ्कत और मेहरबानी करते हुए मुझ को तुम्हारे पास भेजा है, ताकि तुम्हारे लश्कर के हर सिपाही को एक कपडा, एक अमामा और एक दीनार और तुम्हारे लिये एक सौ दीनार व दस कपडे और तुम्हारे खलीफा हज़रत अबू बक्र रदियल्लाहो तआला अन्हो को एक हज़ार दीनार और एक सौ कपडे इस शर्त पर दिये जाओंगे के तुम मुल्के शाम छोड कर हिजाज़ वापस चले जाओ । उस बुढ्ढे राहिब ने गुफ्तगू का सिलसिला जारी रखते हुए मज़ीद कहा कि आज यहां पर जो रूमी लश्कर मौजूद है, इस में मुल्क के जंग आज़मूदा, जंगजू और सरगना लोगों ने शिर्कत की है और हमारे लश्कर की ता'दाद चूंटियों की तरह है । इस को तुम उन लश्करों की मानिन्द मत गुमान करो, जिन को तुम ने माज़ी करीब में शिकस्त दी है । इस लश्कर को शिकस्त देना तो बहुत दूर की बात है । इस लश्कर से टक्कर लेना और इस के मुकाबले में खडा रहना भी तुम्हारे लिये मुहाल है । लेहाज़ा तुम्हारी भलाई इसी में है कि अपनी हरकतों और जुर्अतों से बाज़ आओ और हमारे मुल्क से चले जाओ ।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने फरमाया कि कसम है हक्क तआला की ! हम हरगिज़ तुम्हारे मुल्क से न जाओंगे जब तक तुम तीन बातों में से किसी एक को कबूल व इख्तेयार न करो ।

(1) कल्मए शहादत का इक्रार कर के मुसलमान हो जाओ ।

(2) जिज़्या अदा करो ।

(3) हम से जंग करो ।

हज़रत खालिद ने अपनी गुफ्तगू का सिलसिला जारी रखते हुए फरमाया कि तुम अपने लश्कर की ता'दाद की कसरत बयान कर के हम पर अपना रोअब और खौफ काइम करने की कोशिश करते हो ? लैकिन हम तुम्हारी ता'दाद को मुत्लक खातिर में नहीं लाते क्यूं कि अल्लाह तआला ने हमारी मदद का वा'दा फरमाया है :

" وَكَانَ حَقاً عَلَيْنَا نَصْرُالْمُؤْمِنِيْنَ "

(सुरतुर रूम, आयत : 47)

तर्जुमा : ''और हमारे ज़िम्म-ए करम पर है मुसलमानों की मदद फरमाना ।''

(कन्ज़ुल ईमान)

ऐ नस्रानी राहिब ! अल्लाह तआला ने अपने महबूबे आ'ज़म, हमारे आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की मुकद्दस ज़बान से हमारी मदद का वा'दा फरमाया है । हम अपने नबी, हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की ज़बान से फरमाए गए हर वा'दे पर यकीने कामिल रखते हैं और दुनिया की बडी से बडी ताकत से नहीं घबराते :

क्या दबे जिस पे हिमायत का हो पंजा तेरा,

शैर को खतरे में लाता नहीं कुत्ता तेरा ।

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद ने मज़ीद फरमाया कि ऐ राहिब ! तुम ने हम को कपडों और दीनारों की लालच और तमाअ में मुब्तला करने की कोशिशे बे जा की है । क्यूं कि हम दुनिया की दौलत के हुसूल की खातिर जेहाद नहीं करते, बल्कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल की खुशनूदी व रज़ा हासिल करने के लिये राहे खुदा में अपनी जानें कुरबान करने का हौसला रखते हैं । दुनिया के माल व मताअ हमारी नज़रों में हेच हैं :

उन का मंगता पांव से ठुक्रा दे वह दुनिया का ताज,

जिस की खातिर मर गए मुन्इम रगड कर एडियां ।

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद बिन वलीद की गुफ्तगू सुन कर बुड्ढा राहिब खामोश हो गया। उस के पास कोई जवाब न था। उस ने कहा कि मैं आप की गुफ्तगू से अपने सरदार को मुत्तलेअ करता हूं। उन को जो मुनासिब मा'लूम हो वह कदम उठाए।

जंग में हज़रत ज़िरार की शुजाअत

बुड्ढा राहिब हज़रत खालिद के पास से लौट कर वर्दान के पास आया और गुफ्त व शुनीद की तमाम कैफियत बयान की। वर्दान ने कहा कि शायद वह हम को उन लश्करों के मिस्ल गरदानते हैं जिन्हें वह शिकस्त दे चुके हैं। लैकिन उन को क्या पता कि हमारा लश्कर उन को सिर्फ एक गरदावे में बे-होश कर के ज़मीन पर डाल देगा। अब हमारे लिये लाज़मी हो गया है कि उन अरबों को अपनी तलवारों का मज़ा चखाअें। वर्दान ने लश्कर को हुक्म दिया कि हम्ले के लिये तैयार हो जाओ। लेहाज़ा रूमी लश्कर के पैदल दस्ते ने छोटे नैज़े और कमानें हाथ में ले लीं। तीरों को कमानों पर चढाए और तमाम तीर अन्दाज़ों ने इस्लामी लश्कर पर निशाना बांधा और तीर चलाने के लिये मुस्तइद हो गए। हज़ारों तीर अन्दाज़ कतार बन्द खडे सरदार के हुक्म के मुन्तज़िर थे। यह कैफियत देख कर हज़रत मआज़ बिन जबल ने मुजाहिदों को पुकारा और कहा कि ऐ तौहीद के परस्तारो ! बेशक जन्नत का दरवाज़ा तुम्हारे लिये खोल दिया गया है। फरिश्ते करीब आ रहे हैं। जन्नत की हूरें आरास्ता और मुज़ैयन हो कर तुम्हारा इन्तेज़ार करती हैं। बशारत हो कि अपनी जान के इवज़ जन्नत की दाइमी ज़िन्दगानी का सिला देने के लिये अल्लाह तआला वा'दा फरमाता है :

"اِنَّ اللهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُم بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ"

(सूरए-तौबा,आयत : 111)

तर्जुमा : "बे शक अल्लाह ने मुसलमानों से उन के माल और जान खरीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है।" (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत खालिद ने भी मुजाहिदों को जेहाद की तर्गीब देते हुए फरमाया कि मैदान में साबित कदमी से डटे रहना और दुश्मन को पीठ न दिखाना। क्यूंकि मैदान जेहाद से फरार होना गुनाहे अज़ीम है। अल्लाह तआला तुम्हें देख रहा है। अल्लाह से इआनत तलब करो, वह ज़रूर तुम्हारी मदद फरमाएगा। वर्दान का हुक्म मिलते ही रूमियों ने तीरों की बौछार शुरू

की। बहुत से मुजाहिद ज़ख्मी हुए और कई मुजाहिद शहीद हुए। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर ने अपने पूरे जिस्म को ज़िरह में मस्तूर कर लिया और उन की मुताबेअत में दीगर मुजाहिदों ने भी ऐसा ही किया और यह तमाम सर से कुंवा खोदने जैसा मुश्किल और ना-मुम्किन काम अंजाम देने के अज़्म से बरसते हुए तीरों के साए में आगे बढे। तीर अन्दाज़ रूमी लश्कर के मुकद्दम हिस्सा में सफ अव्वल में खडे हो कर तीर फैंक रहे थे, लेहाज़ा मुजाहेदीन इस इरादा से चले कि हम किसी सूरत से तीर अन्दाज़ों तक पहोंच जाअें और शम्शीर ज़नी और नैज़ा ज़नी कर के उन को तितर बितर कर दें। मुजाहिदों को रूमियों की सब से बडी कमज़ोरी मा'लूम थी कि वह हमारी तलवार और नैज़ा के बिल्मुकाबिल आने से गुरेज़ करते हैं और यह हकीकत थी कि मुजाहेदीने इस्लाम की तलवार की रूमियों में ताब न थी। हज़रत ज़िरार ने अपने घोडे की बाग ढीली छोड दी और आन की आन में वह मअ अपने हमराहियों के वहां पहोंच गए जहां रूमी तीर अन्दाज़ इस्तादा थे। जाते ही हज़रत ज़िरार ने नैज़ा से सीने छलनी करने शुरू कर दिये। रूमियों ने उन पर कसरत से तीर और पत्थर बरसाए, लैकिन हज़रत ज़िरार ज़िरह में मुकम्मल मस्तूर होने के बाइस महफूज़ रहे। हज़रत ज़िरार के नैज़े की सुरअत देख कर रूमी तीर अन्दाज़ों की आंखें चुंधिया गईं। तीर अन्दाज़ों की सफ में कोहराम मच गया। हज़रत हस्सान बिन औफ ने बयान किया है कि मैं भी हज़रत ज़िरार के साथ था। हज़रत ज़िरार ने जाते ही नैज़ा ज़नी के वह जौहर दिखाए कि थोडी ही दैर में तीस रूमियों को मार डाला।

हज़रत ज़िरार की शुजाअत व दिलैरी पर रूमी सिपाही अंगुश्त ब-दन्दां थे। और कहते थे कि **यह शख्स इन्सान है या जिन ?** हम पर कह्र व बला बन कर टूट पडा है। न मा'लूम कौन शख्स है ? हज़रत ज़िरार ने ज़िरह को चेहरे से हटाया और कहा कि मैं ज़िरार बिन अज़्वर तुम्हारा दुश्मन और तुम्हारे सरदार के बेटे हमरान का कातिल हूं। मैं वाकई तुम्हारे लिये बला हूं और खुदा की तरफ से तुम को मिटाने पर मुकर्रर हुवा हूं। हज़रत ज़िरार का नाम सुनते ही रूमियों की हवा निकल गई। पीछे पलटने लगे। और रूमी लश्कर में घुस कर महफूज़ जगह छुपने लगे। वर्दान दूर से यह मन्ज़र देख रहा था। उस ने पूछा यह बदवी कौन शख्स है ? किसी ने कहा कि यह वही शख्स है जो नंगे बदन लडता है और नैज़ा ज़नी में अपना सानी नहीं रखता लैकिन आज वह ज़िरह पहन कर आया है।

सिर्फ इतने तआरुफ से वर्दान ने हज़रत ज़िरार को पहचान लिया कि यही मेरे लख्ते जिगर का कातिल है। लेहाज़ा उस ने पुकार कर कहा कि कौन है जो मेरे बेटे के कातिल से

मेरा बदला ले और मुझ से मुंह मांगा इन्आम हासिल करे। "**तिब्रिया**" नामी मकाम का हाकिम बोला कि ऐ सरदार ! मैं तुम्हारा बदला लेने जाता हूं और तुम्हारे बेटे के कातिल को ज़िन्दा या मुर्दा ला कर तुम्हारे कदमों में डालता हूं। इस तरह की शैखी मार कर वह अपना घोडा दौडा कर मैदान में आया और इश्तिआले तबआ से हज़रत ज़िरार पर वार किया। जिस को हज़रत ज़िरार ने खाली फैरा और ऐसा जवाबी वार करते हुए नैज़ा मारा कि नैज़ा उस की ज़िरह को फाडता हुवा उस के सीने में पैवस्त हो गया और एक ही वार में उस का काम तमाम हो गया। वर्दान यह मन्ज़र देख रहा था। तिब्रिया के हाकिम को कुश्ता देख कर कफे अफसोस मलते हुए कहा कि मेरे लश्कर में एक भी शख्स ऐसा नहीं जो इस अरब को कत्ल कर सके ? लेहाज़ा अब मुझे ही इस के मुकाबले में जाना होगा। यह कह कर वर्दान ने अपने घोडे को मैदान की तरफ आगे बढाया। उसी वक्त एक बतरीक जिस का नाम "**अस्तफान**" था और "**अम्मान**" का हाकिम था, उस ने वर्दान के घोडे की रिकाब थाम ली और रिकाब को बोसा देते हुए कहा कि ऐ मुअज़्ज़ज़ सरदार ! इस नाकस बदवी के लिये आप को ज़हमत गवारा करने की ज़रूरत नहीं। यह खादिम किस दिन काम आएगा। हुक्म और इजाज़त इनायत फरमाइये ! इस बदवी को कत्ल करना मेरे लिये बाऐं हाथ का खेल है, **लैकिन हुज़ूर वाला ! खादिम को इन्आम में क्या अता फरमाओगे ?** वर्दान ने कहा मुंह मांगा इन्आम दूंगा। अस्तफान ने कहा कि मैं अम्मान का हाकिम हूं। माल व दौलत की मुझ को कोई कमी नहीं, सिर्फ एक कमी है। वर्दान ने कहा जल्दी कहो क्या चाहते हो ? अस्तफान ने कहा कि आप की साहिबज़ादी का हाथ मांगता हूं। मुझे ब-हैसियते दामाद कबूल फरमाओ। **वर्दान ने कहा अगर तूने इस बदवी को कत्ल कर दिया, तो मेरी बेटी तेरी ही है** और इस वा'दा पर में यहां मौजूद मुल्के शाम और बादशाह के खासान को गवाह करता हूं। वर्दान की लडकी हुस्न व जमाल में मुल्के शाम की तमाम औरतों में यक्ता थी। अस्तफान ने एक मरतबा उस को देखा था और देखते ही उस पर फरेफ्ता हो गया था और उस को पाने के लिये कुछ भी करने को तैयार था। इसी लिये वह हज़रत ज़िरार से मुकाबला का खतरा मोल लेने पर भी आमादा हो गया और वर्दान से अपनी बेटी के निकाह का वा'दा ले लिया था।

अस्तफान का हज़रत ज़िरार से मुकाबला

अपनी महबूबा के मुतअल्लिक वर्दान से निकाह का करार हासिल कर के अस्तफान दिलैरी से हज़रत ज़िरार के मुकाबले मैदान में आया। आग के शो'ले की तरह दहकता हुवा

हज़रत ज़िरार की तरफ लपका। मुश्तइल हो कर हज़रत ज़िरार पर वार किया। लैकिन हज़रत ज़िरार ने उस का वार खाली फैर दिया और जवाबी वार किया, जिस को अस्तफान ने ढाल पर लिया। दोनों एक दूसरे पर वार करने लगे और अपने खसम का वार खाली फेरते गए, यहां तक कि लडाई ने तूल पकडा। दोनों लश्कर के लोग टुकटुकी बांध कर फरीकैन के फन्ने जंग और लडाई के जौहर देखने लगे और अपने लश्कर के नुमाइन्दा की हौसला अफ्ज़ाई के लिये आवाज़ें कसने लगे। हज़रत खालिद बिन वलीद बडी बे-करारी से दोनों की लडाई देख रहे थे और अस्तफान की जंगी महारत देख कर अंदाज़ा कर लिया कि यह जंगी उमूर का माहिर और कुहना मश्क मा'लूम होता है। इस के वार करने का और मुखालिफ के वार को खाली फेरने का तर्ज़ इस बात की गवाही देता है कि यह दिलैर जंगजू शख्स है। हालां कि हज़रत ज़िरार के सामने उस की कोई हैसियत न थी लैकिन इतनी दैर तक लडाई पर जमे रहना और मात न खाना भी अस्तफान के लिये बडी बात थी। लेहाज़ा हज़रत खालिद ने हज़रत ज़िरार को पुकार कर फरमाया कि ऐ ज़िरार ! यह क्या सुस्ती और गफ्लत है कि दुश्मन मोहलत पाता है और कोई नतीजा नहीं आता ? हज़रत खालिद की इस तम्बीह पर हज़रत ज़िरार अपने घोडे की ज़ीन पर बैठे बैठे कांपने लगे और फिर अपने सरदार के हुक्म की बजा आवरी में अस्तफान पर शिद्दत से हम्ले करने शुरू किये। लैकिन अस्तफान ने तमाम वार खाली फैर दिये।

❀ हज़रत ज़िरार की अपने घोडे को धमकी :-

अस्तफान ने भी जवाबी हम्ले शुरू कर दिये। रूमी तालियां बजा कर और शौर मचा कर अस्तफान को जौश और शुजाअत पर उभारते थे। दोनों सख्त लडाई में मुन्हमिक थे, यहां तक कि आफ्ताब गर्म हो गया और धूप सख्त हो गई। दोनों पसीने से तर हो गए और दोनों के घोडे भी पसीने में शराबोर हो गए। घोडों में अब खडे रहने की भी सकत न थी। घोडों के कदम लडखडाने लगे, लेहाज़ा दोनों पा-प्यादा हो कर लडने लगे। दफ्अतन हज़रत ज़िरार ने देखा कि रूमी लश्कर से एक शख्स कोतल घोडा ले कर बर आमद हुवा और मैदान की तरफ आने लगा। वह अस्तफान का गुलाम था और अपने मालिक को घोडा देने आ रहा था। अगर इस ने आ कर अस्तफान को घोडा दे दिया तो यह अम्र हज़रत ज़िरार के लिये बाइस खतरा व हलाकत था, लेहाज़ा उस को रोकना ज़रूरी था। हज़रत ज़िरार ने करीब में खडे अपने घोडे की तरफ दौड लगाई और छलांग लगा कर उस की पीठ पर सवार हो गए। अस्तफान नैज़ा रास्त किये हुए हज़रत ज़िरार की तरफ बढ रहा था। हज़रत

ज़िरार ने घोडे को एडी मारी, लैकिन घोडा चलने का नाम नहीं लेता। घोडा इत्ना निढाल हो गया था कि एक कदम चलने की भी ताकत न थी। बडा नाज़ुक मरहला था। सामने से अस्तफान का गुलाम घोडा ले कर आ रहा था करीब से अस्तफान नैज़ा रास्त किये हुए वार करने आ रहा था। अगर हज़रत ज़िरार का घोडा चले तो ही काम बने। अस्तफान के गुलाम को रोकना ज़रूरी और अस्तफान के नैज़े के वार से महफूज़ रहना अशद ज़रूरी था और यह घोडे के चलने पर मुन्हसिर था। लैकिन घोडा अपनी जगह से हिलता तक नहीं। मौत करीब से कूदती हूई आ रही थी, सामने से बला दौडती हूई आ रही थी। नाज़ुक मरहला था। घोडे ने हज़रत ज़िरार को बे बस व बे-कस बना दिया था। ब-ज़ाहिर बचने की कोई उम्मीद न थी, लैकिन शम्ए रिसालत के परवाने हज़रत ज़िरार बेबस व बेकस न थे :

क्यूं कहूं बैकस हूं मैं, क्यूं कहूं बै बस हूं मैं,
तुम हो, मैं तुम पर फिदा, तुम पे करोरों दुरूद ।

और

मुझ से बैकस की दौलत पे लाखों दुरूद,
मुझ से बै बस की कुव्वत पे लाखों सलाम ।

(अज़ : इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

ऐसे वक्त में कि जब कोई यास व उम्मीद न थी हज़रत ज़िरार ने अपने आका व मौला, रहमते आलम, मुख्तारे कुल, मालिके काएनात सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की बारगाहे बैकस पनाह की तरफ रूजूअ किया और अपने घोडे को चलाने के लिये आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का सहारा लेते हुए अपने घोडे से मुखातब हो कर जो फरमाया, उस का तर्जुमा हम अल्लामा वाकदी की किताब से नक्ल कर के कारेईने किराम की खिदमत में पैश करने की सआदत हासिल करते हैं :

"दफ्अतन एक सवार सुफूफे रूम से निकला एक घोडा कोतल लिये हुए और वह गुलाम अस्तफान का था। पस जब ज़िरार ने उस को देखा चिल्ला कर अपने घोडे से कहा और लोग सुनते थे और वह यह कहते थे कि मज़बूती और चालाकी कर तू मेरे साथ एक घडी। नहीं तो शिकायत करूंगा मैं तेरी पास कब्रे शरीफ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

तआला अलैहे व आलेहि व सल्लम के। पस हिनहिनाने लगा घोडा उन का और बाज़ू खोल कर चला और बढ कर लिया ज़िरार ने अस्तफान के गुलाम को और ज़र्ब नैज़े से मार डाला उस को। फिर ले लिया कोतल घोडे को और सवार हुए इस पर और छोड दिया अपने घोडे को ब-जानिब मुसलमानों के। पस आ मिला वह मुसलमानों में।"

(फुतूहुश्शाम,अज़ अल्लामा वाकदी,सफहा : 77)

कारेईने किराम से इल्तेमास है कि मुन्दरजा बाला इबारत को एक मरतबा नहीं बल्कि कई मरतबा ब-नज़रे अमीक मुतालआ फरमाअें और इस पर गौरो फिक्र फरमाअें, तो यह नतीजा अखज़ होगा कि :

- हज़रत ज़िरार ने जब देखा कि अब बचने की कोई तद्बीर नहीं और घोडा निकम्मा हो गया है, तो उन्हों ने अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की तरफ अपनी तवज्जोह मर्कूज़ की और उन का यकीन और ए'तेकाद पुख्ता था कि यह वह सरदारे अम्बिया हैं जो मदीना में आराम फरमा होने के बा-वुजूद भी पूरी काएनात पर उन की हुकूमत है। लेहाज़ा उन्हों ने अपने घोडे से कहा कि **मैं तेरी शिकायत रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की कब्रे शरीफ के पास करूंगा।**
- शिकायत किस से की जाती है ? उस से जो शिकायत सुन सके। सिर्फ सुनने तक ही उस का तसर्रुफ महदूद न हो बल्कि शिकायत सुन कर शिकायत करने वाले की तक्लीफ का इज़ाला करने की इस्तिताअत रखता हो और जिस के खिलाफ शिकायत की गई हो उस को ता'ज़िर करने का इख्तेयार भी रखता हो। हज़रत ज़िरार ने बारगाहे मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम में घोडे की शिकायत करने की बात कह कर इस बात की शहादत दी है कि **हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम दुनिया से पर्दा फरमाने के बा'द भी पूरी काएनात पर तसर्रुफ और इख्तेयार रखते हैं।**
- शिकायत करने की धमकी भी उसी को दी जाती है जो यह समझता हो कि जहां मेरी शिकायत की जाने वाली है उस बारगाह का इख्तेयार और तसर्रुफ

इत्ना वसीअ है कि अगर वाकई मेरी वहां शिकायत पहोंच गई तो अच्छा न होगा। लेहाज़ा वह यह कोशिश करेगा कि शिकायत का मौका' ही न दूं। हज़रत ज़िरार रदियल्लाहो तआला अन्हो का घोडा इसी नज़रिया के तहत दौडा था। क्यूं कि उस घोडे को हज़रत ज़िरार ने साफ लफ्ज़ों में धमकी दी थी कि मैं तेरी शिकायत काएनात के मालिक व शहनशाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की बारगाह में कर दूंगा। घोडा भी जानता था कि वाकई अगर मेरी शिकायत उस बारगाह में की गई तो मेरे लिये बाइसे नदामत है। **लेहाज़ा मुस्तफा जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के इख्तियारात का ए'तेराफ करते हुए घोडे ने हुक्म की ता'मील की :**

अपने मौला की है बस शान अज़ीम, जानवर भी करें जिन की ता'ज़ीम

संग करते है अदब से तस्लीम, पैड सजदे में गिरा करते है

(अज़ : इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को काएनात का मालिक व मुख्तार बना कर पैदा फरमाया था। इन्सान, जिन्नात, हैवानात, जमादात और नबातात आप की रिसालत व अज़्मत के काइल थे। कुतुबे अहादीस में ऐसे कई मुस्तनद वाकेआत पाए जाते हैं कि तमाम मख्लूक ने खालिके काएनात के महबूब और मुख्तारे काएनात सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की इताअत व अज़्मत की बजा आवरी की है।

लैकिन अफ्सोस !

दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन इख्तियाराते अम्बिया के मुन्किर हैं। तौहीद की आड में तन्कीसे अम्बिया व औलिया के दरपै रहते हैं। शहादत के लिये कुछ इक्तिबासात पैशे खिदमत हैं :

- **"औलिया व अम्बिया व इमाम ज़ादा ,पीर व शहीद या'नी जितने अल्लाह के मुकर्रब बन्दे हैं, वह सब इन्सान ही हैं और आजिज़ बन्दे हैं और हमारे भाई हैं। मगर अल्लाह ने उन को बडाई दी वह बडे भाई हुए।"** (हवाला :- तक्वीयतुल ईमान, अज़ : मौलवी इस्माईल देहल्वी,नाशिर : दारुस्सल्फिया, बम्बई, सफहा : 99)

- **"अल्लाह की शान बहुत बडी है। सब अम्बिया और औलिया उस के सामने एक ज़र्रए नाचीज़ से भी कमतर हैं।"** (हवाला :- ऐज़न, सफहा : 92)
- **"और जिस का नाम मुहम्मद या अली है वह किसी चीज़ का मुख्तार नहीं।"** (हवाला :- ऐज़न, सफहा : 70)

वहाबी ,देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के इमामुल अव्वल फिल हिन्द मौलवी इस्माईल देहल्वी की किताब से माखूज़ मुन्दरजा बाला तीन इबारत को कारेईन ब-नज़रे गौर देखें। इन तीनों इबारत का मा-हसल यह है कि तमाम अम्बिया और खुसूसन हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को बन्दए आजिज़, बडे भाई, ज़र्रए नाचीज़ से भी कमतर, किसी चीज़ का मुख्तार नहीं, लिख कर अलल ऐ'लान ता'ज़ीम व एहतरामे रसूल का इन्कार किया है। इस उन्वान पर मज़ीद कोई गुफ्तगू न करते हुए कारेईने किराम की गैर जानिबदार और मुन्सिफ अदालत में इस्तिगासा है कि मीज़ाने अद्ल में आप मौलवी इस्माईल देहल्वी और सहाबए किराम के ए'तेकाद को अलग अलग पल्लों में रख कर तोलें और इन्साफ फरमाएं कि मौलवी इस्माईल देहल्वी के ए'तेकाद अजिल्ल-ए सहाबा के मुकद्दस और पाकीज़ा ए'तेकाद से किस कदर मुतज़ाद हैं। हम सहाबए किराम के ए'तेकाद पर यकीन रखें या इमामुल मुनाफिकीन देहल्वी साहिब के ए'तेकाद फासिदा पर ? दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन के मुतअल्लिक सिर्फ इत्ना ही कहना है :

ज़िक्र रोके, फज़्ल काटे, नुक्स का जोयां रहे

फिर कहे मर्दक कि हूं, उम्मत रसूलुल्लाह की

(अज़ : इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

अब हम मुअज़्ज़ज़ कारेईने किराम को मुल्के शाम ब-मकाम अजनादीन मैदाने जंग में हज़रत ज़िरार और हाकिम अम्मान अस्तफान की लडाई का मुआइना कराने चलते हैं।

हज़रत ज़िरार ने अपने घोडे को रोज़-ए रसूल पर शिकायत करने की धमकी दी। धमकी सुनते ही घोडा ज़ौर से हिनहिनाने लगा। गोया वह अपनी ज़बान में हज़रत ज़िरार से अर्ज़ कर रहा था कि मेरी शिकायत उस मुकद्दस बारगाह में मत करना। मैं उस मुकद्दस ज़ाते गिरामी के रूबरू शर्मिन्दा होना नहीं चाहता। और घोडा हवा से बातें करता हुवा अपने बाज़ू खोल कर चला। हज़रत ज़िरार ने अस्तफान के गुलाम के करीब जाते ही नैज़े की एक ज़र्ब

में उस को खत्म कर दिया और उस का घोडा ले लिया। हज़रत ज़िरार ने अपना थका हुवा घोडा इस्लामी लश्कर की तरफ हांक दिया और अस्तफान ने जान लिया कि मेरा आखरी वक्त आ गया है। ज़िरार मुझ को कत्ल किये बगैर न छोडेंगे। हज़रत ज़िरार ने उस पर हम्ले का कस्द किया कि दफ्अतन उन्हों ने देखा कि रूमी लश्कर से चंद सवार मैदान की तरफ आ रहे थे।

अस्तफान की कुमुक के लिये वर्दान, और हज़रत ज़िरार की कुमुक के लिये हज़रत खालिद कमर-बस्ता :-

जब वर्दान ने देखा कि अस्तफान के सर पर मौत मंडला रही है, तो वह अपने साथ मुल्के शाम के मश्हूर दस (१०) बतारका को ले कर अस्तफान की कुमुक करने मैदान में रवाना हुवा। वर्दान को कुमुक के लिये आता देख कर अस्तफान में हिम्मत आ गई और वह हज़रत ज़िरार के वार अपनी ढाल पर लेने लगा। हज़रत खालिद ने देखा कि वर्दान अपने दस (१०) साथियों के हमराह मैदान की तरफ रवाना हुवा है तो हज़रत खालिद भी अपने साथ दस (१०) मुजाहिदों को ले कर मैदान में पहोंच गए। हज़रत ज़िरार अस्तफान से, हज़रत खालिद वर्दान से और दस मुजाहिद दस रूमियों से मुकाबिल हुए। हर शख्स अपने मुकाबिल से लडने लगा।

अस्तफान लडते लडते थक गया। उस के बाज़ू शल हो गए। वह कांपने लगा। मारे डर के उस का बुरा हाल था। हज़रत ज़िरार ने उस पर नैज़े का वार किया। वार से बचने के लिये अस्तफान ने अपने को घोडे से गिरा दिया और भागने लगा। हज़रत ज़िरार भी घोडे से उतर कर उस के तआक्कुब में दौडे और पकड लिया। अब दोनों कुश्ती लडने लगे। हज़रत ज़िरार ने कुश्ती लडते हुए मौका' पा कर अस्तफान के कमर बन्द में हाथ डाल कर ऊपर उठा लिया और पूरी ताकत से ज़मीन पर दे पटका और उस के सीने पर चढ गए। अब अस्तफान को अपनी मौत का यकीन हो गया। उस ने मदद के लिये वर्दान को पुकारा **ऐ सरदार मुझे बचाव।** वर्दान उस वक्त हज़रत खालिद से मस्रूफे लडाई था और वह भी मुसीबत में फंसा हुवा था। उस ने अस्तफान को जवाब दिया कि **मुझ को इन दरिन्दों से कौन बचाएगा ?** वर्दान के कदम भी लडखडा रहे थे। रूमी लश्कर ने देखा कि हमारा सरदार करीबे हलाकत है, तो पूरे लश्कर ने यल्गार कर दी। इधर से इस्लामी लश्कर भी दौडा। दोनों लश्कर आमने सामने दौडते हुए आ रहे थे। दरमियान में जो मैदान था उस में बारह मुजाहेदीन बारह रूमियों से मशगूल लडाई थे। हज़रत ज़िरार अस्तफान के सीने पर बैठे हुए थे। रूमी लश्कर उमडते

हुए सैलाब की तरह आ रहा था कब्ल इस के कि रूमी लश्कर हज़रत ज़िरार को रौंद डाले, हज़रत ज़िरार ने अस्तफान का सर तलवार से काट डाला। अस्तफान इतने ज़ोर से चिल्लाया के दोनों लश्कर में उस की गूंज सुनी गई। अस्तफान का सर काटने के बा'द हज़रत ज़िरार खडे हो कर फौरन अपने घोडे पर सवार हो गए। हज़रत ज़िरार खून में नहाए हुए थे।

हज़रत ज़िरार ने घोडे पर सवार हो कर बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कही और उन का जवाब देते हुए इस्लामी लश्कर ने भी तक्बीर कही। दोनों लश्कर आपस में मिल गए। घमसान की लडाई शुरू हूई। मुजाहेदीने इस्लाम ने बडी दिलैरी और शुजाअत का मुज़ाहेरा किया। आफ्ताब गुरूब होने के करीब हुवा, तो जंग मौकूफ कर दी गई। दोनों लश्कर अपने अपने कैम्प में वापस गए। उस दिन रूमी लश्कर से कुल तीन हज़ार आदमी कत्ल हुए। उन कत्ल होने वालों में मुल्के शाम के मुख्तलिफ मकामात के दस हाकिम व बादशाह भी थे। इस्लामी लश्कर से तीस मुजाहिदों ने जामे शहादत नौश किया। रूमी लश्कर का सरदार वर्दान हुजूम का फाइदा उठा कर मैदान से फरार हो गया और अपने खैमे में पनाह गुज़ीं हो गया।

हज़रत खालिद को शहीद करने की वर्दान की साज़िश

रात के वक्त वर्दान ने रूमी लश्कर के सरदारों और अराकीन की मीटिंग बुलाई और आज की जंग का तजज़िया करते हुए कहा कि हमारे लिये बडे शर्म और गैरत की बात है कि कसीर ता'दाद में होने के बा-वुजूद हम ने हज़ीमत उठाई और काफी ता'दाद में हमारे आदमी कत्ल हुए। अगर आज की तरह आइन्दा कल भी बुज़दिली और ना मर्दी का मुज़ाहेरा करोगे, तो हमारा बेडा गर्क हो जाएगा। वर्दान ने मज़ीद यह भी कहा कि अरब हम पर गालिब हो जाते हैं। इस की एक वजह येह है कि वह अपने दीन के सख्त पाबन्द हैं। अपने परवर्दगार को हमेंशा याद कर के इबादत में मस्रूफ रहते हैं और गुनाहों से इजतेनाब करते हैं और हमारा हाल यह है कि हम ने अपने दीन के अहकाम और फरीज़ए इबादत को बालाए ताक रख दिया है और सरापा मआसी व इस्यां में गर्क हैं। लेहाज़ा अल्लाह की तरफ से अरबों को फतह व नुस्रत की इनायत होती है और हम हज़ीमत व शिकस्त से दो चार होते हैं। लेहाज़ा ऐ दीने मसीह के मुआविनो ! अपने गुनाह और मआसी से तौबा करो, ताकि मसीह और सलीब तुम्हारी मदद कर के तुम्हें अरबों पर गल्बा दें। वर्दान की तक्रीर सुन कर सब रोने लगे और सब ने तौबा की और कहा कि अब तक जो हुवा सो हुवा। लैकिन अब हम उन अरबों में से एक

को भी ज़िन्दा न छोडेंगे । हम अह्द करते हैं कि जब तक हम में का एक शख्स भी ज़िन्दा रहेगा, तब तक हम उन से लडेंगे । ऐ सरदार ! कल मैदाने जंग में हम अपना कहना कर के दिखा देंगे ।

वर्दान ने जब अपनी कौम का अज़्मे मोहकम और कवी इस्तेकलाल देखा तो खुशी से फूला न समाता था । उसी वक्त वर्दान का एक मुसाहिब खडा हुवा और कहा कि ऐ सरदार ! कौम की बातों में मत आ । यह कौम ए'तेमाद व भरोसा करने के काबिल नहीं । इस वक्त शुजाअत और जौशो खरोश की बातें करते हैं, लैकिन कल जंग के मैदान में अरबों को देखते ही उन का जौश ठंडा पड जाएगा । हमारा साबिका जिन अरबों से पडा है, उन का मुकाबला करने की हम में ताकत नहीं है, क्यूं कि उन का एक शख्स हमारे पूरे लश्कर पर हम्ला करने चला आता है और हमारी सफें उलट देता है । मौत से बे खौफ हो कर बल्कि मौत की ख्वाहिश में वह आमादए किताल होता है क्यूं कि उन लोगों ने अपने नबी और रसूल के इस कौल पर दिल से यकीन कर लिया है कि **जो मुसलमान मैदाने जंग में मारा जाएगा वह जन्नत में दाखिल होगा ।** मौत और ज़िन्दगी उन के नज़दीक बराबर है, बल्कि मौत को ज़िन्दगी पर तर्जीह देते हैं । इलावा अज़ीं उन का सरदार खालिद बिन वलीद जंगी उमूर में इत्ना माहिर है कि वह हम को किसी भी महाज़ पर काम्याब नहीं होने देगा । अपने लश्कर के सिपाहियों को जंग पर उभारना, उन में जौश पैदा करना, हौसला अफ्ज़ाई करना और उन से मन चाहा काम लेने का फन उस में इस तरह मौज-ज़न है कि उस के एक इशारे पर उस के सिपाही मर जाने या मार डालने में लम्हा भर ताखीर नहीं करते और वह बज़ाते खुद भी दिलैर जंगजू और बहादुर शेहसवार है ।

वर्दान ने मुसाहिब से कहा कि तुम्हारी सब बातें दुरुस्त हैं लैकिन इस का तदारुक क्या है ? यह अरब सुलह पर भी आमादा नहीं होते । जब भी सुलह की पैशकश करो तो वह एक ही जवाब देते हैं कि हमारी तीन शर्तों में से किसी एक को कबूल करो । मुसाहिब ने कहा एक तद्बीर है, तुम मुसलमानों के सरदार को मार डालो । उस सरदार की वजह से ही मुसलमानों के लश्कर का हौसला बर-करार है । अगर तुम किसी तरह खालिद बिन वलीद को मार डालो, तो मुसलमानों का हौसला पस्त हो जाएगा और वह शिकस्त खा कर भाग जाएंगे । हज़रत खालिद को शहीद करने की सिर्फ बात सुन कर वर्दान के रोंग्टे खडे हो गए, एक हल्की सी कपकपी उस पर तारी हो गई । वर्दान ने थर्राई हूई आवाज़ में कहा कि तुम खालिद बिन वलीद को मार डालने की बात करते हो, लैकिन सूरते हाल यह है कि आज मैं उस के हाथ

से मरते मरते ब-मुश्किल बच कर आया हूं । तुम ऐसे अम्रे मुहाल का मश्वरा मत दो, बल्कि कोई ऐसी तद्बीर बताओ जो मुम्किन और आसान हो । मुसाहिब ने कहा कि सीना ब-सीना खुले मैदान की जंग में तो मुसलमानों के सरदार को कत्ल करना तो मैं भी सोच नहीं सक्ता, लैकिन मक्रो फरेब से ब-आसानी उस को हलाक कर सक्ते हैं । वर्दान ने कहा कि तू इस बात से भी अच्छी तरह वाकिफ हो जा कि उन अरबों को फरेब देना भी आसान नहीं क्यूं कि वह मक्रो फरेब की तेह तक पहोंच जाते हैं और हर फरेब से आगाह हो जाते हैं । लेहाज़ा तुम कोई ऐसा हीला तज्वीज़ करो कि जिस में खतरा कम और काम्याबी की कामिल तवक्कोअ हो । अगर मुनासिब होगा तो मैं वह फरेब ज़रूर करूंगा ।

मुसाहिब ने कहा कि तुम इस्लामी लश्कर के सरदार को पैगाम भेजो कि मैं तुम से सुलह के मस्अले पर अकेले में गुफ्तगू करना चाहता हूं । सिर्फ हम दोनों सरदार ही वह गुफ्तगू करें और तीसरा कोई भी न हो । और इस्लामी लश्कर के सरदार को उस जगह का पता बता दो कि फुलां जगह हम दोनों कल सुब्ह मुलाकी होंगे । जब इस्लामी लश्कर का सरदार तुम्हारी दा'वते सुलह को मन्जूर कर ले, तो रात में उस जगह के करीब दस अश्खास (१०) मुसल्लह पोशीदह कर दो । जब मुसलमानों का सरदार तुम से बात चीत करने आए, तो तुम उसे बातों में लगा कर अपने आदमियों को इशारा कर देना वह तमाम उस पर टूट पडेंगे और उस को हलाक कर दें । तुम गुफ्तगू करने के लिये दोनों लश्कर के दरमियान की कोई जगह मुन्तखब करना और वह जगह इस्लामी लश्कर से इतने फास्ला पर हो कि उस की मदद करने उस के लश्कर से कोई आ पहुंचे इतनी दैर में तो उस का काम तमाम हो जाए ।

वर्दान का नुमाइन्दा हज़रत खालिद के पास :-

अपने मुसाहिब की बात सुन कर वर्दान खुश हो गया और अपने एक भरोसा मन्द और पुर ए'तेमाद शख्स को बुलाया । उस शख्स का नाम दाउद था, जो शहर हुमुस का रहने वाला था । दाउद को अरबी ज़बान पर अच्छा उबूर हासिल था और गुफ्तगू करने में बहुत ही होशियार व चालाक था । वर्दान ने दाउद से कहा कि तू मेरे नुमाइन्दे की हैसियत से मुसलमानों के लश्कर के पास जा और उन से दरख्वास्त कर कि आज के दिन वह लडाई मौकूफ रखें और कुल सुब्ह उन का सरदार मैदान के बीच में जो रेत का टीला है वहां अकेला आए और मैं भी बज़ाते खुद वहां अकेला आऊंगा, ताकि हम दोनों सरदार आपस में बात चीत कर के मुसालेहत की कोई सूरत निकालें । दाउद मुतअस्सिब किस्म का गाढा नस्रानी था । उस ने वर्दान से कहा कि अफ्सोस है तुझ पर कि तू बादशाह हिरक्ल के हुक्म की खिलाफ वर्ज़ी

कर ने पर मुस्तइद हुवा है। बादशाह ने तुझ को लश्करे जर्रार दे कर अरबों से लडने भेजा है और तू बुज़दिली दिखा कर सुलह करने पर आमादा हुवा है। अगर बादशाह को पता चला कि तेरी तरफ से सुलह की पैशकश ले कर मैं गया था, तो तेरे साथ मुझ पर भी बादशाह का इताब होगा। लेहाज़ा मुझ से तो यह काम नहीं होगा। तब वर्दान ने दाउद से कहा कि सुलह की गुफ्तगू का तो बहाना है, मैं मुसलमानों के सरदार के साथ मक्रो फरेब कर के उस को रेत के टीले के पास अकैला बुलाना चाहता हूं। उस रेत के टीले के पीछे रात के वक्त से मेरे दस (१०) बहादुर सिपाही छुप कर बैठे होंगे। जैसे ही खालिद बिन वलीद मुझ से गुफ्तगू करने आओंगे, मैं अपने पहले से छुपे हुए आदमियों को आवाज़ दूंगा। वह आ कर उसे कत्ल कर देंगे। दाउद ने कहा कि यह तो ना मर्दी और बुज़दिली का काम है। वर्दान ने कहा **जंग और मुहब्बत में सब कुछ जाइज़ होता है।** फिर वर्दान ने दाउद को डांटते हुए कहा कि मैं तुझ से इस मुआमले में मश्वरा नहीं लेता हूं, लेहाज़ा ज़बान दराज़ी मत कर और तुझ से जो कहा जाए वह कर। वरना तेरी ज़बान काट कर फैंक दूंगा। सरदार होने के नाते मेरा हुक्म है कि तू इसी वक्त जा और खालिद बिन वलीद से गुफ्तगू कर के उस को किसी भी तरह आने के लिये रज़ा मन्द कर ले। क्यूं कि अरबी ज़बान में तू फसीह और बलीग गुफ्तगू करने में महारत रखता है और इसी वजह से इस काम के लिये मैं ने तेरा इन्तेखाब किया है। दाउद वर्दान के तेवर देख कर सहम गया और उस ने कहा कि ऐ सरदार ! में तेरे हुक्म की ता'मील में किसी किस्म की कोताही नहीं करूंगा। वर्दान ने कहा कि अगर मैं अपने इस मिशन में काम्याब हुवा, तो तुझ को बेश बहा इन्आमो इकराम से नवाज़ूंगा।

दाउद घोडे पर सवार हो कर इस्लामी लश्कर के करीब आया और पुकार कर कहा कि मैं रूमी लश्कर के सरदार का एलची हूं। तुम्हारे सरदार से मुआमले की गुफ्तगू करने आया हूं। हज़रत खालिद बिन वलीद उस के पास आए। दाउद नस्रानी ने कहा कि ऐ अरबी बिरादर ! हमारा सरदार खूनरैज़ी को पसन्द नहीं करता। कल जिस कसरत से इन्सान मक्तूल हुए हैं, इस को देख कर हमारा नर्म दिल सरदार बहुत मलूल और रंजीदा हुवा है। लेहाज़ा वह यह चाहता है कि तुम दोनों सरदार आपस में मुसालेहत की गुफ्तगू कर लो। हमारे सरदार ने आप के लिये यह पैगाम भी दिया है कि तुम को कुछ माल दे कर सुलह की कोई तज्वीज़ पास की जाए और सुलह नामा भी तहरीर कर लिया जाए, ताकि फरीकैन का खून रायगां न जाए। हज़रत खालिद ने फरमाया कि मैं भी यह नहीं चाहता कि इन्सानों का खून बेजा बहाया जाए। दाउद नस्रानी ने कहा कि मुझ को आप से यही उम्मीद थी। लेहाज़ा मेरी आप से गुज़ारिश है कि कल सुब्ह सूरज निकलने के बा'द इस मैदान के दरमियान जो रेत का टीला है वहां अकेले

आ जाओ, सरदार वर्दान भी वहां अकेले ही आओंगे। तुम दोनों सरदार खुले दिल से गुफ्तगू कर लेना और सुलह की कोई सूरत तय कर लेना।

दाउद नस्रानी की बात सुन कर हज़रत खालिद खामोश हो गए और गहरी सोच में पड गए। थोडी दैर सोचने के बा'द फरमाया कि अगर रूमी सरदार इख्लास निय्यत से सुलह पर आमादा हुवा है, तो ठीक है और अगर वह कोई मक्रो फरेब की चाल चलना चाहता है, तो सुन लो कि हम अहले अरब मक्रो फरेब की जड तक पहोंच जाते हैं और मक्कार के मक्रो फरेब से फौरन आगाह हो जाते हैं। दाउद नस्रानी ने कहा कि ऐ बिरादर अरबी ! आप किसी किस्म का कोई शक व शुब्हा न करो। बल्कि हम पर ए'तमाद व भरोसा रखो। हमारी निय्यत में खैर व भलाई के सिवा कुछ भी नहीं, लेहाज़ा हज़रत खालिद ने आइन्दा कल बताई हूई जगह पहुंचने के लिये तैयार हो गए।

❁ <u>हज़रत खालिद, वर्दान की साज़िश पर मुत्तलेअ</u> :-

दाउद नस्रानी ने हज़रत खालिद से आइन्दा कल आने का वा'दा ले कर रूमी लश्कर में वापस जाने के लिये अपना घोडा मोडा और चंद कदम जाने के बा'द ठहर गया। उस के दिल में हज़रत खालिद का रोअब भर गया। वह सोचने लगा कि अगर वर्दान ने उन को मक्रो फरेब से कत्ल भी कर डाला फिर भी वह इस्लामी लश्कर को शिकस्त नहीं दे सकेगा। इस्लामी लश्कर का हौसला पस्त नहीं होगा बल्कि इस्लामी लश्कर के सिपाही अपने सरदार का इन्तेकाम लेने के लिये दोहरे जौशो खरोश से लडेंगे और उन के सरदार के कत्ल की साज़िश का तमाम ज़िम्मा मेरे सर आइद कर के मुसलमान मुझ को और मेरे अहलो अयाल को तबाह व बरबाद कर देंगे। लेहाज़ा मुनासिब यही है कि मैं खालिद बिन वलीद को हकीकते हाल से आगाह कर दूं और अपने अहलो अयाल के लिये अमान हासिल कर लूं। चुनांचे वह वापस मुडा। हज़रत खालिद अभी तक अपनी जगह खडे कुछ सोच रहे थे। दाउद नस्रानी उन के करीब आया और कहा कि ऐ बिरादर अरबी ! अगर मेरी और मेरे अहलो अयाल की जान बख्शी का वा'दा करो और अमान देने का अहद करो तो एक ज़रूरी अम्र की इत्तेलाअ दूं। हज़रत खालिद ने फरमाया कहो, क्या कहना चाहते हो ? दाउद नस्रानी ने कहा कि वर्दान ने आप के साथ मक्रो फरेब करने का इरादा क्या है। और दाउद ने वर्दान की साज़िश की पूरी तफ्सील कह सुनाई। हज़रत खालिद ने दाउद से फरमाया कि जा मैं ने तुझ को अमान दी। फिर दाउद नस्रानी लश्कर में पलटा और वर्दान को इत्तेलाअ दी कि इस्लामी लश्कर का

सरदार कल सुब्ह रेत के टीले के करीब गुफ्तगू करने आएगा। वर्दान यह सुन कर खुश हुवा और कहा कि मैं उम्मीद रखता हूं कि सलीब मुझ को मेरे अज़्म में काम्याबी देगी।

सय्याद खुद अपने दाम में आ गया :-

हज़रत खालिद बिन वलीद जब दाउद नस्रानी से गुफ्तगू कर के इस्लामी लश्कर के कैम्प में वापस आए, तो वर्दान की बे-वकूफी पर मुस्कुरा रहे थे। उन को मुस्कुराता देख कर हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया : ऐ अबू सुलैमान ! तुम को अल्लाह हमेंशा हंसता हुवा रखे, क्या बात है ? हज़रत खालिद ने हज़रत अबू उबैदा को वर्दान के मक्रो फरेब की तफ्सील बताई। हज़रत अबू उबैदा ने पूछा कि इस मुआमले में तुम ने क्या सोचा है ?हज़रत खालिद ने फरमाया कि में अकैला जाउं गा और उन तमाम से निपट लूंगा। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कसम खुदा की ! तुम उन के लिये अकेले काफी हो, लैकिन अल्लाह तआला ने हम को हमारी कुव्वत और ताकत का इस्ते'माल करने का हुक्म देते हुए कुरआने मजीद में इर्शाद फरमाया है :

" وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّ مِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ
عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ "

(सूरतुल अन्फाल आयत : 60)

तर्जुमा : "और उन के लिये तैयार रखो जो कुव्वत तुम्हें बन पडे और जितने घोडे बांध सको कि उन से उन के दिलों में धाक बिठाओ, जो अल्लाह के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन हैं।" (कन्जुल ईमान)

लेहाज़ा ऐ खालिद ! उस ने तुम्हारे लिये दस (१०) आदमी बराए हम्ला मुकर्रर किये हैं और ग्यारहवां वह खुद है। इस लिये तुम भी इसी ता'दाद में अपने आदमियों को पहले से छुपा कर बिठा दो। जब वर्दान अपने आदमियों को पुकारे तो तुम भी अपने साथियों को पुकारना ताकि बराबर का मुकाबला हो जाए। इलावा अज़ीं पूरा इस्लामी लश्कर मुसल्लह हो कर घोडे पर सवार तैयार रहेगा, ताकि तुम वर्दान को कत्ल करो उसी वक्त हम रूमी लश्कर पर यल्गार कर देंगे। हज़रत खालिद ने कहा कि ऐ अमीनुल उम्मत ! मैं आप की राए के खिलाफ न करूंगा। हज़रत खालिद ने इस्लामी लश्कर के दस (१०) शुजाअ अश्खास का इन्तेखाब फरमाया।

उन के अस्मा यह हैं :

(1) हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई
(2) हज़रत मुसय्यब बिन नजीबतुल फज़ारी
(3) हज़रत मआज़ बिन जबल
(4) हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर
(5) हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन फुज़ैल अदवी
(6) हज़रत सईद बिन आमिर बिन जरीह
(7) हज़रत अबान बिन उस्मान
(8) हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी
(9) हज़रत ज़फर बिन सईद ब्याज़ी
(10) हज़रत अदी बिन हातिम ताई। (रदियल्लाहो तआला अन्हुम)

इन तमाम हज़रात को हज़रत खालिद ने वर्दान के मक्रो फरेब से आगाह किया और इन को ताकीद की कि तुम रेत के टीले की दाअें तरफ छुप कर बैठ जाओ और जब मैं पुकारूंगा तब तुम फौरन निकल कर मेरे करीब आ जाना। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर ने हज़रत खालिद से कहा कि ऐ सरदार ! अगर आप इजाज़त दो तो हम रात में ही उन छुपने वाले रूमियों पर हम्ला कर दें और उन को मार कर उन की जगह बैठ जाअें और जब वर्दान अपने आदमियों को आवाज़ दे तब बजाए वर्दान के आदमियों के हम निकल कर आअें। हज़रत खालिद हज़रत ज़िरार की बात सुन कर मुस्कुराए और फरमाया कि तुम्हारी तज्वीज़ बहुत ही उमदा है। जाओ मैं ने तुम को इस काम की इजाज़त दी और तुम्हारे साथियों पर तुम को सरदार मुकर्रर किया। अल्लाह तआला तुम्हें काम्याबी अता फरमाए।

रात ही में रूमी सिपाहियों का सफाया और हज़रत ज़िरार का मिशन काम्याब

जब रात हूई तो वर्दान ने अपने मन्सूबे के तहत दस (१०) आदमियों को रेत के टीले पर भेज दिया। वह दस आदमी रात के इब्तेदाई वक्त में वहां पहोंच गए और टीले के करीब एक कमीन गाह में ठहरे। वहां पहोंच कर वह थोडी दैर इधर उधर की बातों में

और आइन्दा कल इस्लामी लश्कर के साथ किये जाने वाले मक्रो फरेब के मुतअल्लिक गुफ्तगू करने में मस्रूफ रहे। फिर खूब शराब पी और अपने हथियार खोल कर सिरहाने रख कर सो गए। रात का जब तिहाई हिस्सा बाकी था। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर अपने साथियों के साथ इस्लामी लश्कर के कैम्प से रवाना हुए। जब रेत के टीले के करीब पहुंचे तो हज़रत ज़िरार ने अपने साथियों से कहा कि तुम सब यहां तवक्कुफ करो। मैं आगे जा कर दुश्मनों का सुराग लगा कर आता हूं और जब तक मैं वापस न आऊं, तुम लोग यहीं ठहरना और एक खास ताकीद की कि आपस में गुफ्तगू भी मत करना ताकि अगर दुश्मन यहीं कहीं करीब में हों तो उन को हमारे आने का पता न चले। फिर हज़रत ज़िरार ने अपनी ज़िरह नैज़ा और दीगर साज़ो सामान को उतार दिया और ऊपर का बदन उर्यां कर के हाथ में तलवार ले कर दुश्मनों की खोज में चले। हज़रत ज़िरार बहुत ही एहतियात के साथ और किसी किस्म की आवाज़ न हो, इस बात का ख्याल रखते हुए संभल संभल कर चलते थे। रात का सन्नाटा छाया हुवा था। अंधेरी रात थी मगर तारों की रौशनी फैली हूई थी। सुब्ह करीब थी। हज़रत ज़िरार बहुत ही चौकन्ना हो कर कान ऊंचे कर के हर तरफ नज़र दौडाते हुए आगे बढ रहे थे। थोडा फास्ला तय करने पर उन के कान में खर्राटों की आवाज़ आई। हज़रत ज़िरार अब बहुत होशियार हो गए और जहां से खर्राटों की आवाज़ आ रही थी उस तरफ बढे। करीब ही में दस (१०) रूमी अपने हथियार अपने सिरहाने रख कर गहरी नींद में पडे खर्राटे ले रहे थे।

हज़रत ज़िरार फौरन अपने साथियों के पास आए और कहा कि बशारत हो कि रूमी सिपाही आलमे मस्ती में गाफिल सोए पडे हैं। तुम सब अपनी ज़िरहें उतार दो, नैज़े रख दो और सिर्फ हाथ में एक एक तलवार ले लो और मेरे साथ चलो। तमाम मुजाहेदीन हज़रत ज़िरार के कहने के मुताबिक रवाना हुए। हज़रत ज़िरार ने उन को हुक्म दिया कि हर मुजाहिद एक एक रूमी के सर के पास खडा हो जाए और तलवार से उस का सर कलम कर दे, लेकिन एक ज़रूरी अम्र को फरामोश न करें कि सब की तलवार की ज़र्ब एक साथ ही होनी चाहिये, ताकि एक ही वार में सब खत्म हो जाअें। तलवार की ज़र्ब आगे पीछे होने में यह खौफ है कि उस के करीब वाला बेदार हो जाए और मुकाबला के लिये खडा हो जाए या भाग जाए और वर्दान को मुत्तलेअ कर दे और हमारे किये कराए पर पानी फैर दे। तमाम मुजाहेदीन दबे पाऊं बहुत ही एहतियात बरत्ते हुए सोए हुए रूमी सिपाहियों के करीब जा पहुंचे। तमाम रूमी ब-दस्तूर गाफिल सोए पडे थे। हर रूमी सिपाही के सर के करीब एक एक मुजाहिद खडा हो गया। सब ने तलवारें तान लीं और हज़रत ज़िरार के इशारे पर दस तलवारें एक साथ रूमियों

की गर्दनों पर गिरीं और एक हल्की चीख उन के हलक से निकली और फौरन दब गई। दस रूमियों के बगैर सर के जिस्म थोडी देर तडपे और फिर साकिन हो गए।

हज़रत खालिद और वर्दान की मुलाकात :-

दूसरे दिन सुब्ह हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो हज़रत अबू उबैदा से रुखसत की इजाज़त हासिल कर के रेत के टीले की तरफ रवाना हुए। वर्दान भी वहां आ पहुंचा। दोनों अपने अपने घोडों से उतर कर बैठ गए। वर्दान ने गुफ्तगू का आगाज़ करते हुए हज़रत खालिद से कहा कि तुम हम से अब क्या चाहते हो ? हालां कि तुम ने हमारे बहुत से आदमियों को कत्ल किया है। अब क्या चाहिये ? जो मांगना है वह माल मांगो ! मैं तुम्हारा मुतालबा पूरा करने में बुख्ल नहीं करूंगा। क्यूं कि तुम कहत ज़दा मुल्क के नंगे और भूके लोग हो, लेहाज़ा मुनासिब मुतालबा करो, तुम को ज़ईफो लागर समझ कर ब-तौर इम्दाद इनायत करूंगा। वर्दान ने इस तरह की तुर्श व तल्ख गुफ्तगू से बात का आगाज़ किया। क्यूं कि वह सुलह करने आया ही न था बल्कि वह यह चाहता था कि इस तरह की बात चीत से मुआमला तूतू मैं मैं से हाथापाई तक पहोंच जाए और रेत के टीले के पीछे छुपे हुए अपने आदमियों को जल्द अज़ जल्द पुकारने की नौबत आ जाए, लैकिन उस को मा'लूम नहीं था कि उस के आदमी रात में ही जहन्नम पहुंचा दिये गए हैं। हज़रत ज़िरार ने वर्दान के दसों आदमियों को कत्ल कर के उन के कपडे और हथियार ले लिये थे और उन की लाशों को एक गढे में डाल कर ऊपर से रेत हमवार कर दी और उन रूमियों के कपडे सब मुजाहिदों ने पहन लिये, ताकि अगर वर्दान का कोई नुमाइन्दा उन की हरकत पर निगरानी करता हो तो दूर से ऐसा मा'लूम हो कि रूमी सिपाही बैठे हुए हैं।

वर्दान की इस तर्ज़े गुफ्तगू का मन्शा हज़रत खालिद अच्छी तरह जानते थे कि यह झगडा मोल लेना चाहता है। हालां कि हज़रत खालिद भी यही चाहते थे। आप के लिये तो मन भाता मुआमला हो रहा था। लेहाज़ा उन्हों ने ईंट का जवाब पत्थर से देते हुए फरमाया कि **ऐ नस्रानी कुत्ते !** अल्लाह तआला ने हम को सद्का और खैरात से बे परवा कर दिया है। हम तेरे सदाकत व खैरात के मोहताज नहीं। अगर तू इस्लाम कबूल नहीं करता तो जिज़्या अदा कर और वह भी इस तरह कि अदाए जिज़्या से तू ज़लील व ख्वार हो। वरना तलवार हमारे और तुम्हारे दरमियान हाकिम है। हम ता-दमे मर्ग तुम से किताल करते रहेंगे और हां ! तूने हम को ज़ईफ और लागर गरदाना है, लैकिन **तुम हमारे नज़दीक कुत्तों के मिस्ल हो।** हमारा एक मुजाहिद तुम्हारे एक हज़ार सिपाही को ज़ईफ व

कमज़ोर समझ कर उन से भिडने पर आमादा होता है। हज़रत खालिद ने मज़ीद फरमाया कि **ऐ नस्रानी मक्कार व फरेबी !** तूने मुझ को यहां सुलह की गुफ्तगू करने बुलाया है, लैकिन तूने सुलह की गुफ्तगू करने के बजाए हमारी तज़लील व तौहीन का रवय्या इख्तेयार किया है और अगर तू गुफ्तगू के बहाने मेरे साथ मक्रो फरेब करने का इरादा रखता है तो देख ! मैं अपने लश्कर से दूर यहां अकैला हूं। तेरा जो भी इरादा हो ज़ाहिर कर, मैं इन्शा अल्लाह तेरे लिये काफी हूं।

हज़रत खालिद का यह दन्दां शिकन जवाब सुन कर वर्दान खडा हो गया और छलांग लगा कर हज़रत खालिद के दोनों बाज़ू पकड कर चिमट गया। हज़रत खालिद ने भी उस को बिल्कुल दबोच लिया। वर्दान ज़ोर से चिल्लाने लगा कि ऐ मेरे वफादार मुहाफिज़ो ! जल्दी दौडो, मैं ने अरबों के सरदार पर काबू पा लिया है, जल्दी आओ और इसे कत्ल कर दो। वर्दान की आवाज़ सुन कर टीले की पुश्त में छुपे हुए सहाबी-ए रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम दौडे। सब ने तलवार हाथ में ले लीं थीं और हज़रत ज़िरार सब से आगे नंगी तलवार लिये मिस्ले शैर जौशो खरोश से जसत लगाते हुए आ रहे थे। वर्दान ने गुमान किया कि मेरे आदमी आ रहे हैं। उस का दिल बाग बाग हो गया। लैकिन एक लम्हे में उस का दिल धक धक करने लगा। हज़रत ज़िरार को तैज़ आंधी की मानिन्द अपनी तरफ आते देख कर उस के हाथ पाऊं सनसनाने लगे। पूरे जिस्म पर लरज़ा तारी हो गया। हाथ की पकड ढीली हो गई, हज़रत खालिद को छोड दिया और हज़रत खालिद के कदम पकड कर गिडगिडाने लगा और कहा कि ऐ खालिद ! तुम मुझ को जल्दी मार डालो मगर इस शैतान को (मआज़ल्लाह हज़रत ज़िरार की तरफ इशारा किया) मुझ से दूर रखो, इस की सूरत देख कर मेरा बुरा हाल हो रहा है। हज़रत खालिद ने बहुत ही सुकून से जवाब दिया कि इत्मीनान रखो ! वही तुम्हारे कातिल हैं। इतनी दैर में तो हज़रत ज़िरार आ पहुंचे और उन्हों ने वर्दान पर वार करने का कस्द किया। लैकिन हज़रत खालिद ने उन को हाथ के इशारा से मना' किया, वह रुक गए। हज़रत ज़िरार के साथी भी अब आ पहुंचे। कुल ग्यारह मुजाहिदों के हिसार में रूमी लश्कर का सरदार कस-म-पूर्सी के आलम में ज़मीन पर लेटा हुवा था। तमाम मुजाहिदों ने तलवारें सौंत ली थीं। और हज़रत खालिद के हुक्म के मुन्तज़िर थे। वर्दान मारे डर के कांप रहा था। हज़रत खालिद के और मुजाहिदों के कदमों पर लोटता था। रोता और गिडगिडाता था। उस के हलक से आवाज़ भी न निकलती थी और वह अमान अमान कह कर इल्तिजा करता था। हज़रत खालिद ने फरमाया कि अमान उस को दी जाती है, जो अमान का मुस्तहिक होता है। तूने सुलह के बहाने मक्रो फरेब की जाल बिछाई और खुद फंस गया।

"وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمَاكِرِيْنَ"

(सूरह आले इमरान, आयत : 54)

तर्जुमा : ''और अल्लाह सब से बेहतर छुपी तद्बीर वाला है।''

(कन्जुल ईमान)

हज़रत खालिद ने इत्ना फरमाने के बा'द हज़रत ज़िरार की तरफ देखा और आंखों आंखों में हुक्म दे दिया। और हज़रत ज़िरार ने **वर्दान की रग शाना पर तलवार का वार किया। खच ...** एक हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। वर्दान की मौत की आखरी हिचकी भी न निकली और उस का सर धड से अलग हो गया। हज़रत ज़िरार की मुताबेअत में उन के साथियों ने भी तलवारें रखीं और **वर्दान के नापाक जिस्म को कईं टुकडों में तक्सीम कर दिया।**

लश्करे इस्लाम की यल्गार, रूमियों की शिकस्ते फाश :-

हज़रत खालिद ने वर्दान के सर को तलवार की नौक पर लटकाया और अपने साथियों को रूमी लश्कर की जानिब जाने का हुक्म दिया। तमाम मुजाहेदीन रूमी लश्कर की तरफ बढे। हज़रत खालिद उन के आगे थे और उन की तलवार की नौक पर वर्दान का सर था। इस हैअत से रूमियों ने उन को अपनी तरफ आते देखा तो समझे कि वर्दान अपने मक्रो फरेब में काम्याब हो गया है और वह इस्लामी लश्कर के सरदार का सर काट कर अपने दस साथियों के साथ आ रहा है, लेहाज़ा रूमी लश्कर में नाकूस बजने लगे। सलबान बुलन्द की गईं और रूमी सिपाही तालियां बजा कर नाचने कूदने लगे। इधर इस्लामी लश्कर से हज़रत अबू उबैदा ने यह मन्ज़र देखा तो उन के दिल व जिगर पर छुरियां चलने लगीं और खौफ किया कि हज़रत खालिद मुब्तलाए मुसीबत हो गए। लेहाज़ा उन्हों ने रूमी लश्कर पर यल्गार का हुक्म दिया। मुजाहेदीन बडे ही जौशो खरोश से छूटे। बा'ज़ हज़रत खालिद के लिये दुआऐं मांगते थे और बा'ज़ जौशे इन्तेकाम में चिल्लाते थे।

रूमी लश्कर फर्ते मसर्रत में मह्वे रक्स था कि इत्ने में हज़रत खालिद अपने साथियों के साथ उन के करीब पहोंच गए। तब रूमियों को पता चला कि नौके शम्शीर पर इस्लामी लश्कर के सरदार का नहीं बल्कि हमारे वर्दान का सर है। फिर क्या था ? रूमियों के हवास उड गए। उन की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। रूमी लश्कर में सफे मातम बिछ गई और थोडी दैर पहले जो खुशी से फूले नहीं समाते थे वह सीना कूटने लगे। हज़रत खालिद

अब रूमी लश्कर के बिल्कुल करीब आ गये और हज़रत अबू उबैदा भी इस्लामी लश्कर ले कर करीब आ गये। हज़रत खालिद ने पुकारा कि ऐ रूमियो ! ऐ सलीब के पूजने वालो ! मैं खालिद बिन वलीद सहाबी-ए रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम हूं। यह सर तुम्हारे सरदार का है। यह कह कर हज़रत खालिद ने वर्दान के सर को रूमी लश्कर पर फेंका और रूमी लश्कर पर हम्ला किया। हज़रत ज़िरार और उन के साथी भी रूमियों पर टूट पडे। हज़रत अबू उबैदा ने भी इस्लामी लश्कर से युरिश करा दी। मुजाहिदों ने नार-ए तक्बीर की सदा बुलन्द की जिस को सुनते ही रूमियों के दिलों को पंखे लग गए और उन को अपनी हलाकत का यकीन हो गया। रूमियों ने पीठ दिखाई और भागना शुरू किया। मुजाहिदों ने रूमियों को नैज़ा व शम्शीर की नौक पर लिया और जिस तरह खेतों में काश्त काटी जाती है, इस तरह रूमियों को ब-कस्रत काटा। रूमी चारों अतराफ में भाग रहे थे और इस्लाम के मुजाहेदीन उन का तआककुब करते थे। जो भी हाथ लगता, उसे तहे तैग कर देते। सुब्ह से ले कर अस्र तक मुजाहेदीन रूमियों को पीसते रहे।

अर्बाबे सैर व अहले तारीख बयान करते हैं कि नव्वे हज़ार के रूमी लश्कर से पचास हज़ार रूमी सिपाही मारे गए और बाकी भाग निकले। बा'ज़ कैसारिया की तरफ और बा'ज़ दमिश्क की तरफ भाग गए। जंगे अजनादीन का मा'रका ब-रोज़ सनीचर, 28, जमादियुल अव्वल, 13, सन हिजरी के दिन वुकूअ पज़ीर हुवा था। रूमी लश्कर के सिपाही अपने खैमे, मालो अस्बाब, कपडे, हथियार वगैरा छोड कर जान बचाने के लिये भागे थे। हज़रत खालिद ने वह तमाम माले गनीमत जमा करने का हुक्म दिया। बे-शुमार सोने की सलीबें, सोने चांदी के बर्तन, सोने की ज़न्जीरें, रैश्मी कपडे, हथियार, खैमे और दूसरी कीमती चीज़ें हाथ आईं। हज़रत खालिद ने तमाम माले गनीमत महफूज़ कर लिया और फरमाया कि यह माल फतहे दमिश्क के बा'द तक्सीम किया जाएगा। इन्शा अल्लाह। उसी दिन हज़रत अम्र बिन अल-आस रदियल्लाहो तआला अन्हो अपने लश्कर के साथ फलस्तीन से अजनादीन पहुंचे। जंगे अजनादीन में इस्लामी लश्कर के चार सौ पच्हत्तर (475) मुजाहिदों ने जामे शहादत नौश फरमाया। (रदियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन)

❁ <u>अब तक फतह होने वाले मकामात :-</u>

(1) अरेका (2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हवरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (अजनादीन)

❁ <u>अमीरुल मोमेनीन को फतहे अजनादीन की खुश्खबरी :-</u>

हज़रत खालिद बिन वलीद ने फतहे अजनादीन की इत्तेलाअ का तफ्सीली खत अमीरुल मोमेनीन, सय्यिदोना अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो की खिदमत में हाज़िर करने के लिये हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हमीद हजमी को रवाना किया। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो को मुल्के शाम गए हुए इस्लामी लश्कर की बहुत फिक्र थी। क्यूं कि कई दिनों से मुल्के शाम से कोई इत्तेलाअ नहीं आई थी। लेहाज़ा आप तश्वीश के आलम में रोज़ाना सहाबए किराम की एक जमाअत ले कर मदीना के बाहर मुल्के शाम की तरफ जाने वाले रास्ता तक आते थे कि शायद कोई कासिद मुल्के शाम से पैगाम ले कर आए। हस्बे मा'मूल आप वहां तशरीफ ले गए थे कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हमीद पहुंचे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक ने सजदए शुक्र अदा किया। जब आप ने सजदे से सर उठाया तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हमीद ने आप को हज़रत खालिद का खत दिया। पहले आप ने खत को आहिस्ता आहिस्ता पढा, लैकिन जूं जूं पढते जाते थे आप का चेहरा चमकता जाता था। फिर आप ने ब-आवाज़े बुलन्द खत पढ कर अपने हमराह आए हुए सहाबए किराम को सुनाया और फिर मदीना मुनव्वरा शहर में वापस लौट आए। मदीना में खबर फैली कि मुल्के शाम से कासिद आया है और अज़ीम फतह की खुश्खबरी लाया है, तो लोगों का जम्मे गफीर मस्जिदे नबवी के पास जमा हो गया। हज़रत सिद्दीके अक्बर ने हज़रत खालिद का खत बुलन्द आवाज़ से पढ कर लोगों को सुनाया। खत सुन कर मुसलमानों में जेहाद का ऐसा शौक पैदा हुवा कि सिर्फ मदीना मुनव्वरा ही नहीं बल्कि मक्का मुअज़्ज़मा में भी जब यह खबर पहोंची तो वहां से भी लोग जेहाद के इरादे से गिरोह दर गिरोह मदीना आ पहुंचे।

देखते देखते मदीना तय्यबह में सात हज़ार का लश्कर जमा हो गया। मक्का मुअज़्ज़मा से जो मुजाहेदीन आए थे उन में हज़रत अबू सुफियान बिन हर्ब और ईदाक बिन हाशिम भी शामिल थे। यमन से हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब अज़्ज़ुबैदी और मालिक उश्तर नखई भी कसीर ता'दाद में मुजाहेदीन को ले कर मअ अतफाल व मस्तूरात आए थे। हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने सात हज़ार का लश्कर मुल्के शाम रवाना किया और लश्कर की रवानगी की इत्तेलाअ हज़रत खालिद को पहुंचाने के लिये मुल्के शाम से हज़रत खालिद के कासिद की हैसियत से आए हुए हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हमीद को ही लश्कर के आगे खत दे कर रवाना फरमाया। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हमीद अमीरुल मोमेनीन का खत ले कर अपनी ऊंटनी पर सवार हो कर अकेले रवाना हो गए ताकि वह जल्द अज़ जल्द हज़रत खालिद के पास पहोंच कर इन्हें अमीरुल मोमेनीन का खत और सात हज़ार के लश्कर की रवानगी की खबर पहुंचा दें।

जंगे दमिश्क (बारे दोम)

जिस दिन हज़रत खालिद बिन वलीद ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हमीद को खत दे कर मदीना मुनव्वरा रवाना किया था, उसी दिन उन्हों ने इस्लामी लश्कर को अजनादीन से दमिश्क की जानिब कूच करने का हुक्म दिया था। लेहाज़ा लश्कर ने अजनादीन से अपना कैम्प समेट लिया और दमिश्क की तरफ रवाना हुवा। अह्ले दमिश्क को अजनादीन में रूमी लश्कर की शिकस्ते फाश की इत्तेलाअ पहले ही मिल चुकी थी। पस जब इन्हें यह खबर मिली कि इस्लामी लश्कर अब दमिश्क की तरफ आ रहा है तो वह बहुत घबराए। दैहात और अतराफ में बसने वाले भाग भाग कर दमिश्क के किल्ले में पनाह गुज़ीं हो गए। किल्ल में काफी ता'दाद में गल्ला और अश्याए सर्फ जमा कर लिया, ताकि अगर इस्लामी लश्कर का मुहासरा तूल पकडे तो ज़खीरा खत्म न हो। इलावा अज़ीं हथियार और सामाने जंग भी मुहय्या कर लिया। किल्ले की दीवारों पर मिन्जेनीक, पत्थर, ढाल, तीर, कमान, वगैरा सामान चढा दिया ताकि किल्ले की दीवार से मुहासरा करने वाले इस्लामी लश्कर पर हम्ला किया जाए।

इस्लामी लश्कर की ता'दाद अब काफी ज़ियादह थी। तक्रीबन पचास हज़ार लश्कर की मज्मूई ता'दाद थी। इस्लामी लश्कर ने दमिश्क से आधे कोस के फास्ला पर दैर खालिद नामी मकाम पर कैम्प लगाया। फिर इस्लामी लश्कर किल्ल की तरफ आया और किल्ले का मुहासरा किया। हज़रत खालिद बिन वलीद ने दमिश्क के मुतफर्रिक दरवाज़ों पर हस्बे ज़ैल तर्तीब से सरदारों को मुतअय्यन फरमाया :

(1) बाबे जाबिया पर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह

(2) बाबे सगीर पर हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान

(3) बाबे तोमा पर हज़रत शुरहबील बिन हसना

(4) बाबे फरादीस पर हज़रत अम्र बिन अल-आस

(5) बाबे कैसान पर हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी

(6) बाबे शर्की पर हज़रत खालिद बिन वलीद बज़ाते खुद

(7) बाबे मरकश बन्द रहता था, वहां लडाई न थी, इस लिये मुजाहिदों ने इस दरवाज़े का नाम ''बाबुस सलामा'' रख दिया।

(8) हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर को दो हज़ार (2000) सवार के साथ लश्कर के तलीआ की हैसियत से मुकर्रर किया, ताकि वह हर बाब पर गश्त करें और जहां ज़रूरत हो वहां कुमुक करें। इलावा अज़ीं किल्ले के बाहर कोई रूमी जासूस नज़र आए, तो उस को गिरफ्तार कर के हज़रत खालिद के पास भेज दें।

जब रूमियों को पता चला कि इस्लामी लश्कर ने किल्ले का मुहासरा किया है तो वह किल्ले की दीवार पर चढ गए और तीरों की बौछार शुरू कर दी, साथ में मिन्जेनीक से पत्थर भी बरसाने शुरू किये। इस्लामी लश्कर ने किल्ले के नीचे से तीरों से जवाब दिया। दोनों तरफ के बहुत से आदमी ज़ख्मी हुए। हज़रत खालिद बिन वलीद बाबे शर्की पर मस्रूफे जंग थे कि उन के पास हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हमीद मदीना तय्यबह से अमीरुल मोमेनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक का खत ले कर वापस आए। हज़रत खालिद ने वह खत पढा और फिर हर दरवाज़ा पर वह खत पढने के लिये भेजा। तमाम दरवाज़ों पर मुतअय्यन सरदारों ने बुलन्द आवाज़ से वह खत पढ कर सुनाया। मुजाहेदीन इस खत में दी गई इत्तेलाअ या'नी हज़रत अबू सुफियान, हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब और हज़रत मालिक उश्तर नखई की मईयत में सात हज़ार के लश्कर की खबर सुन कर बहुत खुश हुए। हज़रत खालिद मौका मिलते ही तमाम दरवाज़ों पर गश्त करते थे। मुआइना करते और ज़रूरी हिदायात करते थे। सुब्ह से ले कर शाम तक फरीकैन ने एक दूसरे पर तीर और पत्थर फैंक कर हम्ले किये। लैकिन कोई नतीजा न निकला। गुरूब आफ्ताब के वक्त जंग मौकूफ कर दी गई। रात के वक्त तमाम इस्लामी सरदार अपने महाज़ पर ठहरे रहे। हर दरवाज़े पर मुजाहेदीन बुलन्द आवाज़ से तक्बीर और तहलील कहते थे और अपनी बेदारी का सुबूत देने के साथ साथ माहौल को गर्मा कर रूमियों को मरऊब करते थे। रूमी भी घन्टे बजा कर और कलेमाते कुफ्र बोल कर शौरो गुल मचाते थे, और हाथ में शम्ऐं रौशन किये किल्ले की फसील पर घूमते थे। रूमियों ने इस कसरत से मश्अलें रौशन की थीं कि रात के वक्त भी दिन का उजाला मा'लूम होता था और आस पास का मन्ज़र साफ नज़र आता था। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर अपने साथियों के साथ किल्ले के हर दरवाज़े पर गश्त करते थे। और सख्त निगहबानी करते थे।

अहले दमिश्क का हाकिम तोमा से मश्वरा :-

रात के वक्त दमिश्क के रूउसा, उमरा और दानिशमन्द हाकिम तोमा के महल में आए और हाकिम तोमा से कहा कि मुसलमानों के लश्करे जर्रार ने हम पर युरिश कर के किल्ले का मुहासरा कर लिया है। लेहाज़ा तुम हिरक्ल बादशाह से कुमुक तलब करो या फिर मुसलमानों से मुसालेहत कर लो और वह जो मांगें इन्हें दे कर यहां से रफा दफा करो क्यूं कि हम में उन के मुकाबले की ताकत नहीं। हम ज़ेहनी उलझन और बला में मुब्तला हो गए हैं। तोमा हाकिम ने तकब्बुर और गुरूर के नशे में धुत हो कर कहा कि हिरक्ल आ'ज़म के सर की कसम! में अरबों को कोई हैसियत नहीं देता। मैं जब उन के मुकाबले के लिये निक्लूंगा तब तुम देखना के मैं उन की सफें उलट दूंगा और अगलों को पिछलों से मिला दूंगा। मैं हिरक्ल आ'ज़म का दामाद और माहिर जंगजू हूं। मुल्के शाम में मेरा कोई सानी नहीं। मेरा वह रोअब और दबदबा है कि अगर मैं शहर पनाह के दरवाज़े खोल भी दूं तो उन अरबों को मेरे होते हुए शहर में पाऊं रखने की भी जुर्अत न होगी। अह्ले दमिश्क ने कहा कि ऐ हमारे हाकिम! तुम ने उन अरबों को लडते नहीं देखा। उन की दिलैरी का यह आलम है कि उन के लश्कर का ज़ईफ और बुड्ढा शख्स हमारे पंदरह बीस नौ-जवान पर अकैला भारी पडता है। और उन का सरदार खालिद बिन वलीद ऐसा खतरनाक है कि हमारा कोई शेह ज़ोर उस का मुकाबला करने की इस्तिताअत नहीं रखता। हाकिम तोमा ने कहा कि ख्वाह म ख्वाह अरबों से इत्ना डरते हो। उन नंगे भूके अरबों से क्या डरना? के जिन के पास जंग का साज़ो सामान भी नहीं। अह्ले दमिश्क ने कहा कि तुम गलत फहमी में मुब्तला हो। फलस्तीन, बैतुल लहिया, शहूरा, नहरे इस्तिर्याक और अजनादीन में उन्हों ने हमारा इत्ना हथियार छीना है कि उन के पास हथियार की बोहतात है। यह जब मुल्के शाम में आए थे तब उन के पास सामाने जंग कहां था? इस के बा-वुजूद हम पर गालिब आ गये और इस की वजह यह है कि उन के नबी (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) ने इस बात का यकीन दिलाया है कि जो काफिर मैदाने जंग में मारा जाएगा वह दोज़ख में जाएगा और जो मुसलमान जेहाद करते हुए मरेगा वह जन्नत में जाएगा। लेहाज़ा वह अपने नबी के वा'दा पर कामिल ए'तेमाद रख कर जान हथेली पर ले कर लडते हैं और मौत की परवा नहीं करते लेहाज़ा ऐ हाकिम! किसी भी सूरत से यह मस्अला हल कर। चाहे सुलह से हो या दिलैरी से लड कर। वरना हम उन अरबों से सुलह कर लेंगे और उन के लिये शहर के दरवाज़े खोल देंगे।

अह्ले दमिश्क की यह धमकी सुन कर हाकिम तोमा के चेहरे पर हवाइयां उडने लगीं। उस को खौफ लाहिक हुवा कि कहीं मेरी कौम अपना कहना सच न कर दिखाए। लेहाज़ा उस ने अह्ले दमिश्क को ढारस दिलाते हुए कहा कि हिरक्ल बादशाह का लश्करे जर्रार अन्करीब हमारी कुमुक करने आ रहा है और आइन्दा कल मैं बज़ाते खुद उन से लडने निक्लूंगा और उन को पीस कर रख दूंगा। उन के सरदारों को तो एक एक कर के टुक्डे टुक्डे कर दूंगा। लैकिन तुम भी मेरी तरह हिम्मत और ऊलूल-अज़्मी से काम लेते हुए मेरे साथ अरबों का मुकाबला करो। यकीन जानो कि अगर तुम ने बहादुरी से अरबों का मुकाबला किया तो उन के कदम उखड जाओंगे और राहे फरार इख्तेयार करने के इलावा उन के पास कोई चारा न रहेगा। तुम ख्वाह म ख्वाह उन की शेह में आ गये हो और डरते हो। तुम कल देखना के अरबों का भरम खुल जाएगा और उन की बंधी हूई हवा जाती रहेगी। मैं कल अरबों पर बलाए ना-गहानी की तरह नाज़िल हो कर उन को तबाह कर दूंगा। अह्ले दमिश्क हाकिम तोमा की शैखी भरी बातों में आ गये और कहा कि ऐ सरदार! हम तुम्हारे साथ शाना से शाना मिला कर आखरी दम तक अरबों से लडेंगे। हाकिम तोमा अह्ले दमिश्क के अहदो पैमान से मस्रूर हुवा और उन को तसल्ली दे कर रुखसत किया। अह्ले दमिश्क ने हाकिम तोमा का शुक्रिया अदा किया और मुत्मइन हो कर उस के पास से अपने घर चले गए। तमाम रूमियों ने आइन्दा कल इस्लामी लश्कर से मुकाबला करने का मुसम्मम अज़्म व इरादा कर लिया। रात सुकून से बसर हूई। दोनों लश्कर के निगेहबान अपनी ज़िम्मेदारी रात भर निभाते रहे, यहां तक कि शबे तारीक की सियाह ज़ुल्फें सिमट गईं और रौशनी बिखेरती हूई सुब्ह की पौ फटी।

"जंगे दमिश्क का दूसरा दिन"

सुब्ह सादिक हूई और हर सरदार ने अपने अपने लश्कर के साथ बा-जमाअत नमाज़े फज्र पढी और नमाज़ से फारिग हो कर मुसल्लह हो कर हम्ला करने किल्ले की तरफ आगे बढे। रूमियों ने इस्लामी लश्कर को किल्ले की फसील की तरफ आते देख कर चिल्लाना शुरू किया। हज़ारों की ता'दाद में तीर अन्दाज़, कमान में तीर चढा कर हम्ला के लिये आमादा हो गए। मिन्जेनीकें पत्थरों से आरास्ता कर ली गईं। हज़रत खालिद ने इस्लामी लश्कर को हुक्म दिया था कि कोई भी शख्स सवार हो कर मुकाबला करने न जाए, बल्कि पा-प्यादा जाए और अपने आप को ढाल की आड में छुपा कर बहुत ही एहतियात से आगे बढे, क्यूं कि रूमी दुश्मन किल्ले की दीवार से तीर और पत्थर बरसाते हैं। लेहाज़ा हर बाब पर इस्लामी लश्कर प्यादा ही किल्ले की तरफ आगे बढा। जैसे ही इस्लामी लश्कर करीब आया रूमियों ने शिद्दत से तीर और पत्थर बरसाने शुरू किये, लैकिन लश्करे इस्लाम के जांबाज़ मुजाहिद साबित कदम रहे। बाबे तोमा पर हाकिम तोमा रूमियों को जंग की तर्गीब देता था और उक्साता था। उस के साथ दमिश्क का सब से बडा राहिब था। राहिब के सर पर सोने की सलीबे आ'ज़म थी। उस बडे राहिब ने सलीबे आ'ज़म को बाबे तोमा के बुर्ज पर गाड दिया। और उस के पास बहुत से राहिब, बतरीक और दीने नसरानी के आबिद जमा हुए। एक नसरानी आलिम के हाथ में इन्जील थी। उस ने इन्जील को सलीब के पास रखा। फिर तमाम राहिबों ने बुलन्द आवाज़ से कल्मए कुफ्र कहा और तोमा के लिये ब-वसीला सलीब व इन्जील दुआ मांगी। दुआ के इख्तिताम पर हाकिम तोमा ने सख्ती से हम्ला करने का हुक्म दिया।

❀ हज़रत अबान बिन सईद बिन आस की शहादत :-

बाबे तोमा पर हज़रत शुरहबील बिन हसना अपने लश्कर के साथ लड रहे थे। जब हाकिम तोमा ने शिद्दत से तीर और पत्थर बरसाए तो हज़रत शुरहबील के साथियों ने साबित कदमी का मुज़ाहेरा किया और सख्त लडाई लडी। बहुत से मुजाहिद ज़ख्मी हुए। किसी का सर फटा, किसी का हाथ टूटा, किसी का पाऊं घायल हुवा, किसी के बाज़ू में तीर घुसा। अल-गर्ज़ तमाम दरवाज़ों के मुकाबले में बाबे तोमा पर रूमियों का हम्ला बहुत शदीद था।

हज़रत अबान बिन सईद बिन आस को एक ज़हर आलूद तीर लगा। तीर निकाल कर हज़रत अबान ने ज़ख्म पर अमामा बांध लिया लैकिन थोडी ही देर में ज़हर उन के जिस्म में सरायत कर गया। हज़रत अबान बिन सईद गश खा कर गिरे। मुजाहेदीन उन को उठा कर खैमा में ले आए और उन का इलाज करने की गर्ज़ से ज़ख्म पर बांधा हुवा अमामा खोला। हज़रत अबान की हालत बहुत नाज़ुक थी। बचने की बहुत कम उम्मीद थी। ज़हर का असर उन के जिस्म से ज़ाहिर हो रहा था। हज़रत अबान को इस अम्र का एहसास हो गया था कि अब ज़िन्दगी के आखरी लम्हात हैं। दारुल-फना से दारुल-बका की तरफ जाने का वक्त आ गया है। मुस्तफा जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के दीदार का शर्फ हासिल करने का वक्त आ गया है :

जान तो जाते ही जाएगी कयामत यह है
कि यहां मरने पे ठहरा है नज़ारा तेरा

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत अबान बिन सईद ने आस्मान की तरफ आंख उठा कर देखा। गोया वह कोई मन्ज़र देख रहे थे। उन के चेहरे पर एक अजीब चमक फैल गई। और वह उंगली उठा कर आस्मान की जानिब इशारा करते हुए पुकार उठे :

"اَشْهَدُاَنْ لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُاَنَّ مُحَمَّداً رَّسُوْلُ اللّٰهِ هَذَا مَاوَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَ صَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ۔"

तर्जुमा : "मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। यह वह है जिस का रहमान ने वा'दा किया है और रसूलों ने तस्दीक की है।"

इत्ना कहने के बा'द उन का इन्तेकाल हो गया :

जान दे दो वा'दए दीदार पर
नक्द अपना दाम हो ही जाएगा

(अज़ :- इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत अबान बिन सईद का निकाह अजनादीन की जंग के दौरान हुवा था। उन की ज़ौजा मोहतरमा उम्मे अबान बिन रबीआ के हाथ की महेंदी का रंग और उन के सर में इत्र की खुश्बू अभी तक बाकी थी। हज़रत उम्मे अबान का शुमार मुल्के अरब की उन शुजाअ और दिलैर ख्वातीन में होता था जो राहे खुदा में दुश्मनाने दीन से जेहाद करने में पैश पैश रहती थीं। जब उन को अपने सरताज की शहादत की इत्तेलाअ मिली तो भागती ठोकरें खाती हूई आईं और अपने शौहर की लाश के पास खडी हो गईं। गम व इज़्तिराब में सरापा गर्क थीं लैकिन सब्रो इस्तिक्लाल का पैकर बनी हूई थीं। अल्लाह तआला से अज्र व सवाब की उम्मीद वार थीं। अपनी ज़बान से ना-शुक्री का एक जुम्ला भी नहीं निकाला। अपने शौहर को मुखातब कर के उन के हिज्र व फिराक में अश्आर कहती थीं। उन अरबी अश्आर का सिर्फ तर्जुमा ज़ैल में पैश है :

> **"गवारा हो तुम को वह चीज़ जो दी गई। तुम तो हूरे-ऐन की तरफ और साय-ए परवर्दगार की तरफ चल दिये। उस परवरदिगारे आलम की तरफ चल बसे जिस ने हम दोनों को मिलाया था, फिर जुदा कर दिया। कसम है रब जहां की ! मैं हर हाल में जेहाद करुंगी और कोशिश करुंगी कि तुम से जल्द अज़ जल्द मिल जाऊं क्यूं कि में तुम्हारी आरज़ू मन्द हूं। थोडे ही दिनों की रिफाकत में न तुम मुझ से आसूदह हुए और न में तुम से सैराब हूई, मगर अल्लाह को यही अम्र मन्ज़ूर था कि हम में जुदाई वाकेअ हो। मैं ने हराम किया अपने ऊपर इस अम्र को कि तुम्हारे बा'द कोई दूसरा शख्स मुझ को मस करे। मैं ने अपनी जान अल्लाह की राह में वक्फ की और अन्करीब तुम से आ मिलूंगी। अल्लाह से उम्मीद करती हूं कि यह अम्र जल्द वाकेअ हो।"** (हवाला :- फुतूहुश्शाम, अज़ :- अल्लामा वाकदी, सफहा : 97)

हज़रत खालिद बिन वलीद ने नमाज़े जनाज़ा पढाई और हज़रत अबान बिन सईद को दफ्न किया गया। हज़रत अबान बिन सईद की तद्फीन तक उन की ज़ौजा ने मुत्लक आह व गिर्या न किया। बल्कि सब्र व तहम्मुल से काम लिया।

हज़रत अबान बिन सईद की ज़ौजा की शुजाअत :-

हज़रत अबान बिन सईद की तद्फीन के बा'द हज़रत उम्मे अबान अपने खैमे की तरफ पलटीं, लैकिन उन का हर कदम एक अज़्मे मोहकम और पुख्ता इरादे के साथ उठ रहा था। अपने शौहर के इन्तेकाम का वल्वला मौज-ज़न था। अपने खैमा में आ कर हथियार थामा। अपने चेहरे पर कपडा बांधा और अपनी हैअत बदल डाली और हज़रत खालिद बिन वलीद से इजाज़त लिये बगैर बाबे तोमा पर हज़रत शुरहबील बिन हसना के लश्कर में आ कर शामिल हो गईं, जहां उन के शौहर शहीद हुए थे। बाबे तोमा पर उस वक्त सख्त लडाई जारी थी। हज़रत उम्मे अबान मुजाहिदों में शामिल हो कर सख्त लडाई लडती थीं। बाब तोमा के बुर्ज पर एक शख्स हाकिम तोमा के आगे खडा था। उस के हाथ में सलीबे आ'ज़म थी और वह सलीब सोने की थी और उस में कीमती जवाहिर जडे हुए थे। सलीब आ'ज़म उठाने वाला शख्स रूमियों को जंग की तर्गीब देता था और सलीब के वसीले से फतह व काम्याबी की दुआ मांगता था। हज़रत उम्मे अबान ने उस शख्स का निशाना लिया और तीर चलाया। तीर ठीक निशाना पर लगा। तीर लगते ही सलीब बर्दार तिलमिला उठा और ज़ख्म लगने से उछला और इस के हाथ से सलीब छूट कर नीचे गिरी। सलीब के गिरते ही मुजाहेदीन ने लपक कर उस को उठा लिया और हज़रत शुरहबील बिन हसना के हवाले कर दिया। शहर पनाह की दीवार से हाकिम तोमा ने देखा कि सलीबे आ'ज़म नीचे गिर कर मुसलमानों के कब्ज़ा में आ गई है तो वह बोखला गया और उसे अपनी हलाकत का खौफ मेह्सूस हुवा। हाकिम तोमा ने रूमियों को पुकार कर कहा कि ऐ सलीब के परस्तारो ! हमारी बुज़ुर्ग और मुकद्दस सलीब अरबों ने छीन ली है। हमारा मज़हबी शआर दुश्मनों के कब्ज़ा में चला गया है और यह अम्र हमारे लिये बाइस आर है। मैं सलीबे आ'ज़म को वापस लेने मैदान में जाता हूं। जिस के दिल में दीने मसीह की ता'ज़ीम व एहतराम हो वह मेरा साथ दे। यह कह कर हाकिम तोमा सुरअत से ज़ीना उतर कर नीचे आया और दरवाज़ा खोलने का हुक्म दिया। दरवाज़ा खुलते ही रूमी लश्कर भी हाकिम तोमा के साथ किल्ले से बाहर निकला।

मैदान में आ कर तोमा ने मुजाहिदों पर तीर और पत्थर शिद्दत से बरसाने शुरू किये। किल्ले की दीवार से भी हम्ले की सख्ती हूई। लेहाज़ा हज़रत शुरहबील ने मुजाहिदों को पीछे हट कर दीवार से इतने फास्ले पर ठहरने का हुक्म दिया कि दीवार के ऊपर से फैंके जाने वाले तीरों और पत्थरों का खतरा न रहे। मुजाहिदों ने पीछे हटना शुरू किया। हाकिम तोमा यह समझा कि मैं दरवाज़ा खोल कर लडने मैदान में आया हूं इस लिये मुसलमान मेरे रोअब व

खौफ की वजह से पीछे हट रहे हैं। रूमी लश्कर के सिपाहियों ने भी यही गुमान किया और किल्ले की दीवार पर मौजूद रूमियों ने भी ऐसा ही सोचा। लेहाज़ा उन के हौसले बुलन्द हुए और कसरत से रूमी किल्ले से निकल कर मैदान में आने लगे। हज़रत शुरहबील बिन हसना के साथ मुजाहिदों ने बडी पामर्दी से रूमियों का मुकाबला किया। रूमियों की ता'दाद बढती ही चली जा रही थी और हाकिम तोमा सब को तर्गीब देता था। हाकिम तोमा मस्त हाथी की मानिन्द झूमता हुवा दाअें बाअें हम्ला करता हुवा आगे बढ रहा था। अपनी हिफाज़त के लिये रूमी गबरों और दिलेरों का गिरोह अपने इर्द गिर्द रखा था। दफ्अतन तोमा ने देखा कि सलीब आ'ज़म हज़रत शुरहबील बिन हसना के हाथ में है। वह मिस्ल चीते के जसत लगा कर हज़रत शुरहबील पर हम्ला आवर हुवा। तोमा ने चिल्ला कर फहश गाली देते हुए हज़रत शुरहबील से कहा कि तुम पर हलाकी लाने वाली बला ब-शक्ल तोमा आ पहोंची है, अपनी जान की खैर चाहते हो तो सलीब मेरे हवाले कर दो। हज़रत शुरहबील ने सलीब को ज़मीन पर डाल दिया और तलवार व ढाल ले कर तोमा के मुकाबला में आ गये। दोनों में शिद्दत की शम्शीर ज़नी शुरू हो गई। तोमा सलीब की वजह से खश्म नाक हो कर बहुत ही ज़ोर से वार करता था। और हज़रत शुरहबील तोमा के तमाम वार ढाल पर ले कर खाली फेरते थे। लेहाज़ा तोमा मुश्तइल हो कर हम्ले की शिद्दत में इज़ाफा करता था और करीब था कि तोमा सलीब हासिल करने में काम्याब हो जाए।

हज़रत उम्मे अबान ने हज़रत शुरहबील बिन हसना के साथ तोमा को लडते देख कर मुजाहिदों से पूछा कि यह शख्स कौन है ? बताया गया यही शख्स दमिश्क का हाकिम तोमा है जो हिरक्ल बादशाह का दामाद है और इसी ने तुम्हारे शौहर को शहीद किया है। अपने शौहर के कातिल को अपनी नज़रों के सामने देख कर हज़रत उम्मे अबान की आंखों से शो'ले बरसने लगे। फौरन कमान में तीर चढा लिया और तोमा का निशाना बांधा और "بِسْمِ اللّٰهِ وَ عَلٰی مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ" कह कर तीर फेंका। तीर तोमा की दाईं आंख में पैवस्त हो गया। तीर लगते ही तोमा भेडिये की तरह चीखा। हज़रत उम्मे अबान ने दूसरा तीर कमान में रख कर निशाना बांधा कि तोमा पर मारें मगर तोमा के मुहाफिज़ों ने तोमा को घेरे में ले लिया। हज़रत उम्मे अबान ने पे दरपै तीर बरसाए और कईं रूमियों को ज़ख्मी कर दिया। दो गबरों को जहन्नम रसीद कर दिया। तीर लगने की वजह से तोमा निढाल हो गया और शिद्दते दर्द से भोंकने लगा और पीठ फैर कर अपने साथियों के साथ किल्ले की तरफ भागा। तोमा को भागता देख कर तमाम रूमी सिपाही भी किल्ले की तरफ भागे। मुजाहिदों ने उन का

तआककुब किया और किल्ले के दरवाज़े तक पहुंचा दिया और इस दौरान तीन सौ रूमियों को कत्ल कर डाला।

हाकिम तोमा और रूमी किल्ले में दाखिल हो गए और दरवाज़ा बन्द कर लिया। हाकिम तोमा दर्द की वजह से बुरी तरह कराह रहा था। फौरन जर्राहों और मुआलिजीन को बुलाया गया। हाकिम तोमा की आंख की मरहम पट्टी की गई। अह्ले दमिश्क ने तोमा से कहा ऐ सरदार ! आज हम पर दो मुसीबतें आईं। एक तो यह कि हम से सलीबे आ'ज़म छीन ली गई और दूसरी यह कि तेरी आंख फूट गई। इसी लिये हम ने कहा था कि इन अरबों से मुकाबला करना हमारे बस की बात नहीं। आज के दिन की फज़ीहत से नसीहत हासिल कर और अरबों से मुसालहत की कोई सूरत इख्तेयार कर। अब भी वक्त है, ज़ियादह कुछ नहीं गया है। अपने दिमाग को आस्मान से ज़मीन पर ला और हमारी बात दिमाग में उतार।

हाकिम तोमा की शैखी भरी बातें :-

हाकिम तोमा अपनी आंख के ज़ख्म की कुल्फत से बे चैन व बेकरार था। लोगों की बातें सुन कर मज़ीद परेशान हुवा। गज़ब नाक हो कर कहा कि ऐसा बुज़दिलाना मश्वरा दे कर तुम अपने ज़मीर के मुर्दा होने का सुबूत देते हो। हमारी सलीबे आ'ज़म हम से छीन ली गई इस से बडा सदमा क्या हो सक्ता है ? मेरी एक आंख ज़ाए हूई लैकिन यकीन जानो कि मुकद्दस सलीब अरबों से वापस हासिल करूंगा और मेरी एक आंख के बदले अरबों की हज़ार आंखें फोडूंगा, ताकि शाह हिरक्ल को मा'लूम हो जाए कि उस के बहादुर दामाद ने अपना बदला ले लिया। ऐ सलीब के परस्तारो ! मैं अन्करीब अरबों के सरदार के साथ फरेब कर के मार डालूंगा और उन को मुल्के शाम से भगा दूंगा। हमारा जो मालो अस्बाब उन्हों ने लूटा है वह उन से वापस छीन लूंगा बल्कि एक लश्कर ले कर मुल्के हिजाज़ पर युरिश करूंगा और उन के सरदार अबू बक्र तक पहोंच जाऊंगा और उन की निशानियों या'नी खान-ए का'बा और रौज़ए अन्वर को मिटा दूंगा। उन की मस्जिदों को खोद डालूंगा। उन के शहरों को तबाह व बरबाद कर दूंगा। उन के घरों को गोहों और वहशी जानवरों का मस्कन बना दूंगा। इस तरह तोमा बडी दैर तक बकवास करता रहा। फिर वह किल्ले की दीवार पर चढा। रूमियों को लडने की तर्गीब देने लगा। पूरे दिन जंग जारी रही यहां तक कि आफ्ताब ने अपना चेहरा उफुक के रैश्मी आंचल के किनारों में छुपा लिया। जंग मौकूफ। गुज़िश्ता शब की तरह आज भी इस्लामी लश्कर के सरदार अपने अपने मकाम पर ठहरे। तमाम दरवाज़ों पर अज़ान कही गई और इशा की नमाज़ बा-जमाअत पढी गई।

❀ रात में सोए हुए इस्लामी लश्कर पर हाकिमे दमिश्क का हम्ला :–

रात के वक्त हाकिम तोमा ने रूमी लश्कर के तमाम सरदारों और शहर के मुअज़्ज़ज़ लोगों को अपने महल में बुलाया और कहा कि हम ता'दाद में और अस्लहा में मुसलमानों से बहुत ज़ियादह हैं। मुसलमानों का लश्कर हमारे शहर के किल्ले का मुहासरा किये हुए है। किल्ले के छे दरवाज़ों पर उन के अलग अलग सरदार अपना लश्कर ले कर ठहरे हैं। लेहाज़ा मैं ने यह तद्बीर सोची है कि आज रात में जब मुसलमान गाफिल सोए पडे हों, तब हम सब यक–बारगी उन पर हम्ला कर दें और इन्हें खत्म कर दें। हम्ला की सूरत यह होगी कि तमाम दरवाज़ों के पास हमारे बहादुर लडने वाले जमा हो जाऐं और पूरी तरह मुसल्लह हों। तमाम दरवाज़े एक ही वक्त में एक साथ खोले जाऐं और तमाम दरवाज़ों से हम निकलें और शब्ख़ूं मार दें। हम्ला करने के लिये नाकूस बजाया जाएगा। नाकूस की आवाज़ सुन कर तमाम दरवाज़े खोल दिये जाऐं और हर दरवाज़े से निकल कर हम्ला कर दें और मुसलमानों को मार डालें। अह्ले दमिश्क ने हाकिम तोमा की तद्बीर को बहुत पसन्द किया और रात में इस्लामी लश्कर पर हम्ला करने की तैयारी में मस्रूफ हो गए।

आधी रात जब बीती तो तोमा ने हर बाब पर जुदा जुदा गिरोह मुकर्रर किये और सब को हिदायत व नसीहत की। मसलन बाबे शर्की वाले गिरोह से कहा कि तुम बहुत एहतियात से काम लेना क्यूं कि इस दरवाज़ा पर मुसलमानों का सरदार है। इसी तरह हर बाब के गिरोह को मुतनब्बेह किया। हर दरवाज़े पर गश्त और मुआइना करने के बा'द तोमा ने नाकूस बजाने का हुक्म दिया। नाकूस बजते ही किल्ले के तमाम दरवाज़े खोल दिये गए हर दरवाज़े से रूमी निकलने शुरू हुए। तमाम ने ज़िरहें पहनी थीं और हाथ में तलवार, नैज़ा वगैरा थे। किल्ले से बाहर आ कर तमाम रूमी मुतफर्रिक इस्लामी कैम्पों पर एक साथ हम्ला आवर हुए।

❀ हज़रत खालिद बिन वलीद का ''वा–मुहम्मदाह'' का ना'रा :–

आधी रात के बा'द जब रूमी हम्ला करने किल्ले से बाहर आने वाले थे उस वक्त कुछ मुजाहेदीन मश्गूले इबादत थे। और कुछ तहज्जुद की नमाज़ के लिये वुज़ू कर रहे थे कि उन्हों ने नाकूस की आवाज़ सुनी, फिर दरवाज़ों के खुलने की आवाज़ आई और थोडी ही दैर में ज़िरह और हथियारों की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। पस वह होशियार हो गए और अपने हमराहियों को जगाना और खतरा से आगाह करना शुरू कर दिया। तमाम मुजाहेदीन चौंक कर मिस्ल शैर उठ खडे हुए और जल्दी जल्दी मुकाबले के लिये निकले। इन्हें मुसल्लह होने का भी मौका नहीं मिला। सिर्फ तलवार और ढाल ले कर दौडे।

किल्ल–ऐ दमिश्क के तमाम अब्वाब और इस्लामी लश्कर के सरदारों का हर बाब पर ठहरना और इस्लामी लश्कर के कैम्प का जुग्राफिया नाज़िरीने किराम की ज़ियाफते तबआ के लिये ज़ैल में दर्ज है। ज़हन में यह खाका मुस्तहज़र रख कर मुतालआ करने से जंग की कैफियत का सहीह अन्दाज़ा होने के साथ साथ मुतालआ का लुत्फ भी दो चंद होगा।

रात के वक्त रूमियों ने मुतफर्रिक अब्वाब पर जब युरिश की थी और अचानक छापा मारा था तब हज़रत खालिद बिन वलीद बाबे शर्की के मुकाबिल जो कैम्प था वहां नहीं थे बल्कि ''दैर'' नाम के मकाम पर जहां इस्लामी लश्कर का खास पडाव था वहां की हिफाज़त के लिये ठहरे हुए थे। इस कैम्प में ख्वातीन व अतफाल और मालो अस्बाब की निगरानी ज़रूरी थी, लेहाज़ा वह अपने साथियों के साथ तक्रीबन एक या दो हज़ार के लश्कर के साथ दैर वज़ीरे खालिद के कैम्प में थे और बाबे शर्की पर हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई को अपना काइम मकाम मुकर्रर किया था। जब रूमियों ने एक साथ तमाम अब्वाब से निकल कर इस्लामी
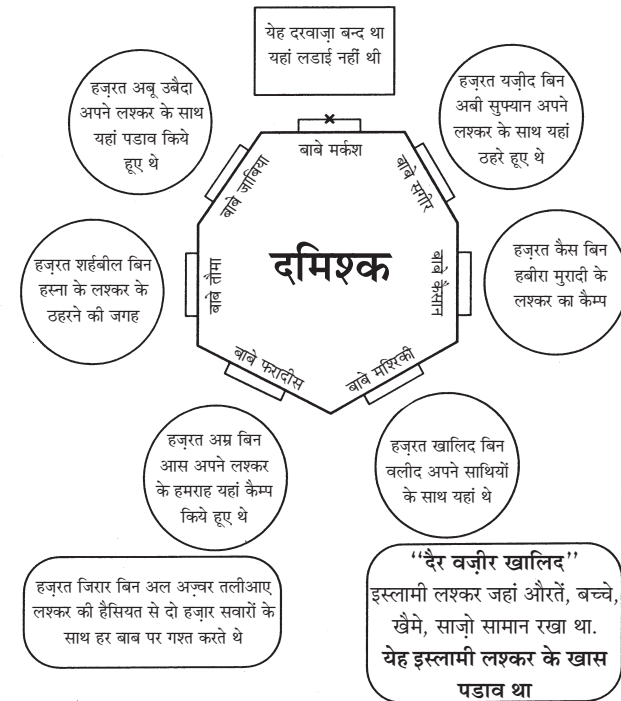
लश्करों पर छापा मारा तो मुजाहिदों ने भी उन को जवाब देते हुए मुकाबला किया। लेहाज़ा एक ज़बरदस्त शौरो गुल बुलन्द हुवा। रात का वक्त होने की वजह से आधे कोस के फ़ास्ला पर वाकेअ "दैर" में इस्लामी कैम्प तक आवाज़ पहोंची। फिर क्या हुवा ? यह जानने से पहले अल्लामा वाकदी की ज़बानी सूरते हाल की कैफियत समाअत फरमाऐं :

"एक शख्स ने उस के साथियों से साहिबे नाकूस के पास जा कर हुक्म इस के बजाने का दिया। पस एक ऐसी आवाज़ सख्त बजाई उस ने कि सिवाए इस के और आवाज़ न थी। यहां तक कि खोला कौम ने सब दरवाज़ों को और दौड पडे लोग उसी वक्त और निकला तोमा दरवाज़े से और सुनी मुसलमानों ने आवाज़। पस दौडे वह लोग ब-जानिब सहाबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के और वह गाफिल थे कौम के फरेब से मगर यह कि जागते और होशियार थे। पस जब सुना लोगों ने आवाज़ को जगा दिया बा'ज़ों ने बा'ज़ को और आवाज़ें देने लगे और उठ खडे हुए लोग अपने ख्वाब-गाहों से मिस्ले शैर हम्ला आवर के। पस नहीं पहुंचे उन तक दुश्मन उन के मगर यह कि वह होशियार हो गए थे। और मुतवज्जेह मुकाबला दुश्मन हुए मगर बे तर्तीब थे। पस लडे लोग बीच अंधेरी रात के और काम किया तलवारों ने और सुना खालिद बिन अल-वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो ने आवाज़ को। पस उठ खडे हुए बद-हवास घबराए हुए। ब-सबब सुनने आवाज़ और फर्याद के और चिल्ला कर कहा

"وَاغَوْثَاهُ۔ وَاِسْلَامَاهُ ۔ وَامُحَمَّدَاهُ۔ اَكِيْدُوْا قَوْمِىْ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ۔ اَللّٰهُمَّ اُنْظُرْ
اِلَيْهِمْ بِعَيْنِكَ الَّتِىْ لَا تَنَامُ وَانْصُرْهُمْ وَلَا تَسلمهُمْ اِلىٰ عَدُوِّهِمْ"

(फुतूहुश्शाम, अज़ : - अल्लामा वाकदी, सफहा : 103)

हज़रत खालिद बिन वलीद ने फौरन हज़रत फत्हान बिन ज़ैद ताई जो हज़रत अदी बिन हातिम ताई के भाई थे उन को अपना काइम मकाम बनाया और तमाम लश्कर उन के साथ रहने दिया और अपने साथ चार सौ (400) सवारों को ले कर इस्लामी कैम्प से बाबे शर्की की जानिब रवाना हुए। हज़रत खालिद और उन के साथी ऐसी उज्लत में रवाना हुए कि ज़िरह पहनने की भी मोहलत न मिली। एक पल की ताखीर भी उन को गवारा न थी। हज़रत खालिद ने अपने घोडे की बाग ढीली छोड दी और वह अपने साथियों के साथ बर्क रफ्तारी

से दमिश्क के किल्ले की तरफ बढ रहे थे। हज़रत खालिद को अपने मुसलमान भाइयों पर नाज़िल मुसीबत का बडा कलक था। और वह घोडे पर सवार हैं और उन की चश्माने मुबारक से मुसल्सल अश्क रवां थे और वह रंज व गम में डूबे अश्आर पढते थे। हज़रत खालिद और उन के साथियों ने सवार होने की हालत में ही अपनी तलवारें म्यान से बाहर कर ली थीं और वह जल्द अज़ जल्द पहुंचने की कोशिश में अपने घोडों की रफ्तार तैज़ से तैज़ तर करते जाते थे। थोडी ही दैर में हज़रत खालिद बाबे शर्की पर पहोंच गए। बाबे शर्की पर सूरते हाल यह थी कि हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई और उन के साथियों पर रूमी कसरत से बलाए ना-गहानी की तरह टूट पडे थे। लैकिन हज़रत राफेअ और उन के साथी बडी जां फशानी और साबित कदमी से मुकाबला कर रहे। जब हज़रत खालिद वहां पहुंचे तो घमसान की लडाई जारी थी। तलवारों के टकराने की वजह से आग के शो'ले चमकते थे। और एक अजीब शौरो गुल उठ रहा था। हज़रत खालिद ने जाते ही ना'र-ए तक्बीर से फेज़ा को भर दिया और मुजाहिदों को पुकार कर कहा कि ऐ गिरोहे मोमेनीन ! मैं खालिद बिन वलीद तुम्हारी मदद करने आ गया हूं। फिर हज़रत खालिद ने रूमियों पर हम्ला किया और उन के दिलेरों को ज़मीन पर डाल दिया। भारी ता'दाद में रूमी कत्ल हुए और बाकी भाग निकले। हज़रत खालिद बाबे शर्की पर रूमियों से मस्रूफे जंग थे मगर उन का दिल दूसरे अब्वाब पर मुकर्रर इस्लामी लश्करों के लिये बेताब था, खुसूसन हज़रत अबू उबैदा और हज़रत शुरहबील के लिये वह ज़ियादह फिक्र मन्द थे। क्यूं कि हज़रत अबू उबैदा उमर रसीदा बुज़ुर्ग शख्स थे और सादा लौह और नर्म तबीअत थे। हज़रत शुरहबील के लिये फिक्र मन्द होने की वजह हाकिम तोमा था क्यूं कि वह अपने साथ जंगजू और दिलेरों को ले कर बडी ता'दाद में हम्ला आवर हुवा था। हज़रत खालिद ने बाबे शर्की पर रूमियों का सफाया करने के बा'द बाबे जाबिया और बाबे तोमा पर मुजाहिदों की मदद के लिये पहोंच गए।

किल्ल-ए दमिश्क के दीगर फाटकों पर जंग की सूरते हाल :-

- बाबे जाबिया पर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह के लश्कर पर जुर्जी बिन काला नाम का रूमी सरदार अपनी कौम के साथ निकला तब हज़रत अबू उबैदा अपने खैमे में नमाज़ पढ रहे थे। दरवाज़ा खुलने और लोगों के निकलने की आवाज़ सुनी। नमाज़ को जल्दी जल्दी पूरी कर के अपने साथियों को पुकारा और होशियार कर दिया। कब्ल इस के कि जुर्जी बिन काला उन पर आ पडे

तमाम मुजाहिदों ने हथियार संभाल लिये। और बडी दिलैरी से मुकाबला किया। इस मा'रका में हज़रत अबू उबैदा सख्त लडाई लडे। बाबे जाबिया पर शबखून मारने वाले रूमियों में से एक भी शख्स ज़िन्दा वापस न गया। जुर्जी बिन काला को भी मुजाहिदों ने काट कर फैंक दिया।

- बाबे तोमा पर हज़रत शुरहबील बिन हसना के लश्कर पर हाकिमे दमिश्क तोमा ने सख्त हम्ला किया था। हज़रत शुरहबील के इलावा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक, हज़रत अबान बिन उस्मान, हज़रत उम्मे अबान बिन्ते उतबा और दीगर मुजाहिदों ने जिस साबित कदमी से मुकाबला किया उस की नज़ीर शायद न मिले। मुजाहिदों ने तेग ज़नी में वह दिलैरी और सुरअत दिखाई कि रूमियों की लाशों के ढैर लग गए। बिल-आखिर तोमा हज़ीमत खा कर अपने साथियों के साथ भाग कर किल्ले में दाखिल हो गया।

- बाबे सगीर पर हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान के लश्कर पर जब रूमियों ने छापा मारा तो हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर अपने हमराहियों के साथ गश्त करते हुए बाबे सगीर के करीब थे। हज़रत ज़िरार और उन के साथी हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान के लश्कर की कुमुक करने पहोंच गए और इस कसरत से शम्शीर ज़नी की कि रूमियों के खून से मैदान की ज़मीन सुर्ख बना दी। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर ने अकेले डेढ सौ रूमियों को काट कर हलाक कर डाला।

कारेईने किराम से इल्तिमास

अब हम कारेईने किराम की अदालत में एक इस्तिगासा पैश करते हैं और उम्मीद करते हैं कि हम गैर जानिबदाराना फैसले से नवाज़े जाअेंगे।

रात के वक्त रूमियों ने इस्लामी लश्कर पर छापा मारा था और इस की इत्तेलाअ जब हज़रत खालिद बिन वलीद को पहोंची तो उन्हों ने "वा गौसाह, वा-मुहम्मदाह" या'नी ऐ फर्याद को पहुंचने वाले, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का ना'रा लगाया। हज़रत खालिद बिन वलीद यह ना'रा 13 सन हिजरी में या'नी हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के दुनिया से पर्दा फरमाने के दो साल बा'द लगा रहे हैं, और ना'रा भी कहां लगा रहे हैं ?मुल्के शाम में और क्यूं लगा रहे हैं ? मुसीबत आ पडी है इस लिये। या'नी हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो का यह अकीदा था कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के दुनिया से तश्रीफ ले जाने के बा'द, दुनिया के किसी भी कोने में तुम पर मुसीबत आ पडे तो रसूले मुख्तार, मालिके काएनात, दाफेउल बला वल वबा, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को पुकारो :

न क्यूं कर कहूं या हबीबी अगिस्नी
इसी नाम से हर मुसीबत टली है

(अज़ :- इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

अगर "**या मुहम्मद**" (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) का ना'रा लगाना शिर्क होता तो क्या हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो फै'ले शिर्क का इर्तिकाब करते ? हरगिज़ नहीं। जो ज़ाते गिरामी कुफ्र व शिर्क को मिटाने के लिये एक सौ से ज़ियादह जेहाद करे, अपने जिस्म को ज़ख्मों से चूर करे, हज़ारों मुशरिकों को तहे तैग करे, वह ज़ाते गिरामी कभी शिर्क का इर्तिकाब कर सक्ती है ? वह ज़ाते गिरामी कि जिन को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम **सैफुल्लाह** (अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार) के खिताब से नवाज़ें, जो इस्लामी लश्कर का सरदार हो, उस इस्लामी लश्कर का सरदार, जिस लश्कर में हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह और हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम

जैसे अश्खास हों जिन का शुमार **अशर-ए मोबश्शरह** में होता है, वह इस्लामी लश्कर जिस में अकाबिर व अजिल्लह सहाबए किराम शामिल हों, उस लश्कर का सरदार कभी शिर्क कर सकता है ? अगर **''या रसूलुल्लाह''** और **''या मुहम्मद''** (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) कहना शिर्क है तो क्या हज़रत खालिद को इस्लाम के बुन्यादी अकाइद की मा'लूमात न थी ? नहीं हाशा लिल्लाह ! उन के मुतअल्लिक ऐसा गुमान करना भी रवा नहीं । क्यूं कि हज़रत खालिद बिन वलीद का शुमार अजिल्लह सहाबए किराम में होता है । उन्हों ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की सोहबत उठाई है । हुज़ूर के वह ता'लीमो तर्बियत याफ्ता हैं । इन्हें यकीन कामिल था कि वा-मुहम्मदाह का ना'रा लगाना शिर्क नहीं बल्कि बाइस रहमत व बरकत है । क्यूं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने ही **''या मुहम्मद''** का विर्द करने की ता'लीम फरमाई है । **''या मुहम्मद''** कहने का सुबूत हदीस में है । (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम)

❀ हदीस से ''या रसूलुल्लाह'' कहने का सुबूत :-

इस हदीस की सनद :-

(1) नसाई (2) तिर्मिज़ी (3) इब्ने माजा (4) हाकिम (5) बैहकी (6) इब्ने खुज़ैमा और (7) अबूल कासिम तबरानी ने हज़रत उस्मान बिन हुनैफ रदियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत किया और तिर्मिज़ी ने इस हदीस को हसन गरीब सहीह कहा, और तबरानी व बैहकी ने इस को सहीह कहा और हाकिम ने बर-शर्ते बुखारी व मुस्लिम सहीह कहा और इमाम अब्दुलअज़ीम मुन्ज़ेरी वगैरा अइम्मए नक्दो तन्कीह ने उन की तस्हीह को मुसल्लम व मुकर्रर रखा है ।

हुज़ूरे अक्दस सैयदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने एक नाबीना को दुआ ता'लीम फरमाई कि बा'द नमाज़ यूं कहे :

"اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ وَاَتَوَجَّہُ اِلَیْکَ بِنَبِیِّکَ مُحَمدٍ نَبِیِّ الرَّحْمَۃِ یَا مُحَمَّدُ اِنِّی اَتَوَجَّہُ بِکَ اِلٰی رَبِّی فِیْ حَاجَتِیْ ھٰذِہٖ لِتُقْضٰی لِیْ اَللّٰھُمَّ فَشَفِّعْہُ فِیَّ"

तर्जुमा : ''इलाही मैं तुझ से मांगता और तेरी तरफ तवज्जोह करता हूं ब-वसीला तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के

कि रहमत के नबी हैं । या रसूलुल्लाह मैं आप के वसीले से अपने रब की तरफ इस हाजत में तवज्जोह करता हूं कि मेरी हाजत रवाई हो । इलाही उन की शफाअत मेरे हक्क में कबूल फरमा ।''

इस हदीस पाक में साफ लफ्ज़ों में **''या मुहम्मद''** (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) कहने की ता'लीम फरमाई गई है । अगर इस तरह निदा करना शिर्क होता तो माहीए शिर्को कुफ्र, हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम इस दुआ की ता'लीम न फरमाते । हज़रत खालिद बिन वलीद बारगाहे रिसालत के ''कातिब'' भी थे । इमामे अजल, मुहक्किक अलल इत्लाक, **हज़रत शाह अब्दुलहक्क मोहद्दीसे देहलवी** कुद्दिसा सिर्रहु ने अपनी मा'रकतुल आरा तस्नीफ **''मदारिजुन नबुव्वत''** जिल्द : 2, बाब हफ्तुम,उन्वान, ''दर ज़िक्रे कातिबाने बारगाहे रिसालत'' के ज़ैल में हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो का शुमार किया है । हज़रत खालिद बिन वलीद ने बारगाहे रिसालत की खिदमत गुज़ारी कर के अहकामे कुफ्र व शिर्क की कामिल मा'लूमात हासिल की थी ।

लैकिन अफ्सोस ! दौरे हाज़िर के मुस्लिम नुमा मुनाफिकीन **''या रसूलुल्लाह''** कहने की सख्ती और शिद्दत से मुमानेअत करते हैं और शिर्क का हुक्म नाफिज़ करते हैं । तक्रीर और तहरीर के ज़रीए गलीज़ तर्दीद करते हैं । या रसूलुल्लाह कहने वाले मोमिन को बिला वजह काफिर और मुशरिक होने का फत्वा देते हैं ।

''या रसूलुल्लाह'' कहने के जवाज़ में मुन्दरजा बाला एक हदीस ही काफी है लैकिन अल-हम्दो लिल्लाह, अइम्म-ए मिल्लते इस्लामिया की जलीलुल कद्र तसानीफ में इस के जवाज़ के सुबूत के अम्बार मौजूद हैं । मसलन :

- ❁ **''शिफाउस सिकाम''** मुसन्निफ :- बकियतुल मुजतहिदीन, तकियुल मिल्लते वद्दीन इमाम अबूल हसन अली सुबुकी
- ❁ **''मवाहिबुल लदुन्निया''** मुसन्निफ :- शारेह सहीह बुखारी,इमाम अजल, अल्लामा अहमद बिन मुहम्मद अल-मिस्री अल्कुस्तलानी

- **"शर्हे मवाहिबुल लदुन्निया"** मुसन्निफ :- अल्लामतुश-शम्स मुहम्मद बिन अब्दुलबाकी ज़रकानी
- **"मतालिउल मुसर्रात"** मुसन्निफ :- अल्लामा फासी
- **"मिर्कात शर्हे मिश्कात"** मुसन्निफ :- अल्लामा मुल्ला अली कारी
- **"अश्अतुल लम्आत"** मुसन्निफ :- शैखे मुहक्किक, शाह अब्दुलहक्क बिन सैफुद्दीन देह्लवी (अल-मुतवफ्फा 1052 सन हिजरी)
- **"अफ्ज़लुल कुरा शर्हे उम्मुल कुरा"** मुसन्निफ :- इमाम इब्ने हजर मक्की
- **"जज़्बुल कुलूब इला दयारिल महबूब"** मुसन्निफ :- शाह अब्दुलहक्क मोहद्दीसे देह्लवी
- **"अन्वारुल इन्तिबाह फी हल्ले निदाए या रसूलल्लाह"** मुसन्निफ :- इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी (अल-मुतवफ्फा 1340 सन हिजरी)
- **"अल-इहलाल ब फैज़िल औलियाए बा'दल विसाल"** मुसन्निफ :- इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिस बरैलवी
- **"अनहारुल अन्वार मिन-यम्मे सलातिल अस्रार"** मुसन्निफ :- इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिस बरैलवी
- **"लवाकिहुल अन्वार फी तब्कातिल अख्यार"** मुसन्निफ :- इमाम आरिफ बिल्लाह अब्दुल वह्हाब शे'रानी
- **"किताबुल अदबिल मुफर्रद"** मुसन्निफ :- इमाम अहमद बिन इस्माईल बुखारी (अल-मुतवफ्फा 256 सन हिजरी)। साहिबे बुखारी शरीफ
- **"नसीमुर्रियाज़"** मुसन्निफ : इमाम शेहाबुद्दीन खफाजी मिस्री

- **"फतावा खैरिया"** मुसन्निफ : इमाम खैरुद्दीन रमली, उस्ताद साहिबे दुर्रमुख्तार
- **"अत्यबुन नेअम फी मद्हे सय्यिदुल अरबे वल अजम"** मुसन्निफ :- शाह वलीयुल्लाह मोहद्दीसे देह्लवी

मुन्दरजा बाला कुतुब में और दीगर मो'तमद व मुस्तनद कुतुबे अइम्म-ए दीन में कुरआन व हदीस और अक्वाल व अफ्आले सहाबए किराम के दलाइले काहिरा बाहिरा कातेआ सातेआ से अज़्हर मिनश्शम्स की तरह ज़ाहिर व साबित किया गया है कि अम्बिया-ए किराम व औलिया-ए इज़ाम से इस्तिगासा व तवस्सुल करते हुए या रसूलुल्लाह, या अली, या गौस वगैरा कहना जाइज़ व मुस्तहसन और सालेहीन में राइज व मश्रूअ है। जिन हज़रात को इस मस्अले की तफ्सील दरकार हो वह खुसूसी तौर पर मुन्दरजा बाला कुतुब की तरफ रूजूअ फरमाएं।

हज़रत उस्मान बिन हुनैफ रदियल्लाहो अन्हो की रिवायत कर्दा **"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुक"** (अल्ख) वाली हदीस एक मोमिन के लिये सुबूते जवाज़े निदा के हक्क में काफी वाफी शाफी है। लैकिन दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन शकावते कल्बी और बुग्ज़ व इनाद की वजह से इस हदीस के मुतअल्लिक भी नए नए शोशे और शगूफे निकाल कर मस्अला को उलझाने की सई नाकाम करते हैं। दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन इस हदीस के मुतअल्लिक यह तावील पैश करते हैं कि यह दुआ सिर्फ हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की ज़ाहेरी हयात में जाइज़ थी क्यूं कि उस वक्त हुज़ूर मौजूद थे, लैकिन अब विसाल शरीफ के बा'द "या मुहम्मद "सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम कहना मम्नूअ है क्यूं कि अब हुज़ूर मौजूद नहीं। यह दुआ हुज़ूरे अक्दस की हयात तक के लिये मख्सूस थी। अवामुन्नास को धोका दे कर बहकाने की मुनज़्ज़म साज़िश के तहत इस किस्म के ज़ेहनी इख्तिराआत ब-तौर दलील पैश करते हैं। अब हम एक कवी शहादत पैश करते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह के दुनिया से पर्दा फरमाने के बा'द अजिल्लह सहाबए किराम ने हाजत मन्दों को इस दुआ की ता'लीम व तल्कीन फरमाई है।

सहाबीए रसूल हज़रत उस्मान बिन हुनैफ और एक हाजत मन्द

इमामे अजल, अबूल कासिम सुलैमान बिन अहमद बिन अय्युब तिब्रानी (अल-मुतवफ्फा 360 सन हिजरी)की किताब ''मो'जमे कबीर'' में इस हदीस की शर्ह में साफ मर्कूम है :

"اَنَّ رَجُلًا كَانَ يَخْتَلِفُ اِلىٰ عُثْمَان بْنِ عَفَّانَ رَضِىَ اللهُ تعالىٰ عَنْهُ فِىْ حَاجَةٍ لَهٗ وَكَانَ عُثْمٰنُ لَا يَلْتَفِتُ اِلَيْهِ وَلَا يَنْظُرُ فِىْ حَاجَتِهٖ فَلَقِىَ عُثْمَانُ بْنُ حُنيف رَضى اللهُ تَعَالىٰ عَنْهُ فَشَكىٰ ذَالِكَ اِلَيهِ. فَقَالَ لَهٗ عُثْمَانُ بْنُ حُنيف رضى اللهُ تَعَالىٰ عَنهُ اِئتِ المِيْضَاةَ فَتَوَضَّاءَ ثُمَّ ائْتِ الْمَسْجِدَ فَصَلِّ فِيْهِ رَكَعْتَيْنِ ثُمَّ قُلِ اللّٰهُمَّ اِنِّى اَسْأَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلىَ اللّٰهُ تَعَالىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِىِّ الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ اِنِّى اَتَوَجَّهُ بِكَ اِلىٰ رَبِّى فَيُقْضىٰ حَاجَتِى وَتَذَكَّرُ حَاجَتَكَ وَ رُحْ اِلَىَّ حَتّىٰ اَرُوْحَ مَعَكَ. فَانْطَلَقَ الرَّجُلُ فَصَنَعَ مَا قَالَ لَهٗ ثُمَّ اَتىٰ بَابَ عُثْمٰنَ رَضِىَ اللّٰهُ تعالىٰ عَنْهُ فَجَاءَ البَوَّابُ حَتّٰى اَخَذَ بِيَدِهٖ فَاَدْخَلَهٗ عَلىٰ عَثمٰنَ بْنَ عَفَّانُ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالىٰ عَنْهُ فَاَجْلَسَهٗ مَعَهٗ عَلى الطِّنْفِسَةِ وَقَالَ ما حَاجَتُكَ؟ فَذَكَرَ حَاجَتَهٗ فَقَضَاهَا ثُمَّ قَالَ مَا ذَكَرْتَ حَاجَتَكَ حَتّٰى هٰذِهِ السَّاعَةَ وَقَالَ مَا كَانَ لَكَ مِنْ حَاجَةٍ فَأْتِنَا ثُمَّ اَنَّ الرَّجُلَ خَرَجَ مِنْ عِنْدِهٖ فَلَقِىَ عُثْمٰنَ بْنَ حنيْفِ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالىٰ عَنْهُ فَقَالَ لَهٗ جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْراً مَا كَانَ يَنْظُرُ فِى حَاجتِى وَلَا يَلْتَفِتُ اِلَىَّ حَتىٰ كَلِّمْتَهٗ فِىَّ. فَقَالَ عُثْمٰنُ بنُ حنيفِ رَضِىَ اللّٰهُ تعالىٰ عنهٗ وَاللّٰهِ مَا كَلَمْتُهٗ وَلٰكِنْ شَهِدْتُ رَسُولَ اللّٰهُ صلى اللّٰه تَعَالىٰ عَليهِ وَسلمّ وَاَتَاهُ رَجُلٌ ضَرِيْرٌ فَشَكَا اِلَيْهِ ذَهَابَ بَصَرِهٖ فَقَالَ لَهُ النَبِىُّ صَلىَّ اللّٰهُ تعالىٰ عَليهِ وَسلمَّ ائْتِ الْمِيْضَأَةَ فَتَوَضَّاْ ثُمَّ صَلِّ رَكعتَيْنِ ثُمَّ ادْعُ بِهٰذِهِ الدَّعْوَاتِ فَقَالَ عُثْمٰنُ بْنُ حنيف رَضى اللّٰهُ تَعَالىٰ عَنْهُ فَوَاللهِ مَا تَفَرَّقْنَا وَطَالَ بِنَا الحَدِيْثُ حَتّىٰ دَخَلَ عَلَيْنَا الرَّجُلُ كَاَنَّه لَمْ يَكُنْ بِهٖ ضَرٌّ قَطُّ"

मर्दाने अरब..... हिस्सा अव्वल

तर्जुमा : ''एक हाजत मन्द अपनी हाजत के लिये अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहो तआला अन्हो की खिदमत में आता जाता था । लैकिन अमीरुल मो'मिनीन उस की तरफ इल्तिफात नहीं फरमाते थे और न उस की हाजत पर नज़र फरमाते थे । उस हाजत मन्द शख्स ने हज़रत उस्मान बिन हुनैफ रदियल्लाहो तआला अन्हो से इस अम्र की शिकायत की । उन्हों ने फरमाया कि वुज़ू कर के मस्जिद में दो रक्अत नमाज़ पढ फिर दुआ मांग कि इलाही मैं तुझ से सवाल करता हूं और तेरी तरफ अपने नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के वसीले से तवज्जोह करता हूं । या रसूलुल्लाह मैं हुज़ूर के तवस्सुल से अपने रब की तरफ मुतवज्जेह होता हूं कि मेरी हाजत रवाई फरमाए और फिर अपनी हाजत ज़िक्र कर । फिर शाम के वक्त मेरे पास आना ताकि मैं भी तेरे साथ अमीरुल मो'मिनीन के पास चलूंगा । वह हाजत मन्द गया और जिस तरह हज़रत उस्मान बिन हुनैफ ने कहा था यूंही किया । फिर वह हाजत मन्द अकैला ही अमीरुल मोमेनीन के आस्ताने पर हाज़िर हुवा । थोडी दैर में दरबान आया और उस हाजत मन्द का हाथ पकड कर अमीरुल मोमेनीन के हुज़ूर ले गया । अमीरुल मोमेनीन ने उस हाजत मन्द शख्स को अपने साथ मसनद पर बिठाया और उस की हाजत पूछी । उस शख्स ने अपनी हाजत अर्ज़ की तो अमीरुल मो'मिनीन ने फौरन उस की हाजत पूरी फरमा दी और इर्शाद फरमाया कि इतने दिनों के बा'द तुम ने अपनी हाजत बयान की । अब जब भी तुम्हें कोई हाजत पैश आए तो हमारे पास चले आया करो । वह शख्स अमीरुल मो'मिनीन के पास से निकल कर हज़रत उस्मान बिन हुनैफ से मिला और कहा कि अल्लाह तआला तुम्हें जज़ाए खैर दे आप की शिफारिश की वजह से अमीरुल मोमेनीन ने मेरी हाजत पर नज़र फरमाई और मेरी तरफ तवज्जोह फरमाई । हज़रत उस्मान बिन हुनैफ ने फरमाया कि खुदा की कसम ! मैं ने तुम्हारे मुआमले में अमीरुल मो'मिनीन से कुछ भी नहीं कहा, मगर हुवा यह कि मैं ने हुज़ूरे अक्दस सैयदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को देखा कि हुज़ूरे अक्दस की खिदमत में एक नाबीना शख्स हाज़िर हुवा और हुज़ूर

से अपनी नाबीनाई की शिकायत की। हुज़ूर ने उस से इर्शाद फरमाया कि वुज़ू कर के दो रक्अत नमाज़ पढे, फिर यह दुआ करे। खुदा की कसम हम उठने भी न पाए थे और बातें ही कर रहे थे कि वह नाबीना शख्स इस हाल में हमारे पास आया कि गोया वह कभी अंधा न था।''

(हवाला : **अन्वारुल इन्तिबाह फी हल्लि निदाइ या रसूलल्लाह,** मुसन्निफ : आ'ला हज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी, मत्बूआः मत्बा' अहले-सुन्नत व जमाअत, बरैली,सफहा : 21)

कारेईने किराम तवज्जोह फरमाऐं कि हज़रत उस्मान बिन हुनैफ रदियल्लाहो तआला अन्हो का शुमार अकाबिर सहाबए किराम में होता है। उन्हों ने एक हाजत मन्द को खिलाफते उस्मानी के ज़माने में यह दुआ ता'लीम फरमाई। हज़रत सय्यिदोना उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहो तआला अन्हो का दौरे खिलाफ्त 24, सन हिजरी से 35, सन हिजरी तक रहा है। लेहाज़ा साबित हुवा कि हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के दुनिया से पर्दा फरमाने के 14, से 25, साल के दरमियान हज़रत उस्मान बिन हुनैफ रदियल्लाहो तआला अन्हो ने यह दुआ ता'लीम व तल्कीन फरमाई। अगर **''या रसूलुल्लाह''** और **''या मुहम्मद''** (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) कहना शिर्क होता तो क्या सहाबए किराम शिर्किया अल्फाज़ पर मुश्तमिल दुआ किसी को ता'लीम करते ? हरगिज़ नहीं, बल्कि हमारे लिये सहाबए किराम का कौल व फे'ल जवाज़ व इस्तेहबाब की दलील है। फिर सहाबए किराम के मुबारक ज़माने से ले कर ताबेईन, तबऐ ताबेईन के दौर तक और फिर उन के दौर से सदहा साल तक मिल्लते इस्लामिया के अइम्म-ए दीन, मुज्तहिदीने किराम, ओलमा-ए मुतकद्दिमीन व मुतअख्खेरीन, सल्फे सालेहीन, औलिया-ए कामिलीन वगैरा बुज़ुर्गों ने **''या रसूलुल्लाह''** के अल्फाज़ से मुज़ैयन दुआऐं, अवरादो वज़ाइफ खुद किये, अपने मुतअल्लिकीन और मुतवस्सिलीन को ता'लीम फरमाए, इस के जवाज़ व मुस्तहब होने के सुबूत में कुतुब तस्नीफ फरमाईं। उन तमाम के अफ्आल व अक्वाल को मीज़ाने अद्ल के एक पल्ले में रखो और दूसरे पल्ले में दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन के नज़रियात व ए'तेकाद को रखो, जो यह कहते और लिखते हैं कि या रसूलुल्लाह कहना शिर्क है। फिर मुवाज़ना कर के फैसला फरमाओ कि हक्क क्या है ? और बातिल क्या है ? इस मस्अला की बहस को मज़ीद तूल न देते हुए हम अपने ज़ी एह्तेराम कारेईन को मुल्के शाम के शहर दमिश्क की तरफ वापस ले चलते हैं।

जंगे दमिश्क का तीसरा दिन

गुज़िश्ता शब रूमियों ने इस्लामी लश्कर पर युरिश की थी, मगर मुजाहिदों ने उन के इरादों को खाक में मिला दिया और रूमियों ने हज़ीमत उठाई थी। जब रूमी भाग कर किल्ले में बन्द हुए, तो रोउसाए दमिश्क ने हाकिम तोमा से कहा कि तूने हमारा कहना नहीं माना और हर हाल में आमादए जंग हुवा। मक्रो फरेब कर के रात में युरिश भी की लैकिन नतीजा यह हुवा कि हमारे बे-शुमार लोग हलाक हुए। लेहाज़ा हम तुम को मुतनब्बेह करते हैं कि तुम अरबों से सुलह कर लो और लडने का ख्याल अपने दिमाग से निकाल दो। अगर तुम ने हमारी बात नहीं मानी तो हम अरबों से सुलह कर लेंगे और तुझ को तेरे हाल पर छोड देंगे। तोमा ने कहा कि मुझे कुछ दिनों की मोहलत दो ताकि मैं हिरक्ल बादशाह को सूरते हाल से मुत्तलेअ कर दूं। अगर वह हमारी कुमुक करता है तो ठीक है वरना हम सुलह कर लेंगे। तोमा ने अव्वल ता आखिर तमाम अहवाल लिख कर सुब्ह होने से पहले हिरक्ल बादशाह के पास कासिद को रवाना कर दिया।

जब सुब्ह हूई और दिन का उजाला फैला तो हज़रत खालिद ने तमाम दरवाज़ों पर इस्लामी लश्कर के सरदार को हुक्म भेजा कि अपने अपने कैम्प से आगे बढ कर किल्ले की तरफ जाओ और सख्त हम्ला शुरू कर दो। हुक्म मिलते ही हर बाब पर मुकीम इस्लामी लश्कर किल्ले की दीवार के करीब आ गया और हम्ला शुरू कर दिया। अहले दमिश्क पर मुआमला तंग और दुश्वार हो गया। अहले दमिश्क ने पैगाम भेजा कि चंद दिनों के लिये जंग मौकूफ कर दी जाए और कुछ दिनों की मोहलत दी जाए क्यूं कि हम सुलह के मुतअल्लिक मश्वरा कर रहे हैं। लैकिन हज़रत खालिद ने अहले दमिश्क की दरख्वास्त को ठुक्रा दिया और साफ इन्कार कर दिया, बल्कि हम्ले की शिद्दत में इज़ाफा कर दिया। अहले दमिश्क निहायत परेशान और हैरान थे। अहले दमिश्क सब के सब जमा हुए और कौम के काइदीन से कहा कि अब हम से सब्र व तहम्मुल नहीं हो सक्ता। मुहासरा की वजह से हम उक्ता गए हैं। लेहाज़ा कोई सबील निकालो और हम को मुसीबत से छुटकारा दिलाओ।

उस वक्त मज्मेअ में एक बुढ्ढा नस्रानी राहिब भी मौजूद था, जो अगली किताबों का ज़बरदस्त आलिम था। उस ने कहा कि अगर हिरक्ल बादशाह अपना तमाम हथियार और लश्कर ले कर भी आएगा, तब भी मुसलमानों को दफेअ नहीं कर सकेगा। क्यूं कि मैं ने

अगली किताबों में पढा है कि उन के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम खातेमुन नबियीन और सैयेदुल मुर्सलीन हैं और उन का दीन सब दीनों पर गालिब हो जाएगा। लेहाज़ा तुम हीला जूई तर्क करो और अपने तमाम कामों को छोड कर अरबों से सुलह कर लो। वह जो भी मांगें उन को दे दो और सुलह कर लो, यही तुम्हारे और तुम्हारे अह्लो अयाल के हक्क में बेहतर और मुनासिब है।

अह्ले दमिश्क ने बुढ्ढे नस्रानी राहिब की राए से इत्तेफाक करते हुए लडाई मौकूफ कर दी और जो लोग किल्ले की दीवार से तीर और पत्थर फैंक कर इस्लामी लश्कर पर हम्ला कर रहे थे उन को भी नीचे उतार लिया और किसी भी किस्म की जंगी कारवाई करने से बाज़ रहे। किल्ले की दीवार पर सन्नाटा छा गया। अह्ले दमिश्क किल्ले में महसूर हो कर सुलह के मुतअल्लिक गुफ्तगू में मश्गूल हो गए। जंगे दमिश्क का तीसरा दिन इस तरह सुकून से गुज़रा। रात के वक्त अह्ले दमिश्क फिर बुढ्ढे नस्रानी राहिब के पास आए और कहा कि ऐ हमारे मुअज़्ज़ज़ दीनी रहबर ! मुसलमानों से सुलह के मुआमले में आप क्या मश्वरा देते हैं, राहिब ने कहा कि बाबे मश्रिकी पर उन के सरदार खालिद बिन वलीद हैं वह नौ-जवान जंगजू और जोशीले शख्स हैं ,वह सुलह पर जल्द आमादा नहीं होंगे। लैकिन बाबे जाबिया पर उन के सरदार अबू उबैदा बिन जर्राह हैं। वह बुढ्ढे, सुलह पसन्द और नर्म तबीअत शख्स हैं। उन के पास किसी सूरत से पहोंच जाओ और सुलह कर के उन से अमान हासिल कर लो। मुसलमानों की एक खूबी और खुसूसियत यह भी है कि अगर उन के लश्कर का कोई गुलाम भी किसी को अमान दे देता है तो लश्कर का सरदार उस की अमान का लिहाज़ करता है और अमान को मन्ज़ूर करता है। यह कौम अपने वा'दे की पक्की है और अह्द शिकनी व वा'दा खिलाफी उन की आदत व फित्रत में नहीं।

अह्ले दमिश्क सुलह के लिये हज़रत अबू उबैदा के पास :-

जब रात हूई तो हर दरवाज़े पर मुसलमान होशियार रहते हुए किल्ले के आस पास निगेहबानी कर रहे थे, ताकि अगर गुज़िश्ता शब की तरह रूमी लश्कर मक्रो फरेब से हम्ला करे, तो इस का फौरन तदारुक किया जा सके। रात का कुछ हिस्सा गुज़रा था कि बाबे जाबिया से एक रूमी ने ब-ज़ुबाने अरबी बुलन्द आवाज़ से पुकारा कि ऐ गिरोहे अरब ! हम सुलह के मुतअल्लिक गुफ्तगू करना चाहते हैं, क्या हम को अमान मिल सक्ती है कि हम तुम्हारे सरदार के पास आ कर सुलह का मुआमला तय कर लें। उस वक्त हज़रत आमिर बिन तुफैल अद्दौसी अपने साथियों के हमराह किल्ले के करीब गश्त कर रहे थे। हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहो तआला अन्हो भी उन

के साथ थे। हज़रत अबू हुरैरा फौरन दौडते हुए हज़रत अबू उबैदा के पास गए और कहा कि ऐ सरदार ! रूमी सुलह की गुफ्तगू करने आप के पास आना चाहते हैं और आप के पास आने के लिये अमान चाहते हैं। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि जाओ उन से कह दो कि हमारे सरदार के पास आने और फिर शहर तक वापस जाने तक तुम को अमान है। हज़रत अबू हुरैरा किल्ले की दीवार के करीब आए और पुकार कर कहा कि ऐ अह्ले दमिश्क ! तुम्हारे लिये हमारे सरदार ने अमान का वा'दा फरमाया है, तुम बिला किसी खौफ व खतर आ सक्ते हो। अह्ले दमिश्क ने कहा कि ऐ बिरादर अरबी ! तुम कौन शख्स हो ? के हम तुम्हारी बात पर भरोसा कर सकें ? हज़रत अबू हुरैरा ने जवाब दिया कि मैं अबू हुरैरा अद्दौसी सहाबीए रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम हूं। हमारा तरीका गद्र और फरेब करना नहीं है। हम कौमे अरब ज़मानए जाहिलियत में भी अह्द व वफा के पाबन्द थे और अब जब कि अल्लाह तआला ने अपने महबूबे अकरम के तुफैल हम को राहे रास्त दिखाई है, तो अब तो हम हरगिज़ वा'दा खिलाफी नहीं कर सक्ते। अल्लाह तबारक व तआला ने कुरआने मजीद में अह्द पूरा करने का हुक्म देते हुए फरमाया है :

"وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا"

(सूरए बनी इसराईल, आयत : 34)

तर्जुमा : ''और अह्द पूरा करो। बे शक अह्द से सवाल होना है।''

(कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत अबू हुरैरा का जवाब सुन कर अह्ले दमिश्क ने बाबे जाबिया खोला और दीने नस्रानिया के एक सौ ओल्मा, रूउसा और गबर दरवाज़ा से बाहर निकले। उन तमाम ने ज़ुन्नार और सलीबें पहन रखी थीं। मुजाहिदों ने उन के कुफ्री शआइर को दूर किया और फिर उन को हज़रत अबू उबैदा के पास ले आए। सुलह के तअल्लुक से गुफ्तगू का आगाज़ हुवा और मुआमला तय हो गया। अह्ले दमिश्क ने जिज़्या अदा करना मन्ज़ूर किया और अह्ले दमिश्क के लिये अमान हासिल कर ली और साथ में उन के आठ कनीसा को मुन्हदिम न करने का अह्द भी ले लिया। हज़रत अबू उबैदा ने उन को सुलह की दस्तावेज़ लिख दी। लैकिन दस्तखत नहीं फरमाए क्यूं कि वह चाहते थे कि लश्कर के सिपाह सालारे आज़म होने की हैसियत से हज़रत खालिद बिन वलीद दस्तखत करें यही मुनासिब है। हज़रत अबू उबैदा ने यह सोचा कि हज़रत खालिद को सुब्ह बुला कर तमाम कैफियत से आगाह कर दूंगा

और दस्तखत ले लूंगा । इस वक्त आधी रात में उन को तक्लीफ दे कर यहां बुलाना मुनासिब नहीं । क्यूं कि वह गुज़िश्ता शब भर और आज का पूरा दिन जंग की सख्त मशक्कत उठाए हुए हैं । लेहाज़ा उन के आराम में खलल वाकेअ नहीं करना बेहतर है । अलस्सुब्ह उन को सुलह की बशारत देंगे । हज़रत अबू उबैदा इसी सोच में थे कि अह्ले दमिश्क ने कहा कि ऐ सरदार ! हम यह चाहते हैं कि आप इसी वक्त हमारे साथ चलो और शहर में दाखिल हो कर शहर पर कब्ज़ा कर लो ।

हज़रत अबू उबैदा फौरन तैयार हो गए और अपने साथ एक सौ मुजाहिदों को लिया । उन एक सौ मुजाहिदों में पैंतीस सहाबए किराम थे और पैंसठ ताबेईन थे । हज़रत अबू उबैदा अह्ले दमिश्क के वफ्द के हमराह किल्ल-ए दमिश्क की तरफ पैदल रवाना हुए । रास्ते में आप के साथियों में से बा'ज़ ने मश्वरा दिया कि ऐ अमीनुल उम्मत ! हम रूमियों की बात पर ए'तेमाद कर के चल पडे हैं कहीं ऐसा न हो कि यह धोका दे बैठें और किल्ले के अन्दर हम को ले जा कर बद-अहदी कर के हम को हलाक कर दें । लेहाज़ा मुनासिब मा'लूम होता है कि इस रूमी वफ्द के कुछ अहम लोगों को यर्गमाल के तौर पर अपने लश्कर के कब्ज़ा में रख लें, ताकि रूमी लोग हमारे साथ बद-अहदी करने में सौ मरतबा सोचें और झिजक मेह्सूस करें । मुजाहिदों की इस दूर अन्देशी पर हज़रत अबू उबैदा ने मसर्रत का इज़्हार फरमाया और इन्हें इत्मीनान और तसल्ली देते हुए जो इर्शाद फरमाया वह अल्लामा वाकदी की किताब में यूं है :

> ''नमाज़े फर्ज़ पढी अबू उबैदा ने और सो गए । देखा रसूलुल्लाह को ख्वाब में के फरमाते हैं आप "اَللَّيْلَةُ تُفْتَحُ الْمَدِيْنَةُ اِنْشَاءَ اللهُ تَعَالٰى" अबू उबैदा बिन जर्राह रदियल्लाहो तआला अन्हो ने बयान किया है कि देखा मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व आलेहि व सल्लम को मुस्त'जिल । पस अर्ज़ किया मैं ने कि या रसूलुल्लाह क्या सबब है कि मैं मुस्त'जिल देखता हूं । पस फरमाया आप ने के मैं आया हूं इस वास्ते कि जनाज़ए अबू बक्र सिद्दीक पर जाउं । पस बेदार हुए अबू उबैदा बिन जर्राह और नहीं लिया अबू उबैदा बिन जर्राह ने कौम से गिरोह ब-एतमाद इर्शादे सिद्क बुन्याद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व आलेहि व सल्लम के।''

(हवाला : - फुतूहुश्शाम, सफ्हा : 108)

नोट : **यर्गमाल** = वह फर्द या अफराद जो शराइत की पाबन्दी की ज़मानत में दुश्मन के हवाले किये जाअें ।

(फीरोज़ुल-लुगात, सफ्हा : 1067)

हज़रत अबू उबैदा रदियल्लाहो तआला अन्हो को **आलिमे मा कान व-मा यकून और मुखबिरे सादिक सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम** ने ख्वाब में बशारत देते हुए फरमाया कि "اَللَّيْلَةُ تُفْتَحُ الْمَدِيْنَةُ اِنْشَاءَ اللهُ تَعَالٰى" या'नी **''इसी रात में शहर फतह हो जाएगा अगर अल्लाह तआला ने चाहा ।''** लेहाज़ा हज़रत अबू उबैदा रदियल्लाहो अन्हो को ए'तेमादे कामिल था कि रूमी हमारे साथ बे-वफाई नहीं करेंगे । क्यूं कि महबूब आका सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया है कि आज रात में शहर फतह हो जाएगा । और इर्शादे गिरामी सिद्क की बुन्याद पर ही मब्नी है । और इस वक्त मैं बिल-यकीन शहर को फतह करने ही जा रहा हूं । लेहाज़ा ब-तौरे यर्गमाल किसी रूमी को रखने की मुत्लक ज़रूरत नहीं । इसी वजह से उन्हों ने यर्गमाल की तरफ तवज्जोह ही न फरमाई ।

कारेईने किराम की तवज्जोह दरकार है कि हज़रत अबू उबैदा का पुख्ता अकीदा था कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने ख्वाब में फरमाया कि **''आज रात में शहर फतह हो जाएगा''** लेहाज़ा इर्शाद के मुताबिक यकीनन आज शब में शहर फतह हो कर ही रहेगा । और हज़रत अबू उबैदा अपने साथ एक सौ सहाबा और ताबेईन को ले कर किसी भी किस्म की हिफाज़त का इन्तेज़ाम किये बगैर रूमियों के वफ्द के साथ चल दिये । एक सौ (100) सहाबा व ताबेईन की ज़िन्दगी खतरे में डालना और वह भी ख्वाब की बशारत पर ए'तेमाद करते हुए । सिर्फ अबू उबैदा रदियल्लाहो तआला अन्हो ही नहीं बल्कि उन के साथ जाने वाले एक सौ सहाबा व ताबेईन और उन को जाने के लिये रुखसत करने वाले लश्करे इस्लाम के हज़ारों ताबेईन व सहाबा को भी पुख्ता यकीन था कि **जब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने आज की रात में शहर फतह होने की बशारत दी है, तो यकीनन आज रात में ही शहर फतह हो कर रहेगा । इस में शक की कोई गुन्जाइश ही नहीं ।**

लैकिन अफ्सोस के दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन का यह अकीदा है कि लडाई में फतह होगी या शिकस्त इस बात का अम्बिया-ए किराम को इल्म नहीं था और ऐसा अकीदा रखना शिर्क है ।

वहाबी, गैर मुकल्लिद, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के इमामुल अव्वल फिल हिन्द, मौलवी इस्माईल देह्ल्वी कि जिस को तब्लीगी जमाअत के मुत्तबेईन "मौलाना शहीद" और न जाने क्या क्या अल्काब से नवाज़ते हैं। वह मौलवी इस्माईल देह्ल्वी साहिब ने अपनी रुसवाए ज़माना किताब **"तक्वीयतुल ईमान"** की फस्ल सानी, इश्राक फील इल्म के रद्द में ज़ेरे उन्वान "नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को इल्मे गैब हासिल नहीं था" लिखा है :

> **"और इसी तरह कुछ इस बात में भी उन को बडाई नहीं कि अल्लाह ने गैब दानी उन के इख्तेयार में दे दी हो कि जिस के दिल का हाल चाहें मा'लूम कर लें या जिस गाइब का हाल जब चाहें मा'लूम कर लें कि वह ज़िन्दा है या मर गया, या किस शहर में है या किस हाल में है या जिस आइन्दा बात को जब इरादा करें तो दर्याफ्त कर लें कि फुलां के औलाद होगी या न होगी या इस सौदागरी में इस को फाइदा होगा या न होगा या इस लडाई में इस को फतह होगी या शिकस्त ? इन बातों में बन्दे बडे हों या छोटे सब यक्सां बे-खबर और नादान हैं।"**

(हवाला : त**क्वीयतुल ईमान**, मुसन्निफ : – **मौलवी इस्माईल देह्ल्वी**, नाशिर : दारुस्सल्फिया, मुम्बई, सफहा : 46)

"तक्वीयतुल ईमान" की मुन्दरजा बाला इबारत में साफ लफ्ज़ों में कहा गया है कि लडाई में फतह होगी या शिकस्त ? इस बात का इल्म किसी बडे बन्दे या'नी अम्बिया-ए किराम या छोटे बन्दे या'नी आम्मतुल मुस्लिमीन को नहीं, बल्कि वह तमाम बे-खबर और नादान होने में यक्सां हैं ? जब कि अजिल्ल-ए सहाबए किराम का यह अकीदा है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फतह की खबर दी है, वह हक्क है। सिर्फ फतह की ही खबर नहीं बल्कि फतह हासिल होने का वक्त भी बता दिया कि आज रात में ही फतह हासिल होगी। कारेईन फैसला करें कि सहाबए किराम का अकीदा दुरुस्त है या मौलवी इस्माईल देह्ल्वी और उन के मुत्तबेईन दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन का ? और हम को किन के नक्श कदम पर चलना है ?

अल-किस्सा ! हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह जब दमिश्क के किल्ले में बाबे जाबिया से दाखिल हुए तब रात का आखरी हिस्सा था। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने फरमाया था कि इसी रात शहर फतह होगा लेहाज़ा रात ही में शहर फतह हुवा। और क्यूं न हो ?

खुदा ने क्या तुझ को आगाह सब से
दो आलम में जो कुछ खफी व जली है

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद का बाबे शर्की से दमिश्क में दाखिला :-

जिस तरह हज़रत अबू उबैदा के साथ रात ही में फतह अज़ सुलह का मुआमला पैश आया, इसी तरह हज़रत खालिद बिन वलीद के साथ भी इसी रात में फतह ब-ज़ोर शम्शीर का मुआमला पैश आया। हज़रत खालिद बिन वलीद ने दिन के वक्त बाबे शर्की पर सख्त हम्ला किया था। इस की वजह यह हूई थी कि हज़रत अम्र बिन अल-आस के भाई और फलस्तीन में शहीद होने वाले हज़रत सईद के वालिद हज़रत खालिद बिन सईद को रूमियों ने ज़हर-आलूद तीर मार कर शहीद कर दिया था। हज़रत खालिद बिन वलीद ने नमाज़े जनाज़ा पढा कर उन को बाबे शर्की के करीब दफ्न किया। फिर हज़रत खालिद बिन वलीद खश्मनाक हो कर शिद्दत से हम्ला आवर हुए थे। जब रात का कुछ हिस्सा गुज़रा तो हज़रत खालिद बिन वलीद के पास "यूशा बिन मरकस" नाम का एक रूमी कस आया। यूशा बिन मरकस दीने नस्रानिया का आलिम था और उस ने मलाहिम और कुतुबे साबिका में पढा था कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के अस्हाब के हाथों मुल्के शाम फतह होगा और दीने इस्लाम तमाम अद्यान पर गालिब हो जाएगा। यूशा बिन मरकस का मकान बाबे शर्की के किल्ले की दीवार से मुलहिक था। आधी रात में उस ने अपने मकान से मुलहिक किल्ले की दीवार में नक्ब ज़नी कर के बाहर निकल कर हज़रत खालिद बिन वलीद के पास आया और कहा कि अगर मुझ को और मेरे अह्लो अयाल को अमान दी जाए तो मैं अपने घर के ज़रीए तुम को किल्ल-ए शहर में दाखिल कर दूं। यूशा बिन मरकस ने अपने मकान में नक्ब ज़नी का किस्सा बयान किया और यह भी बताया कि बाबे शर्की मेरे मकान से बिल्कुल करीब है। हज़रत खालिद बिन वलीद ने हज़रत का'ब बिन ज़ुम्रा को सरदार मुकर्रर कर के उन के साथ एक सौ (100) मुजाहिदों को यूशा बिन मरकस के हमराह रवाना किये और उन को हुक्म दिया कि मौका' पा कर किल्ले के अन्दर से बाबे शर्की का कुफ्ल खोल देना मैं लश्कर ले कर दरवाज़े के बाहर मौजूद

होंगा। तुम लोग दरवाज़े खोल देना, मैं लश्कर ले कर शहर में दाखिल हो जाऊंगा। हज़रत खालिद ने उन को रवाना करने के बा'द लश्कर के तमाम मुजाहिदों को बेदार किया और सब को मुसल्लह हो कर बाबे शर्की पर जाने का हुक्म दिया। यह तमाम मुआमला ना-गहानी हुवा था। और यूशा बिन मरकस की पैशकश और तद्बीर इतनी नफा' बख्श थी कि हज़रत खालिद बिन वलीद ने बिला किसी ताम्मुल और ताखीर इस की तक्मील में मस्रूफ हो गए और उन के पास भी इत्ना वक्त न रहा कि इस मुहिम के मुतअल्लिक हज़रत अबू उबैदा की राए मा'लूम करें या उन को इस अम्र की इत्तेलाअ दें। उन्हों ने भी हज़रत अबू उबैदा की इस्तेराहते शब का लिहाज़ करते हुए आधी शब के वक्त बैदार करना मुनासिब न जाना। हज़रत खालिद बिन वलीद लश्कर को ले कर रात के आखरी हिस्सा में बाबे शर्की पर पहोंच गए और दरवाज़ा खुलने के इन्तिज़ार में हम्ला करने के लिये मुस्तइद थे।

यूशा बिन मरकस अपने हमराह हज़रत का'ब बिन जुम्रा और उन के साथियों को ले कर नक्ब के ज़रीए अपने मकान में दाखिल हो गया। इस मकान से बाबे शर्की साफ नज़र आ रहा था। लैकिन उस वक्त बाबे शर्की पर रूमी सिपाही ज़ियादह ता'दाद में थे। यूशा ने हज़रत का'ब को तवक्कुफ करने और दरवाज़ा पर रूमी सिपाहियों की ता'दाद कम होने तक इन्तिज़ार करने को कहा। रात अब खत्म होने के करीब थी और सुब्ह होने वाली थी। और साथ में मुसलमानों की फतहे मुबीन भी बहुत करीब थी।

जंग के चौथे दिन दमिश्क पर मुसलमानों की फतहे मुबीन

सुब्ह नमूदार हूई। उजाला फैलता गया और रूमी सिपाही आहिस्ता आहिस्ता ज़रूरी हाजत के लिये बाबे शर्की से बिखरते गए। चंद सिपाही बाकी रह गए और वह भी किल्ले के अन्दर महफूज़ और सलामत होने के गुमान में मुसल्लह नहीं थे। कुछ मा'मूली हथियार उठाए हुए, शब बेदारी की वजह से गुनूदगी के आलम में झोंके खा रहे थे। हज़रत का'ब बिन जुम्रा ने मौका' गनीमत जान कर नार-ए तक्बीर कहते हुए हम्ला कर दिया। रूमी सिपाहियों के वहमो गुमान में भी नहीं था कि ऐसे वक्त में इस तरह का हम्ला होगा। नारए तक्बीर की सदा सुन कर और मुजाहिदों के हाथों में बरहेना शम्शीरें देख कर उन के अवसान खता हो गए। बद-हवासी के आलम में कुछ मुकाबला करने खडे हुए, कुछ हथियारों की तरफ लपके मगर वह अपने हथियार संभालें इस से कब्ल मुजाहिदों की तलवारें उन की गर्दनों तक पहोंच गईं और सब को ज़मीन पर मुर्दा डाल दिया। दफ्अतन तक्बीर की आवाज़ और तलवार ज़नी का शौरो गुल उठने से इधर उधर मुतफर्रिक रूमी सिपाही चौंक उठे और हथियार ले कर किल्ले के दरवाज़े की तरफ दौडे। रूमी सिपाही दौड कर दरवाज़े तक पहुंचें इतनी दैर में तो मुजाहिदों ने कुफ्ल तोड डाले। और दरवाज़ा खोल डाला। दरवाज़ा खुलते ही हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर के साथ किल्ले में दाखिल हो गए और दाखिल होते ही रूमियों के सरों पर तलवारें रख कर हलाक करना शुरू किया। इस कसरत से तलवार ज़नी की कि लाशों का अम्बार लग गया। बिजली की तरह शहर में खबर फैल गई कि बाबे शर्की से इस्लामी लश्कर दाखिल हो गया और बडी शिद्दत से तेग ज़नी और नैज़ा ज़नी जारी है। रूमी सिपाही और अह्ले दमिश्क बाबे शर्की से शहर के वस्त की तरफ भागने लगे। हज़रत खालिद ने उन का तआककुब करते हुए तेग ज़नी का सिलसिला बर-करार रखा।

इधर बाबे शर्की पे यह सूरते हाल थी और उधर बाबे जाबिया से हज़रत अबू उबैदा रदियल्लाहो तआला अन्हो अपने एक सौ साथियों के साथ रात के आखरी हिस्सा में शहर में दाखिल हो गए थे। और सुब्ह होने तक बाबे जाबिया पर ही थे। इस दौरान सुलह के

तअल्लुक से कुछ मज़ीद शराइत भी तय फरमाए। फज्र की नमाज़ बाबे जाबिया पर बा-जमाअत अदा फरमाई और फिर अपने लश्कर को भी बुला लिया। लश्कर आ जाने पर वह लश्कर के साथ पैदल शहर में दाखिल हुए। हज़रत अबू उबैदा के साथ दमिश्क के कस और राहिब भी सियाह बालों के लिबास पहने हुए और हाथों में इन्जील लिये हुए चलते थे और लोगों को सुलह वाकेअ होने और अमान हासिल होने की खुश्खबरी देते हुए ब-शक्ल जुलूस शहर में गश्त करते हुए शहर के वस्त में वाकेअ ईसाइयों की खास इबादत गाह "कनीसए मरयम" की तरफ आगे बढ रहे थे।

जब हज़रत अबू उबैदा का लश्कर कनीसए मरयम पहुंचा, उसी वक्त हज़रत खालिद बिन वलीद का लश्कर भी तेग ज़नी करता हुवा कनीसए मरयम पर पहुंचा। दोनों इस्लामी लश्कर अचानक शहर के वस्त में मुलाकी हुए और दोनों लश्कर के सरदार एक दूसरे को देख कर महवे हैरत थे। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि मैं ने सुलह से शहर फतह किया है। हज़रत खालिद बिन वलीद ने फरमाया कि मैं ने तलवार से शहर फतह किया है और मैं तमाम रूमियों को हलाक कर के छोडूंगा। इस पर हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ सरदार! मैं ने उन को अमान दी है। और उन को सुलह व अमन की दस्तावेज़ भी लिख दी है। हज़रत खालिद ने फरमाया कि ऐ अमीने उम्मत! आप की दी हूई अमान मैं नहीं तोडूंगा। मुझे आप की दी हूई अमान मन्ज़ूर है और मैं ने भी अहले दमिश्क को अमान दी, लैकिन दो शख्सों के लिये अमान नहीं। एक हाकिमे दमिश्क तोमा और दूसरा इस का वज़ीर हरबीस।

हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि मैं तमाम अहले दमिश्क को अमान दे चुका हूं और यह दोनों भी दमिश्क के बाशिन्दे होने के नाते अमान में दाखिल हैं। हज़रत खालिद ने फरमाया कि ऐ अमीनुल उम्मत! अगर आप ने अमान न दी होती और आप की अमान का लिहाज़ न होता तो उन दोनों मल्ऊन व मुफ्सिद शख्सों को फौरन कत्ल कर देता। लैकिन मैं अब यह चाहता हूं कि यह दोनों फसादी इस शहर में न रहें बल्कि कहीं और चले जाऐं। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान! आप को यह जान कर खुशी होगी कि मैं ने अहले दमिश्क से इस शर्त पर सुलह की है कि हाकिम तोमा और उस का वज़ीर हरबीस यह दोनों शहर से निकाल दिये जाऐंगे।

इस दौरान हाकिम तोमा और हरबीस भी वहां आ पहुंचे। क्यूं कि उन को पता चल गया था कि हज़रत अबू उबैदा की मुताबेअत में हज़रत खालिद ने भी अमान दे दी है। कत्ल व किताल मौकूफ और अमन काइम हो गया है। उन दोनों ने हज़रत खालिद से कहा कि हमें

इस बात की इजाज़त दी जाए कि हम अपने अह्लो अयाल, मालो अस्बाब और साथियों को ले कर जहां चाहें चले जाऐं। हज़रत खालिद ने फरमाया कि इस वक्त तू हमारी अमान और ज़िम्मेदारी में है, लेहाज़ा हम तेरे साथ किसी किस्म की मुज़ाहेमत नहीं कर सक्ते लैकिन जब तू दारुल हर्ब में पहोंच जाएगा तो हमारी अमान और ज़िम्मेदारी से निकल जाएगा। फिर हम जो चाहेंगे तेरे साथ सुलूक करेंगे। इस पर तोमा ने कहा कि हम को तीन दिन अपनी ज़िम्मेदारी और अमान में रखो। ताकि हम तीन दिन में जहां चाहें चले जाऐं और तुम में से कोई शख्स हमारा पीछा न करे। तीन दिन के बा'द हम तुम्हारी अमान और ज़िम्मेदारी से निकल जाऐंगे। तीन दिन के बा'द हम तुम्हारे हाथ लगें तो तुम को पूरा इख्तेयार होगा कि चाहे हमें गुलाम बनाना, कैद करना या फिर कत्ल कर डालना। हज़रत खालिद ने फरमाया जा! मैं ने तेरी यह दरख्वास्त भी मन्ज़ूर की। तू अपने अह्लो अयाल और मालो अस्बाब और साथियों के साथ जहां भी जाना चाहता है जा सक्ता है, लैकिन हथियार अपने साथ ले जाने की इजाज़त नहीं। इस पर हरबीस ने कहा कि ऐ सरदार अरबी! यह कैसे मुम्किन है। अह्लो अयाल और मालो अस्बाब के साथ सफर करने में रास्ते में दरिन्दों और डाकूओं का खतरा रहता है और उन से हिफाज़त करने के लिये हथियारों का साथ में होना अशद ज़रूरी है। हज़रत खालिद ने फरमाया कि ज़रूरत के पैशे नज़र तुम को हर शख्स के साथ सिर्फ एक हथियार ले जाने की इजाज़त है। या'नी जो अपने साथ तलवार ले उसे नैज़ा लेने की इजाज़त नहीं। जो अपने साथ नैज़ा ले उस को अपने साथ तलवार ले जाने की इजाज़त नहीं। अल-गर्ज़ तलवार, नैज़ा, तीर कमान, छुरी, बर्छी वगैरा में से जो चाहे वह एक हथियार ले सक्ता है। एक से ज़ियादह किसी भी किस्म का दूसरा हथियार साथ लेने की इजाज़त नहीं।

हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो ने अख्लाके जमीला का मुज़ाहेरा करते हुए फराख दिली से तोमा जैसे शकी और बद-ख्वाह दुश्मन की करीब करीब तमाम दरखास्तें मन्ज़ूर फरमा लीं।

हाकिम तोमा अपने अह्लो अयाल के साथ शहर बद्र :-

हज़रत खालिद बिन वलीद से अपनी दरखास्तें मन्ज़ूर करवा लेने के बा'द तोमा और हरबीस ने अपने अह्लो अयाल, मुतअल्लिकीन और सिपाहियों को ले कर दमिश्क से रवानगी की तैयारी शुरू की। किल्ले के बाहर एक बडा खैमा खडा किया गया। तोमा के हुक्म पर उस के सिपाहियों ने तोमा का कीमती मालो अस्बाब खैमा में जमा रना शुरू किया। तोमा का मालो अस्बाब क्या था ? एक बडा खज़ाना था। सोने का काम किया हुवा

रैशमी कपडा तीन सौ बोझ था। सोने चांदी के बर्तन, ज़ैवरात, जवाहिरात सन्दूकें भर भर के थे। दमिश्क में जो मुतअस्सिब नस्रानी थे और जिन को जिज़्या अदा करने से इन्कार था वह तमाम लोग भी तोमा के साथ जाने के कस्द से अपना मालो अस्बाब ले कर किल्ले के बाहर खैमा में जमा करने लगे। रूमियों ने कोई अच्छी चीज़ या अच्छा कपडा दमिश्क में न रहने दिया। किल्ले के बाहर कीमती सामान का ढेर लग गया। तोमा के साथ जाने वाले लोगों का मेला लग गया। पांच हज़ार रूमी सवार, तोमा के खेशो अकारिब, अह्लो अयाल, मुतअस्सिब नस्रानी, गबर, कस, बतारेका वगैरा मिल कर साथ हो लिये। तोमा और हरबीस ने देखा कि अब ले जाने के काबिल कोई कीमती चीज़ दमिश्क में बाकी नहीं और तमाम मुतअल्लिकीन और मुतवस्सिलीन लोग भी आ गये हैं तब उन्हों ने काफला को कूच करने का हुक्म दिया। कल्माते कुफ्र बुलन्द करते हुए और नाकूस बजा कर इन्जील से मदद तलब करते हुए दमिश्क से रवाना हुए।

दमिश्क में अब सिर्फ वही लोग थे जो सुलह और अदाए जिज़्या पर रज़ा मन्द थे। हज़रत खालिद बिन वलीद ने अह्ले दमिश्क के सामने अमान का वा'दा दोहराया और अह्ले दमिश्क ने इस्लामी लश्कर को शहर दमिश्क का कब्ज़ा सुपुर्द कर दिया। और दमिश्क फतह हुवा।

दमिश्क 11, जमादियुस सानी 13, सन हिजरी ब-रोज़ दो शम्बा फतह हुवा। और ग्यारह दिन बा'द मदीना तय्यबह में अमीरुल मो'मिनीन, खलीफतुल मुस्लिमीन, अस्दकुस सादिकीन, इमामुल मुत्तकीन, हज़रत सय्यिदोना अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो ने रेहलत फरमाई। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने शब गुज़िश्ता फतहे दमिश्क की बशारत हज़रत अबू उबैदा को ख्वाब में दी थी और उस ख्वाब में हज़रत अबू उबैदा ने देखा कि सरकारे दो आलम जल्दी में हैं, लेहाज़ा अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! जल्दी की क्या वजह है? फरमाया कि मैं अबू बक्र सिद्दीक के जनाज़े पर जा रहा हूं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो की रेहलत की इत्तेलाअ हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लमने ने हज़रत अबू उबैदा को दी। मुल्के शाम में मुकीम इस्लामी लश्कर के लिये मदीना मुनव्वरा में पैश आने वाला रेहलते अबू बक्र का सान्हा "गैब" था। लैकिन इस पर हज़रत अबू उबैदा अपने आका व मौला सल्लल्लाहो

तआला अलैहे व सल्लम की अता से मुत्तलेअ हो गए थे। अल्लाह तबारक व तआला की अता से अल्लाह के महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को गैब का इल्म हासिल और हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की अता व नज़्रे इनायत से आशिके रसूल को गैब का इल्म हासिल। दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन इल्मे गैब के अकीदे में भी शौर व गौगा मचाते हैं और मआज़ल्लाह यहां तक कहते और लिखते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं था। हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के इल्मे गैब के लिये सिर्फ इत्ना कहना ही काफी है :

और कोई गैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोडों दुरूद

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

अब तक इस्लामी लश्कर के हाथों फतह होने वाले मकामात :-

(1) अरेका (2) सह्ना (3)तदम्मुर (4) हवरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क

हाकिम तोमा का तआककुब :-

जब हाकिम तोमा दमिश्क से रवाना हुवा तो हज़रत खालिद बिन वलीद ने अपने साथियों से और खुसूसन लश्करे ज़हफ से फरमाया कि अपने घोडों की तीमारदारी शुरू करो। घोडों को अच्छी तरह चारा और दाना खिला कर तरोताज़ा कर लो और अपने हथियारों को सैकल कर के तैयार रखो। तीन दिन गुज़रने के बा'द मैं उन गबरों का तआककुब करने का इरादा रखता हूं। लेहाज़ा मुजाहेदीन अपने घोडों की तीमारदारी और हथियारों की सफाई वगैरा में लग गए। उसी दिन अह्ले दमिश्क के साथ गल्ला के तअल्लुक से एक मुआमला पैश आया। दमिश्क से जो गल्ला हाथ लगा था उस के मुतअल्लिक मुजाहिदों का यह ख्याल था कि यह माले गनीमत है। लैकिन अह्ले दमिश्क का कहना यह था कि यह भी अमान में शामिल है। इस मुआमला ने काफी तूल पकडा और मुजाहिदों में भी इस के मुतअल्लिक दो राए काइम हूईं लेहाज़ा इस मस्अला को हल करने में हज़रत खालिद उलझ गए और तोमा की रवानगी को चार दिन और चार रात का अर्सा गुज़र गया। गल्ला का मस्अला हल करने के बा'द हज़रत खालिद ने तोमा के

तआकक़ुब का इरादा मौक़ूफ कर दिया क्यूं कि चार दिन और चार रात में वह इतनी दूर निकल गया होगा कि अब उस को पकडना मुश्किल। लैकिन हज़रत खालिद बिन वलीद को "यूनुस" नाम के एक शख्स ने तोमा का तआकक़ुब करने के लिये मुस्तइद कर दिया। इस की वजह यह हूई कि जब यूनुस को पता चला कि हज़रत खालिद ने तोमा के काफला के तआकक़ुब का इरादा मौक़ूफ कर दिया है तो वह हज़रत खालिद के पास आया और कहा कि ऐ सरदार ! तोमा का तआकक़ुब करने से आप को किस चीज़ ने बाज़ रखा है ? हज़रत खालिद ने फरमाया कि तोमा की रवानगी को चार दिन हो गए हैं और वह डर और खौफ की वजह से तैज़ रफ्तारी से सफर करता हुवा बहुत दूर निकल गया होगा। इलावा अज़ीं वह किस सिम्त गया है वह भी हमें नहीं मा'लूम लेहाज़ा इस का तआकक़ुब करना बे सूद है। यूनुस ने कहा ...

यूनुस कौन था ? मुख्तसर तआरुफ :-

जंगे दमिश्क जारी थी तब हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर अपने साथियों के साथ किल्ले के हर बाब पर गश्त करते, और रूमियों की हरकत पर कडी निगरानी करते। एक रात वह बाबे कैसान के करीब थे कि उन्हों ने दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनी। लेहाज़ा वह चौकन्ना हो गए और एक तरफ छुप कर देखने लगे। थोडी दैर में दरवाज़ा से एक शख्स बाहर निकला और चंद कदम आगे बढा। हज़रत ज़िरार और उन के साथियों ने छापा मार कर उस को पकड लिया। उसी वक्त दरवाज़े से दो शख्स बाहर निकले और पहले निकलने वाले शख्स को पुकारने लगे, लैकिन वह शख्स हज़रत ज़िरार के कब्ज़ा में था। उस ने अपने दोनों साथियों को पुकार कर कहा कि चिडिया जाल में फंस गई। यह सुनते ही उस के दोनों साथी दरवाज़ा में वापस चले गए और फिर दरवाज़ा बन्द हो गया।

अब वह पहले निकलने वाला शख्स हज़रत ज़िरार की कैद में अकेला रह गया। हज़रत ज़िरार ने गुमान किया कि शायद यह शख्स जासूस है। लेहाज़ा इस को हज़रत खालिद के पास ले चलें ताकि हज़रत खालिद इस से पूछताछ कर के इस की जासूसी की कैफियत मा'लूम करें। हज़रत ज़िरार इस शख्स को हज़रत खालिद के पास ले आए। हज़रत खालिद ने इस से फरमाया कि अगर तू अपनी जान की खैरियत चाहता है तो सच सच बता दे कि तू कौन है ? और दरवाज़ा से किस काम के लिये बाहर आया था ? इस शख्स ने कहा कि मेरा नाम यूनुस है। मैं रूमियों का मज़हबी पेश्वा और खानदाने मुलूक से हूं। जब तुम्हारे लश्कर ने दमिश्क का मुहासरा किया उस के चंद दिन पहले एक लडकी से मेरी शादी

हूई थी। हम दोनों एक दूसरे की मुहब्बत में दीवानगी की हद तक पहोंच गए थे, लैकिन शादी के बा'द रुख्सती की रस्म बाकी थी। इस दरमियान तुम ने किल्ले का मुहासरा किया। लेहाज़ा रुख्सती का अमल बालाए ताक रह गया। मैं अपनी मा'शूका के हिज्र व फिराक में बे चैन व बे करार था। मैं ने अपने सुस्राल वालों से कहा कि मेरी बीवी को रुखसत कर के मेरे पास भेज दो। लैकिन उन्हों ने साफ इन्कार किया। और मुझ से तुन्द लहजे में कहा कि हम अरबों के मुहासरे की वजह से इब्तिलाए मुसीबत हैं और तूं रुख्सती का इस्रार कर रहा है, फील्हाल यह मुम्किन नहीं। जंगे अजनादीन के पहले तुम लोगों ने जब दमिश्क का मुहासरा किया था तो तवील अर्सा तक मुहासरा जारी रहा और इस मरतबा भी मुहासरा तूल पकडने का गुमान है। हम दोनों आशिक व मा'शूक एक दूसरे के लिये तडपते थे लेहाज़ा हम ने खुफिया मुलाकात की तद्बीर ढूंढ निकाली और वो यह कि किल्ले के बाहर कुछ वीरान खंडर हैं वहां हम दोनों मिलें। लेहाज़ा में ने अपने साथी के साथ अपनी मा'शूका को बाबे कैसान पर बुलाया और मैं भी वहां पहोंच गया। वहां का दरबान मेरा दोस्त था और वह मेरी दीवानगी से वाकिफ था। लेहाज़ा इस ने दो बिछडे हुए दिलों को मिलाने में तआवुन किया। पहले मुझे बाहर निकाला और कहा कि चंद कदम चल के देख ले के कोई अरबी सिपाही का खतरा तो नहीं ? फिर तेरी मा'शूका को तेरे साथी के हमराह निकालता हूं। प्रोग्राम के मुताबिक मैं पहले बाहर निकला और तुम्हारे साथियों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया। ऐन उसी वक्त मेरे साथी के हमराह मेरी महबूबा दरवाज़ा से बर आमद हूई, लैकिन में ने चिडिया जाल में फंस गई पुकार कर उन को मुतनब्बेह कर दिया, लेहाज़ा वह वापस पलट गए।

हज़रत खालिद ने इस से फरमाया कि क्या तूं दीने इस्लाम कबूल करता है ? ताकि अगर दमिश्क फतह हो जाए तो में तेरी मा'शूका के साथ अज़ सरे नौ इस्लामी तरीका पर निकाह कर दूं। यूनुस ने फौरन बुलन्द आवाज़ से कहा कि "اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ" यूनुस ने दीने इस्लाम को सिद्क दिल से कबूल किया और इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों के हमराह रूमियों से जेहाद करता था। जिस दिन दमिश्क के किल्ल-ए शर्की से हज़रत खालिद शहर में दाखिल हुए,यूनुस भी हज़रत खालिद के लश्कर के साथ था और वह सख्त लडाई लडा था। जब दमिश्क फतह हो गया तो वह अपनी मा'शूका को तलाश करने लगा, लैकिन कहीं भी इस का सुराग न मिला। वह मारा मारा घूमता था और हर शख्स से अपनी महबूबा का पता पूछता था। कुछ लोगों ने उसे बताया कि वह तेरे रंज व गम में राहिबों के कपडे पहन कर राहिबा बन गई है और तारिकुद्दुनिया हो कर कनीसा में बैठ गई है। यूनुस फौरन उस के

पास पहोंच गया और राहिब बनने का सबब पूछा। उस ने कहा कि जब रात के वक्त अरबों ने तुझ को गिरफ्तार कर लिया तो मुझे यकीन हो गया कि वह तुझे ज़रूर कत्ल कर देंगे और मैं तेरी ज़िन्दगी से ना-उम्मीद हो गई। तेरे बगैर मेरी ज़िन्दगी बेकार है। यह गुमान कर के मैं ने दुनिया को छोड दिया और राहिब बिन कर कनीसा में बैठ गई।

यूनुस ने कहा कि अब हमारे दुख के दिन खत्म हुए। मैं ने दीने इस्लाम कबूल कर लिया है और इस्लामी लश्कर के सरदार ने अज़ सरे नौ हमारा निकाह करा देने का वा'दा किया है और में ने तेरे लिये अमान भी हासिल कर ली है। यूनुस की बात सुन कर उस की मा'शूका आग बगोला हो गई और तुन्द लह्जा में कहा कि कसम है हक्के मसीह की! अब तेरा और मेरा कभी मिलन नहीं होगा। तूने अपना आबाई दीन छोड कर अरबों का दीन इख्तेयार कर लिया है, लेहाज़ा अब तेरा मेरा कोई रिश्ता नहीं। अब मुझे भूल जा और मेरी उम्मीद मत रखना। यूनुस ने उस को समझाने की बहुत कोशिश की, लैकिन वह संग दिल नहीं पिघली। जब हाकिम तोमा अपने हमराहियों के साथ दमिश्क से गया तो वह भी तोमा के काफला में शामिल हो कर चली गई।

हज़रत खालिद तोमा के तआककुब में :-

अपनी मा'शूका के इस तरह रूठ कर चले जाने से यूनुस के दिल की दुनिया उजड गई। उस के कलेजे से धूवां उठने लगा। वह अपनी मा'शूका को याद करता और कफे अफसोस मलता। लैकिन जब उस ने सुना कि हज़रत खालिद बिन वलीद तोमा के काफला के तआककुब में जाने का इरादा रखते हैं तो एक मरतबा फिर उस के दिल में उम्मीद की किरन चमकी। लैकिन फिर दिल में अंधेरा छा गया क्यूं कि तोमा की रवानगी को चार दिन गुज़र जाने की वजह से हज़रत खालिद ने तआककुब का अज़्म तर्क कर दिया है। लेहाज़ा वह हज़रत खालिद के पास आया और कहा कि ऐ सरदार! मैं मुल्के शाम के तमाम छोटे बडे रास्तों से वाकिफ हूं। अगर आप का अब भी तआककुब का इरादा है तो बिस्मिल्लाह कीजिये। मैं आप को दरमियान से जाने वाले रास्तों से ले चलूंगा और उम्मीद है कि हम तोमा के काफले तक पहोंच जाअेंगे। इन्शा अल्लाह तआला! अगर हम ने तोमा के काफले को पकड लिया तो मुझ को मेरी बीवी मिल जाएगी और मेरा मक्सद भी हासिल हो जाएगा। यूनुस की बात सुन कर हज़रत खालिद को तोमा के तआककुब का मैलान हुवा और आप ने यूनुस से फरमाया कि क्या तुझे पूरा यकीन है कि हम तोमा के काफले तक पहोंच जाअेंगे? यूनुस ने जवाब दिया कि मुझे यकीन है लैकिन मैं आप को जिस रास्ता से ले चलने का इरादा

रखता हूं वह तमाम इलाका रूमियों से भरा हुवा है। राह में जो दैहात व कस्बात वाकेअ हैं, वह भी रूमियों के हैं लेहाज़ा तुम अपने सिपाहियों को हुक्म दो कि वह तमाम नस्रानी अरब का लिबास पहन लें। इस इलाके में कौमे लख्म और कौमे जुज़ाम के नस्रानी अरब आबाद हैं, लेहाज़ा किसी को शुब्हा न हो। हज़रत खालिद ने अपने साथ लश्करे ज़हफ और दीगर साथियों को चार हज़ार की ता'दाद में लिये और सब को नस्रानी अरबों का लिबास पहन लेने का हुक्म दिया।

हज़रत खालिद 14, जमादियुस सानी 13, सन हिजरी ब-रोज़ जुमे'रात तोमा के काफले के तआककुब में यूनुस की रहबरी में दमिश्क से निकले।

हज़रत खालिद जब दमिश्क से रवाना हुए तो रहबर की हैसियत से यूनुस को साथ में लिया था। यूनुस का नाम हज़रत खालिद ने बदल कर नजीब रखा। लेहाज़ा अब जहां भी यूनुस का ज़िक्र आएगा वहां नजीब नाम होगा। नजीब ने तोमा के काफले के निशाने कदम पर इस्लामी लश्कर को आगे बढाया। तोमा के काफले के निशान कदम से पता चलता था कि वह **इन्ताकिया** की तरफ गया है। थोडी मुसाफत तय करने के बा'द नजीब ने शाहराह छोड दी और पहाडों और घाटियों से गुज़रने वाला रास्ता इख्तेयार किया। इस रास्ते से सफर करना निहायत दुश्वार था। क्यूं कि राह में नुकीले पत्थर इतनी कसरत से थे कि घोडों के पाऊं से खून जारी हो गया। तंग रास्ते और नुकीली झाडियों की वजह से मुजाहिदों के कपडे भी फटते और जिस्म में ज़ख्म हो जाते। बडी मुसीबत और मशक्कत उठा कर नजीब उन को शाहराह पर ले आया। इस शाहराह पर तोमा के काफले के निशान कदम पाए गए। नजीब ने कहा कि काफला यहां से भी गुज़र गया है इस्लामी लश्कर ने कुछ फास्ला शाहराह पर चल कर तय किया। इस के बा'द नजीब ने शाहराह छोड कर दरमियान से जाने वाला दुश्वार रास्ता इख्तेयार किया और इस्लामी लश्कर **जबला** नामी मकाम पर पहुंचा। वहां से कूच कर के **लाज़िकिया** नामी मकाम पर पहुंचा इस्लामी लश्कर कईं दिन से मुसल्सल सफर कर रहा था सिर्फ नमाज़ के वक्त तवक्कुफ किया जाता और नमाज़ अदा करने के बा'द फिर सफर शुरू हो जाता। लाज़िकिया पहुंचते पहुंचते उन के घोडे नीम जान हो गए और सवारों की हालत भी खस्ता थी। नजीब ने इस्लामी लश्कर को लाज़िकिया के करीब एक गांव के जवार में ठहराया। नजीब बहुत परेशान था क्यूं कि लाज़िकिया से इन्ताकिया की तरफ जाने वाले साहिली रास्ता पर इस ने तोमा के काफला के निशान कदम तलाश करने की बहुत कोशिश की थी मगर कहीं भी निशान कदम नज़र न आए। लेहाज़ा वह इस्लामी लश्कर को ठहरा कर

खुद गांव में अकेला गया ताकि तोमा के काफला का कोई सुराग मिले। रात में बडी दैर के बा'द नजीब गांव से वापस आया।

दूसरे दिन सुब्ह फज्र की नमाज़ के बा'द हज़रत खालिद ने देखा कि नजीब का चेहरा उतरा हुवा है और चेहरे से इज्ज़ और मायूसी के आसार नमूदार हैं। लेहाज़ा हज़रत खालिद ने पूछा कि क्या वजह है कि मैं तुम को अफ्सुर्दा देख रहा हूं ? नजीब ने कहा कि ऐ सरदार ! अब मैं तोमा के काफला तक पहुंचने की उम्मीद नहीं रखता क्यूं कि में करीब के गांव में गया था। तो वहां पता चला कि तोमा का काफला **इन्ताकिया** के बजाए **कस्तुनतुनिया** की तरफ निकल गया है। इस की वजह यह हूई कि हिरक्ल बादशाह को जब पता चला कि तोमा ने मुसलमानों को दमिश्क सौंप दिया है और वह इन्ताकिया आने के लिये रवाना हुवा है तो वह खश्मनाक हुवा और इस ने अपना कासिद रवाना कर के **सूरिया** नामी मकाम से तोमा को कस्तुनतुनिया की तरफ चले जाने का हुक्म दिया। क्यूं कि हिरक्ल बादशाह मुसलमानों से जंग अज़ीम की ज़बरदस्त तैयारी कर रहा है और **यर्मूक** नामी मकाम में लाखों की ता'दाद में लश्कर जमा करने का इरादा रखता है। वह नहीं चाहता कि तोमा इन्ताकिया आए क्यूं कि यर्मूक की तरफ भेजने के लिये फील्हाल वह इन्ताकिया में लश्कर जमा कर रहा है। अगर तोमा इन्ताकिया आया और इस ने जंगे दमिश्क के अहवाल बयान किये, तो इस्लामी लश्कर की दिलैरी और शुजाअत का ज़िक्र सुन कर उस के लश्कर का हौसला पस्त हो जाएगा। लेहाज़ा हिरक्ल बादशाह ने तोमा के काफले को कस्तुनतुनिया चले जाने का हुक्म भेज दिया है। हिरक्ल बादशाह नहीं चाहता कि तोमा इन्ताकिया आए।

हज़रत खालिद ने नजीब से फरमाया कि क्या हुवा ? हम कस्तुनतुनिया जाने वाले रास्ते को इख्तेयार करें। नजीब ने कहा कि यह मुआमला मुश्किल है क्यूं कि सूरिया नामी मकाम बहुत ही पीछे रह गया है। अगर हम यहां से वापस पलटें और सूरिया पहुंचें इतने वक्त में तोमा का काफला आराम से कस्तुनतुनिया पहोंच जाएगा। हज़रत खालिद ने नजीब से पूछा कि अगर हम सूरिया जाने वाला रास्ता इख्तेयार न करें और दरमियान से जाने वाला कोई छोटा रास्ता इख्तेयार करें तो काफला मिलने की उम्मीद है ? नजीब ने जवाब देते हुए अर्ज़ किया कि ऐ सरदार ! सिर्फ एक रास्ता है, लैकिन उस रास्ते से जाना मुम्किन नहीं। क्यूं कि उस रास्ते से जाने में दरमियान में बडे पहाडों का सिलसिला शुरू होता है और उन पहाडों को उबूर करना निहायत दुश्वार है। नीज़ उन पहाडों के अतराफ में जो गांव वाकेअ हैं, उन गांव में हिरक्ल बादशाह के सिपाही बडी कसरत से जमा हुए हैं, जो यर्मूक की जंग के लिये

तैयारी कर रहे हैं। अगर उन को हमारी भनक लग गई तो मुबादा वह मुज़ाहिम होंगे और हम एक नई मुसीबत में उलझ जाऐंगे।

इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों की हालत यह थी कि तमाम घोडे और सवार थके मान्दे थे। सफर की मशक्कत और तकान की वजह से उन के जिस्म बोझल हो गए थे। हज़रत खालिद ने मुजाहिदों से फरमाया कि मैं ने अपनी जान को राहे खुदा में वक्फ किया है। मैं किसी भी सूरत से तोमा के काफला तक पहुंचने का इरादा रखता हूं। **कसम है उस रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के हक्क की जो मदीना मुनव्वरा में आराम फरमा हैं !** मुझे अल्लाह की ज़ात पर कामिल भरोसा है कि वह हम को फतह व काम्याबी अता फरमाएगा। ऐ इस्लाम के खिदमतगारो ! क्या तुम मेरा साथ दोगे ? मैं जानता हूं कि आगे का सफर दुश्वार और खतरनाक है और तुम बहुत थक चुके हो, लैकिन सब्र व हिम्मत से काम लो और तकान को खातिर में न लाओ :

ज़ो'फ माना मगर यह ज़ालिम दिल
उन के रस्ते में तो थका न करे

और

कोई उन तैज़ रओं से कह दो
किस के हो कर रहें थकने वाले

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद बिन वलीद की पुर–जौश तक्रीर ने मुजाहिदों में एक नया जौशो खरोश पैदा कर दिया और तमाम ने ब–यक ज़बान कहा कि ऐ हमारे मोहतरम सरदार ! आप जो भी हुक्म फरमाऐं हमें मन्ज़ूर है। लेहाज़ा हज़रत खालिद ने दरमियान में वाकेअ **खैले लकाम** नाम के पहाड की तरफ आगे बढने का हुक्म दिया। मुजाहिदों में न जाने कौन सी ताकत व कुव्वत आ गई थी कि जबले लकाम को बगैर किसी तवक्कुफ के उबूर कर लिया और पहाड की पर्ली तरफ के मैदान में आ पहुंचे। शाम का वक्त था। मैदान में आ कर लश्कर ने अभी राहत का दम भी न लिया था कि दफ्अतन तैज़ हवा चलने लगी। घन्घोर घटा छा गई। बिजली की चमक और कडक ने भयानक मन्ज़र खडा कर दिया। बादल ने गरजना और बरसना शुरू कर दिया :

बादल गरजे बिजली तडपे धक से कलेजा हो जाए

बन में घटा की भयानक सूरत कैसी काली काली है

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

पहले हल्की बुन्दा बान्दी शुरू हूई। फिर आहिस्ता आहिस्ता तैज़ हूई और थोडी ही दैर में धूवां धार बारिश होने लगी। पानी इस ज़ोर से बरसता था जैसे मश्कों के मुंह खुल गए हों। इस्लामी लश्कर के साथ एक भी खैमा न था। और न ही बारिश से बचने का कोई सामान था। तमाम मुजाहिद खुले मैदान में बैठे हुए भीग रहे थे। निस्फ शब के बा'द मेंह थमा। खुदा खुदा कर के रात बसर हूई। हज़रत खालिद ने अज़ान कही और लश्करे इस्लाम ने हज़रत खालिद की इक्तिदा में नमाज़ फज्र पढी। सुब्ह के वक्त बादल छट गया था। मत्ला साफ था और आफ्ताब अपनी आब व ताब के साथ रौशनी और हरारत फैलाता हुवा निकला। नजीब ने हज़रत खालिद बिन वलीद से कहा कि ऐ सरदार! रात के आखरी हिस्सा मैं में ने एक शौरो गुल सुना है जो बहुत ही करीब के इलाका से आ रहा था। हो सक्ता है कि तोमा के काफला का शौर हो या फिर रूमियों का लश्कर हमारा पीछा करते हुए करीब में कहीं छुपा है। लेहाज़ा आप इजाज़त दें ताकि में थोडे फास्ला तक जाउं और कोई खबर वहां से लाऊं। हज़रत खालिद ने नजीब के साथ हज़रत मुर्फिरत बिन जा'दा को भेजा। करीब में ही **अबरस** नाम का एक मुतवस्सित पहाड था जिस को रूमी **जबले बाज़िक** कहते हैं। यह दोनों इस पहाड की चोटी तक गए। पहाड की पुश्त की जानिब एक बहुत वसीअ और सर सब्ज़ो शादाब चरागाह थी। नजीब ने नज़र इस तरफ की तो क्या देखा कि चरागाह का वसीअ मैदान इन्सानों और जानवरों से भरा हुवा है। सवारी के घोडे खुले मैदान में हरी घास चर रहे थे। आ'ला किस्म के रैश्मी खैमे नस्ब थे। लोग बारिश की वजह से भीगे हुए अपने कपडे व अस्बाब को खुश्क करने के लिये सूरज की धूप में फैला रहे थे। एक तरफ बडी बडी देगों में खाना पक रहा था। तक्रीबन आठ या दस हज़ार मर्द, औरत, बच्चे और चार पांच हज़ार घोडे और दीगर जानवरों की वजह से चरागाह में मेला सा लगा हुवा है। नजीब ने एक चट्टान की आड में छुप कर थोडी दैर तक ब–गौर मुआइना किया तो मा'लूम हुवा कि यह हाकिम तोमा का ही काफला है।

मुर्जे दीबाज की लडाई और तोमा का कत्ल

जिस मैदान में हाकिम तोमा का काफला ठहरा हुवा था इस का नाम **मुर्जे दीबाज** था। "मुर्ज" के मा'नी चरागाह या'नी घास का मैदान या वह जगह जहां जानवरों को चराया जाता है। नजीब और हज़रत मुर्फिरत बिन जा'दा को अब पूरा यकीन हो गया कि यह तोमा का काफला है। लेहाज़ा वह दोनों बहुत ही सुरअत से अबरस पहाड से नीचे उतरे और फिर दौडते हुए इस्लामी लश्कर में आए। नजीब ने हज़रत खालिद से कहा कि ऐ सरदार! बशारत हो कि सामने जो पहाड है इस की पुश्त की जानिब वसीअ मैदान में हाकिम तोमा का काफला पडाव किये हुए है। लेहाज़ा जल्दी हम्ला करने चलो, और हां! मेरी आप से एक ज़रूरी गुज़ारिश है कि आप अपने साथियों को हुक्म कर दो कि जो शख्स मेरी बीवी तक पहोंच जाए, वह इसे मुझ तक पहुंचा दे। मैं ने उस की खातिर ही यह काम अंजाम दिया है। मुझे गनीमत के माल से कुछ भी हिस्सा दरकार नहीं। सिर्फ मेरी बीवी मुझे मिल जाए यही मेरा मक्सद है। हज़रत खालिद ने फरमाया वह तेरे ही लिये है अगर अल्लाह तआला ने चाहा।

फिर हज़रत खालिद ने लश्कर के एक एक हज़ार के चार दस्ते बनाए। और हर दस्ता पर एक एक सरदार मुकर्रर किया। पहले दस्ते के बज़ाते खुद सरदार, दूसरे दस्ते के हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर सरदार, तीसरे दस्ते के हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई सरदार, और चौथे दस्ते के हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक सरदार थे। सब से पहले हज़रत खालिद बिन वलीद एक हज़ार सवारों के साथ रवाना हुए और जाते ही मिस्ले शैर हम्ला आवर हुए। तक्बीर की सदा से मैदान गूंज उठा। इस्लामी लश्कर को देख कर रूमी सिपाही अपने घोडों और हथियारों की तरफ दौडे और फौरन मुसल्लह हो कर सवार हो गए और हज़रत खालिद के मुकाबले में आ गये। तोमा के काफले में पांच हज़ार सवार लडने वाले सिपाही थे। तोमा ने हज़रत खालिद के साथ एक हज़ार की ता'दाद का कलील लश्कर देखा तो उस को जुर्अत हूई और अपने सिपाहियों से कहा कि इन मुठ्ठी भर अरबों को मसीह ने लुक्म–ए अजल बनने तुम्हारे पास भेजा है। सलीब से मदद तलब करो और उन सब को अपनी तलवार की नोक पर लो और एक को भी ज़िन्दा मत छोडो। हरबीस ने भी अपने बतारका को उक्साया और एक साथ पांच हज़ार रूमी मुकाबले में आ गये। दोनों लश्कर ने एक दूसरे पर हम्ला कर दिया और जंग की आग के शो'ला बुलन्द हुए। इतने में हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर अपने

एक हज़ार साथियों के साथ नाराए तक्बीर बुलन्द करते हुए आ पहुंचे। रूमी चौंक पडे कि यह दूसरा लश्कर कहां से आ धमका। कुछ रूमी हज़रत ज़िरार के लश्कर की तरफ मुतवज्जेह हुए। दफ्अतन तहलीलो तक्बीर कहते होते हुए हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई रूमियों पर हम्ला आवर हुए और उन के पीछे हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक अपने लश्कर के साथ रूमियों पर आ पडे। इस्लामी लश्कर की इस तरह किस्तें आती देख कर रूमियों के दिल बैठ गए। उन पर खौफ और लरज़ा तारी हो गया। दिल जमई से लडने का हौसला काफूर हो गया। हिम्मत टूट गई। दिल दहल गए। इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों ने शिद्दत से तेग ज़नी और नैज़ा ज़नी कर के रूमी शहसवारों को खाक व खून में मिला दिया।

हज़रत खालिद बिन वलीद अपने शिकार हाकिम तोमा की जुस्तजू में थे। दफ्अतन उन्हों ने देखा कि एक शख्स अपनी दाओं आंख पर पट्टी बांधे हुए लडने में मस्रूफ है। हज़रत खालिद फौरन पहचान गए यह काना शख्स ही तोमा है। क्यूं कि इन्हें मा'लूम था कि जंगे दमिश्क में हज़रत उम्मे अबान ने तीर मार कर तोमा को यक चश्म कर दिया था। हज़रत खालिद तोमा की तरफ लपके। हज़रत खालिद के हमराह हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक भी तोमा पर झपटे। हज़रत खालिद को अपने करीब देख कर तोमा थर थर कांपने लगा। हज़रत खालिद ने तोमा को झिडक्ते हुए फरमाया कि ऐ दुश्मने खुदा! तूं अपने गुमान में हमारे हाथ से बच कर भाग निकला था। और तुझे इस बात का वहम तक न होगा कि हम तुझ तक पहोंच जाएंगे, लैकिन अल्लाह तआला ने हमारे लिये ज़मीन लपेट दी और हम ने तुझ को पा लिया। यह फरमा कर हज़रत खालिद ने तोमा की बाईं आंख में नैज़ा मारा। नैज़ा लगते ही इस की आंख फूट गई और वह घोडे की पुश्त से उछल कर ज़मीन पर गिरा और चीखता हुवा तडपने लगा। हज़रत अब्दुर्रहमान अपने घोडे से कूद पडे और तोमा के सीने पर सवार हो कर तलवार से इस का सर काट लिया। और सर को नैज़ा की नोक पर चढा कर घोडे पर सवार हो गए। नैज़े को बुलन्द किया और मुजाहिदों को पुकार कर कहा कि ऐ गिरोहे मुस्लिमीन! खुदा का दुश्मन मल्ऊन तोमा मारा गया है और उस का सर नैज़े की नोक पर नस्ब है। लेहाज़ा अब हरबीस को ढूंढ निकालो और उस का भी यही हश्र करो। रूमियों ने तोमा का सर नैज़े पर बुलन्द देखा तो उन के हाथ पाऊं शल हो गए। मुजाहिदों ने दिलैरी से रूमियों को कत्ल व गारत किया। रूमियों की अक्सरियत कत्ल हूई। बाकी भाग निकले। कसीर ता'दाद में मालो अस्बाब, हथियार, खैमे, सोना, चांदी, जवाहिरात, ज़ैवरात और दीगर कीमती अश्या माले गनीमत में हासिल हूईं। रैश्मी कपडा तीन सौ (300) बोझ हासिल हुवा। इतनी कसरत से रैश्मी कपडा माले गनीमत में हासिल होने की वजह से इस

चरागाह का नाम मुर्जे दीबाज मश्हूर हो गया। दीबाज या'नी रैश्मी कपडा। मुर्ज के मा'नी चरा गाह। **मुर्जे दीबाज** या'नी रैश्मी कपडे वाली चरागाह। माले गनीमत के इलावा हाकिम तोमा की बीवी या'नी हिरक्ल बादशाह की दुख्तर भी बहुत सारी औरतों और रूमी सिपाहियों के हमराह कैद हूई।

नजीब और उस की बीवी का किस्सा :-

हाकिम तोमा के काफले के तआककुब के मिशन को काम्याबी की मन्ज़िल तक पहुंचाने में अह्म किरदार अदा करने वाले नजीब ने दमिश्क से मुर्जे दीबाज तक इस्लामी लश्कर की रहबरी की खिदमत अपनी बीवी को हासिल करने के मक्सद के तहत अंजाम दी थी। नजीब को इस की बीवी मिली या नहीं? इसी के लिये मुर्जे दीबाज के मैदान पर फिर एक मरतबा ताइराना नज़र करें, आया नजीब की मुराद पूरी हूई या नहीं?।

हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई ने बयान किया कि मैं ने एक शख्स को देखा जिस ने रूमियों का लिबास पहना था। वह सवारी के घोडे से उतर कर एक रूमी औरत से लडता था। कभी औरत इस पर गालिब हो जाती थी और कभी वह औरत पर गालिब आ जाता था। दोनों में सख्त हाथापाई हो रही थी। मुझे तअज्जुब हुवा कि यह कौन शख्स है जो एक रूमी नाज़नीन से लड रहा है। करीब जा कर देखा तो मा'लूम हुवा नजीब अपनी बीवी से कुश्ती लड रहा है। मैं ने उस को उस के हाल पर छोड दिया और आगे बढ गया। जब तोमा कत्ल हुवा और रूमियों ने हज़ीमत उठाई तो मैं ने चंद औरतों के साथ हिरक्ल बादशाह की बेटी को भी कैद कर लिया और वापस उस जगह पर आया तो में ने देखा कि नजीब की बीवी खून आलूदह मुर्दा पडी हूई है और नजीब इस के पास बैठ कर अपना सर पकड कर ज़ार व कतार रो रहा है। मैं ने नजीब को पुकार कर कहा कि ऐ रहबर! क्या हुवा? इस कद्र क्यूं रोता है? उस ने रोते हुए जवाब दिया कि में अपनी बीवी की तलब में यहां तक आया और मुझे अपनी बीवी के इलावा और कोई ख्वाहिश न थी क्यूं कि मुझे उस के साथ बे पनाह मुहब्बत थी। यहां पहोंच कर मैं ने उस को तलाश किया और उस तक पहोंच गया। मैं ने उस से कहा कि में तेरे फिराक में दीवाना हो कर यहां तक पहोंच आया और तू मुझ से भागती है? उस ने कहा कि मेरा पीछा छोड दे और मुझे भूल जा। कसम है हक्के मसीह की! अब तेरा और मेरा एक साथ रहना ना-मुम्किन है क्यूं कि तूं अपने दीन से मुन्हरिफ हो कर मुसलमान हो गया है। लेहाज़ा मैं ने अपने नफ्स को दीने मसीह के लिये वक्फ कर दिया है। और इसी लिये मैं कस्तुनतुनिया जा रही

हूं। वहां जा कर राहिबा बन कर तमाम उम्र कनीसा में बैठूंगी। मेरा रास्ता छोड दे और अपनी राह पकड। मैं ने उस से बहुत मिन्नत समाजत की मगर उस ने मेरी एक न सुनी और मुझ को अपने से बाज़ रखने की गर्ज़ से लडने लगी। मैं भी लडाई पर उतर आया और हम दोनों में बहुत दैर तक लडाई होती रही। यहां तक मैं ने इस पर काबू पा लिया और उस को पकड कर अपने साथ ले जाने लगा। दफ्अतन उस ने अपने पास रखी हूई छुरी निकाली और अपने सीना में पैवस्त कर के खुदकशी कर ली।

इस के बा'द नजीब का हाल यह हुवा कि जब इस्लामी लश्कर को ले कर हज़रत खालिद बिन वलीद दमिश्क वापस लौटे और अजनादीन व दमिश्क से जो माले गनीमत हासिल हुवा था उस माल से खुम्स (20%) अमीरुल मोमेनीन की खिदमत में बैतुल माल के लिये अलग कर के बाकी माल मुजाहिदों पर तक्सीम फरमाया। तो हज़रत खालिद ने अपने हिस्से में से बहुत कसीर माल नजीब को दिया और फरमाया कि यह मेरी तरफ से हद्या और तोहफा है। इस माल को कबूल करो और कोई अच्छी लडकी ढूंढ कर निकाह कर लो। नजीब ने वह माल लेने से इन्कार किया और अर्ज़ किया कि ऐ रहम दिल सरदार! आप की करम नवाज़ी का तहे दिल से शुक्रिया, अपनी बीवी के इन्तेकाल के बा'द मैं इस दुनिया में किसी भी औरत से निकाह करना नहीं चाहता। आलमे आखेरत में जन्नत की हूर से ही निकाह करूंगा। हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई ने बयान किया है कि नजीब ने इस्लामी लश्कर के साथ मुल्के शाम की लडाइयों में अपनी खिदमतें पैश कीं यहां तक कि जंगे यर्मूक में वह बडी दिलैरी और शुजाअत से लडते हुए शहीद हुए। (रदियल्लाहो तआला अन्हो।)

मुर्जे दीबाज से हज़रत खालिद बिन वलीद ला-पता

तोमा को कत्ल करने के बा'द हज़रत खालिद बिन वलीद हरबीस को तलाश कर रहे थे, ताकि उस को भी उस के अंजाम तक पहुंचा दें। दफ्अतन उन्हों ने एक भारी डील डोल वाले गबर को देखा। उस गबर की सुर्ख रंग की बडी दाढी थी और उस ने रैश्मी कपडे का कीमती लिबास पहन रखा था और लोहे की ज़िरह पहन रखी थी। हज़रत खालिद ने गुमान किया कि यह हरबीस है। हज़रत खालिद ने उस की तरफ घोडा दौडाया। हज़रत खालिद को अपनी तरफ आता देख कर वह गबर भागा। हज़रत खालिद ने इस का तआक्कुब किया और उस के करीब पहोंच गए और घोडा दौडाते हुए उस पर नैज़े का वार किया। लैकिन सिर्फ नैज़ा की नोक उस की पुश्त से मस हूई और मा'मूली ज़ख्म लगा। वह गबर घबराहट

की वजह से घोडे की पुश्त से ज़मीन पर गिरा। हज़रत खालिद अपने घोडे से कूदे और उस के सीने पर सवार हो गए और उस को डांटते हुए फरमाया कि क्यूं हरबीस भाग कर कहां जा रहा था? अब तू मेरे हाथ से बचने वाला नहीं। वह गबर अरबी ज़बान अच्छी तरह जानता था, इस ने जवाब दिया कि ऐ बिरादरे अरबी! मुझे मत मारो। मैं हरबीस नहीं हूं। अगर तुम ने मुझ को मार डाला तो हरबीस तुम्हारे हाथ से बच कर निकल जाएगा और फिर कभी हाथ नहीं आएगा। अगर तुम मुझ को अमान दो तो मैं तुम को हरबीस का पता बता दूं। हज़रत खालिद उस के सीने से उतर गए और उस को अमान दी। उस गबर ने पहाड की तरफ हाथ से इशारा करते हुए कहा कि वह देखो। हज़रत खालिद ने पहाड की तरफ नज़र उठा कर देखा तो चंद आदमी पहाड पर चढते हुए दिखाई दिये। गबर ने कहा कि हरबीस अपने साथियों के आगे चल रहा है और वह सब भाग कर जा रहे हैं। हज़रत खालिद ने अपने करीब खडे हज़रत असद बिन जाबिर को करीब बुलाया और उस गबर को उन के हवाले कर के फरमाया कि तुम इस गबर को रोके रहो। अगर यह अपनी इत्तेलाअ में झूठा साबित होगा तो हम इस की गर्दन मार देंगे वरना रिहा कर देंगे।

हज़रत खालिद ने अपने घोडे की बाग ढीली छोड दी और फौरन हरबीस के करीब पहोंच गए। हरबीस के हमराह कौमे नस्रानी के बीस गबर थे, जो हथियारों से लैस थे। ज़िरह और खौद में जडे हुए थे। वह तमाम गबर मुल्के शाम के जंगजू शेहसवार और शुजाअ थे। हज़रत खालिद ने जाते ही दो गबरों को नैज़ा मार कर हलाक कर दिया और गबरों के आगे चलने वाले हरबीस को लल्कारते हुए फरमाया कि ऐ दुश्मने खुदा! मैं खालिद बिन वलीद तेरी हेलाकत के लिये आ पहुंचा हूं। भागता क्यूं है? रुक जा, ऐ बुज़दिल ना-मर्द ताकि तुझे भी तेरे सरदार तोमा के पास भेज दूं। गरजती हूई आवाज़ में हज़रत खालिद की धमकी सुन कर हरबीस घोडे की ज़ीन से सिमट गया और अपने साथियों से कहा कि सख्ती हो तुम पर! खडे खडे मुंह क्या देखते हो? यह वही शख्स है जिस ने अरेका, तदम्मुर, बसरा, अजनादीन और दमिश्क के लोगों को लूटा और कत्ल किया है। इस को ज़िन्दा वापस मत जाने दो। अगर तुम ने इस को मार डाला तो हमारी खोई हूई इज़्ज़त वापस पलट आएगी और हमारे मक्तूल भाइयों का बदला भी हासिल होगा। हरबीस के कहने और तर्गीब देने पर रूमी गबरों ने हज़रत खालिद की तरफ रुख किया। जिस जगह यह मा'रका हो रहा था वह जगह गैर हमवार और तंग थी। घोडे पर सवार हो कर लडना मुम्किन नहीं था, लेहाज़ा हज़रत खालिद घोडे से उतर गए। एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में ढाल थाम ली। गबरों ने देखा कि हज़रत खालिद अकेले हैं तो उन्हों ने चारों तरफ से घैर लिया। दीने इस्लाम का शैरे बबर

अट्ठारह भेडियों के दरमियान फंस गया था। तने तन्हा मुकाबला कर के हज़रत खालिद ने गबरों को जंग के वह जौहर दिखाए कि वह हैरान व शश्दर रह गए। हज़रत खालिद इतनी तैज़ी से तलवार घूमाते थे कि किसी को करीब आने की जुर्अत नहीं होती थी। इस दौरान हरबीस ने मौका पा कर हज़रत खालिद के सर पर ज़ोर से तलवार मारी लैकिन हज़रत खालिद ने अमामा के नीचे लोहे का खौद पहन रखा था। तलवार अमामा को काटती हूई खौद से टकराई और ऐसा बाज़ गश्त झटका लगा कि हरबीस के हाथ से तलवार छूट गई। हज़रत खालिद तने तन्हा बडी दिलैरी से मुकाबला कर रहे थे। लैकिन सख्त मुसीबत में थे। बचना मुश्किल था। हज़रत खालिद को भी अपनी शहादत का यकीन हो गया था, लैकिन हज़रत खालिद को अपने आका व मौला, जाने आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के फैज़े अतम पर यकीने कामिल था :

जंगल दरिन्दों का है, मैं बे यार शब करीब
घेरे हैं चार सिम्त से बद-ख्वाह ले खबर

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

अल्लाह की राह में जेहाद करते हुए शहीद होना। हज़रत खालिद की दिली ख्वाहिश थी, इसी लिये हज़रत खालिद हमेंशा खतरे की जगह पर ठहरते और दुश्मनाने इस्लाम से दिलैरी से जंग करते। मुर्जे दीबाज की लडाई से कब्ल हज़रत खालिद ने बत्तीस (32) जंगों में शिर्कत फरमाई थी और हर जंग में शहादत के ख्वास्तगार थे :

दे खुदा हिम्मत कि यह जाने हज़ीं
आप पर वारें वह सूरत कीजिये

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद रदियल्लाहो तआला अन्हो अब बिफरे हुए शैर की तरह खश्मनाक हो कर लडने लगे, लैकिन जौश के साथ होश से काम लेते हुए रूमियों पर रोअब डालने के लिये ज़ोर से नारए तक्बीर की सदा बुलन्द की। रूमी गबर यह समझे कि शायद उन के साथी करीब में छुपे हुए हैं, उन को बुलाने के लिये यह "अल्लाहु अक्बर" की सदा लगाते हैं, लैकिन हकीकत यह थी कि करीब में हज़रत खालिद का कोई भी साथी न था। उन्हों ने गबरों पर रोअब और हैबत डालने के लिये एक हीला और तद्बीर की थी।

अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के जां निसार आशिक के हीले को हकीकत में बदल दिया। हज़रत खालिद ने जैसे ही नार-ए तक्बीर बुलन्द किया फौरन सदाए बाज़गश्त की तरह जवाब सुनाई दिया :

" لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ يَا
اَبَا سُلَيْمَان وَشَكَ الْغَوْثُ مِنْ رَّبِّ الْعَالَمِيْنَ "

तर्जुमा : "नहीं है कोई मा'बूद मगर तन्हा अल्लाह, नहीं है शरीक उस का और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम उस के बन्दे और रसूल हैं। ऐ अबू सुलैमान परवरदिगारे आलम की तरफ से तुम्हारे लिये फर्याद रस आया।"

ईमान और ईकान पर मुश्तमिल सदा सुन कर हज़रत खालिद भी महवे हैरत थे कि दफ्अतन हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक अपने साथियों के हमराह हाथ में नंगी तलवारें लिये दौडे चले आ रहे हैं। आते ही मुजाहिदों ने गबरों को घैर लिया और हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर ने तो आने के साथ ही गबरों को तलवार की नोक पर लिया। लम्हा भर में अट्ठारह गबर ज़मीन पर बे जान पडे थे। हज़रत खालिद ने देखा कि मुजाहिदों के आते ही हरबीस अपने साथियों को छोड कर भाग रहा है लेहाज़ा आप ने उस का तआककुब किया और चंद कदमों के फास्ला पर उस को पा लिया। हरबीस बुरी तरह लरज़ रहा था। उस के मुंह से झाग उडने लगा। कुछ कहना चाहता था, मगर आवाज़ हलक में दबी की दबी रह गई। हज़रत खालिद ने तलवार की एक ज़र्ब में उस को ज़मीन पर कुश्ता डाल दिया। हज़रत खालिद ने तमाम मुजाहिदों का शुक्रिया अदा किया। हज़रत खालिद ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र से पूछा कि मेरे यहां होने की खबर तुम को किस ने दी ? हज़रत अब्दुर्रहमान ने जो जवाब दिया वह अल्लामा वाकदी की ज़बानी समाअत फरमाऐं :

"पस कहा अब्दुर्रहमान ने कि ऐ सरदार ! थे हम रूमियों की लडाई में और फतह दी अल्लाह तआला ने हम को उन पर और वह लोग कुश्ता और गिरफ्तार हुए और मुसलमान मस्रूफ थे यक्जा करने माले गनीमत में कि दफ्अतन सुनी हम ने आवाज़ पुकारने वाले की हवा से और वह कहता था कि मश्गूल हो तुम लूट के माल जमा करने में और खालिद बिन अल-वलीद को घैर लिया है दुश्मनों ने, पस जब सुना मैं ने आवाज़ को और मैं नहीं जानता था कि किस जगह में हो तुम और गुम किया था

हम ने तुम्हारी ज़ात को और मुसलमान इस सबब से रंज में थे पस राह बताई हमारे तईं एक गबर ने जो तुम्हारे एक साथी के काबू में था और कहा उस ने तुम्हारे सरदार को मैं ने राह बताई है ब-जानिब हरबीस के और वह उस के साथ पहाड पर हैं। पस जल्दी रवाना हुए हम तुम्हारी तरफ।''

(हवाला : - फुतूहुश्शाम, अज़ : - अल्लामा वाकदी, सफहा : 125)

फिर हज़रत खालिद बिन वलीद अपने मुजाहिद साथियों के साथ मुर्जे दीबाज की तरफ रवाना हुए। मुर्जे दीबाज में इस्लामी लश्कर में हज़रत खालिद के गुम होने और दुश्मनों के दरमियान फंस जाने की खबर बिजली की तरह फैल चुकी थी। हर मुजाहिद हज़रत खालिद के लिये परेशान और बे-करार था। लश्कर के तमाम लोग हज़रत खालिद की हिफाज़त और सलामती की दुआ मांग रहे थे। जब हज़रत खालिद को अपने साथियों के हमराह वापस आते देखा तो लश्करे इस्लाम में खुशी की लहर दौड गई। तमाम ने नारए तक्बीर से उन का गर्मजोशी से इस्तेक्बाल किया और खैरो आफियत से लौटने की मुबारकबादी दी। हज़रत खालिद ने हरबीस का पता बताने वाले रूमी गबर को बुलाया और फरमाया कि मैं ने तुझ से जो वा'दा किया है चाहता हूं कि इसे पूरा करूं क्यूं कि तेरे साथ खैर ख्वाही करना मुझ पर वाजिब है। क्या तूं इस बात को पसन्द करता है कि तूं दीने इस्लाम कबूल कर के अह्ले जन्नत में से हो जाए ? इस गबर ने जवाब दिया कि मैं अपना दीन बदलना नहीं चाहता लेहाज़ा हज़रत खालिद ने हस्बे वा'दा अमान दे कर उस की राह छोड दी। वह गबर अपने घोडे पर सवार हो कर रूमी शहरों की तरफ अकैला चला गया।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने मुजाहिदों को माले गनीमत और कैदियों को यक्जा करने का हुक्म दिया। जब तमाम माल एक जगह जमा किया गया तो माले गनीमत का एक छोटा टीला बन गया। फिर हज़रत खालिद ने राह बताने वाले नजीब को बुलाया और उस का शुक्रिया अदा किया और बा'द में उस की बीवी का हाल पूछा। नजीब ने अपनी दर्द भरी दास्तान कह सुनाई। हज़रत खालिद ने इज़्हारे अफ्सोस किया और सब्र करने की तल्कीन फरमाई। इस पर हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई ने कहा कि ऐ सरदार ! हिरक्ल बादशाह की बेटी को हम ने कैद किया है। मेरी राए यह है कि नजीब को हिरक्ल बादशाह की बेटी हिबा कर दें ताकि इस की बीवी का ने'मल बदल हो जाए। हज़रत खालिद ने फरमाया कि अगर हिरक्ल बादशाह ने अपनी बेटी हम से तलब की तो हम को वापस देनी पडेगी और अगर हिरक्ल ने हम से अपनी बेटी का मुतालबा नहीं किया तो फिर वह नजीब की ही है।

राहबर नजीब ने हज़रत खालिद से कहा कि इस वक्त हम ऐसे इलाके में हैं कि अतराफ में हिरक्ल बादशाह का लश्कर मौजूद है। लेहाज़ा हम पर कोई लश्कर आ पडे इस से पहले यहां से रवाना हो कर जल्द अज़् जल्द दमिश्क पहोंच जाना चाहिये। नजीब के मश्वरे को कबूल कर के हज़रत खालिद ने लश्कर को कूच का हुक्म दिया। **मुर्जे दीबाज** से कूच कर के इस्लामी लश्कर **''पुल उम्मे हकीम''** के करीब **मुर्जे सफर** नाम के मकाम पर पहुंचा तो दफ्अतन एक गुबार उठता हुवा नज़र आया। हज़रत खालिद ने हज़रत सा'सा गिफारी नाम के मुजाहिद को इस गुबार की तह्कीक करने भेजा। हज़रत सा'सा गिफारी तैज़ घोडा दौडाते हुए गए और थोडी दैर के बा'द वापस आ कर इत्तेलाअ दी कि रूमियों का लश्कर इस शान से है कि सिपाहियों के बदन लोहे से इस तरह मस्तूर हैं कि उन की आंख की पुतली के सिवा जिस्म का कोई हिस्सा नज़र नहीं आता। थोडी दैर में वह लश्कर करीब आ गया और लश्कर से एक बुढ्ढा राहिब निकल कर आया और पुकार कर कहा कि मैं हिरक्ल बादशाह का एलची हूं और इस्लामी लश्कर के सरदार से गुफ्तगू करना चाहता हूं। मुजाहेदीन इस बुढ्ढे राहिब को हज़रत खालिद के पास ले आए। हज़रत खालिद ने फरमाया कि अपना मक्सद बयान करो। बुढ्ढे राहिब ने कहा कि हिरक्ल बादशाह ने यह पैगाम भेजा है कि तुम ने मेरे दामाद तोमा को कत्ल कर के मेरी बेटी को गिरफ्तार कर लिया है मैं तुम से यह उम्मीद रखता हूं कि तुम मेरी बेटी मुझ को वापस कर दो। अगर मेरी बेटी के इवज़् कुछ माल दरकार है तो मुझे देने से इन्कार नहीं या अपनी तरफ से ब-तौर हद्या मेरी बेटी मुझ को दे दो, क्यूं कि करम और बख्शिश करना मुसलमानों के खसाइल से है। हज़रत खालिद ने जवाब देते हुए फरमाया कि अपने बादशाह से कह देना के हम को माल दुनिया की तमाअ नहीं। हम बादशाह के हाथ पर उस की बेटी फरोख्त नहीं करना चाहते। हम किसी भी किस्म का कोई मुआवज़ा या फिद्या लिये बगैर उस की बेटी को आज़ाद करते हैं और यह हमारी तरफ से तुम्हारे बादशाह को हद्या है। चुनांचे हज़रत खालिद ने उसी वक्त हिरक्ल आ'ज़म की बेटी को रेहा कर के शाही एलची के साथ रवाना कर दी।

हज़रत खालिद की दमिश्क वापसी :-

हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथ चार हज़ार का लश्कर ले कर तोमा के तआककुब में रवाना हुए थे। और इस में एक माह का अर्सा गुज़र गया था, लैकिन हज़रत खालिद अभी तक दमिश्क वापस नहीं लौटे और न ही उन की तरफ से कोई खबर आई। लेहाज़ा हज़रत अबू उबैदा और तमाम मुसलमान उन के लिये

मुतफक्किर थे, बल्कि उन से ना-उम्मीद हो गए थे। बा'ज़ को तो ऐसे वस्वसे आते थे कि नजीब ने फरैब कर के इस्लामी लश्कर को हलाक कर दिया है। तमाम मुसलमान बारगाहे इलाही में गिडगिडा कर दुआ करते थे कि वह जहां कहीं भी हों सलामत और महफूज़ रहें और खैरो आफियत से वापस आ जाअें। हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने अजनादीन की फतह के बा'द हज़रत अबू सुफियान, हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब और हज़रत मालिक उश्तर नखई की हमराही में सात हज़ार का जो लश्कर रवाना किया था वह भी दमिश्क आ पहुंचा था, लैकिन हज़रत खालिद की कोई खबर न थी। लेहाज़ा वह भी तश्वीश और परेशानी में थे। तमाम लश्करे इस्लाम हज़रत खालिद के लिये मुज़्तरिब व बेकरार था।

हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के हमराह कसीर ता'दाद में माले गनीमत और कैदी ले कर महीना भर बा'द दमिश्क आए, तो मुसलमानों में खुशी की लहर दौड गई। तहलीलो तक्बीर की सदाअें बुलन्द कर के हज़रत खालिद का शानदार इस्तेक्बाल किया गया। सब ने आप को मुबारकबाद पैश की। फिर हज़रत खालिद ने मुर्जे दीबाज के सफर की अज़ अव्वल ता आखिर कैफियत हज़रत अबू उबैदा और मुसलमानों को बताई। सुन कर सब मुतअज्जिब हुए और फतहे अज़ीम की मुबारक बादी दी।

हज़रत खालिद तोमा के तआककुब में 14, जमादियुल आखिर 13, सन हिजरी को दमिश्क से रवाना हुए थे। और सत्तरह दिन तक मुसल्सल सफर कर के यकुम रजब को मुर्जे दीबाज पहुंचे। और सारी कार-गुज़ारियों के बा'द मुर्जे दीबाज से रवाना हो कर 14, या 15, रजब को दमिश्क वापस आए थे।

दमिश्क आ कर हज़रत खालिद ने माले गनीमत का खुम्स अमीरुल मोमेनीन की खिदमत में भेजने के लिये अलग निकाल लिया और बाकी माल मुजाहिदों में तक्सीम फरमा दिया। फिर हज़रत खालिद ने फतहे दमिश्क से ले कर हिरक्ल बादशाह की बेटी वापस भेज देने तक की तफ्सील लिख कर अमीरुल मोमेनीन हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो के पास हज़रत अब्दुल्लाह बिन कुर्त को मदीना मुनव्वरा रवाना किया। हालां कि हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो की रेहलत को एक माह का अर्सा हो गया था, लैकिन हज़रत खालिद और इस्लामी लश्कर को हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो की रेहलत के सानह-ए अज़ीम की खबर न थी।

खिलाफ्ते हज़रत फारूके आ'ज़म (رضي الله عنه)

खलीफतुल मुस्लिमीन, अमीरुल मोमेनीन, अस्दकुस सादिकीन, इमामुल मुत्तकीन सय्यिदोना अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो की रेहलत के बा'द हज़रत सय्यिदोना उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो को तमाम सहाबए किराम ने ब-इत्तेफाके राए अपना खलीफा मुन्तखब व तस्लीम किया और तमाम सहाबा ने मस्जिदे नबवी शरीफ में आप के दस्ते हक्क परस्त पर बैअत की। उस वक्त हज़रत उमर फारूक की उम्रे शरीफ बावन (52) साल थी। आप के दौरे खिलाफ्त में आपसी इख्तिलाफात, अदावत, निफाक और कुफ्र व शिर्क की जडें कट गईं। दीने इस्लाम का कामिल गल्बा हो गया। आप ने बैतुल माल से गरीबों की तनख्वाहें मुकर्रर फरमा दीं। हज़रत उमर निहायत सादगी से रहते। खलीफा होने के बा-वुजूद गुदडी का लिबास पहनते और नमक के साथ जौ की रोटी खाते। तवाज़ोअ व इन्किसारी के वह पैकरे जमील थे। तकब्बुर व गुरूर का उन के मिज़ाज में नामो निशान न था। हाथ में दुर्रा ले कर आम लोगों के साथ मदीना मुनव्वरा के रास्तों पर पैदल निकलते। आप की हैबत और दबदबे का यह आलम था कि लोग तलवार से भी ज़ियादह आप के दुर्रा से डरते। गरीबों और मिस्कीनों के साथ आप लुत्फ व मेहरबानी से पैश आते। बडों की इज़्ज़त और छोटों पर इनायत फरमाते। यतीमों का बहुत ख्याल, और उन की इम्दाद फरमाते। ज़ालिम से मज़्लूम का हक्क दिलाते। रात को रिआया की हिफाज़त के लिये खुद गश्त फरमाते। निज़ामे शरीअत और अहकामे दीन के मुआमले में किसी की भी रिआयत नहीं करते। अद्ल व इन्साफ का माहौल काइम फरमा दिया। आप के तसल्लुब फीद्दीन की वजह से कुफ्फार, मुश्रेकीन, मुनाफिकीन, यहूदो नसारा और इस्लाम दुश्मन अनासिर आप से डरते और जलते थे।

शाहे रूम हिरक्ल बादशाह को जब मा'लूम हुवा कि हज़रत उमर फारूक खलीफा हुए हैं, तो वह बडा मुतफक्किर और तरद्दुद में पडा। उस ने अर्काने सल्तनत व अर्बाबे दौलत और दीने नस्रानिया के मज़हबी पेश्वाओं को "कनीसाए फसान" में जमा किया और तक्रीर करते हुए कहा कि अब वह शख्स मुसलमानों का खलीफा मुकर्रर हुवा है जो निहायत सख्त मिज़ाज है। जो इस्लाम में दाखिल नहीं होता उस पर वह मुत्लक रहम नहीं करता। उस के रोअब से मुसलमान भी कांपते हैं। उस के हाथ में हर वक्त कोडा रहता है जिस का खौफ

तलवार से ज़ियादह है। यह वही शख्स है जिस के मुतअल्लिक मलाहिम में साफ लिखा है कि वह दराज़ कद, गन्दुमी रंग और सियाह चश्म होगा। उस की हैबत से अज़ीम सल्तनतों के शहनशाह कांप उठेंगे। वह फातहे आ'ज़म की हैसियत से दूरो दराज़ के ममालिक को फतह करेगा। सियासत का ऐसा माहिर होगा कि अपने दारुस-सल्तनत में बैठ कर अपने लश्कर की कमान्ड करेगा। उस के एक इशारे पर उस के फरमां बर्दार मुजाहिद सर धड की बाज़ी लगा कर कैसरो किस्रा के ऐवान उखाड फैंकेंगे। वह मेरे तख्त का भी मालिक हो जाएगा।

हिरक्ल ने अपनी तक्रीर का सिलसिला जारी रखते हुए मज़ीद कहा कि मुसलमानों की काम्याबी का राज़ यह है कि वह अपने दीन के सख्त पाबन्द हैं। अपने खुदा की इबादत व रियाज़त में मशगूल रहते हैं। अपने रब और अपने नबी के हर हुक्म की ता'मील करते हैं। जुल्म व सितम और गुनाहों से बाज़ रहते हैं। अद्ल व इन्साफ करते हैं। नेकियों की तरफ रागिब और बुराईयों से मुन्हरिफ रहते हैं। इसी लिये अल्लाह तआला उन की नुस्रत व मदद करता है और इन्हें काम्याबी और फतह हासिल होती है। हमारा हाल यह है कि हम जुल्म व सितम, ना-इन्साफी, खल्के खुदा की हक्क तल्फी, हराम कारी, अय्याशी, मक्कारी, बेहूदगी, बे हयाई, गुनह्गारी, फिस्क व फुजूर और दीने मसीह की ना-फरमानी में सर से पाऊं तक गर्क हैं। इसी लिये हम खुदा की मदद और नुस्रत से महरूम हैं। मसीह हम से नाराज़ हैं लेहाज़ा हम हमेंशा शिकस्त और ना-मुरादी से दो चार होते हैं। ऐ दीने मसीह और सलीब के परिस्तारो! अब भी वक्त है। अपने गुनाहों से तौबा कर के तमाम ना-ज़ेबा अफ्आल को तर्क कर दो। वरना वह दिन दूर नहीं कि हम पर ऐसी कौम गालिब व मुसल्लत होगी जिस के देफाअ की हम में कुव्वतो इस्तिताअत नहीं। उस कौम का दीन तमाम अद्यान पर गालिब हो जाएगा।

हिरक्ल ने अपनी तक्रीर में यहां तक कहा कि अगर तुम अपनी हर्कतों से बाज़ आ कर ऐश व इश्रत को नहीं छोड सक्ते तो तुम्हारे लिये मुनासिब है कि तुम मुसलमानों का दीन अपना लो। इन्हें जिज़्या दे कर सुलह कर लो। हिरक्ल की ज़बान से यह जुम्ला सुन कर तमाम हाज़िरीन चौंक गए। खुद बादशाह यह कहता है कि मुसलमानों का दीन इख्तेयार कर लो या जिज़्या देने पर रज़ा मन्द हो जाओ ? लगता है कि बादशाह के दिल में मुसलमानों का खौफ घर कर गया है। लेहाज़ा तमाम हाज़िरीन मुश्तइल हो गए और खश्मनाक हो कर उस की तरफ झपटे और बादशाह को मार डालने का कस्द किया। कौम का इश्तिआल व गुस्सा देख कर हिरक्ल सहम गया। माहौल की संगीनी और वक्त की नज़ाकत का उसे ख्याल आ गया, उस ने हिकमत

अमली से काम लिया और अपनी बात का रुख पलटते हुए कहा कि ऐ मेरी कौम के बा गैरत लोगो! क्या तुम ने यह गुमान किया कि मैं सच मुच तुम्हें मुसलमानों का दीन कबूल करने या अदाए जिज़्या पर राज़ी होने की तल्कीन करता हूं। हरगिज़ नहीं! यह बात में ने सिर्फ इस लिये कही है कि में तुम्हारा इम्तिहान ले रहा था कि तुम में अपने दीन की मुहब्बत व गैरत बाकी है या नहीं ? लैकिन तुम ने दीन के मुआमला में अपने बादशाह का भी लिहाज़ न करते हुए खश्म व गुस्सा का इज़्हार किया। यह देख कर मेरा सीना फूल गया है। मुझे तुम्हारी गैरते दीनी और हमीयते कौमी पर फख्र है। अब मैं अरबों को नेस्तो नाबूद करने में किसी किस्म की कोताही और सुस्ती नहीं करूंगा।

हिरक्ल की तकय्या बाज़ी के दामे फरेब में लोग आ गये और उन्हें अपने बादशाह पर कामिल ए'तेमाद आ गया। कौम ने हिरक्ल से कहा कि अरबों को मुल्के शाम से देफाअ करने में हम शाना से शाना मिला कर तुम्हारा साथ देंगे, बल्कि अपने खून के आखरी कतरे तक उन से लडेंगे।

हज़रत उमर फारूके आज़म को शहीद करने की हिरक्ल की साज़िश

हज़रत उमर फारूके आज़म के खलीफा मुकर्रर होते ही हिरक्ल की नींद हराम हो गई। उसे दिन में भी अपनी सल्तनत की हलाकत के ख्वाब नज़र आने लगे। उस को हर वक्त हज़रत उमर फारूक का खौफ सताने लगा। हैबते फारूकी से उस का दिल उलट पलट होने लगा। हज़रत फारूके आ'ज़म का ख्याल आते ही उस के दिल की धडकनें तैज़ हो जातीं। लेहाज़ा उस ने तहय्या किया कि जिस के वुजूद के तसव्वुर से मेरा जीना मुश्किल हो गया है उस का वुजूद ही खत्म कर दूं। हिरक्ल ने हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो को शहीद करने की साज़िश की। तलीका बिन माज़िन नाम के एक नस्रानी अरब को हिरक्ल ने कसीर माल देने का वा'दा कर के मदीना मुनव्वरा भेजा, ताकि वह किसी तरह भी मौका' पा कर हज़रत उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो को शहीद कर दे। तलीका बिन माज़िन मदीना आया और मदीना के अतराफ में छुप गया। एक दिन उस ने देखा कि हज़रत उमर फारूक अतराफे मदीना के बागों की तरफ आए हैं और यतीमों व गरीबों के अहवाल की खबर गीरी और उन के बागों और खेतों

की निगरानी फरमा रहे हैं। वह नस्रानी अरब एक घनी शाखों वाले दरख्त पर चढ कर पत्तों के दरमियान पोशीदह हो गया। इत्तेफाक की बात के हज़रत उमर भी उसी दरख्त के नीचे पत्थर का तकिया लगा कर लेट गए। जब आप को नींद आ गई तो तलीका बिन माज़िन ने नीचे उतर कर आप को शहीद कर देने का कस्द किया। उसी वक्त एक जंगली दरिन्दा आया और हज़रत उमर के इर्द गिर्द घूमने लगा। और आप की निगेहबानी करने लगा। फिर उस दरिन्दे ने अपनी ज़बान से हज़रत उमर के तलवों को चाटा। थोडी दैर के बा'द तलीका बिन माज़िन ने सुना कि हातिफे गैबी ने पुकार कर यह जुम्ला कहा कि "يَاعُمَرُ عَدَلْتَ فَاَمِنْتَ" **ऐ उमर आप ने इन्साफ किया पस मामून रहे**। यह मन्ज़र देख कर तलीका बिन माज़िन सहम गया और अपनी जगह बैठा रहा। नीचे उतर कर हम्ला करने की उस को हिम्मत व जुर्अत न हूई। जब हज़रत उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो बेदार हुए तो वह दरिन्दा उठ कर चला गया। गोया कि वह हज़रत उमर की नींद के वक्त में हिफाज़त करने और पहरा देने हाज़िर हुवा था। हज़रत उमर के बेदार होते ही दरिन्दा चला गया, तो तलीका बिन माज़िन दरख्त से नीचे उतरा और हज़रत उमर के पास आ कर आप के हाथ को बोसा दिया और अर्ज़ किया कि मेरे मां बाप उस शख्स पर कुरबान, जिस की हिफाज़त व निगहबानी जंगल के दरिन्दे करते हों और जिस की ता'रीफ व सताइश फरिश्ते और जिन्नात करते हों। तलीका ने अपने राज़ को इफ्शा कर दिया। और अपनी गलती पर नादिम हो कर आप से मा'ज़ेरत चाही। हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो ने खन्दा पेशानी से मुआफी बख्शी। तलीका बिन माज़िन ने उसी वक्त बुलन्द आवाज़ से कल्म-ए शहादत पढा और हज़रत उमर के हाथ पर ईमान ला कर मुसलमान हो गया :

वह उमर जिस के आ'दा पर शैदा सकर
उस खुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत सय्यिदोना उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो का मज़कूरा वाकेआ कोई सुनी सुनाई बात नहीं बल्कि मुस्तनद रिवायत है। हज़रत अल्लामा वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु ने इस वाकेआ को उन अल्फाज़ में बयान किया है :

"फिर बुलाया हिरक्ल ने एक शख्स नस्रानी अरब को कि जिस का नाम तलीका बिन माज़िन था और कबूल किया इस के वास्ते कुछ माल देने को और कहा इस से कि रवाना हो तूं इसी वक्त ब-जानिब यस्रब के और देख फिक्र और ताम्मुल से इस अम्र को कि क्यूं कर कत्ल कर सकता है तूं उमर को। पस तलीका ने मन्ज़ूर किया इस अम्र को और रवाना हुवा ब-तरफ मदीना नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के और पहोंच कर छुप रहा हवाली मदीना तय्यबह में और उसी वक्त हज़रत उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो निकले और देख रहे थे यतीमों और रान्डों के लडके बालों को और खबर गीरी करते थे उन के बागों और एहातों की और चढ गया वह नस्रानी एक दरख्त पेचीदा शाख वाले पर और छुप रहा उस के पत्तों में और हज़रत उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो उसी दरख्त के नज़दीक आ कर ज़मीन पर लेट रहे और एक पत्थर से तकिया लगाया। पस एक दरिन्दा जानवर आया और घूमा गिर्द हज़रत उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो के और आगे आ कर चाटा अपनी ज़बान से दोनों पाऊं उन के और ना-गहान हातिफ गैबी ने आवाज़ दे कर यह कल्मात कहे "يَاعُمَرُ عَدَلْتَ فَاَمِنْتَ" पस जब बेदार हुए हज़रत उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो चला गया वह दरिन्दा और उतरा वह नस्रानी दरख्त से और आया हज़रत उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो के पास और बोसा दिया उन के हाथों को और कहता था कि मेरे मां बाप कुरबान हों उस शख्स पर जिन की हिफाज़त और निगहबानी मख्लूकात और जानवर और उन का वस्फ और ता'रीफ फरिश्ते और जिन करते हैं। फिर ज़ाहिर किया उस नस्रानी ने अपना हाल और इरादा हज़रत उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो से और मुसलमान हुवा, उन के हाथों पर।"

(हवाला :- फुतूहुश्शाम, अज़ :- अल्लामा वाकदी, : 131)

लश्करे इस्लाम के सिपाह सालारे आज़म का तबादला :-

जैसा कि अवराके साबिका में ज़िक्र हुवा कि मुर्जे दीबाज से दमिश्क वापस आने के बा'द हज़रत खालिद बिन वलीद ने अमीरुल मोमेनीन हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो की खिदमत में खत भेजा था और हज़रत खालिद को यह खबर न थी कि खलीफए अव्वल ने तो रेहलत फरमाली है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन कुर्त जब हज़रत खालिद का खत ले कर मदीना मुनव्वरा पहुंचे तब हज़रत उमर फारूके आज़म खलीफा थे। हज़रत उमर ने हज़रत खालिद का खत पढा तो वह खत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक को मुखातब कर के लिखा गया था। हज़रत उमर ने पूछा कि क्या हज़रत अबू बक्र सिद्दीक की रेहलत की खबर से मुल्के शाम में मुकीम मुसलमान बे-खबर हैं ? हज़रत अब्दुल्लाह बिन कुर्त ने अर्ज़ किया कि ऐ अमीरुल मोमेनीन ! हज़रत अबू बक्र सिद्दीक की रेहलत की खबर से तमाम मुजाहेदीन बे-खबर हैं।

हज़रत उमर ने हज़रत खालिद का खत पढा और तमाम अहवाल से वाकिफ हुए। फिर हज़रत उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने तमाम सहाबए किराम को मस्जिदे नबवी शरीफ में जमा किया। आप मिम्बर रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम पर खडे हुए और हज़रत खालिद का खत पढ कर सुनाया। इस खत में फतह दमिश्क से ले कर मुर्जे दीबाज में हासिल शुदा कसीर माले गनीमत, हाकिमे दमिश्क तोमा और हरबीस का कत्ल, हिरक्ल बादशाह की बेटी की गिरफ्तारी और रिहाई वगैरा की तफ्सील मर्कूम थी। खत सुन कर तमाम खुश हुए बल्कि मदीना शहर में खुशी की लहर दौड गई। लोग तहलीलो तक्बीर की सदा बुलन्द कर के इज़्हारे मसर्रत कर रहे थे और मुल्के शाम जाने वाले मुजाहेदीन के हक्क में दुआए खैरो बरकत करते थे। मस्जिदे नबवी में हज़रत खालिद का खत सुनाने के बा'द अमीरुल मोमेनीन हज़रत उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो अपने घर तशरीफ ले गए। रात को आप ने खत अपने साथ रख कर बिस्तर ख्वाब पर तशरीफ ले गए। बिस्तर ख्वाब पर भी आप ने हज़रत खालिद का खत कई मरतबा पढा। फिर खत को तकिया के नीचे रख दिया। और हज़रत खालिद के खत की बाबत सोच व फिक्र करने लगे। हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो वसीउन्नज़र, दूर अन्देश, दाना मुदब्बिर, आकिल काइद, दानिशमन्द रहबर, ज़ी शुऊरे फैसल, और बैनुल अक्वामी उमूरे सियासत में महारते ताम्मा रखते थे। हज़रत खालिद बिन वलीद की दिलैरी और शुजाअत की कार-गुज़ारियों को आप ने मुख्तलिफ ज़ावियों से टटोला और तमाम अहवाल को बालिग नज़री से देखा। ब-नज़रे

अमीक इस पर गौर व खौज़ किया। माज़ी, हाल और मुस्तकबिल के हालात के मुतअल्लिक गौरो फिक्र किया। माज़ी से हाल तक के वुकूअ पज़ीर हवादिस का तजज़िया किया और उस के नफा' बख्श नताइज के दवाम व कयाम को मुस्तकिल और मुस्तहकम तौर पर बर-करार रखने के लिये सोचा। मुल्के शाम गए हुए मुजाहेदीन की हिफाज़त, खैर ख्वाही, हौसला अफ्ज़ाई, ऊलूल-अज़्मी, और लश्करे इस्लाम के रोअब व दबदबा, खौफ व हैबत, शान व शौकत, और शुजाअत व दिलैरी की धाक और शोहरत की बंधी हवा के सबात और रूमियों के दिलों में पैदा शुदा एहसास कमतरी का माद्दा ज़ाइल हो कर खुद ए'तेमादी और खुद दारी में तब्दील न हो जाए उन तमाम उमूर को आप ने इल्मे नफ्सियात की बुन्याद पर परखा और एक ऐसा फैसला किया कि जिस को सुन कर तमाम लोग महवे हैरत हो गए।

सुब्ह बा'द नमाज़ फज्र आप ने मिम्बर पर खडे हो कर सहाबए किराम की जमाअत के सामने ऐ'लान किया कि **मैं ने इस्लामी लश्कर के सिपाह सालारे आज़म के मन्सब से खालिद बिन वलीद को मा'ज़ूल कर के उन की जगह अबू उबैदा बिन जर्राह को मुकर्रर किया है।**

फिर हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो ने एक साफ चमडा लिया और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह के नाम खत लिखा। इस खत में आप ने हज़रत खालिद बिन वलीद को इस्लामी लश्कर के सिपाह सालारे आज़म के ओहदे से मा'ज़ूल करने और हज़रत अबू उबैदा को इस ओहदे पर मुकर्रर करने का हुक्म नामा तहरीर फरमाया। हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो ने वह खत हज़रत स'अद बिन अबी वक्कास के भाई हज़रत आमिर बिन अबी वक्कास को दिया और उन के हमराह हज़रत शद्दाद बिन औस को अपने नुमाइन्दा की हैसियत से दमिश्क रवाना किया। हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत आमिर बिन अबी वक्कास को हुक्म दिया कि दमिश्क जा कर इस्लामी लश्कर को खलीफए अव्वल हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो की रेहलत की खबर सुनाओ और उन्हें हुक्म करो कि तमाम मुजाहेदीन हज़रत शद्दाद बिन औस के हाथ पर मेरी बैअत करें और इन्हें हज़रत खालिद बिन वलीद की मा'ज़ूली और हज़रत अबू उबैदा की तकर्रुरी से मुत्तलेअ करो।

हज़रत आमिर बिन अबी वक्कास अमीरुल मोमेनीन हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो के हुक्म के मुताबिक दमिश्क आए और हज़रत खालिद बिन वलीद के खैमा में ठहरे। मदीना मुनव्वरा से दो सफीर अमीरुल मोमेनीन का खत ले कर आए हैं,

यह खबर इस्लामी लश्कर के कैम्प में फैलते ही तमाम मुजाहिद जमा हो गए। जब तमाम लोग जमा हो गए तो हज़रत खालिद ने हज़रत आमिर बिन अबी वक्कास से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो की खैरियत पूछी। हज़रत आमिर ने कहा कि ऐ गिरोहे मुस्लिमीन ! खलीफतुल मुस्लिमीन, अमीरुल मोमेनीन, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो दुनिया से पर्दा फरमा गए। हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो की रेहलत की खबर सुन कर हाज़िरीन पर बिजली गिर पडी। एक कोहराम मच गया। गमो अन्दोहा का समां काइम हो गया। मुजाहेदीन फूट फूट कर रोने लगे। हज़रत खालिद बिन वलीद भी आंसू बहा रहे थे। किसी के भी आंसू नहीं थमते थे। रो रो कर सब की आंखें लाल हो गईं। काफी देर तक आह व फुगां का माहौल रहा। जब लोगों को कुछ इफाका हुवा। तब हज़रत आमिर बिन अबी वक्कास ने कहा कि अब हज़रत उमर फारूके आज़म खलीफा मुकर्रर हुए हैं लेहाज़ा उन्हों ने अपनी बैअत लेने के लिये हज़रत शद्दाद बिन औस को अपने नुमाइन्दा की हैसियत से मेरे साथ भेजा है और ब-इवज़े अमीरुल मोमेनीन उन के हाथ पर बैअत करने का हुक्म दिया है। हज़रत आमिर बिन अबी वक्कास की बात सुन कर तमाम मुजाहेदीन ने हज़रत शद्दाद बिन औस के हाथ पर बैअत की। सब से पहले बैअत करने वाले हज़रत खालिद बिन वलीद थे। फिर हज़रत आमिर बिन वक्कास ने हज़रत खालिद बिन वलीद को सिपाह सालारे आज़म के ओहदे से मा'ज़ूल होने और इस ओहदे पर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह का मुकर्रर होने का मज़्मूने खत पढ सुनाया। हज़रत खालिद बिन वलीद फौरन खडे हो गए। और फरमाया कि मुझे अल्लाह और रसूल की और हज़रत उमर की इताअत ब-खूशी मन्ज़ूर है। और हज़रत उमर ने मेरी मा'ज़ूली का जो हुक्म फरमाया है वह भी मुझे ब-खूशी मन्ज़ूर है। उन का हुक्म मैं सर आंखों पर लेता हूं।

अब हम कारेईने किराम की खास तवज्जोह चाहते हैं। हज़रत उमर के इस फैसला पर कुछ ना-वाकिफ लोग अपनी तंग नज़री से यह ए'तेराज़ करते हैं कि उन्हों ने हज़रत खालिद जैसे दिलैर और जंगजू शख्स को मा'ज़ूल कर के हज़रत अबू उबैदा जैसे सादा लौह और नर्म तबीअत शख्स को सिपाह सालारे आज़म के मन्सब पर कैसे फाइज़ कर दिया ? एक इश्किया नाविल लिखने वाले फुट पाथ छाप मुसन्निफ ने खुद को अर्बाबे सैर व तारीख में गुमान कर के मुल्के शाम की फुतूहात पर एक किताब इर्काम करने की जुर्अत की है। इस किताब में यहां तक लिख मारा है कि हज़रत खालिद बिन वलीद ने अपनी मा'ज़ूली का हुक्म सुन कर हज़रत उमर फारूके आज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो के मुतअल्लिक कहा कि :

"उन्हों ने मेरी हक्क तल्फी की है और मुझे बिला-वजह मा'ज़ूल किया है।"

मआज़ल्लाह ! सुम्मा मआज़ल्लाह ! मुसन्निफ ने यह जुम्ला अपनी तरफ से गढ कर हज़रत खालिद बिन वलीद की तरफ मन्सूब कर दिया कि हज़रत खालिद ने यह जुम्ला कहा। हालां कि कुतुबे सैर व तवारीख में और खुसूसन अल्लामा वाकदी की तस्नीफे लतीफ **"फुतूहुश्शाम"** में कहीं भी हज़रत खालिद का यह जुम्ला मर्वी नहीं। हज़रत उमर फारूके आज़म पर हक्क तल्फी का इल्ज़ाम आइद करना और वह भी हज़रत खालिद से मन्सूब कर के सरासर ज़ुल्म और ज़ियादती है। हज़रत खालिद बिन वलीद जैसे बुलन्द मरतबा सहाबी कभी भी अमीरुल मोमेनीन की शान आली में ऐसा खतरनाक और खिलाफे शरीअत जुम्ला अपनी ज़बान पर नहीं ला सक्ते। हक्क तल्फी की इस्लाम में सख्त मुझम्मत की गई है। इस्लाम ने हक्क तल्फी की जडें उखाड कर रख दी हैं और हक्कदार को उस का हक्क दिलाया है। हज़रत उमर फारूके आज़म ने मज़्लूम को ज़ालिम से दाद दिलाने और हक्कदार का हक्क दिलाने के लिये जो सई फरमाई है, उस की नज़ीर नहीं मिलती। हक्क तल्फी और ना-इन्साफी करने वाले की पीठ की खाल को दुर्रए फारूकी ऊधेड कर रख देता था। जिस ज़ाते गिरामी ने हक्क तल्फी करने वालों को ताज़ियाने लगा कर हक्क तल्फी से बाज़ रख कर अद्ल व इन्साफ का माहौल काइम कर दिया था। उसी ज़ाते गिरामी पर हक्क तल्फी का इल्ज़ाम आइद करना इफ्तरा परदाज़ी है।

हज़रत उमर फारूके आज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो हुक्मा-ए उम्मत के ज़ुमरे में सरे फेहरिस्त थे। उन की अक्ल व दानिश और दूर अन्देशी का अंदाज़ा करना मुम्किन नहीं। मसल मश्हूर है कि **"फे'लुल हकीमे ला यख्लू अनिल हिक्मति"** या'नी हकीम का कोई भी काम हिकमत से खाली नहीं होता। हज़रत उमर फारूके आज़म की हिकमते अमली और निगाहे दूर बीनी से ना-आश्ना, कोर बातिन लोग ही हज़रत खालिद की मा'ज़ूली के मुआमले को हक्क तल्फी से ता'बीर करते हैं और अपनी कोतह बीनी का सुबूत देते हैं।

हज़रत खालिद की मा'ज़ूली में हज़रत उमर की दूर-अंदेशी

हज़रत उमर फारूके आज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो को किसी ज़ाती रंजिश, आज़ुर्दगी, अन बन, बुग्ज़ व इनाद, हसदो कीना, अदावत व जलन या किसी किस्म की खफ्गी व नाराज़ी की वजह से सिपाह सालारे आज़म के ओहदे से मा'ज़ूल नहीं किया था, बल्कि खैर अन्देशी, खैर-ख्वाही, खुलूस व मुहब्बत, हमदर्दी, किफायत शआरी और सलामत रवी के पैशे नज़र किया था। आप ने हरगिज़ हरगिज़ हक्क तल्फी नहीं की थी बल्कि शफ्कते अहिब्बा का हक्क अदा किया था। इलावा अज़ीं इस्लामी लश्कर की शान व शौकत और जाह व हश्मत का दबदबा व सिक्का बर-करार रख कर दुश्मनाने इस्लाम के ज़हनों को परागन्दा व मुतरद्दिद कर के उन को मैदाने जंग में दाइमी तौर पर मरऊब व मब्हूत रखने की दूर अन्देशी भी मल्हूज़े नज़र थी। ज़ैल में कुछ अहम नुक्कात पैश हैं :

(1) हज़रत खालिद बिन वलीद की जंगी महारत, शुजाअत और दिलैरी ने रूमी लश्कर के परख्चे उडा दिये थे। और इस वजह से उन को इतनी शोहरत हासिल हूई थी कि मुल्के शाम का हर सिपाही उन का नाम सुनते ही कांपने लगता था। हर रूमी सिपाही यही ख्याल करता था कि हज़रत खालिद बिन वलीद बज़ाते खुद एक लश्कर हैं। उन की वजह से ही इस्लामी लश्कर का हौसला बर-करार है। अगर हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर के सिपाह सालार न हों तो इस्लामी लश्कर की कोई अहमियत व हैसियत न रहे। हम आसानी से इस्लामी लश्कर को शिकस्त व हज़ीमत से दो चार कर दें। ऐसे माहौल में अगर खुदा ना-ख्वास्ता हज़रत खालिद को कुछ हो गया तो रूमियों के हौसले बुलन्द हो जाओंगे और रूमियों में इस्लामी लश्कर से टक्कर लेने की हिम्मत पैदा हो जाएगी। लेहाज़ा रूमियों को यह बावर करा ना मक्सूद था कि अगर हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर के सरदार न हों तब भी इस्लामी लश्कर के रोअब व दबदबा और जंगी तुमतुराक में

कोई फर्क वाकेअ न होगा, बल्कि रूमियों को एहसास हो जाए कि इस्लामी लश्कर का हर सरदार खालिद बिन वलीद की तरह माहिरे जंग है।

(2) हालां कि इस हकीकत में भी शक की कोई गुन्जाइश नहीं कि हज़रत खालिद बिन वलीद की अदम मौजूदगी में इस्लामी लश्कर का जौशो खरोश कुछ मान्द पड जाता था। हज़रत खालिद बिन वलीद की सिर्फ मौजूदगी से मुजाहिदों को ढारस बंधती थी। फिर वह चाहे सिपाह सालार की हैसियत से मौजूद हों या फिर आम सिपाही की हैसियत से मौजूद हों। उन का मौजूद रहना काफी था। लेहाज़ा हज़रत उमर फारूके आज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो हज़रत खालिद की शख्सियत को किसी भी कीमत पर गंवाना नहीं चाहते थे और यह तब ही मुम्किन था जब वह सरदारी के मन्सब पर न हों। क्यूं कि सरदार होने की वजह से उन की जान पर ज़ियादह खतरा था। मिसाल के तौर पर जंगे अजनादीन में रूमी लश्कर के सरदार वर्दान ने मक्रो फरेब से हज़रत खालिद को शहीद करने की साज़िश की थी और दोनों लश्कर के सरदार सुलह की गुफ्तगू के लिये अकेले आ कर सुलह के शराइत तय करें। ऐसा बहाना खडा कर के हज़रत खालिद को गुफ्तगू करने तन्हा बुलाया था। और आप को शहीद कर देने के कस्द से गुफ्तगू करने की जगह के करीब अपने मुसल्लह सिपाहियों को छुपा रखा था। लैकिन वर्दान के नुमाइन्दा दाउद नस्रानी ने वर्दान की साज़िश का पर्दा चाक कर दिया, वरना यकीनन हज़रत खालिद की जान का खतरा था। अगर जंगे अजनादीन के वक्त हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर के सरदार न होते तो रूमी लश्कर के सरदार को ऐसी साज़िश करने का मौका न मिलता। रूमी सरदार को दो सरदारों की मीटिंग के इन्इकाद के बहाने का मौका ही नहीं मिलता। या अगर वह इस्लामी लश्कर के सरदार को बुलाता तो हज़रत खालिद के बजाए कोई दूसरा शख्स गया होता। सरदार न होने की वजह से हज़रत खालिद के जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। अल-हासिल सरदार न होने की सूरत में हज़रत खालिद के लिये खतरा कम था।

(3) हज़रत खालिद बिन वलीद निहायत दिलैर और शुजाअ होने के साथ साथ हमेंशा शहादत के मुतमन्नी रहते थे। इस्लाम के दुश्मनों से जेहाद करते हुए

शहीद हो जाना उन की ऐन ख्वाहिश थी, लेहाज़ा वह हमेंशा खतरों से खेला करते थे। मिसाल के तौर पर मुर्जे दीबाज की जंग में हाकिमे दमिश्क तोमा को कत्ल करने के बा'द एक रूमी गबर के बताने पर हरबीस के तआककुब में पहाडी पर अकेले चले गए थे और ऐसा नाजुक मरहला पैश आया था कि हज़रत खालिद मौत के मुंह से वापस आए थे। मौत उन के सर पर खैल रही थी, बल्कि हज़रत खालिद को भी अपनी शहादत का यकीन हो गया था। खुश किस्मती से हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सिद्दीक और हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर ऐन वक्त पर पहोंच गए, वरना हज़रत खालिद के बचने के इम्कान बहुत कम थे। अगर उस वक्त हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह सरदार होते तो सरदार होने की हैसियत से वह हज़रत खालिद को ऐसी खतरनाक मुहिम पर जाने से रोक देते। हज़रत उमर फारूके आज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो उन तमाम वाकेआत से बा-खबर थे। लेहाज़ा अब मुस्तकबिल में वह हज़रत खालिद को इस किस्म की हलाकत में पडने से बाज़ रखना चाहते थे। क्यूं कि आप जानते थे कि हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर की रूहे रवां हैं। उन को अगर कुछ हो गया तो इस्लामी लश्कर का हौसला टूट जाएगा।

(4) फतहे दमिश्क के बा'द हाकिम तोमा के काफले के तआककुब में हज़रत खालिद बिन वलीद चार हज़ार मुजाहिदों को ले कर नजीब की रहबरी में दमिश्क से मुर्जे दीबाज तक का दुश्वार सफर किया। कई पहाड उबूर किये। दरमियान से जाने वाले रास्ते इख्तेयार किये, वह तमाम रास्ते खतरनाक थे। जबले लकाम पर तूफानी बारिश की मुसीबत में मुब्तला हुए। कोई खैमा या साज़ व सामान भी साथ में नहीं था। इलावा अज़ीं वह तमाम इलाका हिरक्ल बादशाह के लश्कर के सिपाहियों से छलक रहा था। खुश नसीबी से वह मुजाहिदों की इस इलाके में आमद से बे-खबर रहे। अगर मुर्जे दीबाज से दमिश्क वापस लौटते वक्त वह मुज़ाहिम होते तो मुजाहिदों के लिये खतरा था। मुसल्सल एक माह के करीब सफर करते करते वह निढाल हो गए थे। साथ में गनीमत के सामान का बोझ, घोडों के पाऊं नोक दार पत्थरों से ज़ख्मी, वगैरा वुजूहात बाइसे आफत व दुश्वारी थे। अगर उन पहाडी इलाकों के रूमी सिपाही मुत्तहिद हो

कर अज़ियत व नुक्सान पहुंचा देते, तो इस लश्कर में हज़रत खालिद के इलावा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र, हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर, हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई जैसे सरताज मुजाहिदों की जान का खतरा था। अगर खुदा न ख्वास्ता उस पहाडी इलाके में रूमी गालिब आ जाते तो इस्लामी लश्कर की धाक और हैबत को धक्का लगता और इस्लामी लश्कर के रोअब व दबदबा की बंधी हवा जाती रहती। मुर्जे दीबाज की हज़ीमत का असर दमिश्क में मुकीम इस्लामी लश्कर पर पडता और लश्कर का हौसला टूट जाता, मुबादा बुज़दिली लाहिक होती, जिस के नतीजा में इस्लामी लश्कर का खौफ व डर रूमियों के दिलों से कम हो जाता।

कुरआने मजीद में इर्शादे बारी तआला है :

"فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ"

(सूरतुल अन्फाल, आयत : 46)

तर्जुमा : "फिर बुज़दिली करोगे और तुम्हारी बंधी हूई हवा जाती रहेगी।"

(कन्जुल ईमान)

हल्ले लुगत : हवा बंधना (मुहावरा) धाक बंधना, रोअब जमना, शोहरत होना (फीरोजुल-लुगात, सफहा : 1453)

❁ अगर फतहे दमिश्क के वक्त हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह इस्लामी लश्कर के सरदार होते तो उन की इजाज़त के बगैर हज़रत खालिद बिन वलीद चार हज़ार सवारों को ले कर मुर्जे दीबाज तक तोमा के काफला के तआककुब के लिये न जाते और इजाज़त तलब करने पर हज़रत अबू उबैदा ऐसी खतरनाक मुहिम पर जाने की इजाज़त न देते। हज़रत खालिद बिन वलीद और उन के साथियों की मुर्जे दीबाज से कोई खबर या इत्तेलाअ न आने की वजह से दमिश्क में मुकीम इस्लामी लश्कर मायूस हो गया था। और उन का हौसला पस्त हो गया था। जब एक महीना के बा'द हज़रत खालिद वापस आए तब सब की जान में जान और दम में दम आया।

हज़रत फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो यह चाहते थे कि मुल्के शाम में इस्लामी लश्कर की जो हवा बंधी है वह काइम रहे और इस के लिये हज़रत खालिद बिन वलीद का ज़िन्दा और सलामत रहना अशद ज़रूरी था। अगर हज़रत खालिद मुर्जे दीबाज जैसे खतरनाक महाज़ पर जा कर शहीद हो गए तो उन की एक शहादत से पूरे इस्लामी लश्कर की धाक को अज़ीम सदमा पहुंचेगा और इस से बचने के लिये हज़रत खालिद का बकैदे हयात रहना अह्म और लाज़िमी था। लेहाज़ा हज़रत खालिद के जौश को हज़रत अबू उबैदा के होश की लगाम से मुतवाज़िन रखना चाहिये।

(5) हज़रत खालिद बिन वलीद के रोअब और हैबत का यह आलम था कि मुल्के शाम के रूमी सुलह की गुफ्तगू के लिये आते हुए भी कांपते थे। मिसाल के तौर पर इस्लामी लश्कर के मुहासरा से तंग आ कर अहले दमिश्क सुलह करने पर आमादा हुए थे। लैकिन सुलह की गुफ्तगू के लिये बाबे जाबिया पर हज़रत अबू उबैदा के पास गए। जब कि हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर के सरदार थे। अहले दमिश्क उन के रोअब की वजह से बाबे शर्की पर उन से गुफ्तगू करने नहीं आए। हालां कि हज़रत खालिद बिन वलीद जंग पर सुलह को तर्जीह देते थे और ब-मुकाबिल जंग सुलह को ज़ियादह पसन्द करते थे लैकिन कोई सुलह करने आए तो सुलह करें? हज़रत उमर फारूके आज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो पूरे मुल्के शाम और दीगर ममालिक में इस्लाम का पर्चम लहराने के ख्वाहिशमन्द थे और यह चाहते थे कि ज़ियादह से ज़ियादह लोग दायरए इस्लाम में दाखिल हों और इस्लाम के महासिन और इस की ता'लीमात से मुतअस्सिर हो कर इस्लाम की जानिब माइल

हों और यह सिर्फ जंग से हासिल नहीं, बल्कि सुलह से होगा। और हत्तल इम्कान यह कोशिश करनी चाहिये कि बजाए जंग ब-ज़रीए सुलह फतह हासिल हो। लैकिन सुलह कब होगी? जब सामने वाला फरीक सुलह के लिये आमादा और रज़ा मन्द हो। अगर दुश्मन सुलह के लिये आमादा हो तो हम को भी सुलह कर लेनी चाहिये क्यूं कि कुरआने मजीद में इर्शाद रब तबारक व तआला है :

"وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا"

(सूरतुल अन्फाल, आयत : 61)

तर्जुमा : "और अगर वह सुलह की तरफ झुकें तो तुम भी झुको।"

(कन्जुल ईमान)

सुलह का एक बडा अज़ीम फाइदा यह भी है कि फरीकैन के बहुत से अफ्राद की जानें बच जातीं और इन्सान का खून बहने से बच जाता। लेहाज़ा सुलह में भलाई और बेहतरी है। अल्लाह तबारक व तआला फरमाता है :

"وَالصُّلْحُ خَيْرٌ" (सूरए निसा, आयत : 138)

तर्जुमा : "और सुलह खूब है।" (कन्जुल ईमान)

अगर हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर के सरदार होंगे तो उन की नर्म तबीअत की वजह से रूमी सुलह के लिये ज़ियादह से ज़ियादह आमादा होंगे। बर-अक्स हज़रत खालिद की सरदारी के। लेहाज़ा हज़रत उमर फारूके आज़म ने सुलह की तरफ रूमियों का मैलान बढाने की गर्ज़ से हज़रत खालिद बिन वलीद की जगह हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को मुकर्रर फरमाया।

(6) हज़रत अबू उबैदा को इस्लामी लश्कर का सरदार मुकर्रर करने में हज़रत उमर फारूके आज़म की एक दूर अन्देशी यह भी थी कि हज़रत खालिद सख्त मिज़ाज और जंगजू हैं। उन का रोअब और उन की दहशत रूमियों के दिलों पर गालिब है और वह हज़रत खालिद के नाम से थर थर कांपते हैं। बल्कि हज़रत खालिद को वह अपनी मौत के रूप में देखते हैं। लेहाज़ा

हज़रत खालिद उन पर सख्ती बर्तें और सख्त रवय्या अपनाऐं । यहां तक कि रूमी तंग और आजिज़ आ जाऐं और हज़रत खालिद की तलवार की ज़र्ब से महफूज़ व मामून रहने के लिये वह पनाह ढूंढें । जब रूमियों को यह मा'लूम होगा कि इस्लामी लश्कर के सरदार हज़रत अबू उबैदा हैं और वह नर्म तबीअत के हैं तो वह हज़रत खालिद की तलवार के खौफ से हज़रत अबू उबैदा के पास अमान तलब करने आऐंगे । और सुलह कर के जिज़्या अदा करने पर रज़ा मन्द हो जाऐंगे । या'नी हज़रत खालिद उन को तलवार से डराऐं और हज़रत अबू उबैदा की तरफ भगाऐं और हज़रत अबू उबैदा उन को सुलह की ज़न्जीर में जकडते चले जाऐं । या'नी एक गर्म तबीअत और दूसरा ठंडी तबीअत का । ठंडी और गर्मी दोनों फाइदा मन्द हैं लैकिन इस के लिये ज़रूरी है कि गर्म तबीअत वाला मा-तहत हो और ठंडी तबीअत वाला सरबराहे आ'ला हो । ताकि सांप मरे और लाठी न टूटे ।

(7) हज़रत खालिद बिन वलीद गर्म तबीअत के होने के बा-वुजूद अख्लाके हसना, एहसान, रहम दिली और फराख दिली के पैकर थे । लैकिन हज़रत खालिद के उन महासिन से रूमी बिल्कुल अन्जान थे । उन का गुमान सिर्फ यही था कि हज़रत खालिद बिन वलीद हमेंशा तलवार की ज़बान से बात करते हैं । लेहाज़ा रूमी हज़रत खालिद से खिचे खिचे रहते थे । और नज़्दीक आने से थर्राते थे । हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को इस्लामी लश्कर का सरदार मुकर्रर करने में एक हिकमत यह भी थी कि हज़रत अबू उबैदा के तवस्सुत से रूमी जब हज़रत खालिद के करीब आऐंगे तो उन पर यह हकीकत भी मुन्कशिफ होगी कि हज़रत खालिद की शिद्दत उन कुफ्फार व मुश्रेकीन के लिये है जो सरकश और इस्लाम से टकराने पर तुले हुए हैं । लैकिन जो सुलह कर के अमान हासिल कर लेते हैं और अपनी सुलह के अह्द पर काइम रहते हैं, उन के साथ हज़रत खालिद का रवय्या नर्म और एहसान का होता है । हज़रत खालिद बिन वलीद कुरआने मजीद की इस आयत के सख्त पाबन्द थे ।

"فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ"

(सूरए-तौबा, आयत : 7)

तर्जुमा : "तो जब तक वह तुम्हारे लिये अह्द पर काइम रहें, तुम उन के लिये काइम रहो ।" (कन्ज़ुल ईमान)

मुर्जे दीबाज में एक रूमी गबर ने अमान मिलने की शर्त पर हज़रत खालिद को हरबीस का पता बताया था कि हरबीस अपने साथियों के साथ पहाड की तरफ भाग रहा है । चुनांचे हज़रत खालिद ने हस्बे मुआहिदा किसी भी किस्म का मुआवज़ा लिये बगैर उस रूमी गबर को जाने दिया और ईफाए अह्द की मिसाल काइम फरमा दी । इसी तरह हिरक्ल बादशाह की बेटी को किसी किस्म के मुआवज़ा के बगैर कैद से रेहा कर के यह साबित कर दिया कि मोहसिने आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सहाबा एहसान करने में भी किसी से कम नहीं, हालां कि हिरक्ल बादशाह मुंह मांगा माल मुआवज़ा में देने के लिये राज़ी था, लैकिन हज़रत खालिद ने हिरक्ल बादशाह की बेटी उस को ब-तौर हद्या व तोह्फा भेज कर हिरक्ल को भी मर्हूने मिन्नत बनाया ।

(8) हज़रत खालिद बिन वलीद को मा'ज़ूल कर के उन की जगह हज़रत अबू उबैदा को सरदार मुकर्रर कर के हज़रत सय्यिदोना उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो रूमियों को यह तअस्सुर देना चाहते थे कि हज़रत खालिद के नज़्दीक ओहदे और मन्सब की कोई अहमियत नहीं । वह लश्कर के सरदार हों जब भी शैरे बबर हैं और सरदार न होने की हालत में भी शैरे बबर हैं । बल्कि सरदार न होने की हालत में उन की शुजाअत और दिलैरी के मज़ीद जौहर देखने को मिलेंगे । आइन्दा सफ्हात में जंगे हिस्ने अबील कुद्स, जंगे कन्सरीन, जंगे हुमुस, जंगे यर्मूक और जंग हल्ब के अहवाल में हज़रत खालिद बिन वलीद की शुजाअत और बहादुरी की सरगुज़श्त पढते वक्त दिल धडकने लगेगा और रोंग्टे खडे हो जाऐंगे । इस्लामी लश्कर का सरदार खालिसतन ले वज्हिल्लाह जेहाद करता है । ओहदे व इक्तेदार की तमाअ में नहीं । इस का मक्सदे जेहाद सिर्फ और सिर्फ "اِعْلَاءِ كَلِمَةِ الْحَق" होता है । इस्लामी लश्कर का सरदार रूमी लश्कर के सरदार की मानिन्द नहीं कि ओहदे व इक्तेदार की तलब व तमाअ में गद्दारी करे और दुश्मनों से मिल कर अपने ही लश्कर को ज़रर रसानी की शरारत करे । मिसाल के तौर पर जंगे

दमिश्क (बार अव्वल) के तज़्करे में कारेईने किराम ने मुलाहेज़ा फरमाया कि हाकिमे दमिश्क का ओहदा हासिल करने की लालच और ख्वाहिश में रूमी सरदार कलूस और इज़्राईल ने क्या क्या गुल खिलाए ? और दोनों ने एक दूसरे के लिये कैसे कैसे कांटे बिछाए ? लैकिन इस्लामी लश्कर का सरदार ओहदे से मा'ज़ूल होने के बा'द ज़ियादह मुख्लिस, ज़ियादह मुतीअ, ज़ियादह वफादार, ज़ियादह दिलैर, ज़ियादह फर्ज़ शनास, ज़ियादह मेहनत कश और ज़ियादह फरमा-बरदार हो कर राहे खुदा में अपनी जान खर्च करता है। अपनी जगह पर मुकर्रर होने वाले नए सरदार के लिये ज़र्रा बराबर भी इस के दिल में कदूरत व खलिश नहीं होती, बल्कि मुहब्बत व उल्फत होती है। एक वक्त वह था कि आज तकर्रुर पाने वाला सरदार मा'ज़ूल होने वाले सरदार का मा-तहत था, लैकिन अब वह मन्सबे सरदार पर फाइज़ है और मा'ज़ूल होने वाला सरदार अब उस के मा-तहत रहने में किसी किस्म की शर्म व आर मेह्सूस नहीं करता। बल्कि खुशी और मसर्रत से उस की इताअत करने में अपनी सआदत समझता है। उस के हुक्म की ता'मील व बजा आवरी में सर पर कफन बांध लेता है और अपनी जान पर खेल जाता है। वह जो कुछ भी करता है अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की मुहब्बत में करता है। चाहे वह सरदार हो या अदना सिपाही हो। हर हाल में वह यही चाहता है :

काम वो ले लीजिये, तुम को जो राज़ी करे
ठीक हो नामे रज़ा तुम पे करोडों दुरूद

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

(9) हज़रत खालिद बिन वलीद की मा'ज़ूली के ज़रीए हज़रत उमर फारूके आज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो दुनिया पर यह हकीकत भी आश्कार करना चाहते हैं कि इस्लामी लश्कर के मुजाहेदीन रूमियों की तरह नफ्स परस्त और दुनिया दार नहीं। बल्कि इस्लामी लश्कर के हर मुजाहिद का मतमहे नज़र अल्लाह और अल्लाह के रसूल की रज़ा मन्दी हासिल करना है। इसी लिये वह कुफ्फार व मुश्रेकीन पर सख्त थे। और आपस में रहम दिल थे। सिर्फ

हज़्रत खालिद बिन वलीद ही नहीं बल्कि इस्लामी लश्कर के हर मुजाहिद में यह सिफत पाई जाती है। खुसूसन सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन की मुकद्दस जमाअत इस पर कामिल तौर से अमल पैरा थी। कुफ्फार के साथ शिद्दत और मोमेनीन के साथ मुहब्बत का बरताउ करना उन की अहम खुसूसियत थी। इसी लिये मैदाने जंग में वह काफिरों पर कहरे इलाही की बिजली बन कर टूट पडते थे और अपने मोमिन भाइयों के कदमों तले दिल का गालीचा बिछाते थे। सहाबए किराम की इस सिफत का कुरआने मजीद में इस तरह ज़िक्र है :

"مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ"

(सूरतुल फत्ह, आयत : 29)

तर्जुमा : "मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उन के साथ वाले काफिरों पर सख्त हैं और आपस में नर्म दिल" (कन्ज़ुल ईमान)

तफ्सीर : (1) काफिर पर ऐसे सख्त जैसा कि शैर शिकार पर और सहाबा का तशद्दुद कुफ्फार के साथ इस हद पर था कि वह लिहाज़ रखते थे कि उन का बदन किसी काफिर के बदन से न छू जाए। और उन के कपडे से किसी काफिर का कपडा न लगने पाए।

(तफ्सीर मदारिक)

(2) आपस में एक दूसरे पर मुहब्बत व मेहरबानी करने वाले ऐसे कि जैसे बाप बेटे में हो और यह मुहब्बत इस हद तक पहोंच गई कि जब एक मोमिन दूसरे मोमिन को देखे तो फर्ते मोहब्बत से मुसाफहा व मुआनका करे।

(तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 926)

हज़्रत खालिद बिन वलीद और हज़्रत अबू उबैदा बिन जर्राह कुरआने मजीद की मुन्दरजा बाला आयत के नमूनए अमल थे और उन की मुताबेअत में पूरा इस्लामी लश्कर "اَلْحُبُّ لِلّٰهِ وَالْبُغْضُ لِلّٰهِ" की ज़िन्दा तस्वीर था। ओहदे और मन्सब के हुसूल की लालच में फरीज़-ए उखुवत व मुहब्बत से रूगर्दानी नहीं

करते थे। बल्कि कुरआन के हुक्म " اَطِيْعُوْاللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْ الرَّسُوْلَ وَاُوْلِيْ الْاَمْرِ مِنْكُمْ " या'नी **हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और उन का जो तुम में हुकूमत वाले हैं।** पर अमल करते हुए खन्दा पेशानी से ''उलूल अम्र'' के हुक्म को सर आंखों पर रखते थे। अमीरुल मोमेनीन हज़रत फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत खालिद बिन वलीद को मा'ज़ूल करने का हुक्म नाफिज़ फरमाया और हज़रत खालिद ने इस हुक्म के सामने सरे तस्लीम खम फरमाया और साबित कर दिखाया कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सोहबत याफ्ता व तर्बियत याफ्ता सहाबए किराम की मुकद्दस जमाअत हर मुआमले में कुरआन के हुक्म की ता'मील करती है। नफ्सानियत को दख्ल देने नहीं देती।

(10) हज़रत खालिद बिन वलीद को इस्लामी लश्कर के सरदार के ओहदे से मा'ज़ूल कर के हज़रत उमर फारूके आज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो हज़रत खालिद की जंगी सलाहियतों को पूरा पूरा ब-रूए कार लाना चाहते थे। सरदार होने की हैसियत से हज़रत खालिद के सर पर बहुत सारी ज़िम्मेदारियों का बार था। मसलन गनीमत का माल जमा कर के उस का हिसाब रखना, गनीमत के माल से खुम्स (20%) अलग कर के उसे अमीरुल मोमेनीन की खिदमत में मदीना मुनव्वरा भेजने का इन्तेज़ाम करना, बाकी माल को मुजाहिदों में हस्बे मरातिब तक्सीम करने के लिये मुजाहिदों की ता'दाद, काम की अहमियत के ए'तबार से उस का हिस्सा मुकर्रर करना, उन का मीज़ान कर के माले गनीमत की कीमत के मुताबिक उन तमाम हिसस को मुन्कसिम कर के हर मुजाहिद को उस का हिस्सा देना, इलावा अज़ीं लश्कर के लिये अश्याए सरफ और दीगर ज़रुरियात फराहम करने के लिये अतराफ के दैहात से गल्ला और रस्द खरीदने के लिये रूमी गल्ला फरोशों से राब्ता काइम करना, दाम मुतअय्यन करना, गल्ला की मिक्दार के मुताबिक उस की कीमत अदा करने का इन्तेज़ाम करना, फिर खुफिया तरीके से उन दैहातियों से इस्लामी लश्कर के कैम्प तक गल्ला लाने के लिये काफला भेजना, फिर उस गल्ले को मुजाहिदों में तक्सीम करना, लश्कर में हज़ारों की ता'दाद में लोग होते थे। कोई बीमार हुवा, कोई ज़ख्मी हुवा, किसी को कोई ज़रूरत

पैश आए, किसी को कोई शिकायत है। वगैरा वगैरा मुआमलात हल करने में लश्कर का सरदार हमेंशा उलझा हुवा ही रहता है। हज़रत उमर फारूके आज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत खालिद को ओहद-ए सरदारी से मा'ज़ूल कर के उन तमाम ज़िम्मेदारियों से सुबुक्दोश और मुस्तग्नी कर दिया। ताकि वह अपनी तमाम सलाहियतें सिर्फ जंगी उमूर में सर्फ करें और इस्लामी लश्कर की शान व शौकत बढाअें और दुश्मनाने इस्लाम पर अपनी धाक और हैबत का सिक्का बिठाअें।

मुन्दरजा बाला दस नुक्कात के मुतालए से कारेईन पर यह हकीकत मुन्कशिफ हो गई होगी कि हज़रत सय्यिदोना उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत खालिद बिन वलीद को दूर अन्देशी और हिकमते अमली की बिना पर मा'ज़ूल किया था और कोई दूसरा मक्सद न था। लेहाज़ा इस बहस को तूल न देते हुए "تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ" पर इकतेफा करते हुए हम मुल्के शाम का सफर आगे बढाते हैं।

जंगे हिस्ने अबील कुद्स

हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर की कयादत संभालने के बा'द चंद दिनों तक लश्कर को दमिश्क में ठहराए रखा और इस फिक्र में थे कि अब किस जानिब कूच करना है ? कभी वह बैतुल मुकद्दस की तरफ जाने का इरादा फरमाते थे और कभी इन्ताकिया की तरफ कूच करने का कस्द फरमाते थे । उसी दौरान हज़रत अबू उबैदा के पास एक नस्रानी अरब आया । वह नस्रानी अरब दमिश्क का बाशिन्दा था । फतहे दमिश्क के दिन हज़रत अबू उबैदा ने उस पर एहसान फरमा कर उस की जान बचाई थी और उसे अमान दी थी । उस अरब मुतनस्सिरा ने हज़रत अबू उबैदा से कहा कि दमिश्क के साहेली इलाके में एक किल्ला वाकेअ है । जिस का नाम हिस्ने अबील कुद्स है । यह किल्ला अर्का और मर्जे सिल्सिला नाम के दो गांव के दरमियान है । उस किल्ले के सामने एक सौमआ (गिर्जा) है । उस गिर्जा में एक बुढ्ढा राहिब रहता है । जिस की उमर एक सौ साल से भी ज़ियादह है । वह बुढ्ढा राहिब दीने नस्रानियत का ज़बरदस्त आलिम है । पूरे मुल्के शाम के लोग उस के पास इकतिसाबे फैज़ व हुसूले बरकत की गर्ज़ से आते हैं और उस राहिब की बहुत ही ता'ज़ीम व तकरीम करते हैं । वह राहिब हर साल अपने गिर्जा के पास एक मैले का इन्इकाद करता है । इस मेले में शिर्कत करने के लिये दूर व दराज़ से लोग आते हैं । मैला तीन या सात दिन तक रहता है । और मैले के दिनों में गिर्जा के करीब एक बाज़ार लगता है । जिस में सोना, चांदी, जवाहिरात, रैश्मी कपडे और दीगर कीमती अश्या की बडे पैमाने पर खरीदो फरोख्त होती है । मैले के इख्तिताम के दिन वह राहिब गिर्जा से बाहर आ कर इन्जील से माखूज़ पन्दो नसाएह पर मुश्तमिल तक्रीर करता है । फिर मैला खत्म होता है और लोग मुतफर्रिक हो जाते हैं । हिस्ने अबील कुद्स का मैला करीब है । अगर आप मैले की तक्रीब के दिनों में वहां लश्कर भेज कर हम्ला करें तो कसरत से माले गनीमत हासिल होने की उम्मीद है ।

नस्रानी अरब की दी हूई इत्तेलाअ से हज़रत अबू उबैदा बहुत खुश हुए और पूछा कि वह जगह यहां से कितनी दूर है ? जवाब दिया कि दस फर्सख है । एक दिन की मुसाफत है । हज़रत अबू उबैदा ने पूछा कि उस गिर्जा के करीब रूमियों का कोई ऐसा शहर है जो उन

की मदद के लिये आ सके ? नस्रानी अरब ने जवाब दिया कि हां ! करीब में **फर्ज़ा** नाम की एक बन्दरगाह है, जहां पूरे मुल्क से कश्तियां आती जाती रहती हैं । फर्ज़ा का हाकिम तराबलिस नाम का एक मुतकब्बिर बतरीक है । हिरक्ल बादशाह ने शहर फर्ज़ा और नवाही इलाका उस को जागीर में दे रखा है । हाकिम तराबलिस निहायत मुतकब्बिर और मग्रूर शख्स है । अवामुन्नास के साथ मैला में शिर्कत करना अपनी शान के खिलाफ गुमान करता है । लेहाज़ा वह मैला में कभी भी शिर्कत नहीं करता और न ही वह इस मैला की हिमायत करता है, लैकिन अब के शायद तुम्हारे खौफ की वजह से बाज़ार वालों की हिफाज़त व हिमायत करने आए ।

कुछ देर सोचने के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने मुजाहेदीन से पूछा कि तुम से कौन किल्ल-ए हिस्ने अबील कुद्स पर लश्कर ले कर हम्ला करने जाने के लिये तैयार है ? एक कम सिन और नूरानी शक्ल व सूरत वाले नौ-जवान खडे हुए और कहा कि ऐ सरदार ! इस खिदमत को मैं अंजाम देने का कस्द रखता हूं । उस नौ-जवान का नाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार था और हज़रत जा'फरे तय्यार बिन अब्दुलमुत्तलिब रदियल्लाहो तआला अन्हो हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के हकीकी चचा के शेहज़ादे थे । इस रिश्ता की बिना पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के चचा ज़ाद भाई के शेहज़ादे थे ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार मुल्के शाम क्यूं आए ?

हज़रत अब्दुल्लाह के वालिद हज़रत जा'फर बिन अब्दुल मुत्तलिब अल-मा'रूफ ब-जा'फरे तय्यार 8 सन हिजरी में जंगे मौता में शहीद हुए थे । उस वक्त हज़रत अब्दुल्लाह बहुत कमसिन थे । हज़रत जा'फरे तय्यार की बेवा बा'द में अमीरुल मो'मिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो की ज़ौजियत में आईं थीं । हज़रत अस्मा बिन्ते ओमैस से निकाह फरमाने के बा'द हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत अब्दुल्लाह की परवरिश और तर्बियत फरमाई थी । जब हज़रत अब्दुल्लाह का सिन शबाब के करीब पहुंचा तब अक्सर वह अपनी वालेदा हज़रत अस्मा बिन्ते ओमैस से अपने वालिद के मुतअल्लिक पूछा करते । हज़रत अस्मा फरमातीं के तुम्हारे वालिद को रूमियों ने शहीद किया है । अपने वालिद की शहादत की कैफियत सुन कर हज़रत अब्दुल्लाह हमेंशा यही फरमाते कि अगर में ज़िन्दा रहा तो रूमियों से अपने वालिद का ज़रूर बदला ले कर रहूंगा । अपने वालिद का रूमियों से इन्तेकाम लेने के लिये वह बे-करार रहते थे ।

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो की रेहलत के बा'द हज़रत उमर फारूके आज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो खलीफा हुए । कुछ लोग हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस जुहनी के हमराह ब-इरादए जेहाद मुल्के शाम जा रहे थे । हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर में दोस्ती थी । दोनों अब्दुल्लाह जिगरी यार थे । जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर को इत्तेलाअ हूई कि उन के दोस्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस ब-कसदे जेहाद मुल्के शाम जा रहे हैं, तो उन के दिल में अपने वालिद के कातिलों से इन्तेकाम लेने का जज़्बा मौज-ज़न होने लगा । हज़रत उमर फारूके आज़म की खिदमत में हाज़िर हो कर मिन्नतो समाजत कर के जेहाद के लिये मुल्के शाम जाने की इजाज़त हासिल कर ली । हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस का काफला कुल बीस अफ्राद पर मुश्तमिल था । मुल्के शाम के लिये रवाना होते वक्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर अपने अम्मे मोहतरम मौलाए काएनात हज़रत अली बिन अबी तालिब कर्रमल्लाहो तआला वज्हहु की खिदमत में हाज़िर हुए और रुखसत की इजाज़त तलब की । हज़रत सय्यिदोना मौला अली मुश्किल कुशा रदियल्लाहो तआला अन्हो ने दुआ-ए बरकत व हिफाज़त से नवाज़ कर फी अमानिल्लाह रुखसत फरमाया ।

जब उन का काफला मकामे तबूक पहुंचा तब हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर ने अपने दोस्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस से दर्याफ्त किया कि क्या तुम को मेरे वालिद की कब्र का पता मा'लूम है ? हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस ने क्या जवाब दिया ? और फिर इस के बा'द क्या हुवा ? वह अल्लामा वाकदी के अल्फाज़ में समाअत फरमाऐं :

"रिवायत की है अब्दुल्लाह बिन अनीस से कि पहुंचे हम तबूक में । पस कहा अब्दुल्लाह ने कि ऐ इब्ने अनीस ! आया जानते हो तुम जगह कब्र मेरे बाप की । मैं ने कहा हां कब्र उन की मौता में है । इन्हों ने कहा कि ख्वाहिश रखता हूं मैं कि देखुं उस जगह को । पस चले हम यहां तक कि आ गये हम उन के बाप की कब्र और उस जगह पर जहां लडाई हूई थी और कब्र पर पत्थर थे जो कौमे कल्ब ने वास्ते तबर्रुक के रखे थे । पस देखा अब्दुल्लाह ने कब्र अपने बाप की, उतरे वहां और गए कब्र पर और रोए । फिर दुआए रहमत मांगी उन के वास्ते और कयाम किया हम ने कब्र के पास ता वक्ते सुब्ह दूसरे दिन के । पस जब कूच किया हम ने देखा मैं ने अब्दुल्लाह बिन जा'फर को कि रोते थे और चेहरा उन का मिस्ल रंग ज़ा'फरान के हो गया था । पस पूछा मैं ने सबब इस का । पस कहा इन्हों ने के मैं ने रात में अपने बाप जा'फर को ख्वाब में देखा

और वह दो कपडे सब्ज़ पहने हुए थे और उन के दो पर थे और उन के हाथ में एक तलवार बरहेना खून आलूदह थी । पस दी इन्हों ने वह तलवार मुझ को और कहा कि ऐ बेटे ! लडो तुम साथ इस तलवार के दुश्मनाने खुदा और अपने दुश्मनों से और नहीं पहुंचा मैं इस मरतबे को जिस को तुम देखते हो मगर ब-सबब जेहाद के और गोया मैं लडता हूं साथ इस तलवार के यहां तक कि रख्नादार हो गई और तलवार मेरे हाथ में"

(हवाला :- फुतूहुश्शाम, अज़ अल्लामा वाकदी, सफहा : 142)

कारेईने किराम मुन्दरजा इबारत को ब-गौर मुतालआ फरमाऐं । तो हस्बे ज़ैल उमूर साबित होंगे :

(1) मदीना मुनव्वरा से मुल्के शाम जाते हुए तबूक नाम का मकाम शाहराह पर वाकेअ है लैकिन मौता नाम का मकाम शाहराह से हट कर अन्दरूनी इलाके में वाकेअ है । हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार रदियल्लाहो तआला अन्हो अपने साथियों के हमराह तबूक से मौता सिर्फ ज़ियारते कब्र के कस्द से सफर कर के गए ।

(2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर ने अपने वालिद हज़रत जा'फर बिन अब्दुलमुत्तलिब की कब्र पर पत्थर रखे हुए देखे जो तबर्रुक के लिये कब्र पर रखे हुए थे ।

(3) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार रदियल्लाहो तआला अन्हुमा अपने साथियों के हमराह अपने वालिद के मज़ार शरीफ पर रात भर ठहरे और कब्र के पास ही कयाम किया ।

(4) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार को ख्वाब में अपने वालिद की बशारत हूई । ख्वाब में उन के वालिद ने इन्हें तलवार अता फरमाई जिस से वह जेहाद करते रहे, यहां तक कि वह तलवार टूट गई ।

मुन्दरजा बाला चारों बातें मीज़ान अद्ल के एक पल्ले में रखो और दूसरे पल्ले में दौरे हाज़िर के इमामुल मुनाफिकीन मौलवी इस्माईल देहल्वी अलैह मा अलैह की मुन्दरजा ज़ैल इबारत को रखो :

"इस किस्म के काम किसी और की ता'ज़ीम के लिये न करे और किसी की

कब्र पर या चिल्ला पर या किसी की थान पर दूर दूर से कस्द करना और सफर की रंज व तक्लीफ उठा कर मैले कुचैले हो कर वहां पहुंचना यह शिर्क की बातें हैं।''

(हवाला :- तक्वीयतुल ईमान, नाशिर :- दारुस्सल्फिया, बम्बई, सफहा : 68)

मौलवी इस्माईल देह्ल्वी ने कब्र के कस्द से दूर का सफर कर के सफर की तक्लीफ उठा कर मैले कुचैले हो कर वहां जाने को शिर्क लिखा है। अब नाज़ेरीन गौर फरमाऐं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार ने तबूक से मौता तक का सफर सिर्फ कब्र की ज़ियारत के कस्द से ही किया था। वह अपने हमराहियों के साथ घोडों पर सवार हो कर तबूक से मौता गए थे, लेहाज़ा सफर की तक्लीफ उठाई, इलावा अज़ीं घोडे पर सवार हो कर सफर किया, साथियों ने भी घोडों पर सवार हो कर सफर किया, लेहाज़ा एक साथ कईं घोडे दौडने की वजह से गर्दो गुबार उठा होगा और उन के कपडे मैले कुचैले हुए होंगे। क्यूं कि उस ज़माने में पक्की सडकें नहीं थीं। कच्चे रास्ते थे। लेहाज़ा हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार ने तबूक से मौता तक का सफर कर के जब कब्र पर पहुंचे होंगे तब इन्हों ने सफर की तक्लीफ भी उठाई होगी और उन के कपडे भी गर्दो गुबार से आलूदह हुए होंगे। उन तमाम कामों को वहाबी, गैर मुकल्लिद, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के इमाम व पेश्वा ''शिर्क की बातें'' कह रहे हैं। नाज़ेरीन फैसला फरमाऐं कि मौलवी इस्माईल देह्ल्वी का फत्वा किस पर चस्पां हो रहा है ?

हैरत और तअज्जुब की बात तो यह है कि हर मुआमला में शिर्क की राग अलापने वाले मुनाफिकीन के पेश्वाओं को शिर्क की इस्तेलाह का बुन्यादी इल्म ही नहीं। लेहाज़ा वह शिर्क के अहकाम बयान करते वक्त ऐसे गोते खाते हैं कि अपने खोदे हुए गढे में खुद ही गिरते हैं। मसलन :

तक्वीयतुल ईमान की मुन्दरजा इबारत के इख्तिताम पर लिखा है :

''क्यूं कि यह मुआमला खालिक ही से करना चाहिये, मख्लूक की यह शान नहीं कि उस से यह मुआमला कीजिये।''

(हवाला :- तक्वीयतुल ईमान, नाशिर :- दारुस्सल्फिया, बम्बई, सफहा : 68)

नाज़ेरीन गौर फरमाऐं कि मौलवी इस्माईल देह्ल्वी ने बात कहां की कहां पहुंचा दी ? किसी मख्लूक की कब्र पर जाने के कस्द से सफर करना शिर्क इस लिये बताया है कि यह मुआमला मख्लूक के साथ करना शिर्क है। या'नी यह मुआमला सिर्फ खालिक के साथ

ही करना चाहिये। तो सवाल यह उठता है कि जब मख्लूक की कब्र पर जाने के कस्द से सफर करना शिर्क है तो क्या दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन खालिक की कब्र होने का ए'तेकाद रखते हैं ? शिर्क की सीधी सादी और आम फहम ता'रीफ यह है कि जो काम अल्लाह तआला के लिये खास हो वह काम मख्लूक के साथ करना। तो जब मौलवी इस्माईल देह्ल्वी किसी की कब्र की ज़ियारत के कस्द से सफर करने को शिर्क कह रहे हैं, इस का मत्लब यह हुवा कि सिर्फ अल्लाह की कब्र की ज़ियारत के कस्द से सफर करना जाइज़ है।

मआज़ल्लाह ! सुम्मा मआज़ल्लाह ! ऐसी बात वही कह सक्ता है जिस की अक्ल चरने गई या उस की अक्ल के तोते उड गए हों। बुज़ुर्गाने दीन के मज़ाराते मुकद्दसा की ज़ियारत के लिये जाने वाले अकीदत मन्द ज़ाइरीन को शिर्क का हुक्म सुना कर डराने और धमकाने की जल्द बाज़ी में आंखें बन्द कर के अंधी दौड लगाई और खुद अपने दाम में सय्याद आ गया।

हकीकत यह है कि जिस की अक्ल में फुतूर आ जाता है वह अक्ल के पीछे लठ लिये फिरता है और ऐसी ऐसी बातें कहता और लिखता है कि उस का अक्ल में समाना मुम्किन नहीं होता। कब्र की ज़ियारत के कस्द से सफर करने को शिर्क लिख कर मौलवी इस्माईल देह्ल्वी ने अपनी अक्ल का चिराग गुल हो जाने का सुबूत दिया है।

एक मज़्हका खैज़ बात की तरफ भी तवज्जोह दरकार है कि मौलवी इस्माईल देह्ल्वी ने कब्र की ज़ियारत के कस्द से सफर करने पर शिर्क का जो हुक्म लगाया है इस में एक कैद लगाई है कि **''सफर की तक्लीफ उठा कर मैले कुचैले हो कर वहां पहुंचना।''** इस कैद के निफाज़ का सबब भी अक्ल पर पर्दे पड जाना है। एक तो शिर्क का हुक्म गलत लिखा ऊपर से मैले कुचैले होने की बैजा कैद लगाई और **अंधा मुल्ला टूटी मस्जिद** वाली मिस्ल के मिस्दाक बने। अगर कोई मैला कुचैला हो कर या सफर की तक्लीफ उठा कर न जाए, बल्कि आराम के साथ और साफ सुथरा हो कर कब्र की ज़ियारत के लिये जाए तो क्या मौलवी इस्माईल देह्ल्वी के फत्वे में तर्मीम की गुन्जाइश है ?

जो दीन कौओं को दे बैठे उन को यक्सां है
कुलाग ले के चले या उलाग ले के चले

(अज़ :- इमामे अहमद रज़ा बरैलवी)

हल्ले लुगत : (1) कुलाग = जंगली कव्वा

(फीरोजुल-लुगात,सफहा : 1020)

(2) उलाग = बोझ उठाने वाला गधा

(फीरोजुल-लुगात,सफहा : 112)

इस बहस को मुख्तसर करते हुए कारेईने किराम से इल्तिमास है कि जिस काम का हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के चचा ज़ाद भाई और सहाबीए रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार रदियल्लाहो तआला अन्हुमा जैसी मुकद्दस ज़ात ने इर्तिकाब किया, उस काम को दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन शिर्क कह कर कितना बडा जुल्म और ज़ियादती करते हैं ?

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार अपने वालिद के मज़ार शरीफ पर हाज़री देने के बा'द मौता से रवाना हो कर दमिश्क आए। उन की आमद से हज़रत अबू उबैदा और तमाम मुजाहेदीन बहुत खुश हुए और उन का इस्तेक्बाल किया। जब हज़रत अबू उबैदा ने हिस्ने अबील कुद्स के किल्ले पर जाने के लिये इस्लामी लश्कर के मुजाहेदीन से पूछा कि कौन इस मुहिम पर जाने के लिये आमादा है, तो हज़रत अब्दुल्लाह ने अपनी ख्वाहिश ज़ाहिर की।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर की दमिश्क से हिस्ने अबील कुद्स की जानिब रवानगी

हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर को पांच सौ सवारों पर सरदार मुकर्रर किया और उन को सियाह रंग के कपडे का अलम इनायत फरमाया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर के लश्कर में अठ्ठारह मुजाहिद अस्हाबे बद्र से थे। हज़रत अबू उबैदा ने हिस्ने अबील कुद्स की इत्तेलाअ देने वाले मुआहदी नस्रानी अरब को राहबरी की खिदमत अंजाम देने लश्कर के साथ भेजा था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर 15, शा'बानुल मोअज़्ज़म 13, सन हिजरी की शब या'नी शबे बरात में रवाना हुए। बडा ही खुशनुमा और दिलकश मन्ज़र था। माहे कामिल अपनी पूरी आब व ताब से खुला हुवा था और जोत पडती चांदनी बिखरी हूई थी। राह चलते हुए हज़रत वासिला बिन अल-अस्का जो जंगे बद्र में हाज़िर थे, उन से हज़रत अब्दुल्लाह ने फरमाया कि आज निस्फ शा'बान

की बडी बरकत वाली शब है। मेरा इरादा इस शब में इबादत व रियाज़त करने का था। हज़रत वासिला ने जवाब में फरमाया कि राहे खुदा में चलना कयाम से बेहतर है। अल्लाह तआला बहुत सवाब देने वाला और करम करने वाला है। पूरी रात सफर करने के बा'द लश्करे इस्लाम एक सौमआ (गिर्जा) के करीब रुका। लश्कर का शौरो गुल सुन कर एक राहिब सौमआ से निकल कर लश्कर के करीब आया और तमाम मुजाहिदों को तज़बजुब की निगाह से घूर घूर कर देखने लगा। थोडी दैर के बा'द राहिब ने पूछा कि तुम कौन लोग हो ? जवाब दिया गया कि हम अह्ले अरब हैं। राहिब ने फिर पूछा कि क्या तुम मुहम्मदी हो ? (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) जवाब दिया गया कि हां ! फिर वह राहिब हर एक को ब-गौर देखने लगा। जब उस ने हज़रत अब्दुल्लाह को देखा तो बस देखता ही रह गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर सूरत और सीरत में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम से बहुत मुशाबेहत रखते थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर का पुर नूर चेहरा देख कर राहिब ने लोगों से पूछा कि क्या यह नौ-जवान तुम्हारे नबी के साहिबज़ादे हैं ? मुजाहिदों ने जवाब दिया नहीं। राहिब ने कहा कि उन की दोनों आंखों से नबुव्वत का नूर झलकता है। क्या उन को तुम्हारे नबी से कोई कराबत है ? मुजाहिदों ने कहा कि यह हमारे नबी के चचा के बेटे हैं। राहिब ने हकीमाना लह्जा में कहा कि यह पत्ते हैं और पत्तों में दरख्त की तासीर होती है। हज़रत अब्दुल्लाह ने राहिब से पूछा कि क्या तुम रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को जानते हो ? राहिब ने जवाब दिया कि क्यूं नहीं ? उन का मुबारक नाम तौरेत, इन्जील और ज़बूर में लिखा हुवा है। उन की सिफत में मज़्कूर है कि वह सुर्ख रंग के ऊंट पर बरहेना तलवार होंगे। हज़रत अब्दुल्लाह ने फरमाया। तुम उन पर ईमान क्यूं नहीं लाते ? राहिब ने जवाब देते हुए आस्मान की तरफ हाथ उठा कर इशारा करते हुए कहा कि यह अम्र उस वक्त वाकेअ होगा जब मालिके आस्मान को मन्ज़ूर होगा। राहिब का कलाम सुन कर मुजाहिदों ने तअज्जुब किया और फिर लश्कर वहां से कूच कर के हिस्ने अबील कुद्स के किल्ले की तरफ आगे बढा।

लश्करे इस्लाम की हिस्ने अबील कुद्स आमद :-

शाम के वक्त इस्लामी लश्कर हिस्ने अबील कुद्स के करीब एक सर सब्ज़ो शादाब जंगल में पहुंचा। मुआहदी राहबर ने कहा कि तुम यहां ठहरो, मैं जा कर बाज़ार के मैले की खबर मा'लूम कर आऊं। मुआहदी राहबर लश्कर को ठहरा कर गया और बहुत ताखीर के बा'द रात में वापस लौटा। उस का चेहरा उतरा हुवा था। उस ने मा'ज़ेरत करते हुए कहा

कि ऐ अस्हाबे मुहम्मद ! (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) । कसम है हक्के मसीह की मैं ने तुम को जो हाल बयान कर के यहां आने की तर्गीब दी थी इस में किसी किस्म का गुलू और किसी किस्म की कोई खयानत नहीं की थी । लैकिन अब एक मुश्किल मुआमला दर-पैश हुवा है । बाज़ार तो हस्बे मा'मूल लग गया है, लैकिन फर्ज़ा के हाकिम तराबलिस ने किसी रूमी बादशाह के साथ अपनी बेटी का निकाह किया है और अपने मज़हब की रस्म अदा करने और कुरबानी करने के लिये दुल्हन को सौमआ के राहिब के पास लाया है और बडी ता'दाद में रूमी सिपाही और मुतनस्सिरा अरब जंगी हथियारों और साज़ो सामान के साथ उस की हिफाज़त व निगरानी के लिये आए हुए हैं । हज़रत अब्दुल्लाह ने मुआहदी से दुश्मनों की ता'दाद पूछी तो उस ने बताया कि बीस हज़ार आदमी तो बाज़ार में जमा हुए हैं और पांच हज़ार सवार लडने वाले हथियारों के साथ मौजूद हैं या'नी कुल पच्चीस हज़ार की ता'दाद है । और तुम सिर्फ पांच सौ (५००) की ता'दाद में हो । इलावा अज़ीं अगर यहां जंग हूई तो अतराफ के इलाकों से काफी ता'दाद में रूमी आ पडेंगे, जब कि तुम्हारी कुमुक करने वाला लश्कर दमिश्क में है, जो यहां से लम्बे फास्ला पर है । लेहाज़ा मेरी राए यह है कि वहां जाने का इरादा मौकूफ कर के यहीं से वापस पलट जाओ ।

मुआहदी राहबर की बात सुन कर मुजाहेदीन को तश्वीश और फिक्र लाहिक हूई । हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर ने मुजाहेदीन से फरमाया कि मुआहदी राहबर की बात सब ने सुनी है, लेहाज़ा आप तमाम हज़रात का मश्वरा क्या है ? अक्सर ने यह कहा कि ऐ सरदार ! अल्लाह तबारक व तआला का फरमान है कि **खुद को हलाकत में मत डालो ।** हम नैक निय्यत के साथ यहां तक आए हैं सूरते हाल ऐसी दर-पैश है कि हम को मजबूरन वापस जाना पड रहा है । लेहाज़ा अल्लाह तआला से अज्र व सवाब की उम्मीद रखते हुए दमिश्क चले चलें । हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर ने फरमाया कि इस तरह वापस चला जाना जेहाद से पीठ फैरने के मुतरादिफ है । मैं यह नहीं चाहता कि मेरा चेहरा पीठ फेरने वालों में लिखा जाए । मैं ने अपनी जान को राहे खुदा में वक्फ किया है, लेहाज़ा हर आन मैं जेहाद करूंगा मुझे अल्लाह तआला से कवी उम्मीद है कि वह हमारी नुस्रत फरमाएगा । अलबत्ता अगर तुम में से कोई वापस जाना चाहता है तो उसे इजाज़त है । हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर नौ उमर जवान थे और उन के साथी कुहना मश्क जंगजू थे, उन्हों ने अपने नौ-जवान सरदार की हिम्मत और दिलैरी देखी तो उन को गैरत आई और सब ने यक ज़बान हो कर कहा कि ऐ सरदार ! अब हम भी वापस नहीं जाऐंगे बल्कि आप के हमराह जेहाद करेंगे, चाहे कुछ भी हो जाए । तमाम मुजाहेदीन में एक अजीब जौश पैदा हो गया । **"हिम्मते मर्दां मददे खुदा"** के ब-मौजिब उसी वक्त आमाद-ए

जंग हो गए । मुआहदी राहबर ने जब देखा कि सिर्फ पांच सौ मुठ्ठी भर मुसलमान पच्चीस हज़ार रूमियों से टकराने उठ खडे हुए हैं, तो उस की हालत गैर हो गई । चेहरा ज़र्द हो गया । उस की मुज़्तरिब हालत देख कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर ने उस से फरमाया कि अब हमें इस जंगल से किल्ले की तरफ ले चल । आज तुझे अस्हाबे रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम से अजीब मुआमला देखने को मिलेगा । चुनांचे रात ही में इस्लामी लश्कर कूच कर के किल्ले हिस्ने अबील कुद्स के करीब पहोंच गया । मुआहदी ने कहा कि अब हम बिल्कुल करीब आ गये हैं । लेहाज़ा यहीं पर ठहर कर रात गुज़ार दो । सुब्ह जब मैला लगेगा तब हम्ला कर देंगे । इस्लामी लश्कर रात भर किल्ले के करीब एक मकाम पर ठहरा रहा ।

मा'रका शुरू और मुजाहेदीन मुसीबत में गिरफ्तार :-

सुब्ह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर ने मुजाहिदों को फज्र की नमाज़ पढाई । नमाज़ के बा'द थोडी दैर तवक्कुफ किया ताकि मैला शुरू हो जाए । हज़रत अब्दुल्लाह ने पांच सौ मुजाहिदों को पांच (५) गिरोह में बांट दिया । इस के बा'द सब को ताकीद की कि कोई मुजाहिद बाज़ार की चीज़ की तरफ इल्तिफात न करे बल्कि जाते ही फौरन रूमियों के सरों पर तलवार रख कर इन्हें हलाक करना शुरू कर दे । हज़रत अब्दुल्लाह अपने हाथ में पर्चम थाम कर लश्कर के आगे रवाना हुए । उन की मुताबेअत में तमाम मुजाहिद भी गिर्जा की तरफ रवाना हुए । गिर्जा के करीब मुल्के शाम के बतारका और गबर काफी ता'दाद में जमा थे । बुड्ढा राहिब सौमआ से अपना सर बाहर निकाल कर लोगों को पन्दो नसाएह पर मुश्तमिल गुफ्तगू कर रहा था । तमाम मज्मा' बिल्कुल खामौशी के साथ उस की गुफ्तगू सुन रहा था और लोग टुक्टुकी बांधे उस की तरफ देख रहे थे । हाकिम तराबलिस की बेटी दुल्हन के कपडे और ज़ेवरात से सज धज कर राहिब के पास अपनी सहेलियों के साथ मौजूद थी । दुल्हन की हिफाज़त व निगेहबानी करने के लिये मुसल्लह सिपाहियों की फौज मुहासरा किये हुए थी । हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर ने फरमाया कि हम को गिर्जा के बजाए पहले बाज़ार पर हम्ला करना है । हर मुजाहिद को ताकीद की जाती है कि इख्तितामे जंग पर तमाम मुजाहेदीन गिर्जा के पास जमा हों । अगर हम ज़िन्दा रहे तो गिर्जा के करीब जमा होंगे, वरना हमारी मुलाकात बहिश्त में प्यारे आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के हौज़े कौसर पर होगी । फिर हज़रत अब्दुल्लाह ने अपने नैज़े को जुंबिश दी और अपने साथियों के हमराह बाज़ार पर हम्ला कर दिया ।

मुजाहिदों ने पांच गिरोह में मुतफर्रिक हो कर अलग अलग सिम्तों से हम्ला किया। मुजाहिदों की तहलीलो तक्बीर की आवाज़ सुन कर रूमी चौंक उठे। वह पहले से ही होशियार और मोहतात थे। तमाम रूमी अपने अपने हथियारों की जानिब दौडे और हथियार संभाल कर मुकाबला करने आ खडे हुए। मुजाहिदों ने शिद्दत से हम्ला किया और रूमियों की गर्दनों पर तलवारें रखनी शुरू कीं। रूमियों ने भी बडी दिलैरी से हम्ले का जवाब दिया। और मुजाहिदों को घेर लिया। बीस हज़ार बाज़ारी गबरों के दरमियान सिर्फ पांच सौ मुजाहिद इस तरह मुतफर्रिक हो कर नर्गा में आ गये थे कि एक दूसरे को नज़र न आते थे। सिर्फ हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर का पर्चम बुलन्द होने की वजह से तमाम मुजाहिदों को नज़र आ रहा था। मुजाहेदीन निशान को देख कर मुत्मइन थे कि हमारे सरदार हज़रत अब्दुल्लाह सलामत हैं और रूमियों से मुकाबला कर रहे हैं, लैकिन हज़रत अब्दुल्लाह और तमाम मुजाहेदीन सख्त मुसीबत में थे। रूमियों ने मुजाहिदों को चारों सम्त से घेरा था। जब रूमियों ने देखा कि मुसलमान बहुत कलील ता'दाद में हैं और मुसलमानों की कुमुक करने कोई जमाअत कमीन गाह से निकल कर नहीं आई, तो गिर्जा के करीब मुसल्लह सिपाही भी बाज़ार में आ धमके और उन्हों ने भी शिद्दत से हम्ला कर दिया। घमसान की लडाई जारी थी। गर्मी और धूप की शिद्दत व हरारत से तमाम मुजाहेदीन परेशान थे। मज़ीद बर-आं जंग की आग के शो'लों ने माहौल को और ज़ियादह गर्मा दिया था। तमाम मुजाहेदीन जान हथेली पे ले कर मुकाबला कर रहे थे। खुसूसन हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर बिफरे हुए शैर की तरह रूमियों पर टूट पडे थे, लैकिन मुसल्सल तेग ज़नी और नैज़ा बाज़ी करते करते उन के बाज़ू शल हो गए थे। जिस्मे अक्दस भी थक कर चूर हो गया था। यही हाल तमाम मुजाहिदों का था। तमाम के बाज़ू खस्ता हाल थे। जिस्म टूट रहे थे। अब ज़ियादह दैर तक मुकाबला करने की ताकत न थी। ब-ज़ाहिर ज़िन्दा बचने की कोई उम्मीद न थी। तमाम को अपनी शहादत का यकीन हो गया था। मगर फिर भी शुजाअत से मुकाबला कर रहे थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार को अपने मुजाहिद भाइयों की बडी फिक्र थी। खुसूसन हज़रत अबू ज़र गफ्फारी जैसे ज़ईफुल उमर सहाबीए रसूल भी जवांमर्दी से लडते लडते ज़ख्मों से निढाल हो गए थे। तब हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर ने आस्मान की तरफ हाथ उठा कर बारगाहे खुदावन्दी में महबूबे रब्बुल आलमीन, रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के वसीले से यह दुआ की :

"يَا مَنْ خَلَقَ خَلْقَةً فَاَحْسَنَ خَلْقَهُمْ وَابْلٰى بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ وَّ جَعَلَ ذَالِكَ فِتْنَةً لَّهُمْ اَسْئَلُكَ بِجَاهِ مُحَمَّدٍ
عَبْدِكَ اِلَّا جَعَلْتَ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا فَرَجاً وَّ مَخرجاً"

तर्जुमा : ''ऐ वह ज़ात ! कि पैदा किया उस ने अपनी खलाइक को, पस अच्छी बनाई पैदाइश उन की और आज़माइश में डाला बा'ज़ों को ब-सबब बा'ज़ों के और गरदाना उन के वास्ते इस इब्तिला को आज़माइश। सवाल करता हूं मैं तुझ से साथ मरतबा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह व आलिही वसल्लम जो तेरे बन्दे हैं इस अम्र को कि कर तू हमारे काम में फराखी और राह नजात की।''

(हवाला : – फुतूहुश्शाम,अज़ : – अल्लामा वाकदी, सफहा : 141)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार रदियल्लाहो तआला अन्हुमा की दुआ कबूल हूई।

''हज़रत खालिद बिन वलीद की मदद पहोंची''

सुब्ह के वक्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर के लश्कर ने हिस्ने अबील कुद्स के बाज़ार पर हम्ला किया था और उसी वक्त आप के साथ मदीना से आने वाले दोस्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस ने दमिश्क की जानिब अपना घोडा तैज़ दौडाया और दमिश्क पहोंच कर इस्लामी लश्कर के कैम्प में आए और पुकार कर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह से कहा कि ऐ अमीनुल उम्मत ! रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के चचा के बेटे और उन के साथियों की जान खतरे में है। रूमियों ने उन को चारों तरफ से घैर लिया है। फिर इन्हों ने हिस्ने अबील कुद्स के मा'रका की तफ्सील जल्दी जल्दी बयान की। हज़रत अबू उबैदा ने इस्तिर्जाअ पढा, और हज़रत खालिद बिन वलीद से मुखातब हो कर फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! मेरी सरदारी में यह पहला मा'रका है अगर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर और उन के साथियों को कुछ हो गया तो बहुत बुरा होगा। लेहाज़ा मैं तुम से दरख्वास्त करता हूं कि तुम फौरन जाओ और हज़रत अब्दुल्लाह की कुमुक करो। हज़रत खालिद बिन वलीद ने जवाब दिया कि ऐ अमीनुल उम्मत ! आप हमारे सरदार हो। आप का हुक्म बजा लाना

मुझ पर लाज़िम है। अगर हज़रत उमर फारूके आज़म किसी लडके को भी सरदार मुकर्रर फरमाते तो मैं उस लडके की भी इताअत करता, जब कि आप तो साबिकुल ईमान हैं। **प्यारे आका व मौला** सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने आप को "**अमीनुल उम्मत**" के लकब से नवाज़ा है। आप का हुक्म सर आंखों पर, और आप को गवाह करता हूं कि खुदा की कसम ! मैं ने अपनी ज़ात को खुदा की राह में कैद किया है। खुदा की राह में शम्शीर ज़नी करने में किसी किस्म की कोताही मुझ से सर्ज़द न होगी।

हज़रत खालिद ने जंगे यमामा में हासिल शुदा मुसैलमतुल कज़्ज़ाब की ज़िरह पहनी और अपने साथियों या'नी लश्करे ज़हफ के मुजाहिदों को ले कर फौरन रवाना हुए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस भी राह बताने वाले की हैसियत से साथ गए। हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई रिवायत करते हैं कि मैं भी हज़रत खालिद बिन वलीद के हमराह था। हज़रत खालिद और उन के साथियों ने घोडों की बागें ढीली छोड दी थीं। घोडे हवा से बातें करते हुए जा रहे थे। अल्लाह तआला ने हमारे लिये रास्ता लपेट दिया और हम गुरूब आफ्ताब के वक्त हिस्ने अबील कुद्स पहोंच गए। वहां पहोंच कर हज़रत खालिद ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस से फरमाया कि तलाश करो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के चचा के साहिबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर कहां हैं ? हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस ने जवाब दिया कि इन्हों ने तमाम मुजाहिदों को सौमआ के करीब जमा होने का हुक्म दिया था। हो सक्ता है कि वह सौमआ के करीब कहीं हों। हज़रत खालिद बिन वलीद जब राहिब के गिर्जा के पास गए तो देखा कि इस्लामी लश्कर का निशान हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर के हाथ में है और उन के इर्दगिर्द मुजाहेदीन जमा हैं। लैकिन तमाम के तमाम ज़ख्मी और नीम जान हैं और ना-उम्मीदी के आलम में अल्लाह की मदद और इस की रहमतों की उम्मीद लगाए हुए हैं। बडे ही सब्रो इस्तिक्लाल के साथ तमाम मुजाहेदीन रूमियों के हम्लों का देफाअ कर रहे थे। ऐन उसी वक्त इस्लामी लश्कर के शैरे बबर हज़रत खालिद बिन वलीद ने नार-ए तक्बीर बुलन्द कर के हम्ला किया। नार-ए तक्बीर की सदा सुन कर मुजाहिदों की जान में जान आ गई और रूमियों की जानें सूख गईं। हज़रत खालिद ने मुजाहिदों को पुकारा कि ऐ दीन के खिदमतगारो ! रूमियों को तलवारों और नैज़ों की नोक पर लो और उन के खून से ज़मीन को रंगीन और सैराब कर दो। हज़रत खालिद का लश्करे ज़हफ ज़िरहों और लोहे के खौदों से आरास्ता था। हज़रत खालिद का हुक्म मिलते ही मुजाहेदीन रूमियों पर टूट पडे और जिस तरह शैर बकरियों को फाड कर रख देता है इस तरह मुजाहिदों ने रूमियों को फाड कर रख दिया। रूमियों को दाअें बाअें बिखेर दिया और सफें उलट कर रख दीं। लाशों के ढैर लगा दिये।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर ने उस वक्त सुना कि हातिफे गैबी इन अल्फाज़ से पुकार रहा था :

"خُذِلَ الامٰنُ ونُصِرَالخَائِفُ، يَا حَمْلَةَ الْقُرآن! جَاءَ
كُمُ الْفَرَحُ مِنَ الرَّحْمٰنِ ونُصِرْتُمْ علىٰ عَبَدَةِ الصَّلْبَانِ"

तर्जुमा : "ज़लील व ख्वार हुवा बे डर या'नी रूमी और मदद दिया गया डरने वाला या'नी मोमिन। ऐ कुरआन उठाने वालो, अल्लाह तआला रहमान की तरफ से तुम पर कशाइश आई और सलीब परस्तों पर तुम मदद दिये गए।"

अब हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर के साथियों में भी नया जौशो खरोश पैदा हो गया था। उन्हों ने भी हज़रत खालिद बिन वलीद के लश्कर की मुताबेअत में शिद्दत से हम्ला कर दिया। आफ्ताब डूबने के करीब था। दिन का उजाला रुखसत हो रहा था और शबे तार अपनी सियाह ज़ुल्फें बिखेरती, ज़ुल्मत फैलाती आ रही थी। लेहाज़ा मुजाहिदों ने दिन छुपने से पहले रूमियों का सफाया करने की कोशिश की। तलवार की ज़र्बें इतनी शिद्दत से मारते के ढाल के दो टुक्डे हो जाते और ढाल उठाने वाले रूमी का सर मिस्ल तर्बूज़ कईं टुक्डे और काशें हो जाता। रूमियों को पता चल गया कि इस्लामी लश्कर के शैरे बबर हज़रत खालिद बिन वलीद अपने भाइयों की मदद को आ पहुंचे हैं। फिर क्या था ? हज़रत खालिद का नाम सुनते ही कौम लडखडा गई। खौफ और दहश्त से इधर से उधर होने लगे। पीठ दिखा कर राहे फरार इख्तेयार की। जान बची लाखों पाए, सोच कर मुज़्तरिब आहू की तरह भागे। मुजाहिदों ने तआक्कुब किया। बहोतों को वासिले जहन्नम किया और बाकी कैद कर लिये गए।

मुजाहिदों का सौमआ पर हम्ला और फतह के बा'द उस पर कब्ज़ा

जब रूमियों ने भागना शुरू किया तो मैदान में हर तरफ इस्लामी लश्कर के मुजाहिद ही मुजाहिद नज़र आते थे। रूमी या तो मक्तूल पडा हुवा नज़र आता था या फिर वह दुम दबा कर भाग रहा था। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर रूमियों को कत्ल करते करते हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर के करीब पहोंच गए। हज़रत अब्दुल्लाह की ज़िरह और आस्तीनों पर मक्तूल रूमियों का खून पड पड कर जम गया था और वह ऊंट की कलेजी जैसा लग रहा था।

हज़रत ज़िरार ने हज़रत अब्दुल्लाह से कहा कि ऐ रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के चचा के शेहज़ादे ! आप ने अपने वालिद का बहुत अच्छा इन्तेकाम लिया है। और अपने दिल की सोज़िश को रूमियों के खून से सर्द किया है। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर ने अपने चेहरे पर कपडा बांधा था सिर्फ आंखें नज़र आती थीं। लेहाज़ा हज़रत अब्दुल्लाह ने उन को पहचाना नहीं और पूछा कि ऐ दीने इस्लाम के मददगार आप कौन हैं ? जवाब दिया कि मैं ज़िरार बिन अज़्वर सहाबीए रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम हूं। हज़रत अब्दुल्लाह ने फरमाया कि अल्लाह तआला आप को जज़ाए खैर दे कि आप ने बडे नाज़ुक वक्त में हमारी इआनत फरमाई। यह गुफ्तगू हो रही थी कि हज़रत खालिद बिन वलीद अपने लश्कर के साथ वहां आए। हज़रत अब्दुल्लाह ने हज़रत खालिद बिन वलीद का शुक्रिया अदा किया, बा'दहु कहा कि सौमआ (गिर्जा) में बुड्ढा राहिब मअ हाकिमे तराबलिस की बेटी और उस की सहेलियों के छुपा हुवा है। बहुत कीमती जवाहिर, ज़ैवरात और दीबाज और लिबासों का खज़ाना उस के साथ है। सौमआ को हिफाज़त के लिये रूमी बतारका और सवारों ने घैर रखा है। लेहाज़ा अब उस पर युरिश करनी चाहिये।

चुनांचे हज़रत खालिद, हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत ज़िरार ने अपने साथियों के हमराह अलग अलग सम्त से सौमआ पर हम्ला कर दिया। रात का वक्त था। रूमी सिपाहियों ने मश्अलें रौशन कर रखी थीं। और सौमआ का मुहासरा कर रखा था। आग की रौशनी में रूमी सिपाहियों की ज़िरहें और तलवारें मिस्ल आईना चमक रही थीं। जैसे ही इस्लामी लश्कर के मुजाहिद सौमआ के करीब गए, तमाम रूमी सिपाही मुजाहिदों पर झपटे। उन का सरदार एक भारी डील डोल वाला बतरीक था। वह रूमी सिपाहियों के मुकद्दम था। वह एक खूंखार शैरे नर की तरह आगे आगे चलता था और शैर की तरह धाडता था। अपने घोडे की ज़ीन पर इस तरह चिपक कर बैठा था कि गोया वह घोडे के जिस्म से पैवस्त है। उस बतरीक ने हज़रत ज़िरार पर हम्ला कर दिया। हज़रत ज़िरार उस की जसामत देख कर महवे हैरत थे। भारी डील डोल होने के बा-वुजूद उस की सुरअत, जसत, हम्ले की शिद्दत और मुकाबिल का वार खाली फेरने की महारत देख कर हज़रत ज़िरार समझ गए कि वह बडा जंगजू और माहिरे फन्ने हर्ब है। दोनों लडते लडते ऐसी कुशादह जगह में पहोंच गए जहां ब-आसानी घोडा दौडा सकें। दोनों ने जंग के जौहर दिखा कर अपनी जंगी महारत का सुबूत दिया। बतरीक बडी शिद्दत से हज़रत ज़िरार पर वार करता था और गालिब होने की हद दर्जा सई करता था। हज़रत ज़िरार बहुत ही एहतियात से काम लेते हुए खुद को उस की ज़र्ब की ज़द से बचाते थे। रात का अंधेरा गहरा हो गया था। हज़रत ज़िरार के घोडे ने ठोकर खाई

और हज़रत ज़िरार ज़मीन पर गिरे। बतरीक ने ऐसे शदीद वार शुरू किये कि हज़रत ज़िरार उन वारों को अपनी ढाल पर लेते रहे और बतरीक के वार खाली फेरते रहे। और उन को घोडे पर सवार होने का मौका' नहीं मिला। इस दौरान बतरीक ने गलती से अपने घोडे की लगाम इतनी ज़ोर से खींची कि उस का घोडा पीछले दोनों पाऊं पर खडा हो गया। बतरीक के घोडे को चराग-पा देख कर हज़रत ज़िरार ने अपने पास की उमूद (गुर्ज़) घोडे के हलक पर दे मारी। गुर्ज़ के लगते ही घोडा उलटा गिरा और बतरीक भी घोडे के साथ गिरा। बतरीक ने फौरन खडे होने की कोशिश की मगर घोडे के ज़ीन में दब कर फंस गया, लेहाज़ा उठ न सका। हज़रत ज़िरार ने एक लम्बी छलांग लगाई और बतरीक के सीने पर सवार हो गए। हज़रत ज़िरार अपनी कमर में हमेंशा एक यमनी छुरी लटकाया करते थे। फौरन कमर से छुरी निकाली और बतरीक के सीने में घुसेड दी। सिर्फ एक वार में बतरीक का काम तमाम हो गया। छुरी उस के दिल पर लगी और उस का दिल दो हिस्सों में मुन्कसिम हो गया। हज़रत ज़िरार ने बतरीक के घोडे पर कब्ज़ा कर लिया। घोडे के ज़ीन में सोने, चांदी और कीमती जवाहिर के नगीने जडे हुए थे। बतरीक के जिस्म को खाक व खून में मिला हुवा देख कर उस के साथ वाले रूमी सिपाही फौरन नौ दो ग्यारह हो गए। हज़रत ज़िरार बतरीक के घोडे पर सवार हो कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर की मदद करने पहोंच गए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर ने बडी शुजाअत का मुज़ाहेरा कर के रूमी सिपाहियों को ज़ेर व ज़बर कर डाला था और सौमआ पर काबिज़ हो गए थे और हज़रत खालिद की आमद का इन्तिज़ार फरमा रहे थे। हज़रत ज़िरार वहां आए और थोडी दैर में हज़रत खालिद भी अपने सामने वाले रूमियों का सफाया कर के सौमआ पर आ पहुंचे, सौमआ (दैर) पर मुजाहिदों ने कब्ज़ा कर लिया। दैर में निहायत कीमती चीज़ें, रैश्मी थान, सोने चांदी के ज़ैवरात और बर्तन, जवाहिरात और हीरे मोती दस्तयाब हुए। मैला में ज़रुरियाते ज़िन्दगी की तमाम अश्या थीं वह तमाम चीज़ें ब-तौर गनीमत हाथ लगीं। सामाने खुरद व नौश इफ्रात से हासिल हुवा। इलावा अज़ीं हाकिम तराबलिस की लडकी और उस की सहेलियां कैद हूईं। हज़रत खालिद को इस मा'रका में एक शदीद ज़ख्म लग गया था, लैकिन मुहलिक न था।

हज़रत खालिद तमाम कैदी और माले गनीमत ले कर अपने लश्कर के साथ दमिश्क की तरफ रवाना हुए। दमिश्क में हज़रत अबू उबैदा और तमाम मुजाहेदीन हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार के लिये बहुत फिक्र मन्द थे। क्यूं कि वह हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम

सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के चचा के शहज़ादे होने के साथ साथ शक्ल व सूरत में हुज़ूरे अक्दस से बहुत मुशाबहत रखते थे। जब उन को हज़रत खालिद बिन वलीद के साथ सहीह व सलामत वापस आते देखा तो इस्लामी लश्कर के कैम्प में खुशी की लहर दौड गई। तमाम ने उन का नार-ए तक्बीर से शानदार इस्तेक्बाल किया। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने हज़रत खालिद बिन वलीद का खुसूसी तौर पर शुक्रिया अदा किया और दुआए जज़ाए खैरो बरकत से नवाज़ा। फिर माले गनीमत से खुम्स (20%) अलग निकाल कर तमाम मुजाहिदों में तक्सीम फरमा दिया। मोटे बतरीक का घोडा मअ ज़ीन व दीगर साज़ो सामान के हज़रत ज़िरार को अता फरमाया। हज़रत ज़िरार ने घोडे का ज़ीन अपनी बहन खौला बिन्ते अज़्वर को तोह्फा में दे दिया। हज़रत खौला ने उस ज़ीन से कीमती नगीने चुन चुन कर निकाल लिये और वह तमाम नगीने मुसलमान औरतों में तक्सीम कर दिये। एक एक नगीना बहुत ही बेश बहा था।

हाकिम तराबलिस की लडकी के मुतअल्लिक हज़रत अबू उबैदा ने अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूक को लिखा और आप के हुक्म के मुताबिक हाकिम तराबलिस की लडकी हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार को हिबा कर दी गई और वह उन के पास ज़मानए यज़ीदे पलीद तक रही।

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह की सरदारी में इस्लामी लश्कर की यह पहली फतहे मुबीन थी।

अब तक इस्लामी लश्कर के हाथों फतह होने वाले मकामात

(1) अरेका (2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हवरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क (9) हिस्ने अबील कुद्स

"बा'ज़ मकामात ब-ज़रीए सुलह फतह"

हिस्ने अबील कुद्स का किल्ला फतह करने के बा'द हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने इस्लामी लश्कर को **हल्ब** की जानिब कूच करने का हुक्म दिया। आप का इरादा हल्ब का किल्ला फतह करने के बा'द हिरक्ल बादशाह के दारुस-सल्तनत **इन्ताकिया** पर युरिश करने का था। हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद बिन वलीद को लश्करे ज़हफ के साथ मुकद्दमतुल जैश की हैसियत से इस्लामी लश्कर के आगे रवाना किया। हज़रत खालिद बिन वलीद के रवाना होने के बा'द हज़रत अबू उबैदा **दमिश्क** से रवाना हुए। अह्ले दमिश्क को इस्लामी अहकाम की ता'लीम और तर्बियत, नीज़ वुसूले जिज़्या व दीगर उमूर की निगरानी करने के लिये हज़रत सफ्वान बिन आमिर अस्लमी को पांच सौ सवारों के साथ दमिश्क में ठहरने के लिये मुतअय्यन कर के हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर को ले कर **बकाअ** और **लिबवा** नाम के मकाम पर पहुंचे। वहां से उन्हों ने इस्लामी लश्कर को दो अलग अलग सम्तों में जाने के लिये दो हिस्सों में मुन्कसिम किया। हज़रत खालिद बिन वलीद को **हुमुस**, **अर्दे अवासिम** और **कन्सरीन** की तरफ रवाना किया और खुद ब-जानिब बा'ल्बक रवाना हुए।

हज़रत अबू उबैदा **बकाअ** से **बा'ल्बक** के लिये रवाना हुए ही थे कि एक बतरीक बहुत सारे हदाया व तहाइफ ले कर **जोसिया** से आया। और उस ने चार हज़ार दिरहम और पचास थान दीबाज के कपडे पर एक साल कामिल के लिये सुलह कर के जोसिया के लिये अमान हासिल की और कहा कि हम सुलह की मुद्दत के दरमियान किसी बात में तुम्हारे खिलाफ कोई काम नहीं करेंगे। सुलह कर के हज़रत अबू उबैदा बा'ल्बक की तरफ आगे बढे। राह में देखा कि दूर से एक नाका सवार बडी तेज़ रफ्तारी से चला आ रहा है। थोडी देर में वह नाका सवार करीब आया। वह नाका सवार हज़रत उसामा बिन ज़ैद ताई थे, जो मदीना मुनव्वरा से **अमीरुल मो'मिनीन सय्यिदोना उमर फारूके आ'ज़म** रदियल्लाहो तआला अन्हो का खत ले कर आए थे। हज़रत उसामा ने आ कर सलाम किया और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह की खिदमत में अमीरुल मो'मिनीन का खत पैश किया। इस खत में अमीरुल मो'मिनीन ने जबला बिन ऐहम गस्सानी के मुतअल्लिक लिखा था कि वह मुर्तद हो कर अपने साथियों के हमराह यहां से भागा है और इस्लाम के खिलाफ रूमियों की मदद

करने मुल्के शाम आया हुवा है। लेहाज़ा तुम होशियार रहना और बहुत एहतियात से काम लेना। यह खत पढ कर हज़रत अबू उबैदा ने बा'ल्बक जाने का इरादा तर्क फरमा कर हज़रत खालिद बिन वलीद की तरफ ब-मकाम हुमुस रवाना हुए।

हज़रत खालिद बिन वलीद एक तिहाई लश्कर ले कर ब-रोज़ जुम्आ माह शव्वाल 14, सन हिजरी को हुमुस पहोंच गए। हज़रत अबू उबैदा भी अपने साथ का दो तिहाई इस्लामी लश्कर ले कर हुमुस पहोंच कर हज़रत खालिद के लश्कर के साथ मुलहिक हो गए। हज़रत खालिद बिन वलीद जिस दिन हुमुस पहुंचे, उसी रोज़ हुमुस के हाकिम का इन्तेकाल हो गया। अह्ले हुमुस की जानिब से एक बतरीक ने आ कर बारह हज़ार दीनार और दो सौ थान रैश्मी कपडों पर एक साल के लिये सुलह की। सुलह की मुद्दत ज़ीकादा 14, सन हिजरी से शव्वाल 15, सन हिजरी करार पाई। हज़रत अबू उबैदा हुमुस में ठहर गए और हज़रत खालिद बिन वलीद को चार हज़ार सवारों के साथ हल्ब के अतराफ के इलाके फतह करने के लिये रवाना किया। हज़रत खालिद हुमुस से रवाना हो कर **शिरज़** नाम के मकाम पर पहुंचे और वहां **नहरे मक्लूब** पर दो दिन कयाम किया। वहां से **कफरतात** और मा'रात होते हुए **दैरे सम्आन** पहुंचे और उस मकाम पर तवक्कुफ किया। हज़रत खालिद बिन वलीद ने हज़रत मुस्अब बिन महारिस यश्करी को पांच सौ सवारों के साथ **बिलादे अवासिम** की तरफ भेजा। हज़रत मुस्अब बहुत ही कलील अर्सा में बिलादे अवासिम के इलाकों को ताख्त व ताराज कर के बहुत सारे गनाइम और कैदियों के साथ वापस आए। फिर हज़रत खालिद बिन वलीद अपने चार हज़ार साथियों के साथ हज़रत अबू उबैदा के पास हुमुस इस हाल में लौटे कि तमाम मुजाहिदों के हाथ माले गनीमत से बोझल थे। और अपने हमराह चार सौ रूमियों को गिरफ्तार कर के लाए थे। हज़रत अबू उबैदा हज़रत खालिद की इस काम्याबी पर बहुत खुश हुए। उन का शुक्रिया अदा किया और दुआ दी।

हज़रत अबू उबैदा ने चार सौ रूमी गबरों को फी कस चार दीनार का फिद्या ले कर आज़ाद कर दिया। हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो ने कैदियों के लिये चार दीनार का फिद्या मुकर्रर फरमाया था। जिन चार सौ गबरों को फिद्या ले कर आज़ाद किया गया, उन तमाम गबरों के नाम हज़रत अबू उबैदा ने लिख लिये। जब वह गबर आज़ादी हासिल कर के अपने अह्लो अयाल में वापस आए तो उन्हों ने मुसलमानों के अद्ल व इन्साफ, रहम दिली,ईफाए अह्द, नैकी और हुस्ने अख्लाक का ज़िक्र किया। चुनांचे अतराफ के बहुत से कस्बात और किल्लओं के लोगों ने अदाए जिज़्या की शर्त पर सुलह कर के अमान

हासिल की। फिर **कन्सरीन** और **शिरज़** के लोगों ने भी अदाए जिज़्या की शर्त पर सुलह कर के अमान हासिल की।

लैकिन ... कन्सरीन के हाकिम ने जो सुलह की वह धोका था। उस सुलह के पसे पर्दा हाकिमे कन्सरीन ने एक साज़िश की थी जिस का मुफस्सल बयान आइन्दा सफ्हात में मुलाहेज़ा फरमाऐं।

अब तक इस्लामी लश्कर के हाथों फतह होने वाले मकामात :-

(1) अरेका (2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हवरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क (9) हिस्ने अबील कुद्स (10) जोसिया (11) हुमुस (12) कन्सरीन (13) शिरज़ (14) रुस्तन

जबला बिन ऐहम गस्सानी का वाकेआ

मुल्के अरब में कौमे बनी गस्सान बहुत ही मश्हूरो मा'रूफ और जंगजू थी। इस कौम के अक्सर लोग सिपाहगरी का पैशा करते थे और जंगी फन में अच्छी खासी महारत रखते थे। 14, सन हिजरी में कौमे बनी गस्सान का सरदार **जबला बिन ऐहम गस्सानी** अपनी कौम के रूउसा व उमरा के साथ अमीरुल मो'मिनीन सय्यिदोना फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो की खिदमत में हाज़िर हो कर मुशर्रफ बा इस्लाम हुवा। अमीरुल मो'मिनीन जबला बिन ऐहम के ईमान लाने से बहुत खुश हुए कि जबला बिन ऐहम की वजह से इस्लाम के बाज़ू ज़ियादह मज़बूत होंगे। अमीरुल मो'मिनीन ने जबला बिन ऐहम की बहुत ही खातिर तवाज़ोअ फरमाई और अपना मेहमान बना कर मेहमान नवाज़ी फरमाई। चंद दिन मदीना मुनव्वरा में ठहरने के बा'द जबला मक्का मुअज़्ज़मा वापस चला गया। उसी साल अमीरुल मो'मिनीन भी हज्ज करने के लिये मक्का मुअज़्ज़मा तशरीफ ले गए। अमीरुल मो'मिनीन मक्का मुअज़्ज़मा में मुकीम थे तब एक हादिसा पैश आया।

जबला बिन ऐहम गस्सानी अपने साथियों के हमराह खानए का'बा शरीफ का तवाफ कर रहा था। उस ने अपने शाना पर एक लम्बी चादर डाल रखी थी, जिस का एक सिरा ज़मीन तक पहोंच रहा था। इत्तेफाक से कौमे फज़ारा का एक दैहाती शख्स जबला बिन ऐहम के बिल्कुल करीब तवाफ कर रहा था। बे खयाली में उस दैहाती का पाऊं जबला की चादर

के एक पल्ले पर पड गया। चादर जबला के शाना से सरक कर ज़मीन पर गिर पडी। जबला को बहुत गुस्सा आ गया। तैश में आ कर उस ने फज़ारी की तरफ शौ'ला बार निगाहों से देखा। फज़ारी ने जबला का भयानक रूप देखा तो सहम गया और उस ने फौरन मा'ज़ेरत करते हुए कहा कि ऐ सरदार ! खुदा की कसम ! मैं ने कस्दन नहीं किया, गलती से और बे खयाली में मुझ से ऐसा हुवा, जिस के लिये मैं शर्मिन्दा हूं और आप से मुआफी चाहता हूं। लैकिन जबला बिन ऐहम ने फज़ारी दैहाती का उज़्र कबूल न किया और उस के चेहरे पर ज़ौर से तमांचा रसीद कर दिया। नतीजतन फज़ारी दैहाती के अगले चार दांत और नाक की हड्डी टूट गई। फज़ारी दैहाती ने इस मुआमला की अमीरुल मो'मिनीन की अदालत आलिया में शिकायत दर्ज कर दी। जबला बिन ऐहम को अमीरुल मो'मिनीन के दरबार में तलब किया गया। जब जबला अमीरुल मो'मिनीन की अदालत में हाज़िर हुवा तो अमीरुल मो'मिनीन ने दर्याफ्त फरमाया कि किस चीज़ ने तुझ को इस अम्र पर बर-अंगेख्ता किया कि तूने अपने मुसलमान भाई को इस शिद्दत से तमांचा मार कर उस के चार दांत तोड दिये और उस की नाक को भी मज्रूह कर दिया ? जबला ने जवाब देते हुए कहा कि इस दैहाती ने मेरी चादर को अपने पाऊं तले कुचल कर मुझे हरमे मोहतरम में बे आबरू कर दिया। खुदाए बुज़ुर्ग व बर-तर की कसम ! अगर बैतुल्लाह शरीफ की हुर्मत का मुझे लिहाज़ न होता तो मैं इस को वहीं कत्ल कर देता। हरम शरीफ की हुर्मत व अज़्मत का ख्याल करते हुए मैं ने सिर्फ एक तमांचा पर ही इकतिफा किया है।

जबला ने अमीरुल मो'मिनीन के सामने इक्रारे जुर्म कर लिया। अमीरुल मो'मिनीन ने फरमाया कि ऐ जबला तूने अपनी ज़बान से इक्बाले जुर्म कर लिया है, लेहाज़ा तेरा कुसूर साबित होता है। मेरा फैसला यह है कि अगर यह फर्यादी तुझे मुआफ कर दे तो ठीक, वरना मैं तुझ से किसास या'नी बदला लूंगा। तेरे भी दांत तोडे जाअेंगे और फर्यादी की नाक की तरह तेरी नाक भी मज्रूह की जाएगी। अमीरुल मो'मिनीन का फैसला सुन कर जबला बिन ऐहम चौंक उठा और मुज़्तरिब हो कर कहा कि ऐ अमीरुल मो'मिनीन ! मैं अपनी कौम का बादशाह और कबीले का सरदार हूं। क्या एक आम मा'मूली आदमी के लिये मेरे साथ किसास लेने का सख्त रवय्या अपनाया जाएगा ? अमीरुल मो'मिनीन ने फरमाया कि हां ! ज़रूर किसास लूंगा। इस्लाम का कानून सब के लिये यक्सां है। इस्लाम ने तुझे और इसे बराबर कर दिया है। इस्लाम में मालदार और बादशाह को अहकाम की पाबन्दी करने में किसी किस्म की रिआयत नहीं दी गई। सब के लिये एक ही कानून है। लेहाज़ा अगर यह फर्यादी तुझे मुआफ नहीं करता तो किसास देने के लिये आमादा हो जा :

तर्जुमाने नबी, हम ज़बाने नबी
जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम

(अज़ :- इमामे इश्को मोहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

जबला बिन ऐहम ने देखा कि अदालते फारूकी में अटल फैसला होता है। यहां किसी की भी रिआयत नहीं की जाती। लेहाज़ा जबला ने अमीरुल मोमेनीन से कहा कि एक दिन के लिये किसास लेना मौकूफ फरमाअें ताकि मैं फज़ारी दैहाती को मुआफ कर देने के लिये रज़ामन्द कर लूं। हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ने फरमाया कि यह अम्र भी फज़ारी दैहाती की इजाज़त पर मौकूफ है। अगर वह किसास लेने में एक दिन की मोहलत देने पर राज़ी है तो मैं मोहलत दे सक्ता हूं वरना नहीं। चुनांचे अमीरुल मो'मिनीन ने फज़ारी दैहाती से पूछा कि अगर जबला बिन ऐहम से किसास लेने में एक दिन की ताखीर की जाए तो तुझ को कोई ए'तराज़ है ? फज़ारी दैहाती ने अर्ज़ किया कि ऐ अमीरुल मोमेनीन ! मुझे कोई ए'तेराज़ नहीं। आप ब-खूशी इसे एक दिन की मोहलत अता फरमाअें। फज़ारी दैहाती की रज़ामन्दी पर हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ने जबला बिन ऐहम को एक दिन की मोहलत दी और किसास का मुआमला एक दिन के लिये मुअख्खर फरमा दिया।

रात में जबला ने सोचा कि फज़ारी दैहाती से मुआफी मांगना और कुसूर मुआफ कराने के लिये इस की मिन्नत समाजत करना मेरी शान के खिलाफ है और अगर फज़ारी दैहाती ने मुआफ नहीं किया तो कल सुब्ह अमीरुल मो'मिनीन मेरे दांत और नाक की हड्डी तोड कर रख देंगे और पूरे मुल्के अरब में मेरी ज़िल्लत और रुस्वाई होगी। लेहाज़ा वह रात ही में अपने साथियों के हमराह मक्का मुअज़्ज़मा से मुल्के शाम की तरफ भाग गया और इस्लाम से मुन्हरिफ व मुर्तद हो कर इस्लामी लश्कर से लडने के लिये कैसरे रुम हिरक्ल बादशाह के पास **इन्ताकिया** चला गया। दूसरे दिन अमीरुल मो'मिनीन को पता चला कि जबला बिन ऐहम गस्सानी मुर्तद हो कर रूमियों की कुमुक करने **मुल्के शाम** गया है, तो आप ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद ताई को खत दे कर तैज़ रफ्तार ऊंट पर हज़रत अबू उबैदा की जानिब रवाना फरमाया। हज़रत उसामा बिन ज़ैद और हज़रत अबू उबैदा की मुलाकात उस वक्त हूई जब हज़रत अबू उबैदा जोसिया वालों से सुलह कर के बा'ल्बक की तरफ जा रहे थे। अमीरुल मो'मिनीन का खत पढ कर हज़रत अबू उबैदा ने अपना इरादा बदल दिया और बा'ल्बक जाने के बजाए आप हज़रत खालिद बिन वलीद के पास हुमुस चले गए।

"जंगे कन्सरीन"

हज़रत अबू उबैदा ने चार सौ रूमी गबरों को फिद्या ले कर आज़ाद कर दिया और उन गबरों अपने अपने गांव जा कर इस्लामी लश्कर के हुस्ने सुलूक और बेहतर बरताउ का ज़िक्र किया। पस जब कन्सरीन के लोगों ने सुना कि इस्लामी लश्कर के सिपाह सालारे आज़म बहुत नर्म तबीअत के हैं और जो भी उन के पास जा कर अमान तलब करता है उसे अमान देते हैं। तो अह्ले कन्सरीन जमा हुए और आपस में मश्वरा कर के मुत्तफिक़ा तौर पर यह तय किया कि हम भी दीगर मकामात की तरह सुलह कर के इस्लामी लश्कर से अमान हासिल कर लें। लैकिन अह्ले कन्सरीन ने यह मुआमला कन्सरीन के हाकिम लुका से पोशीदह रखा। इस की वजह यह थी कि हाकिम लुका निहायत मग़रूर, मुतकब्बिर, सरकश और जंगजू था। हिरक्ल बादशाह के साथ इस के गहरे तअल्लुकात थे। लेहाज़ा लोगों ने सुलह का मुआमला हाकिम लुका से मख्फी रखा। मगर फिर भी हाकिम लुका को इस की इत्तेलाअ हो गई। पस वह खश्मनाक हुवा क्यूं कि हाकिम लुका मुतअस्सिब किस्म का नस्रानी था। मुसलमानों से वह किसी भी कीमत पर सुलह करना नहीं चाहता था, बल्कि आखरी सांस तक लडने का इरादा रखता था। इस्लामी लश्कर से टकराने की गर्ज़ से ही हाकिम लुका ने अपने जानी दुश्मन हाकिमे हल्ब यूकन्ना से सुलह कर के दोस्ती का हाथ मिलाया था। हाकिमे कन्सरीन लुका और हाकिमे हल्ब यूकन्ना में बहुत पुरानी अदावत थी और दोनों एक दूसरे के खून के प्यासे थे। जब इस्लामी लश्कर की मुल्के शाम में आमद हूई तो हिरक्ल बादशाह ने हाकिम लुका और हाकिम यूकन्ना को अपने पास बुलाया और मुसलमानों के मुतअल्लिक उन की राए मा'लूम की। दोनों ने एक ही जवाब दिया कि हम मर जाऐंगे, लैकिन अह्ले अरब से सुलह नहीं करेंगे। बल्कि दीने मसीह की हिमायत में हम अपनी जान कुरबान करने में अपनी सआदत समझते हैं। तब हिरक्ल बादशाह ने कहा कि उन अरबों से मुतफर्रिक हो कर लडने में काम्याबी के इम्कान कम हैं। वक्त का तकाज़ा यही है कि आपसी इख्तिलाफ बालाए ताक रख कर मुत्तहिद और मुज्तमेअ हो कर उन का मुकाबला करो। फिर हिरक्ल बादशाह ने हाकिम लुका और हाकिम यूकन्ना के दरमियान जो रंजिश थी, उस का इज़ाला कर दिया और सुलह करा दी। और दोनों से वा'दा किया कि तुम को अरबों के मुकाबले के लिये जब भी ज़रूरत पडे, मुझ से दस हज़ार सवारों की कुमुक तलब

कर लेना। अल-मुख्तसर! हाकिमे कन्सरीन लुका हिरक्ल बादशाह का मो'तमद और कराबती होने की वजह से सुलह का सख्त मुखालिफ था। और इस्लामी लश्कर से जंग कर के इस्लामी लश्कर को नेस्तो नाबूद करने का ख्वाब देखता था। अह्ले कन्सरीन का सुलह का इरादा उस के लिये ना-काबिले बरदाश्त था।

हाकिमे कन्सरीन लुका की सुलह की मक्कारी :-

हाकिम लुका ने शहर के सर बर आवरदा लोगों को जमा कर के पूछा कि ऐ शहर के मुअज़्ज़ज़ हज़रात ! तुम लोगों ने अरबों के मुतअल्लिक क्या तय किया है ? अह्ले शहर ने कहा कि ऐ सरदार ! मुसलमानों के अख्लाक बहुत ही उमदा हैं। वह अपनी ज़बान के पक्के हैं। जो भी वा'दा करते हैं उसे पूरा करते हैं। सुलह करने वालों के साथ हुस्ने सुलूक से पैश आते हैं। जिन जिन शहरों के साथ सुलह की है उन के साथ अपनी ज़िम्मेदारी कामिल तौर पर निभाई है और अह्द व पैमान पूरा करने में किसी किस्म की कमी या कोताही नहीं की। बल्कि एहसान किया है और जो उन से लडने निकला है उसे तबाह व बरबाद किया है। लेहाज़ा हम यह चाहते हैं कि हम अरबों से सुलह कर के अमान हासिल कर लें और उन की ज़िम्मेदारी में दाखिल हो जाअें, ताकि हम मअ अह्लो अयाल और मालो अस्बाब बे डर और बे खौफ हो जाअें। हाकिम लुका ने देखा कि तमाम लोगों का रुजहान सुलह की तरफ है। तमाम के तमाम सुलह करने पर आमादा हो गए हैं, ऐसी सूरत मैं अगर मैं ने सुलह की मुखालिफत की और अरबों से जंग करने का इरादा ज़ाहिर किया, तो शहर के लोग मेरा साथ नहीं देंगे। बल्कि मेरी मुखालिफत पर उतर आऐंगे। तो कहीं ऐसा न हो कि यह लोग अरबों से सुलह कर लें और मुझे तन्हा छोड दें। लेहाज़ा उस ने हिकमते अमली से काम लेते हुए कहा कि तुम्हारा मश्वरा बहुत नैक है। कसम है हक्के मसीह की ! मैं भी तुम्हारी राए से इत्तेफाक करता हूं लैकिन हम उन से सिर्फ एक साल की मुद्दत के लिये ही सुलह करेंगे। इस मुद्दत के दरमियान हम देखें कि हल्ब वालों के साथ उन का मुआमला किया होता है ?इलावा अज़ीं हिरक्ले आ'ज़म एक साल की मुद्दत के दौरान अरबों के इस्तीसाल के लिये कौन से अक्दाम उठाते हैं। एक साल के लिये सुलह कर के हम अरबों से बे डर हो जाअें और वह हम से मुत्मइन हो जाअें। एक साल की मुद्दत के दरमियान हम किल्ले में रसद, गल्ला, अश्याए सरफ, हथियार और लडने वाले सिपाही जमा कर लें। हिरक्ल बादशाह से कुमुक तलब कर लें और जब हम इस काबिल हो जाअें कि जंग करना हमारे लिये फाइदा मन्द है, तो हम सुलह तोड कर अचानक अरबों पर धावा बोल देंगे। अरब सुलह की वजह से हम से बे खौफ और मुत्मइन होंगे और हम हम्ला

कर के उन को हलाक कर देंगे। हाज़िरीन ने हाकिम लुका की राए को पसन्द किया और फरेब पर मुश्तमिल तज्वीज़ मुत्तफिका तौर पर मन्ज़ूर की गई।

हाकिम लुका ने अस्तखर नामी एक बतरीक को बुलाया, जो दीने नस्रानिया और दीने यहूदिया का राहिब और आलिम था। नीज़ वह अरबी ज़बान में फसीह व बलीग गुफ्तगू करने की महारत रखता था। हाकिम लुका ने अस्तखर से कहा कि तू मेरे सफीर की हैसियत से इस्लामी लश्कर के सरदार के पास जा और एक साल के लिये उन से सुलह का मुआहदा तय कर ले, ताकि हम एक साल के लिये अरबों से मामून हो जाऐं और अश्याए सरफ, सामाने हर्ब और लश्कर किल्ले में जमा कर लें। फिर उन पर हम्ला कर के उन को नेस्तो नाबूद कर डालेंगे। हाकिम लुका ने अस्तखर को एक खत हज़रत अबू उबैदा के नाम दिया और अपने एलची की हैसियत से उसे इस्लामी लश्कर के कैम्प की तरफ रवाना किया।

एलची अस्तखर की मुसलमानों से सुलह की पेश्कश :-

हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर के साथ हुमुस में मुकीम थे। अस्तखर ने उमदा खिल्अत पहना और अपने साथ दस गुलामों को ले कर हुमुस की तरफ रवाना हुवा। जब अस्तखर इस्लामी लश्कर के कैम्प में पहुंचा तो उस वक्त कैम्प में अस्र की नमाज़े बा-जमाअत पढी जा रही थी। हज़रत अबू उबैदा इमामत कर रहे थे। अस्तखर तअज्जुब भरी नज़रों से इस्लाम के अहम रुक्न नमाज़ का मन्ज़र देखता रहा। जब नमाज़ पूरी हूई तो मुजाहिदों ने देखा कि एक रूमी बतरीक फाखिरा लिबास पहने हुए अपने खुद्दाम के हमराह इस्लामी लश्कर के कैम्प के करीब खडा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रबीआ फौरन इस के पास आए और पूछा कि तू कौन है ? और क्या चाहता है ? अस्तखर ने कहा कि मैं कन्सरीन के हाकिम लुका का एलची हूं और तुम्हारे सरदार के नाम खत लाया हूं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रबीआ रूमी एलची अस्तखर को हज़रत अबू उबैदा के खैमा में ले आए। हज़रत अबू उबैदा की दाऐं तरफ हज़रत खालिद बिन वलीद और बाऐं तरफ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र बैठे हुए थे। और सामने सहाबए किराम बैठे हुए थे।

रूमी एलची अस्तखर ने खैमा में दाखिल हो कर इस्लामी लश्कर के सरदारों को सजदा करने का इरादा किया, लैकिन हज़रत अबू उबैदा ने उसे सजदा करने से बाज़ रखा और फरमाया कि खुदा के सिवा किसी को सजदा करना रवा नहीं। फिर हज़रत खालिद ने पूछा

कि ऐ शख्स तू कौन है ?किस का भेजा हुवा है ? हज़रत खालिद का बा-रोअब लह्जा में सवाल सुन कर रूमी एलची अस्तखर का दिल रोअब से भर गया और उस ने हज़रत खालिद से पूछा कि ऐ बिरादर अरबी ! क्या आप ही इस्लामी लश्कर के सरदार हैं ? हज़रत खालिद ने फरमाया कि मैं इस्लामी लश्कर का अदना सिपाही हूं। हमारे मुअज़्ज़ज़ सरदार यह हैं। यह कह कर हज़रत खालिद ने हज़रत अबू उबैदा की जानिब इशारा किया। अस्तखर ने कहा कि मैं हाकिम लुका का एलची हूं और आप के नाम खत लाया हूं। अस्तखर ने हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में हाकिम लुका का खत पैश किया। हज़रत अबू उबैदा ने तमाम हाज़िरीन को सुनाने के लिये बुलन्द आवाज़ से खत पढा। खत का मज़्मून हस्बे ज़ैल था :

> **''हमारा शहर कन्सरीन हमारे दुश्मनों को हम से बाज़ रखने वाले मज़बूत किल्ले वाला शहर है। हमारे शहर में जंगजू सिपाहियों का बडा लश्कर मौजूद है। हमारे शहर में गल्ला, रसद और अश्याए सरफ का इत्ना बडा ज़खीरा मौजूद है कि अगर तुम चालीस साल तक हमारे शहर का मुहासरा करोगे तब भी हम को किसी चीज़ की कमी या किल्लत मेहसूस न होगी। तुम कभी भी हमारा किल्ले फतह करने की ताकत नहीं रखते बल्कि हमारा किल्ले फतह करना तुम्हारे लिये ना मुम्किन है। तुम्हारे मुकाबले के लिये हिरक्ल बादशाह ने हद्दे खलीज से रूमतुल कुब्रा तक के रूमी बाशिन्दों से मदद तलब की है और हम यह चाहते हैं कि देखें इस मुकाबले में तुम्हारा अंजाम क्या होता है ? और मुल्के शाम के शहर किस के कब्ज़े में आते हैं ? इलावा अज़ीं हम अह्ले कन्सरीन खूनरैज़ी को पसन्द नहीं करते, लेहाज़ा हम तुम से एक साल की मुद्दत के लिये मुसालेहत करना चाहते हैं। हम तुम से जो सुलह करना चाहते हैं वह हिरक्ल बादशाह से खुफिया तौर पर सुलह करते हैं। क्यूं कि अगर हिरक्ल बादशाह को पता चला कि हम ने तुम से सुलह की है, तो वह हम को हलाक कर डालेगा।''**

जब हज़रत अबू उबैदा हाकिम लुका का खत पढ रहे थे, तब हज़रत खालिद बिन वलीद बहुत ही सन्जीदा हो कर गौर से सुन रहे थे और सर से इन्कार का इशारा करते थे। जब खत पढा जा चुका तो हज़रत खालिद बिन वलीद ने हज़रत अबू उबैदा से कहा कि ऐ सरदार ! कसम है उस हक्क की जिस ने हमारी मदद कर के ताईद फरमाई है और हम को उम्मते मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम में बनाया है। इस खत से मक्रो फरेब की बू

आती है। खत का मज़्मून इस बात की निशानदही करता है कि कन्सरीन का हाकिम वक्त को टालना चाहता है और हम को धोका दे कर जंगी तैयारी करना चाहता है। लेहाज़ा मैं आप से मुअद्बाना दरख्वास्त करता हूं कि उस की सुलह की दरख्वास्त को ठुकरा दें, हम को हुक्म दें कि हम कन्सरीन पर युरिश ले जाऐं। **कसम है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की ! कसम है बैअत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक की ! कसम है अमारत हज़रत उमर फारूके आज़म की** ! हम उन को खाक व खून में मिला देंगे। उन को पीस कर रख देंगे। उन के किलओं और शहरों को फतह कर लेंगे और उन का मालो अस्बाब हमारे लिये गनीमत होगा। हज़रत खालिद बिन वलीद की जज़्बाती गुफ्तगू सुन कर हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! आप तवक्कुफ करो। जब वह सुलह पर आमादा हुए हैं, तो हमें भी सुलह की तरफ पैश कदमी करनी चाहिये क्यूं कि सुलह जंग से बेहतर है।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने जवाब दिया कि ऐ सरदार ! बे शक हर हाल में सुलह जंग से बेहतर है, लैकिन जिस सुलह की बुन्याद मक्रो फरैब पर रखी गई हो, वह सुलह अच्छी नहीं। बल्कि दुश्मन की चाल से धोका खाना है और फिर बा'द में पछताना पडेगा। अगर हाकिम लुका इख्लासे निय्यत से सुलह करना चाहता है तो उसे लिखिये कि सिर्फ एक साल की मुद्दत के लिये आरज़ी सुलह न करे। बल्कि हमेंशा के लिये दाइमी सुलह करे वरना हम को ऐसी मक्रो फरेब की सुलह की कोई ज़रूरत नहीं। रूमी एलची अस्तखर ने जब हज़रत खालिद बिन वलीद की बेबाकाना और दिलेराना गुफ्तगू सुनी, तो उसे यकीन हो गया कि वाकई यह शख्स बहुत ही चालाक और अक्लमन्द है और मक्रो फरेब की तेह तक पहुंचने वाली दूर-रस निगाह रखने वाला है। लेहाज़ा उस ने हज़रत खालिद से मुखातब हो कर कहा कि ऐ अरबी सरदार ! आप का तआरुफ क्या है ? हज़रत खालिद ने जवाब देते हूए फरमाय कि मेरा नाम खालिद बिन वलीद मख्ज़ूमी है। मैं दिलैर जंगजू हूं और मेरी तलवार काफिरों और मुशरिकों को हलाक करने वाली और उन को सफह-ए हस्ती से मिटाने वाली है। हज़रत खालिद का नाम सुन कर रूमी एलची अस्तखर को पसीना छूट गया। उस ने कहा कि हां तुम वही शख्स हो कि जिस की शुजाअत व बहादुरी का चर्चा मुल्के शाम के घर घर में होता है और हर शख्स की ज़बान पर तुम्हारी दिलैरी और इस्तेकलाल का ज़िक्र है। लैकिन तुम्हारी बातों से ऐसा लगता है कि तुम सुलह से ज़ियादह जंग को पसन्द करते हो।

हज़रत खालिद ने फरमाया कि मैं अमन पसन्द हूं। मैं सुलह को खूं रैज़ी पर तर्जीह देता हूं। लैकिन जो हम से दिल की सफाई के साथ मुसालहत करता है, हम उस के साथ सुलह

करते हैं, और जो धोका देने के लिये मक्रो फरेब की चाल चलता है हम उस को अच्छी तरह पहचान लेते हैं और किसी के जाल में नहीं फंसते हैं। तुम्हारे हाकिम लुका के खत से मक्रो फरेब का राज़ अयां हो रहा है। उस का सुलह से सिर्फ यही इरादा है कि अगर इस्लामी लश्कर को फतह हासिल हो, तो सुलह की ढाल की आड में वह महफूज़ रहे। और अगर हमारे दुश्मनों का गल्बा हो, तो वह हमारे दुश्मन के गिरोह में शामिल हो जाए बल्कि बहुत मुम्किन है कि हिरक्ल बादशाह के इमदादी लश्कर की आमद पर वह सुलह तोड कर हमारे साथ लडने निक्लेगा। लेहाज़ा तुम्हारे शहर से हिरक्ल बादशाह के लश्कर की मदद करने के लिये जो भी शख्स निक्लेगा वह हमारी अमान से खारिज हो जाएगा। रूमी एलची अस्तखर ने कहा कि ऐ अरबी सरदार ! तुम नबी-ए रहीम (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) की उम्मत होने की वजह से रहम करने वालों में से हो। लैकिन क्या वजह है कि मैं आज मुआमला बर-अक्स देख रहा हूं ? हम सुलह की दरख्वास्त करते हैं और सुलह के तालिब हैं, लैकिन तुम मन्ज़ूर नहीं करते बिल आखिर रूमी एलची अस्तखर ने हल्फिया यकीन दिलाया और हज़रत खालिद के शराइत मन्ज़ूर किये और एक साल की मुद्दत के लिये सुलह हूई। सुलह की मुद्दत ज़िल हिज्जा 14, सन हिजरी तक करार पाई। चार हज़ार दीनार शाही, एक सौ ऊकिया चांदी, एक हज़ार हल्ब के कपडे और एक हज़ार वस्क गल्ला पर यह सुलह हूई।

कन्सरीन की हद बन्दी हिरक्ल की तस्वीर के निशान से :-

जब अहले कन्सरीन से सुलह का मुआमला तय हो गया, तो रूमी एलची अस्तखर ने हज़रत अबू उबैदा से कहा कि हमारे इलाके की हद बन्दी होनी चाहिये क्यूं कि कन्सरीन और हल्ब की सरहदें मुलहिक हैं। कन्सरीन की हद खत्म होते ही हल्ब का इलाका शुरू होता है। जहां दोनों हदें मिलती हैं वहां कोई निशानी रख देना चाहिये ताकि तुम्हारे लश्कर का आदमी हमारी हद में दाखिल हो कर कोई गडबडी न करे। क्यूं कि हल्ब वालों से तुम्हारी सुलह नहीं और तुम्हारे आदमी हल्ब का इलाका होने की गलत फहमी में हमारे इलाके को ताख्त व ताराज न कर बैठें और हमारे दरमियान कोई गलत फहमी पैदा न हो। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि तुम्हारी बात मुनासिब है। मैं अपने किसी आदमी को हदबन्दी का निशान काइम करने के काम पर मामूर कर देता हूं। रूमी एलची अस्तखर ने कहा कि ऐ सरदार ! आप तक्लीफ गवारा न फरमाऐं। हमारी हद मश्हूरो मा'रूफ है जिस जगह कन्सरीन और हल्ब की हदें मिलती हैं वहां हम एक सुतून खडा कर देते हैं और इस पर हिरक्ल बादशाह की तस्वीर बना देते हैं। लेहाज़ा आप अपने सिपाहियों को हुक्म फरमा दें कि कोई भी इस

सुतून से तजावुज़ न करे। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि यह तद्बीर मुनासिब है। मैं अपने साथियों को मुत्तलेअ कर दूंगा।

अह्ले कन्सरीन ने अपने इलाके की सरहद पर एक मुस्तहकम सुतून ता'मीर कर के उस पर हिरक्ल बादशाह की तस्वीर इस तरह बना दी, गोया वह अपने दारुस-सल्तनत में तख्त पर बैठा है। हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों को ताकीद फरमा दी कि कोई भी शख्स इस तस्वीर वाले सुतून से तजावुज़ न करे। और जो शख्स यहां मौजूद नहीं है उन तक मेरा हुक्म पहुंचा दो कि सुतून से आगे तजावुज़ करने की मुमानेअत है।

कुछ मुजाहेदीन कन्सरीन के इलाका के करीब के रूमी दैहातियों की तरफ गए हुए थे उन को इस सुतून के मुतअल्लिक कोई इत्तेलाअ नहीं थी। इत्तेफाक से हज़रत मुल्तमिस बिन आमिर और हज़रत अबू जुन्दल बिन सहल अपने साथियों के हमराह इस सुतून के करीब से गुज़रे। सुतून पर हिरक्ल बादशाह की तस्वीर देखी, तो सब को तअज्जुब हुवा। वह तमाम मुजाहेदीन सुतून के करीब रास्ता की थकन दूर करने के लिये ठहरे फिर वह अपने घोडों को कावे पर फेरने की ता'लीम देने लगे और अपने साथियों को नैज़ा बाज़ी की मश्क कराने लगे। नैज़ा बाज़ी की मश्क के दौरान हज़रत अबू जुन्दल बिन सहल के नैज़ा की अनी गलती से हिरक्ल बादशाह की तस्वीर की आंख में चुभ गई और तस्वीर की एक आंख अंधी हो गई। कुछ फास्ला पर सुतून की निगरानी पर मामूर रूमी सिपाही खडे थे वह दौड कर आए और शौरो गुल मचाया। हज़रत अबूल जुन्दल ने मा'ज़ेरत करते हुए कहा कि उन्हों ने यह फै'ल कस्दन नहीं किया बल्कि इत्तिफाकिया नैज़ा तस्वीर की आंख में लग गया है। कुछ रूमी सिपाही कन्सरीन शहर की तरफ भागे और हाकिम लुका को हिरक्ल बादशाह की तस्वीर की आंख फूटने के हादसे की इत्तेलाअ दी। लुका यह खबर सुन कर बहुत बरहम हुवा और उस ने यह भी कहा कि तुम ने बद अहदी की है और अपनी ज़िम्मेदारी और वफादारी पर काइम नहीं रहे। और जो बद-अहदी करता है वह ख्वार होता है।

रूमी एलची अस्तखर अपने साथ एक सौ सवारों को ले कर हज़रत अबू उबैदा के पास आया और शिकायत की कि आप के आदमियों ने सुतून पर नस्ब की हूई हिरक्ल बादशाह की तस्वीर की आंख फोड डाली है। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि मुझे इस मुआमले का हाल मा'लूम नहीं, लैकिन फिर भी मैं तुम्हारे सामने इस की तह्कीक करता हूं। चुनांचे इन्हों ने फरमाया कि जिस शख्स ने भी हिरक्ल बादशाह की तस्वीर की आंख फोडी है, वह मेरे सामने आए। हज़रत अबूल जुन्दल सामने आए और मुअद्दबाना अर्ज़ किया कि

ऐ मोहतरम सरदार ! यह कुसूर मुझ से हुवा है, लैकिन यह काम मैं ने कस्दन नहीं किया बल्कि गलती से नैज़ा तस्वीर की आंख में पैवस्त हो गया। हज़रत अबू उबैदा ने उन की सरज़निश फरमाई और आइन्दा एहतियात बरतने की सब को ताकीद की। रूमी एलची ने मुतालबा किया कि हम इस खता का किसास चाहते हैं। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि किसास में तुम क्या चाहते हो ? अस्तखर ने कहा कि हमारे बादशाह की आंख के बदले में हम तुम्हारे बादशाह की आंख फोड डालें। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि तुम ब-खूशी अपना इन्तेकाम ले लो। मैं तुम्हारे सामने मौजूद हूं। इसी वक्त मेरी आंख फोड डालो। रूमी एलची अस्तखर ने कहा कि तुम्हारी आंख नहीं बल्कि तुम्हारे बादशाह जो मुल्के अरब के मालिक व मुख्तार की हैसियत से हुक्मरां हैं, उन की आंख का हम मुतालबा करते हैं। या'नी अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आज़म की आंख।

रूमी एलची अस्तखर की बात सुन कर इस्लामी लश्कर के मुजाहेदीन गज़बनाक और मुश्तइल हो गए और अस्तखर और उस के साथियों को कत्ल करने पर मुस्तइद हुए। लैकिन हज़रत अबू उबैदा ने मुजाहिदों को रोका और सरज़निश करते हुए फरमाया कि एलची को कत्ल करना आईने वफा के खिलाफ है। मुजाहिदों ने कहा कि हम अपने इमाम व खलीफा के इवज़ अपनी जानें और आंखें कुरबान करने को तैयार हैं। हिरक्ल बादशाह की तस्वीर की आंख के किसास में जितनी आंखें रूमियों को दरकार हैं वह हम देने के लिये तैयार हैं। लैकिन खबरदार ! हमारे इमाम व खलीफा अमीरुल मोमेनीन हज़रत उमर फारूके आज़म की आंख का ज़िक्र अपने ज़बान पर लाया तो हम इस की ज़बान खींच लेंगे।

रूमी एलची अस्तखर ने इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों का जौश और इश्तिआल देखा तो सहम गया और कहा कि मेरी मुराद यह है कि जिस तरह तुम ने हमारे बादशाह की तस्वीर की आंख फोडी है हम भी इसी तरह तुम्हारे बादशाह या'नी हज़रत उमर की तस्वीर बना कर उस तस्वीर की आंख फोड डालें। मुजाहिदों ने कहा कि हम ने तुम्हारे बादशाह की तस्वीर की आंख कस्दन और अमदन नहीं फोडी। जब कि तुम यह अम्र अमदन करना चाहते हो। अल-किस्सा ! रूमियों ने हज़रत अबू उबैदा की तस्वीर की आंख फोडने पर मुआमला तय किया। चुनांचे रूमियों ने एक सुतून पर हज़रत अबू उबैदा की तस्वीर बनाई, जिस में शीशे की दो आंखें बनाईं। फिर एक शख्स ने हाथ में नैज़ा लिया और ब-हालते गुस्सा नैज़ा तस्वीर की आंख में मारा और उस की आंख फोड डाली।

हुमुस से इस्लामी लश्कर की रवानगी :-

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हुमुस में इस्लामी लश्कर का कैम्प रखा था। और अतराफ के छोटे छोटे दैहातों को फतह करते थे, लैकिन कोई बडा शहर या मश्हूर मकाम फतह न किया था। मदीना तय्यबह में इस्लामी लश्कर की मुल्के शाम से अर्सा दराज़ गुज़रने के बा-वुजूद कोई इत्तेलाअ या फतह की खुश्खबरी न मिलने की वजह से अमीरुल मोमेनीन हज़रत उमर फारूके आज़म बहुत फिक्र मन्द थे। लेहाज़ा उन्हों ने हज़रत अबू उबैदा को एक खत लिखा कि तुम्हारी तरफ से किसी बडे मकाम की फतह की खुश्खबरी नहीं आई। तुम किसी रूमी शहर पर हम्ला भी नहीं करते और न ही किसी जानिब पैश कदमी करते हो। क्या तुम जेहाद से जी चराते हो ? क्या तुम्हारे अन्दर बुज़दिली आ गई है ? याद रखो अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में साफ इर्शाद फरमाता है :

" قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَاؤُكُمْ وَاَبْنَاؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ
وَاَمْوَالُ اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنَ تَرْضَوْنَهَا
اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِىْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى
يَاتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ط وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفَاسِقِيْنَ

(सूरए-तौबा, आयत : 24)

तर्जुमा : **"तुम फरमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुंबा और तुम्हारी कमाई के माल और वह सौदा जिस के नुक्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान। यह चीज़ें अल्लाह और उस के रसूल और उस की राह में लडने से ज़ियादह प्यारी हों, तो रास्ता देखो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए और अल्लाह फासिकों को राह नहीं देता।"** (कन्जुल ईमान)

तफ्सीर : **"और जल्दी आने वाले अज़ाब में मुब्तला करे या दैर में आने वाले में। इस आयत से साबित हुवा कि दीन के महफूज़ रखने के लिये दुनिया की मशक्कत बरदाश्त करना मुसलमान पर लाज़िम है।"** (तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 342)

हज़रत सय्यिदोना उमर फारूके आ'ज़म ने अपने खत में यहां तक लिखा कि तुम लोग जेहाद से बुज़दिली कर के कुरआने मजीद की मुन्दरजा बाला आयत के मिस्दाक मत बनना। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने अमीरुल मोमेनीन का खत पढा तो अह्ले कन्सरीन से सुलह करने पर नादिम हुए। फिर हज़रत अबू उबैदा ने तमाम मुजाहिदों को अमीरुल मोमेनीन का खत सुनाया। खत का मज़्मून समाअत कर के तमाम मुजाहिद रोने लगे और हज़रत अबू उबैदा से कहा कि अमीरुल मोमेनीन शायद यह समझ रहे हैं कि हम जेहाद से जी चराते हैं। लेहाज़ा ऐ सरदार ! कन्सरीन वालों को उन के हाल पर छोड दो और हम को हल्ब या इन्ताकिया की जानिब कूच करने का हुक्म दो।

अह्ले रुस्तन और शिरज़ से मुसालेहत :-

अमीरुल मोमेनीन हज़रत उमर फारूके आज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो का खत आने के चंद दिनों के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर को **हल्ब** की जानिब कूच करने का हुक्म दिया। राह में **रुस्तन** नाम का शहर आया। वहां के लोगों ने अदाए जिज़्या की शर्त पर सुलह की। रुस्तन से रवाना हो कर इस्लामी लश्कर **हमात** नामी मकाम पर पहुंचा। जब इस्लामी लश्कर हमात पहुंचा तो वहां के लोग अपने साथ राहिबों और कसों का गिरोह ले कर हाथों में इन्जील उठाए हुए हज़रत अबू उबैदा के पास आए और कहा कि हमारी कौम से तुम हमारे नज़्दीक महबूब तर हो। हम तुम से सुलह कर के तुम्हारे अह्द और ज़िम्मेदारी में दाखिल होने की ख्वाहिश ले कर हाज़िर हुए हैं। हज़रत अबू उबैदा ने अह्ले हमात से सुलह की और ज़िम्मेदारी की दस्तावेज़ लिख दी। वहां से रवाना हो कर इस्लामी लश्कर **शिरज़** नाम के शहर में पहुंचा। जब अहले शीरज़ को मा'लूम हुवा कि इस्लामी लश्कर आया है, तो तमाम लोगों ने इस्लामी लश्कर का शानदार इस्तेक्बाल किया और अदाए जिज़्या की शर्त पर मुसालेहत की। हज़रत अबू उबैदा ने अहले शीरज़ से हिरक्ल बादशाह के मुतअल्लिक पूछा तो शिरज़ के लोगों ने इत्तेलाअ दी कि कन्सरीन के हाकिम लुका ने हिरक्ल बादशाह से कुमुक तलब की है ताकि वह तुम से लडे। हिरक्ल बादशाह ने मुल्के अरब के जंगजू नस्रानी अरब सरदार जबला बिन ऐहम गस्सानी को कौमे गस्सान, अरब मुतनस्सिरा और उमूदिया के रूमियों का दस हज़ार का लश्कर कन्सरीन के हाकिम की मदद के लिये भेजा है। जबला बिन ऐहम गस्सानी अपने लश्कर के साथ इन्ताकिया से रवाना हो कर कन्सरीन के करीब लोहे के पुल पर पडाव किये हुए है। लेहाज़ा तुम बहुत होशियार रहो, न मा'लूम किस वक्त वह तुम्हारे सामने आ जाए। हज़रत अबू उबैदा ने **"हस्बोनल्लाहो व ने'मल वकील"** पढा। हज़रत

खालिद ने हज़रत अबू उबैदा से कहा कि ऐ सरदार ! मैं ने आप से पहले ही अर्ज़ किया था कि कन्सरीन के हाकिम के पेट में पाऊं हैं वह ज़रूर हम से मक्रो फरेब करेगा। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया ऐ अबू सुलैमान ! तुम्हारी राए मुनासिब थी, लैकिन हाकिमे कन्सरीन को यह मक्रो फरेब भारी पड जाएगा और अल्लाह तआला उसे हलाक फरमाएगा।

जबला बिन ऐहम के सिपाहियों की इस्लामी लश्कर के खुद्दाम पर दस्त दराज़ी

जबला बिन ऐहम गस्सानी के दस हज़ार के लश्कर की आमद की खबर सुन कर हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर को शिरज़ में पडाव करने का हुक्म दिया। और मुखबिरों को कुर्ब व ज्वार के इलाकों में मुन्तशिर कर दिये, ताकि वह रूमी लश्कर की हरकत पर नज़र रखें और इत्तेलाअ देते रहें। शिरज़ में पडाव के दौरान खाना पकाने के लिये गुलाम ज़ैतून, अनार और दीगर फलदार दरख्तों की शाखें और जडें लाते थे और जलाते थे, हज़रत अबू उबैदा को जब पता चला कि गुलाम सरसब्ज़ व शादाब दरख्तों की शाखें और जडें जला कर खाना पकाते हैं, तो यह बात आप को ना–गवार मा'लूम हूई। आप ने तमाम गुलामों को बुला कर डांटा और आइन्दा इस हरकत से बाज़ रहने की सख्ती से तम्बीह फरमाई। गुलामों ने अर्ज़ किया कि ऐ सरदार ! खुश्क लक्डियां बहुत दूर और जंगल के इलाके में हैं, अतराफ में कहीं भी खुश्क लक्डी दस्तयाब नहीं। लेहाज़ा हम हरी लक्डी जलाते हैं। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि दूर से खुश्क लक्डी ला कर जलाया करो, चाहे तक्लीफ बरदाश्त करनी पडे। आइन्दा अगर किसी ने हरी लक्डी जलाई तो मैं उस को सख्त सज़ा दूंगा। हज़रत अबू उबैदा की सख्त मुमानेअत की वजह से गुलामों ने हरी लक्डी जलानी बन्द कर दी और खुश्क लक्डियां लेने दूर दूर तक जाने लगे।

हज़रत सईद बिन आमिर के गुलाम महजाअ अपने चंद गुलाम साथियों के साथ खुश्क लक्डियां लेने दूर के इलाके तक गए। उन को गए बहुत अर्सा गुज़र गया लैकिन वापस नहीं लौटे, हज़रत सईद बिन आमिर को तश्वीश लाहिक हूई और वह अपने घोडे पर सवार हो कर गुलामों की जुस्तजू में निकले। हज़रत सईद बिन आमिर जंगल के इलाका की तरफ गए। थोडी मुसाफत तय करने के बा'द उन को अपना गुलाम इस हाल में मिला कि वह ज़मीन पर ज़ख्मी पडा हुवा था। उस का सर फट गया था और मुंह से खून जारी था। हज़रत सईद उस के करीब गए और पूछा कि ऐ

महजाअ ! तेरा यह हाल किस तरह हुवा ? गुलाम ने घबराई हूई आवाज़ में कहा कि ऐ मालिक ! तुम अपनी जान ब...... इत्ना कह कर वह गुलाम बै होश हो गया। हज़रत सईद ने मश्कीज़ा से पानी निकाल कर उस के चेहरे पर छिडका। थोडी दैर के बा'द गुलाम को होश आया और कहा कि ऐ मालिक ! अपनी जान बचाव, मेरी फिक्र मत करो, आप यहां से फौरन भाग जाओ, वरना आप का भी मेरी तरह हाल होगा। हज़रत सईद ने पूछा कि तुम्हारे साथ क्या मुआमला पैश आया ? गुलाम ने कहा कि मैं अपने साथियों के हमराह खुश्क लक्डियां तलाश करने दूर गया था। हम ने लक्डियां जमा कर लीं और वापस पलटने का इरादा किया। अचानक एक हज़ार नस्रानी अरब सवारों ने आ कर हम को घेर लिया। उन तमाम सवारों की गर्दनों में सोने की सलीबें लटकती थीं और लम्बे लम्बे नैज़े और तलवारें उन के हाथों में थीं। हम ने हस्बे इस्तिताअत उन का मुकाबला किया। मैं ने मुकाबला करने में ज़ियादह शिद्दत दिखाई, लेहाज़ा इन्हों ने मुझे खूब पीटा और मेरे दस साथियों को कैद कर लिया। मेरे सर में सख्त चोट आई और में गश खा कर गिरा और मुंह के बल ज़मीन पर पडा। वह लोग मुझ को मुर्दा समझ कर मुझे इसी हाल में छोड कर मेरे साथियों को गिरफ्तार कर के ले गए। जब मुझे होश आया तो मैं अकैला ज़ख्मी हालत में पडा हुवा था और मेरे तमाम साथी गाइब थे। लेहाज़ा मैं उठ कर भागा लैकिन सर में सख्त चोट लगने की वजह से थोडे फास्ला तक जा कर फिर बे होश हो गया और अब आप से मुलाकात हूई है।

हज़रत सईद बिन आमिर ने अपने गुलाम को उठाया और घोडे पर अपने साथ सवार किया और वापस पलटना चाहते थे कि कौमे गस्सान के नस्रानी सिपाहियों ने घैर लिया और उन को गिरफ्तार कर के जबला बिन ऐहम के लश्कर में ले गए। जबला अपने खैमे में सोने की कुर्सी पर बैठा था और दीबाज के कपडे का लिबास ज़ेब तन किये हुए था, जिस में कीमती जवाहिर की लडियां थीं। गले में याकूत की बनी हूई सलीब थी। जबला ने हज़रत सईद बिन आमिर से उन का नसब और कबीला पूछा। फिर कौमे अरब से अपना नसब और कबीला बयान किया। और फिर हज़रत उमर फारूके आज़म की शिकायत की, कि एक हकीर दैहाती के लिये मुझ जैसे बादशाह से किसास लेते थे। लेहाज़ा मैं इस्लाम से मुन्हरिफ हो गया और यहां मुल्के शाम हिरक्ल बादशाह के लश्कर की कुमुक करने आ गया हूं। फिर जबला बिन ऐहम ने हज़रत सईद बिन आमिर से पूछा कि तुम हस्सान बिन साबित अन्सारी को जानते हो ? हज़रत सईद ने जवाब दिया कि हां ! वह **रसूले अक्दस** सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के ना'त गो शाइर हैं। जबला ने पूछा कि तुम्हारी हस्सान से कोई जान पहचान है ? और हज़रत हस्सान से तुम्हारी आखरी मुलाकात कब हूई थी ? हज़रत सईद ने जवाब

दिया कि मेरा उन से दोस्ताना तअल्लुक है। थोडा ही अर्सा हुवा जब हज़रत हस्सान ने कई मुसलमानों के साथ मुझे भी खाने की दा'वत की थी। फिर चंद रोज़ बा'द मैं मुल्के शाम आ गया। जबला ने पूछा कि तुम मुल्के शाम किस गर्ज़ से आए हो ? हज़रत सईद ने फरमाया कि मैं इस्लामी लश्कर के साथ जेहाद की मुहिम पर आया हूं और अब हम अन्करीब हल्ब और इन्ताकिया पर हम्ला करने वाले हैं।

जबला बिन ऐहम गस्सानी ने कहा कि हिरक्ल बादशाह ने कन्सरीन के हाकिम की मदद के लिये दस हज़ार के लश्कर के साथ मुझे भेजा है। कन्सरीन का हाकिम तुम्हारी सुलह तोड कर मक्रो फरेब से तुम को हलाक करने वाला है और हम इस में शामिल होंगे। लेहाज़ा तुम अपने सरदार अबू उबैदा को हमारी कसीर ता'दाद और हमारी जर्मईयत की ताकत से बा-खबर करो और हमारी हैबत व दबदबा से आगाह करो और उन से कहो के वह वापस लौट जाओं। मैं भी मुल्के अरब का बाशिन्दा हूं और अरब होने के नाते तुम्हारी खैर ख्वाही और हमदर्दी रखता हूं और तुम को नैक मश्वरा देता हूं कि तुम्हारी खैरियत और भलाई इसी में है कि तुम मुल्के शाम पर तसल्लुत और हुकूमत करने के ख्वाब मत देखो और मुल्क हिजाज़ वापस चले जाओ। अब तक तुम्हारा साब्का मुल्के शाम के कमज़ोर रूमी सिपाहियों से पडा था मगर अब मैं अपनी कौमे बनी गस्सान के जंगजू शेहसवारों के साथ तुम्हारे मुकाबले के लिये आ पहुंचा हूं। मैं हिरक्ल बादशाह की मदद और खिदमत में किसी किस्म की कमी और कोताही नहीं करूंगा और यह बात भी अच्छी तरह ज़हन नशीं कर लो कि मैं तुम से वह तमाम मकामात छीन लूंगा जो तुम ने अब तक फतह किये हैं और वह तमाम दौलत लूट लूंगा जो तुम ने अब तक जमा की है। फिर जबला ने एक रूमी कत्तान कपडे का थान मंगाया और हज़रत सईद को ब-तौर तोहफा दिया और कहा कि इसे सिल्वा कर पहनना। जबला ने अपने आदमियों से कहा कि सईद बिन आमिर का रास्ता छोड दो और इसे जाने दो।

हज़रत सईद बिन आमिर ने अपने गुलाम को अपने साथ घोडे पर सवार किया और जबला के कैम्प से निकल कर इस्लामी लश्कर के कैम्प में ब-मकाम शिरज़ वापस आए। हज़रत सईद बिन आमिर की गुमशुद्गी से तमाम मुजाहिद फिक्र मन्द थे। उन को आते देख कर तमाम मुजाहिद उन की तरफ दौडे और उन को हज़रत अबू उबैदा के खैमे में लाए। हज़रत सईद बिन आमिर ने हज़रत अबू उबैदा को जबला के लश्कर और उस के साथ की तमाम गुफ्तगू की कैफियत बयान की। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ सईद ! तुम ने हज़रत हस्सान बिन साबित अन्सारी का जबला के सामने ज़िक्र किया, इस की बरकत से

तुम को नजात मिली है और तुम ज़िन्दा वापस आए हो। फिर हज़रत अबू उबैदा ने सहाबए किराम रिदवानुल्लाहे तआला अलैहिम को बराए मश्वरा जमा किया और कहा कि हाकिमे कन्सरीन का मक्रो फरेब खुल कर सामने आ गया है। लेहाज़ा आप हज़रात की इस मुआमले में क्या राए है ? हज़रत खालिद ने फरमाया कि अब मैं हाकिमे कन्सरीन को उस के मक्र का मज़ा चखाउंगा।

हज़रत खालिद सिर्फ दस साथियों के साथ जबला के लश्कर से मुकाबला में

हज़रत खालिद ने फरमाया कि मैं सिर्फ दस आदमियों को ले कर उन की तरफ जाउंगा और उन के साथ ऐसी तद्बीर करूंगा जो उन के फरेब से बडी होगी। मेरे साथ जो दस मुजाहिद आओंगे वह तमाम अस्हाबे रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम से होंगे और वह दस हज़रात ब-मन्ज़िला दस हज़ार सवार होंगे। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! यह काम तुम से ही होगा और तुम जिस को पसन्द करते हो उन दस हज़रात को अपने साथ ले लो। हज़रत खालिद ने अपने साथ जिन दस सहाबए किराम को लिया उन के अस्मा-ए गिरामी यह हैं :

(1) हज़रत अयाज़ बिन हातिम अश्अरी

(2) हज़रत अम्र बिन सअद यश्करी

(3) हज़रत सुहैल बिन आमिर

(4) हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई

(5) हज़रत सईद बिन आमिर अन्सारी

(6) हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब

(7) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक

(8) हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर

(9) हज़रत मुसय्यब बिन नजीबा फज़ारी और

(10) हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी। (रदीयल्लाहो तआला अन्हुम)

यह तमाम हज़रात मुसल्लह हो कर हाज़िर हो गए। हज़रत खालिद अपने खैमे में आए और मुसल्लह हो कर सवार हुए। रवाना होते वक्त आप ने अपने गुलाम जिस का नाम **''हुमाम''** था उस से फरमाया कि तुम भी मेरे साथ चलो। आज तुम को एक अजीब मन्ज़र देखने को मिलेगा। चुनांचे हज़रत हुमाम भी जल्दी जल्दी मुसल्लह हो कर हज़रत खालिद के साथ रवाना हुए। मज़्कूरा बाला दस सहाबए किराम, हज़रत खालिद और हज़रत खालिद के गुलाम हज़रत हुमाम कुल बारह (१२) अश्खास हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में आए और रुखसत होने की इजाज़त तलब की। हज़रत अबू उबैदा ने दुआए खैरो आफियत से नवाज़ कर रुखसत फरमाया।

हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के हमराह रात के वक्त रवाना हुए। रास्ते में हज़रत खालिद ने हज़रत सईद बिन आमिर से पूछा कि ऐ सईद ! जब तुम जबला बिन ऐहम से मिले थे, तो यह मा'लूम किया था या नहीं कि हाकिमे कन्सरीन जबला के लश्कर के इस्तेक्बाल के लिये आएगा या नहीं ? हज़रत सईद बिन आमिर ने कहा कि हां ! हाकिम लुका कन्सरीन से बाहर निकल कर किल्ले से शाहराह के मोड तक जबला का इस्तेक्बाल करने आएगा और वहां से जबला के लश्कर को अपने साथ ले कर किल्ले में दाखिल होगा। हज़रत खालिद ने फरमाया कि बेहतर यह है कि हम कन्सरीन के हाकिम को ही उठा लें। हज़रत सईद बिन आमिर राहबर की हैसियत से आगे आगे चलते थे। यहां तक कि इस मुकद्दस जमाअत के मुजाहिद लोहे के पुल के करीब पहुंचे, जहां जबला बिन ऐहम अपने दस हज़ार के लश्करे जर्रार के साथ पडाव किये हुए था। दूर से जबला के लश्कर के कैम्प की मश्अलें जलती दिखाई देने लगीं। हज़रत खालिद बिन वलीद ने थोडे फास्ले पर ठहरने का हुक्म दिया। तमाम मुजाहेदीन शाहराह के करीब एक कमीन गाह में छुप गए। रात का वक्त था, लेहाज़ा सुब्ह होने का इन्तिज़ार करने लगे।

❀ हज़रत खालिद हाकिम लुका पर काबिज़ :-

जब सुब्ह हूई तो मुजाहिदों ने जमाअत के साथ नमाज़ अदा की। फरीज़ए नमाज़े फज्र अदा करने के बा'द तमाम मुजाहिद तिलावते कुरआने मजीद में मश्गूल हो गए। जब आफ्ताब बुलन्द हुवा तो हज़रत खालिद ने देखा कि जबला बिन ऐहम लोहे के पुल के करीब अपने कैम्प से मअ लश्कर कूच कर के कन्सरीन की तरफ जाने वाली शाहराह से आ रहा है। हज़रत खालिद ने तमाम मुजाहिदों को हुक्म दिया कि अपने चेहरों को कपडे से इस तरह छुपा लो, कि देखने वाले को यह गुमान हो कि गर्दो गुबार और धूप से बचने के लिये ढाटा बांधा

है। जब जबला का लश्कर हमारे करीब आए तो कमीन गाह से एक एक शख्स निकल कर उस में शामिल हो कर रूमी सिपाहियों के साथ चलने लगे और मैं लश्कर की अव्वल सफ में पहोंच जाउंगा। तुम भी कुछ फास्ला रख कर मेरे साथ साथ चलना। हम चुपचाप उन के साथ चलते रहेंगे। कन्सरीन के मोड पर जब हाकिम लुका लश्कर का इस्तेक्बाल करने आएगा, तो हम इस को अपने कब्ज़ा में ले लेंगे फिर जो अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होगा वह होगा।

थोडी दैर में जबला का लश्करे जर्रार करीब आया। लश्कर के चलने से अजीब शौरो गुल उठता था और गर्दो गुबार बुलन्द हो कर मिस्ल बादल छा रहा था। जबला बिन ऐहम और उमूरिया का हाकिम लश्कर के आगे फख्र व तकब्बुर से चल रहे थे। जब यह लश्कर उस कमीन गाह के करीब पहुंचा जहां हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के साथ छुपे हुए थे, तो हिदायत के मुताबिक एक एक मुजाहिद कमीन गाह से निकल कर इस तरह लश्कर में शामिल हो गए कि किसी को शक भी न हुवा। तमाम मुजाहेदीन चलने में जल्दी कर के यह कोशिश की कि लश्कर की सफे अव्वल तक पहोंच जाअें। दस हज़ार के रूमी लश्कर में इस्लाम के सिर्फ बारह कफन बरदोश मुजाहिद चुपचाप चल रहे थे। हज़रत खालिद और दीगर साथी थोडा फास्ला तय करने के बा'द लश्कर की अगली सफों में पहोंच गए। अब कन्सरीन शहर की हद शुरू हो गई थी। शाहराह के मोड पर कन्सरीन की तरफ जाने वाले रास्ते से हाकिमे कन्सरीन लुका रूमी कस और राहिब के गिरोह के साथ हाथ में सलीब और इन्जील लिये हुए जबला बिन ऐहम के लश्कर के इस्तेक्बाल के लिये आ रहा था। फास्ला कम होता जा रहा था। मुजाहिदों के दिलों की धडकनें तैज़ होती जा रही थीं। यहां तक कि हाकिम लुका जबला के लश्कर के बिल्कुल करीब आ गया। तक्रीबन पच्चीस या तीस हाथ का फास्ला बाकी था। हाकिम लुका जबला और उमूरिया के हाकिम को सलाम व दुआ पैश कर के इस्तेक्बाल करने के लिये बे करार था। कि दफ्अतन हज़रत खालिद और उन के साथी जबला के लश्कर से आगे बढ कर हाकिम लुका के पास पहोंच गए। हाकिम लुका ने यह गुमान किया कि यह बारह आदमी जबला के लश्करी हैं और मेरी ता'ज़ीम की खातिर मुकद्दम सलाम पैश करने आए हैं। लेहाज़ा उस ने कहा कि तुम को मसीह और सलीब सलामत और बाकी रखे। हज़रत खालिद ने जवाब देते हुए फरमाया कि सख्ती हो तुझ पर, हम सलीब के पूजारी नहीं बल्कि अस्हाबे **मुहम्मदे हबीब** सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम हैं और ज़ोर से कल्मए शहादत पढ कर फरमाया कि मेरा नाम खालिद बिन वलीद है। हज़रत खालिद का नाम सुन कर हाकिम लुका लरज़ गया। वह कुछ सोचे या करे इस से कब्ल हज़रत खालिद ने मिस्ले शैर उस पर जसत लगाई और उस को घोडे के ज़ीन से

खींच लिया और अपने काबू में इस तरह कर लिया कि अपनी तलवार उस की गर्दन पर रख दी। तमाम मुजाहिद भी करीब आ गये और तलवारें निकाल कर हाकिम लुका के सर पर तान दीं। कारेईने किराम ज़ैल में बना नक्शा ब–गौर मुलाहेज़ा फरमाअें :
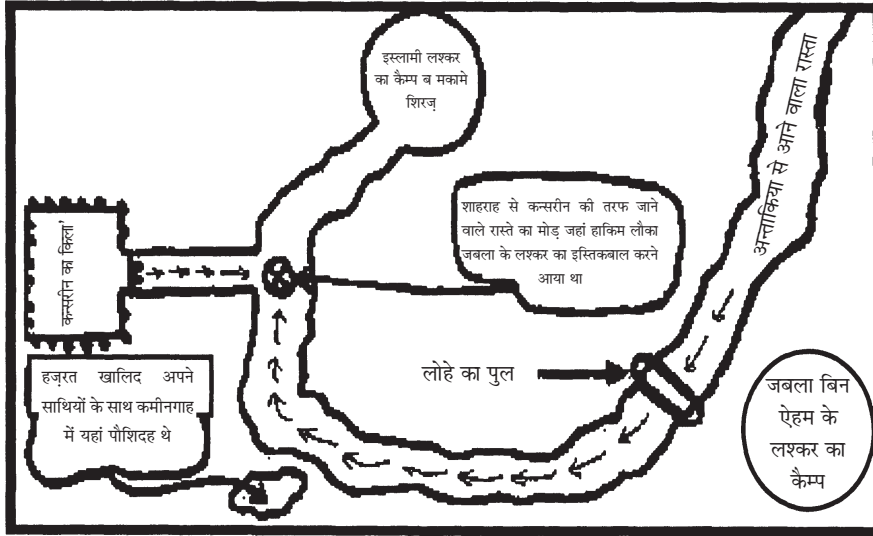
❀ बारह मुजाहिद दस हज़ार रूमी लश्कर के नर्गे में :-

कन्सरीन के किल्ले के सामने हज़रत खालिद बिन वलीद ने हाकिम लुका को अपने कब्ज़ा में ले लिया। पलक झपकने में यह सारा मुआमला वुकूअ में आ गया। हाकिम लुका के साथ जबला के लश्कर का इस्तेक्बाल करने आए हुए अह्ले कन्सरीन अपने हाकिम को आन की आन में हज़रत खालिद बिन वलीद की गिरफ्त में देख कर चौंक उठे। उधर से जबला और हाकिमे उमूरिया अपने साथियों के साथ दौड कर आए मगर कुछ न कर सके, क्यूंकि हाकिम लुका की गर्दन मुजाहिदों की तलवारों की धार पर थी। उज्लत में कदम उठाने के नतीजे में हाकिम लुका की जान का खतरा था। अह्ले कन्सरीन अपने हाकिम को मौत की आगोश में बे बसी के आलम में देख कर रोने और शौरो गुल करने लगे और कल्मए कुफ्र बुलन्द करने लगे। मुजाहिदों ने बुलन्द आवाज़ से कल्मए तौहीद का विर्द जारी रखा। सूरते हाल यह थी कि हाकिम लुका बारह मुजाहिदों के नर्गे में तलवारों की धार पर था और बारह

मुजाहेदीन दस हज़ार के रूमी लश्कर के मुहासरा में नैज़ों और तलवारों की नोक पर थे। अजीब कश्मकश का माहौल था।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने देखा कि रूमियों ने हम को चारों तरफ से घैर लिया है तो उन्हों ने हाकिम लुका की पकड मज़ीद मज़बूत की और उस को इस तरह काबू में कर लिया कि वह हिल भी नहीं सक्ता था। हज़रत खालिद ने अपने दोनों पाऊं के घुटने हाकिम लुका की पीठ पर टेक दिये और उस का सर अपनी गोद में ले लिया और हलक पर तलवार की धार इस तरह पैवस्त कर के रखी के हाकिम लुका ज़रा सी भी हरकत करे तो उस की गर्दन कट जाए। फिर हज़रत खालिद ने मुजाहिदों से फरमाया कि तुम मेरे इर्दगिर्द इस तरह दायरे में खडे हो जाओ कि तुम्हारी पीठ मेरी तरफ और सीना दुश्मनों की तरफ रहे। और हाथ में नैज़े ले कर इस तरह तान लो कि कोई करीब आने न पाए। तमाम मुजाहिदों ने हज़रत खालिद के हुक्म की ता'मील करते हुए हज़रत खालिद के इर्द गिर्द दायरा बना लिया। तमाम रूमी हाकिम लुका को छुडाने के लिये उछल कूद कर रहे थे मगर कुछ न कर सक्ते थे। लेहाज़ा उन्हों ने ज़ोर ज़ोर से चीखना और चिल्लाना शुरू किया ताकि मुजाहिदों पर रोअब और हैबत तारी हो। लैकिन इश्के रसूल के मतवाले और शम्ए रिसालत के परवाने किसी से डरने वाले न थे। बल्कि इस वक्त की हालत यह थी कि :

जिस को ललकार दे आता हो तो उलटा फिर जाए
जिस को चुम्कार ले हिर फिर के वह तेरा तेरा

(अज़ : इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

जब उमूरिया के हाकिम ने देखा कि हज़रत खालिद बिन वलीद कन्सरीन के हाकिम लुका के मालिक हो गए हैं। और वह उन के हाथ में कस–म–पूर्सी के आलम में है तो वह डरा कि कहीं हज़रत खालिद उस को मार डालने में जल्दी न कर बैठें। लेहाज़ा उस ने जबला से कहा कि ऐ सरदार ! यह अरब इन्सान हैं या जिन्नात ? सिर्फ बारह आदमियों ने हम को मज्बूरो बे–कस बना दिया है। और उन का आलम यह है कि सिर्फ बारह आदमी हमारे दस हज़ार के लश्कर के घैरे में होने के बा–वुजूद मुत्लक खौफ–ज़दा नहीं हैं। और हमारे साथी के मालिक हो गए हैं और हमारी जानिब भी नैज़े तान कर खडे हैं। लेहाज़ा तुम कोई जल्द बाज़ी मत करना, मुबादा हमारे साथी की जान ज़ाए' होगी। तुम हिकमते अमली से काम लो और उन अरबों से कहो कि वह हमारे साथी को छोड दें। अगर उन्हों ने हमारे साथी को छोड

दिया, तो हम उन की जान बख्शी का वा'दा करते हैं। ऐ सरदार ! तुम भी अरब हो। अरब होने के नाते उन को समझाने की कोशिश करो।

हाकिमे उमूरिया की गुज़ारिश पर जबला मुजाहिदों के करीब आया और पुकार कर कहा कि ऐ अरबी बिरादरो ! तुम अस्हाबे **मुहम्मद** (सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम) से हो या ताबेईन से ? हज़रत खालिद ने जवाब देते हुए फरमाया कि हम सब **हज़रत मुहम्मद** सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के सहाबा हैं। जबला ने पूछा कि क्या तुम उन के सरदार हो ? हज़रत खालिद ने फरमाया कि नहीं बल्कि उन का दीनी भाई हूं। हम मुतफर्रिक कबीलों के हैं, लैकिन अल्लाह तआला ने "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" कल्मा की ब-दौलत हमारे दिलों को एक और मुत्तफिक कर दिया है। जबला ने फिर पूछा कि तुम्हारा तआरुफ क्या है ? हज़रत खालिद ने फरमाया कि मैं खालिद बिन वलीद कबीला बनी मख्ज़ूम से हूं और मेरे दाऐं अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक हैं। इस तरह हज़रत खालिद ने अपने तमाम साथियों का तआरुफ कराया। फिर फरमाया कि ऐ जबला ! हमारी किल्लते ता'दाद की वजह से हम को हकीर न जान और अपनी कसरत पर गुरूर मत कर। तुम्हारा लश्करे जर्रार लडाई के मुआमले में मिस्ल उन हज़ार चिडयों के है कि जिन्हें एक शिकारी ब आसानी जाल में कैद कर लेता है। जबला ने कहा कि हम उन बुज़दिलों की तरह नहीं जिन्हों ने तुम्हारी हैबत की वजह से शिकस्त खाई है या जिज़्या दिया है। हम आखरी दम तक तुम से लडेंगे। हज़रत खालिद ने फरमाया कि तूं वही जबला बिन ऐहम है जो इस्लाम से फिर गया और हिदायत की राह छोड कर गुमराही की राह पर चल निकला है। अफ्सोस है तुझ पर कि तूने रौशनी को छोड कर तारीकी इख्तेयार की है।

अब जबला ने नर्मी इख्तेयार की और कहा कि ऐ बिरादर अरबी ! ज़ियादह गोई मत करो। मेरा साथी तुम्हारे काबू में होने की वजह से मैं तुम पर हम्ला नहीं करता। हमारा साथी हिरक्ल बादशाह का मुकर्रब है। तुम इसे मार न डालो इस लिये ही मैं ने हम्ला करने में तवक्कुफ किया है लेहाज़ा अब बातें न बनाओ और हमारे साथी को छोड दो ताकि मैं भी तुम को छोड दूं। हज़रत खालिद ने फरमाया कि इस मक्कार और फरैबी को हरगिज़ न छोडूंगा, बल्कि ज़रूर कत्ल करूंगा और मुझ को इस बात की कोई परवाह नहीं कि इस को मार डालने के बा'द तुम हमारे साथ क्या सुलूक करोगे। और तेरा यह कहना कि तुम हम पर नर्मी करते हो, सरासर गलत है। तू हम से अपने साथी को छोड देने की गुज़ारिश भी करता है और अपने लश्कर की कसरत से हम को डराने की कोशिश भी करता है। अगर तुम इन्साफ की

लडाई लडने का इरादा रखते हो तो तुम को मा'लूम है कि हम सिर्फ बारह आदमी हैं और तुम हज़ारों की ता'दाद में हो। एक एक कर के मुकाबले के लिये निकलो। हम हैं कितने ? सिर्फ बारह ! लेहाज़ा तुम एक के मुकाबले में एक की लडाई से हम बारह आदमी को मार डालो और अपने साथी को आसानी से छुडा लो। और अगर अल्लाह ने हम को गल्बा दिया तो हाकिम लुका से पहले तू जहन्नम में पहोंच जाएगा। अगर तुम में हिम्मत और गैरत है तो मर्दे मैदान बन कर एक, एक कर के मुकाबला में आओ।

एक के मुकाबला में एक की लडाई

हज़रत खालिद की एक एक कर के मुकाबला करने की दा'वते मुबारज़त सुन कर जबला हाकिम उमूरिया के पास वापस आया और हज़रत खालिद की चेलेन्ज से आगाह किया। हाकिमे उमूरिया इस तज्वीज़ पर रज़ा मन्द हो गया और बज़ाते खुद लडने के लिये मैदान में जाने के लिये आमादा हुवा, लैकिन जबला ने उस को रोका और एक रूमी शेहसवार शुजाअ को जाने का हुक्म दिया। मुजाहिदों की तरफ से हज़रत खालिद बिन वलीद ने निकलने का कस्द किया, लैकिन हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र ने उन को बाज़ रखते हुए फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! **कसम है हक्के रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की !** मेरे सिवा कोई शख्स उस के मुकाबले के लिये न निकले और मैं अल्लाह की राह में अपनी जान खर्च करूंगा। शायद मैं अपने वालिदे मोहतरम से जा मिलूं। हज़रत खालिद बिन वलीद ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र को इजाज़त दे दी। हज़रत अब्दुर्रहमान हाथ में लम्बा नैज़ा लिये घोडे पर सवार हो कर मैदान में आए और मुकाबिल तलब किया। जबला ने रूमी शेहसवार को मुकाबले में भेजा। हज़रत अब्दुर्रहमान ने एक ही गरदावे में उस को ज़मीन पर मुर्दा डाल दिया। फिर दूसरा रूमी सिपाही निकला उस को भी खाक व खून में मिला दिया। फिर तीसरा निकला लैकिन हज़रत अब्दुर्रहमान ने उस को वार करने का मौका' ही न दिया। उस के आते ही सुरअत से उस के सीने में नैज़ा पैवस्त कर के उस का काम तमाम कर दिया। फिर चौथा रूमी सिपाही निकला मगर इस्लामी लश्कर के शैर की एक ही ज़र्ब ने उसे भी कुश्ता ज़मीन पर गिरा दिया। फिर पांचवां गैज़ व गज़ब में भरा निकला और आते ही वार किया मगर हज़रत अब्दुर्रहमान ने उस का वार खाली फैर दिया। रूमी सिपाही दूसरा वार करने का मौका' ही न पा सका क्यूं कि हज़रत अब्दुर्रहमान ने नैज़ा उस के हलक के आरपार निकाल कर उसे वासिले जहन्नम कर दिया।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हुमा जैसे कमसिन नौ–जवान के हाथों पांच जंगजू रूमी सिपाही को मक्तूल देख कर जबला बिन ऐहम को तिल्मिलाहट लाहिक हूई। मुज़्तरिब और बे करार हो कर बज़ाते खुद मैदान में आ गया। उस ने थोडी दैर पहले हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बक्र को लडते देखा था और उन की जंगी महारत का अंदाज़ा लगा लिया था। लेहाज़ा मक्रो फरेब की चाल इख्तेयार की और आने के साथ हज़रत अब्दुर्रहमान की शुजाअत और जंगी महारत की ता'रीफ शुरू कर दी और फिर जंग के तअल्लुक से इधर उधर की बातें करने लगा ताकि मौका' पा कर वार कर दे। हज़रत अब्दुर्रहमान ने जबला से फरमाया कि ऐ जबला ! मैं तेरे दामे फरेब में फंसने वाला नहीं हूं। क्यूं कि **मैं हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के चचा के बेटे अली मुरतज़ा रदियल्लाहो तआला अन्हो का शागिर्द और ता'लीम याफ्ता हूं।** जबला ने कहा कि ऐ बेटे मैं तुम्हारे साथ मक्रो फरेब नहीं करना चाहता बल्कि मैं अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ कर के तुम्हें अपना बेटा बनाना चाहता हूं, ब–शर्ते तुम दीने नस्रानी इख्तेयार करो। मैं तुम्हें हिरक्ल बादशाह से खिल्अत व इन्आमात दिला कर और अपनी तरफ से कसीर माल ब–तौर बख्शिश और तोह्फा दे कर तुम्हें मालामाल कर दूंगा और तुम्हारी तमाम उम्र ऐश व इश्रत में बसर होगी। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र ने फरमाया कि मुझे तेरे और तेरे बादशाह के माल व दौलत की कतअन तमाअ नहीं :

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी

हज़रत अब्दुर्रहमान ने जबला से फरमाया कि सख्ती हो तुझ पर ! तूं मुझे ईमान व हिदायत से ज़लालत व गुमराही की तरफ बुलाता है ? बातें बनाना छोड और तलवार उठा कर आमादए लडाई हो, ताकि तलवार की ज़र्ब लगा कर तेरी मौत में जल्दी करूं और तेरी नाक को खाक आलूद करूं और तेरी मौत से अह्ले अरब को तेरे जैसे नापाक और सलीब के पूजारी का वुजूद खत्म कर के राहत पहुंचाउं। हज़रत अब्दुर्रहमान की ज़बान से इहानत आमेज़ गुफ्तगू सुन कर जबला तैश में आया और खश्मनाक हो कर नैज़े का वार किया। हज़रत अब्दुर्रहमान ने अपने घोडे को गरदावा दिया और वार चुका दिया। जबला ने फिर दूसरा वार किया उस को भी खाली फेरा। फिर हज़रत अब्दुर्रहमान ने नैज़े का वार किया जिस को जबला ने ढाल पर ले कर अपने को बचाया। दोनों में शिद्दत से नैज़ा ज़नी होती रही और दोनों ने

लडाई के जौहर दिखाए। लोग उन की लडाई की महारत देख कर तअज्जुब करते थे। नैज़ा ज़नी में मुकाबिल से कुछ फास्ला पर रह कर जंग करनी पडती है लेहाज़ा हज़रत अब्दुर्रहमान ने नैज़ा फैंक दिया और तलवार निकाल ली और जबला के करीब जा कर उस के नैज़े पर तलवार की कारी ज़र्ब लगा कर दो टुक्डे कर डाले। जबला ने कटा हुवा नैज़ा फैंक दिया और वह भी तलवार निकाल कर लडने लगा। दोनों में बहुत दैर तक शम्शीर ज़नी होती रही।

हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई बयान करते हैं कि हम तमाम मुजाहिद हज़रत अब्दुर्रहमान के इस्तेकलाल और सब्र पर तअज्जुब करते थे। क्यूं कि जबला से मुकाबला करने से पहले वह पांच रूमी सिपाहियों से लड चुके थे और अब जबला बिन ऐहम जैसे माहिरे जंग का मुकाबला कर रहे थे। दोनों की लडाई ने तूल पकडा था और हज़रत अब्दुल्लाह काफी थक चुके थे, मगर फिर भी जबला के मुकाबला में अडे हुए थे। दोनों एक दूसरे पर शिद्दत से वार करते थे। के अचानक हज़रत अब्दुर्रहमान ने एक ऐसा शदीद वार किया कि तलवार ने जबला की ढाल को काट डाला और तलवार जबला के खौद पर लगी और दोहरी हो गई। मगर फिर भी जबला की पैशानी पर ज़ख्म लगा और खून जारी हो गया। जबला खून देख कर बिफरा और अपनी जान पर आ कर लडने लगा और हज़रत अब्दुर्रहमान पर वार करने में काम्याब हो गया। जबला की तलवार हज़रत अब्दुर्रहमान की ज़िरह काट कर शाने पर लगी। तलवार ने गहरा ज़ख्म कर दिया और खून का फव्वारा जारी हो गया। मगर फिर भी वह मैदान में जमे रहे मगर खून जारी होने की वजह से उन का हाथ बेकार हो गया और तलवार ज़नी के काबिल न रहा। लेहाज़ा वह घोडा दौडा कर अपने साथियों में आ मिले। मुजाहिदों ने उन को घोडे से उतार कर जल्दी जल्दी उन के ज़ख्म पर कपडा बांध दिया ताकि खून बहना बन्द हो जाए। हज़रत अब्दुर्रहमान के शदीद ज़ख्मी होने की वजह से तमाम मुजाहिदों को सख्त रंज लाहिक हुवा।

हाकिम लुका के कत्ल से रूमी लश्कर में ज़ल्ज़ला :–

हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र को ज़ख्मी देखा और उन के मुबारक जिस्म से खून बहता देखा तो हज़रत खालिद की आंखों में खून उतर आया और आप गुस्सा में लाल हो गए। हज़रत अब्दुर्रहमान को पुकार कर कहा कि **ऐ बेटे सिद्दीके अक्बर के ! मैं जानता हूं कि जबला ने आप को तलवार से रंज और तक्लीफ पहुंचाई है। लैकिन कसम है आप के वालिदे माजिद के हक्क और सिद्क की ! मैं इन रूमियों को ऐसा रंज और दर्द पहुंचाउंगा के इन के कलेजे खून हो**

जाऐंगे । इन्हों ने तुम को ज़ख्मी कर के हम को जो सदमा पहुंचाया है इस से बडा सदमा में इन को पहुंचाउंगा । यह फरमा कर हज़रत खालिद ने कन्सरीन के हाकिम लुका की गर्दन काट कर ज़मीन पर फैंक दी । जबला और हाकिम उमूरिया ने देखा कि वाकई हज़रत खालिद ने हाकिम लुका को काट कर रख दिया है, तो उन की आंखों तले अंधेरा छा गया । लश्कर को पुकार कर कहा कि ऐ सलीब के परस्तारो ! हमारा मुअज़्ज़ज़ साथी कत्ल कर दिया गया है । इन अरबों पर टूट पडो और एक को भी ज़िन्दा मत जाने दो । चुनांचे रूमी लश्कर पूरे जौशो खरोश से मुजाहिदों पर टूट पडा । हज़रत खालिद ने अपने गुलाम हुमाम से फरमाया कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र शदीद ज़ख्मी होने की वजह से इस काबिल नहीं कि दुश्मनों के वार से अपना देफ़ाअ कर सकें । लेहाज़ा तुम उन की निगरानी करो और किसी को भी इन के करीब मत आने दो । कैसा नाज़ुक मरहला था ? लडने वाले बारह मुजाहिदों में से एक ज़ख्मी और दूसरा निगरानी पर मामूर हो गया । अब लडने वाले सिर्फ दस बचे और दुश्मनों की ता'दाद दस हज़ार की । या'नी **एक हज़ार नसरानी से एक मोमिन की टक्कर थी** । हज़ारों रूमी उमडते हुए सैलाब की तरह मुठ्ठी भर मुजाहिदों को तिन्के की तरह बहा ले जाने आगे बढे मगर इस्लाम के कफन बरदोश मुजाहिद आहनी चट्टान की तरह पैकरे सब्रो इस्तिक्लाल बन कर जमे रहे । हज़रत खालिद ने तने तन्हा आगे बढ कर रूमी लश्कर के हम्ले को रोक दिया और नैज़ा ज़नी के वह जौहर दिखाए कि रूमी लश्कर आगे बढने के बजाए पीछे हटने लगा । हज़रत खालिद ने मुजाहिदों को पुकार कर फरमाया कि ऐ हामिलाने कुरआन ! दुश्मनों की सख्ती पर सब्रो इस्तिक्लाल से काम लो । इन सलीब के पूजारियों की कसरत से मुत्लक खौफ न खाओ । जब हम मौत से नहीं डरते तो इन गबरों से क्या डरना ? हम सब की एक ही ख्वाहिश है कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की राह में अपनी जान कुरबान कर दें । मैं ने अपनी जान को अल्लाह की राह में कैद की है और अपने आप को इस मआरज़-ए हलाकत में इस लिये डाला है कि शायद मुझे शहादत नसीब हो । और जान लो कि जन्नत की तरफ राह खुल गई है । हम दारुल फना से ऐसे मकाम की तरफ जा रहे हैं कि जहां का रहने वाला न कभी मरता है और न कभी बुढ्ढा होता है ।

हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई रिवायत फरमाते हैं कि हम दस (१०) सहाबा सुब्ह से दो-पहर तक रूमियों का मुकाबला करते रहे । मुजाहिदों ने रूमियों की लाशों के ढैर लगा दिये, लैकिन धूप की शिद्दत, रूमी हम्ले की शिद्दत, मुसल्सल कत्ल व किताल और प्यास की शिद्दत से मुजाहिद परेशान हाल थे । उन की ताकत जवाब दे चुकी थी । ऐसा लगता था कि अब थोडी दैर में तमाम मुजाहिदों का नामो निशान मिट जाएगा लैकिन :

बे निशानों का निशां मिटता नहीं
मिटते मिटते नाम हो ही जाएगा

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद बिन वलीद शैरे बबर की तरह रूमी गीदडों से नबर्द आज़मा थे, लैकिन वह भी थक चुके थे । हज़रत राफेअ बिन उमैरा ने हज़रत खालिद से कहा कि ऐ अबू सुलैमान ! मुझे लगता है शायद हम सब की कज़ा का वक्त आ गया है । अब हज़रत खालिद को भी अपनी और अपने साथियों की शहादत का यकीन हो गया था । और इस की वजह भी इन्हें मा'लूम हो गई थी । वह वजह क्या थी ? हज़रत खालिद बिन वलीद ने हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई से इस की वजह बयान फरमाते हुए जो जवाब दिया उस जवाब को अर्बाबे सैर व तवारीख हज़रत अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु की ज़बानी समाअत फरमाऐं :

"राफेअ बिन उमैरा ने बयान किया है कि जब देखा मैं ने यह हाल कहा मैं ने खालिद बिन अल-वलीद से कि ऐ अबा सुलैमान ! आई हम पर कज़ा पस कहा उन्हों ने के कसम है खुदा की सच कहा तुम ने ऐ बेटे उमैरा के, इस वास्ते कि में भूल गया अपनी कुलाह मुबारक को और नहीं साथ लाया इस को और होती थी बडी बरकत उस में हालते शिद्दत और सख्ती में और नहीं भूला इस को मगर ब-सबब कज़ाए मौत के ।"

(हवाला : - फुतूहुश्शाम ,अज़् अल्लामा वाकदी ,सफहा : 166)

नाज़िरीने किराम ! फुतूहुश्शाम, की मुन्दरजा बाला इबारत को ब-गौर मुतालआ फरमाऐं । इस से मुन्दरजा ज़ैल उमूर साबित होंगे ।

(1) हज़रत खालिद बिन वलीद ने भी अपनी कज़ा का यकीन कर लिया था और इस की वजह यह बताई के मैं अपनी टोपी भूल आया हूं इस सबब से ही मौत हमारे सरों पर मंडला रही है । जिस का मत्लब यह हुवा के टोपी न होने की वजह से ही हम मुसीबत में गिरफ्तार हुए हैं । अगर वह मुबारक टोपी हमारे साथ होती तो हम पर बला और मुसीबत न आती ।

(2) हज़रत खालिद का यह अकीदा था कि वह टोपी हमारे लिये **दाफेउल बला वल वबा वल अलम** है ।

(3) हज़रत खालिद बिन वलीद का मज़ीद यह भी अकीदा था कि यह तजर्बे से साबित हो चुका है कि मुसीबत और आफत के वक्त हमेंशा इस मुबारक टोपी की बरकत से राहत और कुशाइश हासिल होती आई है।

(4) हज़रत खालिद का यह फरमाना के मैं वह टोपी भूल गया हूं लेहाज़ा हमारी कज़ा आएगी या'नी अगर वह टोपी मैं न भूलता और अपने साथ लाता तो हमारी मौत वाकेअ न होती। जिस का मत्लब यह हुवा कि उस टोपी में ऐसी कुव्वत और ताकत थी कि मौत को भी टाल दे।

(5) मज़कूरा तमाम बातें हज़रत खालिद बिन वलीद ने कयास और गुमान के तौर पर नहीं कहीं बल्कि यकीन कामिल के साथ कही हैं और इसी लिये उन्हों ने अपनी गुफ्तगू को "खुदा की कसम" से मुअक्कद किया और मुबारक टोपी की बरकत और तसर्रुफ का यकीन के दर्जे में ए'तेमाद किया।

- इस मुबारक टोपी में ऐसी कौन सी खुसूसियत थी ?
- इस टोपी में कौन सी चीज़ रखी थी ?
- हज़रत खालिद के नज़दीक इस टोपी की इतनी अहमियत क्यूं थी ?

इन तमाम सवालात का तफ्सीली जवाब अल्लामा वाकदी की किताब के हवाले से पैश कर के इस के ज़िम्न में मुफस्सल तबसेरा हम आइन्दा सफ्हात में करेंगे।

जब हज़रत खालिद के साथियों को पता चला कि हज़रत खालिद अपनी मुबारक टोपी भूल आए हैं तो यह मुआमला उन पर दुश्वार गुज़रा। उस वक्त मुजाहेदीन बहुत ही मुसीबत व परेशानी में थे, बल्कि मौत से दो चार हो रहे थे। प्यास से उन के लब खुश्क हो गए। हलक सूख कर कांटा और बाज़ू शल हो गए। हाथ में तलवार और ढाल थामना भी दुश्वार हो गया। उन के घोडे भी पसीने में शराबोर थे और घोडों के कदम लडखडा रहे थे। हज़ारों दरिन्दों के दरमियान बारह मुजाहेदीने इस्लाम ज़िन्दगी और मौत की कश्मकश में थे। लैकिन वह मायूस न थे। बल्कि ज़बाने हाल से यही कहते थे :

रहमतुल लिल आलमीन आफत में हूं कैसी करूं
मेरे मौला मैं तो इस दिल से बला में घिर गया

(अज़ :। इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

शम्ए रिसालत सल्लल्लाहो तआला अलेहे व सल्लम के परवाने तहफ्फुज़े नामूसे रिसालत की खातिर अपना सब कुछ दाव पर लगाए हुए बडी जां फेशानी से रूमियों को तहे तैग कर रहे थे। दफ्अतन हातिफे गैबी ने इन अल्फाज़ में पुकारा :

"خُذِلَ الاِمنُ وَنُصِرَ الْخَائِفُ يَا حَمَلَةَ الْقُرآن جَاءَكُمُ الْفَرَحُ
مِنَ الرَّحْمٰنِ وَ نَصَرَكُمْ عَلٰى عَبَدَةِ الصُّلْبَانِ"

तर्जुमा : "ख्वार हुवा बे डर (या'नी रूमी) और मदद दिया गया डरने वाला (या'नी मोमिन) ऐ कुरआन के उठाने वालो ! परवर्दगार की तरफ से कुशूद कारी आई तुम्हारे लिये और तुम सलीब के पूजारियों पर मदद दिये गए।"

थोडी ही दैर में मुजाहिदों ने देखा कि इस्लामी लश्कर के सिपाह सालारे आज़म हजरत अबू उबैदा बिन जर्राह इस्लामी लश्कर के साथ आ पहुंचे हैं। हज़रत खालिद बिन वलीद महवे हैरत थे कि हज़रत अबू उबैदा को हमारे हाल से किस ने आगाह कर दिया ? हम बारह अश्खास मौजूद हैं, हम में से कोई शख्स यहां से भाग कर हज़रत अबू उबैदा को इत्तेलाअ देने नहीं गया। **फिर भी वह हमारी मदद को क्यूं आए ? किस ने उन को इत्तेलाअ दी ?**

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के ज़रीए हज़रत अबू उबैदा को हज़रत खालिद की मुसीबत की खबर

गुज़िश्ता शब हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के साथ शिरज़ के इस्लामी कैम्प से जब रवाना हुए थे, तो उन को रवाना करने के बा'द हज़रत अबू उबैदा अपने खैमे में आ कर सो गए। जब रात का आखरी हिस्सा हुवा तो हज़रत अबू उबैदा नींद से चौंक कर उठ गए और घबराहट के आलम में अपने खैमे से बाहर आए और इस्लामी लश्कर को ज़ोर ज़ोर से पुकार कर फरमा :

"اَلنَّفِيْرُ اَلنَّفِيْرُ فَقَدْ اُحِيْطَ بِفُرْسَانِ الْمُوَحِّدِيْنَ"

तर्जुमा : "चलो तुम, चलो तुम, बेशक मुवह्हिद मुजाहेदीन घैर लिये गए हैं।"

हज़रत अबू उबैदा को इस तरह बे-करारी के आलम में आवाज़ लगाते देख कर इस्लामी लश्कर में बेचैनी की लहर दौड गई। मुजाहिदों ने पूछा कि ऐ सरदार क्या हाल है ? आप इतने मुज़्तरिब क्यूं हैं ? हज़रत अबू उबैदा ने जो जवाब दिया वह हज़रत अल्लामा वाकदी ने यूं बयान फरमाया :

''हज़रत अबी मुस्लिम हज़रमी रिवायत करते हैं कि था मैं अबू उबैदा बिन जर्राह के साथ हर लडाई अजनादीन वगैरा में और मौजूद था में उन के साथ कन्सरीन और हल्ब में और नहीं देखी में ने अपने मुआमलाते जेहाद में मगर बेहतरी और मदद और गल्बा। पस इसी हाल में के हम ब-मकाम शिरज़ थे और अबू उबैदा एक रात अपने खैमे में थे कि दफ्अतन निकले वह अपने खैमे से मुसलमानों को आवाज़ देते हुए और वह पुकारते थे **"اَلنَّفِيْرُ اَلنَّفِيْرُ فَقَدْ اُحِيْطَ بِفُرْسَانِ الْمُوَحِّدِيْنَ"** पस दौडे हम सब उन की तरफ हर जगह और मकान से और कहा हम ने के क्या हाल है तुम्हारा ऐ सरदार ! उन्हों ने कहा कि मैं उस वक्त सोता था कि जगा दिया मुझ को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने और झिडका और दुरुश्ती से फरमाया मुझ को :-

"يَا ابْنَ الْجَرَّاح أَتَنَامُ عَنْ نُصْرَةِ الْقَوْمِ الْكِرَام، فَقُمْ وَ الْحَقْ بِخَالِدْ فَقَدْ
اَحَاطَ بِهِ اللِّئَامُ فَاِنَّكَ تَلْحَقُ بِهِ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى بِمَشِيئَةِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ"

(हवाला : - फुतूहुश्शाम ,अज़ : - अल्लामा वाकदी, सफहा : 166)

तर्जुमा : ''ऐ बेटे जर्राह के आया तुम सोए हुए हो और कौम बुज़ुर्ग की मदद ही से गाफिल हो, उठो और जा मिलो खालिद से, पस घेर लिया है उन को नाकस (ना-लाइक, कमीना) **कौम ने और तुम पहोंच जाओगे उन के पास अगर चाहा अल्लाह तआला ने परवर्दगार की मशीयत से'' (हवाला :- हाशिया फुतूहुश्शाम, सफहा : 166)**

मुन्दरजा बाला इबारत के ज़िम्न में हम कारेईने किराम की खास तवज्जोह चाहते हैं :

(1) हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के हमराह रात के वक्त ब-मकाम शिरज़ के इस्लामी कैम्प से रवाना हो कर रात ही में लोहे के पुल के करीब

कमीन गाह में छुप गए थे। सुब्ह के वक्त जबला का लश्कर कमीन गाह के करीब से गुज़रा और आप अपने साथियों के हमराह उस में शामिल हो गए और कन्सरीन की तरफ जाने वाले रास्ते के मोड पर हाकिम लुका को कत्ल कर डाला। हाकिम लुका को कत्ल करने की वजह से रूमी लश्कर ने हज़रत खालिद और उन के साथियों पर हम्ला किया और सुब्ह से ले कर दो-पहर तक जंग होती रही। यह तमाम हवादिस दिन में वुकूअ पज़ीर हुए थे। रात के वक्त रूमियों से न लडाई हूई और न ही रूमियों ने हज़रत खालिद और उन के साथियों को नर्गे में लिया था।

लैकिन हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को रात ही में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने मुत्तलेअ फरमा दिया कि हज़रत खालिद को दुश्मनों ने घैर लिया है और तुम उन की मदद को जल्दी पहुंचो। लेहाज़ा हज़रत अबू उबैदा अलस्सुब्ह शिरज़ से इस्लामी लश्कर ले कर रवाना हुए और दो-पहर के वक्त कन्सरीन के मा'रके पर आ पहुंचे। इस से एक बात का सुबूत मिलता है कि कन्सरीन में दिन के वक्त जो मुआमला होने वाला था इस की इत्तेलाअ शहनशाहे कौनेन, आलिमे मा कान व मा यकून, हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को रात में ही मिल गई थी। या'नी मदीना तय्यबह में गुम्बदे खज़रा की मुकद्दस आराम गाह से आइन्दा कल वुकूअ पज़ीर होने वाला मुआमला रात ही में मुलाहेज़ा फरमा लिया और रात ही में हज़रत अबू उबैदा को मुत्तलेअ फरमा दिया ताकि वह अलस्सुब्ह रवाना हो कर ऐन वक्त पर मदद करने पहोंच जाऐं। इसी का नाम ''इल्मे गैब'' है अल्लाह तआला ने अपने महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को अपनी अताए खास से काएनात के तमाम उलूम अता फरमाए थे। वह अता सिर्फ ज़ाहेरी हयात तक ही मुन्हसिर न थी, बल्कि दुनिया से पर्दा फरमाने के बा'द भी महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम का तसर्रुफ व इत्तिला अलल गैब अतम व अकमलुश्शान से बर-करार और रूनुमा हो रहा है।

(2) हज़रत अबू उबैदा ने रात के आखरी हिस्सा में इस्लामी लश्कर को हज़रत खालिद पर नाज़िल मुसीबत की जो इत्तेलाअ दी थी और लोगों के पूछने पर फरमाया :

"मैं उस वक्त सोया हुवा था कि जगा दिया मुझ को रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने और मुझ को झिडका और सख्ती से फरमाया कि ऐ बेटे जर्राह के! आया सोए हो और कौम बुजुर्ग की मदद से गाफिल हो, उठो और जा मिलो खालिद से। पस तह्कीक के घैर लिया है उन को ना-हन्जार कौम ने।"

मुन्दरजा इबारत में कहीं भी यह ज़िक्र नहीं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने ख्वाब में फरमाया। अवराके साबिका में "जंगे दमिश्क" के ज़िम्न में मज़्कूर हुवा कि हुज़ूरे अक्दस ने हज़रत अबू उबैदा को ख्वाब में फतहे दमिश्क की खुश्खबरी दी। अल्लामा वाकदी की किताब फुतूहुश्शाम की इबारत हस्बे ज़ैल है :

"الليلة تفتح المدينة انشاء الله تعالىٰ"

(हवाला : - फुतूहुश्शाम ,अज़ : - अल्लामा वाकदी, सफहा : 108)

फतहे दमिश्क के तअल्लुक से हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हज़रत अबू उबैदा को ख्वाब में ही इत्तेलाअ दी थी। लैकिन ब-मकाम कन्सरीन हज़रत खालिद के मुतअल्लिक जो इत्तेलाअ दी थी वह ख्वाब के ज़रीए न थी बल्कि **हयातुन नबी, मालिको मुख्तार आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम** अपने नूरानी जिस्मे अक्दस के साथ तशरीफ लाए थे और हज़रत अबू उबैदा को जगाया था। फुतूहुश्शाम, सफहा : 166 की जो इबारत हम ने हवाला में पैश की है उस में कहीं भी ख्वाब का ज़िक्र नहीं अलबत्ता यह अल्फाज़ ज़रूर हैं कि : -

"**हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि में इस वक्त सोया हुवा था कि जगाया मुझ को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने और मुझ को झिडका और दुरुश्ती से फरमाया।**" (हवाला फुतूहुश्शाम अज़ अल्लामा वाकदी सफहा :166)

मुन्दरजा बाला इबारत को ब-गौर मुलाहेज़ा फरमाऐं इस इबारत में साफ लिखा है कि "**जगा दिया मुझ को**" या'नी हज़रत अबू उबैदा सोए हुए थे। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने उन को जगा दिया। और किसी को जगाने के लिये या तो आवाज़ देनी पडती है या झिन्झोडना पडता है और दोनों सूरतों में जगाने का फे'ल करने वाले फाइल का मौजूद होना लाज़िमी है। जब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हज़रत अबू उबैदा को नींद से बेदार करने के लिये जगाया तब यकीनन हुज़ूर सल्लल्लाहो

तआला अलैहे व सल्लम हज़रत अबू उबैदा के खैमे में मौजूद थे। मदीना मुनव्वरा से मुल्के शाम अपने जिस्म अक्दस के साथ तशरीफ लाना "तसर्रुफ" और "इख्तेयार" की वजह से था और अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे आ'ज़म को तमाम इख्तियारात व तसर्रुफात अता फरमाए थे और कौनेन का मालिक व मुख्तार बनाया था :

वही नूरे हक्क वही ज़िल्ले रब है उन्ही से सब है उन्हीं का सब
नहीं उन की मिल्क में आस्मां कि ज़मीं नहीं कि ज़मां नहीं

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

(3) अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे अकरम व आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को इतने गैबों का इल्म अता फरमाया था कि जिन का शुमार अता फरमाने वाला रब ही जानता है। मिन-जुम्ला उन उलूमे गैबिया में से तअय्युने वक्त का इल्म भी है या'नी किस वक्त क्या मुआमला पैश आएगा ? **हुज़ूरे अक्दस** सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को मा'लूम था कि दो-पहर के वक्त हज़रत खालिद और उन के साथियों पर मुसीबत आएगी और वह रूमियों के दरमियान घैर लिये जाऐंगे और लडते लडते ऐसे खस्ता हाल हो जाऐंगे के उन के लिये मदद का पहुंचना ज़रूरी हो जाएगा। लेहाज़ा रात ही में हज़रत अबू उबैदा को रवाना होने का हुक्म फरमा दिया। अगर ऐन लडाई के वक्त हज़रत अबू उबैदा को हुक्म फरमाते तो शिरज़ से कन्सरीन तक की मुसाफत तय करने में वक्त ज़ाए होता और हज़रत अबू उबैदा ऐन वक्त पर न पहोंच सक्ते बल्कि शाम के वक्त पहुंचते।

अल-हासिल !

- हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को अपने उम्मती के अहवाल की खबर है और गैब का इल्म हासिल है।
- हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम बा-हयात हैं और अपने जिस्म अक्दस के साथ जहां भी चाहें तशरीफ ले जाने का इख्तेयार रखते हैं।
- अल्लाह तआला ने अपने महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को तसर्रुफ व इख्तेयार अता फरमाया है।

लैकिन ! अफ्सोस के दौरे-हाज़िर के मुनाफिकीन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के इल्मे गैब का इन्कार करते हैं बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के लिये इल्मे गैब का अकीदा रखना शिर्क कहते हैं। इलावा अज़ीं हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को अपने जैसा बशर मान कर तसर्रुफ और इख्तेयार का भी इन्कार करते हैं। नीज़ हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की हयात का भी इन्कार करते हुए यहां तक कहते हैं और लिखते हैं कि मआज़ल्लाह मर कर मट्टी में मिल गए। दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन के अकाबिर और अइम्मा की किताबों के कुछ इक्तिबासात ज़ैल में दर्ज हैं, ताकि नाज़िरीने किराम उन के अकाइदे बातिला से आगाह और मुतनब्बेह हों :

- वहाबी, देवबन्दी, गैर मुकल्लिद और तब्लीगी जमाअत के इमामुल अव्वल फिल हिन्द, मौलवी इस्माईल देहल्वी साहब ने अपनी रुसवाए ज़माना किताब में लिखा है :

"**किसी नबी ,वली या इमाम व शहीद की जनाब में हरगिज़ यह अकीदा न रखे कि वह गैब की बात जानते हैं बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के बारे में भी यह अकीदा न रखे और न उन की ता'रीफ में ऐसी बात कहे।**" (हवाला :- तक्वीयतुल ईमान, मुसन्निफ मौलवी इस्माईल देहल्वी, नाशिर :- दारुस्सल्फिया, बम्बई, सफ्हा : 47)

- वहाबी तब्लीगी जमाअत के इमाम रब्बानी मौलवी रशीद अहमद गंगोही साहब लिखते हैं :

"**हज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम को इल्मे गैब न था। न कभी इस का दा'वा किया और कलामुल्लाह शरीफ और बहुत सी अहादीस में मौजूद है कि आप आलिमुल गैब न थे और यह अकीदा रखना कि आप को इल्मे गैब था, सरीह शिर्क है।**" (हवाला :- फतावा रशीदिया, (कामिल), नाशिर :- मक्तबा थानवी, देवबन्द, सफ्हा : 103)

- इमामुल मुनाफिकीन, मौलवी इस्माईल देहल्वी साहब लिखते हैं :

"**और जिस का नाम मुहम्मद या अली है वह किसी चीज़ का मुख्तार**

नहीं। ऐसा शख्स कि उस का नाम मुहम्मद या अली हो और उस के इख्तेयार में दुनिया के सब कारोबार हों, ऐसा हकीकत में कोई शख्स नहीं बल्कि महज़ अपना ख्याल है। इस किस्म के ख्याल बांधने का अल्लाह ने तो हुक्म नहीं दिया" (हवाला : तक्वीयतुल ईमान, नाशिर : दारुस्सल्फिया, बम्बई, सफ्हा : 70)

दौरे-हाज़िर के मुनाफिकीन के मुन्दरजा बाला अकाइद को मीज़ाने अद्ल के एक पल्ले में रखें और दूसरे पल्ले में मुकद्दस सहाबए किराम के पाकीज़ा ए'तेकाद रखें और फिर फैसला करें कि दौरे-हाज़िर के मुनाफिकीन के अकाइद सहाबए किराम के ए'तेकाद से कितने मुतज़ाद हैं।

❀ अगर हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के लिये इल्मे गैब का अकीदा रखना शिर्क है, तो क्या हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह जैसे साहिबे अशरए मोबश्शरह और जलीलुल मर्तबत सहाबीए रसूल को इस बुन्यादी अकीदे की मा'लूमात न थी कि हुज़ूर के बताने पर शिरज़ से कन्सरीन की तरफ इस्लामी लश्कर ले कर हज़रत खालिद बिन वलीद की कुमुक करने चल पडे ? उस वक्त इस्लामी लश्कर में अकाबिर सहाबए किराम की एक जमाअत मौजूद थी। अगर हुज़ूर के लिये इल्मे गैब और तसर्रुफ का अकीदा शिर्क होता तो सहाबए किराम हज़रत अबू उबैदा को रोकते कि हज़रत खालिद बिन वलीद का ब-मकाम कन्सरीन इब्तिलाए मुसीबत होने का हादिसा हमारे लिये गैब है और गैब का इल्म अल्लाह के सिवा किसी को नहीं। लेहाज़ा इस इत्तेलाअ पर शिरज़ से कन्सरीन तक इस्लामी लश्कर को ले कर जाना मुनासिब नहीं और शिर्क पर मुश्तमिल फासिद ए'तेकाद पर ए'तेमाद करना अज़ रूए शरआ रवा भी नहीं। लैकिन किसी ने भी ए'तराज़ नहीं किया बल्कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने जो गैब की खबर दी इस को सौ फीसद हक्क तस्लीम करते हुए सहाबए किराम की मुकद्दस जमाअत इस्लामी लश्कर के साथ हज़रत खालिद की मदद करने ब-उज्लत रवाना हूई। सहाबए किराम का पुख्ता अकीदा था कि अल्लाह तबारक व तआला ने अपने **महबूबे आ'ज़म** सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को उन की ज़ाहेरी हयात में और दुनिया से पर्दा फरमाने के बा'द भी मुगीबात पर मुत्तलेअ फरमाया है। बल्कि अल्लाह तआला ने अपने महबूबे अकरम को ऐसा तसर्रुफ और इख्तेयार अता फरमाया है कि वह अपने हर उम्मती के तमाम अहवाल से बा-खबर हैं। कौन मुसीबत में मुब्तला है और कौन मदद का ख्वास्तगार है ? इन तमाम मुआमलातो अहवाल से अल्लाह के महबूबे आ'ज़म मुत्तलेअ और बा-खबर हैं :

फर्याद उम्मती जो करे हाले ज़ार में
मुम्किन नहीं कि खैरे बशर को खबर न हो
और
वल्लाह वह सुन लेंगे फर्याद को पहुंचेंगे
इत्ना भी तो हो कोई जो आह करे दिल से

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

लेहाज़ा सहाबए किराम ने हज़रत अबू उबैदा की दी हूई इत्तेलाअ पर कोई ए'तराज़ और चूं व चरा नहीं की, बल्कि यकीन कर लिया कि हज़रत खालिद बिन वलीद और उन के साथी ज़रूर आफत व मुसीबत में हैं।

अल-किस्सा ! हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर को हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के तवस्सुत से हज़रत खालिद और उन के साथियों के इब्तिलाए मुसीबत होने की खबर सुनाई, तो तमाम मुजाहिद बे-करार हो गए और सब के सब अपने हथियारों की तरफ दौडे और ब-उज्लत मुसल्लह हो कर अपने घोडों पर सवार हो गए। जल्दी की वजह से बा'ज़ अपने घोडों पर ज़ीन भी न कस सके और हज़रत अबू उबैदा के हमराह हज़रत खालिद बिन वलीद की जानिब रवाना हो गए।

हज़रत खालिद की ज़ौजा आप को टोपी पहुंचाने गईं :-

मुजाहेदीने इस्लाम के घोडे उडने वाली चिडयों के मानिन्द छूटे। और ऐसा मेह्सूस हो रहा था कि घोडे ज़मीन पर दौड नहीं रहे बल्कि हुवा में उडते हुए जा रहे हैं। हज़रत अबू उबैदा सब से आगे अपना घोडा दौडा रहे थे और जल्द अज़ जल्द हज़रत खालिद तक पहुंचने के ख्वाहां थे। हज़रत अबू उबैदा ने देखा कि एक सवार उन से भी तेज़ रफ्तारी से जा रहा था। हज़रत अबू उबैदा उस सवार की सुरअत और घोडा कूदा कर दौडाने की महारत देख कर महवे हैरत थे। हज़रत अबू उबैदा ने अपने साथियों को हुक्म दिया कि उस सवार से जा मिलो और मा'लूम करो कि वह कौन है ? हज़रत अबू उबैदा रिवायत फरमाते हैं कि उस सवार के मुतअल्लिक मैं ने गुमान किया कि शायद वह सवार कोई फरिश्ता है जिस को अल्लाह तआला ने हमारे लश्कर की रहबरी के लिये आगे भेजा है। वह सवार अपनी बर्क रफ्तारी से बराबर जा रहा था। उस को पकडना और उस से सब्कत करना ना-मुम्किन था।

लेहाज़ा हज़रत अबू उबैदा ने अपने घोडे को एडी मार कर खूब तेज़ भगाया मगर उस सवार से सब्कत न कर सके। थोडा फास्ला रह गया तो हज़रत अबू उबैदा ने ज़ोर से पुकारा कि ऐ सवार ! अल्लाह तुझ पर रहम करे, नर्मी इख्तेयार कर और ठहर जा। उस सवार के कान में आवाज़ पहोंची तो वह पहचान गया कि यह आवाज़ तो जैशे इस्लाम के सरदार की है, लेहाज़ा वह रुक गया।

हज़रत अबू उबैदा जब उस सवार के करीब गए, तो महवे हैरत हो गए क्यूं कि वह सवार कोई फरिश्ता न था बल्कि एक औरत थी। और वह हज़रत खालिद बिन वलीद की जौज़ाए मोहतरमा हज़रत उम्मे तमीम थीं। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ उम्मे तमीम ! किस चीज़ ने तुम को इस कद्र तेज़ रफ्तारी से इस्लामी लश्कर के आगे चलने पर बर-अंगेख्ता किया है ? हज़रत उम्मे तमीम का जवाब ऐसा ईमान अफ्रोज़ है कि जिस को सुन कर कारेईने किराम का ईमान ताज़ा हो जाएगा और दिल में अज़्मत व मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के ऐसे शादाब फूल खिल उठेंगे, जिस की महक से मशामे जां मुअत्तर हो जाएगी।

हज़रत उम्मे तमीम का जवाब हज़रत अल्लामा वाकदी की ज़बानी सुनिये :

''पस जब अबू उबैदा बिन जर्राह ने पहचाना उन को कहा कि ऐ उम्मे तमीम क्या चीज़ बाइस तुम्हारे चलने की हूई ? पस कहा इन्हों ने के ऐ सरदार ! जब सुना मैं ने इस बात को कि खालिद बिन अल-वलीद को दुश्मनों ने घैर लिया है। पस मैं ने अपने मैं कहा कि खालिद बिन अल-वलीद कभी पस्त और मग्लूब न होंगे, हालां कि गैसूए मुबारक मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व आलेहि व सल्लम के उन के पास हैं और जिस वक्त फिरा मुझ से ख्याल उन का पस देखा मैं ने ब-जानिब कुलाह के जिस में मूए मुबारक थे कि भूल गए खालिद बिन वलीद इस को और ब-उज्लत चली हूं उन की तरफ। पस कहा अबू उबैदा बिन जर्राह ने कि वास्ते अल्लाह के है यह काम तुम्हारा ऐ उम्मे तमीम ! चलो तुम अल्लाह तआला की बरकत और मदद पर।''

(हवाला :- ''फुतूहुश्शाम'' अज़ अल्लामा वाकदी, सफहा : 167)

अवराके साबिका में हम ने हज़रत खालिद बिन वलीद की मुबारक टोपी (कुलाह) का ज़िक्र किया है। **इसी टोपी का तज़केरा यहां हो रहा है। इस टोपी में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के गैसूए अक्दस थे।** हज़रत खालिद बिन वलीद का यह अकीदा था कि प्यारे आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के मुकद्दस गैसूओं के सद्के और तुफैल में मुझे हर लडाई में काम्याबी हासिल हूई है। और मैं महफूज़ व सलामत रहा हूं, लैकिन कन्सरीन के मा'रके में जब उन को याद आया कि मुकद्दस गैसूओं वाली टोपी मैं भूल आया हूं तो उन को अपनी शहादत का यकीन हो गया। क्यूं कि जिस मुकद्दस गैसूओं की ब-दौलत मुझ पर रहमत व नुस्रते इलाही की बारिश नाज़िल होती थी वह मुकद्दस गैसूओं वाली टोपी आज मेरे साथ नहीं। उन मुकद्दस गैसूओं की बरकत से ही मुझ पर हमेंशा रहमते खुदावन्दी की घटा छाया करती है :

सूखे धानों पे हमारे भी करम हो जाए,
छाए रहमत की घटा बन के तुम्हारे गैसू ।

(अज़ : - इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद बिन वलीद की जौज़ाए मोहतरमा हज़रत उम्मे तमीम का गैसूए मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के साथ कैसा पुख्ता और रासिख अकीदा था कि जब इन्हों ने सुना कि उन के शौहर हज़रत खालिद बिन अल-वलीद को दुश्मनों ने घैर लिया है, तो वह मुत्लक फिक्र मन्द न हूईं बल्कि मुत्मइन रहीं। और कामिल यकीन के साथ कहा कि खालिद बिन वलीद को कुछ नहीं होगा। उन का बाल बेका न होगा क्यूं कि उन के पास मुस्तफा जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के बाल मुबारक हैं। लैकिन जब उन को पता चला कि मुकद्दस गैसूओं वाली टोपी हज़रत खालिद भूल गए हैं तो बेचैनी और इज़्तिराब के आलम में टोपी ले कर तेज़ रफ्तार घोडे पर हज़रत खालिद की तरफ भागीं। क्यूं ? इस लिये कि उन का पुख्ता अकीदा था कि इस मुकद्दस गैसू के सदके में मेरे सुहाग की बका है। इन्हीं मुकद्दस गैसूओं के तुफैल मेरे खाविन्द बकैदे हयात हैं। लेहाज़ा वह अपने सुहाग की हिफाज़त की गर्ज़ से टोपी पहुंचाने जा रही थीं। बल्कि यूं कहना भी मुनासिब है कि **वह हज़रत खालिद को ज़िन्दगी पहुंचाने जा रही थीं।** गैसूए अक्दस के तवस्सुल से हज़रत खालिद की बका और हयात के मिशन पर जा रही थीं और उन का जाना यकीनन जाइज़ और मुस्तहसन था। क्यूंकि हज़रत अबू उबैदा को जब यह मा'लूम हुवा कि हज़रत उम्मे तमीम हज़रत खालिद को मुकद्दस गैसू वाली टोपी देने जा रही हैं, तो इन्हों ने फरमाया कि :

"ऐ उम्मे तमीम ! तुम्हारा यह काम अल्लाह के वास्ते है"

कौन सा काम ? हज़रत खालिद को टोपी पहुंचाने का काम। टोपी क्यूं पहुंचाई जा रही थी ? हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के मूए मुबारक से तवस्सुल करने के लिये। उन मुकद्दस बालों के वसीला से हज़रत खालिद और उन के साथियों की ज़िन्दगी बचानी थी। अगर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के आसार शरीफा से तवस्सुल करना मम्नूअ होता तो हज़रत अबू उबैदा हरगिज़ यह नहीं फरमाते कि तुम्हारा यह काम अल्लाह के वास्ते है। बल्कि सख्ती से मुमानेअत फरमा देते और हज़रत उम्मे तमीम को इस्लामी लश्कर के कैम्प शिरज़ में वापस जाने का हुक्म देते और हज़रत खालिद को टोपी देने के लिये उम्मे तमीम को कन्सरीन तक नहीं जाने देते। मगर हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत उम्मे तमीम की हौसला अफ्ज़ाई करते हुए फरमाया कि "चलो तुम अल्लाह तआला की बरकत और मदद पर।"

हज़रत अबू उबैदा ऐन वक्त पर हज़रत खालिद की मदद करने पहोंच गए

जब हज़रत अबू उबैदा कन्सरीन के मा'रका के करीब पहुंचे तो देखा कि गर्दो गुबार के बादल उठ रहे हैं और हर तरफ सिर्फ रूमी सिपाही ही नज़र आ रहे हैं। हज़रत खालिद और उन के साथियों का कोई निशान व पता नहीं है। वह बहुत फिक्र मन्द हुए और हज़रत खालिद को अपने आने की इत्तेलाअ देने की गर्ज़ से नारए तक्बीर की सदा बुलन्द की। एक साथ हज़ारों मुजाहिदों के "**अल्लाहो अक्बर**" के ना'रे से कोह व सहरा गूंज गया। रूमियों ने नारए तक्बीर की आवाज़ सुनी तो उन के दिल बैठ गए। वह कुछ सोचें और कोई हरकत करें इस के कब्ल इस्लामी लश्कर ने उन को चारों तरफ से घैर लिया और रूमियों के सरों पर तलवारें रखनी शुरू कर दीं। रूमी सिपाही मुजाहिदों की तलवारों की ज़र्ब खा कर अपने घोडे से इस तरह गिरने लगे जैसे पतझड में तेज़ हवा के झोंके से सूखे पत्ते दरख्त से गिरते हैं। हज़रत खालिद बिन वलीद और उन के साथी अब भी बडी दिलैरी से मस्रूफे जंग थे। जब इन्हों ने तहलीलो तक्बीर की आवाज़ें सुनीं तो उन में ताज़ा जौश पैदा हो गया। हज़रत खालिद ने भी नारए तक्बीर बुलन्द किया और अपने वुजूद का सुबूत देने के साथ साथ अपना पता भी बताया। जिस जगह पर हज़रत खालिद और उन के साथी ठहरे थे वहां लडाई होने की वजह से नैज़े और तलवारें बुलन्द होती थीं और आफ्ताब की रौशनी में मिस्ल आईना चमकती थीं।

हज़रत उम्मे तमीम मुकद्दस गैसूओं वाली टोपी ले कर हाज़िर :-

हज़रत खालिद बडी दिलैरी और जां फशानी से अपने साथियों के हमराह रूमियों का मुकाबला कर रहे थे कि दफ्अतन इन्हों ने देखा कि एक नकाब पोश सवार बडी दिलैरी और शुजाअत से रूमी सिपाहियों को नैज़ा मार कर दाअें बाअें हटाता और लश्कर को फाडता हुवा आ रहा है। थोडी दैर में वह सवार हज़रत खालिद के करीब आ पहुंचा। चेहरे पर नकाब होने की वजह से हज़रत खालिद इस को पहचान न सके लेहाज़ा पूछा कि ऐ दिलैर जवान ! तू कौन है ? हज़रत उम्मे तमीम ने जवाब दिया कि मैं आप की ज़ौजा उम्मे तमीम हूं। फिर क्या हुवा ? अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र अल वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु की ज़बानी समाअत फरमाअें। हज़रत मुस्अब बिन महारिस बयान करते हैं कि :

''पस उसी वक्त एक सवार निकला गिर्द से और फाडता था रूमियों को यहां तक कि दूर कर दिया इस ने उन को जो हमारे गिर्द थे। पस जल्दी गए खालिद बिन वलीद इस की तरफ और पूछा कि तू कौन है ? इन्हों ने कहा कि मैं तुम्हारी ज़ौजा उम्मे तमीम हूं ऐ अबा सुलैमान ! लाई हूं तुम्हारी इस कुलाह मुबारक को, जिस से कि मदद चाहते हो और तवस्सुल ढूंढते हो तुम इस से, ब-जानिब अल्लाह पाक के, पस कबूल करता है अल्लाह तआला दुआ को तुम्हारे लिये। लो तुम इस को अपने पास। पस कसम है खुदा की कि नहीं भूल गए थे तुम इस को मगर इसी दिन के वास्ते। फिर कुलाह दी उन को। पस चमका गैसूए मुबारक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व आलेहि व सल्लम कद्दरा हुस्नहु व जमालहु से एक नूर मिस्ल बिजली के। पस कसम है ऐशे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे व आलेहि व सल्लम की कि नहीं रखा था खालिद बिन अल-वलीद ने कुलाह को अपने सर पर और हम्ला किया था कौम पर मगर यह कि फैरा और मिला दिया उन के आगे वालों को पीछे वालों में और हम्ला किया उन के साथ मुसलमानों ने, पस नहीं हूई थी बहुत दैर यहां तक कि पीठ फैरी काफिरों ने और उतरी उन पर हलाकी अस्हाबे मुहम्मद मुख्तार

सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के हाथों से और नहीं थे कौमे रूमियों में मगर कुश्ता और ज़ख्मी और कैदी और पहले सब से भागने वालों में जबला था और मुतनस्सिरा उस के पीछे थे।''

(हवाला :- फुतूहुश्शाम, अज़ अल्लामा वाकदी, सफहा : 167)

फुतूहुश्शाम की मुन्दरजा बाला इबारत का ब-नज़रे गाइर मुतालआ करने से हस्बे ज़ैल उमूर अच्छी तरह साबित होंगे :

- हज़रत उम्मे तमीम ने खतरा मोल ले कर भी हज़रत खालिद को गैसूए अक्दस वाली टोपी पहुंचाई।
- गैसूए अक्दस वाली टोपी के मुतअल्लिक हज़रत उम्मे तमीम ने हज़रत खालिद से कहा कि इस टोपी से तुम हमेंशा अल्लाह की जानिब तवस्सुल करते हो और मदद तलब करते हो।
- हज़रत उम्मे तमीम ने हज़रत खालिद से कहा कि इस मुबारक टोपी के सदके में अल्लाह तआला तुम्हारी हर दुआ को कबूल फरमाता है।
- हज़रत उम्मे तमीम ने हज़रत खालिद से कहा कि तुम यह मुबारक टोपी अपने साथ लाना भूल गए हो, इसी लिये तुम पर यह मुसीबत आई है।
- हज़रत खालिद ने अपनी ज़ौजा मोहतरमा से मुबारक टोपी ले कर जब अपने सर पर रखी तो टोपी मुबारक से हुज़ूर पुर-नूर, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के गैसूए अक्दस से मिस्ल बिजली नूर चमका।
- हज़रत खालिद बिन वलीद ने मुकद्दस गैसू वाली टोपी अपने सर पर रखते ही दुश्मनों के लश्कर को उलट दिया और दुश्मन पीठ फैर कर भाग निकले।

अल-हासिल ! हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो जैसे जलीलुल कद्र सहाबी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के मूए मुबारक को बरकत हासिल करने के लिये अपने साथ रखते थे। और इस से तवस्सुल कर के बरकत, रहमत, नुस्रत और हिफाज़त हासिल करते थे। क्यूं कि उन का अकीदा था अल्लाह तआला के महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के आसार मुबारका में अल्लाह तआला ने खैरो बरकत रखी है और इस के तवस्सुल से मुझे हर जंग में फतह हासिल होती है

और इस के सदके व तुफैल में मुझे खैरो आफियत और मदद व नुस्रत हासिल होती है।

लैकिन अफ्सोस ! दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलेहे व सल्लम के आसारे मुकद्दसा की अज़्मत व ता'ज़ीम और ज़ियारत से मना' करते हैं।

- वहाबी तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ अली थानवी ने लिखा है :

''कहीं कहीं जुब्बा शरीफ या मूए शरीफ पैगम्बर सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम या किसी और बुज़ुर्ग का मश्हूर है। इस की ज़ियारत के लिये या तो ऐसी जगह जमा होते हैं या उन लोगों को घरों में बुला कर ज़ियारत करते हैं और ज़ियारत कराने वालों में औरतें भी होती हैं। अव्वल तो हर जगह उन तबर्रुकात की सनद नहीं होती और अगर सनद भी हो तब भी जमा होने में बहुत खराबियां हैं।''

(हवाला : ''बहिश्ती ज़ेवर'' मुसन्निफ :- मौलवी अशरफ अली थानवी,
नाशिर :- रब्बानी बुक डिपो, जिल्द : 6, मुसल्सल सफहा : 386)

किस्ने खतरनाक अन्दाज़ में थानवी साहब आसारे मुकद्दसा या'नी हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम व जान आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के मूए मुबारक और जुब्बा शरीफ की ज़ियारत व ता'ज़ीम से रोक रहे हैं। कैसे कैसे बहाने तराश लिये और गन्दी ज़ेहनियत के इख्तिराआते फासिदा को सफ्हए किर्तास पर मर्कूम कर दिये हैं। थानवी साहब ने इस इबारत में मुमानेअत के ज़िम्न में गुलू करते हुए बहुत कुछ और अनाप शनाप लिख दिया है। मसलन :

(1) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के मूए मुबारक की ज़ियारत और ता'ज़ीम से रोकने के लिये पहला बहाना यह बताया कि लोग ज़ियारत करने जमा होते हैं या ज़ियारत कराने वाले लोगों को अपने घर बुलाते हैं।

(2) दूसरा बहाना यह बताया कि ज़ियारत कराने वालों में औरतें भी होती हैं।

(3) तीसरा बहाना यह बताया कि उन तबर्रुकात की कोई सनद नहीं होती।

(4) और आखिर में अपनी शकावते कल्बी का इज़्हार करते हुए यहां तक

लिख दिया कि अगर उन तबर्रुकात की सनद भी हो तब भी जमा होने में बहुत खराबियां हैं। इस इबारत में **''बहुत खराबियां हैं''** का जुम्ला काबिल तवज्जोह है या'नी थानवी साहिब का यह कहना है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के मूए मुबारक के असली या नक्ली होने का कोई यकीन नहीं। मूए मुबारक के असली होने की कोई सनद नहीं होती और अगर सनद भी हो तब भी जमा होने में बहुत खराबियां हैं। सिर्फ अपनी तरफ से यह लिख दिया कि बहुत खराबियां हैं और लोगों को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के मूए अक्दस की ज़ियारत से रोक कर सवाब और बरकत से महरूम कर दिया। अगर खराबियां हैं तो कौन सी खराबियां हैं ? और उन खराबियों के मुतअल्लिक कुरआन व हदीस में क्या हुक्म है वह ज़िक्र नहीं किया। एक दो या कुछ खराबियां हैं। नहीं लिखा ,बल्कि बहुत खराबियां हैं। लैकिन थानवी साहब एक भी खराबी बयान करने से आजिज़ और कासिर रहे।

हकीकत यह है कि थानवी साहब हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के मूए मुबारक और जुब्बा शरीफ की अहमियत नहीं जानते थे। एक हवाला पैशे खिदमत है।

- वहाबी तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ अली थानवी साहब का एक मल्फ़ूज़ :

''इसी तरह बुज़ुर्गों के तबर्रुकात के साथ मुझ को शगफ नहीं मसलन कुर्ता वगैरा यह ख्याल होता है कि इस में क्या रखा है।''

हवाला :

(1) कमालाते अशरफिया, नाशिर :- इदारा तालीफाते अशरफिया, थाना भवन बाब : 1, मल्फ़ूज़ : 1004, सफहा : 251)

(2) हुस्नुल अज़ीज़, अज़ ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन, नाशिर :- मक्तबा तालीफात अशरफिया, थाना भवन जिल्द : 1, हिस्सा : 4, किस्त : 19, मल्फ़ूज़ : 634, सफहा : 147)

थानवी साहब ने साफ इक्रार कर लिया कि मुझे तबर्रुकात के साथ शगफ या'नी रग्बत, मुहब्बत और दिलचस्पी नहीं । और तबर्रुकात से शगफ न होने की वजह यह बताई के इस में क्या रखा है ? जिस का मत्लब यह हुवा कि तबर्रुकात या'नी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के गैसूए अक्दस और जुब्बा शरीफ में क्या रखा है ? उर्दू ज़बान में **''क्या रखा है''** का जुम्ला इस्तिफहामिया है और ब-तौर मुहावरा इस्ते'माल होता है और इस का इस्ते'माल बे वक्अत और बे अज़्मत मुआमला के इज़्हार के लिये होता है । मिसाल के तौर पर एक शख्स ने अपना मकान तब्दील किया । पुराने मकान में इस का जो मालो अस्बाब था उसे एक बैल गाडी पर लाद कर नए मकान पर ले गया वहां जब सामान टटोला तो इस की बीवी ने कहा कि हाए ! घर की सफाई करने का झाडू तो मैं पुराने घर भूल आई । अब क्या होगा ? एक मा'मूली झाडू के लिये अपनी बेगम को दिल भरभराते देख खाविन्द यही कहे गा के अरे जाने दो, एक मा'मूली झाडू के लिये क्यूं अपना दिल जलाती हो, **इस में क्या रखा है ?** अल-गरज़ ! **क्या रखा है ?** का जुम्ला किसी चीज़ की हिकारत ज़ाहिर करने के लिये इस्ते'माल किया जाता है । कारेईन फैसला फरमाऐं कि थानवी साहिब तबर्रुकात के लिये **''इस में क्या रखा है''** का जुम्ला इस्ते'माल कर के क्या साबित करना चाहते हैं ?

हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के आसारे मुकद्दसा खुसूसन गैसूए अन्वर की बरकत और अज़्मत के मुतअल्लिक सहाबए किराम और खुसूसन हज़रत खालिद बिन वलीद का ए'तेकाद कारेईने किराम ने वाकेआत की रौशनी में मुलाहेज़ा फरमाया और थानवी साहब का अकीदा उन की किताबों की इबारतों से मा'लूम किया। दोनों में बो'दल मश्रिकैन है। इस की वजह यह है कि **''नज़रें बदल गईं तो नज़ारा बदल गया ।''** हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के पुर-नूर चेहरए अन्वर को हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने भी देखा और इसी चेहरए अन्वर को अबू जहले लईन ने भी देखा। लैकिन दोनों के देखने में ज़मीन आस्मान का फर्क था। एक ने मुहब्बत और अकीदत की नज़र से देखा और दूसरे ने बुग्ज़ व अदावत की नज़रे बद से देखा। लेहाज़ा दोनों के ता'सुरात मुतज़ाद सुनने में आए। इसी तरह हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के मूए मुबारक को हज़रत खालिद बिन वलीद ने इस नज़र से देखा कि काएनात की बेहतरीन ने'मत और रहमत मेरे आका व मौला के गैसूए अक्दस हैं। लैकिन थानवी साहब ने हिकारत की नज़र से देख कर कहा कि **''इस में क्या रखा है।''** नज़रें बदल गईं तो नज़ारा बदल गया।

तबर्रुकात की ज़ियारत करने और अपने साथ तबर्रुकात रखने से बहुत सारी ने'मतें और बरकतें हासिल होने के साथ साथ साहिबे तबर्रुक बुज़ुर्ग की शाने अज़्मत अयां होती है और ज़ाइरीन के दिलों में साहिबे तबर्रुक बुज़ुर्ग की अज़्मत व मुहब्बत रासिख होती है। बुज़ुर्गाने दीन के तबर्रुकात को अपने पास हिफाज़त से रखना, इस का अदब करना, इस की ज़ियारत करना, इस के तवस्सुल से दुआ करना, फैज़ व बरकत व शिफा व आफियत हासिल करना वगैरा उमूर सहाबए किराम, ताबेईन, तबे ताबेईन, सल्फे सालेहीन, अइम्म-ए दीन वगैरा में इब्तिदाए इस्लाम से राइज और मश्रूअ हैं। लैकिन हर वह काम कि जिस के करने से अम्बिया-ए किराम व औलिया-ए इज़ाम की अज़्मत का पर्चम लहराए उन तमाम कामों को वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी मक्तब-ए फिक्र के ओल्मा मम्नूअ करार देते हैं बल्कि मुमानेअत करने में हद दर्जा गुलू करते हैं।

- इमामुल मुनाफिकीन, मौलवी इस्माईल देहल्वी ने लिखा है :

> **''और इस के कुंवें के पानी को मुतबर्रक समझ कर पीना, बदन पर डालना, आपस में बांटना, गाइबों के वास्ते ले जाना वगैरा वगैरा। इस किस्म की बातें करे तो इस पर शिर्क साबित होता है।''** (हवाला :- तक्वीयतुल ईमान, नाशिर : - अद्दारुस सल्फिया, बम्बई, सफ्हा : 24)

मुन्दरजा बाला इबारत पर तबसिरा किये बगैर इस बहस को तूल न देते हुए सिर्फ इत्ना कहना है कि देवबन्दी मक्तब-ए फिक्र के ओल्मा मिल्लते इस्लामिया का बुज़ुर्गाने दीन के साथ रिश्तए अकीदत मुन्कते' करने की गर्ज़ से बुज़ुर्गाने दीन के तबर्रुकात का अदब व एहतराम खत्म करने के लिये तरह तरह के हथकन्डे अपनाते हैं। और तबर्रुकात की ज़ियारत और तबर्रुकात को बाइसे बरकत मानने को गुनाह बल्कि शिर्क तक कह देते हैं। अल-मुख्तसर ! जिस के दिल में ता'ज़ीम व अज़्मते मुस्तफा का फुकदान होता है वह गैसूए अक्दस के मुतअल्लिक यही नज़रिया रखता है कि **''इस में क्या रखा है।''** और जिस के दिल में मुहब्बते रसूल का दरिया मौज-ज़न होता है वह अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के गैसूए पाक के लिये यह अकीदा रखता है :

शाने रहमत कि शाना न जुदा हो दम भर
सीना चाकों पे कुछ इस दर्जा हैं प्यारे गैसू

हम सियह कारों पे या रब तपिशे महशर में
साया अफ्गन हों तेरे प्यारे के प्यारे गैसू

(अज़ :- इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम के आसार मुबारका मसलन मूए मुबारक, नाखुन शरीफ, मल्बूसात और दीगर अश्या-ए इस्ते'माल, नीज़ बुजुर्गाने दीन के तबर्रुकात की ता'ज़ीम व अदब और उन तबर्रुकात के तवस्सुल से हुसूल ने'मत व बरकत के मुतअल्लिक कुरआन व हदीस और अइम्म-ए मिल्लते इस्लामिया के अक्वाल व अफ्आल से जवाज़ व इस्तेहबाब के काफी और वाफी दलाइल और सुबूत देखने के लिये मुन्दरजा ज़ैल कुतुब की तरफ रूजूअ फरमाऐं :

(1) **बद्रुल अन्वार फी आदाबिल आसार**
मुसन्निफ : इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी कुद्दिसा सिर्रहु

(2) **आदाबुल अख्यार फी ता'ज़ीमिल आसार,** मुसन्निफ: सद्रुल अफाज़िल हज़रत मौलाना सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमा

(3) **अबरूल मकाल फी इस्तेहसाने कुब्लतिल अज्लाल**
मुसन्निफ : इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी कुद्दिसा सिर्रहु

फतहे किल्ल-ऐ कन्सरीन

जब रूमी सिपाहियों ने भागना शुरू किया तो मुजाहिदों ने उन का तआककुब किया। रूमी सिपाही अपनी जानें बचाने के लिये दुम दबा कर हर सम्त भाग रहे थे। मुजाहिदों ने जो भी रूमी सिपाही हाथ लगा उस को कुश्ता ज़मीन पर डाल दिया। कलील अर्से में मैदान साफ हो गया। मैदान में अब सिर्फ इस्लामी लश्कर ही था। तमाम मुजाहिद हज़रत अबू उबैदा के निशान के करीब जमा होने लगे। हज़रत खालिद बिन वलीद भी अपने साथियों के हमराह हज़रत अबू उबैदा के पास आए। हज़रत खालिद अर्गवान के सुर्ख फूल की तरह खून में तर बतर थे। हज़रत अबू उबैदा ने उन को सलामती पर मुबारकबादी देते हुए फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! तुम ने जेहाद कर के अपने दिल को तस्कीन दी और अल्लाह तआला को राज़ी किया। फिर हज़रत अबू उबैदा ने रास्ते के मोड से कन्सरीन के किल्ले पर यल्गार करने के लिये लश्कर को कूच करने का हुक्म

दिया। जब इस्लामी लश्कर कन्सरीन के किल्ले के करीब पहुंचा तो अह्ले शहर ने किल्ले के दरवाज़े बन्द कर लिये। अह्ले कन्सरीन को मा'लूम हो चुका था कि उन का हाकिम लुका कत्ल हो चुका है और जबला बिन ऐहम गस्सानी का लश्कर भी हज़ीमत उठा कर भाग निकला है। लेहाज़ा इन्हों ने सुलह करना मुनासिब समझा। फौरन एक एलची को हज़रत अबू उबैदा के पास भेजा और अदाए जिज़्या पर सुलह की दरख्वास्त की। हज़रत अबू उबैदा ने सुलह की दरख्वास्त मन्ज़ूर फरमाली और ब-मौजिब अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूक के हुक्म के फी कस चार दीनार या अडतालीस दिरहम पर सुलह कर के दस्तावेज़ लिख दी। मुल्के शाम का मश्हूर किल्ला कन्सरीन इस्लामी लश्कर ने फतह कर लिया।

अब तक इस्लामी लश्कर के हाथों फतह होने वाले मकामात :-

(1) अरेका (2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हवरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क (9) हिस्ने अबील कुद्स (10) जोसिया (11) हुमुस (12) शिरज़ (13) रुस्तन (14) हमात (15) कन्सरीन

नोट : हज़रत खालिद बिन वलीद के साहिबज़ादे का नाम सुलैमान था। मुल्के अरब में नाम के बजाए उस की कुन्यत से पुकारने का दस्तूर था। या'नी किसी शख्स को उस के बाप, बेटे, बेटी वगैरा से मन्सूब कर के उस की कुन्यत मुकर्रर कर देते थे और फिर उस कुन्यत से पुकारते थे। मसलन अबूल हसन, अबू बक्र, उम्मे हकीम, इब्ने हाजिब वगैरा। अबू सुलैमान या'नी सुलैमान के बाप। हज़रत खालिद बिन वलीद को तमाम लोग अबू सुलैमान नाम से ही पुकारा करते थे। लेहाज़ा हम ने भी नक्ले रिवायत का लिहाज़ करते हुए हज़रत खालिद के लिये अबू सुलैमान का इस्ते'माल किया है। इस से मुराद हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो की ज़ाते गिरामी है। कारेईने किराम को कोई मुगाल्ता न हो इस लिये हम ने वज़ाहत कर दी है।

कुन्यत = वह नाम जो बाप, मां बेटा, बेटी वगैरा के तअल्लुक से बोला जाए।

(हवाला : फीरोजुल-लुगात, सफहा : 1038)

जंगे बा'ल्बक

फतहे कन्सरीन के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद को हुमुस के किल्ले का मुहासरा करने रवाना किया और खुद ब-जानिब बा'ल्बक रवाना हुए। हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर के साथ बा'ल्बक जा रहे थे कि राह में देखा कि दरिया के किनारों की तरफ से एक बडी जमाअत बा'ल्बक की जानिब जा रही है। और उस जमाअत के साथ कसीर ता'दाद में सामाने तिजारत है। हज़रत अबू उबैदा ने चंद मुजाहिदों को उस काफला की जानिब बराए तफ्तीश भेजा। थोडी दैर में वह खबर लाए कि यह काफला रूमियों का है और वह अह्ले बा'ल्बक के लिये रसद ले कर जा रहा है और रसद में शकर काफी मिक्दार में है। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि बा'ल्बक हमारे लिये दारुल हर्ब है। इलावा अज़ीं हमारे और उन के दरमियान कोई सुलह या कौल व करार नहीं है, लेहाज़ा यह माले गनीमत है, जिस को अल्लाह तआला ने हमारे लिये भेजा है। मुजाहिदों ने काफले को घैर लिया और उस का तमाम मालो अस्बाब छीन लिया और अह्ले काफला को गिरफ्तार कर लिया। इस काफला के साथ शकर की चार सौ बोरियां थीं। इलावा अज़ीं काफी मिक्दार में इन्जीर और कन्द था। मुजाहिदों ने काफला वालों को कत्ल कर देने का इरादा किया, लैकिन हज़रत अबू उबैदा ने मना' फरमाया और फिद्या ले कर काफला को रिहा कर दिया। अह्ले काफला रेहा हो कर बा'ल्बक गए। और अपना हाल बयान किया, नीज़ इस्लामी लश्कर की कसरत और आमद की कैफियत भी बयान की।

अह्ले काफला को रेहा कर के इस्लामी लश्कर उसी मकाम पर ठहरा और रात बसर की। जब सुब्ह हूई तो हज़रत अबू उबैदा ने लश्कर को बा'ल्बक की जानिब कूच का हुक्म दिया। बा'ल्बक का हाकिम हरबीस नाम का बतरीक था। हरबीस लडाई का माहिर, दिलैर और जंगजू था। जब उस को पता चला कि मुसलमानों ने बा'ल्बक के काफला का मालो अस्बाब ले लिया है, तो उस ने अपने साथ सात हज़ार सवार सिपाही और बडी ता'दाद में पैदल लोगों को ले कर काफले का अस्बाब व गल्ला छुडाने निकला। दो-पहर के वक्त उस का इस्लामी लश्कर से आमाना सामना हो गया। हरबीस के हमराह जाने वाले बतारका ने उसे

लडाई न करने और वापस पलट जाने का मश्वरा दिया। बतारका ने उस को बहुत समझाया और दमिश्क, बसरा, अजनादीन और कन्सरीन वालों की हज़ीमत की मिसालें पैश कीं। लैकिन हरबीस ने उन की एक न सुनी और तकब्बुर व गुरूर के नशे में कहा कि मैं उन से ज़रूर लडूंगा और जो गल्ला व अस्बाब इन्हों ने ले लिया है वह उन से छीन लूंगा और उन को ऐसा सबक सिखाऊं गा कि वह बा'ल्बक की तरफ नज़र उठा कर भी न देखें। मैं उन गरीब अरबों को भगा दूंगा क्यूं कि उन का साबिक सरदार खालिद बिन वलीद हुमुस में है, लेहाज़ा यह लश्कर हमारे लिये माले गनीमत है जिस को हज़रत मसीह ने हमारी तरफ भेजा है।

फिर हरबीस ने अपने लश्कर की सफ बन्दी शुरू की। उस वक्त उस के हमराहियों में से एक बतरीक ने हरबीस से कहा कि ऐ हरबीस ! मैं तेरे तकब्बुर और गुरूर के दाम में नहीं आने वाला। तू हम सब बतारका की राए और मश्वरों को न मान कर, मन मानी करना चाहता है और हम को खातिर में नहीं लाता, हम लडाई में तेरा इत्तिबा' नहीं करेंगे। यह कह कर वह बतरीक वापस पलटा। इस को देख कर बहुत काफी ता'दाद में लोग इस बतरीक के हमराह बा'ल्बक वापस लौट गए, लैकिन इस के बा-वुजूद भी हाकिम हरबीस आमादए जंग हुवा। अल-गर्ज़ ! हज़रत अबू उबैदा ने देखा कि रूमियों का लश्कर मुज़ाहिम होने आया है, तो आप ने मुजाहिदों को यल्गार का हुक्म दिया। हुक्म मिलते ही तमाम मुजाहिद रूमियों पर टूट पडे, जैसे कोई शैर भेड बकरियों पर टूट पडता है। हज़रत आमिर बिन रबीआ रिवायत फरमाते हैं कि कसम है **ऐशे रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व आलेहि व सल्लम की** कि न था हमारे और उन के बीच में मगर एक गरदावा, यहां तक कि पीठ फैरी उन्हों ने शहर की जानिब और हाकिम हरबीस भी बुरी तरह ज़ख्मी हो कर भागा। हाकिम हरबीस को साठ ज़ख्म लगे थे। हरबीस मअ अपने लश्कर भाग कर किल्ले में घुस गया और शहर पनाह के दरवाज़े बन्द कर लिये।

इस्लामी लश्कर बा'ल्बक के किल्ले के करीब पहुंचा और किल्ले का मुहासरा किया। बा'ल्बक के अतराफ के दैहात के लोग मअ अपने जानवरों के किल्ले में आ कर पनाह गुज़ीं हुए थे और इतनी कसरत से लोग किल्ले में जमा हुए कि पाऊं रखने की भी जगह बाकी न थी। लेहाज़ा काफी ता'दाद में लोग किल्ले की दीवार पर चढ गए। किल्ले की दीवार बहुत चौडी और कुशादह थी और मज़बूती के ए'तबार से पूरे मुल्के शाम में मश्हूर थी। शाम का वक्त था। आफ्ताब गुरूब होने जा रहा था। मौसम सख्त सर्दी का था। हालां कि बा'ल्बक में गर्मियों के दिनों में भी सख्त सर्दी रहती है। इस्लामी लश्कर ने

किल्ले के बाहर पडाव किया और शब बसर की। मुजाहेदीन अपने साथियों की निगेहबानी करते और इबादत में मशगूल हो कर रात गुज़ारी।

जंगे बा'ल्बक का दूसरा दिन

सुब्ह हज़रत अबू उबैदा ने अह्ले बा'ल्बक को एक खत लिखा। उस खत में आप ने अह्ले शहर को इस्लाम की दा'वत दी। इस्लाम कबूल न करने की सूरत में अदाए जिज़्या या फिर जंग का पैगाम दिया। फिर वह खत एक रूमी मुआहदी को दिया और उस को ताकीद फरमाई कि इस का जवाब ले कर ही वापस आना। वह रूमी मुआहदी (जिस ने जिज़्या दे कर अमान हासिल की थी) हज़रत अबू उबैदा का खत ले कर शहर पनाह के करीब आया और रूमी ज़बान में पुकार कर कहा कि मैं इस्लामी लश्कर के कासिद की हैसियत से तुम्हारी तरफ आया हूं। रूमियों ने किल्ले की दीवार से एक रस्सी के ज़रीए कासिद को ऊपर खींच लिया और हाकिम हरबीस के पास ले गए। कासिद ने हज़रत अबू उबैदा का खत हरबीस को दिया। हज़रत अबू उबैदा ने हरबीस को रूमी ज़बान में खत लिखा था। हज़रत अबू उबैदा ने मर्मस बिन कूरक नाम के एक रूमी कातिब को अपने साथ मुहर्ररी के काम पर मुतअय्यन किया था। वह कातिब रूमी और अरबी दोनों ज़बानों का माहिर था। हज़रत अबू उबैदा जो भी अरबी तह्रीर इर्काम फरमाते थे वह कातिब उस का रूमी ज़बान में तर्जुमा लिख देता था। हाकिम हरबीस ने हज़रत अबू उबैदा का खत हाज़िरीन को पढ कर सुनाया। फिर उस ने पूछा कि इस मुआमले में तुम मुझे क्या मश्वरा देते हो ? एक बतरीक ने कहा कि मेरी राए यह है कि हम भी अरेका, तदम्मुर, बसरा और दीगर मकाम के लोगों की तरह अदाए जिज़्या की शर्त पर अरबों से सुलह कर के बे डर व मामून हो जाऐं। क्यूं कि अगर हम ने उन से जंग की, तो वह हमारे जंगजू और शेहसवार लोगों को कत्ल कर के हम पर गालिब आ जाऐंगे और हमारे मालो अस्बाब और अह्लो अयाल पर काबिज़ हो जाऐंगे।

बतरीक का यह मश्वरा सुन कर हाकिम हरबीस लाल पीला हो गया और आंखें चढा कर जवाब दिया कि मैं ने मुल्के शाम में तुझ से बढ कर बुज़दिल और डरपोक नहीं देखा। क्या हम अपने शहर को भूके और बाज़ारी अरबों के हवाले कर दें ? तुम ख्वाह म ख्वाह उन अरबों से डरते हो। गुज़िश्ता कल की लडाई में मैं ने उन की जंगी महारत को आज़मा लिया है। उन को लडाई का ढंग मा'लूम नहीं। इलावा अज़ीं वह लडाई में ऐसे दिलैर भी नहीं हैं, जैसी उन की शोहरत है। गुज़िश्ता कल मैं उन के लश्कर के मैमना पर हम्ला करने की गलती

कर बैठा, अगर उन के लश्कर के मैसरा पर हम्ला किया होता तो ज़रूर इन्हें शिकस्त दे कर भगा देता। बतरीक ने जवाब में इस्तेहज़ा के तौर पर कहा कि शायद इस्लामी लश्कर के मैसरा और कल्ब वाले तुझ से डरते होंगे ? हाकिम हरबीस से कोई जवाब न बन पाया और वह अपना सा मुंह ले कर रह गया। अह्ले बा'ल्बक दो गिरोह में बट गए। एक गिरोह लडाई का हामी और दूसरा सुलह का ख्वास्तगार था। दोनों गिरोह में बात आगे बढती, इतने में हाकिम हरबीस ने अपना रंग दिखाते हुए हज़रत अबू उबैदा का खत चाक कर के कासिद पर फेंका और कासिद से कहा कि **''यही हमारा जवाब है''** फिर उस ने कासिद को वापस भेजने का हुक्म दिया। चुनांचे रूमी सिपाहियों ने रूमी कासिद को रस्सी में बांध कर लटका कर नीचे उतार दिया। कासिद ने हज़रत अबू उबैदा को तमाम माजरा कह सुनाया। हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर को किल्ले का मुहासरा सख्त करने और हम्ला करने का हुक्म दिया।

इस्लामी लश्कर किल्ले की दीवार की तरफ आगे बढा। इस्लामी लश्कर को आगे बढता देख कर रूमियों ने किल्ले की दीवार के ऊपर से शौरो गुल मचाना शुरू किया और तीरों और पत्थरों से हम्ला शुरू कर दिया। हाकिम हरबीस किल्ले की दीवार के बडे बुर्ज में ज़ख्मों पर पट्टियां बांध कर बैठा था और अपनी कौम को लडाई की तर्गीब देता था। उस के उक्साने की वजह से रूमियों ने इस्लामी लश्कर पर सख्त हम्ला करते हुए तीरों की बौछार शुरू कर दी। मिस्ले बारिश पत्थर बरसाए। इस्लामी लश्कर के बारह मुजाहिद शहीद हुए। आफ्ताब गुरूब हुवा और इस्लामी लश्कर किल्ले के सामने थोडे फास्ला पर वाकेअ अपने कैम्प में वापस लौटा। कैम्प में वापस आ कर तमाम मुजाहिदों ने एक ही काम किया और वह यह कि शिद्दत की सर्दी से बचने के लिये लक्डियां जला कर आग रौशन की। चंद अश्खास को हज़रत अबू उबैदा ने रात में निगहबानी की ज़िम्मेदारी सौंपी। निगेहबान हज़रात रात भर तहलीलो तक्बीर की आवाज़ बुलन्द करते हुए इस्लामी लश्कर के कैम्प के इर्द गिर्द गश्त करते रहे, यहां तक कि रात खैरो आफियत से बसर हूई और सुब्ह नमूदार हूई।

जंगे बा'ल्बक का तीसरा दिन

सुब्ह की नमाज़ अदा करने के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर में मुनादी करवा दी कि कोई भी शख्स किल्ले की तरफ बढ कर न जाए। बल्कि लश्कर के कैम्प में ही अपनी जगह पर ठहरा रहे और अपने लिये कुछ खाने का इन्तेज़ाम कर ले, ताकि दुश्मनों से

लडने में तकवीयत हासिल हो। हज़रत अबू उबैदा के हुक्म की ता'मील करते हुए इस्लामी लश्कर कैम्प में ही ठहरा रहा और हर शख्स खाने पीने का इन्तेज़ाम करने में मस्रूफ हो गया। जब आफ्ताब बुलन्द हुवा तो रूमियों ने किल्ले की दीवार से देखा कि आज इस्लामी लश्कर किल्ले के करीब नहीं आया बल्कि अभी तक अपने कैम्प में मुकीम है। और किसी किस्म की कोई जंगी हरकत व जुंबिश होती दिखाई नहीं देती, तो उन्हों ने यह गुमान किया कि शायद मुसलमान हम्ला से आजिज़ हो कर और मारे डर के लडने नहीं निकले हैं। हाकिम हरबीस ने रूमियों को पुकार कर कहा तुम्हारे दुश्मन खौफ की वजह से लडने से बाज़ रहे हैं। लेहाज़ा मौका' गनीमत है कि उन की आजिज़ी और गफ्लत का फाइदा उठा कर शहर के तमाम दरवाज़े खोल कर हम सब एक साथ निकल कर उन पर हम्ला कर दें और इन्हें हलाक कर दें।

हाकिम हरबीस की इस तज्वीज़ के मुताबिक किल्ले के तमाम दरवाज़ों से दफ्अतन हज़ारों रूमी एक साथ निकले और उमडते हुए सैलाब की तरह इस्लामी लश्कर के कैम्प पर आ पडे। तमाम मुसलमान खाने पीने में मशगूल होने की वजह से हम्ला से गाफिल थे। चंद मुजाहिदों ने रूमियों को तूफान की तरह आते हुए देखा तो बुलन्द आवाज़ से पुकार कर मुजाहिदों को होशियार करना शुरू कर दिया। ऐ गिरोहे मुस्लिमीन! दुश्मन हम पर आ पडे हैं। वह हम पर हम्ला आवर हों इस से कब्ल मुकाबले के लिये खडे हो जाओ। इस सदा पर इस्लामी लश्कर का हर मुजाहिद चौंक उठा। किसी के हाथ में लुक्मा था, कोई खाना पका रहा था, कोई खाना पतीली से तश्त में निकाल रहा था, गर्ज़ कि तमाम के तमाम खुरद व नौश में मुन्हमिक थे। तमाम मुजाहिद दफ्अतन खडे हो कर अपने हथियारों और घोडों की तरफ दौडे। एक हलचल मच गई। मुजाहिदों ने अपने हथियार संभाले इतनी दैर में तो रूमी टूट पडे। हज़रत अबू उबैदा ने पुकार कर फरमाया कि ऐ अरब के जवानो! अगर आज अहले बा'ल्बक तुम पर गालिब हो गए तो तुम्हारी बंधी हूई हवा जाती रहेगी। सब्र और इस्तेकलाल से उन का मुकाबला करो और अल्लाह की राह में अपनी जान खर्च करने में कोताही न करो।

तमाम मुजाहिद अपने मुअज़्ज़ज़ सरदार की तल्कीन पर जज़्बए ईसार व कुरबानी के जौश में भर गए और दिलैरी से रूमियों का मुकाबला किया, लैकिन तमाम मुजाहिद बे तर्तीब थे। दफ्अतन रूमियों के आ पडने की वजह से उन को सफ बन्दी का मौका' न मिला और बा'ज़ तो अपने घोडों पर सवार तक न हो सके थे। हज़रत अम्र बिन मा'दी

कर्ब, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी रबीआ आमरी, हज़रत मालिक उश्तर नखई, हज़रत जुल केलाअ हुमैरी और हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर ने बडी जुर्अत व शुजाअत से मुकाबला कर के रूमियों के बडे बडे दिलैरों और सरदारों को ज़मीन पर डाल दिया और जिस तरह चक्की गल्ला को पीस डालती है इस तरह पीस कर रख दिया। मक्तूलीन की चीख व पुकार, ज़ख्मियों की आह व बुका, तलवारों की झन्कार, नैज़ों की चकाचाक, घोडों की हिनहिनाहट, मुजाहिदों की ललकार के शौरो गुल और रूमी सिपाहियों के हुल्लड हपाड ने भयानक समां बांध दिया था। तमाम मुजाहिद अपनी जान हथेली पर ले कर रूमियों का मुकाबला कर के उन को मार भगाने की कोशिश करते थे। मुजाहिदों की साबित कदमी ने रूमियों को आगे बढने से रोक दिया। इस्लामी लश्कर के कैम्प का वह हिस्सा जहां मस्तूरात और अतफाल थे वहां तक एक भी रूमी पहुंचने से आजिज़ो कासिर रहा। अलबत्ता रूमियों ने मुजाहिदों का कीमती अस्बाब, कपडे और गल्ला काफी ता'दाद में लूट लिया और किल्ले की तरफ भागे। मुजाहिदों ने किल्ले के दरवाज़े तक उन का तआककुब करते हुए फराखी से शम्शीर ज़नी की और काफी ता'दाद में रूमियों को ज़मीन पर कुश्ता डाल दिया। रूमी किल्ले में घुस गए और दरवाज़े बन्द कर लिये। मुजाहेदीन कैम्प में वापस लौटे, ज़ख्मियों का इलाज किया और शहीदों को आखरी मन्ज़िल पहुंचाया। इस मा'रके में पंदरह मुजाहिद शहीद हुए।

रात के वक्त हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर के रूउसा को जमा कर के फरमाया कि आज दिन में हम एक बडे फित्ने और आज़माइश में मुब्तला हुए और अल्लाह तआला ने हमारी नुस्रत व मदद फरमा कर हमें बहुत बडे नुक्सान से महफूज़ रखा। फिर हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि आज रूमियों ने जो जुर्अत की है इस से मुझे ऐसा लगता है कि आइन्दा कल भी वह किल्ले से लडने निक्लेंगे। लेहाज़ा मुनासिब यह है कि हम अपने लश्कर के कैम्प को मज़ीद फास्ला तक पीछे हटा दें, ताकि किल्ले और हमारे कैम्प के दरमियान इत्ना फास्ला हो जाए कि हम को घोडा दौडाने का मौका' आसानी से मुयस्सर हो सके। और हम रूमियों को अचानक धावा बोलने से बाज़ रख सकें। इलावा अज़ीं कल सुब्ह किल्ले के हर दरवाज़े के सामने डेरा डाल दें, ताकि जिस दरवाज़े से भी रूमी लश्कर निकले हम उस का फौरन देफाअ कर सकें। तमाम मुजाहिदों ने हज़रत अबू उबैदा की राए को पसन्द किया और रात ही में इस तज्वीज़ पर अमल कर लिया गया। चुनांचे हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर बाबे शाम पर, हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफैल अदवी बाबे जबली पर और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह बाबे वस्ता पर अपने अपने लश्कर के साथ रात में पहोंच गए और अपनी अपनी जगह इख्तेयार कर के डेरा डाल दिया।

जंगे बा'ल्बक का चौथा दिन

सुब्ह किल्ले का बडा दरवाज़ा (बाबे वस्ता) खुला । इस दरवाज़े के सामने हज़रत अबू उबैदा ने पडाव किया था । दरवाज़ा खुलते ही रूमी सिपाही तूफानी सैलाब की तरह किल्ले के बाहर उमड पडे और आने के साथ हज़रत अबू उबैदा के लश्कर पर हम्ला कर दिया । हाकिम हरबीस ने किल्ले के अन्दर ही लश्कर की तर्तीब और सफ बन्दी कर ली थी और बा'द में लश्कर को बाहर निकाला था । पूरी तैयारी के साथ लश्कर किल्ले के बाहर आया था । हाकिम हरबीस अपने लश्कर को लडने की तर्गीब दे रहा था । अपनी कसरत और अस्लहा की फरावानी का ज़िक्र कर के हम्ला करने पर उक्साता था और पुकार पुकार कर कहता था कि ऐ गिरोहे नस्रानिया ! मसीह और सलीब से मदद तलब करो, उन नंगे और भूके अरबों से मुत्लक खौफ न खाओ । उन अरबों में हमारा मुकाबला करने की ताकत व इस्तिताअत नहीं । हाकिम हरबीस के वरगलाने से रूमी सिपाही आंधी की तरह हज़रत अबू उबैदा के लश्कर पर आ पडे । हालां कि हज़रत अबू उबैदा अपने लश्कर के साथ चौकन्ना और होशियार थे, लैकिन रूमियों की कसरत और हम्ला की शिद्दत की वजह से परेशान थे । रूमियों ने उन को हर सिम्त से घैर लिया था हज़रत अबू उबैदा ने मुजाहिदों को पुकार कर फरमाया कि आज रूमियों ने अपनी पूरी ताकत के साथ हम्ला किया है । तुम मुत्लक न घभराओ और साबित कदमी से उन का मुकाबला करो अगर आज तुम्हारे कदम उखड गए तो इस्लामी लश्कर का रोअब व दबदबा ज़ाइल हो जाएगा और मुल्के शाम में यह बात फैल जाएगी कि बा'ल्बक वालों ने मुसलमानों को भगा दिया ,नतीजतन तुम्हारी हैबत व दहश्त रूमियों के दिलों से जाती रहेगी । ऐ हामिलाने कुरआन ! खुदा तुम्हारे कामों को देख रहा है और खुदा की मदद व नुस्रत ज़रूर नाज़िल होगी, सब्रो इस्तिक्लाल से काम लो, सब्र करने वालों के साथ अल्लाह है । अपनी जानें राहे खुदा में खर्च करो अल्लाह की राह में शहीद होने को अपनी ख्वाहिश व तमन्ना बनाओ इन्शा अल्लाह फतह व काम्याबी से अल्लाह तआला हमें सरफराज़ फरमाएगा ।

हज़रत अबू उबैदा के इर्शादात ने मुजाहिदों में एक अजीब जौश पैदा कर दिया और रूमियों के उमडते हुए सैलाब के सामने मुजाहेदीन मज़बूत चट्टान की तरह मुकाबले में जमे हुए थे । दोनों लश्कर एक दूसरे में खलत मलत हो गए और घमसान की लडाई शुरू हूई ।

नैज़े और तलवारें बुलन्द हो कर चमकने लगे और खूं रेज़ी शबाब पर आई । रूमियों ने शिद्दत के हम्ले जारी रखे, लैकिन मुजाहिदों ने बुलन्द हिम्मती से मुकाबला किया और रूमियों को गालिब नहीं होने दिया । हालां कि मुजाहेदीन उस वक्त सख्त तंगी और मुसीबत में थे । उस वक्त हज़रत अबू उबैदा ने दिल में कहा कि काश बाबे जबली और बाबे शाम पर सईद बिन ज़ैद और हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर को हमारी मुसीबत की खबर पहोंच जाए और वह यहां आ जाऐं तो हमारी मुसीबत दूर हो जाए । लैकिन उन तक खबर पहुंचाना कैसे मुम्किन हो ? हज़रत सुहैल बिन सबाह अल-ईसा रिवायत करते हैं कि मैं बा'ल्बक की जंग के दिन हज़रत अबू उबैदा के लश्कर में था और मुझे दाऐं बाज़ू पर सख्त ज़ख्म पहुंचा और हाथ बेकार हो गया । मैं हाथ से तलवार भी पकड नहीं सक्ता था और रूमियों की शिद्दत व कसरत देख कर मुझे अंदेशा हुवा कि मेरे दीनी भाई अन्करीब हलाक हो जाऐंगे । करीब में ही एक टीला था, मैं हंगामए लडाई से छटक कर उस टीले की तरफ भागा और उस पर चढ गया । टीले पर चढ कर मैं ने देखा कि रूमियों के दरमियान मुजाहेदीन हर तरफ से घिर गए हैं । नैज़ों और तलवारों की ज़र्बें खौद और ढालों पर पडती थीं और आग की चिंगारियां उडती हूई साफ दिखाई देती थीं । आग की चिंगारियां देख कर मेरे ज़हन में एक ख्याल आया मैं ने करीब बिखरी हूईं दरख्तों की सूखी जडें और शाखें जमा कीं और संगे चकमाक से आग रौशन की । आग रौशन होते ही उस पर हरी और गीली लक्डियां रख दीं, लेहाज़ा बडी कसरत से धूवां निकला, फिर धूवां बुलन्द हुवा ।

इस्लामी लश्कर में एक दस्तूर राइज था कि जब वह एक जगह इकठ्ठा होना चाहते और अपने साथियों को अपने पास बुलाने का इरादा करते तो दिन के वक्त धूवां बुलन्द करते और रात के वक्त आग बुलन्द करते । हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर और हज़रत सईद बिन ज़ैद अपने साथियों के साथ किल्ले के बन्द दरवाज़ों का मुहासरा किये हुए थे । उन्हों ने बा'ज़ को पुकार कर कहा कि यह धूवां किसी बडे अम्र पर दलालत करता है । हो सक्ता है कि हमारे सरदार हज़रत अबू उबैदा सख्त मुसीबत में गिरफ्तार हुए हों? और हमारी कुमुक तलब करने के लिये उन्हों ने धूवां बुलन्द कर के हमें बुलाया हो । यह ख्याल आते ही बाबे जबली से हज़रत सईद बिन ज़ैद और बाबे शाम से हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर अपने साथियों के साथ बर्क रफ्तारी से रवाना हुए और फौरन बाबे वस्ता पर आ पहुंचे ।

बाबे वस्ता पर जंग शबाब पर थी । लडाई की आग के शो'ले बुलन्द हो रहे थे । नैज़ों के फल और तलवारों की नोकें चमक रही थीं । हज़रत अबू उबैदा का गिरोह सख्त मुसीबत में

गिरफ्तार था। रूमी बडे जौशो खरोश में थे और उन को इस्लामी लश्कर पर गालिब हो जाने का यकीन था कि दफ्अतन हज़्रत सईद और हज़्रत ज़िरार के लश्कर तक्बीरो तहलील की सदाअें बुलन्द करते हुए आ पहुंचे। रूमी उस वक्त किल्ले की दीवार और इस्लामी लश्कर के कैम्प के दरमियान थे। अब सूरते हाल यह हूई कि हज़्रत सईद और हज़्रत ज़िरार के लश्कर किल्ले की दीवार की तरफ से आए, लेहाज़ा अब रूमी लश्कर दो सम्त से इस्लामी लश्कर के बीच में वाकेअ हो गया। इस्लामी लश्कर के कैम्प की सम्त हज़्रत अबू उबैदा का लश्कर था और किल्ले की दीवार की सम्त में सईद और हज़्रत ज़िरार के लश्कर हाइल हैं। रूमी लश्कर अब न आगे बढ सक्ता था और न पीछे हट सक्ता था। दोनों तरफ से मुजाहिदों ने शदीद हम्ला शुरू किया। कुमुक आ जाने की इत्तेलाअ मिलते ही हज़्रत अबू उबैदा का लश्कर अब दोहरे जौश से किताल करने लगा। किल्ले की दीवार की जानिब से हज़्रत सईद और हज़्रत ज़िरार ने ऐसा सख्त हम्ला किया कि हाकिम हरबीस बोखला गया। दोनों सम्त से मुजाहिदों ने रूमियों के सरों को तन से जुदा करना शुरू किया। हाकिम हरबीस ने चिल्ला कर रूमियों से कहा कि अरबों ने मक्रो फरेब कर के हम को इस तरह नर्गा में लिया है कि हमारे और किल्ले के दरमियान उन का लश्कर हाइल हो गया है। लेहाज़ा अब सख्ती से लडो और दादे शुजाअत दो, लैकिन रूमी ज़ियादह वक्त ठहर न सके, पीठ दिखा कर भागना शुरू किया। लैकिन किल्ले की तरफ भी भाग न सक्ते थे क्यूं कि वहां हज़्रत सईद और हज़्रत ज़िरार का लश्कर मौत का तमांचा मारने के लिये खडा हुवा था। लेहाज़ा रूमी लश्कर के सिपाही मैदाने जंग के बाअीं जानिब से पहाड की तरफ भागे। हाकिम हरबीस भी फरार होने वालों में शामिल था। हालां कि मुजाहिदों ने हाकिम हरबीस को ढूंढ कर खत्म कर देने की बहुत कोशिश की, लैकिन वह अपने मुहाफिज़ों के दरमियान महसूर होने की वजह से हाथ न आया। और पहाड की तरफ भाग निकलने में काम्याब हो गया। हाकिम हरबीस मग्रूर रूमियों को ले कर पहाड पर चढ गया और पहाड पर वाकेअ एक मज़्बूत गार के हिसार में पनाह गुज़ीं हो गया।

हज़्रत सईद बिन ज़ैद का हाकिम हरबीस का पहाड तक तआककुब

जब बाबे वस्ता पर रूमियों ने हज़ीमत उठाई और हाकिम हरबीस अपने साथियों के हमराह पहाड के हिसार की तरफ भाग रहा था, तो हज़्रत सईद बिन ज़ैद ने उस को भागते हुए देख लिया। लेहाज़ा हज़्रत सईद पांच सौ (500) सवारों को ले कर तआककुब करते

मर्दाने अरब..... हिस्सा अव्वल

हुए पहाड के हिसार तक पहोंच गए। हज़ारों की ता'दाद में रूमी पहाड के हिसार में पनाह गुज़ीं थे। मुजाहिदों ने पहाड के हिसार को चारों तरफ से घेर लिया। और तमाम रूमी हिसार में कैद की हालत में थे। किसी के साथ खाना और पानी नहीं था, लेहाज़ा सख्त तक्लीफ में मुब्तला थे, लैकिन मुजाहिदों के खौफ से हिसार के बाहर निकलने की किसी की भी हिम्मत नहीं होती थी। कुछ अर्सा इस तरह हिसार में ठहरने के बा'द जब रूमियों को पता चला कि हम को घेरने वाले मुसलमान बहुत ही कलील ता'दाद में हैं और हम हज़ारों की ता'दाद में हैं, तो उन को जुर्अत हूई। हथियार तो उन के साथ मौजूद थे, लेहाज़ा वह तमाम मुज्तमेअ हो कर हिसार से निकले और दफ्अतन मुजाहिदों पर हम्ला कर दिया। रूमियों ने अपनी जान पर खैल कर हम्ला किया था और मौत की लडाई लडने पर आमादा हुए थे, लैकिन मुजाहिदों ने साबित कदमी से मुकाबला कर के लडाई के फन दिखाए। फरीकैन में शिद्दत की जंग जारी थी और मुजाहेदीन इब्तिलाए मुसीबत व परेशानी में थे। कईं मुजाहिद शहीद हुए और बहुत से ज़ख्मी।

हज़्रत मुस्अब बिन अदी तनूखी भी हज़्रत सईद बिन ज़ैद के हमराह थे। जब उन्हों ने देखा कि रूमियों का हम्ला बहुत शदीद है और उन्हों ने यह तमाअ की है कि तमाम मुजाहिदों को लुक्म-ए अजल बना दें, तो वह मैदाने जंग से निकल कर तैज़ रफ्तार घोडे पर बा'ल्बक के किल्ले के बाबे वस्ता पर आए और आते ही ज़ौर ज़ौर से पुकारना शुरू किया कि ऐ गिरोहे मोमेनीन ! तुम्हारे भाई सख्त मुसीबत में गिरफ्तार हैं उन की मदद के लिये जल्दी चलो। हज़्रत अबू उबैदा ने जब यह आवाज़ सुनी तो हज़्रत मुस्अब बिन अदी की तरफ मुतवज्जेह हुए और पूछा कि ऐ इब्ने अदी ! तुम्हारे पीछे क्या हाल है ? हज़्रत मुस्अब ने तमाम कैफियत बताई। हज़्रत अबू उबैदा ने हज़्रत ज़िरार बिन अज़्वर को हुक्म दिया कि आप अपने साथियों के साथ फौरन पहाड के हिसार पर पहोंच कर अपने दीनी भाइयों की मदद करो। हज़्रत अबू उबैदा ने हज़्रत ज़िरार के साथ तीर अन्दाज़ों के गिरोह को भी रवाना फरमाया। हज़्रत ज़िरार बिन अज़्वर जब पहाड की चोटी पर पहुंचे, तो वहां बडा नाजुक मरहला दर-पैश था। इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों को रूमियों ने चारों तरफ से घैर रखा था। इस्लामी लश्कर के सत्तर मुजाहिदों को रूमियों ने शहीद कर दिया था और बाकी तमाम मुजाहिद बुरी तरह ज़ख्मी थे, कुछ बे-होश पडे थे। उन तमाम को भी शहीद कर देने की रूमियों ने तमाअ की थी कि ऐन वक्त पर हज़्रत ज़िरार बिन अज़्वर अपने साथियों के हमराह पहोंच गए और जाते ही मिस्ले शैर रूमियों पर टूट पडे। शम्शीर ज़नी और नैज़ा बाज़ी के जौहर दिखा कर कसीर ता'दाद में रूमियों को खाक व खून में मिला दिया। हाकिम

हरबीस अपने साथियों को ले कर वापस हिसार में घुस गया। मुजाहिदों ने फिर एक मरतबा रूमियों को हिसार में कैद जैसी हालत में कर दिया। मुजाहिदों ने हिसार के गिर्द सख्त पहरा बिठा दिया, कोई भी रूमी हिसार से अपना सर निकालता तो मुजाहिद फौरन तीर चलाते और उस को ज़ख्मी या कुश्ता कर देते थे।

जब शाम का वक्त करीब हुवा तो हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत सईद बिन ज़ैद को कहला भेजा कि रात के वक्त हिसार का पहरा देने में बहुत ही एहतियात रखें और हिसार से एक भी रूमी भागने न पाए। हज़रत सईद ने सौ मुजाहिदों को लक्डियां जमा करने भेजा। थोडी दैर में लक्डियों का ढैर जमा हो गया। हज़रत सईद ने रात भर लक्डियां जलाए रखने का हुक्म दिया। ताकि सख्त सर्दी में मुजाहेदीन अपने बदन को सेंक्ते रहें और आग की रौशनी में रूमियों पर कडी निगरानी भी की जा सके, ताकि किसी को अंधेरे का फाइदा उठा कर भागने का मौका' न मिले। हज़रत सईद बिन ज़ैद रात भर अपने साथियों के हमराह हिसार के गिर्द तक्बीरो तहलील कहते हुए घूमते रहे और सख्त निगरानी की खिदमत अंजाम दी। हिसार में छुपे हुए रूमियों की हालत बहुत खराब थी। भूक और प्यास की वजह से उन का बुरा हाल था। इलावा अज़ीं सख्त सर्दी में उन के जिस्म शल हो गए थे, क्यूंकि किसी के साथ ओढना बिछौना नहीं था। बडी मुश्किल से तौबा तिल्ला कर के रात बसर की। सुब्ह हाकिम हरबीस ने अपने बतारका से मश्वरा करते हुए कहा कि अगर इसी तरह हम हिसार में मुकय्यद रहे तो हम तमाम भूक, प्यास और सर्दी की वजह से हलाक हो जाऐंगे। मेरी राए यह है कि अब हम उन अरबों से सुलह कर लें। तमाम ने हरबीस हाकिम की राए से इत्तेफाक किया। चुनांचे हाकिम हरबीस हिसार के किनारे पर आया और अपना सर बाहर निकाल कर पुकार कर कहा कि ऐ गिरोहे अरब ! मैं हाकिम हरबीस हूं और तुम से कुछ कहना चाहता हूं। चंद मुजाहेदीन अपने साथ तर्जुमान ले कर उस के करीब गए और ब-वास्तए तर्जुमान पूछा कि क्या कहना चाहता है ? हरबीस ने कहा कि अगर तुम्हारे सरदार मुझ को अमान दें तो मैं उन के सामने आ कर कुछ सुलह के तअल्लुक से बात करना चाहता हूं।

तर्जुमान ने हज़रत सईद बिन ज़ैद को सूरते हाल से आगाह किया। हज़रत सईद ने फरमाया कि हिसार से मेरे पास आने और फिर मुझ से गुफ्तगू करने के बा'द वापस हिसार में जाने तक इस के लिये अमान है। तर्जुमान ने आ कर हरबीस को मुत्तलेअ किया। चुनांचे हाकिम हरबीस ने अपना कीमती लिबास उतार कर बकरियों और भेडों के ऊन से बना लिबास ज़ैब तन किया और अपने हथियार हिसार में छोड कर खाली हाथ ब-हालते ज़िल्लत

हज़रत सईद बिन ज़ैद के पास आया। हाकिम हरबीस ने सूफ का लिबास अपनी ज़िल्लत व ख्वारी के इज़्हार के लिये पहना था। हरबीस ने हज़रत सईद से कहा कि मैं ने अब जंग का इरादा बिल्कुल तर्क कर दिया है और तुम्हारे पास इस लिये हाज़िर हुवा हूं कि अपने और अह्ले बा'ल्बक के लिये तुम से सुलह कर के अमान हासिल करूं। हज़रत सईद ने फरमाया कि सुलह दो शर्तों पर मुम्किन है। या तो तुम हमारे दीन में दाखिल हो जाओ, इस सूरत में तुम्हारा और हमारा हाल यक्सां हो जाएगा और अगर तुम को दीने इस्लाम इख्तेयार करने से इन्कार है तो जिज़्या अदा करो और साथ में यह भी अह्द व पैमान करो कि इस्लामी लश्कर की मुखालिफत न करोगे और न ही हमारे दुश्मनों का साथ दोगे। हाकिम हरबीस ने कहा कि मुझे तुम्हारी दूसरी शर्त मन्ज़ूर है, मैं इसी वक्त सुलह करने पर आमादा हूं। हज़रत सईद ने फरमाया कि सुलह करने का इख्तेयार सिर्फ हमारे सरदार हज़रत अबू उबैदा को है। अगर सुलह करनी है तो उन की खिदमत में जाना पडेगा। अगर तुम आना चाहो तो में तुम को अपनी ज़िम्मेदारी और अमान में ले चलूंगा। अगर किसी वजह से सुलह वाकेअ न हूई तब भी तुम को पहाड के हिसार तक वापस अपनी हिफाज़त में पहुंचा देने का वा'दा करता हूं।

हज़रत सईद बिन ज़ैद के वा'दे पर ए'तेमाद कर के हरबीस हज़रत अबू उबैदा के पास आने के लिये रज़ा मन्द हो गया। हज़रत सईद उस को ले कर बा'ल्बक के किल्ले पर आए। उस वक्त हज़रत अबू उबैदा के हुक्म से इस्लामी लश्कर ने बा'ल्बक के किल्ले पर सख्त हम्ला जारी रखा था। अह्ले बा'ल्बक किल्ले की दीवार से रोते और चिल्लाते थे और शहर में लडने वाले सिपाही भी मौजूद न थे। शहरी और ताजिर मर्द, बचे, बुढ्ढे और औरतें मारे डर के थर थर कांपते थे और रो रो कर अपना सीना और सर पीटते थे। इस्लामी लश्कर के हम्ले का जवाब देने की उन में मुत्लक सकत व इस्तिताअत न थी। जब हज़रत सईद बिन ज़ैद के हमराह आ कर हाकिम हरबीस ने अह्ले शहर की परागन्दा हालत देखी तो अफ्सोस व रंज के आलम में सर को हिलाने लगा और अपने दांतों से अपनी ही उंग्लियां काटने लगा।

फतहे किल्ल-ऐ बा'ल्बक

जब हाकिम हरबीस हज़रत सईद बिन ज़ैद के साथ हज़रत अबू उबैदा के पास आया, तो हज़रत मिरकाल बिन उतबा किल्ले की दीवार के करीब गए और अह्ले बा'ल्बक से कहा कि तुम्हारा सरदार इस वक्त हमारे सरदार के पास सुलह के लिये हाज़िर हुवा है। ऐ सलीब के पूजने वालो ! अगर तुम हम से सुलह न भी करते, तब भी हम तुम्हारे शहर पर काबिज़

हो जाते । क्यूं कि हमारे मुक़द्दस नबी, हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम ने हम को पूरा मुल्के शाम फतह होने के वा'दए इलाही की बशारत दी है और हमारे आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम की ज़बाने अक्दस से निकली हूई बात को अल्लाह तबारक व तआला पूरी फरमाता है :

मैं तो मालिक ही कहूंगा कि हो मालिक के हबीब
या'नी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा तेरा

(अज़ : – इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

अह्ले बा'ल्बक ने कहा कि हमारे बतरीक हरबीस ने ख्वाह म ख्वाह जंग मौल ले कर हम को हलाकत में डाल दिया है अगर वह पहले से ही सुलह पर आमादा हो जाता तो हम को यह दिन देखने की नौबत न आती । फिर इन्हों ने खौफ व डर की वजह से रोना और चीखना शुरू किया और बुलन्द आवाज़ से लफून लफून या'नी अमान,अमान पुकार कर अमान तलब करने लगे ।

हाकिम हरबीस ने हज़रत अबू उबैदा से एक अजीब बात कही :-

सुलह की गुफ्तगू का आगाज़ करने से पहले बा'ल्बक के हाकिम हरबीस ने हज़रत अबू उबैदा से एक अजीब व गरीब बात कही । जो अल्लामा वाकदी की किताब में यूं दर्ज है :

''और कहा उस ने कि ब-तहकीक मैं ने जाना था इस अम्र को कि तुम बहुत हो ता'दाद में । इस से कि जितने तुम हो और ख्याल में आता और मा'लूम होता था हम को तुम्हारी लडाई के वक्त, और हंगाम उठाने शिद्दत के तुम्हारी लडाई में, यह कि तुम लोग ब ता'दाद संगरेज़ों के हो कसरत में, और हम देखते थे सब्ज़ घोडों को कि सर उन के हवा से मिले हुए, और उन पर लोग सब्ज़ पौश निशान लिये हुए सवार होते थे । पस जब आया मैं तुम्हारे बीच में, नहीं देखता हूं मैं कोई चीज़ इस में की, और देखता हूं मैं तुम लोगों को अब थोडी ता'दाद में, और नहीं जानता हूं मैं के क्या काम किया उन लोगों ने और क्या हुए । आया इन्हीं लोगों को भेजा है तुम ने ब-जानिब ऐनुल

बहर या और किसी तरफ । पस सामने आए उस के अबू उबैदा बिन जर्राह रदियल्लाहो तआला अन्हो और कहा मुतर्जिम से कि कह तू इस से कि सख्ती हो तुझ पर, हम लोग गिरोहे मुसलमानों के हैं, बहुत दिखलाता है अल्लाह तआला हमारी ता'दाद को मुश्रेकीन की आंखों में, और मदद देता है हम को साथ सर फरिश्तों के, जैसा कि उस ने हमारे साथ बद्र की लडाई में किया था ।''

(हवाला : – फुतूहुश्शाम, अज़ अल्लामा वाकदी, सफहा : 182)

या'नी हाकिम हरबीस ने कहा कि जब हमारी और तुम्हारी जंग हो रही थी तब मैं ने देखा था कि तुम्हारे लश्कर की ता'दाद बहुत ज़ियादह है । सब्ज़ रंग के घोडों पर सब्ज़ कपडों में मल्बूस और हाथ में निशान ले कर लडने वाले काफी ता'दाद में नज़र आते थे, लैकिन इस वक्त उन में का कोई एक भी नज़र नहीं आता और तुम्हारी ता'दाद भी बहुत कम मा'लूम होती है । हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि अल्लाह तआला दुश्मनों की नज़र में हमारी ता'दाद बहुत ज़ियादह दिखाता है और जिस तरह जंगे बद्र में फरिश्तों के ज़रीए हमारी मदद फरमाई थी, इसी तरह हमारी हर जगह मदद फरमाता है । हज़रत अबू उबैदा ने मज़ीद फरमाया कि अल्लाह तआला हम मुसलमानों पर एहसान और करम फरमा कर तुम्हारी बडी बडी जमाअतों पर हम को गल्बा अता फरमाता है । क्यूंकि अल्लाह तआला हमारा वाली और मददगार है जब कि तुम्हारा मददगार कोई नहीं :

कुरआने मजीद में इर्शादे बारी तआला है :

"ذَالِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ اَنَّ الْكَافِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ"

(सूरह मुहम्मद, आयत : 11)

तर्जुमा : ''इस लिये कि मुसलमान का मौला अल्लाह है और काफिरों का कोई मौला नहीं ।'' (कन्जुल ईमान)

हाकिम हरबीस ने हज़रत अबू उबैदा को जवाब देते हुए कहा कि यही वजह है कि तुम ने मुल्के शाम को फतह किया है । अह्ले फारस, तुर्क और जरामका ने जब हमारे मुल्क पर हम्ला किया था, तो हम ने उन को आजिज़ कर के भगा दिया था । इलावा अज़ीं हमारा शहर बा'ल्बक ऐसे मज़बूत किल्ले वाला शहर है कि वह कभी भी मफ्तूह न हो सके, क्यूं

कि इस शहर को हज़रत सुलैमान बिन दाउद अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम ने अपने रहने के लिये ता'मीर फरमाया है। वह इसी शहर में रहते थे और उन का खज़ाना और उन का साज़ो सामान भी इसी शहर में होता था। अगर हम खुदा की ना-फरमानी न करते और मा'सियत व ज़ुल्म में मुब्तला न होते, तो तुम सौ (१००) बरस तक भी इस शहर को फतह न कर सक्ते, लैकिन अब तो जो हुवा सो हुवा। लेहाज़ा मेरी आप से दरख्वास्त है कि तुम हम से मुसालहत कर लो।

अल-किस्सा ! हज़रत अबू उबैदा सुलह करने पर रज़ा मन्द हो गए। दो हज़ार उकिया सोना, चार हज़ार उकिया चांदी, दो हज़ार रैश्मी कपडे के थान, पांच हज़ार तलवारें, पहाड की चोटी के हिसार में महसूर रूमी सिपाहियों का तमाम हथियार इस्लामी लश्कर को देने की शर्त पर सुलह हूई।

हज़रत अबू उबैदा ने हाकिम हरबीस से फरमाया कि ज़मीन का महसूल और जिज़्या, यह दोनों तुम से आइन्दा साल से वुसूल किये जाअेंगे। सुलह कर लेने के बा'द तुम किसी बादशाह या हाकिमे शहर से खत व किताबत या किसी किस्म का कोई राब्ता न रखोगे। न हमारे दुश्मन की मदद करोगे और न ही हमारे दुश्मनों को पनाह दोगे और कोई नया कनीसा या गिर्जा भी ता'मीर नहीं करोगे। हाकिम हरबीस ने इन तमाम शराइत को मन्ज़ूर करते हुए अपनी एक शर्त पैश की कि सुलह के बा'द तुम शहर में न ठहरोगे। जिन लोगों को तुम हमारी निगरानी और हिफाज़त के लिये मुकर्रर करोगे, वह किल्ले के बाहर ही ठहरें। उन लोगों के लिये किल्ले के बाहर हम एक बाज़ार काइम कर देंगे, जिस में ज़रुरियाते ज़िन्दगी की तमाम चीज़ें मिलती रहेंगीं। यह तज्वीज़ मैं ने इस लिये पैश की है कि अगर आप के आदमी शहर के अन्दर रहें और कभी किसी से सख्त कलामी की वजह से तनाज़ोअ पैदा हो जाए, तो फसाद की नौबत आ जाएगी और फिर हम एक दूसरे पर बे वफाई, बद-अहदी और अह्द शिकनी का इल्ज़ाम लगाअेंगे। लेहाज़ा पहले से ही एहतियात बरत कर यह अम्र तय कर लें कि तुम्हारे आदमी किल्ले के बाहर ही मुकीम रहें, ताकि फित्ना व फसाद का दरवाज़ा ही कभी न खुले। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि तुम्हारी यह शर्त मुझ को मन्ज़ूर है। हम को तुम्हारे शहर में मुकीम रहने की कोई हाजत नहीं।

इस करार दाद के बा'द हरबीस किल्ले की दीवार के करीब गया। हरबीस ने किल्ले की दीवार पर खडे लोगों को पुकार कर कहा कि अब घबराने की कोई बात नहीं, सुलह हो गई है। फिर हरबीस ने सुलह के तमाम शराइत अपनी कौम को सुनाए। कौम ने कहा कि तुम

ने जिस कद्र माल मुसलमानों को देने का फैसला किया है हम इत्ना माल देने की ताकत नहीं रखते। हरबीस ने कहा कि मैं तमाम बोझ तुम पर नहीं डालूंगा बल्कि कुल माल का चौथाई हिस्सा अपने ज़ाती माल से अदा करूंगा। हरबीस की इस सखावत पर अह्ले बा'ल्बक खुश हो गए और उन्हों ने शहर के दरवाज़े खोल दिये। हरबीस शहर में दाखिल हुवा, लैकिन शर्त के मुताबिक इस्लामी लश्कर का एक भी शख्स शहर में दाखिल नहीं हुवा। बल्कि तमाम मुजाहेदीन किल्ले के बाहर मुकीम रहे।

फिर हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत सईद बिन ज़ैद को हुक्म दिया कि पहाड की चोटी के हिसार में जो भी रूमी सिपाही मुकय्यद हैं, उन्हें मअ माल व सामान और हथियारों के इस्लामी लश्कर के कैम्प में ले आओ। हुक्म के ब-मुजिब तमाम रूमी सिपाही लाए गए। सुलह की शर्त के मुताबिक उन तमाम का हथियार ले लिया गया और उन तमाम को यर्गमाल बना कर इस्लामी लश्कर के कैम्प में कैद रखा गया। बारह दिन के बा'द सुलह की शर्त में जो माल देने का वा'दा हुवा था, हरबीस वह माल ले कर हाज़िर हुवा। हज़रत अबू उबैदा ने तमाम रूमी नज़र-बन्द कैदियों को रेहा फरमा दिया। फिर हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत राफेअ बिन अब्दुल्लाह सहमी को पांच सौ सवार और चार सौ पैदल सिपाही मिला कर कुल नौ सौ लोगों पर सरदार मुकर्रर कर के उन को बा'ल्बक के किल्ले के बाहर ठहराया, ताकि वह खिराज व जिज़्या वुसूल करें, अह्ले बा'ल्बक की निगरानी व हिफाज़त करें और उन को दीने इस्लाम की खूबियों से वाकिफ कराते रहें।

रवाना होते वक्त हज़रत अबू उबैदा ने आयाते कुरआन की रौशनी में पन्दो नसाएह पर मुश्तमिल हिदायात व ताकीद फरमाई और अद्ल व इन्साफ करने, तवाज़ोअ व इन्किसारी इख्तेयार करने, इबादत व रियाज़त में रग्बत करने और ज़ुल्म व सितम, तकब्बुर व गुरूर और गुनाह व मा'सियत से एहतराज़ो इजतेनाब करने की नसीहत फरमाई और रूमियों के साथ किये हुए अह्द व पैमान पर काइम रह कर अह्द शिकनी और वा'दा खिलाफी से बचने की ताकीद फरमाई और खुसूसन इस बात पर ज़ोर दिया कि कोई बा'ल्बक शहर में दाखिल न हो। क्यूं कि हम ने उन से सुलह करते वक्त इस शर्त पर अमल करने का वा'दा किया है। फिर उन को दुआए खैरो बरकत से नवाज़ कर हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर को ले कर हुमुस की जानिब रवाना हुए।

अब तक इस्लामी लश्कर के हाथों फतह होने वाले मकामात :-

(1) अरेका (2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हवरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क (9) हिस्ने अबील कुद्स (10) जोसिया (11) हुमुस (12) शिरज़ (13) रुस्तन (14) हमात (15) कन्सरीन (16) बा'ल्बक

अहले बा'ल्बक की दरख्वास्त पर मुजाहिदों का शहर में दुखूल :-

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने हज़रत राफेअ बिन अब्दुल्लाह को जिन मुजाहिदों के हमराह बा'ल्बक के किल्ले के बाहर ठहरने का हुक्म दिया था, इस की हज़रत राफेअ ने सख्ती से पाबन्दी की। किल्ले के बाहर मुजाहिदों ने खैमे नस्ब कर लिये थे। रूमियों ने मुजाहिदों की फिरोदगाह के करीब एक बाज़ार काइम कर दिया था। मुजाहेदीन ज़रुरियाते ज़िन्दगी की अश्याए सरफ इसी बाज़ार से मौल लेते थे और कोई मुजाहिद शहर में पाऊं तक नहीं रखता था। इलावा अज़ीं हज़रत राफेअ बिन अब्दुल्लाह अपने मा-तहत मुजाहिदों को सौ सौ के गिरोह में अलग अलग मकामात पर ताख्त व ताराज करने भेजा करते थे और जो माले गनीमत हासिल होता था, इसे भी किल्ले के बाहर वाले बाज़ार में फरोख्त करते थे। लेहाज़ा इस बाज़ार में खरीदो फरोख्त का तिजारती मुआमला बहुत अच्छी तरह चला और रूमी ताजिरों ने काफी मुनाफा हासिल किया। रूमी ताजिरों ने तिजारती मुआमले में मुजाहिदों की दयानतदारी, रास्त गोई, मुरव्वतो एहसान, अद्ल व इन्साफ, खुश मुआमलगी और हुस्ने सुलूक से बहुत ही मुतअस्सिर हुए। इसी तरह बगैर किसी इख्तिलाफ व तनाज़ोअ के आराम से दिन कटने लगे और अहले बा'ल्बक मुजाहिदों के अख्लाकी महासिन की ता'रीफ व तौसीफ करने लगे।

एक दिन हाकिम हरबीस ने तमाम ताजिरों को बडे कनीसा में जमा कर के कहा कि अरबों से सुलह करने की मैं ने तुम को तर्गीब दी थी और सुलह के इवज़ ज़रे फिद्या अदा करने में अपनी तरफ से चौथाई माल देने की कुरबानी दी है। लैकिन उस वक्त मैं हाकिमे शहर था और मेरी आमदनी के वसीअ ज़राए' थे, लैकिन अब मैं भी तुम्हारी तरह आम आदमी बन गया हूं। मेरी हुक्मरानी खत्म हो गई। आमदनी के ज़राए' और वसाइल भी बाकी न रहे। ज़रीयए मआश कुछ नहीं रहा और मैं मआशी तंगी से दो चार हूं। यह सूरत दर-पैश होने की सिर्फ एक ही वजह है कि अहले बा'ल्बक की खैर-ख्वाही के लिये मैं ने फराख दिली से माली कुरबानी दे दी। और तुम उन अरबों से काफी नफा कमा रहे हो, लेहाज़ा तुम मुझे भी अपनी आमदनी में शरीक कर लो ताकि जो कुछ मैं ने सुलह के ज़िम्न में खर्च किया है, इस का मुझे

मुआवज़ा और ने'मल बदल मिल जाए। हाकिम हरबीस की इस दरख्वास्त पर तमाम ताजिरों ने मुत्तफिका तौर पर यह तय किया कि हर ताजिर अपनी खालिस आमदनी से दसवां हिस्सा हाकिम हरबीस को देता रहेगा। हरबीस ने ताजिरों से आमदनी का दसवां हिस्सा वुसूल करने के लिये एक मुलाज़िम मुकर्रर कर दिया, जो ताजिरों से उश्र (10%) वुसूल कर के हरबीस को पहुंचा देता। थोडे ही अर्सा में हरबीस के पास बहुत माल जमा हो गया और उस की तिजोरी छलक गई। अब हाकिम हरबीस की लालच और तमाअ मज़ीद बढी, लेहाज़ा उस ने फिर एक मरतबा तमाम ताजिरों को कनीसा में जमा कर के कहा कि दसवें हिस्से में मेरा काम नहीं चल सक्ता। यह तो बहुत थोडा है, लेहाज़ा अब से तुम मुझे चौथाई हिस्सा (25%) आमदनी का दिया करो। हरबीस की इस बेजा तलब पर बा'ल्बक के ताजिरों ने सख्त मुखालिफत और इन्कार किया, लैकिन हाकिम हरबीस अपने हमनवाओं और हामियों के ज़ौर पर अपनी बात पर अटल रहा और चौथाई हिस्सा लेने पर मुसिर रहा। नतीजा यह हुवा कि फरीकैन में बहस व तकरार का आगाज़ हुवा और फिर गुफ्तगू में तैज़ी और तुर्शी आई और नौबत तू तू मैं मैं तक पहोंची। लेहाज़ा एक ज़बरदस्त शौरो गुल बुलन्द हुवा और एक हंगामा मच गया। किल्ले के बाहर मुजाहिदों ने जब शहर में शौरो गुल बुलन्द होता सुना, तो तमाम मुजाहिद हज़रत राफेअ बिन अब्दुल्लाह के पास आए और इत्तेलाअ दी कि शहर में हंगामा बर्पा हो गया है। अगर आप इजाज़त दें, तो हम जा कर मा'लूम कर आअें के मुआमला क्या है ? हज़रत राफेअ ने जवाब दिया कि मैं भी हंगामे का शौर सुन रहा हूं, लैकिन हमारे सरदार ने उन से सुलह करते वक्त इस बात का वा'दा दिया है कि हमारा कोई भी आदमी शहर में दाखिल नहीं होगा, लेहाज़ा हमारे लिये जाइज़ नहीं कि हम शहर में दाखिल हों।

थोडी दैर के बा'द चंद रूमी ताजिर और रोउसाए कौम हज़रत राफेअ बिन अब्दुल्लाह के पास आए और कहा कि ऐ अरबी बिरादर ! हम तुम्हारे पास इस लिये आए हैं कि तुम हमारा इन्साफ कर दो। हज़रत राफेअ ने पूछा कि मुआमला क्या है ? रूमियों ने हाकिम हरबीस की हिस्सेदारी की तमाम रूदाद कह सुनाई। हज़रत राफेअ ने पूछा कि अब तुम क्या चाहते हो ? इन्हों ने कहा ऐ बिरादर अरबी ! हमारे कुछ जौशीले नौ-जवानों ने तैश में आ कर हरबीस को कत्ल कर डाला है, अब तुम हमारे शहर में दाखिल हो कर शहर का इन्तेज़ाम अपने हाथ में ले लो। हज़रत राफेअ

ने जवाब देते हुए फरमाया हमारे सरदार हज़रत अबू उबैदा ने हम को शहर में दाखिल होने की मुमानेअत फरमाई है । लेहाज़ा जब तक उन से इजाज़त नहीं मिलती, हम शहर में दाखिल नहीं हो सक्ते । हम अपने सरदार की अदम मौजूदगी में भी उन के हुक्म की खिलाफ वर्ज़ी नहीं कर सक्ते । अह्ले बा'ल्बक ने हज़रत राफेअ से बहुत ही मिन्नत समाजत की मगर हज़रत राफेअ टस से मस नहीं हुए और हज़रत अबू उबैदा की इजाज़त के बगैर शहर में दाखिल होने से इन्कार कर दिया । तमाम मुजाहिदों की पाबंदी-ए अह्द और वफादारी देख कर रूमी दादे तह्सीन देने लगे । फिर हज़रत राफेअ ने हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में ब-ज़रीए कासिद खत लिख कर सूरते हाल से आगाह किया । हज़रत अबू उबैदा ने जवाब लिखा कि जब अह्ले शहर तुम से शहर में दाखिल होने का इस्रार करते हैं, तो कोई मुज़ाइका नहीं है और मेरी तरफ से तुम को शहर में दाखिल होने की इजाज़त है । चुनांचे हज़रत राफेअ बिन अब्दुल्लाह अपने हमराहियों के साथ किल्ल-ए बा'ल्बक में दाखिल हुए और शहर के इन्तिज़ामी उमूर संभाल लिये ।

जंगे हुमुस (बार अव्वल)

कन्सरीन की फतह के बा'द हज़रत अबू उबैदा बा'ल्बक की तरफ गए और हज़रत खालिद बिन वलीद को हुमुस के किल्ले का मुहासरा करने के लिये भेज दिया । जंगे बा'ल्बक के वक्त हज़रत खालिद हुमुस में ही थे । **हुमुस** के किल्ले में रूमियों ने वाफिर ता'दाद में सामाने जंग, गल्ला, और दीगर अश्याए सरफ जमा कर रखी थीं । नीज़ हिरक्ल बादशाह ने हुमुस की हिफाज़त के लिये मुरीस नाम के बतरीक को मअ लश्कर हुमुस भेज दिया था । बतरीक मुरीस हिरक्ल बादशाह के खान्दान से तअल्लुक रखता था । वह लडाई के फन का ज़र्बुल मसल माहिर था । उस की दिलैरी और बहादुरी के पूरे मुल्के शाम में गीत गाय जाते थे । जब बा'ल्बक का किल्ला फतह हो गया, तो हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद बिन वलीद की कुमुक करने के इरादे से इस्लामी लश्कर को हुमुस की तरफ कूच का हुक्म दिया । हज़रत अबू उबैदा **बा'ल्बक** से रवाना हो कर **जोसिया** नामी मकाम पर पहुंचे । जोसिया वालों ने इस्लामी लश्कर से पहले सुलह कर ली थी, लैकिन अब सुलह की मुद्दत पूरी होने वाली थी । हाकिमे शहरे जोसिया को जब मा'लूम हुवा कि इस्लामी लश्कर जोसिया के करीब ठहरा हुवा है, तो वह बहुत सारे तहाईफो हदाया ले कर हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में हाज़िर हुवा और सुलह की तज्दीद की । और बहुत ही इस्रार कर के इस्लामी लश्कर को जोसिया शहर में ले आया और एक दिन ब-तौर मेहमान ठहरा कर खातिर तवाज़ोअ की । जोसिया में एक दिन कयाम करने के बा'द हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर को ले कर **हुमुस** की तरफ आगे बढे और जब ज़राआ नामी मकाम पर पहुंचे तो इन्हों ने इस्लामी लश्कर को वहां ठहरने का हुक्म दिया । फिर हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत मैसरा बिन मस्रूक अबसी को पांच हज़ार सवारों के साथ मुकद्दमतुल जैश की हैसियत से ब-जानिब हुमुस रवाना किया । उन के रवाना होने के बा'द हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर और हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब ज़ुबैदी को यके बा'द दीगरे पांच पांच सवारों के साथ हुमुस रवाना किया । फिर बाकी मांदा लश्कर के साथ हज़रत अबू उबैदा भी हुमुस की तरफ रवाना हुए । हज़रत खालिद बिन वलीद पहले ही से हुमुस में मौजूद थे । इन्हों ने इस्लामी लश्कर की तमाम किस्तों का इस्तेक्बाल किया । इस्लामी लश्कर ने नहर के किनारे अपना कैम्प काइम किया ।

अहले हुमुस को हज़रत अबू उबैदा का खत और जंग की तैयारियां

हज़रत अबू उबैदा ने हुमुस के हाकिम मुरीस के नाम एक खत लिखा। उस का मज़्मून बे ऐनिहि बा'ल्बक वालों के खत की तरह था। हज़रत अबू उबैदा ने एक रूमी मुआहदी को वह खत दे कर हाकिमे हुमुस की तरफ रवाना किया। वह रूमी मुआहदी किल्ले की दीवार के करीब गया। हुमुस के किल्ले की दीवार पर हाकिम मुरीस ने तीर अन्दाज़ों को तईनात कर रखा था। तीर अन्दाज़ों ने रूमी मुआहदी को किल्ले की दीवार के करीब आता देख कर कमान में तीर चढाए और मुआहदी पर निशाना बांधा और तीर चलाने का इरादा करते थे कि मुआहदी ने चिल्ला कर कहा कि ऐ मेरी कौम ! अपने हाथ रोको और तवक्कुफ करो। मैं भी तुम्हारी कौम का फर्द हूं। मेरे पास बतरीक मुरीस के नाम इस्लामी लश्कर के सरदार का खत है। तीर अन्दाज़ों ने बतरीक मुरीस को इस अम्र की इत्तेलाअ दी तो उस ने कासिद को रस्सी के ज़रीए किल्ले के ऊपर खींच लेने का हुक्म दिया। फौरन हुक्म की ता'मील की गई। मुआहदी कासिद ने जाने के साथ ही हाकिम मुरीस को ता'ज़ीम का सजदा किया और फिर खत दिया। मुरीस ने मुआहदी से पूछा कि क्या तूं अरबों के दीन में दाखिल हो गया है ? मुआहदी ने कहा नहीं बल्कि मैं दीने मसीह पर काइम हूं, अलबत्ता मैं ने अपने और अहलो अयाल के लिये उन से अमान हासिल कर ली है। फिर इस मुआहदी ने इस्लामी लश्कर की ता'रीफ करते हुए कहा कि मैं ने मुसलमानों को नैक दिल, बा-मुरव्वत, रहम दिल, वा'दे के सच्चे, अद्ल व इन्साफ करने वाले और ज़ुल्म व ज़ियादती से इजतिनाब करने वाले पाए हैं। लडाई में उन की दिलैरी का यह आलम है कि वह मौत की बिल्कुल परवाह नहीं करते। जेहाद करते हुए मर जाना उन के नज़दीक ज़िन्दगी से बेहतर है। कसम है हक्के मसीह की ! मेरे दिल में कौमे रूम की मुहब्बत व हमदर्दी है इस लिये मैं तुम को मश्वरा देता हूं कि तुम अरबों से जंग मत करो, बल्कि जिज़्या दे कर उन से सुलह कर लो, क्यूं कि मैं डरता हूं कि अगर तुम ने उन से लडाई मौल ली, तो वह तुम को ताख्त व ताराज कर देंगे।

बतरीक मुरीस ने मुआहदी कासिद की ज़बानी मुसलमानों की ता'रीफ और सुलह की राए सुनी तो गुस्सा से लाल पीला हो गया। कासिद को तुन्द लहजे में डांटते हुए कहा कि तूने मेरे फर्श पर खडे रह कर मेरे दुश्मनों की ता'रीफ कर के उन की अहमियत जताई है। कसम है दीने मसीह की ! अगर तूं एलची न होता, तो मैं तेरी ज़बान काट लेने का हुक्म

देता। लेहाज़ा अब एक लफ्ज़ भी अपनी ज़बान से मत बोलना, वरना तेरा बुरा हश्र करूंगा। मुआहदी कासिद बतरीक मुरीस की धमकी सुन कर खामोश हो गया। फिर मुरीस ने तर्जुमान को बुला कर खत पढने का हुक्म दिया। खत का मज़्मून समाअत करने के बा'द मुरीस ने तर्जुमान को अरबी ज़बान में जवाब लिखने का फरमान जारी किया। मुरीस के तर्जुमान ने जवाबी खत की इब्तिदा में कल्मए कुफ्र लिखने के बा'द यह लिखा :

"اَمّا بَعْدُ، يَا مَعْشَرَ الْعَرَبْ! فَاِنَّهُ قَدْ وَصَلَ اِلَيْنَا كِتَابُكُمْ وَعَلِمْنَا مَا فِيْهِ مِنَ
التَّحْدِيْدِ وَ لَا بُدَّ لَنَا مِنَ الْحَرْبِ وَالْقِتَالِ، والسلام"

तर्जुमा : "लैकिन बा'द इस के। ऐ गिरोहे अरब ! ब-तहकीक पहुंचा हमारे पास तुम्हारा खत और जाना हम ने उस चीज़ को जो इस में धमकी है। और ज़रूर लाज़िम है हम को लडाई और किताल। वस्सलाम"

फिर कासिद को खत दे कर रस्सी के ज़रीए नीचे उतार दिया। कासिद मुआहदी मुरीस का खत ले कर हज़रत अबू उबैदा के पास आया। हज़रत अबू उबैदा ने हाकिम मुरीस का खत इस्लामी लश्कर के सरदारों को पढ सुनाया और ब-इत्तेफाके राए हुमुस के किल्ले पर हम्ला करना तय पाया।

हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर के सरदार हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान, हज़रत मिरकाल हाशिम बिन उतबास, हज़रत शुरहबील बिन हसना और हज़रत मुसय्यब फज़ारी को शहेर पनाह के अलग अलग दरवाज़ों पर लश्कर दे कर मुहासरा करने भेजा और खुद बाबे रुस्तन पर हज़रत खालिद बिन वलीद के साथ ठहरे। किल्ले के हर दरवाज़े पर मुजाहिदों ने सख्त हम्ला शुरू कर दिया। रूमियों ने किल्ले की दीवार के ऊपर से जवाबी हम्ला किया। दिन भर लडाई होती रही, लैकिन जंग में कोई निखार या शबाब न आया। शाम तक इसी तरह बगैर नतीजा के जंग होती रही। बिल-आखिर आफ्ताब गुरूब हुवा। जंग मौकूफ की गई और इस्लामी लश्कर नहर के किनारे अपने कैम्प में वापस लौटा। रात मुजाहिदों ने खैरो आफियत के साथ इबादत व रियाज़त में बसर की।

जंग का दूसरा दिन

❀ इस्लामी लश्कर से सिर्फ गुलाम लडे :-

अह्ले हुमुस ने खत का जवाब लिख कर लडने का जो इरादा ज़ाहिर किया था, वह अज़् राहे तकब्बुर और गुरूर था । लेहाज़ा हज़रत खालिद ने रूमियों के दिमाग की गर्मी उतार ने और उन का घमंड तोडने के लिये इल्मे नफ्सियात का इस्ते'माल करते हुए एक नई तद्बीर अमल में लाते हुए लश्कर के तमाम गुलामों को जमा किया । इस्लामी लश्कर में गुलामों की ता'दाद चार हज़ार थी । हज़रत खालिद ने तमाम गुलामों से फरमाया कि तुम सब मुसल्लह हो कर किल्ले की तरफ जाओ और हम्ला करो । हज़रत अबू उबैदा ने महवे इस्ते'जाब हो कर हज़रत खालिद से फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! तुम्हारी इस तज्वीज़ से लडाई का मक्सद हासिल न होगा । यह चार हज़ार गुलाम किल्ले पर हम्ला कर के फतह नहीं कर सक्ते । हज़रत खालिद ने मुअद्दबाना लहजा में जवाब देते हुए कहा कि ऐ सरदार ! आप ब-राहे करम अपनी नर्म रविश पर रहें और मुझे मेरे काम की इजाज़त इनायत फरमाअें । मैं आज गुलामों को किल्ला फतह करने की गर्ज़ से लडने नहीं भेज रहा हूं बल्कि बन्द लफ्ज़ों में उन को पैगाम देना चाहता हूं कि ऐ सलीब की पूजा करने वालो ! हमारी निगाहों में तुम्हारी कोई कद्र व मन्ज़िलत नहीं । हमारे नज़दीक तुम्हारी इतनी भी अहमियत नहीं कि तुम्हारे जैसे ज़लीलों और बुज़दिलों से हम खुद लडने निकलने की ज़हमत गवारा करें । तुम्हारी ज़िल्लत और सफाहत को मद्दे नज़र रखते हुए हम ने अपने गुलामों को तुम्हारे मुकाबले में भेजा है । हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद की इस तज्वीज़ को बहुत पसन्द फरमाया और खुश हो कर फरमाया कि तुम को जो मन्ज़ूर है वह मुझे भी मन्ज़ूर है ।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने इस्लामी लश्कर के चार हज़ार गुलामों को किल्ले का मुहासरा करने इस्लामी कैम्प से रवाना किया । जब यह किल्ले के करीब हुए तो किल्ले की दीवार से मुरीस उन को ब-गौर देखने लगा । मुरीस के साथ हुमुस के बडे बडे बतारका और रूउसा थे । मुरीस ने उन से कहा कि आज किल्ले का मुहासरा करने जो लोग आए हैं वह अरब मा'लूम नहीं होते क्यूं कि यह तमाम सियाह फाम हब्शी हैं । कुछ ज़ी शऊर बतारका ने मुरीस को आगाह करते हुए कहा कि इन्हों ने हम को ज़लील व ख्वार जान कर कस्दन गुलामों को लडने के लिये भेजा है और हम को ता'ना मारा है । अल-किस्सा ! गुलाम मुजाहेदीन ने

पूरा दिन किल्ले का मुहासरा कर के हम्ला करते रहे । शाम तक जंग होती रही, लैकिन कोई नतीजा हासिल न हुवा । आफ्ताब गुरूब होने पर जंग मौकूफ कर दी गई और मुजाहेदीने इस्लामी लश्कर के कैम्प में वापस लौटे ।

रात के वक्त हाकिम मुरीस ने हज़रत अबू उबैदा के पास अपने एलची को खत दे कर भेजा और उस खत में लिखा था कि आज दिन में तुम्हारी लडाई से बे रग्बती और सुस्ती ज़ाहिर हो गई है । आज तुम हम से लडने नहीं आए तो क्या हुवा ? आइन्दा कल हम किल्ले के दरवाज़े खोल कर तुम से लडने निक्लेंगे ।

जंग का तीसरा दिन

❀ आरज़ी सुलह पर इस्लामी लश्कर की कूच :-

इस्लामी लश्कर में गल्ला खत्म हो गया । नीज़ ज़रुरियाते ज़िन्दगी की चीजें भी बाकी नहीं बचीं, लश्कर के कईं खैमों में खाने पीने की अश्या न होने की वजह से तब्बाखी नहीं हूई थी । अगर लडाई ने तूल पकडा तो सख्त दुश्वारी लाहिक होने का अंदेशा था । लैकिन जंग के वस्त से मैदान छोड कर चला जाना भी मुनासिब नहीं था । हज़रत अबू उबैदा बहुत ही फिक्र मन्द थे और कोई मुनासिब सबील ढूंढते थे । इधर हाकिम मुरीस भी फिक्र और तश्वीश में था, क्यूं कि हज़रत खालिद बिन वलीद बहुत दिनों से किल्ले का मुहासरा करने आ गये थे । हज़रत खालिद की आमद अचानक थी लेहाज़ा अह्ले हुमुस घबराहट के आलम में ब-उज्लत किल्ले में पनाह गुज़ीं हो गए थे । उन का भी बडी मिक्दार में गल्ला दीगर शहरों से आने वाला था, नीज़ हिरक्ल बादशाह के लश्कर की मज़ीद कुमुक भी आने वाली थी, लैकिन इस्लामी लश्कर के मुहासरे की वजह से गल्ला और कुमुक किल्ले तक पहुंचना ना मुम्किन था । लेहाज़ा फरीकैन की हालत मसावी थी । दोनों कुछ दिन के लिये मौकूफी-ए जंग के ख्वाहां थे ।

हज़रत अबू उबैदा ने हाकिम मुरीस को ब-ज़रीए एलची कहला भेजा कि हम को अगर तुम पांच दिन का गल्ला व रसद देना मन्ज़ूर करो तो हम किल्ले का मुहासरा तर्क कर के कूच कर जाअें । हाकिम मुरीस यह पैगाम सुन कर खुश हो

गया । उस के लिये तो मन भाता मुआमला था । मुरीस ने किल्ले के दरवाज़े से चंद बतारका और कसों को ब-तौरे नुमाइन्दा हज़रत अबू उबैदा के पास गुफ्तगू करने भेजा । फरीकैन ने गुफ्तगू के ज़रीए यह मुआहदा किया कि अह्ले हुमुस इस्लामी लश्कर को पांच दिन का गल्ला व रसद दे दें और इस्लामी लश्कर यहां का मुहासरा तर्क कर के कूच कर जाए । हज़रत अबू उबैदा ने मज़ीद शर्त यह रखी कि फील्हाल हम यहां से दूसरे मकाम चले जाअेंगे, लैकिन किसी दूसरे मकाम को फतह करने के बा'द अगर हमारा यहां आने का इरादा हुवा तो हम आअेंगे और हमारा दूसरी मरतबा आना अह्द शिकनी और वा'दा खिलाफी में शुमार न होगा । अलबत्ता हमारा दूसरी मरतबा यहां आना किसी दूसरे मकाम को फतह करने के बा'द ही होगा । बतरीक मुरीस ने हज़रत अबू उबैदा की पैश कर्दा शर्त को मन्ज़ूर किया और इस्लामी लश्कर के लिये पांच दिन का राशन भेज दिया । हज़रत अबू उबैदा ने हुमुस के ताजिरों से मज़ीद गल्ला दाना, चारा वगैरा भी मुंह मांगे दामों खरीदा और फिर इस्लामी लश्कर कूच कर गया ।

फतहे रुस्तन

इस्लामी लश्कर ने हुमुस से कूच की तो अह्ले हुमुस खुशियां मनाने लगे और आपस में एक दूसरे से कहने लगे कि बहुत बडी मुसीबत आसानी से टल गई । अब महीनों तक लौट कर वह यहां न आअेंगे । इस दौरान हम ज़रुरियाते ज़िन्दगी की चीज़ें किल्ले में जमा कर लेंगे और हिरक्ल बादशाह की कुमुक भी आ जाएगी । हम मआशी और जंगी ए'तबार से बहुत कवी हो जाअेंगे । फिर अगर अरबों का लश्कर आएगा भी तो हम निपट लेंगे । इसी ख्याल से अह्ले हुमुस ने इस्लामी लश्कर की रवानगी पर खुशी का दिन मनाया ।

इस्लामी लश्कर हुमुस से कूच कर के रुस्तन आया । हालां कि साले गुज़िश्ता फतहे दमिश्क के बा'द अह्ले रुस्तन ने एक साल के लिये सुलह की थी, लैकिन सुलह की मीआद पूरी हो गई थी । लेहाज़ा तज्दीदे सुलह की गुफ्तगू करने के लिये हज़रत अबू उबैदा ने रुस्तन के **हाकिम नकीता** के पास अपना एलची भेजा, लैकिन बतरीक नकीता ने सुलह की तज्वीज़ से साफ इन्कार कर दिया । और यह कहा कि हिरक्ल बादशाह के साथ तुम्हारा क्या मुआमला होता है, उसे देखने के बा'द हम सुलह के मुआमले में सोचेंगे और फील्हाल अज़ सरे नौ सुलह करना मुम्किन नहीं । रुस्तन शहर का किल्ला निहायत मज़बूत और बुलन्द था । इलावा अज़ीं किल्ले में काफी ता'दाद में मुसल्लह सिपाही हिफाज़त के लिये मौजूद थे । अह्ले रुस्तन भी लडने के मूड में थे । इस किल्ले को आसानी से फतह करना मुम्किन नहीं था, बल्कि लम्बी लडाई लडनी लाज़िमी थी । लेहाज़ा हज़रत अबू उबैदा ने हदीस के फरमान के **"अल-हर्बो खुदअतुन"** या'नी **"लडाई फरैब है"** पर अमल करते हुए एक ऐसी तद्बीर सोची के हाकिम नकीता को झांसा दे कर रुस्तन का किल्ला आसानी से फतह किया जा सके । हज़रत अबू उबैदा ने रुस्तन के हाकिम नकीता को मुकर्रर पैगाम भेजा कि हम दूर-दराज़ के सफर पर जाने का इरादा रखते हैं । हमारे साथ बहुत सारा कीमती सामान है और इस सामान का भारी बोझ साथ में ले कर सफर करने में बहुत दुश्वारी होती है । लेहाज़ा अगर तुम हमारे कीमती सामान को कुछ अर्सा के लिये ब-तौर अमानत अपने पास संभाल कर रख लो, तो हम वह सामान तुम्हारे यहां छोड जाअें । लैकिन तुम वा'दा करो कि जब हम वापस आअें तो हमारा वह सामान हम को वापस दे दोगे ।

जब हाकिम नकीता को हज़रत अबू उबैदा की अमानत संभालने का पैगाम मिला तो वह बहुत खुश हुवा। पेट में अंगारे भरने की निय्यत से उस ने यह सोचा कि मुसलमानों ने मुल्के शाम में सोना, चांदी, जवाहिरात, वगैरा बहुत सारा माले गनीमत जमा किया है, वह सामान मेरे यहां ब-तौर अमानत रखना चाहते हैं। इस बहाने उन का कीमती माल मेरे कब्ज़ा में आ जाएगा। जब वापस लेने आऐंगे तब अंगूठा दिखा दूंगा। अपनी बद दयानती के अज़्म को पूरा करने की निय्यत से उस ने हज़रत अबू उबैदा को कहला भेजा कि पुराने ज़माने से यह दस्तूर चला आया है कि एक बादशाह दूसरे बादशाह को अमीन व दयानतदार समझ कर अपनी अमानतें सुपुर्द करने में ए'तबार करते हैं। आप बिला झिझक और खौफ के अपना सामान ब-तौर अमानत भेज दो। आप जब भी मुतालबा फरमाऐंगे मैं खिदमत में हाज़िर कर दूंगा। मुझे खुशी है कि आप ने मुझे काबिले ए'तमाद जान कर अपनी खिदमत का मौका इनायत फरमाया।

❀ इस्लामी लश्कर के बीस मुजाहिद सन्दूकों में बन्द :-

हाकिम नकीता कीमती सामान ब-तौर अमानत अपने पास रखने पर रज़ा मन्द हो गया है। यह जान कर हज़रत अबू उबैदा बहुत खुश हो गए। इस्लामी लश्कर के सरदारों और अहम अफ्राद को अपने पास बुला कर फरमाया कि रूमियों ने कई मकामात पर हम को मक्रो फरैब से हलाक करने की कोशिश की है। लेहाज़ा मैं चाहता हूं कि उन के साथ एक खुफिया तद्बीर से काम लूं और **ईंट का जवाब पत्थर से दे** कर उन को सबक सिखाऊं। मैं ने यह तद्बीर सोची है कि हाकिम नकीता हमारा कीमती माल साल भर ब-तौर अमानत अपने पास रखने के लिये रज़ा मन्द हुवा है लेहाज़ा मैं इस के पास बीस सन्दूक ब-तौर अमानत भेजूं, लैकिन उन सन्दूकों में माल सामान के बजाए एक एक मुजाहिद को बन्द कर के भेजूं। उन सन्दूकों को बाहर से मुकफ्फल कर दिया जाएगा, लैकिन तमाम सन्दूकों में ऐसी कारीगरी की जाएगी कि सन्दूक के अन्दर छुपा हुवा मुजाहिद जब चाहे सन्दूक से बाहर आ जाए। इस तरह बीस मुजाहिद किल्ले में दाखिल हो जाऐं और मौका पा कर सन्दूक से बाहर निकल कर किल्ले का दरवाज़ा खोल दें। दरवाज़ा के बाहर इस्लामी लश्कर मौजूद होगा और दरवाज़ा खुलते ही लश्कर किल्ले में दाखिल हो कर शहर को फतह कर लेगा। लैकिन यह मुहिम बहुत ही पुर खतर है। अगर दुश्मनों को सन्दूक में पोशीदह मुजाहिदों की भनक लग गई, तो तमाम मुजाहिदों की जान का खतरा है, बल्कि यूं समझो कि ज़रा सा शुब्हा हो जा ने पर अगर उन्हों ने सन्दूकें खोल कर देखा तो इस सूरत में सन्दूक में बन्द हो कर जाने वाले

मुजाहिद की मौत यकीनी है। मुजाहिदों ने जवाब दिया कि मौत हमारी आरज़ू और शहादत हमारी ख्वाहिश है।

मुजाहिदों का जवाब सुन कर हज़रत अबू उबैदा बहुत खुश हुए और खाने वगैरा का सामान रखने वालीं बीस सन्दूक खाली कर के उस में इस तरह की कारीगरी कर ने का हुक्म दिया कि सन्दूक की कुन्डी में तो बाहर से कुफ्ल लगा दिया जाए, लैकिन सन्दूक के फर्श को काट कर तख्ता में हज़्मी ताले के नर मादा इस तरह लगा दिये जाऐं कि अन्दर बैठा हुवा शख्स इसे आसानी से खोल कर बाहर आ सके। जब इस तरह के सन्दूक तैयार हो गए, तो हज़रत अबू उबैदा ने हस्बे ज़ैल बीस सहाबए किराम का इन्तेखाब फरमाया।

(1) हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर
(2) हज़रत मुसय्यब बिन नजीबा फज़ारी
(3) हज़रत ज़ुल-केलाअ हुमैरी
(4) हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब
(5) हज़रत मिरकाल बिन उतबा
(6) हज़रत हाशिम बिन उतबा
(7) हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी
(8) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सिद्दीक
(9) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन मालिक उश्तर
(10) हज़रत औन बिन सालिम
(11) हज़रत आमिर बिन काकुल फज़ारी
(12) हज़रत माज़िन बिन आमिर
(13) हज़रत रबीआ बिन आमिर
(14) हज़रत इक्रमा बिन अबी जहल
(15) हज़रत उतबा बिन अल-आस
(16) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार
(17) हज़रत उसैद बिन उसामा
(18) हज़रत इरम बिन फय्याज़ ऐनी
(19) हज़रत सलमा बिन हबीब और
(20) हज़रत कारेअ बिन मुर्मला।

हज़रत अबू उबैदा ने उन तमाम पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फरे तय्यार को सरदार मुकर्रर किया। और उन को हिदायत दी कि तमाम मुजाहिद एक साथ ही सन्दूक से निकलें और सन्दूक से निकल कर तक्बीर कहें। हज़रत खालिद बिन वलीद किल्ले के दरवाज़े पर लश्कर ले कर मौजूद होंगे, तुम कोशिश कर के किल्ले का दरवाज़ा जल्द अज़ जल्द खोल देना। फिर हज़रत अबू उबैदा ने तमाम सन्दूकों में एक एक मुजाहिद को बन्द कर के मुकफ्फल कर दिया। कुल बीस सन्दूकों में बीस मुजाहिद को बन्द कर के तमाम सन्दूकें हाकिम नकीता के पास किल्ले में भेज दीं। सन्दूकें खूब वज़्नी मा'लूम होती थीं, उन को देख कर हाकिम नकीता मन में फूला नहीं समाता था। मुसलमानों का काफी ता'दाद में कीमती

माल मेरे कब्ज़ा में आ गया है। और उन का माल हज़्म कर जाउंगा इस ख्याल में खुशी से झूमने लगा। हाकिम नकीता ने तमाम सन्दूकें अपनी बेगम मारिया के महल में रखवा दीं।

सन्दूकें किल्ले में भेजने के बा'द इस्लामी लश्कर रुस्तन से रवाना हुवा। इस्लामी लश्कर को रवाना होता देख कर अहले रुस्तन खुशियां मनाने लगे। किल्ले की दीवार पर चढ कर इस्लामी लश्कर को जाता हुवा देख कर तालियां बजा कर नाचने लगे और खुशी का इज़्हार कर ने लगे। किल्ले की दीवार से रूमी इस्लामी लश्कर को उस वक्त तक देखते रहे, ता आंकि वह दूर निकल कर नज़रों से ओझल हो गया। फिर तमाम रूमी एक कनीसा में जमा हुए और आज की रात शराब व कबाब और रक्सो सुरूद में बसर करने का फैसला किया। क्यूं कि इस्लामी लश्कर के चले जाने की वजह से वह रात उन के लिये खुशियों की थी। इस्लामी लश्कर रुस्तन से रवाना हो कर सुवैद नामी मकाम पर ठहरा।

जब रात हूई तो हज़रत अबू उबैदा ने सुवैद से हज़रत खालिद बिन वलीद को पांच हज़ार सवारों के साथ रुस्तन के किल्ले की तरफ रवाना किया। और इन्हें किल्ले के दरवाज़े के सामने चुपचाप ठहरने का हुक्म दिया। चुनांचे हज़रत खालिद बिन वलीद लश्करे ज़हफ को ले कर सुवैद से रवाना हुए। इधर रात को तमाम रूमी कनीसा में खुशियां मनाने जमा हुए। हाकिम नकीता मेहमाने खुसूसी की हैसियत से जश्न में शरीक हुवा। जिस वक्त कनीसा में महफिल रक्सो सुरूर शबाब पर थी तमाम मुजाहेदीन सन्दूकों से हथियारों समेत बाहर निकले और हाकिम नकीता की बीवी मारिया के कमरे में घुस गए। एक साथ बीस मुजाहिदों को अपने कमरे में आ धमकते देख कर मारिया थर थर कांपने लगी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फर ने मारिया से फरमाया कि अगर अपनी जान की खैरियत चाहती हो तो शहर पनाह के दरवाज़ों की कुन्जियां दे दो, मारिया ने बिला किसी मुज़ाहमत के कुन्जियां दे दीं। कुन्जियां ले कर मुजाहेदीन किल्ले के दरवाज़े की तरफ दौडे दरवाज़े पर आठ दस सिपाही बराए नाम शराब के नशे में धुत पहरा दे रहे थे। मुजाहिदों ने जाते ही उन को ज़मीन पर मुर्दा डाल दिया और कुफ्ल खोल कर दरवाज़ा खोल डाला और बुलन्द आवाज़ से नार-ए तक्बीर बुलन्द कर के हज़रत खालिद बिन वलीद को मुतनब्बेह कर दिया। हज़रत खालिद बिन वलीद किल्ले के सामने थोडे ही फास्ले पर पांच हज़ार के लश्कर के साथ मौजूद थे। तक्बीर की सदा सुन कर फौरन किल्ले में दाखिल हो गए।

उस वक्त तमाम रूमी कनीसा में जश्ने लैलतुल-मसर्रत मना रहे थे। किल्ले में इस्लामी लश्कर के दाखिले से गाफिल और बे-खबर थे। इस्लामी लश्कर किल्ले में दाखिल

हो कर कनीसा की तरफ बढा और कनीसा को घेर लिया और तमाम मुजाहिदों ने बुलन्द आवाज़ से "**अल्लाहु अक्बर**" का ना'रा लगाया। मुजाहिदों के ना'रे से किल्ले की बुन्यादें हिल गईं और तमाम रूमी कांप उठे। किसी भी रूमी को मुकाबला करने की हिम्मत न हूई क्यूं कि कनीसा में किसी के साथ कोई हथियार न था। नज़र के सामने हथियार से मुसल्लह हज़ारों मुजाहिद मिस्ले शैर मौजूद थे। लेहाज़ा रूमियों ने बुलन्द आवाज़ से "**लफून, लफून**" या'नी "**अमान अमान**" पुकारना शुरू किया। हज़रत खालिद ने उन को अमान दी और उन पर इस्लाम पैश किया। बहुत से रूमी दाखिले इस्लाम हुए। और जिन रूमियों ने इस्लाम कबूल नहीं किया उन्हों ने जिज़्या देने का इक्रार किया। हज़रत खालिद ने अदाए जिज़्या की शर्त पर उन से सुलह कर के अमान दे दी। हाकिम नकीता ने इस्लाम और जिज़्या दोनों का इन्कार किया और हज़रत खालिद से दरख्वास्त की कि उसे मअ अह्लो अयाल जाने दिया जाए। हज़रत खालिद ने उस की दरख्वास्त मन्ज़ूर फरमा ली। लेहाज़ा वह रात ही में अपने अह्लो अयाल के साथ रुस्तन से चला गया। हज़रत अबू उबैदा को रुस्तन फतह होने की खबर पहोंची, तो सजदए शुक्र अदा किया। और फौरन सुवैद से रुस्तन आए। सन्दूक में बन्द हो कर जाने वाले अस्हाबे रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को उन की सलामती और फतह की मुबारकबादी दी और फिर हज़रत खालिद बिन वलीद और इन के तमाम साथियों का शुक्रिया अदा करते हुए दुआए खैरो बरकत से नवाज़ा।

हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत बिलाल बिन आमिर यस्करी को एक हज़ार सवार पर सरदार मुकर्रर फरमा कर उन को रुस्तन में ठहराया, ताकि वह अह्ले रुस्तन से जिज़्या वुसूल करें इलावा अज़ीं अह्ले रुस्तन की हिफाज़त व निगरानी करें और शहर के इन्तिज़ामी उमूर अंजाम दें।

फतहे किल्ल-ऐ शिरज़

रुस्तन की फतह के बा'द इस्लामी लश्कर हुम्मात की तरफ रवाना हुवा। शहर हुम्मात पहले ही से सुलह में दाखिल था। इस्लामी लश्कर सुब्ह के वक्त हुम्मात पहुंचा। वहां थोडा अर्सा ठहर कर अह्ले हुम्मात से मुलाकात करने के बा'द इस्लामी लश्कर शिरज़ आया। शिरज़ भी रुस्तन और हुम्मात की तरह सुलह में दाखिल था, लैकिन जिस बतरीक ने सुलह की थी उस का इन्तेकाल हो गया था। उस की जगह नकिस नामी एक ज़ालिम और जफा कश बतरीक को हिरक्ल बादशाह ने हाकिम मुकर्रर किया था। बतरीक नकिस ने सुलह तोड दी और जिन लोगों ने इस्लामी लश्कर से सुलह का मुआमला तय करने में शिर्कत की थी उन को सख्त सज़ाऐं दी थीं।

जब इस्लामी लश्कर ने शिरज़ के किल्ले के सामने पडाव किया, तो बतरीक नकिस ने अहले शीरज़ को जमा कर के कहा कि हिरक्ल बादशाह ने मुझे तुम्हारी हिफाज़त के लिये मुकर्रर किया है। मैं उन अरबों से लड कर उन को भगा दूंगा। लेहाज़ा तुम मेरा साथ दो। अहले शीरज़ ने कहा कि ऐ हाकिम ! हम में अरबों का मुकाबला करने की ताकत नहीं। मुल्के शाम के बडे बडे शहर और मज़बूत किल्ले मिस्ले दमिश्क, बा'रा, कन्सरीन, बा'ल्बक और रुस्तन को उन्हों ने फतह कर लिया है और मुल्के शाम के बहादुर शेहसवारों को खाक में मिला दिया है। और हमारी उन के सामने क्या बिसात है ?बतरीक नकिस अहले शीरज़ की बात सुन कर खश्मनाक हुवा और उस ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि बुज़दिली की बात करने वालों को मार दो। चुनांचे नकिस के सिपाहियों ने अमन पसन्द रूमियों को ज़द व कोब किया, लेहाज़ा अहले शीरज़ बा दिले ना-ख्वास्ता आमादए जंग हुए।

बतरीक नकिस ने हथियारों का खज़ाना खोल दिया और लोगों में तक्सीम किया और फिर अहले शीरज़ को ले कर किल्ले से बाहर इस्लामी लश्कर से लडने निकला। हज़रत खालिद बिन वलीद ने उन पर ऐसा सख्त हम्ला किया कि सिर्फ एक गरदावे में रूमी लश्कर मग्लूब हो गया। बतरीक नकिस ने पीठ फैरी और किल्ले की तरफ भागा। उस की मुताबेअत में रूमी भी दुम दबा कर भागे। मुजाहिदों ने उन का तआककुब किया। रूमी किल्ले में तो घुस गए, लैकिन किल्ले का दरवाज़ा बन्द करने का मौका ही न मिला। और इस्लामी लश्कर

भी किल्ले में दाखिल हो गया। बतरीक नकिस खुफिया दरवाज़े से भाग निकला और अहले शीरज़ ने अदाए जिज़्या की शर्त कबूल कर के अमान हासिल की। शिरज़ को फतह करने के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने मुजाहिदों को मुखातब कर के फरमाया कि फतहे शिरज़ की वजह से अह्ले हुमुस हमारी ज़िम्मेदारी से निकल गए। लेहाज़ा अब हुमुस की तरफ कूच करना चाहिये। तमाम मुजाहिदों ने ब-यक ज़बान जवाब दिया कि ऐ सरदार ! आप की राए मुनासिब है, आप जो भी मुनासिब समझें हुक्म फरमाऐं, हम आप के महकूम हैं। आप के हुक्म की ता'मील में हम किसी किस्म की कोताही और काहिली नहीं करेंगे। हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर को फिर एक मरतबा हुमुस पर हम्ला करने के लिये हुमुस की तरफ कूच करने का हुक्म दिया। इस्लामी लश्कर शिरज़ से हुमुस की तरफ रवाना हुवा, शिरज़ से रवाना हो कर इस्लामी लश्कर ने अभी थोडी ही मुसाफत तय की थी कि **इन्ताकिया** की तरफ से आने वाले रास्ते पर एक बडा गुबार उठता हुवा नज़र आया। उस गुबार को तमाम मुजाहेदीन हैरत से देखने लगे, यकीन के साथ कोई कह नहीं सक्ता था कि यह गुबार कैसा है ?

रुखे रौशन से उठा दो नकाब

हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों को ले कर गुबार की सम्त **इन्ताकिया** की राह में गए और इस्लामी लश्कर ब-दस्तूर **हुमुस** के **रास्ते** की तरफ आगे बढता रहा। हज़रत खालिद बिन वलीद जब उस गुबार के करीब आए तो देखा कि एक रूमी कस तातारी घोडे पर शान व शौकत से सवार है और उस के इर्द गिर्द एक सौ गबर सवार उस के खादिम की हैसियत से साथ चलते हैं। हज़रत खालिद ने उस काफले को रोका और डांट कर गिरफ्तार कर लिया और उन को ले कर हज़रत अबू उबैदा की तरफ चले। हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर को ले कर हुमुस के रास्ते पर **नहरे मा'लून** तक पहोंच गए थे। हज़रत खालिद ने उन को नहरे मा'लून पर पा लिया और तमाम कैदी हज़रत अबू उबैदा के सामने पैश किये। हज़रत अबू उबैदा ने काफले के सरबराहे आ'ला कस से हिरक्ल बादशाह का हाल दर्याफ्त किया तो उस ने इत्तेलाअ दी कि तमाम **मुल्के रूम**, **रूसिया**, **सैकालिया**, **अफरन्ज** और **अर्मन** की सल्तनतों ने तुम्हारे खिलाफ हिरक्ल बादशाह की मदद करने का अज़्म व इरादा किया है। लेहाज़ा अब तुम बहुत एहतियात से काम लेना और दुश्मनों से होशियार रहना। फिर हज़रत अबू उबैदा ने उस कस पर इस्लाम पैश किया। जवाब में रूमी कस ने कहा कि :-

"ऐ सरदार ! शब को देखा था मैं ने नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम को ख्वाब में और इस्लाम कबूल किया मैं ने उन के हाथों पर"

(हवाला :- फुतूहुश्शाम, अज़् :- अल्लामा वाकदी सफहा 192)

वाकई उस कस की किस्मत चमक उठी। जाने आलम व रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम के जमाले जहां आरा के दीदार से ख्वाब में मुशर्रफ हुवा और दौलते ईमान से सरफराज़ हुवा :

लिल्लाह उठा दो रुखे रौशन से नकाब
मौला मेरी आई हूई शामत टल जाए

(अज़् :- इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)